सहीफ़े कामेला

चौथे इमाम
अली इब्नुल हुसैन ज़ैनुल आबेदीन अ॰ की
दुआओं का मजमूआ

उर्दू तरजुमा
अल्लामा मुफ़्ती जाफ़र हुसैन

नाशिर
अब्बास बुक एजेन्सी
दरगाह हज़रत अब्बास अ॰
रुस्तम नगर लखनऊ - 3
2647590 फैक्स 2647910
मोबाइल 9414102990

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul
Presented by: https://jafrilibrary.net

सहीफ़े कामेला

चौथे इमाम
अली इब्नुल हुसैन ज़ैनुल आबेदीन[अ०] की
दुआओं का मजमूआ

उर्दू तरजमा
अल्लामा मुफ़्ती जाफ़र हुसैन

-: नाशिर :-
अब्बास बुक ऐजेन्सी
दरगाह हज़रत अब्बास[अ०]
रूस्तमनगर लखनऊ – 3
☎ 2647590 फ़ैक्स 2647910ए मोबाइल 9415102990

Presented by: https://jafrilibrary.com

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul
Presented by: https://jafrilibrary.net

नाम किताब : सहीफ़े–ए–कामला

उर्दू तरजमा : अल्लामा मुफ़्ती जाफ़र हुसैन

कम्पोज़िंग : सैय्यद मोहम्मद अब्बास (फ़ोन :3020378)

नाशिर : अब्बास बुक ऐजेन्सी लखनऊ–3

तादाद : एक हज़ार

प्रकाशन वर्ष : नवम्बर 2005

प्रेस : नाहिद आफ़सेट प्रिन्टर्स दिल्ली

हदिया : 130/– रुपये

मिलने का पता

अब्बास बुक ऐजेन्सी

रूस्तमनगर, दरगाह हज़रत अब्बास[अ०] लखनऊ–3

फ़ोन:–2647590, फ़ैक्स नम्बर:–2647910,

मोबाइल नं० 9415102990

E.mail : abbasbookagency@yahoo.com

Presented by: https://jafrilibrary.com

www.bookshia.com
knowledge enlivens the soul
Presented by: https://jafrilibrary.net

तआर्रुफ़

इस्लाम अल्लाह का पसन्दीदा दीन है। जिसकी बुनियाद हक़ व सदाक़त पर रखी गई है। यह एक ऐसा चराग़ है जिससे लातादाद चराग़ रौशन होते हैं और जिससे अक़्ल व दानिश की मुतअद्दिद नदियाँ फूटती हैं। इस दीन को एक लाख चौबीस हज़ार नबियों के ज़रिए ख़ुदा वन्दे आलम ने अहले दुनिया के सामने पेश किया साथ ही सरदारे अम्बिया हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के वसी और जॉनशीन हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम के एलाने विलायत के मौक़े पर इस दीन की तकमील हुई।

अल्लाह के पसन्दीदा दीन की बक़ा और क़यामत तक इसकी हिफ़ाज़त के लिए ख़ुदा ने इमामत का सिलसिला शुरू किया जिनमें से ग्यारह इमामों ने अपनी बेमिसाल कुर्बानियां पेश कर दीं। मगर दीन को बचा लिया। जिनका आज तमाम आलमे इस्लाम पर एहसान है वरना आज इस्लाम की तस्वीर कुछ और होती।

सहीफ़–ए–कामेला (सहीफ़–ए–सज्जादिया) दुआओं और मुनाजातों ही का मजमुआ नहीं है बल्कि उलूहियत के रमूज़ और इसरारे उबूदियत के दुर्रहाय शहवार का एक ख़ज़ीनए आमरा है जिनसे तस्लीम व रिज़ा, बसरीत, आगही व इरफ़ाने हक़ीक़त के सोते उबल कर तश्नगाने इल्म व इरफ़ान को सेराब करते हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इस नादिर सहीफ़े का तरजमा व हवाशी हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लेमीन मौलाना मुफ़्ती जअफ़र हुसैन मुदज़ल्लहू ने अरबी से उर्दू में बड़ी अर्क़ रेज़ी से किया है।

मौसूफ़ मुतरज्जिम नहजुल बलाग़ह भी हैं। उर्दू से हिन्दी रूपान्तर जनाब सै० अली इमाम ज़ैदी साहब की अनथक कोशिशें का नतीजा है। आपने इससे क़ब्ल हिन्दी क़ुरआन के अलावा मुतअद्दिद दीनी किताबों का हिन्दी में तरजमा बख़ूबी अन्जाम दिया है। अल्लाह सुब्हानहू तआला इनकी तौफ़ीक़ात में मज़ीद इज़ाफ़ा करे आमीन।

इस सहीफ़े के प्रकाशक मौलवी अली अब्बास तबातबाई क़ाबिले सताइश हैं कि जिन्होंने नौजवानों और उर्दू से नाबलद अफ़राद की दैरीना मांग को पूरा कर दिया। तबाअत की दुनिया में मौसूफ़ की ख़िदमात बे–शुमार हैं। इसका अज्र उन्हें चौथे इमाम अलैहिस्सलाम से बे–हिसाब हासिल होगा। ख़ुदा उन्हें मज़ीद दीनी कुतुब की इशाअत की तौफ़ीक़ एनायत करे।

अहक़रुज़्ज़मन

सै० मो० हसनैन रिज़वी
जेनरल सेक्रेट्री
अली मिशन (इण्डिया)
नहजुल बलाग़ह हाउस लखनऊ
मोबाइल : 9335321792ए 9235887693

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुक़द्दमा
सहीफ़-ए-कामेला

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दो लिल्लाहे मुजीबुद्दावात व फ़ाअलल ख़ैराते वस्सलाता अला मोहम्मद व आलेहि सलवाता आलेयता अलस्सलवाता व मशरफ़ता फ़ौक़त तहिय्यात। "सहीफ़–ए–कामेला" इस्लाम के इबतदाई दौरे तदवीन व तालीफ़ की एक इलहामी तसनीफ़ है जो हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलातो वस्सलाम की दुआओं और मुनाजातों पर मुश्तमिल है। इसकी अज़मत व अहमियत और एतमाद व वसूक़ के लिये इतना ही काफ़ी है कि हज़रत[अ०] ने ख़ुद इसकी तरतीब व तदवीन का एहतेमाम फ़रमाया और अपने दोनों साहबज़ादों हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम और जनाबे ज़ैद शहीद रहमतुल्लाह अलैहे से जबकि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम भी उस मौक़े पर मौजूद थे इसे क़लमबन्द करवाया ताकि इसके ज़ब्त व हिफ़्ज़ का सामान मुकम्मल हो जाये और इसके ज़रिये तालीम व हिदायत का सिलसिला जारी रहे। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अपना तहरीरकरदा सहीफ़ा इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के सुपुर्द फ़रमाया, और आप ने वह दुआयें मुतवक्किल इब्ने हारून को लिखवा दीं। और जनाबे ज़ैद का नुस्ख़ा उनके फ़रज़न्द यहिया की तरफ़ मुन्तक़िल हुआ और उनसे मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने हसन मुसन्ना और उनके भाई इब्राहीम के हाथों में पहुंचा और इस तरह हिफ़्ज़ व समाअत और नक़्ल व किताबत के ज़रिये मुन्तक़िल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होता हुआ दुनिया–ए–इस्लाम में फैल गया, और हर दौर में कुबूलियते आम्मा ने इसे हाथों हाथ लिया और परस्ताराने हक़ीक़त व हलक़ा बगोशाने इमामत ने इसे आवेज़–ए–गोशे अक़ीदत बनाया और कुरआने मजीद की तिलावत के साथ साथ इसका विर्द भी अपने मामूल में से क़रार दे लिया और छठी सदी हिजरी के निस्फ़ अव्वल में इसे ज़बूरे आले मोहम्मद व इन्जीले अहलेबैत के नामों से याद किया जाने लगा। यह नाम इस लिहाज़ से तजवीज़ किये गये कि इसके हकीमाना इरशादात व बसाएर मोअस्सर अदइया व औराद और दिलनशीं हुक्म व नसाएह आसमानी सहीफ़ों के असलूब के आईनादार और उनकी तालीमी रूह के हामिल हैं। चुनान्चे साहबे रियाज़ुस् सालेकीन ने बअज़ अहले इरफ़ान का यह क़ौल नक़्ल किया है कि:

> (तरजुमा) "सहीफ़–ए–कामेला आसमानी किताबों के असलूब और अर्श व लोह के सहीफ़ों की रविश का मुकम्मल नमूना है।"

और दूसरे यह कि इस सहीफ़े की निस्बत इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] की तरफ़ उसी तरह शक व शुब्हा से बालातर है जिस तरह ज़बूर की निसंबत हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ और इंजील की निसबत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरफ़, हर क़िस्म के शुबहे से बुलन्दतर है। चुनान्चे इस मौज़ूअ पर बाद में जितनी किताबें तालीफ़ हुई उनके मोअल्लिफ़ अपने मजमूओं में दुआए अली इब्नुल हुसैन[अ०] के उनवान से इस मजमूए की दुआओं को नक़्ल करते रहे, और उनमें से किसी एक ने भी इसकी सेहते निस्बत के मुतअल्लिक़ किसी ख़दशे का इज़हार नहीं किया और बग़ैर किसी पस व पेश के इसे कलामे इमाम तस्लीम किया है। अगर इन्हें इसके पहलू में कमज़ोरी व ख़ामी का शएबा नज़र आता तो वह ख़ामोशी को उसूले

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दयानत के ख़िलाफ़ समझते हुए इसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करते और अपने शुब्हात का इज़हार करते मगर किसी एक ने भी ऐसा नहीं किया जिससे यह हक़ीक़त वाज़ेह हो जाती है कि इन सब के नज़दीक यह कलामे इमाम है जिसमें किसी शक व शुब्हे की गुंजाइश नहीं है। इसके अलावा हर कलाम के कुछ ख़ुसूसियात होते हैं जिनसे इन्तेसाब के सिलसिले में बड़ी हद तक मदद ली जा सकती है, और लब व लहजा व असलूबे बयान को देख कर मुतकल्लिम को पहचाना जा सकता है। जब कलाम, मुतकल्लिम का आईनाबरदार होता है तो सहीफ़े के अल्फ़ाज़ का हुस्न, माने की कशिश और कलाम की दिल आवेज़ी इस अम्र की दलील है कि उनके ग़ैर की तरफ़ इस की निस्बत दी ही नहीं जा सकती। क्योंकि इसके एक एक जुमले की साहेराना बलाग़त और एक एक फ़िक़रे की मौजिज़ाना फ़साहत इसकी शाहिद है कि इसका सरचश्मा वही दूदमाने रिसालत है जिसका कलाम फ़ौक़े कलामुलबशर तस्लीम किया जा चुका है। सहीफ़–ए–कामेला अगर एक तरफ़ आले मोहम्मद[स०] अलैहिस्सलाम की फ़साहत व बलाग़त का आईनादार है तो दूसरी तरफ़ उनके ख़ुसूसियात व ज़ाती कमालात का भी तर्जुमान है। चुनान्चे इसके सफ़हात पर उनकी हयाते तय्यबा के नक़ूश को देखा जा सकता है। अगरचे सियासी मसालेह ने दुनिया को उनसे पूरी तरह रूशिनास न होने दिया और उनकी इल्मी व अमली रिफ़अत पर तअस्सुब व तंग नज़री ने पर्दे डाल दिये, मगर उनके अक़वाल व इरशादात वह हैं जो उनकी अमली ज़िन्दगी की पाकीज़गी और उनकी इल्मी वुसअत व बुलन्द पायगी की रौशन दलील हैं। चुनानचे इस सहीफ़े में दुआओं के ज़िम्न में इल्मे इलाहियात, फ़लकियात और अस्री इक्तेशाफ़ात की तरफ़ जो इशारे किये गये हैं वह इनकी वसीउन नज़री और इल्मी हमागीरी की वह वाज़ेह बुरहान हैं जिसे असबीय्यत का गुबार छुपा नहीं सकता।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सहीफ़ा और तर्ज़े निगारिश

दौरे जाहेलियत और अवाएले इस्लाम के तर्ज़े तहरीर व अन्दाज़े निगारिश का जाएज़ा लिया जाये तो यह हक़ीक़त वाज़ेह हो जाती है कि उस दौर का अदब दक़ीक़ और भारी भरकम अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल होता था, और तशबीह व इस्तेआरा और तरसीअ व तजनीस वग़ैरा से कलाम में हुस्न व दिल आवेज़ी पैदा की जाती थी। मगर आले मोहम्मद[अ0] ने जिसकी इम्तियाज़ी मिसाल सहीफ़–ए–कामेला में नज़र आती है, कलाम में सलासत व रवानी से काम ले कर सलीस व सादा इन्शापरदाज़ी की बुनियाद रखी और तर्ज़े निगारिश को एक नया असलूब बख़्श कर अहले क़लम को इसके ततिब्बअ की दावत दी और सही व तरसीअ की बन्दिशों को तोड़ कर ताविया व ताबीर की वुसअतें बढ़ा दीं, और हलके फुलके अल्फ़ाज़ की वह बस्तियां आबाद कीं, जिनके सामने मुक़फ़्फ़ा व मुसज्जा इबारतों के मुज़य्यन काशाने वीरान हो गये और सीधी सादी लफ़्ज़ों और सादा व दिल नशीन तरकीबों में वह कैफ़ भर दिया कि तजनीस व तरसीअ का मसनुई हुस्न उसकी क़ुदरती व फ़ितरती सादगी के आगे मांद पड़ गया! और अस्ल जौहरे फ़साहत यही है कि मौज़ूए कलाम कुछ भी हो, ज़बान की रवानी और कलाम की सलासत में लोच न आये और अल्फ़ाज़ अपनी जज़ालत और सहरआफ़रीनी से दिल की गहराईयों में उतरते चले जायें! इस सहल व दिलनशीं तर्ज़े तहरीर का अस्ल मोहर्रिक दुआ, व मुनाजात है और दुआ व मुनाजात के कलमात तलफ़्फ़ुज़ व अ[illegible]एगी और सूती कैफ़ियत में रिक़्क़त व नर्मी और सोज़ व गुदाज़ के मुक़तज़ी होते हैं और उनमें रब्त व तरतीब और हुस्न आफ़रीनी मक़सूद नहीं होती कि कलाम के ख़दो ख़ाल को निखारा और उसके नोक पलक को संवारा जाये और अन्दोह व ग़म के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तास्सुरात और रंज व अलम के जज़बात में इसका मौक़ा ही कहां होता है कि जुमलों की साख़्त और लफ़्ज़ों की तराश ख़राश की तरफ़ तवज्जोह की जा सके। चुनान्चे यह सहीफ़ा अव्वल से ले कर आख़िर तक दर्दो ग़म की आहों और कर्ब व इज़्तेराब की सदाओं पर मुश्तमिल है जिसमें कुछ दुआयें हैं और कुछ मुनाजातें। जिनमें न तसन्नो का शाएबा है न आवर्द की झलक, न फ़लसफ़ियाना उलझाव हैं न मन्तिक़याना पेच व ख़म बल्कि हर मक़ाम पर वही सीधा सादा अन्दाज़ें बयान है जो एक दुआ का होना चाहिये। मिसाल के तौर पर हज़रत की दुआ के इस जुज़ को देखिये कि इसमें तज़र्रा व अलहाह के साथ कितनी आमद, बेतकल्लुफ़ी और सलासत कारफ़रमा है :–

(तरजुमा) "पाक है तू हम वह परेशान व लाचार हैं जिनकी दुआ को क़ुबूल करना तूने ज़रूरी क़रार दिया है! और वह गिरफ़्ताराने बला हैं जिनकी मुसीबतों को दूर करने का तूने वादा किया है। तेरी मशीय्यत के निहायत मुनासिब और तेरी अज़मत के बहुत शायान यह है कि जो तुझ से रहम की इल्तेजा करे उस पर तू रहम करे और जो तुझ से फ़रियाद करे उसकी फ़रियाद को पहुंचे। तू अब हमारी इज्ज़ो–ज़ारी पर रहम फ़रमा और जबकि हमने अपने को तेरे सामने पेश कर दिया है तू हमें (हर फ़िक्र व ग़म से) बेनियाज़ कर दे"।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सहीफ़ा और असलूबे ख़िताब

अल्लाह को पुकारने और ख़िताब करने के लिये अल्फ़ाज़ का दायरा ज़्यादा वसीअ नहीं है। क्योंकि उसे गिने चुने नामों और मख़सूस सिफ़्तों ही से याद किया जा सकता है, और हर वह लफ़्ज़ जो किसी बुलन्द सिफ़त का पता देती हो ज़रूरी नहीं कि उसका इतलाक़ अल्लाह की ज़ात पर दुरूस्त ही हो! हो सकता है कि वह उसकी शाने उलू व अज़मत के मनाफ़ी हो। जैसे आरिफ़, आक़िल, ज़की वग़ैरा। इसी तरह अरबों के बाअज़ दुआइया कलमात में जो इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ पाये जाते हैं उन्हें अल्लाह की रिफ़अत व अज़मत के लिहाज़ से मुनासिब व मौज़ूं नहीं समझा जा सकता है जैसे "या अबल मकारिम" ऐ बुज़ुर्गियों के बाप" "अब" के लग़वी माने बाप के हैं और यह इसके साहते क़ुदस के लिये ज़ेबा नहीं है। अगरचे यहां पर इसके माने "वाले" के हैं। इसी तरह "या अबीज़ुल वजह"। ऐ रौशन चेहरे वाले"। अगरचे वजह इन्तेसाब की माने से उसकी तरफ़ हुआ है जैसे "तुम जिधर भी रुख़ करोगे उधर अल्लाह ही अल्लाह है"। मगर उसे उस जैसे दूसरे अल्फ़ाज़ को जिनका इतलाक़ मजाज़न उसकी ज़ात पर हुआ है ऐसे इज़ाफ़े के साथ इस्तेमाल करना जो दूसरों ही के लिये बोले जाते हैं, क़ुदरत के लिये मौज़ूं नहीं हैं। अगरचे कहने वाले की इससे मुराद यह है कि उसकी ज़ात हर नुक़्स व ऐब से बरी है। इसी तरह "या अरीज़ुल जिफ़नत" "ऐ बड़े प्याले वाले"। इससे इस्तेआरतन् करीम व सख़ी मुराद लिया जाता है। क्योंकि बड़े प्याले उसी के हां होंगे जिसके हां मेहमानों का हुजूम रहता हो। मगर अल्लाह के जूद व करम की वुस्अतों और ख़्वाने करम की पहनाइयों का अन्दाज़ा प्यालों और पैमानों से नहीं लगाया जा सकता कि इस क़िस्म के इस्तेआरा को उसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लिये मुनासिब व मौज़ूं समझा जाये। इसके मुक़ाबिले में सहीफ़े की दुआओं के अल्फ़ाज़े निदा अल्लाह की अज़मत व तक़दीस के आईनादार हैं, कि न कोई कलमा उसके साहते जलाल के मनाफ़ी और न कोई जुमला उसकी शाने रिफ़अत के ख़िलाफ़ नज़र आता है। बल्कि हर कलमा उसके औसाफ़े हुस्न व कमाल का तर्जुमान और हर जुमला उसकी शाने तन्ज़िया व तक़दीस का हामिल है। चुनान्चे दुआ व तलबगारी के सिलसिले में चन्द मुतफ़र्रिक़ अल्फ़ाज़े निदा को देखिये कि इमाम अलैहिस्सलाम किस असलूब और किस लब व लहजे में उसे वालेहाना अन्दाज़ से पुकारते हैं कि मआनी का हुस्न क़ल्ब व रूह को जज़्ब करता और अल्फ़ाज़ का तरन्नुम नग़म–ए–शीरीं की तरह कानों में गूंजता मालूम होता है।

(तरजुमा) "तू करम व बख़्शिश करने वाला और हर ऐब से पाक है तू जूद व सख़ा करने वाला और बुज़ुर्ग व बरतर है। तू सख़ी व करीम है ऐ एहसान करने वाले ऐ दुनिया व आख़रत में रहम करने वाले ऐ वह ज़ात जो हाजत तलबी की आख़री मन्ज़िल है और ऐ वह ज़ात जिससे मुरादें पूरी होती हैं। बेशक तू बड़े फ़ज़ल वाला और क़दीम एहसान वाला है, और तू बहुत ज़्यादा एहसान करने वाला और अपने लुत्फ़ व करम से बहुत बख़्शने वाला है। बेशक तू बुज़ुर्गी और एजाज़ वाला है।"

सहीफ़ा और दुआ की तालीम

सहीफ़े की दुआओं ने जहां दुआ की अज़मत व अहमियत से दुनिया को आशना किया है वहां दुआ का तरीक़ा भी तलक़ीन किया है कि तलब व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सवाल के मौक़े पर क्या अन्दाज़ अख़्तियार करना चाहिये और किस नहज और किस असलूब से दुआ मांगना चाहिये। मसलन बीमार हो तो तलबे शिफ़ा के लिये किस तरह दुआ मांगे। क़र्ज़ से सुबुकदोशी के लिये किस तरह इल्तेजा करे। मक़सद व हाजत के सिलसिले में क्या असलूब अख़्तियार करे, तौबा व इस्तग़फ़ार के लिये किस तरह उसके सामने गिड़गिड़ाये, मसाएब व आलाम से रेहाई के लिये किस तरह उसे पुकारे। चुनानचे इब्ने जौज़ी से मन्क़ूल है कि उन्होंने कहा कि :

> (तरजुमा) "हज़रत ज़ैनुल आबेदीन अली इब्नुल हुसैन[अ०] इन्शा व तहरीर और अल्लाह सुब्हानहू से तकल्लुम व ख़िताब और उसके हुज़ूर अर्ज़ हाजात के सिलसिले में मुसलमानों पर हक़ तालीम व उस्तादी रखते हें। इस लिये कि अगर हज़रत न होते तो मुसलमान यह न जान सकते कि वह अल्लाह सुबहानहू से किस तरह ख़िताब करें और किस तरह उससे अपनी हाजतें तलब करें और यह हज़रत ही ने मुस्लमानों को सिखाया है कि अगर तौबा करो तो यह कहो और तलबे बारां करो तो यह कहो और दुश्मन का ख़तरा हो तो यह कहो"

(मुक़द्दमा सहीफ़ा आग़ा सैय्यद शहबुद्दीन मरअशी)

इसके अलावा यह तालीम भी मिलती है कि किन किन औक़ात में दुआ मांगे कि क़ुबूलियत उसके ख़ैर मक़दम के लिये बढ़े। चुनान्चे सहीफ़े की वह दुआयें जो मख़सूस औक़ात व अय्याम से वाबस्ता हैं वह उनके औक़ाते क़ुबूलियत व इस्तजाब होने का पता देती हैं। जैसे दुआये रोज़े अरफ़ा, दुआये नमाज़े शब, दुआये रोज़े जुमा वग़ैरा। इन दुआओं में जहां क़ुबूलियत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

के औक़ात का लिहाज़ रखा गया है वहां इन्सान के अमूमी औक़ाते फ़राग़त को भी नज़र अन्दाज़ नहीं किया गया। जैसे सुबह व शाम, दोपहर और शब के औक़ात कि जिनमें बन्दा यक्सूई से अपने मअबूद से राज़ व नयाज़ और अर्ज़ व इल्तेजा कर सकता है, और अगर ऐसा हो कि इन मोअय्यना औक़ात में तबीअत दुआ की तरफ़ माएल न हो या दिल व दिमाग़ में यकसूई पैदा न हो सके। तो सहीफ़े में ऐसी दुआयें भी हैं जो किसी वक़्त और ज़माने से मोक़य्यद नहीं हैं ताकि इन्सान औक़ात व साआत से बेनयाज़ हो कर जब भी उससे लौ लगाना चाहे उसके पास लौ लगाने का सरो सामान मौजूद हो और जिस मक़सद के लिये उसे पुकारना चाहे पुकार सके। चुनान्चे इन दुआओं में हर मक़सद व हाजत की दुआ मौजूद है और हर दर्द का दरमान। हर दुख का इलाज, हर इज़्तेराब की तसल्ली और हर मुसीबत व अन्दोह का मदावा पाया जाता है। वह कौन सी मुश्किल है जिसके लिये यह सिपर न हों और वह कौन सी मुसीबत है, जिसके दूर करने का सामान इनमें मौजूद न हो। वह दुश्मन का ख़तरा हो या ग़नीम का खटका, क़र्ज़ की गरांबारी हो या रिज़्क़ की तंगी, ग़मों की फ़रावानी हो या बलाओं का हुजूम, दरदो अलम की तूफ़ान अंगेज़ी हो या शिद्‌दते मर्ज़ की जांकाही अफ़कारे दुनिया की कश्मकश हो या रोज़े आख़रत का धड़का, सब की चारासाज़ियों का सरो सामान इन में मौजूद है। अब इस दौलते फ़रावान के होते हुए कोई अपनी बेचारगी व बेनवाई का इलाज न करे तो वह ख़ुद अपनी महरूमी व नाकामी का बाअस हो रहा है! और कोई अपने फक़रो एहतियाज को दूर करने के लिये करीम के दर पर दस्तक न दे तो वह ख़ुद अपने लिये इफ़लास व नकबत को दावत दे रहा है। यह दस्ते करीम की बख़ीली नहीं बल्कि तलब करने वाले की कोताही व सहल अन्गारी है :

"गरगदा काहिल बुवद तक़्सीर साहब ख़ाना चीस्त"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़ौफ़ व रिज़ा-ए की तलक़ीन

उबूदियत की तकमील के लिये ख़ौफ़ व रिज़ाए के मिले जुले जज़बात का होना ज़रूरी है क्योंकि ख़ौफ़ व रिजाए से फ़िक्र व एतक़ाद में पुख़्तगी पैदा होती है और यही पुख़्तगी अमल की तहरीक करती है और नतीजे में इन्सान अपनी एतक़ादी व अमली ज़िन्दगी को संवार ले जाता है। चुनान्चे उम्मीद व रिजाए से वाबस्तगी होगी तो तलब व सई में सरगर्मी पैदा हो जायेगी और वह किसी हालत में भी अमल व इताअत से जी नहीं चुरायेगा, और उम्मीद के सहारे पर क़दम आगे बढ़ाता चला जायेगा, और यह उम्मीद व रिजाए ही का करिश्मा है कि अल्लाह की राह में जो कुलफ़तें और अज़ीयतें उसे पेश आती हैं उन्हें ख़न्दा पेशानी से झेल ले जाता है और किसी मौक़े पर ज़बान को शिकवा व शिकायत से आलूदा नहीं होने देता। और दिल में ख़ौफ़ बसा हुआ होगा तो वह अन्जामेकार की काम्याबी से मुतमईन हो कर ग़फ़लत में नहीं पड़ेगा और मुहासबा के डर से गुनाहों के ख़ारेज़ार में फांदने से झिझके और बुराईयों के भंवर में उतरने से डरेगा, क्योंकि ख़ौफ़ तबअन मोहर्रमात से अनांगीर, और नशा–ए–बातिल की फ़रेब ख़ुर्दगी से मानेअ होता है और उसे अपने किसी अमल पर नाज़ां व मग़रूर नहीं होने देता। चाहे वह अमल कितना बुलन्द, पाकीज़ा और ख़ुलूस का हामिल हो। चे जाये कि पुरफ़रेब तिफ़्ल तसल्लियों से नफ़्स को धोखा दे और अपने को ओक़बा की बाज़पुर्स से बालातर समझ ले। मगर यह नताएज व असरात उस सूरत में मुरत्तब हो सकते हैं जब इन दोनो हालतों में तवाज़ुन व एतदाल कारफ़रमा हो और उम्मीद व रहमत के एहसास के साथ क़हर व गज़ब का तसव्वुर और क़हर व ग़ज़ब के एहसास के साथ लुत्फ़ व राफ़त का तसव्वुर भी क़ाएम हो, और अगर सिर्फ़ उम्मीद ही लगाये रहे तो वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़ुशियों के ऐसे ख़्वाब देखना सीख जाता है जो कभी पूरे नहीं होते और आख़िर उसे नुक़्सान व हलाकते अबदी के सिवा कुछ हासिल नहीं होता। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "अल्लाह के अज़ाब से सिर्फ़ घाटा उठाने वाले ही मुतमइन होते हैं।"

और अगर दिल व दिमाग़ पर ख़ौफ़ ही ख़ौफ़ छाया रहे तो वह अपने लिये खुशगवार मुस्तक़बिल का तसव्वुर भी नहीं कर सकता और यास व नामुरादी की ऐसी गहराईयों में जा पड़ता है जहां से कोई हाथ उसे सहारा दे कर उभार नहीं सकता और नतीजे में यक़ीन की रूह पज़मुर्दा और ईमान का सोता ख़ुश्क हो जाता है। चुनान्चे इरशादे क़ुदरत है :

(तरजुमा) "अल्लाह की रहमत व बख़्शिश से सिर्फ़ काफ़िर ही मायूस होते हैं"।

और अगर इन दोनों मुतज़ाद सिम्तों में दरमियानी राह पैदा कर ले इस तरह कि किसी सिम्त से बेतअल्लुक़ न होने पाये, तो न उम्मीद की फ़तह मन्दियां उसे मग़रूर बना सकेंगी और न यास की नाउम्मीदियां उसे भयानक अन्धेरों में भटकने देंगी बल्कि ज़िन्दगी के तमाम गोशे तक़वा व उबूदियत की ताबन्दगियों से रौशन व मुनव्वर हो जायेंगे और उम्मीदो बीम के साये में हुस्ने अमल का कारवां कामयाबी के साथ मंज़िले मक़सूद की तरफ़ बढ़ता रहेगा। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"वह लोग नेकियों की तरफ़ तेज़ी से बढ़ते थे और हमारे फ़ज़्ल व करम से उम्मीद लगाए और हमारे अज़ाब से डरते हुए दुआएं मांगते थे और हमारे सामने सरे नियाज़ झुकाए हुए थे।"

उम्मीदो बीम के सिलसिले में यहूदी व मसीही नज़रियात इस्लाम के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नज़रिया–ए–एतदाल के ख़िलाफ़ हैं। चुनान्चे यहूदियों ने ख़ुदा को क़हर व ग़ज़ब का एक मुरक़्क़ा बना कर पेश किया जिसके हां रहमत व राफ़्त और अफ़ो व दरगुज़र की अगर गुंजाइश है तो बहुत ही कम, और ईसाइयों ने क़हर व ग़ज़ब के मोक़ाबले में लुत्फ़ व रहमत के अनासिर इतने बढ़ा दिये कि मकाफ़ाते अमल से मुतमईन हो गये। मगर इस्लाम ने इन दोनों के दरमियान एक मुतवाज़िन सतह क़ायम की और रहमत के साथ अदालत और अदालत के साथ लुत्फ़ो मरहमत का तसव्वुर भी बरक़रार रखा ताकि रहमत का तसव्वुर अन्जामकार की कामयाबी से मायूस न होने दे, और अदालत का अक़ीदा उसके एहकाम की बजाआवरी से ग़फ़लत में न डाल दे। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम का इरशाद है:–

> (तरजुमा) "हर मोमिन के दिल में दो नूर होते हैं। एक नूर ख़ौफ़ और एक नूर रिजा। इस तरह कि अगर इन दोनों को वज़्न किया जाये तो दोनों तराज़ू के तोल बराबर उतरेंगे।

लेकिन सवाल यह है कि ख़ौफ़ व रिजा को किस तरह नुक़्तए एतदाल पर लाया जा सकता है और क्योंकर इनकी शिद्दत को कम करके इनमें एक मुतवाज़िन हालत पैदा की जा सकती है। तो यह ख़ौफ़ व रिजा के मोहर्रकात और अवामिल से वाबस्ता है, और इस सिलसिले में सहीफ़–ए–कामेला की दुआयें अपनी असर अन्दाज़ी के लिहाज़ से इन्फ़ेरादी हैसियत की हामिल हैं। चुनान्चे सहीफ़े की जिस दुआ पर नज़र की जाये, हर दुआ में ख़ौफ़ व रिजा के दुआई व असबाब दोश बदोश नज़र आयेंगे। जिन से ख़ौफ़ की पज़मुर्दगी के साथ उम्मीद की तरोताज़गी और अफ़ो व रहमत की तवक़्क़ो के साथ ख़ौफ़ व हरास की धड़कन भी बरक़रार रहती है। वह ख़ौफ़ व रिजा के मोहर्रकात क्या हैं। ज़ैल में उनका तज़किरा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किया जाता है, और सहीफ़े में से एक आध दुआ का जुज़ भी बतौरे नमूना व इसतशहाद दर्ज किया जाता है ताकि यह अम्र वाज़ेह हो सके कि यह दुआयें उन सिफ़ात के पैदा करने में किसी हद तक कामयाब हैं और किस मोअस्सर पैराया से हैबत व जबरूते इलाही और रहमत व राएफ़ते ख़ुदावन्दी को निगाहों के सामने पेश करती और रूह को ख़ौफ़ व रिजा के जज़बात से मुतास्सिर करती हैं।

दुवाई ख़ौफ़

पहला दाईया यह है कि इन्सान उन गुनाहों को याद करे जिनका मुरतकब होता रहा है, और उन हुकूक़ का ख़याल करे जिनसे ओहदा बरां होने की अब कोई सूरत बाक़ी नहीं रही क्योंकि वह अफ़राद दुनिया में मौजूद ही नहीं हैं जिनके हुकूक़ उसके ज़िम्मे थे कि वह उनका तदारुफ़ कर सके या उनसे उफ़ो व दरगुज़र की दरख़्वास्त करे। तो अब अल्लाह के गुनाहों से अगर तौबा कर भी ले तो लोगों के हुकूक़ व मज़ालिम से छुटकारा हासिल करने की क्या सबील कर सकता है। इमाम अलैहिस्सलाम इस दाइए ख़ौफ़ की तरफ़ तवज्जह दिलाते हुए फ़रमाते हैं :–

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह मेरे ज़िम्मे कितने ऐसे हुकूक़ हैं जो मुझे याद हैं और कितने ऐसे मज़लमे हैं जो मुझे भूल चुके हैं। लेकिन वह सब के सब तेरी उन आंखों के सामने हैं जो ख़्वाब आलूदा नहीं होतीं और तेरे इल्म में हैं जिसमें फ़रो गुज़ाश्त नहीं होती लेहाज़ा जिन लोगों का मुझ पर कोई हक़ है उसका

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उन्हें एवज़ दे कर इसका बोझ मुझसे बरतरफ़ और इसका बार हल्का कर दे और मुझे फिर वैसे गुनाहों के इरतेकाब से बचाये रख।"

दूसरा दाइया यह है कि अल्लाह ने अपने क़हर व ग़ज़ब से गुनहगारों और मुजरिमों के लिये जो सज़ा व अक़ूबत तजवीज़ की है उसकी शिद्दत व सख़्ती का तसव्वुर करे, और जहन्नम के उन भड़कते हुए शोलों का नक़्शा अपनी आंखों के सामने जमाये कि जिनमें वह ईंधन की तरह जलता होगा और हर तरफ़ से सांप बिच्छू मुंह खोले हुए उस पर हमला आवर होंगे, और वहां न कोई फ़रियाद सुनने वाला होगा और न कोई इस अज़ाब से बचाने वाला होगा। चुनान्चे इमाम अ.लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :–

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं जहन्नम के उन बिच्छूओं से जिनके मुंह खुले होंगे और उन सांपों से जो दांतों को पीस पीस कर फुंकार रहे होंगे और उसके खौलते हुए पानी से जो अन्तड़ियों और दिलों के टुकड़े टुकड़े कर देगा और (सीनों को चीर कर) दिलों को निकाल लेगा।"

तीसरा दाइया यह है कि इस अम्र पर ग़ौर करे कि जब वह गर्म हवा के झोंकों से परेशान हो जाता है, और मच्छर ऐसे मामूली जानवरों के कांटने से चीख़ उठता है तो जब जहन्नुम के शोले उसकी तरफ़ लपकेंगे और सांप और बिच्छू उसे लपेटेंगे तो क्या वह क़हरे इलाही की भड़काई हुई आग की तपिश और ज़हरीले जानवरों के हमले को सह लेगा, और वहां के क़िस्म क़िस्म के अज़ाबों को बर्दाश्त कर लेगा। भला यह कहां मुम्किन है। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम जहन्नम के अज़ाब के मुक़ाबले में अपनी बेबसी व लाचारी का इज़्हार इस तरह फ़रमाते हैं :–

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "यह मेरा बेताब नफ़्स और बेक़रार हड्डियों का ढांचा जो सूरज की तपिश को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता तेरे जहन्नम की तेज़ी को कैसे बर्दाश्त करेगा और जो तेरे बादल की गरज से कांप उठता है वह तेरे ग़ज़ब की आवाज़ को कैसे सुन सकता है"।

चौथा दाइया यह है कि ख़ुदा की लामहदूद कूव्वतो ताक़त के मुक़ाबले में अपनी कमज़ोरी व लाचारी का तसव्वुर करे और सोचे कि वह इस पर हर तरह से कुदरत व अख़्तियार रखता है और जब चाहे और जिस तरह चाहे उसे अपनी गिरफ़्त में ले सकता है, और यह उसके अदना इशारे के सामने इतना भी नहीं ठहर सकता जितना एक तिन्का तूफ़ानी लहरों के सामने, और एक परेकाह तुन्द आंधियों के आगे, और ज़मीनो आसमान, समन्दर, पहाड़ ग़रज़ कायनात के किसी गोशे में पनाह नहीं ले सकता। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :—

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! अगर मैं भागना चाहूं तो तू मुझे ढूंढ़ लेगा और अगर राहे गुरेज़ अख़्तियार करूं तो तू मुझे पा लेगा। फिर देख मैं आजिज़ ज़लील और शिकस्ता हाल तेरे सामने खड़ा हूं।"

मोहर्रेकाते रिजा

पहला मोहर्रिक यह है कि अल्लाह की उन नेअमतों पर नज़र करे कि जिनके लिये न कुछ कहने सुनने की ज़रूरत पड़ी और न किसी सिफ़ारिश करने वाले की एहतियाज हुई बल्कि उसने अज़ ख़ुद परवरिश व तरबियत के तमाम सरो सामान मोहय्या कर दिये कि जो शिकमे मादर से ले कर ज़िन्दगी की आख़री सांसों तक हर ज़रूरत और हर हालत के मुताबिक़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मिलते रहते हैं। यह अन्दाज़े परवरिश व निगेहदाश्त और बख़्शीश व रहमत इन्सान को आख़रत की कामरानी से पुरउम्मीद कर दे सकती है। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम अल्लाह की रूबूबियत व शफ़क्क़त के सिलसिले में फ़रमाते हैं :–

(तरजुमा) "यहां तक कि तूने मुझे इस हद तक पहुंचा दिया। जहां मेरी सूरत की तक्मील हो गयी। फिर मेरे अन्दर आज़ा व जवारेह वदीअत किये जैसा कि तूने अपनी किताब में ज़िक्र किया है, कि (मैं) पहले नुत्फ़ा था, फिर मुनजमिद ख़ून हुआ, फिर गोश्त का एक लोथड़ा, फिर हड्डियों का एक ढांचा, फिर इन हड्डियों पर गोश्त की तहें चढ़ा दीं। फिर जैसा तूने चाहा एक दूसरी तरह की मख़लूक़ बना दिया और जब मैं तेरी रोज़ी का मोहताज हुआ और तेरे लुत्फ़ो एहसान की दस्तगीरी से बेनियाज़ न रह सका तो तूने उस बचे हुए खाने पानी में से जिसे तूने उस कनीज़ के लिये जारी किया था जिसके शिकम में तूने मुझे ठहराया और जिसके शिकम में मुझे वदिअत किया था मेरी रोज़ी का सरो सामान कर दिया।"

दूसरा मोहर्रिक यह है कि अल्लाह तआला के करम व फ़ैज़ान की हमागीरी पर नज़र करे कि उसने अपनी नेअमतों और बख़्शाइशों से न सिर्फ़ ज़िन्दगी की राहत व आसाइश और जिस्म की नशोनुमा का सामान किया बल्कि रूह की ततहीरे नफ़्स की इस्लाह और अख़लाक़ की तरबियत का भी लेहाज़ रखा और जिस्म व रूह की हर ज़रूरत को पूरा करके अपनी नेअमतों को तकमील की हद तक पहुंचा दिया तो जब दुनिया में उसका

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लुत्फ़ो एहसान इतना मुकम्मल और हमागीर है तो आख़रत में उसकी रहमत व राएफ़त और शफ़कत व मरहमत कितनी कामिल वसीअ और हमागीर होगी। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम उसकी नेअमत व बख़्शाइश के सिलसिले में फ़रमाते हैं :

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! मैं तेरी हम्द करता हूं और तू ही मेरे साथ अच्छे से अच्छा सुलूक करने और मुझ पर अपनी नेअमतों के कामिल करने और बड़े अतियों के मरहमत फ़रमाने और इस बिना पर कि तूने अपनी रहमत से मुझे ज़्यादा से ज़्यादा दिया और अपनी नेअमतों को मुझ पर तमाम किया, सज़ावारे हम्दो सना है। तूने मुझ पर वह एहसानात किये हैं जिनके शुक्र से मैं आजिज़ हूं और अगर तेरे एहसानात न होते और मुझ पर तेरी नेअमतें तमाम न होतीं तो मैं न अपना ख़त व नसीब हासिल कर सकता था और न अपने नफ़्स की इस्लाह कर सकता था। तूने मेरे साथ एहसानात में इब्तिदा की और तमाम उमूर में मुझे बेनयाज़ी अता फ़रमाई।"

तीसरा मोहर्रिक यह है कि अल्लाह की रहमत व राएफ़ते बेपायां पर नज़र करे कि उसने ("मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई हुई है"।) कह कर सब को अपने फ़ज़्ल व आतफ़त के साये में पनाह दी है, और गुनाहगारों और ख़ताकारों को अपनी आमरज़िश व रहमत की उम्मीद दिलाई है। तो उसकी वुसअते रहमत व वादए मग़फ़ेरत के बाद मायूसी के अन्धेरे छट जाते हैं और उम्मीद की किरनें जगमगाने लगती हैं। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "तू वह है जिसकी रहमत उसके ग़ज़ब से आगे चलती है और तू वह है जिसकी अतायें फ़ैज़ व अता के रोक लेने से ज़्यादा हैं और तू वह है जिसके दामने वुसअत में तमाम कायनाते हस्ती की समाई है।

चौथा मोहर्रिक यह है कि उसके अज्र व सवाब की वुसअत को देखे कि जिसे कभी दस गुना, कभी सात गुना, कभी उसका भी दोगुना और कभी बेहद व हिसाब से तअबीर किया है। तो क्या यह अजरे अज़ीम अमल का नतीजा और इस्तेहक़ाक़ का समरा है? ऐसा नहीं बल्कि यह उसकी बख़्शिश व इनाम है, और उसके जूद व करम का तक़ाज़ा है कि वह अमल व इस्तेहक़ाक़ से कहीं बढ़ चढ़ कर अज्र व जज़ा देता है। तो जब अज्र के सिलसिले में उसका फ़ज़्ल व एहसान इतना बढ़ा हुआ है तो वह गुनाहों और ख़ताओं से दरगुज़र करने में क्योंकर अपने तक़ाज़ाए करम से काम न लेगा। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम उसकी बख़्शिश व सवाब के सिलसिले में फ़रमाते हैं :

(तरजुमा) "तू वह है जिसने अपने बन्दों के लिये लेन देन में ऊँचे नरख़ों का ज़िम्मा लिया है और यह चाहा है कि वह जो सौदा तुझ से करें उसमें उन्हें नफ़ा हो और तेरी तरफ़ बढ़ने और ज़्यादा हासिल करने में कामयाब हों। चुनान्चे तूने कि जो मुबारक नाम वाला और बलन्द मक़ाम वाला है, फ़रमाया है कि जो नेकी ले कर आयेगा उसे उसका दस गुना अज्र मिलेगा।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सहीफ़े की जामेअयत

सहीफ़–ए–कामेला दुआओं और मुनाजातों का ही एक मजमूआ नहीं है बल्कि उलूहियत के रमूज़ व इसरारे उबूदियत के दुर्रहाय शहवार का एक ख़ज़ीनए आमरा है जो दिल व दिमाग़ को अज़मते इलाही के तसव्वुर से मामूर और काशानाए उबूदियत को जमाले हक़ीक़त के परतों से रौशन व पुरनूर कर देता है। इससे ख़ौफ़ व रिजा, महो व फ़ना, इश्क़ व जज़्ब, तस्लीम व रिज़ा और बसीरते आगही व इरफ़ाने हक़ीक़त के सोते उबल कर तशनगाने इल्मो इरफ़ान को सेराब करते और यक़ीन व तमानीनत के आबे हयात से क़ल्बो रूह की प्यास बुझाते हैं। इसके सफ़हात पर वह हक़ाएक़ व मआरिफ़ फैले हुए हैं जिनकी क़द्रो क़ीमत का अन्दाज़ा कुछ वही अफ़राद कर सकते हैं जिन्होंने फ़लसफ़ए इलाहियात की पुरपेच वादियों के चक्कर काटे हों और हिकमतो अख़लाक़ की ज़ख़ीम किताबों की वर्क़ गरदानी की हो! इसमें मुब्दा व मआद और दूसरे उसूले मज़हब को दुआइया पैराया में इस तरह बयान किया गया है कि हर अस्ल रूहे अक़ीदा बन कर दिल व दिमाग़ में उतर जाती और क़ल्ब व रूह में सराइयत कर जाती है। इसकी दुआयें और मुनाजातें कायनाते कुदरत व मज़ाहिरे फ़ितरत में ग़ौरो ख़ौज़ की दावत दे कर बसीरत पर जिला करती, शुकूक व शुबहात के धुंधलकों को छांट कर हक़ीक़त की तरफ़ रहनुमाई करती और मायूसी, पस्त हिम्मती और दिल शिगस्तगी के तसव्वुरात से अलाहिदा करके उम्मीद व रिजा और बलन्द हिम्मती व उलुल अज़मी के जज़्बात से आशना करती हैं। इन दुआओं में इलाहियाती व नफ़सियाती हक़ाएक़ के साथ इस्लाह मुआशिरा के उसूल, दीनदारी व ख़ुदा परस्ती के हिदायात, तहारते नफ़्स व पाकीज़गीए क़ल्ब के पैग़ामात और फ़िक्री व अख़लाक़ी इरतेक़ा के वह तालीमात भी पाये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जाते हैं जो इन्सान को उस बुलन्दी पर पहुंचा देते हैं जहां हिकमत व अख़लाक़ की ऊँची से ऊँची चोटियां उसके क़दमों के लिये गुज़रगाह बन जाती हैं और ज़िन्दगी का हर शोबा और फ़िक्रो अमल का हर गोशा दीनी व अख़लाक़ी तनवीरों से जगमगा उठता है।

सहीफ़े की ग़रज़ व ग़ायत

सहीफ़े का नसबुल ऐन और बुनियादी मक़सद यह है कि इन्सान में ख़ौफ़ व रिजा के जज़बात पैदा करके उसे रूहे इबादत से आशना करे और दुआये सहरगाही व नालए नीमशबी की लज़्ज़त से ज़ोक़े नियाज़मन्दी को तस्कीन बख़शे और तलब व दुआ और इज्ज़ो नयाज़ का सलीक़ा सिखाये और तहज़ीबे नफ़्स, पाकीज़गीए किरदार, तामीरे अख़लाक़, तशकीले सीरत और ततहीरे क़ल्बो रूह से इन्सानियत के जौहर निखारे और इस्लामी हक़ीक़तों को उनके सही ख़दो ख़ाल के साथ ज़ाहिर व आशकार करे। लेकिन यह मक़ासिद सिर्फ़ दुआओं के अल्फ़ाज़ दोहराने से हासिल नहीं हो सकते जब तक उनके माने व मतालिब पर नज़र न हो। और उसके साथ तलब व दुआ में जोश व वलवला और दिल में क़स्द व इरादा भी ज़रूरी है, और अगर सिर्फ़ अल्फ़ाज़ की तरकीब व तरबियत पर इक्तेफ़ा कर ली जाये और माने व मफ़हूम के समझने की ज़रूरत न समझी जाये तो फिर नीयत व इरादे के बग़ैर भी दुआयें कुबूल हो जाया करतीं और क़स्द व ख़्वाहिश के बग़ैर भी सीरत व किरदार में हुस्न पैदा हो जाया करता, और ऐसा होता तो यह शोबदागरी का एक करिश्मा होता किसी तलब व तास्सुर का नतीजा न होता। हां अगर क़स्द व तलब के साथ अल्फ़ाज़ भी मौक़े व महल के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुनासिब और रिफ़अत उलूहियत के शायाने शान हों तो कुबूलियत में मोईन और इस्तेजाबत पर असरअन्दाज़ हो सकते हैं और अलल ख़ुसूस वह अल्फ़ाज़ जो उन ख़ासाने ख़ुदा की ज़बान से निकले हों जो उबूदियत के रम्ज़ आशना, उलूहियत के अदाशिनास और बारगाहे रुबूबियत में आदाबे कलाम से वाक़िफ़ हों और माने व मफ़हूम के समझने के साथ अगर तलब व दुआ के आदाब व शराएत और विर्द व मुनाजात के औक़ात व लम्हात भी मलहूज़ रखे जायें तो दुआ की असर अंगेज़ी और बढ़ जायेगी और इस्तजाबत व कुबूलियत से जल्द हमकिनार होगी, लेहाज़ा इस मक़सद व मफ़ाद और मौज़ूए सहीफ़ा को देखते हुए मुनासिब मालूम होता है कि कुरआन व सुन्नत और आइम्मए मासूमीन[अ०] के इरशादात की रौशनी में दुआ के आदाब व शराएत बयान किये जायें और इसकी ज़रूरत व अहमियत को भी वाज़ेह किया जाये और इस सिलसिले में जो ईरादात वारिद किये जाते हैं उनका भी एक हद तक इज़ाला कर दिया जाये।

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह व बेहिस्तईन

दुआ का मफ़हूम

दुआ के लग़वी माने बुलाने और पुकारने के हैं और उर्फ़ में अल्लाह से राज़ो नियाज़ और बारगाहे उलूहियत में मक़सद व हाजत के पेश करने को कहते हैं, और कभी इन कलमात पर भी दुआ का इतलाक़ होता है जो सिर्फ़ हम्द व सनाये इलाही पर मुश्तमिल होते हैं और उनमें तलब व सवाल और अर्ज़े हाल की सूरत नहीं होती। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "बेहतरीन दुआ मेरी औरमुझसे पहले नबियों की दुआ है और वह यह है कि कोई मअबूद नहीं सिवाये अल्लाह के जो यकता व लाशरीक है। उसी के लिये शाही व जहांदारी है और उसी के लिये हम्द व सताइश है। वह ज़िन्दगी व मौत देने वाला है और वह ऐसा ज़िन्दा है जिसके लिये मौत नहीं। उसके हाथ में भलाई ही भलाई है और हर चीज़ पर उसे कुदरत हासिल है"।

इन तहमीदी कलमात को दुआ से इस लिये तअबीर किया गया है कि तारीफ़ व सताइश के अन्दर तलब व सवाल का पहलू भी पिन्हा होता है। अगरचे इसकी नौइयत सवाल की नहीं होती, मगर तलब व सवाल से ख़ाली भी नहीं होती, और यह तलब व अर्ज़ हाजत का एक लतीफ़ अन्दाज़ है जिसके बाद खुले अल्फ़ाज़ में अर्ज़ व सवाल की एहतेयाज नहीं रहती। और सुनने वाला मज़ीद कुछ कहने की ज़रूरत महसूस नहीं करता। चुनान्चे अगर कोई शख़्स किसी दौलतमन्द के जूदो सख़ा की तारीफ़ करते हुए अपनी मोहताजी व बेमाएगी का ज़िक्र करे तो उसके बाद यह कहने की ज़रूरत ही क्या है कि उसकी लबतशनगी उसके सरचश्मए जूदो सख़ा से सेराबी की तलबगार है जब कि इस मदह व तौसीफ़ और अपनी बेनवाई के ज़िक्र के बाद सवाल मख़फ़ी नहीं रहा। इस मतलब की तरफ़ उमय्या इबने अबीउल सलत अपने इस शेर में जो इबने जिज़आन की मदह में कहा है इशारा किया है :—

(तरजुमा) "जब कोई शख़्स तुम्हारी मदह व सना करता है तो यह मदह व सना उसे दस्ते तलब बढ़ाने से बेनयाज़ कर देती है"।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इसी तरह अगर कोई शख़्स अल्लाह की बारगाह में अपनी एहतेयाज व बेनवाई और उसके फ़ैज़ाने करम और शाने इसतग़ना व बेनयाज़ी का तज़किरा करे तो उसके बाद कौन–सी बात रह जाती है जो तलब के सिलसिले में न कही गयी हो, कि अब कहने की ज़रूरत महसूस हो बल्कि यही मदह व तौसीफ़ ऐने तलब व सवाल है।

दुआ का हुक्म

अल्लाह सुबहानहू ने अपनी बहुत सी बख़्शिशों और नेअमतों को दुआ से वाबस्ता किया है और यह उसका लुत्फ़ो एहसान है कि उसने न सिर्फ़ दुआ की तरफ़ रहनुमाई की बल्कि हुक्मन दुआ का फ़रीज़ा आयद कर दिया ताकि उसके बन्दे उसके फ़ैज़ाने करम से बहरामन्द और उसके इनआम व बख़शिश से दामने मुराद भरते रहें। चुनान्चे कुरआन व हदीस व आसारे आईम्मए ताहेरीन[अ०] में दुआ के मुतअल्लिक़ बड़ी ताकीद वारिद हुई है, और हर तरह से उस पर तरग़ीब व तहरीस दिलाई गयी है। चुनानचे इरशादे इलाही है :

(तरजुमा) (1)"जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुम से पूछें तो कह दो कि मैं उनके पास ही तो हूं और जब कोई मुझसे दुआ मांगता है तो मैं दुआ करने वाले की दुआ को सुनता और (मुनासिब होता है तो) कुबूल करता हूं।"

(तरजुमा) (2)"वह कौन है कि जब मुज़तर व लाचार उसे पुकारे तो वह सुनता है और हर दुख दर्द को दूर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करता है।"

(तरजुमा) (3)"तुम्हारा परवरदिगार फ़रमाता है कि मुझ से दुआ मांगो मैं तुम्हारी दुआ कु़बूल करूंगा।"

(तरजुमा) (4)"तुम अपने परवर दिगार को तज़र्रो व आजिज़ी के साथ और चुपके चुपके पुकारो।"

(तरजुमा) (5)"वही तो हमेशा रहने वाला है जिसके सिवा कोई मअबूदे बरहक़ नहीं। लेहाज़ा तुम सिदक़े नीय्यत से एबादत करके उससे दुआ मांगो।"

पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है:

(तरजुमा) "दुआ मोमिन का हथियार और दीन का सुतून है"

अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम का इरशाद है:

(तरजुमा) "दुआ मोमिन की सिपर है। जब तुम बार बार दरवाज़ा खटखटाओगे तो वह तुम्हारे लिये खोल दिया जायेगा।"

इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "दुआ बला व मुसीबत को टाल देती है।"

इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "बेहतरीन एबादत दुआ है"।

इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "दुआ तेज़ धार वाली अनी से भी ज़्यादा मोअस्सिर व कारगर होती है"।

इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "तुम्हें लाज़मन् दुआ मांगना चाहिये क्योंकि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अल्लाह से तलब व दुआ बला व मुसीबत को बरतरफ़ कर देती है।"

इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "तुम्हें अम्बिया के हथियार से आरास्ता होना चाहिये, पूछा गया कि वह हथियार क्या है? फ़रमाया दुआ"!

इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "दुआ रद्दे बला का ज़रिया है।"

दुआ की हमागीरी व फ़ितरी अहमीय्यत

हर शख़्स दुआ की ज़रूरत को शिद्दत से महसूस करता है और जिस चीज़ की ज़रूरत का एहसास शदीद हो वह अपने मक़ाम पर एक मुसल्लमा हक़ीक़त की हामिल और इन्सान की फ़ितरी तलब और क़ुदरती ख़्वाहिश होती है, और अगर इसकी ज़रूरत व अहमियत पर कोई दलील क़ायम न भी की जा सके जब भी उसकी वाक़ियत में कोई शुबहा नहीं हो सकता और न उसके बारे में इत्मिनान व ईक़ान में कोई फ़र्क़ पड़ सकता है। इस लिये फ़ितरत की हमआहन्गी ख़ुद सब से बड़ी दलील है चे जाए कि उसकी अहम्मियत पर फ़ितरत व वजदान की शहादत के अलावा बेशुमार दलाएल भी क़ायम हो चुके हैं। चुनान्चे उसकी अहम्मियत के सुबूत के लिये यह काफ़ी है कि एबादात में सबसे बड़ी एबादत नमाज़ है और वह भी तलबे दुआ पर मुश्तमिल है। जिसे हर रोज़ कम अज़ कम पांच मर्तबा बजा लाना ज़रूरी है, और अफ़कारे नमाज़ में सबसे अहम सूर–ए–फ़ातेहा है। और वह सरापा दुआ है और कुर्आने मजीद में आदम[अ०], नूह[अ०], इब्राहीम[अ०], याक़ूब[अ०], यूसुफ़[अ०],

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अय्यूब[अ०], शुऐब[अ०], यूनुस[अ०], ज़करिया[अ०], सुलेमान[अ०], मूसा[अ०], ईसा[अ०] और ख़ुद नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की दुआओं का तज़किरा है, और उनके अलावा आसिया ज़ने फ़िर्औन सहरा मिस्र, लश्करे तालूत, असहाबे कहफ़ और दीगर अहले ईमान की दुआओं का ज़िक्र है। जिससे यह हक़ीक़त वाज़ेह हो जाती है कि दुआ अम्बिया की सीरत, औलिया का शेवा और ख़ासाने ख़ुदा का दस्तूर है। अलावा अज़ीं यह सिर्फ़ मिल्लते इस्लामिया ही का शआर नहीं है बल्कि तमाम मलल व अदयान इसे रूहें नियाज़मन्दी व हुस्ने उबूदियत समझते हैं। और फ़िक्रो अमल के इख़्तेलाफ़ के बावजूद इस नज़रिये पर यकजेहती से मुत्तफ़िक़ हैं कि कोई पुकार सुनने वाला है उसे पुकारना चाहिये, और कोई दुख दर्द का मदावा करने वाला है उससे चारासाज़ी की इल्तेजा करना चाहिये। चुनान्चे ज़बूर के तराने, तौरात के नग़मे, इन्जील के ज़मज़मे, शाम वेद और श्रीमद् भगवत की प्रार्थनाएं, ग्रन्थ सप्रा और गीता की उपासनायें और ज़िन्दा व सता में ज़रदिश्त की गाथायें और दूसरे अदयाने आलम के मुक़द्दस सहीफ़ों की दुआयें इसकी शाहिद हैं, और इस्लाम में फ़रीज़ए दुआ की इतनी अहमियत है कि इसके तर्क पर जहन्नम की वईद तक वारिद हुई है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :

(तरजुमा) "मुझसे दुआ मांगों मैं क़ुबूल करूंगा। वह लोग जो ग़ुरूर व तकब्बुर की वजह से मेरी एबादत से मुंह मोड़ लेते हैं वह ज़लील हो कर जहन्नम वासिल होंगे।"

मुफ़स्सेरीन ने इस आयत में एबादत से दुआ को मुराद लिया है। क्योंकि दुआ एबादत ही का एक शोबा है और इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम भी इसकी ताईद में फ़रमाते हैं :

(तरजुमा) "तूने दुआ का नाम एबादत रखा है और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इसके तर्क को गुरूर से ताबीर किया है और इसके तर्क पर जहन्नुम में ज़लील हो कर दाख़िल होने से डराया है।"

दुआ के नफ़सियाती फ़वायद

यह हक़ीक़त है कि इन्सान जिस क़द्र अपने नफ़सियात पर क़ाबू रखता है उसी क़द्र इज्तेमाए ख़यालात पर क़ादिर होता है, और यह दिलो दिमाग़ की यक–सूई और ख़यालात की हमआहन्गी क़ूव्वते इरादी की बुनियाद है। इस क़ूव्वत की हक़ीक़त कुछ भी हो लेकिन इससे इन्कार नहीं हो सकता और तजरूबा शाहिद है कि अपने मक़सद में उमूमन वही लोग कामयाब होते हैं जो इस ताक़त के हामिल होते हैं। इसके बरख़िलाफ़ परागन्दा ख़याल लोग ख़यालात की उधेड़बुन में अपनी ज़िन्दगी ख़त्म कर देते हैं और मंज़िले मक़सूद तक रसाई उन्हें नसीब नहीं होती। इस क़ूव्वते इरादी को मज़बूत व मुस्तहकम करने के लिये यक़ीन की ज़रूरत है, क्योंकि इरादे की पुख़्तगी यक़ीन की मज़बूती से वाबस्ता है इस लिये कि मशकूक व ग़ैर यक़ीनी चीज़ों से इरादे का हत्मी तअल्लुक़ नहीं होता। लेहाज़ा जब तक यक़ीने कामिल न होगा इरादा भी कामिल नहीं हो सकता, और मक़सद के हुसूल के लिये जो असबाब दरकार हैं उनके अनासिर सिर्फ़ दो हैं। एक इरादा और दूसरे यक़ीन। लेकिन हर शख़्स में यह क़ूव्वत व ताक़त नहीं होती कि वह उन्हें बराहे रास्त हासिल कर ले जाये, इस लिये एक ऐसी चीज़ की ज़रूरत है जो दिल व दिमाग़ को अज़्म व यक़ीन के कैफ़ियात क़ुबूल करने के क़ाबिल बना सके, और वह दुआ है जो उन दोनों के मजमूए की मंज़िल तक पहुंचाने में मोईन साबित होती है। वह इस तरह कि दुआ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

की अस्ल हक़ीक़त मुब्दा–ए–कायनात से राब्ता पैदा करना और उसकी कूव्वत व ताक़त को देखते हुए कि वह हर हाजत के पूरा करने और हर मुश्किल के हल करने पर क़ादिर है, उससे अपनी हाजतों और आरज़ूओं को वाबस्ता कर देता है और ज्यों ज्यों यह राबता और हल मुश्किलात पर उसकी कुदरत का तसव्वुर मज़बूत होता है शुकूक के धुंधलिके छंटते और यक़ीन की शुआयें चमकने लगती हैं और ख़यालात इधर उधर भटकने और मुख़्तलिफ़ आस्तानों की तरफ़ मुड़ने के बजाये एक मरकज़ पर जमा हो जाते हैं, जिसके नतीजे में एक मुतज़बज़ब व ग़ैर मुस्तक़िल मिज़ाज शख़्स जो हर चीज़ में शुकूक पैदा करने का आदी और फ़िक्री इस्तेक़ामत से महरूम हो चुका होता है यक़ीनात के लिये अपने दिल व दिमाग़ में जगह पैदा कर लेता है। इसी तरह तमाम ज़राए से मुंह मोड़ने और सिर्फ़ एक मरकज़े उम्मीद से वाबस्ता होने से जो ज़ेहन में यकजेहती व हमआहन्गी पैदा होती हे इससे ख़यालात मुजतमअ करने की कूव्वतें उभर आती हैं जिसका नतीजा कूव्वते इरादी के इस्तेहकाम की सूरत में ज़ाहिर होता है। ग़र्ज़ दुआ, अज़्म व यक़ीन का सरचश्मा और अज़्म व यक़ीन काम्याबी का संगे बुनियाद हैं।

दुआ का दूसरा अफ़ादी पहलू यह है कि इन्सान को लाज़िमन अपनी ज़िन्दगी के नशेबो फ़राज़ में ऐसे लम्हात से दो चार होना पड़ता है जिनमें तमन्नायें और आरज़ूएं यास की चट्टानों से टकरा कर पाश पाश हो जाती हैं और इज़्तेराब को तसल्ली देने के तमाम सहारे और उम्मीदों के सारे बन्धन एक एक करके टूट जाते हैं। इस नामुरादी व परेशानी के आलम में इनसान फ़ितरतन् कोई सहारा ढूंढता है जो उसके क़लक़ व इज़्तेराब के लिये तसल्ली व तस्कीन का सामान फ़राहम करे, और अगर वह यह फ़ैसला कर ले कि अब कोई चीज़ उसे बचा नहीं सकती तो फिर उसके पास कौन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सा सहारा रह जाता है जो उसका हाथ थाम कर उसे ज़िन्दगी की शाहेराह पर खड़ा करे और यास के घटाटोप अन्धेरों में उसे उम्मीद का चिराग़ दिखाये और अगर इस लाचारी व दरमान्दगी की हालत में यह यक़ीन हो कि एक बालादस्त ताक़त इस उलझन व परेशानी से निकाल ले जा सकती है तो उसकी तरफ़ रूजूअ होने से मज़बूत तर सहारा कौन हो सकता है। चुनान्चे यह यक़ीन ही वह चीज़ है जो परेशानियों के बादलों को छांट देता है और दुनिया की पैहम नाकामियों के बाद भी मायूस नहीं होने देता और वह नाकामियों और नामुरादियों के हुजूम में अंजामकार की कामयाबी का यक़ीन लिये हुए अल्लाह की चारासाज़ियों का उम्मीदवार रहता है। चुनान्चे जब सब्रे इन्सानी की बिसात उलट जाती है और मताए सुकून लुट चुकता है और कामयाबी व कामरानी के तमाम ज़राए मसदूद और वसाएल नापैद हो जाते हैं तो उस वक़्त कर्ब व इज़्तेराब की हालत में अल्लाह तआला को पुकारना, इज्ज़ो इलहाह का हाथ उठाना और दर्दो–ग़म रूदाद और रंजो अलम की दास्तान उसे सुनाना दिल के लिये सरमायाए तस्कीन साबित होता है, और यास व कुनूतियत को उम्मीद व रिजा से बदल देता है, जिससे इन्सान अपनी पाशान व परेशान कूव्वतों को यकजा करके नये अज़्म व इरादे के साथ हवादिस से टकराने के लिये आमादा हो जाता है और हिम्मत शिकनी के हौलनाक ग़ार में गिरने से अपने को बचा ले जाता है।

दुआ का तीसरा फ़ायदा यह है कि इससे अब्दो मअबूद का रिश्ता उस्तवार और उबूदियत व उलूहियत का राबेता मज़बूत व मुस्तहकम होता है। क्योंकि जब सारे सहारे ख़त्म हो जाते हैं और हर तरफ़ उम्मीद के दिये बुझे बुझे नज़र आते हैं और ज़ाते मअबूद के अलावा और कोई मरकज़े उम्मीद दिखाई नहीं देता तो एहतियाज व बेमाएगी का एहसास और इज्ज़ो बेकसी का जज़बा दिलो दिमाग़ को उसके जलाल व जबरूत से मुतास्सिर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करके उसके दरवाज़े पर झुका देता है और इन्सान के सोये हुए वजदान को झिंझोड़ कर बेदार कर देता है जिसके नतीजे में वह तमाम अलाएक़ व असबाब से बेनयाज़ हो कर उसे ही पुकारेगा और उसी से अपने दर्द का दरमान चाहेगा और इस तलब व दुआ के ज़रिये उससे लौ लगाये रहेगा और यह रब्त और लगाव उसे तक़र्रुबे मअबूद के आला मदारिज पर पहुंचा देगा।

दुआ का चौथा फ़ायदा यह है कि उससे ख़ुदा की कूव्वत व ताक़त पर एतमाद में इज़ाफ़ा होता है और ख़ुद अपनी कूव्वत व तवानाई पर से भरोसा ख़त्म हो जाता है। चुनान्चे जब इन्सान दुआ के नतीजे में किसी मुसीबत से छुटकारा या किसी मक़सद में काम्याबी हासिल करता है तो उसे यक़ीन हो जाता है कि यह सब कुछ कुदरत की कारफ़रमाई व कारसाज़ी का नतीजा है जिसमें ख़ुद उसकी कूव्वत व ताक़त और कारकर्दगी का ज़र्रा नहीं है। इसके नतीजे में वह हर मौक़े पर कुदरत की कूव्वत व ताक़त और कारसाज़ी पर भरोसा करने का ख़ूगर हो जाता है और अपनी कमज़ोरी व लाचारी को देखते हुए किसी मरहले पर अपनी कूव्वत व ताक़त पर एतमाद नहीं करता और अस्ल जौहरे उबूदियत यही है कि इन्सान कुल्लियतन अल्लाह तआला की बालादस्ती पर यक़ीन रखे और अपनी ताक़त व तवानाई पर से एतमाद ख़त्म कर दे और यह दुआ का एक लाज़मी असर है।

दुआ का पांचवां फ़ायदा यह है कि इससे किबरो अनानियत की तूफ़ान अंगेज़ियां और तमर्रुद व सरकशी की तुग़यानियां दब कर रह जाती हैं। क्योंकि तलब व सवाल के मौक़े पर ऐसे हरकात व आमाल का मुज़ाहरा किया जाता है जो सरासर इज्ज़ो नयाज़ और तज़ल्लुल व इन्केसार के हामिल होते हैं, जैसे हाथों को ऊपर उठाना, गिड़गिड़ा कर मांगना, अपने इज्ज़ो कुसूर का एतराफ़ और बेबज़ाअती व लाचारी का इज़हार करना। यह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तमाम चीज़ें मुतमर्रिदाना ख़्यालात व जज़बात को फ़ना कर देती हैं और नतीजे में तमाम आमाल व अफ़कार इज्ज़ो नयाज़ के सांचे में ढल जाते हैं।

एक शुब्हा और उसका हल

दुआ के सिलसिले में यह शुब्हा आम तौर से वारिद किया जाता है कि जब ख़ुदा वन्दे आलम ने कुर्आन मजीद में कुबूलियते दुआ का वादा किया है तो फिर हर दुआ को कुबूल होना चाहिये हालांकि देखा यह जाता है कि बहुत से दुआ मांगने वाले मुद्दतों तलब व अलहाह के बावजूद अपने मक़सद में कामयाब नहीं होते और उनकी तमाम दुआयें सदा ब–सहरा साबित होती हैं। क्या यह अल्लाह तआला के इरशाद "ख़ुदा अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता" के मनाफ़ी नहीं है?

इस शुब्हे का जवाब यह है कि कुरआनी आयात दो किस्म के हैं : एक मुतलक़ और दूसरे मुक़य्यद :– मुतलक़ वह हैं जिनमें कोई तक़ीयद व पाबन्दी न हो जैसे "मुझसे दुआ मांगो मैं कुबूल करूंगा" इसमें कुबूलियत के लिये कोई कैद व पाबन्दी नहीं है, और मुक़य्यद वह हैं जिनमें कोई तक़ीयद व पाबन्दी हो जैसे "बल्कि तुम उसी से दुआ मांगते हो, अगर वह चाहे तो तुम्हारी दुआ को कुबूल करे" इसमें कुबूयिलते दुआ को मशीय्यते इलाही की कैद से वाबस्ता किया गया है। और जब एक ही चीज़ के लिये मुतलक़ और मुक़य्यद दोनों किस्म की आयतें हों तो तक़ीयद को एक तौज़ीही बयान तसव्वुर करते हुए मुतलक़ आयतों के अन्दर भी तक़ीयद का वजूद माना जाया करता है। लेहाज़ा जिन आयात में कुबूलियते दुआ का वादा कैदे मशीय्यत का पाबन्द नहीं है उनमें भी मशीय्यत की पाबन्दी लाज़िमन् मुतसव्वुर होगी। अगरचे ख़ुद इनमें यह तक़ीयद नहीं है मगर एक आयत में तक़ीयद का होना इसका सुबूत है कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुतलक़ आयतें भी इस तक़ीयद के हुदूद में हैं तो जब कुबूलियते दुआ मशीय्यते इलाही की पाबन्द है तो पेशकर्दा शुब्हा ख़त्म हो जाता है, क्योंकि जहां मशीयते इलाही दुआ की कुबूलियत से मुतअल्लिक़ होगी वहां दुआ कुबूल हो जायगी और जहां मशीय्यत मुक़तज़ी न होगी वहां रद्द हो जायेगी, और अल्लाह सुबहानहू पर यह पाबन्दी आयद नहीं की जा सकती कि वह हर दुआ को ज़रूर कुबूल करे। अगर ऐसा हो तो फिर जहां दो दुआयें बाहम मुतसादिम होंगी इस तरह कि एक शख़्स एक चीज़ का "होना" चाहे, और दूसरा उसका "न होना" चाहे तो वहां इन दोनों मुतज़ाद चीज़ों को क्योंकर जमा किया जा सकता है जब कि यह अम्र वाज़ेह है कि हस्त और नीस्त को जमा नहीं किया जा सकता, और अगर यह कहा जाये कि ख़ुदा वन्दे आलम तो हर चीज़ पर क़ादिर है और कोई चीज़ उसके अहातए कुदरत से बाहर नहीं है तो क्या वह ऐसा नहीं कर दे सकता कि हस्त व नीस्त को जमा कर दे तो यह सही नहीं है। इस लिये कुदरत का तअल्लुक़ सिर्फ़ उन्हीं चीज़ों से होता है जिनका वक़ूअ मुम्किन हो, और जिस चीज़ का वक़ूअ अक़लन मोहाल हो उससे कुदरत का तअल्लुक़ भी नहीं होता। लेहाज़ा ऐसी चीज़ का उसे पाबन्द नहीं क़रार दिया जा सकता जिसकी अक़्ल में कोई गुंजाइश न हो।

अदमे कुबूलियते दुआ के वजूह व असबाब

जब दुआ की मक़बूलियत मसलहते इलाही से वाबस्ता है, तो फिर जहां मसलहते कुबूलियत की मुक़तज़ी होगी वहां दुआ कुबूल होगी और जहां मसलहत उसके ख़िलाफ़ की मुक़तज़ी होगी वहां दुआ रद कर दी जायेगी। यह मसलहते इलाही मुख़्तलिफ़ एतबारात से कुबूलियत में माने होती है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कभी इस लिये कि दुआ मांगने वाला अपने नफ़अ व नुक़सान से बेख़बर होने की वजह से जिसमें बज़ाहिर कोई फ़ायदा या ख़ूबी देखता है उसे अल्लाह से तलब करता है। लेकिन वाक़ेअ में वह चीज़ उसके लिये मुज़िर व नुक़सानदेह साबित होती है। चुनान्चे कुदरत का इरशाद है :

(तरजुमा) "बसा अवक़ात इन्सान बुराई की दुआ इस तरह मांगता है जिस तरह अपने लिये भलाई की दुआ करता है (हालांकि वह यह नहीं जानता कि यह बुराई है) और इन्सान तो बड़ा ही जल्दबाज़ है।"

ऐसी सूरत में इसके सवाल को रद् करने ही में उसकी भलाई मुज़मिर होगी औरइससे वादए इलाही पर आंच नहीं आ सकती। इस लिये कि उसने साएल की मसलेहत को नज़र अन्दाज़ करके कुबूलियते दुआ का वादा नहीं किया। चुनान्चे अगर कोई शख़्स यह कहे कि मैं किसी साएल को नाकाम नहीं फेरूंगा और उसके सामने एक ऐसा साएल आ जाता है जो अपनी कम अक़ली और नाफ़हमी की वजह से ऐसी चीज़ का सवाल करता है जो वाक़े में उसके लिये मोहलिक व तबाहकुन होती है तो अगर वह शख़्स उसके सवाल को पूरा न करे और उसकी ख़्वाहिश को ठुकरा दे, तो यह वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी मुतसव्विर न होगी क्योंकि वादा करते वक़्त उसके पेशे नज़र साएल की बहबूदी थी न कि उसकी हलाकत व तबाही। बल्कि ऐसी सूरत में साएल के सवाल को पूरा करना अक़्ल के नज़दीक एक क़ाबिले मज़ममत फ़ेल होगा और इससे यही कहा जायेगा कि तुमने क्यों उसके ऐसे सवाल को पूरा किया जो उसके लिये मोहलिक व मुज़िर था और यह कोई न कहेगा कि तुमने क्यों अपने वादे के ख़िलाफ़ किया! और कभी मसलहत इस लिये कुबूलियत में मानेअ होती है कि अगर दुआ मांगने वाले की दुआ को कुबूल कर लिया जाये तो वह उसके किसी और अहम मक़सद में रूकावट

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पैदा कर देगा या उसके किसी मफ़ाद के लिये ज़रर रसां होगा। या ख़ुद उसके मफ़ाद के लिये तो ज़रर रसां नहीं मगर मफ़ादे उमूमी को इससे नुक़सान पहुंचता है। तो इस सूरत में मफ़ाद नवई को मफ़ाद शख़्सी पर तरजीह दे कर उसकी दुआ को रद्द कर दिया जायेगा और कभी अफ़आले नाशाइस्ता जैसे झूठ, ज़ुल्म, ग़स्बे हुक़ूक़, अकले हराम, तर्क वाजबात वग़ैरा क़ुबूलियत में सद्देराह हो जाते हैं! क्योंकि यह चीज़ें ख़ुलूस नीय्यत हुस्ने किरदार और सिदक़े अमल के मनाफ़ी हैं और क़ुबूलियत व इस्तेजाबते दुआ के लिये आमाल की पाकीज़गी अज़ बस ज़रूरी है चुनान्चे अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "जो अमल नहीं करता और दुआ मांगता है वह ऐसा है जैसे बग़ैर चिल्ल–ए–कमान के तीर चलाने वाला।"

बिला शुब्हा अमल के बग़ैर दुआ करना ऐसा ही है जैसे कोई मरज़ के लिये दवा तो इस्तेमाल करे मगर उसके साथ ऐसी चीज़ें भी खाता पीता रहे जो उस दवा के असर को ज़ायल कर दें या एक तरफ़ ज़मीन में खेती बोये और दूसरी तरफ़ उसमें मवेशी छोड़ दे जो उसे रौंदें और पामाल करें कभी हिक्मत व मसलहत दवा के तिब्बी असरात की तरह दुआ के नताएज को ख़त्म कर देती है और जिस तरह निज़ाअ के वक़्त उमूमन दवा कारगर नहीं होती उसी तरह दुआ भी बेअसर हो कर रह जाती है, और कभी मसलहत कुछ अर्से के लिये क़ुबूलियत को ताख़ीर में डाल देती है ताकि जब मुनासिब मौक़े व महल आये उसकी हाजत को पूरा किया जाये। मगर इन्सान अपनी तबिअत के लिहाज़ से चूंकि जल्द बाज़ वाक़े हुआ है, वह चाहता है कि उसकी हर ख़्वाहिश जल्द से जल्द पूरी हो जाये, इस लिये वह इस ताख़ीर से घबराकर चीख़ उठता है। हालांकि जब बाद में क़ुबूलियत के मौक़े व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

महल को देखता है, तो यह एतराफ़ करने पर मजबूर हो जाता है कि अगर इस मौक़े पर उसकी दुआ कुबूल हो जाती तो वह फ़वाएद व नताएज जो अब मुरत्तब हो रहे हैं उस वक़्त मुरत्तब नहीं हो सकते थे, और इस तावीक़ की एक वजह यह भी होती है कि अल्लाह तआला को दुआ मांगने वाले की लगन भा जाती है और वह यह चाहता है कि बन्दा इसी तरह से दुआ मांगता और दामन फैलाता रहे, और कभी इस ताख़ीर से उसके सब्र और अल्लाह तआला से उसकी वाबस्तगी की आज़माइश मक़सूद होती है कि वह कुबूलियते दुआ से मायूस हो कर अल्लाह तआला से अपना रिश्ता तो नहीं तोड़ता, और उससे रूख़ मोड़ कर ग़ैर के दर पर जबासाई तो नहीं करता। लेहाज़ा कुबूलियत में अगर ताख़ीर हो तो उसकी रहमत व राएफ़त से मायूस न होना चाहिये। इस लिये कि करीम के दर पर पुकारने वाला कभी नाकाम नहीं रहता। एक न एक दिन उसकी सुनी जायेगी और मुंह मांगी मुराद उसे मिलेगी। लेहाज़ा कुबूलियत व अदमे कुबूलियत को अल्लाह पर छोड़ कर उससे अपनी हाजत मांगता रहे और अपना दुख दर्द उसे सुनाता रहे और अबूदियत व नियाज़मन्दी का तक़ाज़ा भी यही है कि हम उसे पुकारें, उसके दर पर सदा दें,। उसके आगे झोली फैलायें। क़तअ नज़र इसके कि हमारी झोली में कुछ पड़ता है या नहीं, हमारी पुकार की सुनवाई होती है या नहीं। अगर नहीं होती तो ऐसा नहीं है कि उस के करम व जूद का तक़ाज़ा बदल गया है। बल्कि यह महरूमी हमारी कोताही व तंग दामानी का नतीजा है।

अगर बज़ुल्फ़े दराज़े तो दस्ते मानेरसद
गुनाहे बख़्ते परेशान व दस्ते कोता मास्त

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुनकरीन दुआ के शुब्हात और उनका रद्द

बाअज़ हुक्मा व मुतफ़लसफ़ीने दुआ की अफ़ादियत के मुन्किर और उसे बेज़रूरत समझते हैं, और असबाते मुद्दआ के लिये चन्द दलीलनुमा शुबहात पेश करते हैं जिनका तजज़िया किया जाये तो उनका कोई वज़्न बाक़ी नहीं रहता। चुनान्चे उनकी पहली और सबसे बड़ी दलील यह है कि हर चीज़ के वक़ूअ का इल्म पहले ही से अल्लाह को होता है और वह तमाम वाक़िआत व हवादिस को क़ब्ले वक़ूअ जानता है, और जिस चीज़ के वक़ूअ व अदमे वक़ूअ पर उसका इल्म हावी हो उसके लिये दुआ मांगना एक बेनतीजा कोशिश है। क्योंकि इल्मे इलाही पर असरअन्दाज़ हो कर होने वाली चीज़ को रोक नहीं सकती और न होने वाली चीज़ को वजूद में नहीं ला सकती और अगर ऐसा हो तो क़ुदरत के लिये जेहालत लाज़िम आयेगी। क्योंकि उसके इल्म में या तो यह था कि यह चीज़ वाक़ेअ नहीं होगी मगर दुआ की वजह से वह वाक़ेअ हो गयी या यह कि उसके इल्म में यह था कि यह चीज़ वाक़ेअ होगी मगर दुआ उसके लिये माने हो गई। लेहाज़ा या तो दुआ की अफ़ादियत से इन्कार कीजिये या अल्लाह के लिये जेहालत को तजवीज़ कीजिये। (मआज़ अल्लाह)

यह शुब्हा एक ग़लत नज़रिये पर क़ायम किया गया है और वह यह कि उसके इल्म को मालूम का सबब क़रार दे लिया गया है हालांकि मालूम का वक़ूअ इस लिहाज़ से उसके इल्म से वाबस्ता नहीं है कि वह उसका सबब हो क्योंकि इल्म सिर्फ़ मालूम के ज़हूर व इन्केशाफ़ का नाम है और उसे मालूम के वक़ूअ व अदम वक़ूअ से कोई वास्ता नहीं होता। चुनान्चे हमें अगर यह इल्म हो कि फ़लां ज़मीन ज़रख़ेज़ है और फ़लां बंजर या फ़लां कुंए का पानी मीठा है और फ़लां कुंए का पानी शोर, तो हमारा इल्म ज़रख़ेज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

को ज़रख़ेज़ और बंजर को बंजर और मीठे को मीठा और शोर को शोर नहीं बनाता। इसी तरह एक मुनज्जिम अगर यह ख़बर देता है कि कल बारिश होगी और उसके इल्म के मुताबिक़ बारिश हो भी जाये तो इस इल्म को बारिश होने या न होने से कोई तअल्लुक़ न होगा। यह बारिश तो उस वक़्त भी होती जब उसे बारिश के मुताल्लिक़ कुछ भी इल्म न होता! और अगर उसका इल्म ही सबब होता तो फिर अदमे इल्म की सूरत में बारिश भी न होना चाहिये थी हालांकि उसके न जानने की सूरत में भी बारिश होती। लेहाज़ा इल्म को मालूमात के वक़ूअ का सबब नहीं क़रार दिया जा सकता। क्योंकि इल्म मालूम के ताबेअ की हैसियत रखता है और जो चीज़ ताबेअ की हैसियत रखती हो वह सबब नहीं क़रार पा सकती। क्योंकि सबब मुसब्बब से मुक़द्दम होता है। ख़ुदा वन्दे आलम का इल्म अगरचे वह मालूमात के ताबे बईं माने नहीं है कि मालूमात के ज़रिये से हासिल हो। फिर भी चूंकि इल्म नाम उसी का है जो मुताबिक़े वाक़आ हो लेहाज़ा वाक़आ पर एक तरह का तरतिब उसे ज़रूर है। लेहाज़ा वह भी वाक़िए का सबब नहीं हो सकता। इसी से इस इस्तेदलाल की रद् होती है जो जब्र पर किया जाता है कि जो कुछ इन्सान के अफ़आल हों वह अल्लाह के इल्म में अज़ल से हैं। लेहाज़ा अब इन अफ़आल का होना ज़रूरी है, और इन्सान की हैसियत एक मजबूर महज़ क़रार पायगी! कि जो न अपने इरादे व अख़तयार से कुछ कर सकता है और न जिस रास्ते पर वह चलाया गया है उससे इन्हेराफ़ कर सकता है। इस सूरत में बेसते अम्बिया जज़ा व सज़ा वादा व वईद सब चीज़ें बे–मानी हो जायेंगी और बन्दों के तमाम गुनाहों की ज़िम्मेदारी अगर इस सूरत में उन्हें गुनाह कहा जा सके तो उसी के सर होगी इस लिये कि उसके इल्म के मुताबिक़ उन गुनाहों का वक़ूअ ज़रूर था। चुनान्चे इसी नज़रिये की तर्जुमानी करते हुए उमरे ख़य्याम कहता है:

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मन मे ख़ोरिम व हर कि चूं मन अहले बूद
मे ख़ुर्दिन मन नबज़िद ओ सहल बूद
मे ख़ुर्दिने मन हक़ ज़ अज़ल मे दानिस्त
गर मे न ख़ोरिम इल्मे ख़ुदा जहल बूद

इस क़िस्म का नज़रिया रखने वालों को यह देखना चाहिये कि वह भूख में खाने की और मरज़ में इलाज की ज़रूरत महसूस करते हैं कि अगर न खायें तो भूखे रहें और इलाज न करें तो शिफ़ा हासिल न हो हालांकि इस नज़रिये की रू से उन्हें न खाने की ज़रूरत है न दवा की हाजत। इस लिये कि अल्लाह के इल्म में अगर उनका भूखा या बीमार होना है तो वह बहरहाल भूखे और बीमार ही होंगे, और अगर सेर होना है तो वह बहरहाल सेर ही होंगे चाहे कुछ खायें या न खायें, और तन्दरूस्त होना है तो बहरहाल तन्दरूस्त ही होंगे चाहे इलाज करें या न करें। लेकिन इसके बावजूद भूख में वह खाते भी हैं और मरज़ में दवा भी करते हैं। क्योंकि वह यह समझते हैं कि भूख खाने से और बीमारी दवा से ज़ायल होती है और अल्लाह को उनकी सेरी व तन्दरूस्ती का इल्म है तो इस लिये कि वह खायेंगे और दवा करेंगे और ख़ुद यह इल्म उनकी सेरी व शिफ़ायाबी का सबब नहीं है। तो जिस तरह उसने सेरी का सबब खाने को और शिफ़ा का सबब दवा को क़रार दिया है इसी तरह हो सकता है कि उसने हुसूले मक़सद को दुआ से वाबस्ता कर दिया हो इस तरह कि अगर उससे दुआ की जाये तो हाजत बर आयेगी और दुआ न की जाये तो हाजत पूरी न होगी। लेहाज़ा इल्म बिस्सबब को सबब समझ कर इस शुबहे के लिये ज़हेन में गुंजाइश पैदा न करना चाहिये।

दूसरी दलील यह पेश की जाती है कि अगर मुक़द्देराते इलाहिया में किसी अम्र का वाक़ेअ होना क़रार पा चुका है तो वह वाक़ेअ होकर रहेगा,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और अगर उसके ख़िलाफ़ तय पा चुका है तो वह किसी तरह वाक़ेअ नहीं हो सकता।

लेहाज़ा दुआ अगर नविश्तए तक़दीर के मुताबिक़ है तो दुआ का फ़ायदा व नतीजा ही क्या। और अगर नविश्तए तक़दीर उसके ख़िलाफ़ है तो दुआ से मुक़द्देरात को बदलने की कोशिश करना सई ला हासिल और तक़दीर के ख़िलाफ़ चाहना दरिया के रूख़ के ख़िलाफ़ पैरना है।

यह दलील पहली ही दलील की एक बदली हुई सूरत है। फ़र्क़ यह है कि पहली दलील क़ज़ाए इल्मी पर मब्नी है। यानी यह कि उसका इल्म हम्मागीर और रोज़े अज़ल से तमाम चीज़ों पर मुहीत है और दूसरी क़ज़ाए ऐनी पर मब्नी है यानी यह कि तमाम चीज़ें उसके हुक्म से लौहे समावी में सब्त व मुन्दरज हैं। अहादीस में इस क़ज़ा की दो क़िस्में की गयीं हैं। एक अजले महतूम जो लौहे महफ़ूज़ में सब्त और हत्मी व लाज़मी और नाक़ाबिले तरमीम होती है। इस लौह को उम्मुल किताब और किताबे मुबीन से भी ताबीर किया जाता है, और एक अजले मौक़ूफ़ जो लौहे महो व सबात में दर्ज और क़ाबिले तरमीम व तन्सीख़ होती है। जैसा कि इरशादे इलाही है

(तरजुमा) "वह जिस चीज़ को चाहता है महो कर देता है और जिस चीज़ को चाहता है सब्त कर देता है और उसके पास लौहे महफ़ूज़ है।"

चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम जिस तरह एहवाल व ज़रूफ़ के बदलने से या एहकाम की मोअय्यना मुद्दत के ख़त्म होने से एहकाम में तरमीम कर देता है जिस नस्ख़ से ताबीर किया जाता है। उसी तरह हालात व मुक़तज़ियात के बदलने से तकवीनियात में भी रद्दो बदल करता रहता है औरजहां महो करने में मसलहत होती है वहां महो कर देता है और जहां सब्त करने में मसलहत होती है वहां सब्त कर देता है, और दुआ का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तअल्लुक़ इसी लौहे महो व असबात से है जिसमें तक़दीर के सांचे बनते बिगड़ते रहते हैं और जो मुख़ततिम और हतमी सूरत होती है वह लौहे महफ़ूज़ में दर्ज होती है। अब अगर लौहे महो व असबात में महरूमी व नामुरादी किसी के पाये नाम हो चुकी है तो क़ुदरत ने उसके बदलने की भी गुंजाइश रखी है इस तरह कि इन्सान, दुआ, सदक़ा, बरवालदैन या किसी और अमले ख़ैर के ज़रिये इस महरूमी को कामरानी से बदल दे सकता है। चुनान्चे जब वह मज़कूरा आमाल में से कोई अमल बजा लाता है तो क़ुदरत उसकी हरमां नसीबी को महो करके कामयाबी व कामरानी सब्त कर देती है, और यह तमाम तग़य्युर व तबद्दुल की सूरतें रोज़े अज़ल ही से उसके सामने आईना होती हैं। ऐसा नहीं है कि उसे अपने पहले फ़ैसले में ग़लती का एहसास हुआ हो, और अब इसमें तब्दीली व तरमीम की ज़रूरत महसूस हुई हो। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

> (तरजुमा) "ख़ुदा वन्दे आलम को जिस चीज़ में बदा वाक़े होता है वह उसके वाक़े होने से क़ब्ल उससे आगाह होता है।"

और जब इन्सान के किसी अख़्तियारी अमल से लौहे महो व असबात का नविश्ता बदल जाता है तो फिर जो सब्त होता है वही उसके हालात के एतबार से उसके लिये मुनासिब होता है। अब चाहे इन्सान हुस्ने अमल से अपनी तक़दीर को बनाये और चाहे शोमी व बदबख़्ती को दावत दे। चुनान्चे वह सदक़ा, सिला रहमी, बरवालदैन से आने वाली मुसीबत को टाल सकता है। उम्र में इज़ाफ़ा कर ले जा सकता है, फ़क़रो एहतेयाज को दूर कर दे सकता है। इसी तरह दुआ से भी क़ज़ा का धारा मोड़ सकता है, और इसमें कोई इस्तबआद नहीं कि दुआ से क़ज़ा का रूख़ पलट जाये। इस लिये कि जिसने क़ज़ा को नाफ़िज़ किया है उसी ने दुआ में यह असरात वदीअत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किये हैं कि वह क़ज़ा के नक़ूश को बदल दे और तक़दीर के नये सांचे तैयार कर दे, और क़ुदरत जब चाहे मुक़द्देरात को बदल दे सकती है। न उसे कोई मजबूरी लाहक़ हो सकती है और न कोई चीज़ उसके इरादे में हाएल हो सकती है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत है.

(तरजुमा) "यसर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ कहते हैं कि मुझ से इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ए यसर दुआ मांगा करो और यह न कहा करो कि जो होना है वह पहले से तय हो चुका है। अल्लाह के यहां ऐसे दर्जे हैं जिन्हें सवाल ही से हासिल कर सकते हो। अगर कोई बन्दा अपनी ज़बान बन्द रखे और सवाल न करे तो उसे दिया भी नहीं जाता। लेहाज़ा तुम मांगो ता कि तुम्हें दिया जाये देखो कोई दरवाज़ा ऐसानहीं है कि उसे खटखटाया जाये और वह दस्तक देने वाले के लिये खोल न दिया जाये।"

अब अगर कोई शख़्स तक़दीर पर क़नाअत करके उसके दरवाज़े को न खटखटाये और उसके सामने हाथ फैलाने से दरेग़ करे तो वह ख़ुद अपनी नामुरादी व हिरमां नसीबी का सामान कर रहा है! वरना उसका फ़ैज़ान कहीं रूकता नहीं और न उसका दरे फ़ैज़ कभी बन्द होता है, और यह समझ लेना कि जो क़ज़ा व क़द्र में लिखा जा चुका है वैसा होकर रहेगा और इसमें रद्दो बदल की गुंजाइश नहीं है, तअत्तुल व मायूसी को दावत देना है। जिसके नतीजे में इन्सान अल्लाह तआला से अपना रिश्ता तोड़ लेगा और उससे इल्तिजा का सिलसिला क़ता कर लेगा, और अगर यह उसके दिल व दिमाग़ में रासिख़ हो जाये कि अल्लाह के आगे तलब व इलहाह का हाथ उठा कर शक़ावत व बदबख़्ती को ख़ुशहाली व ख़ुश नसीबी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से तब्दील किया जा सकता है तो उसकी मायूसी को उम्मीद से और जमूद व सकून को हरकत व अमल से बदला जा सकता है। और तक़दीर पर तकिया करके बैठ जाने का नतीजा तो यह होगा कि जो जिस हद में है उससे आगे बढ़ने की सअ़ी व कोशिश तर्क कर दे। अगर कोई मोहताज है तो फ़क्र व एहतेयाज को दूर करने की फ़िक्र से बेनयाज़ हो जाये। कोई मरीज़ है तो सेहत के लिये इलाज मोआलजा की ज़रूरत महसूस न करे और कोई रंज व मुसीबत में घिरा हुआ है तो उससे छुटकारा हासिल करने की तदबीर न करे और इस कसल व अमान्दगी के जो नताएज सामने आयेंगे वह वही होंगे जो पूरे मोआशरे के मफ़लूज व अज़कार रफ़्ता होने के हो सकते हैं।

तीसरी दलील यह है कि दुआ आईने तस्लीमो–रज़ा के मनाफ़ी है क्योंकि दुआ अल्लाह की तजवीज़ कर्दा चीज़ के मुक़ाबले में अपनी ख़्वाहिश को पेश करना और उसे मनवाना है। हालांकि बन्दगी व रिज़ा का तक़ाज़ा यह है कि अपनी ख़्वाहिशों के मुक़ाबले में मन्शाए इलाही पर ख़ुश रहा जाये और हर आरज़ू तलब को मरज़ीए मौला के ताबे क़रार दे लिया जाये और किसी मुसीबत पर पेशानी पर शिकन और दिल में मैल न आये, क्योंकि जो मुसीबत भी वारिद होती हे वह क़ज़ाओ क़द्र के ताबे होती है और क़ज़ाए इलाही पर रिज़ामन्दी ज़रूरी है। चुनान्चे हदीसे क़ुदसी में वारिद हुआ है

> (तरजुमा) "जो शख़्स मेरी क़ज़ा पर राज़ी न हो और मेरी आज़माइश पर सब्र न करे और मेरी नेअमतों पर शुक्र अदा न करे उसे मेरी ज़मीन और मेरे आसमान से बाहर निकल जाना चाहिये और मेरे अलावा कोई और परवर दिगार ढूंढ लेना चाहिये।"

इस शुब्हे का जवाब यह है कि अगर दुआ शेवए तस्लीम व आईने रिज़ा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

के ख़िलाफ़ होती तो अम्बिया व आइम्मा जो रिज़ा के मर्तबए आला पर फ़ाएज़ थे दुआ को अपनी ज़िन्दगी का जुज़्व न बनाते और न अल्लाह सुब्हानहू दुआ का हुक्म देता। हालांकि उसने न सिर्फ़ दुआ की हिदायत की बल्कि इसके तर्क को ग़ुरूर व अनानियत से ताबीर किया है। तो जो चीज़ हुक्मे इलाही की बिना पर बजा लाई जाये उसकी रिज़ा के ख़िलाफ़ कैसे मुतसव्विर हो सकती है और दर सूरते कि उसने सदक़ा व ख़ैरात और तलब व दुआ वग़ैरा को मक़सद की कामयाबी का सबब व वास्ता क़रार दे दिया हो जिस तरह उसने दुनिया में अपनी क़ज़ा के ज़हूर को असबाब से वाबस्ता किया है तो रिज़ाये इलाही से मुनाफ़ात का सवाल ही पैदा नहीं होता। क्योंकि इस सूरत में जिस मक़सद के लिये दुआ मांगी जा रही है वह वही फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र है जिसको दुआ पर मौक़ूफ़ रखा है, और अगर क़ज़ा व क़द्र पर रिज़ामन्दी का मुज़ाहरा करना ही है, तो फिर बिच्छू काट रहा हो तो उसे अलग न कीजिये। सांप डस रहा हो तो उसे डंसने दीजिये। प्यास हो तो पानी न पीजिये। भूख हो तो खाना न खाइये क्योंकि यह तमाम चीज़ें भी तो क़ज़ा व क़द्र के ताबे हैं। अगर यह क़ज़ा व क़द्र के ताबे हैं तो फिर बिच्छू को छुड़ाना, सांप से बचना, मर्ज़ का इलाज करना और भूख प्यास के वक़्त खाना पीना क़ज़ा व क़द्र के हुदूद से बाहर कैसे हो सकता है। चुनान्चे वारिद हुआ है कि अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम एक दीवार की तरफ़ गुज़रे जो गिरना चाहती थी। तो आपने ख़तरे के पेशे नज़र रास्ता बदल दिया जिस पर एक शख़्स न कहा : "क्या आप अल्लाह की क़ज़ा से भागना चाहते हैं"। फ़रमाया "मैं क़ज़ा से भाग कर क़द्र के दामन में पनाह ले रहा हूं"। मक़सद यह है कि अगर अल्लाह ने मेरी ज़िन्दगी का फ़ैसला किया है तो उसका ज़हूर इसके सबब से वाबस्ता है इस तरह कि मैं गिरती हुई दीवार से बच कर चलूं। बहरहाल जब क़ज़ाए इलाही का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़हूर असबाब से वाबस्ता है उसी के पैदाकर्दा हैं और उसी ने दुआ को मक़सद बरारी का सबब क़रार दिया है तो यह उसकी रिज़ा से मुतसादिम नहीं हो सकती जबकि दुआ व रिज़ा दोनों का सरचश्मा एक है।

चौथी दलील यह है कि दुनिया के तमाम हवादिस व वक़ाए की इन्तेहा एक ज़ाते अज़ली पर होती है और उसकी हिक्मत व मसलहते अज़ली जिस चीज़ के वक़ूअ की मुक़तज़ी होगी वह वाक़े होकर रहेगी और जिसके वक़ूअ की मुक़तज़ी नहीं होगी वह वाक़े नहीं हो सकती। तो जब इक़्तेज़ाए अज़ली के बग़ैर कोई अम्र वाक़े नहीं हो सकता तो दुआ का फ़ायदा ही क्या जब कि वह उसके मसलहत के मुतक़ज़ियात को बदल नहीं दे सकती और बहरहाल वही होना है जो उसके इक़्तेज़ाये अज़ली ने रोज़े अज़ल से फ़ैसला कर दिया है।

इस शुब्हे का जवाब यह है कि ख़ुदा वन्दे आलम ने हर चीज़ का एक निज़ाम और एक क़ायदा मुक़र्रर कर दिया है और तमाम चीज़ों को एक हमागीर सिलसिले में इस तरह बांध दिया है जिस तरह एक सिलसिले की कड़ियां एक दूसरे से वाबस्ता और मुरतबत होती हैं जिससे आलम का नज़्म व नस्ख़ और दुनिया का कारख़ाना एक धड़े पर चल रहा है। इस लिये हिक्मते अज़ली जहां किसी चीज़ के वक़ूअ की मुक़्तज़ी होती है वहां उसके सबब और वास्ते के वजूद की भी मुक़्तज़ी होती है। चुनान्चे उसकी हिक्मत का अगर तक़ाज़ा यह है कि ज़मीन सेर व सेराब हो तो वह यह भी चाहती है कि समन्दर से बुख़ारात उठें और फ़िज़ा में फैल कर हवाओं से टकरायें और प्यासी ज़मीन की सेराबी का सामान करें तो जिस तरह ज़मीन की सेराबी, सेराबी के सरो सामान से वाबस्ता है उसी तरह मसलहते अज़ली ने हाजत बरारी और मक़सद की कामयाबी को भी मुख़्तलिफ़ असबाब से वाबस्ता कर रखा है और मिन्जुमला इन असबाब के एक सबब दुआ भी है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लेहाज़ा हो सकता है कि उसकी हिक्मते अज़ली किसी की हाजत बरारी की इस सूरत में मुतक़ज़ी हो जब उसके सामने गिड़गिड़ाया जाये और उससे दुआ की जाये और दरसूरते कि दुआ न की जाये। हिक्मत का तक़ाज़ा यह हो कि उसे मक़सद में नाकाम रखा जाये। इसके अलावा बन्दों की हाजतों और मक़सदों को दुआ से वाबस्ता करना भी तक़ाज़ाए हिक्मत है, ताकि वह अपनी एहतेयाज व बेमाएगी के पेशे नज़र इससे राब्ता बरक़रार रखें और दुआ की ज़रूरत का एहसास करते हुए उससे लौ लगाये रहें।

पांचवी दलील यह है कि जब ख़ुदा वन्दे आलम को आलमुल ग़यूब माना जा चुका है और यह कि कोई चीज़ उससे ढकी छिपी हुई नहीं है और वह दिलों के भेदों और आंखों के चोरी छुपे इशारों को जानता है तो फिर अपनी रूदाद उसे सुनाना और अपने मक़सद को ज़बान पर लाना क्या ज़रूरी है। जब कि हमारे बग़ैर उसका इल्म हर चीज़ पर हावी है और वह हमारी हर ख़्वाहिश और हर आरज़ू से आगाह है और कोई चीज़ उससे मग़फ़ी व पोशीदा नहीं है। चुनान्चे इसी बिना पर जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला जाने लगा और जिबरईले अमीन[अ०] ने मदद की पेशकश की, और आपके इन्कार पर जिबरईल[अ०] ने कहा अगर मुझ से कोई हाजत व ख़्वाहिश नहीं है तो जिससे है उसी से तलब कीजिये। तो आपने फ़रमाया : "उसका मेरी हाजत से आगाह होना मुझे सवाल से बेनियाज़ बनाये हुए है।"

इस दलील का जवाब यह है कि दुआ से यह मक़सद ही कब होता है कि उसे बेख़बर तसव्वुर करते हुए अपनी हाजतों और ख़्वाहिशों को उसके इल्म में लाया जाये। क्योंकि वह किसी मरहले पर हमारे बताने और ज़बान से कुछ कहने का मोहताज नहीं है। बल्कि हमारे दिल के एक एक रेशे की पुकार से आगाह और हमारे क़ल्ब की तहों में लिपटी हुई आरज़ूओं से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वाक़िफ़ है। यह तलबो दुआ तज़ल्लुल व इन्केसार और रूजूअ इलल्लाह तो सिर्फ़ उबूदियत का एक मुज़ाहरा है ताकि मांगने की ख़ातिर उससे राब्ता क़ायम रहे, और तलब व सवाल के पर्दे में उससे लौ लगी रहे, और इस ख़्याल से ज़बान को बन्द रखना कि वह तो सब कुछ जानता है एक तरह से अनानियत व ग़ुरूर का मुज़ाहरा है जो बन्दों के सामने तो क़ाबिले सताइश हो सकता है मगर अल्लाह के सामने अपनी रूदादे बातिन पेश न कीजिये और उसे अपना दर्दे दिल न सुनाये तो यह शेवा उबूदियत के ख़िलाफ़ और इज्ज़ो नयाज़मन्दी के मनाफ़ी है। चुनानचे इरशादे इलाही है:

(तरजुमा) "ऐ रसूल[स०]! कह दो कि अगर तुम दुआ नहीं करते तो मेरा परवर दिगार भी तुम्हारी कोई परवा नहीं करता। तुमने झुटलाया जिसका वबाल अंक़रीब तुम्हारे सर पड़ेगा।"

बिला शुबहा दुआ, उबूदियत का एक मुज़ाहरा और फ़ितरते इन्सानी की एक आवाज़ है। चुनान्चे जब भी कोई मुसीबत नाज़िल होती है या ज़रूरत व एहतेयाज परेशान करती है तो बेसाख़्ता हरफ़े मुद्दआ ज़बान पर आ ही जाता है। इसको बेज़रूरत समझना इन्सानी तक़ाज़ों पर पहरा बैठाना और फ़ितरत व वजदान के ख़िलाफ़ सफ़आरा होना है, और यह समझना कि दुआ बस इस लिये की जाती है कि अपनी आवाज़ उसे सुनाई जाये और अपनी हाजत व आरज़ू उसके इल्म में लाई जाये बलाग़त की राहों से बेख़बरी की दलील है। चुनान्चे कलाम व गुफ़्तुगू में ऐसे बेशुमार मवाक़े हैं जहां ज़बान से कुछ कहना मुख़ातिब को सिर्फ़ बताने ही के लिये नहीं होता। मसलन दिन की रौशनी में ठोकर खा कर गिरने वाले को यह कहना कि "सूरज निकला हुआ है।" क्या यह बताने के लिये होता है कि यह दिन है रात नहीं है या कुछ और मक़सद होता है या ख़ुदा वन्दे आलम का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हज़रत मूसा[अ०] से ख़िताब "मूसा! यह तुम्हारे हाथ में क्या है।" लाइल्मी की बिना पर था या हज़रत मूसा[अ०] से सिलसिलए कलाम जारी करने के लिये था, और मूसा[अ०] का तवील जवाब अल्लाह को असा के फ़वाएद से आगाह करने के लिये था या "लज़ीज़ बूद हिकायत दराज़ तर गुफ़तम" के पेशे नज़र था। इसी तरह शायर की अपने साक़ी से यह फ़रमाइश कि :

(तरजुमा) "मुझे शराब पिला और यह कह के पिला
कि यह शराब मय और ख़ुफ़िया तौर पर न पिला
जबकि खुले बन्दों को पिलाना मुम्किन है।"

क्या यह जानने के लिये है कि यह शराब है। ऐसा नहीं क्योंकि वह देख रहा है कि सामने शराब रखी है और शराब ही उसे पिलाई जायेगी बल्कि इसका मक़सद हुसूले लज़्ज़त समाअत है। और वह दूसरे हवास की तरह कानों को भी लज़्ज़त अन्दोज़ करना चाहता है क्योंकि आंखें उसे देख कर सरूर व कैफ़ हासिल कर रही हैं। कूव्वते शाम्मा उसकी ख़ुशबू से बहरा अन्दोज़ हो रही है। लब उसके लम्स से और ज़बान उसके ज़ायक़े से आशना हुआ चाहती है। बस एक कूव्वते सामेआ महरूम रही जाती थी उसकी लज़्ज़त अन्दोज़ी का सामान इस तरह किया कि साक़ी से कहा कि तू शराब कह के मुझे शराब पिला ताकि इस लफ़्ज़ की गूंज से हज़ो निशात की तक्मील हो जाये और कोई हासा लज़्ज़त अन्दोज़ी से महरूम न रह जाये। यूँ ही करीम के कानों में साएलों की आवाज़ नग़मए शीरीं बन कर गूंजा करती है और उसका ज़ोक़े समाअत और जज़बए करम चाहता है कि उससे मांगा जाये और मांगने वालों की आवाज़ें उसके कानों में पैहम गूंजती रहें। चुनान्चे अरब के मशहूर शायर मुतनब्बी ने अपने ममदूह के मुतअल्लिक़ कहा है :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "जब तुझसे सवाल किया जाता है तो इस लिये नहीं कि तू मांगने वालों को सवाल की ज़हमत देना चाहता है बल्कि इस लिये कि तुझे साएलों की आवाज़ अच्छी मालूम होती है, और जब तुझे परदों में छुपाया जाये तो तेरी नेअमतें तेरी ग़म्माज़ी करती हैं।"

इस सिलसिले में इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि :

(तरजुमा) "मोमिन ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर से अपनी हाजत तलब करता है और कुदरत उसकी दुआ और आवाज़ के इश्तियाक़ में यह कहती है कि अभी उसकी हाजत को ताख़ीर में डाल दो।"

और कभी इसके बरअक्स भी होता है इस तरह कि अगर किसी की आवाज़ उसे नागवार मालूम होती है तो उसकी हाजत जल्द रवा हो जाती है ताकि वह फिर उसके दर पर दस्तक दे और न उसे पुकारे। चुनानचे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है:

(तरजुमा) "कोई बन्दा उससे दुआ मांगता है तो अल्लाह सुब्हानहू कहता है कि इसकी हाजत को जल्द पूरा कर दिया जाये क्योंकि इसका पुकारना बुरा मालूम होता है।"

चुनान्चे इसी लिये बाअज़ नाहन्जार व बदकिरदार अशख़ास को उसने गोनागूं नेअमतों से नवाज़ा ताकि मोहलत देने के बाद उन्हें जकड़ा जाये और नेअमत की सरशारियों में उन्हें अल्लाह की तरफ़ रूजूअ होने की तौफ़ीक़ ही हासिल न हो :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दाद ओ फ़िरऔन रा सद मुल्को माल
ता ननालद सूए हक़ आं बदसगाल
दरहमा उमरिश न दीद ओ दर्दे सर
ता न गिरयद सूए हक़ आं बद गुहर

अब रहा हज़रत इब्राहीम का बरगाहे एज़दी में दस्ते तलब न बढ़ाना तो इसका जवाब यह है कि जब बलाओ मुसीबत की नौइयत ख़ुसूसी आज़माइश की हो तो उससे बचाव का सवाल करना शेवए तस्लीम व रिज़ा के ख़िलाफ़ है चुनान्चे जिस तरह वह अपने फ़रज़न्द के ज़बह के मौक़े पर ख़ुदा से यह ख़्वाहिश नहीं करते कि इस अनोखी और निराली क़िस्म की आज़माइश को उठा लिया जाये बल्कि दिल व जान से इसके लिये आमादा हो जाते हैं, इसी तरह आग के भड़कते हुए शोलों को देख कर सरे तस्लीम ख़म कर देते हैं। न दुआ के लिये हाथ ऊपर उठते हैं और न ज़बान से कोई ऐसा जुमला निकलता है जिससे यह ज़ाहिर हो कि वह आग की लपटों को देख कर हरासां व परेशान हो गये हैं कि एक तरफ़ काफ़िरों को तअनाज़नी का मौक़ा मिले और दूसरी तरफ़ ख़िल्लत व शेवए तस्लीम व रज़ा पर हर्फ़ आये बल्कि बड़े सब्र व इस्तेक़लाल से भड़कते हुए शोलों में कूद पड़ते हैं। इस तस्लीम व रज़ा की आज़माइश और सब्र व इस्तेक़लाल के इम्तहान को दुआ से बेनयाज़ी के सुबूत में पेश नहीं किया जा सकता। क्योंकि मंज़िले राज़ो नयाज़ और है और मंज़िले सब्र व इम्तेहान और है।

छठी दलील यह है कि जो चीज़ इन्सान के मसालेह में दाख़िल और उसकी सूद व बहबूद उससे वाबस्ता होगी तो वह मुब्दाए फ़ैज़ व सरचश्मए अता कभी उसमें फ़रोगुज़ाश्त नहीं करेगा और न उसके अता करने में बोख़्ल से काम लेगा और जो चीज़ उसके मसालेह में दाख़िल नहीं है उसे तलब करना भी मुनासिब व क़रीने सवाब नहीं क़रार दिया जा सकता। क्योंकि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इसके मआनी तो यह होंगे कि वह अपने मसालेह को अल्लाह से बेहतर समझता है। इस लिये उससे कोई ख़्वाहिश करना कोई चीज़ तलब करना उसकी मसलहत बीनी व कारसाज़ी पर हर्फ़ रखना है।

इसका जवाब यह है कि कभी मसलेहत अता करने और बख़्शने ही में होती है चाहे इन्सान तलब करे या तलब न करे। जैसे वसाएल जिनसे ज़िन्दगी की बक़ा वाबस्ता है। और कभी मसलहत रद्द करने और नाकाम फ़िरने ही में होती है जैसे वह चीज़ें जो हलाकत व तबाही का सबब और शीराज़ए हयात के बिखरने का बाअस होती हैं, और कभी मसलहते दुआ तलब से वाबस्ता होती है इस तरह कि तलब व दुआ की सूरत में इसमें मसलहत पैदा हो जाती है और अदमे तलब की सूरत में इसमें मसलहत कारफ़रमा नहीं होती। लेहाज़ा तलब व दुआ से पैदा होने वाले मसालेह और उनके फ़वाएद व समरात से अपने को महरूम रखना कहां तक दुरूस्त हो सकता है।

सातवीं दलील यह है कि दुआ (पेज 37 पैरा 2) शाने अदब शनासी के ख़िलाफ़ है क्यों कि दुआ में एक तरह से अम्र व नही की झकल होती है और बन्दे को यह ज़ेब नहीं देता कि वह अल्लाह पर हुक्म चलाए और यह कहे कि यह कर यह न कर। लेहाज़ा उसे तर्क करना चाहिये ताकि उसकी बारगाह में सूए अदबी से बचा जाय। इसका जवाब यह है कि दुआ को अज़ क़ब्ले अम्रो नही समझना इस लेहाज़ से तो सही है कि इन दोनों में तलब का मफ़हूम होता है। मगर दोनों में फ़र्क़ यह है कि अम्रो नही में तफ़व्वुक़ व बरतरी का पहलू होता है और दुआ में इन्तेहाई इज्ज़ व इन्केसार और पस्ती व तज़ल्लुल का इज़्हार होता है। लेहाज़ा एक को दूसरे पर क़यास करना ग़लत और सूफ़हमी का नतीजा है और अगर मुतलक़ तलब में सूए अदबी को तजवीज़ किया जाये तो उसके माने यह होंगे कि मां बाप से कोई

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

चीज़ मांगना, उस्ताद से कुछ दरयाफ़्त करना और जानने वाले से कुछ पूछना भी सूअदबी में दाख़िल समझा जाये, और अगर यह चीजें सूअदबी में दाख़िल नहीं हैं तो फिर अल्लाह तआला ही से तलब व सवाल में सूअदबी क्यों हो। जबकि तलब व सवाल अपने फ़क्र व एहतेयाज और उसकी अज़मत व बालादस्ती का एक वाज़ेह एतराफ़ है।

आठवीं दलील यह है कि ह़म्दो सना और ज़िक्रे इलाही हाजत रवाई का ज़्यादा कामयाब व मोअस्सर ज़रिया है। लेहाज़ा बेहतर ज़रिये को छोड़कर तलब व सवाल का हाथ क्यों फैलाया जाये। चुनान्चे हदीसे कुदसी में वारिद हुआ है कि :

(तरजुमा) "जो शख़्स मेरे ज़िक्र में इस तरह खो जाये कि उसे दुआ का खयाल न रहे तो मैं जो सवाल करने वालों को देता हूं, उससे ज़्यादा उसे दूंगा"।

इसका जवाब यह है कि मक़सदे इलाही इससे यह नहीं है कि उससे सवाल न किया जाये। हां अगर कोई हम्दो सना में इस तरह डूब जाये कि उसे यह ख़याल न रहे कि वह उसे हाजत बरआरी व मक़सद तलबी का ज़रिया क़रार देना चाहता था और इस महवियत में अपनी हाजत ही को भूल जाये तो ख़ुदा उसे तलब व सवाल की फ़रामोशी की वजह से उसके मक़सद से महरूम नहीं करता। बल्कि दूसरे मांगने वालों से बढ़ चढ़ कर उसे देता है तो ख़ुदा वन्दे आलम की इस बख़्शिश व अफ़ज़ाइश का सबब तर्के सवाल को नहीं क़रार दिया जा सकता कि उसे तर्के दुआ के सुबूत में पेश किया जाये बल्कि यह दुआ की फ़रामोशी, हम्दो सना में महवियत और अल्लाह की याद में इस्तग़राक़ की वजह से है और इस तरह दुआ को फ़रामोश कर जाना और चीज है और सिरे से दुआ ही न करना और चीज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है। चुनान्चे इसी मतलब की वज़ाहत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के इस इरशाद से होती है :

(तरजुमा) "बन्दे को अपने अल्लाह से कोई हाजत होती है और वह पहले हम्दो सना करता है और मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद[स०] पर दुरूद भेजता है इस तरह कि इस हम्दो सना में खोकर अपनी हाजत को फ़रामोश कर जाता है तो अल्लाह उसकी हाजत रवाई कर देता है बग़ैर उसके कि वह अपनी हाजत तलब करे।"

दुआ क़ब्ले इब्तेला

जिस तरह इलाज की दो क़िस्में हैं एक इलाज क़ब्ल अज़ मर्ज़ यानी हिफ़्ज़ मातक़द्दुम के तौर पर ऐसी तदाबीर अख़्तियार करना जिससे इन्सान मर्ज़ के हमले से महफ़ूज़ रह सके और तबिअत मर्ज़ की पज़ीराई से इन्कार कर दे, यह मुआलजा एहतियाती है, और दूसरी क़िस्म यह है कि मर्ज़ में मुब्तिला होने के बाद इलाज किया जाये। अतिब्बा के नज़दीक मुआलजा एहतयाती ज़्यादा कारगर और मुफ़ीद साबित होता है। क्योंकि तबीयत सही हालत में होती है इस लिये मुआलजा एहतयाती के असरात को जल्द कुबूल कर लेती है। इसी तरह दुआ की भी दो क़िस्में हैं। एक दुआ मुसीबत के नाज़िल होने से पहले और एक दुआ मुसीबत के नाज़िल होने के बाद, और वह दुआ जो क़ब्ले मुसीबत हो मुआलिजा एहतयाती की तरह ज़्यादा मोअस्सिर होती है। लेहाज़ा अम्न व आफ़ियत के दिनों में इब्तिला व मुसीबत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से बचाव के लिये और फ़राख़े रोज़ी व ख़ुशहाली के ज़माने में तंगदस्ती से महफ़ूज़ रहने के लिये दुआ करते रहना चाहिये क्योंकि इस तरह की दुआ आफ़त व इब्तिला से सिपर बन जाया करती है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "जो शख़्स मुसीबत के नाज़िल होने से पहले दुआ करता है मुसीबत पड़ने पर उसकी दुआ मुस्तजाब होती है।"

अल्फ़ाज़े दुआ

दुआ हमेशा सीधी सादी इबारत और हल्के फुलके अल्फ़ाज़ में मांगना चाहिये, क्योंकि दुआ क़ल्ब व ज़मीर की आवाज़ होती है जो बेसाख़्ता ज़बान से उबल पड़ती है और मक़सद की तर्जुमानी के लिये लफ़्ज़ों की तरकीब व तरबियत का सहारा और लफ़्फ़ाज़ी व इबारत आराई से काम न लेना चाहिये इस लिये कि बनावट और तकल्लुफ़ की झलक आते ही इज्ज़ो नयाज़ का जज़्बा मुज़महिल और बन्दगी व नयाज़मन्दी की रूह ख़त्म हो जाती है, और हमेशा एक से अल्फ़ाज़ भी इस्तेमाल न किये जायें कि वह ज़बान पर चढ़ जाने की वजह से क़स्द व इरादे के बग़ैर भी निकल जाया करते हैं। इस तरह की दुआ दिल की आवाज़ नहीं होती बल्कि अल्फ़ाज़ ही अल्फ़ाज़ होते हैं जिनमें इख़लास का जज़्बा, दिल की हुज़ूरी और तलबगारी का वलवला नहीं होता, और जब तक तलब में जोश, सवाल में तड़प, और दुआ में वलवला नहीं होगा वह दुआ क़ाबिले पज़ीराई न होगी। चुनान्चे रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है

(तरजुमा) "जब दिल दूसरी तरफ़ मशग़ूल और ग़ाफ़िल हो तो अल्लाह तआला दुआ को क़ुबूल नहीं करता।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुआ में ऐसे अल्फ़ाज़ ज़्यादा मोअस्सिर होते हैं जिनमें अज़मते इलाही के एतराफ़ के साथ इज्ज़ो कुसूर का इक़रार और उबूदियत व नियाज़मन्दी का इज़हार हो इस लिये अपनी दुआओं में मासूमीन[अ०] की दुआओं के कलेमात दोहराते रहना चाहिये कि इनमें जलाले उलूहियत का परतौ और जमाले उबूदियत का इनअकास पूरी तरह जलवागर होता है।

दुआ में असमाए इलाही का इन्तेख़ाब

तलबे दुआ के सिलसिले में अल्लाह तआला को उस नाम से पुकारना चाहिये जो साएल के मक़सद व मुराद से मुनासिबत रखता हो। यह तरीक़ए ख़िताब सिर्फ़ ख़िताब ही नहीं होगा बल्कि ख़िताब व दलील दोनों होंगे। इस तरह कि जो फ़क्रो एहतयाज में उसे "या ग़नी" और बीमारी में "या शाफ़ी" कहेगा तो इन अल्फ़ाज़ से ज़ेहन उस तरफ़ क़हरन् मुलतफ़त होगा कि जब वह ग़नी है तो ग़नी के सिवा और कौन हो सकता है जो फ़क्रो एहतयाज को दूर करे, और जब वह शाफ़ी है तो शाफ़ी के अलावा कौन हो सकता है जिससे शिफ़ा की आस रखी जाये, और उसे ग़नी होने के लिहाज़ से अपने बन्दों की एहतयाज को दूर करना चाहिये और शाफ़ी होने के एतबार से बीमारों को सेहत बख़्शना चाहिये, और उसके साथ तलब व सवाल का इस्तेहक़ाक़ भी वाज़ेह हो जायेगा। यूं कि अगर फ़क़ीर व नादार ग़नी से न मांगे तो क्या अपने ऐसे नादारों से मांगे, और बीमार शाफ़ी–ए–मुतलक़ से शिफ़ा का तलबगार न हो तो किसके दारूश्शिफ़ा से सेहत की भीख मांगे। लेहाज़ा जब भी उस ज़ाते बेनयाज़ की बारगाह में दुआ के लिये हाथ उठाये जायें तो जिस नवइयत का सवाल हो उसी नवइयत के मुताबिक़ अल्लाह के नामों में से मुनासिब नाम का इन्तेख़ाब करे मसलन एक फ़क़ीर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व नादार माली वुसअत का सवाल करे तो वह अल्लाह तआला को अलग़नी, अलमुग़नी, या राज़िक़ व मोअ़ती के नाम से पुकारे। मरीज़ सेहत के लिये दुआ करे तो या शाफ़ी कहे। मज़लूम उसे पुकारे तो या मुन्तक़म कहे और गुन्हगार आमरज़िशे गुनाह के लिये इल्तेजा करे तो उसे या अफ़ो या ग़फ़ूर के नाम से याद करे और हाजतमन्द किसी हाजत के सिलसिले में उसे पुकारे तो या मुजीब कहे। इसी तरह दूसरे मतालिब व हाजात में हाजत व मक़सद की नवइयत के मुताबिक़ जो नाम मुनासिब हो उस नाम से पुकारे।

दुआए मग़फ़रत में तरतीब का लिहाज़

जब मां बाप, अज़ीज़ व अक़ारिब और सोलहा व मोमेनीन के लिये दुआये मग़फ़िरत की जाये तो अम्बिया और ख़ासाने ख़ुदा की तास्सी में पहले अपने लिये दुआये बख़्शिश व आमरज़िश करे और फिर दूसरों के लिये। चुनान्चे क़ुरआने मजीद में क़ुदरत का पैग़म्बरे अकरम[स०] से ख़िताब है

(तरजुमा) "अपने लिये और मोमेनीन व मोमेनात के लिये तलबे मग़फ़रत करो।"

हज़रत नूह[अ०] की दुआ है :

(तरजुमा) "परवर दिगार! मुझे और मेरे मां बाप को और जो मोमिन मेरे घर में आये और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बख़्श दे।"

हज़रत इब्राहीम[अ०] की दुआ है :

(तरजुमा) "ऐ हमारे पालने वाले! जिस दिन आमाल का हिसाब होगा, मुझे और मेरे माँ बाप और तमाम ईमान लाने वालों को बख़्श दे।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हज़रत मूसा[अ०] की दुआ है :

(तरजुमा) "ऐ मेरे परवर दिगार! मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर ले।"

अहले ईमान की दुआ है :

(तरजुमा) "ऐ हमारे परवर दिगार! तू हमें और हमारे उन भाईयों को जो ईमान में हम से साबिक़ थे, बख़्श दे।"

दुआए मग़फ़रत में अपने को मुक़द्दम करने में शायद यह रम्ज़ हो कि इन्सान ख़ुद अपने लिये दुआए मग़फ़रत करे तो फिर उसे दूसरों के लिये दुआए मग़फ़रत करना ज़ेब देता है, और जब ख़ुद दुआए मग़फ़रत से अल्लाह के अफ़ो व दरगुज़र का मुस्तहक़ हो जाये तो फिर औरों के लिये दुआ करेगा तो ज़्यादा मोअस्सिर व मुस्तजाब होगी। यूं समझिये कि अगर कोई शख़्स बादशाह के सामने अफ़ो की दरख़्वास्त पेश करे तो उस वक़्त तक दूसरों के हक़ में उसकी सिफ़ारिश मुनासिब न होगी जब तक वह ख़ुद अपने लिये मआफ़ी न मांग ले और जब अपने लिये मआफ़ी मांग लेगा तो फिर दूसरों के लिये उसकी दरख़्वास्ते अफ़ो मुनासिब व बरमहल साबित होगी।

हैयअते दुआ

दुआ बा वज़ू तशहुद की हालत में बैठ कर और रू बा क़िब्ला होकर मांगे इस तरह कि आवाज़ न ज़्यादा बुलन्द हो और न ज़्यादा आहिस्ता। अलबत्ता अगर रिया व नमूद का अन्देशा हो तो फिर बेहतर है कि चुपके चुपके से दुआ करे। दुआ में अगर शर्रे नफ़्स, वसवसा, शैतान और हमलए दुश्मन से पनाह मांगना चाहे तो अपने हाथ की दोनों हथेलियां क़िब्ले की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तरफ़ इस तरह फैलाये जिस तरह तलवार, लाठी, पत्थर वग़ैरा के वार को रोका जाता है और तलबे रिज़्क़ व हाजत के लिये दोनों हथेलियों को चेहरे के बिलमुक़ाबिल फैलाये जिस तरह हाथ फैला कर कोई चीज़ तलब की जाती है और तजर्रो व इलहाह के सिलसिले में दुआ करे तो अपने हाथों को सर से ऊँचा ले जाकर फैलाये और मुसीबत व इब्तिला और ख़ौफ़ व ख़तरे के मौक़े पर हाथ की हथेलियों को ज़मीन की तरफ़ कर ले। यह एक तरह से उस अम्र का इज़हार है कि वह अपने आमाल के पेशे नज़र किसी चीज़ के हासिल करने का मुस्तहक़ नहीं है, और जब दुआ ख़त्म करे तो मुंह, सीना या सर पर हाथ फेरे कि यह अशरफ़े आज़ा हैं।

शरायत क़ुबूलियत दुआ

शराएत क़ुबूलियते दुआ में सबसे मुक़द्दम शर्त यह है कि लिबास, ग़िज़ा, जाये रहाइश, ज़रियए मआश तय्यब व हलाल हो और दिल में इत्मिनान व रिजा की कैफ़ियत पैदा करे! क्योंकि रिजा दुआ की मोहरिक होती है और जब रिजा का पहलू कमज़ोर होगा तो दुआ में एतमाद, ख़ुलूस और वलवला पैदा नहीं हो सकता कि जो क़ुबूलियते दुआ का ज़ामिन होता है। इस लिये क़ुबूलियते दुआ पर वसूक़ रखते हुए ख़ुलूसे नीय्यत रिक़्क़ते क़ल्ब और तज़रअ व अलहाह के साथ बार बार दुआ व इल्तेजा करे। चुनान्चे इमाम बाक़र अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

> (तरजुमा) "ख़ुदा की क़सम! जब भी बन्दए मोमिन अल्लाह तआला की बारगाह में इलहाह व ज़ारी करता है तो अल्लाह तआला उसकी हाजत को बर लाता है।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दूसरों के साथ मिल कर दुआ मांगना भी इस्तेजाबत पर असर अन्दाज़ होता है इस लिये कि मुम्किन है कि उनमें कोई ऐसा मर्दे सालेह भी हो जिसकी ख़ातिर सबकी दुआयें कुबूल हो जायें, और दूसरों को अपनी दुआ में शरीक करना भी इस्तेजाबते दुआ का बाअस होता है। चुनान्चे इरशादे नबवी[स०] है :

(तरजुमा) "जब तुम में से कोई एक दुआ करे तो दूसरों को भी दुआ में शरीक करे ताकि वह कुबूलियते दुआ का मुस्तहक़ क़रार पाये।"

शुरू और ख़त्मे दुआ के आदाब

जब दुआ के लिये हाथ उठाये तो उसकी इब्तिदा हम्दो तक़दीसे इलाही से करे। क्योंकि उससे तलब करना एक तरह से उसके करम व फ़ैज़ान का एतराफ़ करना है और करम व बख़्शिश का एतराफ़ यह चाहता है कि तलब व सवाल से पहले ज़बान उसकी मिदहत व सताइश में खुले और तहमीद व सना में नग़मा रेज़ हो। यह तहमीद व सताइश ऐसे अल्फ़ाज़ में होना चाहिये जो उसकी पेशगाहे अज़मत व जलाल के शायाने शान हो। इस लिये बेहतर है कि उन्हीं अल्फ़ाज़ में हम्द व सताइश करे जो मासूमीन अलैहिस्सलाम से मरवी हों। चुनानचे किताब अली से यह कलमाते हम्द मंकूल हैं जिन्हें दुआ से क़ब्ल पढ़ना चाहिये :

(तरजुमा) "ऐ वह ज़ात जो शह रग से भी ज़्यादा मुझसे नज़दीक है। ऐ वह कि जो वही करता है जो चाहता है ऐ वह कि जो आदमी और उसके दिल में हाएल हो जाता है। ऐ वह कि जो बुलन्द व बाला

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शान वाला है, ऐ वह कि जिसकी कोई मिस्ल व नज़ीर नहीं है।"

हम्द के बाद उसकी नेअमतों और एहसानों को याद करते हुए उसका शुक्रिया अदा करे ताकि (तरजुमा) "अगर तुम मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं यक़ीनन् तुम्हें ज़्यादा दूंगा"। की बिना पर उसे ज़्यादा से ज़्यादा नेअमतें हासिल हों। फिर नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और उनकी आले अतहार पर दुरूद भेजे ताकि इस दुरूद की कुबूलियत के ज़िम्न में दुआ भी कुबूल हो जाये फिर अपने गुनाहों का एतराफ़ करे ताकि एहतसाबे नफ़्स का जज़्बा पैदा हो। फिर तौबा व अस्तग़फ़ार करे ताकि गुनाहों की कसाफ़त माने कुबूलियत न होने पाये। फिर वाज़ेह अल्फ़ाज़ में अपनी हाजत तलब करे और आख़िर में दुरूद पढ़े बल्कि वस्त में भी दुरूद पढ़े।

ज़रिया व तवस्सुल

तमाम उम्मीदों का मरकज़ और तमाम आरज़ूओं का मुनतहा अल्लाह सुब्हानहू की ज़ात है और उसी से तमाम हाजतें और ज़रूरतें वाबस्ता की जाती हैं और उसके अलावा किसी को मुस्तक़िल तौर पर हाजत रवा समझ कर पुकारना सही नहीं है और न आईने इस्लाम में इसकी गुंजाइश है कि दुआ में किसी दूसरी हस्ती को पुकार कर उसे अल्लाह के सिफ़ात में शरीक ठहराया जाये। मगर हर चीज़ में अल्लाह तआला की मशीय्यत के अमल दख़ल का अक़ीदा रखते हुए किसी को पुकारना और मदद चाहना शिर्क नहीं है और न उन हस्तियों को कि जिन्हें मशीय्यत का हाथ सिफ़ारिश के लिये चुन चुका है। वसीला क़रार देना शिर्क से कोई तअल्लुक़ रखता है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शिर्क तो उस सूरत में होता है जब उन्हीं की हाजत रवाई के लिये काफ़ी समझ लिया जाता और मशीय्यते बारी को ज़रूरत न समझी जाती; और फिर उन्हें वसीला क़रार देना तो एक तरह से अल्लाह की अज़मत का एतराफ़ और अपनी कोताह दस्ती का इक़रार है इस तरह कि अपने को बराहे रास्त पेशगाहे सुल्तानी में अर्ज़ मअरूज़ करने का अहल न समझते हुए उन हस्तियों को वसीला क़रार दे रहा है जो वसीला बन सकते हें और जिनके नफ़ूस क़वीय्या ज़ाहिरी राब्तए हयात के क़तअ होने के बाद भी आलमे असबाब से बेतअल्लुक़ नहीं होते। चुनान्चे इसी बक़ाये रब्त व तअल्लुक़ की वजह से उनकी क़ब्रों की ज़ियारत की जाती है और उनके अतबात व मशाहिद में इस्तेजाबते दुआ के असरात ज़हूर में आते हैं। तो जो शख़्स अमल व एतक़ाद के ज़रिये उनसे इलाक़ः रूहानी पैदा कर लेता है वह उस के लिये इस्तेजाबते दुआ का वसीला होते हैं। चुनान्चे इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मरवी है कि आप ने समाआ से फ़रमाया कि हाजत तलब करने से पहले यह कलेमाते तवस्सुल पढ़ो ताकि अल्लाह तआला तुम्हारी दुआ को जल्द कुबूल करे :

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह मैं तुझे मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और अली अलैहिस्सलाम का वास्ता देता हूं कि क्योंकि उनकी तेरे नज़दीक बड़ी क़द्रो मंज़िलत है। लेहाज़ा इसी क़द्रो मंज़िलत के पेशे नज़र तू मोहम्मद[स0] और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा।"

और हज़रत सैय्यदुस् साजेदीन अलैहिस्सलाम एक दुआ में इस तरह तवस्सुल फ़रमाते हैं :

(तरजुमा) "ऐ मेरे मअबूद! मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व आलेहि वसल्लम की मंज़िलत बुलन्द पाया और अली अलैहिस्सलाम के मर्तबए रौशन व दरख़शां के वास्ते से तुझसे तक़र्रूब का ख़्वास्तगार हूं और इन दोनों के वसीले से तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हूं ताकि मुझे तू उन चीज़ों की बुराई से पनाह दे जिनसे पनाह मांगी जाती है।"

बाअज़ औराद व अज़कार में अदइया व अज़कार में अदद की रिआयत के अवाएल या अवाख़िर में यह वारिद होता है कि इतनी मर्तबा दुरूद पढ़ो या इतनी दफ़ा फ़लां सूरह पढ़ो तो उस मौक़े पर अदद का लिहाज़ रखना चाहियेऔर उसे घटाना बढ़ाना न चाहिये। क्योंकि उस मक़ाम पर उसके नताएज व असरात को इस लिये अदद से वाबस्ता किया गया है जो कम व बेश करने की सूरत में मुरत्तब नहीं हो सकते। चुनान्चे साहबे रियाज़ुस् सालेकीन ने सैय्यद इबने ताऊस अल हुसैनी रहमतुल्लाह से नक़्ल किया है कि अदइया व अज़कार में अदद को नज़र अन्दाज़ न करना चाहिये वरना मतलूबा फ़वाएद उससे हासिल न हो सकेंगे। इसे यूं समझना चाहिये कि अगर कोई शख़्स कि जिसकी रास्त बयानी पर मुकम्मल एतमाद व वसूक़ हो और वह यह कहे कि फ़लां मक़ाम से दस गज़ के फ़ासले पर एक ख़ज़ाना मदफ़ून है अगर उसे खोदोगे तो वह ख़ज़ाना तुम्हें दस्तयाब होगा। तो अब कोई शख़्स दस गज़ के फ़ासले से आगे या उस फ़ासले से पीछे खोदेगा तो वह ख़ज़ाना उसके हाथ नहीं लगेगा। बेऐनेही यही सूरत अज़कार व अदइया की है कि उनसे मतलूबा फ़वाएद उसी सूरत में हासिल हो सकते हैं जब उनमें अदद का लिहाज़ रखा गया हो। लेहाज़ा गुफ़्तगू या दूसरे कामों में मशग़ूल हुए बग़ैर इस अदद को तमाम करना चाहिये और अगर दौराने ज़िक्र में कलाम करने की ज़रूरत पड़ जाये तो फिर उसे अज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सरे नौ शुमार करे।

औक़ाते दुआ

सहीफ़–ए–कामेला या दूसरी कुतुबे अदइया में जो दुआयें अवक़ात व अय्याम से वाबस्ता हैं जैसे रोज़े अरफ़ा, ईदे फ़ितर, ईदुज़्ज़ोहा और नमाज़े शब के बाद की दुआयें। इन्हें इनके मोअय्यना अवक़ात में पढ़ना चाहिये, क्योंकि वही लम्हात इनके लिये मुनासिब और क़ुबूलियत से क़रीबतर होते हैं, और जो दुआयें दिन और वक़्त की पाबन्द नहीं हैं या इनके अलावा कोई और दुआ मांगना चाहे तो अवक़ात इस्तजाबत के लिहाज़ से बेहतर हैं : सहर से ले कर तुलूए आफ़ताब तक, ज़वाले आफ़ताब के वक़्त, सुबह, ज़ोहर और मग़रिब की नमाज़ के बाद, नमाज़े वित्र में, शब हाय क़दर में, जुमे के दिन ख़ुतबे और नमाज़ के दरमियानी वक़्फ़े में, जुमे के दिन जब कि सूरज आधा डूब चुका हो, अज़ान और इक़ामत के दरमियानी वक़्फ़े में, तिलावते कुर्आन के मौक़े पर, बारिश के बरसने और हवाओं के चलने के वक़्त और अलल ख़ुसूस निस्फ़ शब के बाद, कि वह दुआ का बेहतरीन वक़्त है।

दिला ब सोज़ कि सोज़े तू कार हा ब कुनद
दुआए नीम शबी दफ़अ सद बला ब कुनद

चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम रात के एक हिस्से में उठे और सितारों पर नज़र करने के बाद नोफ़ इबने फ़ज़ाला बकाली से फ़रमाया :

(तरजुमा) "ऐ नोफ़! दाऊद अलैहिस्सलाम रात के ऐसे ही हिस्से में उठे और फ़रमाया कि यह वह घड़ी है कि जिसमें बन्दा जो भी दुआ मांगे मुस्तजाब होगी सिवाए उस शख़्स के जो सरकारी टैक्स वसूल करने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वाला या (किसी ज़ालिम हुकूमत की) पुलिस में हो या सारंगी या ढोल ताशे बजाने वाला हो।"

मक़ामाते कुबूलियते दुआ

जिस तरह अवक़ात व साआत और अज़मना व अय्याम को कुबूलियते दुआ में दख़ल है। उसी तरह महल व मक़ाम भी कुबूलियते दुआ पर असर अन्दाज़ होते हैं और वहां पर दुआ जल्द मुस्तजाब होती है। चुनान्चे ज़ैल के मक़ामात इस्तजाबे दुआ के लिये मख़सूस हैं : मस्जिदुल हराम, अरफ़ात, मशअरुलहराम मक्का, मस्जिदे नबवी[स०] मस्जिदे कूफ़ा, मज़ाराते आईम्मा अहलेबैत अलैहिस्सलाम और अलल ख़ुसूस रौज़–ए–सैय्यदुश् शोहदा हुसैन इब्ने अली अलैहिस्सलाम कि उसके मुतअल्लिक़ वारिद हुआ है कि (तरजुमा) "इनके गुम्बदे मज़ार के नीचे दुआयें कुबूल होती हैं।"

व आख़िरो दअवाना अनिल हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन

●●●

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुआए मकारमुल अख़लाक़ की जामेइय्यत

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्सानी ज़िन्दगी को इन्सानियत के बुलन्द तरीन औसाफ़ से मअमूर बनाना ख़ालिक़े इन्सान का अहम मक़सद है जिसके लिये अम्बिया मबऊस हुए, किताबें नाज़िल हुयीं, और शरीअतें मुक़र्रर हुईं। उन्हीं बुलन्द इन्सानी औसाफ़ का नाम "मकारमुल अख़लाक़" है और मकारमुल अख़लाक़ की तकमील करना ही सिलसिलए अम्बिया और निज़ामे हिदायत व तशरीअ का माहसल है। इसी लिये इस सिलसिले की फ़र्द अकमल और रसूले[स०] ख़ातम ने एलान फ़रमाया: (तरजुमा) "यानी मैं इस लिये भेजा गया हूं कि बुलन्द तरीन अख़लाक़े इन्सानी की इमारत को पायए तकमील तक पहुंचाऊँ।" और यह मक़सद हासिल नहीं हो सकता था जब तक आप ख़ुद इसका मुकम्मल तरीन नमूना न होते इस लिये आप ख़ुद उस कमाले बशरी के दर्जे पर फ़ाएज़ बना कर भेजे गये जिसको हज़रत अहदियत की जानिब से सनद अता हुई कि इन्नका लअला ख़ुल्क़े अज़ीम और इन्हीं अख़लाक़ का बेहतरीन नमूना आंहज़रत[स०] ने अपने बाद अपने अहलेबैते ताहेरीन अलैहिस्सलाम को छोड़ा। उनकी सीरते ज़िन्दगी का हर गोशा अख़लाक़ी कमालात के जवाहर से आरास्ता था, लेकिन उसके देखने, परखने और समझने के लिये बड़ी चश्मे बीना की ज़रूरत है और अगर हम समझ भी लेते तो हमें उनके इज़हार के लिये मुनासिब लफ़्ज़ें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मिलना दुशवार थीं। मगर उनमें की एक फ़र्दे कामिल, शहीदे करबला के फ़रज़न्द इमाम ज़ैनुल आबेदीन, सैय्यदुस् साजेदीन अली इब्नुल हुसैन अलैहे व अला आबाएहि व अबनाइस्सलात वस्सलाम ने इन अख़लाक़ी कमालात के तसव्वुर को अल्फ़ाज़ के क़ालिब में ढाल कर दुआओं की शक्ल में ख़ल्क़े ख़ुदा की तालीम के लिये महफ़ूज़ कर दिया। इन दुआओं का मजमूआ : ज़ुबूरे आले मोहम्मद[स०] मअरूफ़ ब सहीफ़–ए–कामेला या सहीफ़–ए–सज्जादिया शाया और मुतदाविल है। इन दुआओं में से एक ख़ास दुआ अद्दुआ फ़ी मकारमुल अख़लाक़ व मरज़िय्युल अफ़आल है जिसमें आपने बारगाहे इलाही में अर्ज़ व मारूज़ के सिलसिले में अपने ख़ालिक़ से आमाले ख़ैर से इत्तसाफ़ और बुरे आमाल से बचने की तौफ़ीक़ मांगते हुए तफ़सील के साथ तमाम उन बातों का ज़िक्र फ़रमाया है जिनसे एक इन्सान को मुतस्सिफ़ होना चाहिये और तमाम उन औसाफ़ को भी बयान फ़रमाया है जिनसे एक इन्सान को ख़ाली होना चाहिये जहां तक ग़ौर किया जाता है इन्सानी कमालात तीन शोबों में मुन्क़सिम हैं। एतक़ाद, क़ौल, और अमल, पहले का तअल्लुक़ दिल से, दूसरे का ज़बान से, तीसरे का आज़ा व जवारेह से है। इसी वजह से ईमान भी तीन ही अजज़ा से मुरक्कब है तस्दीक़ बिल जेनान व इक़रार बिल्लेसान व अमल बिलअरकान। इस लिये इन्सानी फ़ज़ाएल जिनसे मुत्तसिफ़ होना चाहिये और इन्सानी रज़ाएल जिनसे ख़ाली होना चाहिये वह भी तीन ही क़िस्में रखते हैं। फ़ज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेक़ल्ब, रज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेक़ल्ब, फ़ज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेलेसान, रज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेलेसान; फ़ज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेजवारेह रज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेजवारेह।

इस दुआ में इमाम अलैहिस्सलाम ने इनमें से हर क़िस्म के फ़ज़ाएल व रज़ाएल को इन्तेहाई इख़्तेसार के बावजूद इतनी तफ़सील से बयान फ़रमाया

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है जिसकी तवक़्क़ो एक मबसूत किताब ही से की जा सकती थी।

जैल में एक ख़ाका इन तमाम फ़ज़ाएल व रज़ाएल का जो इस दुआ में मज़कूर है दर्ज किया जाता है :

(1) फ़ज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेक़ल्ब : ईमान, यक़ीन, हुस्ने नीय्यत, एहसासे उबूदियत, एहसासे तवाज़ो, मोहब्बते ख़ल्क़, अहले सलाह पर एतमाद, इत्मिनान, ख़ैर ख़्वाही, क़द्र शिनासी, नर्मी, इक्तेसाबे फ़ज़ाएल में रग़बत, अपनी नेकियों को कम समझना, बुराईयों को ज़्यादा समझना, ज़िक्र, तफ़क्कुर, परहेज़गारी, इल्म बा अमल, मोहब्बते ख़ुदा।

(2) रज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेक़ल्ब : ग़ुरूर, ख़ुदबीनी, नाज़ बे जा, शक, बुग्ज़, हसद, बदगुमानी, ख़ुशामदाना मोहब्बत, ख़ौफ़े खल्क़, ऐब जूई, गुमराही, आरज़ूए बेमहल, फ़रेफ़तगी, ग़फ़लत।

(3) फ़ज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेलिसान : हुस्ने ज़िक्र, शुक्रे नेअमत, इशाअते एहसान, ऐब पोशी, हक़ गोई, बारगाहे इलाही में दुआ, तज़र्रो–ओ–ज़ारी, हम्दे परवर दिगार, शुक्रे इलाही, नुतक़े हिदायत।

(4) रज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेलेसान : एहसान जताना, ग़ीबत करना, ऐब लगाना, ग़ैर ख़ुदा से मदद मांगना, ग़ैर के सामने गिड़गिड़ाना, फ़ोहश, बेहूदा लफ़्ज़, सब्बो–शितम, झूठी गवाही, ग़ैर ख़ुदा को उसका शरीक समझ कर पुकारना, जो कुछ दे उसकी तारीफ़ जो न दे उसकी मज़म्मत।

(5) फ़ज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेजवारेह : हुस्ने अमल, फ़र्दाकी जवाब देही का सामान, ग़रज़े ख़िलक़त में सर्फ़ अवक़ात, लोगों के साथ भलाई, इताअते ख़ुदा, रिश्तेदारों से नेकी, उनकी इमदाद, हुस्ने मआशिरत, ज़ालिमों पर ग़लबा, इस्लाह करने वाले की फ़रमांबरदारी और हिदायत करने वाले की पैरवी। महरूम करने वालों पर बख़शिश, क़ता रहम करने वालों के साथ सिलए रहम, इन्साफ़, अलग रहने वालों को मिलाना। बाहमी अदावतों को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दफ़ा करना, झुक कर मिलना, नेक आदतें अख़्तियार करना, फ़ज़ीलत की तरफ़ बढ़ने में सबक़त, दादो दहिश, बरमहल सर्फ़, इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद को क़ायम रखना, बिदअत वालों को छोड़ना, सीधे रास्ते पर चलना, मेयानारवी, हक़ की तरफ़ रहनुमाई, माल के सर्फ़ करने में नेकी करना, इबादत, ज़ोहद, इल्म के मुताबिक़ अमल, रोज़ी की तलब में एतदाल।

(6) रज़ाएल मुतअल्लिक़ा बेजवारेह : कजरवी, शैतान की इताअत, मअयूब आदतें, रिश्तेदारों के हुक़ूक़ में कोताही, साथ रहने वालों को ढकेलना, बरादराने ईमानी से क़ता तअल्लुक़ात, क़ता रहम, बेजा गुस्से से काम लेना, इबादत में कसल, जो लोग खुदा से अलग हो गये हैं उनके साथ बैठना, अल्लाह वाले लोगों से जुदा होना, ग़ैरे खुदा के सामने झुकना, ज़ुल्म, सरकशी, माले दुनिया की हवस, फ़ुज़ूल ख़र्ची, कसबे माल में मसरूफ़ हो कर इबादत से ग़फ़लत।

इस फ़ेहरिस्त को अगर देखिये तो यह मालूम होता है कि किसी ज़ख़ीम किताबुल अख़लाक़ की फ़ेहरिस्त, मगर इन तमाम अबवाब को इमाम अलैहिस्सलाम ने चन्द सफ़हों की दुआ में इतनी बेनज़ीर मतानत, जामईय्यत और बलाग़त के साथ अदा फ़रमाया है जिसकी नज़ीर मिलना ग़ैर मुम्किन है।

फिर एक ख़ास बात यह है कि इन तमाम अच्छे अख़लाक़ से इत्तेसाफ़ और उन बुरे औसाफ़ से अलाहदगी को बतौरे दुआ अल्लाह सुब्हानहू से तलब किया है जिससे यह बात साबित होती है कि अगर ताईदे इलाही शामिले हाल न हो तो तन्हा इन्सान इस मरहले को आख़िर तक तय करने से आजिज़ है।

बेशक इब्तिदाई मन्ज़िले ज़ोक़ व शौक़ में क़दमज़नी करना इन्सान का खुद इख़्तियारी फ़र्ज़ है। लेकिन जब वह लौ लगाता है तो फिर खुद लुत्फ़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इलाही उसकी इस्लाहे हाल और ताईद व तस्दीद की तरफ़ मुतवज्जह हो जाता है। इसी हक़ीक़त को इस मुनाजात में दुआ के ज़रिये से ज़ाहिर किया गया है। मौजूदा ज़माने में जब कि माद्दियत का दौर दौरा है ख़लक़े ख़ुदा की आंखों से ग़फ़लत के पर्दे हटाने के लिये आले मोहम्मद[स०] के बसीरत अफ़रोज़ कलेमात बेहतरीन नुस्ख़ए कीमिया हैं।

ज़ाहिर है कि जो बातें दिल से निकली हुई होती हैं वह दिलों पर असर करके रहती हैं। हम अगर अपने लफ़्ज़ों से इन बातों को ज़ाहिर करना भी चाहें तो उनका क़ारेईन के दिलों तक पहुंचना निहायत दुश्वार है। इस लिये कि न दिल में दर्द हो और न सोज़े जिगर और न ज़ोक़े तलब और न शौक़े क़ुबूल तो फिर तासीर कैसे हो।

यह ख़ुश क़िस्मती है कि मक़सद के हुसूल के लिये एक बेहतरीन ज़रिया मौजूद है और वह आले रसूल[स०] की ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं। अगर पढ़ने वाले और सुनने वाले में कुछ भी सलाहियत क़ुबूल है तो मुम्किन नहीं कि यह दर्दो सोज़ और ज़ौक़ो शौक़ से भरे हुए कलमात असर डाल कर न रहें।

मुबारक होंगे वह जो मासूम[अ०] की ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ को अपने औरादो वज़ायफ़ में दाख़िल करें उनके मानी पर ग़ौर करें और उनसे सही फ़ायदा उठाने की कोशिश करें। वस्सलाम!

●●●

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सहीफ़-ए-सज्जादिया[अ०] की बेमिसाल अज़मत पर

उलमाए मिस्र के मोहक़्क़ेक़ाना तबसरे

तअस्सुब और तंग नज़री को जाने दिया जाये और खुश एतक़ादी से भी कोई वास्ता न रखा जाये, सिर्फ़ तारीख़ और दरायत की रौशनी में देखा जाये तो यह अम्र बिल्कुल हक़ीक़ते साबिता मालूम होगा कि रसूलल्लाह[स०] की रवायात और आप[स०] की सीरत के बहुत से ख़ुसूसियात और आपके ज़ाती कमालात के बहुत से नक़ूश आप की तरबियतकर्दा औलाद और ज़ुर्रियते ताहिरा के साथ वाबस्ता थे और ज़रूरत थी कि रसूलल्लाह[स०] के बाद किसी रस्मी ओहदा और मनसब की हैसियत से न सही लेकिन शरीयते इस्लाम और एहकामे दीन नीज़ इसरारे वहदानियत व रिसालत की तालीमी हैसियत का जहां तक तअल्लुक़ है उन हज़रात के अक़वाल व अफ़आल को पूरी अहमियत दी जाती, लेकिन अफ़सोस है कि ऐसा नहीं हुआ। आम मुस्लमान फ़िर्क़ावाराना तंग नज़री का इस तरह शिकार हुए कि उन्होंने अहलेबैते रसूल[स०] से अजनबियत इख़्तियार कर ली, और चाहे बराये नाम उनसे अक़ीदत का इज़हार क़ायम रखा हो लेकिन अमली तौर पर उनके अफ़ादियत व अक़वाल से बिल्कुल किनाराकशी कर ली और आले मोहम्मद[स०]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गोया सिर्फ़ शियों के रसूल[स०] के अहलेबैत[अ०] बन गये।

आम इस्लाम की बहबूदी के लिहाज़ से यह सूरते हाल निहायत अफ़सोसनाक थी। लेकिन शुक्र है कि मुसलमानों का सबसे बड़ा मरकज़े इल्म व शरीअत, मिस्र आज अपनी इल्मी तरक़्क़ियों के साथ इस जाहिलाना तंग नज़री से आज़ाद हो रहा है।

इस सिलसिले में सब से पहले अल्लामा शेख़ मोहम्मद अबदहू ने जो "मुफ़्ती दयारे मिस्रिया" का दर्जा रखते थे, नहजुल बलाग़ा को जो अमीरूल मोमेनीन[अ०] के कलाम का मजमूआ है अपने आलिमाना हवाशी और पुरज़ोर मुक़दमे के साथ अपने एहतेमाम से मिस्र में शाया कराया जिसके बाद मुतअद्दिद बार इसकी इशाअत हो चुकी और मिस्र के इल्मी व अदबी हल्क़े में इसकी अहमियत मुसल्लम हो गयी है।

अब इस तरफ़ कुछ बरसों से मिस्र के बुलन्द पाया इल्मी हल्क़ों में "सहीफ़–ए–सज्जादिया" को एक अजीब हैरत की निगाह से देखा जा रहा है। चुनान्चे आप को यह सुनकर हैरत होगी कि यह जलीलुल मरतबत किताब जो कुछ कम चौदह सौ बरस से दुनियाए इस्लाम में मौजूद है और सैंकड़ों कुतुबख़ानों में महफ़ूज़ है और मुतअद्दिद बार छप भी गयी है। मिस्र में एक बिल्कुल नई चीज़ समझी गयी। वहां के बड़े–बड़े उलेमा और प्रोफ़ेसरों ने इस पर मबसूत मक़ाले लिखे और वह मिस्र के रिसालों में शाया हुए नीज़ आपके हिन्दुस्तान के वाहिद अरबी रिसाला "अल रिज़वान" में भी दर्ज हुए।

पहला मज़मून उस्ताद फ़ैलसफ़ूफ़ तनतावी जौहरी का हे जिसका उनवान है : (तरजुमा) "हज़रत ज़ैनुल आबेदीन अली बिनुल हुसैन की दुआयें और उनसे मुसलमानों को क्या फ़वाएद हासिल हो सकते हैं?

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

यह मुसलसल चन्द मक़ालात का मजमूआ है जो रिसाला, "हदयुल इस्लाम" मिस्र की मुतअद्दिद इशाअतों में शाया हुए हैं और मुकम्मल सूरत से "अल रिज़वान" में दर्ज हुए हैं। मौसूफ़ तहरीर फ़रमाते हैं :

जामेअ़ अज़हर के नौजवान हिन्दुस्तानी तालिबे इल्म सैय्यद मुजतबा हसन ने मुझे एक किताब से मुत्तेला किया जिसमें कुछ दुआयें, कुछ मुनाजातें हज़रत अली इब्नुल हुसैन[अ०] ज़ैनुल आबेदीन[अ०] की तरफ़ मन्सूब मौजूद हैं। मैंने उस किताब को ग़ौर से देखा, और उसके मुन्दरजात पर गहरी नज़र डाली तो मुझ पर एक हैबत तारी हो गयी और उन दुआओं की अज़मत मेरे दिल में जागुज़ीन हो गयी और मैंने कहा कि यह अजीब बात है! क्योंकर मुसलमान अब तक इस ज़ख़ीरे से नावाक़िफ़ रहे और किस तरह वह सदियों और फिर सदियों तक ख़वाबे ग़फ़लत में मुब्तिला रहे और उन्हें एहसास न हुआ कि इतना बड़ा इल्मी ज़ख़ीरा ख़ुदा ने उनके लिये मोहय्या कर रखा है। अगर वह उन ख़ज़ानों को खोल कर देखें और उन इसरार व रमूज़ पर मुत्तलअ हों तो समझें कि सुन्नी और शिया फ़िर्क़े दोनों ख़्वाह मख़्वाह के लिये इफ़तेराक़े बाहमी में मुब्तिला हैं और बाहमी अदावत के नशे में सरशार हैं।

इस किताब में दो क़िस्म की दुआयें हैं। एक सलबी (यानी बुरी बातों से दूर होने की तालीम) दूसरे असबाक़ी (यानी अच्छी बातों से मुत्तसिफ़ होने की तलक़ीन) दूसरों लफ़्ज़ों में यह कहना चाहिये कि यह दुआयें एक अजीब रम्ज़ो इशारे की सूरत से क़रार दी गयी हैं, जिन दुआओं में निदामत और पशेमानी और तज़र्रुअ व ज़ारी और मसाएब का दफ़िआ और मज़ालिम से नजात और बीमारियों से शिफ़ा का ज़िक्र है, वह ज़्यादातर किताब के इब्तेदाई हिस्से में हैं और जिन दुआओं में ख़ुदा के अज़मत व जलाल का इज़हार है और उसकी सनअत और अजाएबे क़ुदरत का तज़किरा है वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़्यादातर किताब के आख़िर में हैं।

क्या यह एक अजीब बात नहीं है? क्या इसके यह मानी नहीं हैं कि यह हज़रात[अ०] बहुत से इसरार व रमूज़ और उलूम व मआरिफ़ की तरफ़ इशारा कर रहे थे जिनसे मुसलमान बिल्कुल ग़ाफ़िल और बेख़बर हो गये हैं।

हक़ीक़तन् इन्सानी अफ़राद के हालात भी दो ही सूरतों पर मुनक़सिम हैं एक तख़ली अनर्रज़ाएल (बुरी बातों से अलैहिदगी) दूसरे तहल्ली बिल फ़ज़ाएल (अच्छे अवसाफ़ से आरास्तगी) और उसके साथ बुलन्द मर्तबा उलूम व मआरिफ़ की तहसील जिससे नफ़्स नातेक़ा इन्सानी की तक्मील हो।

हम इन दोनों क़िस्मों की तशरीह करेंगे। फिर इस्लामी अक़वाम के लिये इसके अमली नताएज जो बरामद होते हैं पेश करेंगे।

(पहली क़िस्म) इसमें यह दुआ है जो इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम मुनाजात में पढ़ते थे। इसको अमीनुल इस्लाम फ़ज़ल बिन हसन[अ०] तबरिसी ने अपनी किताब "अदतुल सफ़र व उमदतुल हज़र में भी दर्ज किया है।

"ख़ुदा वन्दा अक्सर मेरी आंखें ख़्वाब आलूदा हो गयीं उस वक़्त जब तेरी नमाज़ों का वक़्त था। तू मेरी हालत से वाक़िफ़ है और एक महदूद ज़माने तक चश्म पोशी से काम लेता है। अफ़सोस है इन आंखों के हाल पर यह क्योंकर सब्र करेंगी उस वक़्त जब इन पर अज़ाब किया जायेगा। ख़ुदा वन्दा अक्सर मेरे पांव तेरी इताअत के रास्तों से अलग गामज़न हुए। तू इस पर मुत्तलअ है और महदूद ज़माने तक चश्म पोशी से काम लेता है। अफ़सोस है इन पैरों के हाल पर यह क्योंकर सब्र करेंगे जब इन पर अज़ाब होगा। ख़ुदा वन्दा! बहुत ऐसा हुआ कि मैंने ऐसी बातों का इरतेकाब किया जिनमें मेरे नफ़सानी अग़राज़ शरीक थे तू इस पर मुत्तलअ हुआ। अफ़सोस्

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

यह मेरा जिस्म क्योंकर सब्र करेगा जब इस पर अज़ाब होगा। ख़ुदा वन्दा! काश मैं अपनी मां के बत्न से पैदा न हुआ होता। ख़ुदा वन्दा काश! दरिन्दे पहाड़ों पर मेरे टुकड़े कर डालते और मुझे बहैसियत मुजरिम तेरे सामने खड़ा न होना होता। ख़ुदा वन्दा! काश मेरे परे परवाज़ होते कि तेरे ख़ौफ़ व हैबत से फ़िज़ा में परवाज़ करता। ख़ुदा वन्दा! अफ़सोस मेरे हाल पर अगर आतिशे जहन्नम में मेरी मंज़िल हो। ख़ुदा वन्दा! अफ़सोस दर अफ़सोस मुझ पर अगर जहन्नम के ज़हरीले फलों से मुझे खाना नसीब हो। ख़ुदा वन्दा अफ़सोस मेरे हाल पर अगर क़तरान (तारकोल) का मेरा लिबास हो। ख़ुदा वन्दा! अफ़सोस दर अफ़सोस मेरे हाल पर अगर आबे गर्म मेरे पीने के लिये मिले। ख़ुदा वन्दा! अफ़सोस दर अफ़सोस मेरे हाल पर अगर मैं तेरे सामने आऊँ इस में कि तू मुझसे नाराज़ हो। इस सूरत में कौन है जो तुझ को मुझ से रिज़ामन्द बनाये या कौन से वह अच्छे आमाल मेरे होंगे जिनके सबब से मैं तेरे सामने सर उठाऊँ और जिनका तज़किरा अपनी ज़बान पर लाऊँ। कुछ नहीं सिवाये इस उम्मीद के जो तेरे करम से है क्योंकि तेरी रहमत तेरे ग़ज़ब से आगे है और तूने कहा है कि मेरे बन्दों को बतला दें कि मैं बड़ा बख़्शने वाला और तरस खाने वाला हूं और यह कि मेरा अज़ाब बहुत सख़्त अज़ाब होगा। बिल्कुल सच कहा तूने ऐ मेरे मालिक! तेरे ग़ज़ब को कोई चीज़ टाल नहीं सकती सिवाये तेरे ही हिल्म के और तेरे अज़ाब से कोई चीज़ पनाह नहीं दे सकती सिवाये तेरी रहमत के और तुझसे कोई चीज़ भी नहीं मिल सकती सिवाये तेरी ही बारगाह में गिड़गिड़ाहट के। अच्छा फिर मैं तेरे सामने खड़ा हूं बिल्कुल ज़लील, बेक़द्र, शिकस्ता हाल और बेसरो सामान। अगर तू मुझे माफ़ कर दे तो कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि हमेशा ही से तेरी रहमत मेरे शामिले हाल रही और तूने सेहत व सलामती का लिबास मुझ को पहनाये रखा, और अगर तू मुझे सज़ा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दे तो मैं इसका मुस्तहक़ हूं और वह तेरी अदालत का नतीजा होगा। ख़ुदा वन्दा! मगर मैं तेरे ही पोशीदा औसाफ़ और तेरे ही इस कमाले ज़ात का जो हिजाब राज़ में मुज़मिर है वास्ता दे कर यह सवाल करता हूं कि मेरे इस बेताब नफ़्स और इस मुज़तरब जिस्म और नाज़ुक जिल्द और इन कमज़ोर हड्डियों पर रहम करना। यह मेरा जिस्म जो इस तेरे आफ़ताब की हरारत को बर्दाश्त नहीं कर सकता, तेरी आग को कैसे बर्दाश्त करेगा। यह जो तेरे बादल की गरज की आवाज़ से थर्रा उठता है तेरे ग़ज़ब की आवाज़ को कैसे सुन सकता है। माफ़ी, माफ़ी, माफ़ी; बेशक गुनाहों ने मुझे धोखा दिया, तेरी नेअमतों ने मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखा मगर मैंने तेरा शुक्रिया बहुत कम अदा किया। मेरे आमाल इन्तेहाई कमज़ोर हैं और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिस पर मैं भरोसा करूं सिवाये तेरी रहमत के ऐ सब रहीमों से ज़्यादा रहीम।

इस दुआ में जिन क़ुरआनी आयात की तरफ़ इशारा है

देखो इमाम अलैहिस्सलाम इस दुआ में आंखों का ज़िक्र करते हैं और उनके गुनाहों का; पैरों का तज़किरा करते हैं और उनके जराएम का; जिस्म का और उसके अज़ाब का जो रोज़े क़यामत होगा; और उस जिस्म की कमज़ोरी का उस अज़ाब के तहम्मुल से। फिर अपनी ख़जालत का इज़हार ख़ुदा की बारगाह में और इस सिलसिले में जहन्नम और वहां का ज़हरीला खाना और वहां का मख़सूस लिबास और इस सब से बढ़कर ख़ुदा की नाराज़गी और बन्दे की बेबसी और सबसे आख़िर में यह कि सिर्फ़ ख़ुदा की रहमत पर तकिया है और उसी पर भरोसा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इस दुआ पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि इसमें बेहतरीन मवाएज़ मुज़मर हैं जिनसे शिया सुन्नी सब ही फ़ायदा उठा सकते हैं। इस तरह की दुआओं को हक़ीक़तन् तालीमी सबक़ समझना चाहिये जो मोएज़ा व हिदायत की ख़ातिर मुस्लमानों के सामने पेश किये गये हैं। वरना दरहक़ीक़त यह मुक़द्दस ज़ातें हरगिज़ गुनाहों से इस तरह आलूदा न थीं, लेकिन चूंकि बारगाहे इलाही में इनका तक़र्रुब ज़्यादा था इस लिये इन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ भी सख़्त था। (इन्नमा यख़शल्लाहो मन एबादेहिल उलेमा) ख़ुदा से डरते वही ज़्यादा हैं जिन्हें ख़ुदा की मअ़रफ़त ज़्यादा होती है"। और चूंकि वह मुसलमानों के लिये पेशवा की हैसियत रखते हैं इस लिये उन्होंने मुसलमानों के लिये मिसाल पेश की और यही वह तरीक़ा है जो दुनिया की हिदायत के लिये बेहतरीन सूरत पर कामयाब हो सकता है।

(दूसरी क़िस्म) यानी फ़ज़ाएल के साथ आरास्तगी और उलूम व कमाल की तहसील की "अहमियत"। इसमें आपकी यह दुआ है, जो 24 माहे रमज़ान को आप पढ़ते थे।

"ऐ सफ़ेदए सहरी को ज़ाहिर करने वाले और रात को आराम व सुकून का ज़रिआ बनाने वाले और आफ़ताब व माहताब को मुक़र्रर हिसाब के साथ चलाने वाले। ऐ इज़्ज़त के मालिक! ऐ बख़्शिश व करम और कूव्वत व ताक़त और फ़ज़ल व एहसान और जलाल व बुज़ुर्गी के सरमायादार! ऐ अल्लाह! ऐ रहम वाले ख़ुदा! ऐ एक अकेले यगाना! ऐ अमन व इतमनान के देने वाले! ऐ निगरानी व निगहदाश्त करने वाले! ऐ अल्लाह! ऐ ज़ाहिर! ऐ अल्लाह, ऐ बातिन! ऐ ज़िन्दा रहने वाले! सिवाये तेरे कोई माबूदे बरहक़ नहीं। ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! तेरे लिये हैं बेहतरीन नाम, और बुलन्दतरीन मिसालें और बुज़ुर्गी और तमाम नेअमतें, रहमत अपनी नाज़िल कर मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे न क़रार दे उन लोगों में से कि जब वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सही व सालिम हों तो ग़ाफ़िल हो जायें और जब बीमार हों तो तुझसे ख़ौफ़ करें। जब मालदार हों तो फ़रेबे दुनिया का शिकार रहें और जब फ़क़ीर हों तो तुझसे लौ लगायें। जब बीमार हों तो गुनाहों से तौबा करें और जब अच्छे हों तो फिर गुनाहों में मुब्तिला हो जायें। न उन लोगों में से क़रार दे कि जो अच्छे आदमियों की मोहब्बत का दावा तो रखते हों मगर उनके से आमाल न करते हों और बुरे आदमियों से नफ़रत का इज़हार तो करते हों मगर ख़ुद अपने अफ़आल के लिहाज़ से उन ही बुरे आदमियों में दाख़िल हों जो अपने दूसरे भाईयों की बुराई तो ज़ाहिर करते हों और ख़ुद अपनी बुराईयों पर पर्दा डालते हों। ख़ुदा वन्दा! मैं तुझसे सवाल करता हूं हिदायत और परहेज़गारी और इफ़्फ़त और बेनयाज़ी का उन चीज़ों से जिन्हें तूने हराम क़रार दिया है और अमल का तेरी इताअत के साथ उन बातों में जो तुझे पसन्दीदा हैं। परवर दिगार! मेरे चेहरे को आतिशे जहन्नम से मोड़ दे। ख़ुदा वन्दा मैं तुझसे सवाल करता हूं। ऐ अल्लाह! ऐ एक, ऐ अकेले! ऐ मालिक ऐ वह कि जिसके औलाद नहीं, न वह किसी की औलाद है, न उसकी कोई मददे मक़ाबिल है, ऐ जलालत व बुज़ुर्गी के मालिक! ऐ हाजतों के पूरा करने वाले, ऐ तकलीफ़ों को दूर करने वाले। ऐ ख़्वाहिशों के अता करने वाले, ऐ अहम मुसीबतों में मदद करने वाले, मेरी मदद कर उस मुहिम में जो मुझे दरपेश है, मेरे क़र्ज़ों को अदा करा दे और मेरे दिल में पाकीज़गी पैदा कर दे और मेरे आमाल में इज़ाफ़ा कर दे और मेरे लिये आतिशे जहन्नम से आज़ादी की दस्तावेज़ लिख दे, और अज़ाब से अमान की सनद और सेरात पर से गुज़रने का परवाना और जन्नत में हिस्सा पाने का फ़रमान लिख कर दे दे और मुझको हक़ व सदाक़त के एहाते में दाख़िल कर और मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद[स०] की रिफ़ाक़त नसीब कर, जन्नत के बाग़ों में और हमेशा रहने वाली मसर्रत में। ऐ जलालत व बुज़ुर्गी के मालिक ख़ुदा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

न्दा! दुरूद भेज मोहम्मद^स० व आले मोहम्मद^स० पर और मेरी दुआ को कुबूल कर और मेरी तज़र्रुअ व ज़ारी पर रहम और अपनी बारगाह से मेरी उम्मीद को क़तअ न कर। ऐ फ़रयाद रसे बेकसां मेरी फ़रियाद को पहुंच। ऐ ईमान लाने वाले के पनाह दहिन्दा! मुझे पनाह दे। ऐ नेकूकार अशख़ास के मददगार! मेरी इम्दाद कर। ऐ तौबा करने वालों के दोस्त, मेरी तौबा कुबूल कर, ऐ तही दस्तों को रिज़्क़ देने वाले! मुझे रिज़्क़ अता कर। ऐ दर्दमन्दों की तक्लीफ़ को दूर करने वाले! मेरी तक्लीफ़ को दूर कर। ऐ मज़बूत ताक़त व कुव्वत के मालिक! मोहम्मद^स० व आले मोहम्मद^अ० पर रहमत नाज़िल कर और मेरे दिल को अपने दीन और अपनी इताअत पर मज़बूती से क़ायम रख। यहां तक कि मैं तेरे सामने आऊँ तू मुझसे राज़ी हो ग़ज़बनाक न हो। तू ही एहसान और बख़्शिश का मालिक है। परवर दिगार! हम को दुनिया में नेअमत अता कर, और आख़रत में भी और हम को अपनी रहमत के साथ आतिशे जहन्नम से बचा दे ऐ सब रहीमों से ज़्यादा रहीम!

जो शख़्स इस दुआ में ग़ौर करे उसको हस्बे ज़ैल बातें नज़र आयेंगी

(1) शुरू में सफ़ेदए सहरी की नमूद और रात के आराम व सुकून और आफ़ताब व माहताब के हिसाब के साथ चलने का तज़करा है। यह तमाम आयाते कुरआनी की तरफ़ इशारा है। (2) इसके बाद अवसाफ़े इलाही का ज़िक्र है। इज़्ज़त, बख़्शिश, फ़ज़्ल, नेअमत, रहमत इसके साथ वहदानियत, फ़र्दानियत वग़ैरा मख़सूस अवसाफ़ का ज़िक्र है। यह कहकर इसमें तअमीम पैदा कर दी गयी है कि तमाम बेहतरीन नाम उसी के लिये हैं। (3) आख़िर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में हिदायत और तक़वा और दिल की पाकीज़गी का तज़किरा है। इमाम[अ०] ने इस दुआ में एक रास्ता दिखाया है जो तौज़ीह का मुस्तहक़ है और हम तमाम मुसलमानों को इसकी जानिब तवज्जोह दिलाते हैं।

इस दुआ से जो सबक़ हासिल होता है

तमाम मुसलमानों को बिला तफ़रीक़ मैं मुख़ातिब करता हूं। देखो यह बुलन्द मर्तबा बुज़ुर्गवार नबूवत के ख़ानदान के मोहतरम फ़र्द ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम तुमसे क्या कह रहे हैं कि तुम अपने दिलों को पाक करो और गुनाहों से उनकी हिफ़ाज़त करो। यही नहीं बल्कि इस आलम की मख़लूक़ात और इस वसीअ दुनियाए कायनात को ग़ौर से देखो। वह आफ़ताब है जो हिसाब के साथ चल रहा है और माहताब है जो अपनी मंज़िलों में सैर करता है। इससे आप सूरते इनआम की उन आयतों की तरफ़ इशारा करते हैं जिनमें हज़रत इब्राहीम[अ०] का क़िस्सा मज़कूर है कि उन्होंने आसमान और ज़मीन की निशानियों का मुशाहिदा किया ताकि यक़ीन के दर्जे पर फ़ाएज़ हों। फिर इसी सूरत में यह है कि ख़ुदा ने दाने को शिगाफ़्ता किया और गुठली से दरख़्त को नुमायां किया। वह ज़ी हयात को ग़ैर ज़ी हयात से और ग़ैर ज़ी हयात को ज़ी हयात से ज़ाहिर करता है। यह है अल्लाह की क़ुदरत। तुम कहां इधर उधर फिर रहे हो। वह सफ़ेदए सहरी को ज़ाहिर करने वाला है और उसने रात को सुकून व इत्मिनान का वक़्त क़रार दिया है और आफ़ताब व माहताब को हिसाब के साथ चलाया है। यह इक़्तिदार व हुकूमत रखने वाले ख़ुदा की क़रारदाद है। उसी ने तुम्हारे लिये सितारों को मुक़र्रर किया है कि तुम इनके ज़रिये से रास्ता हासिल करो ख़ुश्की और तरी में। यह तमाम निशानियां तफ़सील

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से पेश की हैं उन लोगों के लिये जो इल्म से काम लें।

इस दुआ के मुतकल्लिम इमाम अलैहिस्सलाम ने सूरते अनआम के इब्तिदाई हिससे का तज़किरा भी इसी किताब (सहीफ़–ए–कामेला) की बाअज़ दुआओं में किया है। जहां आप ने ख़ुदा के अवसाफ़ में यह बतलाया है कि वह नूर और ज़ुलमत का ख़ालिक़ है और आफ़ताब व माहताब भी उसी ने पैदा किये हैं। इससे यह नतीजा निकलता है कि यह इजरामे समाविया ख़ुदा नहीं हैं जैसा कि जनाबे इब्राहीम[अ०] के ज़माने में साएबिया का ख़याल था, और यह कि ख़ुद नूर व ज़ुलमत भी ख़ुदा नहीं। जैसा कि ईरान के मुल्क में मानवी जमाअत का अक़ीदा है।

अल्लाहो अकबर! इससे मालूम होता है कि अहलेबैते रसूल[स०] किस मंज़िल पर थे, और तमाम मुसलमान किस मंज़िल पर हैं। इन दुआओं में इल्मे इफ़्लाक, हिसाबे आफ़ताब व माहताब, जहाज़रानी वग़ैरा के तरीक़े की तरफ़ इशारा है जो बग़ैर कवाकब की हरकतों के दरयाफ़्त किये हुए नहीं हासिल हो सकता। आज यूरोप की हर सल्तनत में इसके लिये ख़ास दर्सगाहें क़ाएम हैं। मगर मुस्लमानाने आलम अब तक इन उलूम से बिल्कुल बेख़बर रहे हैं जिनकी तरफ़ अहलेबैत[अ०] ने बराबर इशारा किया है।

चूंकि उन्हें मालूम था कि उनके मुत्तबेईन और उनके मुत्तबेईन के मुख़ालिफ़ बराबर अहलेबैत[अ०] के बारे में जंग व जदल करते रहेंगे, मगर ख़ुद उन हज़रात के दिल में यह था कि हम मुश्तरक इस्लामी रूह के शाया करने के लिये और बन्दों को ख़ुदा की मअरफ़त से क़रीब करने के लिये पैदा हुए हैं इस लिये उन्होंने इस तरह के इशारात अपने कलाम में वदीअत कर दिये हैं जिनसे तमाम साहेबाने अक़्ल फ़ायदा उठायें और हुक्मा व मुसलेहीन इनके ज़रिये से तरक़्क़ी करें। वह बातें ऐसी हैं जो तमाम ख़ल्क़ से मुतअल्लिक़ हैं, और उनमें किसी फ़िर्क़े से खुसूसियत नहीं है उन्होंने पहली

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

क़िस्म में गुनाहों का ज़िक्र किया है और कुरआन में जो अज़ाब मज़कूर हुए हैं, जैसे ज़कूम, क़तरान वग़ैरा, इनका ज़िक्र किया है और दूसरी क़िस्म में उन अजाएबाते क़ुदरत की तरफ़ इशारा किया है जिनका सूरते अनआम में भी तज़किरा है और जिनकी हक़ीक़त बग़ैर इल्मे फ़लकियात के मालूम नहीं हो सकती और इल्मे फ़लकियात के लिये हिसाब और हिन्दसा और जबर व मुक़ाबिले की ज़रूरत है इसी तरह इन आयात में जिनकी तरफ़ इस दुआ में इशारा है नबातात का ज़िक्र किया है जिसके लिये इल्मुन नबातात और इल्मे ज़राअत की ज़रूरत है, और जनीन का बत्ने मादर में तज़किरा है जिसके लिये इल्मे तशरीह और इल्मुल हयात (बायोलाजी) नागुज़ीर है।

गोया इमाम[अ०] के पेशे नज़र था यह आलम कि दुनिया में दूसरी क़ौमें तरक़्क़ी कर रही हैं। मगर सुन्नी शिया आपस के झगड़ों ही में मसरूफ़ हैं और किस बारे में? खुद अहलेबैत[अ०] के बारे में। हालांकि अहलेबैत[अ०] इन झगड़ों से अलग हैं। क्या आसमान और उसके सितारे, क्या ज़मीन और उसकी ज़राअतें ख़ुदा के मख़लूक़ात में दाख़िल नहीं हैं। क्या इन चीज़ों में ग़ौरो ख़ौज़ करना ख़ुदा की मारेफ़त से क़रीब नहीं करेगा।

मगर अफ़सोस मुसलमान ग़फ़लत में हैं। उन्होंने इस्लामी मुमालिक में इन उलूम को छोड़ रखा है और सिर्फ़ आपस के झगड़ों बखेड़ों से मतलब रखा है। वह भी ऐसे मामलात में जिनका वक़्त गुज़र चुका है और वह नस्लें गुज़र चुकीं हैं। यह ज़माना वह है जब मुस्लमानों के अक़ूल में तरक़्क़ी हो गयी है और इल्म की मोहब्बत उनके दिल में पैदा हो चुकी है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(२)

म्वाज़ना हज़रत नूह^अ० की आवाज़ में और इमाम ज़ैनुल आबेदीन^अ० की दुआ में

यह शेख़ तनतावी जौहरी का दूसरा मज़मून है :–

ऐ ब्रादारने इस्लाम! मेरा सलाम कुबूल करो। मैंने अपने गुज़िश्ता मक़ाले में इमाम ज़ैनुल आबेदीन^अ० की बअज़ दुआओं के बारे में अपने ख़यालात का इज़हार किया है। मैंने बतलाया है कि किस तरह आपने इल्म और अमल दोनों पहलुओं पर ज़ोर दिया है और आलमे कायनात की तरफ़ तवज्जोह दिलाई है।

अब एक दुआ और पेश करता हूं। वह यह है जो आप तारीक रातों में पढ़ते थे :–

"ऐ परवर दिगार! मुझे बख़्श दे। ऐ परवर दिगार! मुझ पर रहम कर। ऐ मेरे मालिक! मेरे दिल में पाकीज़गी पैदा कर। ऐ मेरे मालिक! मुझे रियाकारी से अलाहदा रख। परवर दिगार! तूने रात को हमारी राहत का ज़रिया बनाया है और दिन को हमारे कसबे मआश का मौक़ा क़रार दिया है। तूने आफ़ताब व माहताब को हिसाब के साथ जारी किया है। तू आलमों का इन्तेज़ाम करने वाला है। तूने आफ़ताब, माहताब और सय्यारों में अपने हुस्ने सनअत का मुज़ाहिरा किया है। तूने इन तमाम सितारों को अपने मख़लूक़ के फ़ायदे के लिये अपने हुक्म का पाबन्द बनाया है। मुझ पर एक नज़र अपनी डाल दे। ऐसी नज़र जो मेरे दिल को रियाकारी, ख़ुदबीनी, कीनावरी और हसद के जज़बात से ख़ाली कर दे, और जिससे मुझे तेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अज़ाब का अन्देशा पैदा हो जाये।

इस दुआ में इमाम[अ०] ने एक तरफ़ तो तहज़ीबे अख़लाक़ की तरफ़ तवज्जोह दिलाई है। जिससे नफ़्स में पाकीज़गी पैदा हो। दूसरी तरफ़ इस पाकीज़गी नफ़्स की तक्मील पर ज़ोर दिया है। इल्म और हिक्मत और कायनाते कुदरत में ग़ौरो ख़ौस के साथ हज़रत[अ०] ने अपनी दुआओं में इल्मुन नफ़्स और इल्मुल आफ़ाक़ दोनों को जमा किया है। जिस तरह कुरआन मजीद में वारिद हुआ है कि हम इन्सानों को अपनी निशानियां दिखलाते हैं। आफ़ाक़ आसमान व ज़मीन और खुद उनके नफ़ूस में ताकि उनको हक़ की मअरफ़त हो। "अन् नफ़्स" के लफ़्ज़ में बहुत से उलूम की तरफ़ इशारा है जिनमें से एक इल्मुल अख़लाक़ है, और "आफ़ाक़" के लफ़्ज़ में "इल्मुल अर्ज़" नबातात, जेबाल, बेहार और फ़लकयात वग़ैरा सब दाख़िल हैं।

नूह[अ०] की आवाज़ अपनी क़ौम के लिये

हम देखते हैं नूह[अ०] की आवाज़ को जो कुरआन में दर्ज हुई है, नूह[अ०] ने अपनी क़ौम से कहा : "ऐ मेरी क़ौम के लोगों! मैं तुम्हें ख़ौफ़ दिलाता हूं खुदा की इबादत करो और तक़वा अख़्तियार करो और मेरी इताअत करो। खुदा तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करे, और तुम्हें मोअय्यना मुद्दत तक ज़िन्दा रखे। वह खुदा की मुक़र्ररकर्दा मुद्दत जब पूरी हो जाती है तो उसमें देर नहीं होती"। फिर नूह[अ०] ने खुदा से अपनी क़ौम की शिकायत की। कहा "मैंने इस क़ौम को शब व रोज़ दावत दी। मगर मेरी दावत पर वह भागते ही रहे। मैंने जब उनको दावत दी ताकि वह अपनी मग़फ़ेरत का सामान करें, तो उन्होंने अपनी उंगलियां अपने कानों में दे लीं और चादरें सरों पर डाल लीं और अपने जराएम पर इसरार किया और पूरे तकब्बुर से काम लिया। फिर मैंने उनको खुल्लम खुल्ला आवाज़ दी और बुलन्द आवाज़ से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

एलान किया और आहिस्ता से भी समझाया। मैंने कहा कि ख़ुदा से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगों वह बड़ा बख़्शने वाला है। वह अब्र को तुम पर पानी बरसाने के लिये भेजता है और तुमको अमवाल और औलाद के साथ मदद पहुंचाता है। तुम्हारे लिये बाग़ क़रार देता है और नहरें जारी करता है। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ख़ुदा की इज़्ज़त नहीं समझते। हालांकि उसी ने तुमको मुख़्तलिफ़ सूरतों पर पैदा किया है। क्या तुमने नहीं देखा कि क्योंकर ख़ुदा ने सातों आसमान को तबक़ दर तबक़ पैदा किया है और माहताब को उनमें रौशनी के लिये क़रार दिया है, और आफ़ताब को चराग़ बनाया है, और ख़ुदा ने ज़मीन से तुम्हें मिस्ल नबातात के बाहर निकाला है। फिर तुम को इसी ज़मीन में वापस ले जायेगा और इसके बाद फिर बाहर निकालेगा, और ख़ुदा ने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श क़रार दिया है। ताकि इसमें मुख़्तलिफ़ राहों में तुम रास्ता चलो"। नूह[अ०] ने कहा कि "परवर दिगारा! इन लोगों ने मेरी नाफ़रमानी की और उस शख़्स का तर्ज़े अमल इख़्तियार किया जिसको उसके माल व औलाद से सिवाए नुक़सान के कुछ हासिल न हुआ और यह लोग बड़े मक्रो फ़रेब से काम लेते रहे।"

अल्लाहो अकबर! यह हज़रत नूह[अ०] की दुआ क़ाबिले लिहाज़ है। किस क़द्र नफ़्सो आफ़ाक़ के उलूम इसमें मुजतमा हैं। बिल्कुल इसी तरह इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] ने अपनी दुआ में दोनों बातों को जमा कर दिया है। एक तरफ़ वह ख़ुदा से दुआ करते हैं कि मेरे नफ़्स में पाकीज़गी अता कर ताकि इसमें बलन्दी पैदा हो सके। दूसरी तरफ़ आसमान व ज़मीन की ख़िलक़त और ख़ुदा की कुदरत का तज़किरा करते हैं। स0 108, किताब सहीफ़–ए–कामेला में एक दुआ के ज़ैल में आप कहते हैं :–

"ख़ुदा वन्दा! मेरे लिये ऐसा दिल क़रार दे जो तुझसे डरता रहे इस तरह गोया उसने तुझे देखा है यहां तक कि तुझसे मुलाक़ात करे। ऐ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मालिक आसमानों के और तमाम उन चीज़ों के जो आसमान के अन्दर हैं रौशन हों ख़्वाह तारीक। ऐ मालिक कुशादा ज़मीनों के और तमाम उन मख़लूक़ के जो उन ज़मीनों के अन्दर है। ऐ मालिक मज़बूत बुनियाद वाले पहाड़ों के; ऐ मालिक चलने वाली हवाओं के; ऐ मालिक उन बादलों के जो ज़मीन और आसमान के दरमियान पैदा होते हैं। ऐ मालिक उन सितारों के जो आसमान में तेरे ताबे फ़रमान हैं ख़्वाह पोशीदा हों और ख़्वाह ज़ाहिर। ऐ मख़फ़ी बातों से बाख़बर और ऐ आवाज़ों के सुनने वाले।

स0 113 में है :–

"ख़ुदा वन्दा! मैं तुझसे मांगता हूं साहबाने इल्म का ख़ौफ़, और इबादत करने वालों का ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ और ख़ुलूस रखने वालों की इबादत और ख़ुशूअ रखने वालों का इख़लासे क़ल्ब, और तवक्कल रखने वालों का यक़ीन और बुज़ुर्ग मर्तबा लोगों की कामयाबी और ज़िक्रे इलाही करने वालों का ग़ौरो ख़ौज़"।

यह बिल्कुल मुताबिक़ है उस आयत के साथ कि आसमान व ज़मीन की ख़िलक़त और शबो रोज़ की आमदोरफ़्त में निशानियां हैं साहेबाने अक़्ल के लिये वह जो ख़ुदा की याद करते रहते हैं उठते और बैठते और करवट की हालत में ग़ौरो ख़ौज़ करते हैं आसमान व ज़मीन की ख़िलक़त में। वह कहते हैं कि परवर दिगार तूने उनको ग़लत तौर पर नहीं पैदा किया है। तेरी हस्ती पाक है हमको जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ रख।"

हज़रत का यह फ़िक़रा "ज़िक्रे इलाही करने वालों का ग़ौरो ख़ौज़"। उसी आयत का पता देता है और उस अम्र की तरफ़ इशारा करता है कि ख़ुदा को याद करने वाला अगर उसकी मख़लूक़ में ग़ौरो ख़ौज़ न करे तो वह जाहिल रहेगा और उसे कोई बसीरत हासिल नहीं हो सकती।

यही बतलाया गया है इस आयत में कि :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

"यह लोग कुरआन में ग़ौरो फ़िक्र क्यों नहीं करते क्या उनके दिलों पर कुफ़्ल लगे हुए हैं"?

और इस आयत में कि :

"वह लोग जिन्हें तौरैत का हामिल बनाया गया फिर उन्होंने इसको बर्दाश्त न किया। मिस्ल गधे के हैं जिसकी पुश्त पर किताबों का बार लदा हुआ हो। क्या बुरी मिसाल है उन लोगों की जो ख़ुदा की आयतों को झुटलाते हैं, और ख़ुदा जबरी तौर पर ज़ालिमों को राहे रास्त पर नहीं लाता है।

तनतावी का शिकवा ख़ुदा की बारगाह में

ख़ुदा वन्दा! यह तेरी किताब मौजूद है कुरआन, और यह अहलेबैत में से एक बुज़ुर्ग हस्ती के इरशादात हैं। यह दोनों कलाम। वह आसमान से नाज़िल शुदा कलाम, और यह अलहेबैत^{अ०} के सिद्दीक़ीन में से एक सिद्दीक़ की ज़बान से निकला हुआ कलाम दोनों बिल्कुल मुत्तफ़िक़ हैं। अब मैं बुलन्द आवाज़ से पुकारता हूं हिन्दुस्तान में और तमाम इस्लामी मुमालिक में ऐ फ़रज़न्दाने इस्लाम, ऐ अहले सुन्नत, ऐ अहले तशय्योह। क्या अब भी वक़्त नहीं आया है कि तुम कुरआन और अहलेबैत[अ०] के मवाएज़ से सबक़ हासिल करो। यह दोनों तुमको बुला रहे हैं उन उलूम के हासिल करने की तरफ़ जिनसे अजाएबे कुदरत मुन्कशिफ़ होते हैं और ख़ुदा की मअरफ़त हासिल होती है।

पहले इन उलूम को हासिल करो। इन्हीं के हासिल करने का तुम्हें कुरआन और पेशवायाने मज़हब के इरशादात में हुक्म मिला है। जब तुम इनमें कामिल हो जाना तो फिर दूसरे उमूर की तरफ़ मुतवज्जह होना।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तफ़रिक़ा अन्गेज़ मुबाहिस से बाज़ आओ और इन हिदायात पर अमल करो। इन उलूम से इस्तेफ़ादा करो और सूरज के नीचे ज़मीन के ऊपर अपने ज़िन्दा रहने का सामान करो।

(तनतावी जौहरी मिस्र)

(३)

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] की दुआओं से मेरे तास्सुरात

यह उस्ताद मोहम्मद कामिल हुसैन का मज़मून है जो "जामेआ मिस्रिया" में प्रोफ़ेसर हैं और किताब "अल अदब फ़ी मिसरूल इस्लामिया, और मरवान बिन अबी हफ़सा" के मुसन्निफ़ हैं। यह मज़मून आप का गुज़िश्ता साल "अल रिज़वान" के जमादुस्सानिया व रजब के पर्चे में शाया हुआ है।

क्या तुम्हारा ख़याल है कि फ़रज़दक़ ने इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] की तारीफ़ का हक़ अदा कर दिया अपने इन शेअरों में जिनका मज़मून यह है कि :—

"यह वह हैं जिनके पैरों की चाप को सरज़मीने मक्का पहचाने हुए है और ख़ान—ए—कआबा और इसके हल व हरम सब उनसे वाक़िफ़ हैं। यह उस हस्ती के फ़रज़न्द हैं जो ख़ल्क़े ख़ुदा में सबसे बेहतर थी। यह मुत्तक़ी, पाकीज़ा पाक और मशहूर रोज़गार हैं।"

हरगिज़ नहीं। ब—ख़ुदा फ़रज़दक़ अपने इन शेअरों में एक शिम्मा भी नज़्म नहीं कर सका है। बल्कि मुझे तो मिलते ही नहीं वह अल्फ़ाज़ जो मेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दिली ख़यालात का इज़हार कर सकें और बतला सकें मेरे तास्सुरात को इस इमाम[अ०] की अज़मत के बारे में जिसने एक तरफ़ अरब क़ौम के मुहासिने अख़लाक़ और उनके मज़हबी कमालात को हासिल किया और दूसरी तरफ़ मुल्के अजम की सल्तनत और उसकी इज़्ज़त के जौहर का हामिल हुआ।

इस सूरत में कोई बेजा नहीं कि उनको "इब्नुल ख़ैरतीन" (दो मुन्तख़ब क़ौमों का फ़रज़न्द) कहा जाये, क्योंकि आप के जद्दे बुज़ुर्गवार हज़रत रसूले ख़ुदा[स०] ने इरशाद फ़रमाया है कि ख़ुदा ने अपने बन्दों में से दो ही क़ौमों को मुन्तख़ब किया है अरब में से क़बील–ए–क़ुरैश और ग़ैर अरब में से फ़ारस, और बहुत से ईरानियों ने इस हदीस को अपने लिये महले नाज़िश में पेश किया है। महयार दैलमी शायर सैय्यद रज़ी (जामेआ नहजुल बलाग़ा) का शागिर्द था। वह इसी हदीस को लेता है और फिर अपनी तारीफ़ ख़ुद करते हुए कहता है :–

(शेअर जिसका मज़मून यह है)

"मैंने इज़्ज़त व बुज़ुर्गी बेहतरीन बाप दादा से हासिल की और दीन की इज़्ज़त बेहतरीन नबी[स०] से हासिल की। पस मुझे हर हैसियत से फ़ख़्र का मौक़ा हासिल हो गया। इज़्ज़त ख़ानदानी फारस की और दीनी इज़्ज़त अरब की।"

यह इन्तेहाई फ़ख़्र की हद है जो एक शायर पेश कर रहा है। कौन? महयार दैलमी। जिसकी दुनियावी इज़्ज़त सिर्फ़ इतनी है कि वह मुल्के फ़ारस का एक मजूसी शख़्स था और किसी शाही ख़ानदान से भी न था। फिर अपने उस्ताद सैय्यद रज़ी के हाथ पर इस्लाम लाया तो दूसरे इस्लाम लाने वाले ग़ुलामों का सा उसे भी दर्जा हासिल हो गया। न उसको ख़ानदानी कोई इम्तियाज़ है न इस्लाम में कोई ख़ास दर्जा, लेकिन बावजूद उसके अपनी दो ख़ुसूसियतों के इज्तेमाअ पर फ़ख़्र करता है कि ख़ानदानी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हैसियत से फ़ारसी नस्ल हूं और दीनी हैसियत से हज़रत मोहम्म मुस्तफ़ा[स०] के दीन का पैरो। फिर अब मैं क्या कहूं उस हस्ती के बारे जिसका दादा ख़ुद मुस्लमानों का रसूल[स०] हो और नाना ख़ुद मुल्के फ़ार का बादशाहे किसरा हो। वह कौन ज़बान हो सकती है जो इस बुज़ुर्गवा की इज़्ज़त व बुज़ुर्गी की हद बयान कर सके। यह हस्ती इमाम ज़ैनु आबेदीन[अ०] अली इब्नुल हुसैन[अ०] की है जिनके बारे में फ़रज़दक़ ने कहा है

जब क़बील–ए–क़ुरैश के लोग उनको देख लेते हैं तो कहने वाले क उठते हैं कि बस इस शख़्स की इज़्ज़तों पर इज़्ज़त की इन्तेहा हो जात है।"

बल्कि मेरा तो यह ख़याल है कि मैं कहूं। "उनके अज़ीम अख़लाक़ प ख़ुल्क़ की इन्तेहा है। उनकी ख़ानदानी शराफ़त पर शराफ़त की इन्तेहा ं और अगर ज़बान यारा दे और मुझे अल्फ़ाज़ मिलें जिनमें मतलब अदा क सकूं तो फिर भी मैं यह कहूंगा कि यह कम तर तारीफ़ है जो इमा सज्जाद[अ०] और अहलेबैते रसूल[स०] के बारे में की जा सकती है।

मुम्किन है लोगों को तअज्जुब हो यह देख कर कि एक सुन्नी मज़मू निगार आइम्मा शिया में से एक इमाम के बारे में इस तरह के ख़याला ज़ाहिर कर रहा है। मगर हक़ीक़त यह है कि मैं अगर चे एक ऐसे शह में पैदा हुआ हूं जिसे सुन्नी मज़हब समझा जाता है और एक ऐसी जमाअ में जो इमामे शाफ़ई वग़ैरा के मज़हब के पैरो है। लेकिन मैंने अपने सुन् शहर को और उसके तमाम लोगों में हर तबक़े और जमाअत को यह देख है कि वह अहलेबैते रसूल[स०] की इज़्ज़त करते हैं। आइम्मए शिया व अज़मत के इसी तरह क़ायल हैं जिस तरह शिया हैं। (यह ख़ुदा का फ़ज़ है जिसे चाहता है अता करता है) और मोहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई ख़ु ही फ़रमा गये हैं :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ऐ जाने वाले नाके पर सवार! सरज़मीने मक्का पर मिना के क़रीब ठहर ौर जो जो इधर उधर लोग हैं सबसे पुकार कर कह दे सुबह के वक़्त। ास वक़्त जब साहेबाने कआबा मिना की सरज़मीन पर जमा होते हैं इतनी ‍सरत से कि जैसे बहता हुआ मौज ज़न दरिया। इन सब से कह दे कि ागर आले रसूल[स०] की दोस्ती का नाम राफ़ज़ी हो जाता है तो दोनों जहां वाह रहें कि मैं राफ़ज़ी हूं।"

और हक़ीक़त यह है कि मुझे कोई फ़ितना इस्लाम और मुसलमानों के ये इससे ज़्यादा ख़तरनाक नहीं मालूम होता, कि शिया सुन्नी में इफ़्तेराक़ दा हो जाये।

हम सब एक दीन को मानते हैं जिसका नाम है इस्लाम। एक ख़ुदा की बादत करते हैं जिसके सिवा कोई माबूदे बरहक़ नहीं। हज़रत मोहम्मद स्तफ़ा[स०] की नबूवत को तस्लीम करते हैं और यह इक़रार करते हैं कि वह रवरे अम्बिया और ख़ातेमुल मुरसलीन[स०] हैं, और आप के अहलेबैते ताहेरीन ो वाजिबुल एहतेराम समझते हैं जिनकी शान में यह आयत नाज़िल होती :— (इन्नमा युरीदुल्लाहा लेयुज़हेबा अ़नकुमुर्रिजसा अहलुल बैत युतहहराकुम ततहीरा) "जब तक हम सब इस नुक़्ते पर क़ायम तो यह बिल्कुल खुली हुई बात है कि हम सब को हमदस्त ाना चाहिये और इस रास्ते पर चलना चाहिये। अपने दीन की फ़ाज़त में और इसको तरक़्क़ी देने में और इस मुश्तरक नुक़्ते की तरफ़ बको दावत देना चाहिये और इस रास्ते में जेहाद करना चाहिये। न यह ‍ अब ऐसी इख़्तेलाफ़ी बातों में पड़ें जो तफ़रिक़ा अंगेज़ी का बाएस हैं। र्फ़ ज़ाती अग़राज़ और शख़्सी मफ़ाद की ख़ातिर। अगर हम हज़रत ली[अ०] के पैरो होते कि आप ने दुनिया को तलाक़ दे दिया और उसकी ाराइशों पर कोई तवज्जह न की, और अगर आप की तरह यह कहते होते

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कि "ऐ दुनिया! जा किसी और को फ़रेब देना।" तो आज इस्लाम की शान ही दूसरी होती, और मुस्लमानों को आज वह इज़्ज़त हासिल होती जिसके मिस्ल कोई इज़्ज़त हो नहीं सकती।

लेकिन दुनियावी ख़्वाहिश और हवा व हवस ने मुस्लमानों को इस्लाम के बुलन्द मक़सद से हटा दिया और उन्हें तौहीद व ईमान की हक़ीक़त से दूर कर दिया जिसकी वजह से उनमें फ़िर्क़ा बन्दियां हो गयीं और मुख़्तलिफ़ जमाअतें क़ायम हो गयीं जो आपस में तसादुम करती रहती हैं जिससे मुस्लमानों की इज़्ज़त ज़िल्लत के साथ बदल गयी, और क़ूव्वत हासिल होने के बाद उनमें कमज़ोरी पैदा हो गयी।

यह सब मैंने लिख डाला इस हालत में कि मेरे सामने एक किताब है जो हजम के लिहाज़ से तो छोटी है मगर क़द्रो क़ीमत में बहुत बड़ी है। यह सैय्यदना इमाम ज़ैनुल आबदीन[अ०] की बअज़ दुआओं का मजमूआ है, और मुझे आरज़ू थी कि मैं इन दुआओं की निस्बत लिखता और बतलाता कि इनमें कितनी रौशन दलीलें मौजूद हैं इस बात की कि ज़ैनुल आबेदीन[अ०] मिस्ल दूसरे अहलेबैते ताहेरीन के बिल्कुल रसूल उल्लाह[स०] की तालीमी रूह के हामिल और इबादत व परहेज़गारी में आपके ताबे थे, लेकिन मुझे वह अल्फ़ाज़ कहां मिल सकते हैं जो मेरे तास्सुरात को ज़ाहिर करें इस वक़्त मैं उन मौजिज़नुमा कलमात को पढ़ता हूं जिनकी तशरीह में ज़बान आजिज़ हो कर ठहरती और अक़्ल हैरान हो जाती है और क़लम लरज़ा बर अन्दाम हो कर रूक जाता है। लेहाज़ा इस मौक़े पर मैं सिर्फ़ अपने इज्ज़ और कोताह बयानी का एतराफ़ ही कर लेना अच्छा समझता हूं ब–निस्बत इसके कि मैं क़लम उठाऊँ और फिर मौज़ू के हक़ को अदा न कर सकूं, क्योंकि मेरा तास्सुर और क़लबी एहसास हज़रत सज्जाद[अ०] की दुआओं के पढ़ने के मौक़े पर मेरी ताक़ते इज़हार से बालातर है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लेकिन मुझे एक और अम्र की तरफ़ तवज्जोह पैदा हुई। वह यह कि मैं देखता हूं कि हमारे इन्शा परदाज़ और अदबा और अदबी मोअर्रेख़ीन क़दीम शोअरा और नस्र निगारों के आसार के मुतालए और दर्स व तदरीस की तरफ़ मतवज्जह हैं और उन्होंने नस्र में इस हुनरमन्दाना तरज़े तहरीर को इख़्तियार किया है जिसे इन्शा परवदज़ों ने मुक़र्रर किया है और उसे इस तरह आरास्ता किया है कि वह बिल्कुल कुदरती और फ़ितरी हुस्ने अदा से अलाहिदा हो गया है और उन्होंने इसमें रंग बिरंगे इल्म बदीअ व बयान की ज़ीनतें और सजाव में भी भर दी हैं जो किसी तरह तकल्लुफ़ और तसन्नोअ से ख़ाली नहीं हैं और तबई हुस्न के किसी तरह मुताबिक़ नहीं हैं, लेकिन इन लोगों ने इन दुआओं के ऐसे अदबी आसार को छोड़ रखा है जो अरबी अदब के मौजिज़ात में शुमार करने के क़ाबिल हैं। इस लिये कि वह दुआयें एक पाकीज़ा और साफ़ नफ़्स से बरामद हुई हैं और वह इमाम[अ०] का नफ़्स है और मुख़ातब भी एक पाक और साफ़ नफ़्स है, और वह ख़ुदाए बुज़ुर्ग की ज़ात है। इस लिये वह हक़ीक़तन एक क़लबी एहसास है जो ख़ुदा की तरफ़ से उसके बन्दे को अता हुआ है और जिसके साथ बन्दा अपने ख़ुदा की जानिब मुतवज्जह हुआ। इस लिये इन मज़हबी दुआओं में एक बलन्द मिसाल है जज़बए दीनी के वही और तक़वे के इल्हाम और ज़ोहद व तक़वा की आवाज़ की। इनमें एक शीरीं मौसीक़ियत भी है जो रूह को जज़्ब करती है। कानों को इससे लज़्ज़त हासिल होती है और दिल इसके जुज़्ज़ाबे मानी और वक़ीअ अल्फ़ाज़ के सुनने की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं तो रोब व जलाल से सरनिगूं हो जाते हैं। देखो इमाम[अ०] अपने परवर देगार की तारीफ़ कर रहे हैं :–

"सताइश है उस ख़ुदा के लिये जो अपनी अज़मत के साथ दिलों पर जलवा फ़िगन है और अपनी इज़्ज़त के साथ आंखों से पोशीदा है और तमाम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

चीज़ों पर अपनी कुदरत के साथ क़ाबू रखता है। पस न आंखें उसके मुशाहिदे की ताब रखती हैं और न तौहम्मात उसकी अज़मत की हक़ीक़ी हद तक पहुंच सकते हैं वह अज़मत और बुज़ुर्गी के साथ जबरूत का मालिक है और इज़्ज़त और एहसान और जलालत के साथ ख़ल्क़ पर मेहरबान है। हुस्नो जमाल के साथ नक़ाएस से मुबर्रा व मुनज़्ज़ा है और फ़ख़ व बलन्दी के साथ बुज़ुर्गी की सिफ़त का मालिक है।

तुमने अरबी कलाम में कभी जादेवाना कैफ़ इस कलाम से ज़्यादा भी देखा है, और कोई कलाम जो अपने ख़ुशनुमा अल्फ़ाज़ और बड़े माने के साथ दिल में बैठ जाये और नफ़्से इन्सानी को इन बलन्द मरतबों तक पहुंचाये जिनमें सिर्फ़ पाक व पाकीज़ा और हवसे दुनिया से ख़ाली और साफ़ दिल ही पहुंच सकते हैं, इस कलाम से ज़्यादा सुना है? यह है दीनी अदब जिससे दिल चाश्नीगीर और लज़्ज़त अन्दोज़ होते हैं और उसकी बलन्दी के सामने सजदे में गिर पड़ते हैं कान उसको सुनते हैं तो उसके नग़मों के साथ मुतरन्नुम हो जाते हैं और अक़्ल उनके माने पर ग़ौर करती है तो एक दूसरी फ़िज़ा में जो इस फ़िज़ा के अलावा है, परवाज़ करने लगती है।

इसके बावजूद दुनिया बदीउज़्ज़मां और हरीरी और अबूनवास और मुतनब्बी की गिरवीदा हो रही है। कहां दीनी अदब और कहां उन लोगों का अदब। लफ़्ज़ व माने दोनों हैसियतों से इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है, और ख़ुद अदबी रंग के लिहाज़ से बहुत बड़ा तफ़रिक़ा है। अदबा को चाहिये कि वह इस जलीलुल मतरबत अदबी सरमाया की तरफ़ मुतवज्जह हों। यक़ीनन् उनको इसमें बहुत बड़ा ख़ज़ाना दस्तयाब होगा जो अब तक ज़मीन के नीचे दफ़्न है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(४)

इमाम ज़ैनुल आबदीन अ० और उनका फ़लसफ़ा

(यह अहमद मोहम्मद जमआ अबयूती का मज़मून है जो कलिया–ए–शरीअते इस्लामिया मिस्र के अफ़ाज़िल में से हैं)

क्या कहना उस रब्बानी इमाम अ० और रूहानी पेशवा और अख़लाक़ी मोअल्लिम का जो अफ़रादे बशर के नफ़ूस और अक़वाम व मुकम्मल दिलों के हुक्मरान है और इन्सानी नस्लों की दस्तगीरी व रहनुमाई करने वाला है तेरह सदी उस तरफ़ से ले कर इस वक़्त तक कि जब यह दुनिया फ़ना हो।

वह उनका हाथ थामता है और उन्हें हक़ीक़ी ज़िन्दगी के रास्तों पर ले जाता है और ज़िन्दगानी की तंगी और उसकी काविशे बे जा से हटता हुआ उन्हें असली ज़िन्दगी के माने और उम्र की क़ीमत और ज़माने की वाक़ई इज़्ज़त का सबक़ समझता है। वह जद्दो जेहद और अन्थक कोशिश और अमल के उसूल को क़ाएम करता और बेकारी और काहिली से नफ़रत का इज़हार करता है। देखो वह ख़ुदा से दुआ में कह रहे हैं :–

"हमारे दिलों की सलामती अपनी अज़मत की याद में क़रार दे और हमारे जिस्म की बेकारी के मौक़े को भी अपनी नेअमतों के शुक्रिये में सर्फ़ कर दे और हमारी ज़बानों की गोयाई को अपने एहसान की तौसीफ़ से मख़सूस बना दे"।

कितना बलन्द है आपका दर्जा ऐ इमाम! और कितना साफ़ है आपका दिल, और कितना रौशन है आपका ज़मीर और कितनी पाकीज़ा है आपकी नीय्यत, और कितना बुज़ुर्ग है आपका नज़रिया, और कितना मुबारक है आपका नुक़्तए निगाह।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आपने सुना हय्यी व क़ायम ख़ुदा की आवाज़ और ख़ालिक़े क़दीम के ख़िताब को जो उसने अपने हबीब[स०] और मुक़द्दस रसूल[स०] के साथ किया था।

लेकिन दरहक़ीक़त वह रसूल[स०] के लिबास में तमाम अक़वाम और नस्लों को मुख़ातब कर रहा था। आप ने इस पर लब्बैक कही और इताअत की और नज़दीक पहुंच गये, और ख़ुदा के क़ानून के सामने सर ख़म कर दिया। वह ख़ुदा की आवाज़ यह है कि :– "ऐ रसूल[स०]! कह दो कि ग़ौर करो कि आसमान व ज़मीन में क्या क्या अजाएब मुज़मर हैं"। यह लोग क्यों नहीं सैर करते और नज़र डालते? यह लोग क्यों नहीं ग़ौर करते"? आसमान व ज़मीन की ख़िलक़त और शबो रोज़ की आमदोरफ़्त में अहले अक़्ल के लिये निशानियां मुज़मर हैं।" क्यों नहीं यह लोग ज़मीन में सैरो सयाहत करते और देखते कि क्या अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उनके पहले थे। वह इन से ज़्यादा ताक़त रखते थे और उन्होंने ज़मीन में हंगामा बरपा कर रखा था और इमारतें क़ायम की थीं इससे ज़्यादा कि जितनी उन्होंने इमारतें बनाई हैं और पैग़म्बर उनके पास खुली हुई दलीलों के साथ आये। ख़ुदा हरगिज़ उन पर ज़ुल्म नहीं करता लेकिन वह लोग तो ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।"

और रसूल[स०] का क़ौल कि एक साअत फ़िक्र व ग़ौर करना सत्तर बरस की इबादत से बेहतर है। "ख़ुदा के मख़लूक़ात में ग़ौर करो और ख़ुद ख़ुदा की ज़ात में फ़िक्र न करो क्योंकि तुम उसके दर्जे की हद मुक़र्रर नहीं कर सकते।"

यही तो आप भी कह रहे हें कि "हमारे दिलों की सलामती अपनी अज़मत की याद में क़रार दे"।

आप दुनिया को आबाद करना चाहते हैं और लोगों को दावत देते हैं कि वह अपनी बेकारी के अवक़ात को भी ऐसी बातों में सर्फ़ करें जिनसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हक़ीक़ी कामयाबी की बुनियाद क़ाएम होती और वाक़ई इज़्ज़त हासिल होती है और हमेशा के लिये नाम बाक़ी रहता है।

इसका नतीजा यह है कि बेकारी हो ही न और तअत्तुल पैदा ही न हो। उस वक़्त में न ख़राबियां होंगी न जराएम क्योंकि अरब शाएर का शेअर है कि :—

"जवानी और बेकारी और दौलतमन्दी यही इन्सान के ख़राब करने के बड़े असबाब यह हैं।"

इमाम[अ०] एलान कर रहे हैं कि जितनी ख़ुदा की नेअमतें हैं और उसकी दी हुई ताक़तें हैं और आज़ा व जवारेह हैं सबको इन्ही मक़ासिद में सर्फ़ किया जाये जिनके लिये वह ख़ल्क़ हुए हैं ताकि ख़ुदा की नेअमतों का शुक्र अदा हो।

यही मतलब है आपके इस फ़िक़रे का कि :—

हमारी बेकारी को भी अपनी नेअमत के शुक्रिये में सर्फ़ क़र दे।"

इसके बाद आप चाहते हैं कि आप ख़ुदा वन्दे आलम के इस क़ौल में दाख़िल हों कि "कौन अपनी बात के लिहाज़ से ज्यादा बेहतर हो सकता है उस शख़्स से जो ख़ुदा की तरफ़ दावत दे और अच्छे आमाल करे और कहता रहे कि मैं मुसलमान हूं"। आप कहते हैं।"

"ख़ुदा वन्दा! हम को क़रार दे उन लोगों में से जो तेरी तरफ़ दावत देने वाले हैं और तेरी तरफ़ का रास्ता बताने वाले हैं।"

यह पुरमग़्ज़ जुम्ले और बेश बहा फ़िक़रे हैं जिनमें हुस्नो अज़मत और बलाग़त व एजाज़ के तमाम अवसाफ़ मुजतमा हैं।

"सताइश अल्लाह तआला के लिये जो दिलों पर अपनी अज़मत के साथ जलवा फ़िगन है और आंखों से अपनी इज़्ज़त के साथ पिन्हां है। न आंखें उसके दीदार की ताब रखती हैं और न इन्सानी अक़्लें उसकी अज़मत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

की हद तक पहुंच सकती हैं। वह अज़मत व किबरियाई के साथ शानो जबरूत का मालिक और इज़्ज़त व एहसान व बुज़ुर्गी के साथ ख़ल्क़ पर मेहरबान और हुस्नो जमाल के साथ नक़ाएस से मुनज़्ज़ा व मुबर्रा और फ़ख़ व कमाल के साथ शरफ़ और बुज़ुर्गी का सरमायादार बख़्शिश व नेअमत के साथ तमाम ख़ल्क़ का उम्मीदगाह है।

तसव्वुफ़ के साथ बलागत, तज़र्रोअ व मुनाजात में अदबियत, उबूदियत के मज़ाहिरा में सहर आफ़रीनी, बयान के जौहर के साथ अक़्ली मग़ज़ और उस पर बदीअ की आराइशें।

शिर्क के ख़िलाफ़ जंग :

आप अपने दिल की गहराईयों के साथ और मुतमईन नफ़्स के बिल्कुल मुस्तहकम अक़ीदे के साथ शिर्क से और उसके मवाद से उसका दावा करने वालों और उसकी हिमायत करने वालों से सख़्त नफ़रत करते हैं और अज़ली व अबदी वहदानियत को ख़ुदा के लिये साबित करते हैं अपने इन अल्फ़ाज़ में :—

"वह ख़ालिक़ जिसका कोई नज़ीर नहीं। वह यकता जिसका कोई मिस्ल नहीं। वह बुज़ुर्गी का मालिक जिसका कोई मद्दे मुक़ाबिल नहीं। वह सरदार व हाकिम जिसका कोई हमसर नहीं। वह ख़ुदा जिसका कोई दूसरा नहीं। और वह पैदा करने वाला जिसका कोई शरीक नहीं और वह रिज़्क़ अता करने वाला जिसका कोई मददगार नहीं। वह सबसे पहले और लाज़वाल है। वह हमेशा रहने वाला ग़ैरफ़ानी है वह दाएम व क़ायम है बग़ैर किसी ज़हमत और मशक़्क़त के। वह बाक़ी है बग़ैर किसी आख़री हद के। वह सनअत आफ़रीन है बग़ैर किसी पुश्त पनाह के। वह परवर दिगार है बग़ैर किसी शरीक के। वह ख़ल्क़ करने वाला है बग़ैर किसी तकल्लुफ़ के। वह काम करने वाला है बग़ैर किसी आजिज़ी के। उसकी कोई हद नहीं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मकान में और न कोई इन्तेहा है ज़माने में। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। यूंहि हमेशा हमेशा वह ख़ुदा है ज़िन्दा, क़ायम, दायम, क़दीम, क़ादिर, इल्म व हिक्मत का मालिक, ज़बरदस्त और हलीम, जिस चीज़ को चाहे रोकने वाला और जिस काम को चाहे करने वाला है। उसके लिये है ख़ल्क़ और उसके लिये है हुक्म। तमाम ज़मीन उसके क़ब्ज़ए कुदरत में है और आसमान भी उसके दस्ते तसर्रूफ़ में लिपटे हुए हैं। पाक है वह ख़ुदा और बुलन्द है उन ख़यालात से जो मुशरेकीन ने क़ायम किये हैं (सहीफ़–ए–ख़ामेसा स० 21, 22 मतबूआ फ़ीहा दमिश्क़)

आप दुनिया को वहदानियत के मानी बतला रहे हैं और अपने नफ्स पर एतमाद और अपने ज़मीर की निगरानी का दर्स दे रहे हैं और इन्सानी अक़्लों को उनकी गहरी नींद से बेदार कर रहे हैं और उन्हें फ़लाह हक़ीकी के एक बड़े उसूल पर मुतनब्बह कर रहे हैं। वह बड़ा रूक्न जिस पर इस ज़िन्दगी की इमारत क़ायम है और उसके लिये आप बुलन्द तरीन मिसाल अपने ख़ालिक़ की पेश कर रहे हैं। क्योंकि वह ख़िलक़त और ईजादे कायनात में तन्हा और मुस्तक़िल है।

इमाम ज़ैनुल आबदीन[अ०] जो पहली सदी हिजरी में पैदा हुए हैं हुर्रियत और इज़्ज़त व इस्तेक़लाल की आवाज़ बुलन्द करते हैं ताकि उसे चौदहवीं सदी और उसके बाद के तमाम लोग सुनें और माद्दियत और तबीईयत की ज़ंजीरों को उतार कर फेंक दें।

एक आम मज़हब की रद्द

बहुत सी जमाअतें मुस्लमानों में से एक शर्मनाक ख़्याल और कमज़ोर मसलक पर मुत्तफ़िक़ हो गयी हैं और वह यह है कि इन्सान अपने अक़वाल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व अफ़आल में मजबूर है और ख़ैर व शर और तमाम जराएम उसके हाथों ज़बरदस्ती ख़ुदा की जानिब से कराये जाते हैं। वह उसके लिये बहुत कमज़ोर दलाएल पेश करते हैं। उन पर बदबख़्ती इस तरह ग़ालिब हुई है कि ख़ुदा की ज़ात की तरफ़ जबरो क़हर की निस्बत को गवारा कर लिया है। यह लोग चाहते हैं कि इस तालीम के साये में जराएम का इरतेकाब करें और उसकी ज़िम्मेदारी ख़ुदा पर आयद करें।

यह ऐसा मज़हब है जो ज़मीन को फ़साद से लबरेज़ करने का सबब है और जो इन्तेजामे आलम को बर्बाद कर देने का ज़रिया है।

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०] ने अपने अल्फ़ाज़ में इसी मुल्हिदाना ख़याल की बुनियादों को मलियामेट किया है। आप फ़रमाते हैं :—

"तमाम कायनात इस बात की मोतरिफ़ है कि तू जिसको सज़ा दे उस पर ज़ुल्म नहीं करता और गवाह है इस बात की कि जिसको तू माफ़ कर दे वह तेरा एहसान है और हर शख़्स इक़रार करेगा अपने नफ़्स की कोताही का इन फ़राएज़ के अदा करने में जो तूने आयद किये हें। अगर शैतान उन्हें फ़रेब न देता तेरी इताअत से, तो कोई तेरी नाफ़रमानी न करता, और अगर बातिल को उनके सामने हक़ के लिबास में पेश न करता तो तेरे रास्ते से कोई गुमराह न होता।"

"तू मुबारक है इस बात में कि तेरी तौसीफ़ एहसान ही के साथ हो सकती है; और बुज़ुर्ग है तू इस अम्र से कि तुझसे अन्देशा हो अदालत के ख़िलाफ़ तरीक़े का। तुझसे ज़ुल्म व जौर का अन्देशा नहीं हो सकता उस शख़्स पर जो तेरी नाफ़रमानी करे, और तुझसे हक़ तलफ़ी का ख़ौफ़ नहीं हो सकता उस शख़्स के बारे में जो तेरी इताअत करे।"

"तू बड़ा एहसान करने वाला साहबे करम है। ऐ वह जिसकी अज़मत के अजाएब ख़त्म होने वाले नहीं। हमको मुल्हिदाना ख़याल से अपनी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अज़मत के पर्दों में छुपा कर बचा ले। ऐ वह जिसकी सल्तनत की मुद्दत ख़त्म होने वाली नहीं, अपने ग़ज़ब और नाराज़ी से हमें आज़ाद रख। ऐ वह जिसकी रहमत के ख़ज़ाने ख़त्म होने वाले नहीं, अपनी रहमत में हमारा भी हिस्सा क़रार दे। ऐ वह जिसके नज़्ज़ारे की आंखों को ताब नहीं, अपनी बारगाह से हम को क़रीब कर ले। ऐ वह जिसकी अज़मत के सामने तमाम अज़मतें पस्त हैं, हमें इज़्ज़त अता कर। ऐ वह जिसके सामने बातनी राज़ की ख़बरें भी ज़ाहिर हैं अपने सामने हमको रूसवा न करना।"

●●●

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मसअला-ए-दुआ

अज़ सय्यदुल ओलेमा मद्देज़िल्लहू

हक़ीक़त यह है कि बारगाहे इलाही में बन्दे का किसी सवाल को पेश करना एक जुरअत व जसारत की हैसियत रखता है दो वजहों से। एक तो अर्ज़े हाल उससे किया जाता है जो हालात से नावाक़िफ़ हो, और ख़ुदा वन्दे आलम बन्दे के तमाम हालात और मक़ासिद से वाक़िफ़ है। दूसरे किसी बात की ख़्वाहिश उससे की जाती है जो तर्ज़े अमल के अख़्तियार करने में मशविरा और रहनुमाई का मोहताज हो, लेकिन जो ख़ुद ही हर अमरे ख़ैर और मसलेहत के अन्जाम देने का ज़ामिन हो और हम पर मेहरबान भी इन्तेहा से ज़्यादा हो उसको कुछ कहना कि तू हमारे लिये यह काम अन्जाम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दे दे, एक नारवा जसारत है--- मगर इसको क्या किया जाये कि ख़ुद जनाबे बारी इज़्ज़ा समहू ने दुआ करने का हुकम दिया और उसे एक इबादत क़रार दिया और इरशाद किया कि (तरजमा) "तुम दुआ करो तो मैं कुबूल करूंगा"। इतना ही नहीं बल्कि उसको अफ़ज़ले इबादात बनाया। कहा गया है (तरजमा) "यानी दुआ मग़ज़े इबादत है"।

आख़िर इसका राज़ क्या है?

हक़ीक़त यह है कि तमाम निज़ामे तशरीअ़ का माहसल ख़ालिक़ व मख़लूक़ के इलाक़े को पहचनवाना है। यानी उसकी बेनियाज़ी और अपनी नियाज़मन्दी--- इसी का मुक़तज़ा है कि बन्दा हर मौक़े पर उससे तलबगारे इमदाद व एआनत रहे। तमाम इबादात का माहसल यही है कि बन्दे को एहसासे उबूदियत पैदा हो और वह ख़ालिक़े बेनयाज़ की बारगाह में अपनी नयाज़मन्दी का इक़रार करे और दुआ उसी जज़्बए नयाज़मन्दी का बेहतरीन मुज़ाहरा है। बल्कि दुआ के ज़रिये से इस्लाम ने माद्दी अग़राज़ व मक़ासिद में रूहानियत की जिला का सामान किया है। ज़ाहिर में खाना, पीना, लिबास और निकाह वग़ैरा इस क़िस्म की माद्दी ख़्वाहिशें ख़ुदा की याद को दिल से दूर करने वाली हैं। मगर दुआ का नतीजा यह है कि इन्सान उन ख़ालिस माद्दी ख़्वाहिशों के लिये भी ख़ालिक़ को याद करता है, और मुम्किन है कि पहले तो अज़ रूए मतलब बरारी उसको याद करे और फिर यह याद एक मुस्तक़िल हैसियत अख़्तियार कर ले, और वाक़ई इसमें इबादत व इताअत का जज़्बा पैदा कर दे। इसी लिये दुआ पर कोई क़ैद नहीं आयद की गयी यहां तक कि नमाज़ की हालत में भी एक मतलब के लिये अगरचे वह ख़ालिस दुनयवी हो शर्त यह है कि अम्र नामशरूअ न हो दुआ की जा सकती है और वह नमाज़ में मुख़िल नहीं होगी बल्कि इसका एक जुज़ क़रार पा जायेगी। रह गया यह कि दुआ का फ़ायदा क्या

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जबकि क़ज़ा व क़द्र ने हर अम्र को पहले ही से तय कर दिया है और अब किसी बात में तब्दीली नहीं हो सकती मगर यह एतराज़ उन लोगों पर हो सकता है जो "बदा" के मुन्कर हैं और ख़ुदा को अपने अज़ली फ़ैसलों की बिना पर मजबूर ख़याल करते हैं। कुरआन मजीद ने उन्हीं लोगों के ख़याल को यहूद की ज़बानी नक़्ल करके बड़ी सख़्ती से उसकी रद की है :– (तरजमा) "यहूदी कहते हैं कि ख़ुदा के हाथ बंधे हुए हैं वह अब कुछ नहीं कर सकता। ख़ुद उन्हीं के हाथ बन्धे हैं और यह अपने इस क़ौल की वजह से मुस्तहक़े लअनत हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि ख़ुदा के हाथ हर वक़्त खुले हुए हैं।"

अज़ली फ़ैसलों की मजबूरी तो जब आयद होती कि जब वह फ़ैसले मुतलक़ तौर पर होते, लेकिन अगर उनमें से कुछ फ़ैसले मशरूत तौर पर हों कि अगर इन्सान दुआ करेगा तो ऐसा होगा और दुआ न करेगा तो वैसा होगा तो फिर दुआ करना बेकार नहीं समझा जा सकता, और जब कि उसने ख़ुद वादा किया है कि "दुआ करो मैं कुबूल करूंगा" और "मैं पुकारने वाले की आवाज़ को सुनता हूं जब वह पुकारे"। तो इसी से हम समझते हैं कि बहुत से फ़ैसलों में हमारी दुआ का लिहाज़ किया गया है और इसी लिये हमारा फ़र्ज़ है कि हम हर ज़रूरत पर उसे आवाज़ दें और उससे मदद तलब करें। जहां हुक्मे हतमी हमारे मतलब के ख़िलाफ़ होगा वहां हमारी दुआ न कुबूल होगी। लेकिन जहां ऐसा न होगा और हमारी दुआ के लिये गुंजाइश रखी होगी वहां वह कुबूल होगी और इसका असर ज़ाहिर होगा। कोई शक नहीं कि बारी ने हुक्मे दुआ देने के साथ कुबूलिय्यत का वादा फ़रमाया है। मगर हम देखते हैं कि अक्सर अवक़ात हम दुआ करते हैं और वह दुआ कुबूल नहीं होती। इसकी वजह से बअज़ अशख़ास शिकायत करने लगते हैं और उनके दिल में मुख़्तलिफ़ शुकूक गुज़रते हैं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हालांकि दुआ जब नहीं कुबूल होती तो उसके कुछ ख़ास असबाब होते हैं। मुजलमन यहां उनमें से बअज़ उमूर का तज़किरा किया जाता है :–

(1) दुआ की कुबूलियत का वादा बतौरे कुल्लिया नहीं हुआ है बल्कि इतलाक़ है जिसके साथ तक़य्यद की गुंजाइश है। तक़य्यद ख़्वाह लफ़्ज़ी हो या अक़्ली। हम जहां तक ग़ौर करते हैं उसमें अक़्ली तौर पर उमूमियत हो ही नहीं सकती। क्योंकि अगर हर शख़्स की दुआ बहरहाल पूरी हुआ करे तो कभी उसमें तनाक़िज़ या तज़ाद भी पैदा हो जायेगा। मसलन एक ही शैय एक के लिये मतलूब होती है और दसूरे के लिये नागवार। अब अगर दोनों दुआ करें, एक इस अम्र के होने की और एक न होने की, तो दोनों की दुआ पूरा होना मुहाल है क्योंकि दोनों की ख़्वाहिश का हासिल होना तनाक़िज़ का बाअस है। लेहाज़ा लाज़िम है कि एक की दुआ कुबूल हो और दूसरे की मुस्तरद हो जाये। एक यह सूरत भी होती है कि एक ही शख़्स दो वक़्तों में दो दुआयें मांगता है जिनमें एक बाएतबार असबाब वाक़िया के दूसरे के साथ मुजतमा नहीं हो सकती और हक़ीक़तन् उन दोनों में तनाफ़ी होती है यह इस तनाफ़ी को नहीं समझता। ऐसी सूरत में यह बात मुम्किन ही नहीं हो सकती कि हर एक की दुआ ज़रूर कुबूल हो। इस लिये अक़्ली तौर पर इस्तेजाबते दुआ में यह शर्त क़रार पाती है कि वह दुआ कुबूल होने के क़ाबिल हो।

(2) दुआ सिर्फ़ रस्मी तौर से ज़बान पर कुछ अल्फ़ाज़ जारी होने का नाम नहीं है बल्कि दिल से अपने मतलब को बारगाहे इलाही में पेश करना इस एहसास के साथ कि हम उसकी बारगाह में पेश कर रहे हैं। यह एहसास अगर बन्दे को पैदा हो जाये तो फिर उसके ख़ुज़ूअ और तज़र्रुअ व ज़ारी का आलम ही दूसरा होगा। ज़्यादातर जो दुआयें होती हें वह इस जौहर से ख़ाली होती हैं वह सिर्फ़ बतौरे आदत रस्मी हैसियत से होती हैं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उनमें हक़ीक़ते दुआ ही का वजूद नहीं होता, कुबूलियत की मंज़िल तो उसके बाद है।

(3) दुआ की कुबूलियत एक ख़ास तवज्जोह बारी का नतीजा है। लेकिन कुरआन मजीद में साफ़ कह दिया गया है कि अगर तुम हमें याद रखो तो हम तुम्हें याद रखेंगे "बन्दे का ख़ुदा को याद रखना फ़राएज़ को अदा करना है और ख़ुदा को बन्दे को याद रखना रहमत को मुतवज्जह करना है। अक्सर दुंआ करने वाले इन्सान दुआयें मांगने में तो बड़े ख़ुदा परस्त मालूम होते हैं मगर फ़राएज़े इलाही के एहसास से बिल्कुल बेगाना हैं। इस सूरत में उन्हें यह इस्तेहक़ाक़ भी नहीं कि यह ख़ुदा से अपनी कुबूलियते दुआ के तालिब हों।

(4) हुक़ूकुल्लाह से ज़्यादा अल्लाह की नज़र में हुक़ूकुन्नास क़ाबिले लिहाज़ हैं और कुदरत अक्सर अपने कमज़ोर और मायूस बन्दों को इन्तेक़ाम लेती है। हमें क्या मालूम कि कब किसी बेकस ने हमें आवाज़ दी और हम ने उसकी आवाज़ का जवाब नहीं दिया। कब किसी ने फ़रियाद की और हमने मुड़ कर नहीं देखा। इसी का नतीजा है कि कुदरत हमारी फ़रियाद की तरफ़ मुतवज्जह नहीं होती और हमारी दुआ कुबूल नहीं करती।

(5) उसने हमें ज़रूरियाते ज़िन्दगी की तक्मील के लिये क़वाए अमल मरहमत फ़रमाये हैं। अगर वह हर मौक़े पर दुआ को कुबूल ही कर लिया करे तो क़वाए अमल मोअत्तल हो जायें और इन्सान ज़राए व असबाब से काम लेने के बजाये सिर्फ़ बाबे इस्तेजाबत के खटखटाने पर इक्तेफ़ा करे। इसी लिये ऐसा हुआ है कि किसी ने मासूम[अ०] से ख़्वाहिश की कि आप मेरे लिये दुआ कर दीजिये, और हज़रत[अ०] ने फ़रमाया मैं दुआ नहीं करूंगा। जाओ मेहनत मशक़्क़त करो और सअ़ी व कोशिश को काम में लाओ ख़ुदा बरकत अता फ़रमायेगा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(6) वह हमारे मसालेह का निगरां है। हम नादानी से अगर कोई ऐसा सवाल करें जिसे हम तो अपने नज़दीक बेहतर और मुफ़ीद समझते हों लेकिन हक़ीक़तन् वह हमारे लिये मुज़िर और तबाहकुन हो तो उसकी रहमत का तक़ाज़ा है कि वह हमारी दुआ को मुस्तरद कर दे और हमारे लिये वही करे जो उसके इल्म में हमारे लिये बेहतर है। ख़ुद कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया है कि (तरजमा) बहुत मुम्किन है कि तुम किसी बात को नापसन्द करते हो और वह तुम्हारे लिये बेहतर हो और बहुत मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को पसन्द करते हो और वह तुम्हारे लिये मुज़िर हो, अस्ल यह है कि ख़ुदा तो हर बात का इल्म रखता है और तुम हो नासमझ, नादान, कुछ जानते नहीं" यही वह सबब है जिसे दुआए इफ़्तिताहे माहे रमज़ान में भी ज़िक्र किया गया है कि जब तू दुआ के क़ुबूल करने में देर करता है तो मैं अपनी नावाक़फ़ियत से तेरा शिकवा करता हूं। हालांकि बहुत मुम्किन है कि यह देर ही मेरे लिये बेहतर हो इस लिये कि तू हर बात के अन्जाम से वाक़िफ़ है।

इन्सान हर चीज़ के वक़्ती नतीजे पर नज़र डालता है लेकिन वह जो अन्जामकार से वाक़िफ़ है वह उसके मुस्तक़बिल और देरपा नतीजे का लिहाज़ करता है। इस लिये जो चीज़ वक़्ती तौर पर मुफ़ीद है लेकिन मुस्तक़बिल में उससे नुक़्सान पहुंचने वाला है उसे इन्सान के लिये अख़्तियार किया जाता। यह ऐन उसकी लुत्फ़ व मेहरबानी है। जबकि बन्दा उस पर इंज़हारे नाराज़गी करता है, यह उसकी नादानी है।

(7) कभी ऐसा हो सकता है कि सलाह शख़्सी निज़ामे आलम के लिये नुक़्सान रसां होता है। ऐसे वक़्त में अगरचे वह उस बन्दे के लिये इन्फ़ेरादी तौर पर बेहतर भी हो लेकिन ख़ालिक़ की तरफ़ इस दुआ को क़ुबूल नहीं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किया जा सकता। इस लिये कि वह ब–हैसियत हकीमे मुतलक़ के निज़ामे आम की तक्मील का ज़िम्मेदार है और उसका इरादा उस शै से मुताल्लिक़ ही नहीं हो सकता कि जो निज़ामे आलम के लिये मुज़िर हो बल्कि अक्सर मोहक़्क़ेक़ीन के नज़दीक तो इरादए इलाहिया नाम ही है इल्म बिन्निज़ाम का। और इस लिये उसका इरादा वही होगा जो निज़ामे आलम के लिये बेहतर से बेहतर सूरत मुम्किन हो, और इसी बिना पर कहा गया है कि "अगर ऐसा होता तो वह चीज़ें या वह अशख़ास पैदा न होते जो शर महज़ हैं जैसे इबलीस, नमरूद, फ़िरऔन वग़ैरा।" दुरूस्त नहीं है। हक़ीक़त यह है कि वजूद ज़ातन् ख़ैर है वह शर हो ही नहीं सकता, और जब वजूद शर नहीं तो ईजादे शर कहां हो सकता है। बेशक वजूद के बाद यह ज़ाती अख़्तियार की ख़राबी है कि उसे बुरे कामों में सर्फ़ किया जाये। इससे ख़ालिक़ पर कोई इल्ज़ाम नहीं आयद हो सकता। इसके अलावा यह भी मुम्किन है कि कोई शख़्स ख़ुद अपने लिहाज़ से शर हो मगर निज़ामे आलम के लिहाज़ से वह शर न क़रार पा सके। मसलन इबलीस, उसने लाखों बरस तक इताअते परवर दिगार की। इतनी तूलानी इताअत कि जिन्न होते हुए सफ़े मलाएका में जगह पाई। उसके बाद वह सजदा न करने से मरदूदे बारगाह हो गया और उसके बाद से वह बराबर मआसी का इरतेकाब कर रहा है, और दूसरों से इरतेकाब कराता है। यक़ीनी ब–हालते मौजूदा वह एक शर हस्ती है। क्योंकि उसने अपनी पिछली ताअतों को बाद के कुफ़्र व मआसियत से मिटा दिया और वह ताअतें उसके लिये मुरादमन्द न रहीं मगर निज़ामे आलम में तो उसकी वह इताअतें भी दाख़िल हैं जो उसके पहले हो चुकी हैं और तूल ज़माना के लिहाज़ से जहां तक अन्दाज़ा किया जाता है उसके मुक़ाबले में यह बाद की मुद्दत बहुत कम है। निज़ामे आलम में जब उसके वजूद का दर्जा देखा जायेगा तो उन तमाम अच्छे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कामों को भी पेशे नज़र रखना पड़ेगा जो उसके हाथों हो चुके हैं, और इस लिहाज़ से ईजाद उसका शर न क़रार पा सकेगा। इसी तरह बहुत से ऐसे आदमी जिन्होंने उम्र भर अच्छे काम किये और बाद को गुमराह और मरदूदे बारगाह हो गये। दूसरी सूरत यह हो सकती है कि कोई शख़्स शर हो बाएतबार अपनी ज़ात के लेकिन सिलसिलए निज़ाम में वह जुज़ हो बहुत सी ख़ैर हस्तियों का। उसके तहत में दाख़िल हो सकते हें ऐसे काफ़िर, मुश्रिक या मुनाफ़िक़ जिनकी औलाद में बहुत से मोमेनीन और सोलहा पैदा हुए। कोई शक नहीं कि वह अशख़ास ख़ुद अपनी जगह बहुत बुरे थे। मगर निज़ामे आलम की मसलहत को देखते हुए उस पूरे सिलसिले को देखना पड़ेगा। जिसके अजज़ा वजूद में वह क़रार पाते हैं, और उसको देखते हुए यह शर क़रार न पा सकेंगे।

तीसरी सूरत यह भी हो सकती हे कि कोई शख़्स अपने लिहाज़ से शर हो लेकिन शर होते हुए भी वह निज़ामे आलम की तक्मील का जुज़ बने। मसलन शैतान! कोई शक नहीं कि वह अपनी ज़ात और अपने अफ़आल के लिहाज़ से ख़राब है। मगर याद रखना चाहिये कि निज़ामे आलम का अस्ल माहसल ख़लाएक़ का अपने इम्कानी हुदूद में इन्तेहाई तरक़्क़ी के नुक़्ते तक पहुंचना है, और सिलसिलए इरतेक़ा में इन्सान आख़री कड़ी है और उसका नुक़्तए इरतेक़ा तक पहुंचना अपने कूव्वते अख़्तियार के बेहतरीन इस्तेमाल पर है, और कूव्वते अख़्तियार की आज़माइश और उसकी जिला हमेशा तसादुम और तज़ाद पर मौकूफ़ है। अगर मुत्सादिम ताक़तें नहीं होतीं तो ताक़त में जमूद और तअत्तुल पैदा हो जाता है और कम अज़ कम उसके जौहर खुलते नहीं।

और इस बिना पर इन्सानियत के तसादुम के लिये शैतनत की ज़रूरत है। इसी शैतानियत से मुक़ाबला करके इन्सानियत मेराजे कमाल पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पहुंचती है, और इस लिये शैतान अपनी जगह पर बहुत बुरा है। मगर निज़ामे आलम में उसके वजूद की ज़रूरत थी। ताकि इन्सानियत मेराजे कमाल पर पहुंच सके, और इसी तरह समझ लीजिये इसको कि फ़िरऔन बहुत बुरा था। मगर मूसवीय्यत की तजल्ली के लिये फ़िरऔन की ज़रूरत और नमरूद बहुत बुरा मगर इब्राहीमियत^{अ0} की शोला अफ़रोज़ी के लिये नमरूद की ज़रूरत, और यज़ीद^{ल0} बहुत बुरा मगर हुसैनियत^{अ0} के इज़हार के लिये यज़ीद^{ल0} की ज़रूरत थी। उनमें से हर एक हस्ती अपने मक़ाम और अपने किरदार के लिहाज़ से बहुत बुरी; लेकिन कुदरत को उसके पैदा करने की ज़रूरत थी ताकि वह अपने अख़्तियार से बुरे अफ़आल का इरतेकाब करके इन्सानियत की खुद अख़्तियारी तरक़्क़ी और उसके मेराजे कामयाबी पर पहुंचने के निज़ाम की तक्मील करे। मगर इन्सान ज़ईफुल बुनियान निज़ाम की उन गहरी मसलहतों को क्या समझे—! इस लिये वह चाहता है कि हर अपनी ख़्वाहिश को और जिसे वह बेहतर समझता है उसकी खुदा से तक्मील कराये। यह कैसे मुम्किन है, और ऐसा हो तो फिर ख़ालिक़ व मख़लूक़ के इल्म व हिक्मत में फ़र्क़ ही क्या रहे? यह वजह भी होती है कि दुआयें मुस्तरद हो जाती हैं और नहीं कुबूल होतीं।

पढ़ कर खुला सहीफ़—ए—सज्जादिया यह राज़
मुम्किन नहीं ख़ुदाई में तमसीले अहलेबैत^{अ0}
कुरआं की तरह यह भी क़मर बेमिसाल है
अल्लाह रे फ़साहते इन्जीले अहलेबैत^{अ0}

●●●

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अस् सहीफ़तुल कामेलतुस् सज्जादिया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(तरजमा) "हम से सैय्यदे अजल नजमुद्दीन बहउश्शरफ़ अबुल हसन मोहम्मद इब्ने हसन इब्ने अहमद इब्ने अली इब्ने मोहम्मद इब्ने उमर इब्ने यहया अलवी हुसैनी रहमतुल्लाह ने इस सहीफ़े की रवायत करते हुए बयान फ़रमाया है कि सन् 516 हि0 में शेख़ सईद अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद इब्ने अहमद इब्ने शहरयार ख़ज़ीनादार आस्तानए मौलाना अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम के सामने सहीफ़ा पढ़ा जाता था और मैं सुनता था और उन्होंने बयान किया कि मैंने इस सहीफ़े को शेख़ सदूक़ अबी मंसूर मोहम्मद इब्ने मोहम्मद इब्ने अहमद इब्ने अब्दुल अज़ीज़ुल अकबरी अल मोअद्दल रहमतुल्लाह से सुना है जब कि वह उनके सामने पढ़ा जा रहा था और शेख़ अबी मंसूर ने इसकी रिवायत अबुल मुफ़ज़्ज़िल मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह इब्ने मुत्तलिब शीबानी से की है और उन्होंने शरीफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अबू अब्दुल्लाह जाफ़र इब्ने मोहम्मद इब्ने जाफ़र इब्ने हसन इब्ने जाफ़र इब्ने हसन इब्ने हसन इब्ने अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम से और उन्होंने सन् 265 हि0 में अब्दुल्लाह इब्ने उमर इब्ने ख़त्ताब ज़ियात से और उन्होंने अपने मामू अली इब्ने नोअमान आलम से और उन्होंने अमीर इब्ने मुतवक्किल सक़फ़ी बलख़ी से और उन्होंने अपने बाप मुतवक्किल इब्ने हारून से! मुतवक्किल का बयान है कि जब[2] यहया इब्ने ज़ैद इब्ने अली अपने बाप के शहीद हो जाने के बाद ख़ुरासान जा रहे थे तो मैंने उनसे मुलाक़ात की और सलाम अर्ज़ किया। उन्होंने पूछा तुम कहां से आ रहे हो? मैंने कहा हज से वापस आ रहा हूं। यहिया ने अपने अज़ीज़ों और चचा ज़ाद भाईयों के हालात दरियाफ़्त किये जो मदीने में थे; और जाफ़र इब्ने मोहम्मद अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ बहुत देर तक पूछते रहे। मैंने उन सबका हाल बयान किया और उनके वालिद ज़ैद बिन अली की शहादत पर उन सब के हुज़्न व तास्सुर का ज़िक्र किया। यह सुन कर उन्होंने कहा कि मेरे चचा मोहम्मद इब्ने अलीअल बाक़र अलैहिस्सलाम ने मेरे वालिद को तरके ख़ुरूज का मशविरा दिया था, और उन्हें बतलाया था कि अगर उन्होंने ख़ुरूज किया और मदीने को छोड़ा तो अन्जामकार क्या होगा। फिर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़रमाया कि तुमने मेरे इब्ने अम जाफ़र इब्ने मोहम्मद अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात की थी। मैंने कहा जी हां! फ़रमाया क्या तुमने मेरे बारे में उनसे कुछ सुना है? मैंने कहा जी हां, फ़रमाया जो कुछ मेरे मुतअल्लिक़ फ़रमाया हो बताओ, मैंने कहा मेरी जान आप पर निसार हो मुझे यह अच्छा नहीं मालूम होता कि जो मैंने सुना है आप के सामने अर्ज़ करूं। फ़रमाया मुझे मौत से डराते हो? जो सुना है बयान करो। मैंने अर्ज़ किया कि मैंने हज़रत को फ़रमाते सुना है कि आप भी क़त्ल होंगे और सूली पर लटकाये जायेंगे जिस तरह आपके वालिद क़त्ल किये गये और सूली पर लटकाये गये। यह सुन कर उनका चेहरा मुतग़य्यर हो गया और इस आयत की तिलावत की।" वह जिस बात को चाहता है मिटा देता है और जिस बात को चाहता है नक़्श कर देता है और उसके पास लौहे महफ़ूज़ है, और फ़रमाया ऐ मुतवक्किल अल्लाह तबारको तआला ने हमारे ज़रिये इस दीन को तक़वियत पहुंचाई और हमारे हिस्से में इल्म और तलवार आई है और यह दोनों चीज़ें हमारे लिये फ़राहम हैं, और हमारे चचा ज़ाद भाई सिर्फ़ इलम से मख़सूस हैं। मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हो जाऊँ, मैंने बानिस्बत आप के और आपके वालिद के लोगों को आपके इब्ने अम जाफ़रे सादिक़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अलैहिस्सलाम की तरफ़ ज़्यादा माएल पाया है। फ़रमाया इसकी वजह यह है कि मेरे चचा मोहम्मद इब्ने अलीअल बाक़र[अ०] और उनके फ़रज़न्द जाफ़रे सादिक़[अ०] ने लोगों को ज़िन्दगी व बक़ा की दावत दी है और हमने उन्हें मौत की जानिब बुलाया है। मैंने कहा ऐ फ़रज़न्दे रसूल[स०] वह हज़रात ज़्यादा इल्म रखते हैं या आप। यह सुनकर कुछ अर्से के लिये ज़मीन में आंखें गाड़ दीं फिर सर उठाया और फ़रमाया कि इल्म से तो हम सब ही बहरामन्द हैं मगर हां वह उन तमाम चीज़ों का इल्म रखते हैं जिनका हम इल्म रखते हैं और जो वह जानते हैं वह सब का सब हम नहीं जानते। फिर मुझसे फ़रमाया क्या तुमने मेरे इब्ने अम के उफ़ादात भी कुछ लिखे हैं? मैंने अर्ज़ किया। "जी हां"! फ़रमाया जो कुछ लिखा है मुझे दिखाओ। मैंने मुख़्तलिफ़ उलूम के सिलसिले में हज़रत[अ०] के इरशादात दिखाये और एक दुआ भी दिखाई जो हज़रत[अ०] ने मुझे लिखवाई थी, और फ़रमाया था कि मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार मोहम्मद इब्ने अली अलैहिस्सलाम ने मुझे लिखवाई थी, और फ़रमाया था कि यह दुआ मेरे वालिद अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम की अदिया सहीफ़–ए–कामला से है। यहिया ने उसे आख़िर तक देखा और फ़रमाया मुझे इसके लिखने की इजाज़त देते हो। मैंने अर्ज़ किया। ऐ फ़रज़न्दे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रसूल[स०] आप मुझसे ऐसी चीज़ की इजाज़त तलब फ़रमाते हैं जो ख़ुद आप ही के घर की है। यह सुनकर उन्होंने फ़रमाया मैं भी मुकम्मल दुआओं का एक सहीफ़ा तुम्हें दिखाऊँगा जो मेरे पिदरे गिरामी ने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार से याद की थीं और मुझे मेरे वालिद ने इनके महफ़ूज़ रखने की हिदायत की थी, और फ़रमाया था कि नाअहल लोगों से इन्हें पोशीदा रखूँ। उमैर कहते हैं कि मेरे वालिद (मुतवक्किल) ने बयान किया कि मैंने उठ कर उनके सर को बोसा दिया, और अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम ऐ फ़रज़न्दे रसूल[स०] मैं तुम्हारी दोस्ती व इताअत के साथ अल्लाह की परस्तिश करता हूं और उम्मीदवार हूं कि वह मेरी ज़िन्दगी और मेरे मरने के बाद तुम्हारी मोहब्बत व दोस्ती की वजह से सआदत व नेक बख़्ती बख़्शे। फिर आपने वह सहीफ़ा जो मैंने उन्हें दिया था एक साहबज़ादे को दिया जो उनके हमराह था और इससे फ़रमाया कि इस दुआ को वाज़ेह व ख़ुशख़त लिख लो और मुझे दिखाओ ताकि मैं उसे ज़बानी याद कर लूं, क्योंकि मैंने हज़रत जाफ़रे सादिक़ हिफ़्ज़ुल्लाह से इस दुआ को तलब किया था मगर उन्होंने देने से इन्कार कर दिया था। मुतवक्किल कहते हैं कि मैंने यह सुना तो अपने किये पर पशेमान हुआ, और कुछ समझ में न आया कि अब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

क्या करूं (फिर ख़याल आया कि) हज़रत जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने पहले से मना भी तो नहीं फ़रमाया था कि यह दुआ किसी को न देना। उसके बाद यहिया ने एक सन्दुक़चा तलब किया और उसमें से एक मोक़फ़्फ़ल व सर ब मोहर सहीफ़ा निकाला। उस मोहर को देखा तो उसे चूमा और गिरया फ़रमाया फिर उसकी मोहर तोड़ी क़ुफ़्ल खोला और सहीफ़े को फैला कर अपनी आंखों से लगाया और चेहरे पर मला और फ़रमाया ऐ मुतवक्किल ख़ुदा की क़सम अगर तुम मेरे इब्ने अम के इस क़ौल को नक़्ल न करते कि मैं क़त्ल कर दिया जाऊँगा और सूली पर लटकाया जाऊँगा तो मैं हरगिज़ यह सहीफ़ा तुम्हारे हवाले न करता। और इसके देने में बोख़ल से काम लेता, लेकिन मुझे मालूम है कि जो कुछ उन्होंने फ़रमाया है सच है, और यह बात उन्होंने अपने आबाओ अजदाद से सुनी है और बहुत जल्द हो कर रहेगी। इस लिये मैं डरता हूं कि यह इलमी ज़ख़ीरा बनी उमय्या के हाथ लग जाये और वह इसे छुपा डालें, और अपने ख़ज़ानों में सिर्फ़ अपने लिये ज़ख़ीरा कर लें। लेहाज़ा तुम इसे अपने पास रखो और मेरी जगह इसकी हिफ़ाज़त करो, और मुन्तज़िर रहना, और इस सहीफ़े को अपने पास अमानत रखना, और जब अल्लाह मेरा और इस क़ौम का जो फ़ैसला करना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

चाहता है कर दे तो उसे मेरे चचा ज़ाद भाईयों मोहम्मद व इब्राहीम के पास पहुंचा देना क्योंकि वही मेरे बाद इस सिलसिले में मेरे क़ायम मक़ाम हैं। मतवक्किल का बयान है कि मैंने वह सहीफ़ा ले लिया, और जब यहिया इब्ने ज़ैद शहीद कर दिये गये तो मैं मदीने गया और इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और यहिया का तमाम वाक़आ उनसे नक़्ल किया। हज़रत रोने लगे और यहिया के वाक़िआत सुनकर बहुत ग़मगीन हुए और फ़रमाया कि खुदा रहमत नाज़िल करे मेरे इब्ने अम पर और उन्हें उनके आबाओ अजदाद के साथ रखे। ऐ मुतवक्किल ख़ुदा की क़सम मुझे इस दुआ के देने में वही ख़ौफ़ माने था जो उन्हें ख़ुद अपने बाप के सहीफ़े के बारे में था। अच्छा तो वह सहीफ़ा कहां है? मैंने कहा कि यह है। आप ने उसे खोला और फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मेरे चचा ज़ैद की तहरीर है और मेरे दादा अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम की दुआयें हैं। फिर आप ने अपने फ़रज़न्द इस्माईल से फ़रमाया कि जाकर वह दुआयें ले आओ जिनकी हिफ़ाज़त व निगेहदाश्त की मैंने तुम्हें हिदायत की थी। इस्माईल गये और एक सहीफ़ा लाये जो बिल्कुल वैसा ही था जैसा यहिया इब्ने ज़ैद ने मुझे दिया था। इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने उस

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सहीफ़े को बोसा दिया। अपनी आंखों से लगाया कि यह मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार का ख़त है। जिसे मेरे सामने मेरे दादा (अली इब्नुल हुसैन^{अ०}) ने लिखवाया था। मैंने अर्ज़ किया ऐ फ़रज़न्दे रसूल^{स०} अगर आप की इजाज़त हो तो मैं इस सहीफ़े का ज़ैद व यहिया के सहीफ़े से मुक़ाबिला कर लूं। हज़रत ने इजाज़त दी और फ़रमाया कि मैं तुमको इसका अहल पाता हूं। देखा तो मालूम हुआ कि दोनों सहीफ़े एक ही हैं, और एक हरफ़ भी दोनों का एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ नहीं है। फिर मैंने हज़रत से इजाज़त मांगी कि इसे अब्दुल्लाह इब्ने हसन के दोनों बेटों के हवाले कर दूं। आप ने फ़रमाया :– "अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है अमानतों को उनके अहल तक पहुंचा दो"। मैं उन दोनों से मुलाक़ात के लिये उठा तो हज़रत ने फ़रमाया तुम अपनी जगह पर रहो। फिर एक शख़्स के ज़रिये मोहम्मद व इब्राहीम को बुलवाया। जब वह आये तो उनसे फ़रमाया कि यह तुम्हारे इब्ने अम यहिया की मीरास है जो उन्हें अपने बाप से मिली थी, और उन्होंने अपने भाईयों के बजाये तुम दोनों को इसके लिये मख़सूस किया है। मगर मैं इस सहीफ़े के बारे में तुम दोनों से एक शर्त करता हूं। उन्होंने कहा ख़ुदा आप पर रहमत नाज़िल करे, फ़रमाइये। आप का जो इरशाद होगा हमारे लिये क़ाबिले

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

क़ुबूल होगा। फ़रमाया कि तुम इस सहीफ़े को मदीने से बाहर न ले जाना। उन्होंने कहा यह किस लिये? फ़रमाया कि तुम्हारे इब्ने अम को इसके मुतअल्लिक़ जो ख़तरा था वही ख़तरा मुझे इसके बारे में तुम दोनों से है। कहा कि उन्हें ख़तरा तो उस वक़्त लाहक़ हुआ जब उन्हें अपने मारे जाने का इल्म हुआ। हज़रत ने फ़रमाया कि तुम दोनों भी इस ख़तरे से मुतमईन न रहो। ख़ुदा की क़सम मैं ब–ख़ूबी जानता हूं कि तुम दोनों भी ऐसा इक़्दाम करोगे जैसा उन्होंने किया था, और तुम भी क़त्ल किये जाओगे जिस तरह वह क़त्ल किये गये। वह दोनों यह सुन कर "ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयुल अज़ीम" कहते हुए उठ खड़े हुए। जब वह दोनों चले गये तो हज़रत ने मुझसे फ़रमाया ऐ मुतवक्किल! यहिया ने यही तो कहा था कि मेरे चचा मोहम्मद इब्ने अलीउल बाक़र[अ०] और उनके फ़रज़न्द जाफ़रे सादिक़[अ०] लोगों को ज़िन्दगी व हयात की तरफ़ दावत देते हैं और हम उन्हें मौत की जानिब बुलाते हैं। मैंने अर्ज़ किया जी हां ख़ुदा आप के हालात साज़गार रखे आप के इब्ने अम यहिया ने यही कहा था। फ़रमाया ख़ुदा यहिया पर रहम करे मेरे पिदरे गिरामी ने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार जद्दे अमजद और अली अलैहिस्सलाम के सिलसिले से रवायत की है, कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रसूल उल्लाह[स०] सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम मिम्बर पर थे कि उन पर गुनूदगी तारी हो गयी, और ख़्वाब में कुछ लोगों को देखा कि वह आप के मिम्बर पर बन्दरों की तरह कूद रहे हैं और लोगों को उलटे पैरों वापस पलटा रहे हैं। यह देख कर रसूल उल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की आंख खुल गई, और सीधे होकर बैठ गये। इस आलम में कि हुज़्न व अन्दोह के आसार आप के चेहरे पर नुमायां थे इतने में जिबरईले अमीन[अ०] यह आयत लेकर नाज़िल हुए :– "वह ख़्वाब जो हमने तुम को दिखाया इस लिये दिखाया कि वह लोगों के लिये एक आज़माइश हो और इसी तरह वह शजरा जिस पर कुरआन में लअनत की गयी है हम उन्हें डराते हें मगर वह इस डराने के बावजूद सरकशी में बढ़ते ही चले जाते हैं"।[3] (शजरए मलऊना से मुराद बनी उमय्या हैं) पैग़म्बरे अकरम[स०] ने जिबरईल[अ०] से दरयाफ़्त किया कि यह लोग मेरे वक़्त और ज़माने में होंगे? कहा नहीं बल्कि आपकी हिजरत के बाद इस्लाम का दौर दौरा होगा जो दस बरस तक बरक़रार रहेगा। फिर इस्लाम का दौर दौरा हिजरत के पैंतीसवें साल के आग़ाज़ में शुरू होगा और पांच बरस तक बरक़रार रहेगा और फिर ऐसी गुमराही का चक्कर चल निकलेगा जो अपने मरकज़ पर जम कर खड़ी हो जायेगी, और फिर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़िरऔनों की हुकूमत शुरू हो जायेगी। इमाम जाफ़रे सादिक़[अ०] ने फ़रमाया कि ख़ुदा वन्दे आलम ने इसके बारे में यह आयत नाज़िल फ़रमाई है "हमने इस कुरआन को शबे क़द्र में उतारा और तुम क्या जानो कि शबे क़द्र क्या है। शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है।" बनी उमय्या इन हज़ार महीनों तक क़ाबिज़ रहेंगे मगर इन महीनों में शबेक़द्र न होगी। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा वन्दे आलम ने अपने नबी[स०] को आगाह कर दिया था कि बनी उमय्या इन हज़ार महीनों की मुद्दत तक मुस्लमानों के हल्ल व अक़्द के मालिक और बरसरे इक़्तिदार रहेंगे। इस तरह कि पहाड़ भी उनकी सरबुलन्दी से मुक़ाबिला करना चाहेंगे तो वह उनसे भी ऊँचे दिखाई देंगे यहां तक कि ख़ुदा वन्दे आलम उनके मुल्क व सल्तनत को ज़वाल का हुक्म देगा और वह इस तमाम अर्से में हम अहलेबैत[अ०] के बुग़्ज़ व अदावत को अपना शुआर बनाये रखेंगे और उनके ज़मानए हुकूमत में अहलेबैते मोहम्मद[स०] और उनके दोस्तों और पैरवी करने वालों पर जो मुसीबतें नाज़िल होंगी उन सब पर अपने नबी[स०] को मुत्तलअ कर दिया था, और उन्हीं बनी उमय्या के बारे में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की है :– "क्या तुमने उन लोगों के हाल पर ग़ौर नहीं किया जिन्होंने अल्लाह तआला की नेअमतों के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बदले नाशुक्री अख़्तियार की और अपनी क़ौम को हलाकत के घर में ला उतारा कि सब वासिले जहन्नम होंगे और वह क्या बुरा ठिकाना है।" (इस आयत में) नेअमते इलाही से मुराद मोहम्मद[स०] और उनके अहलेबैत[अ०] हैं जिनकी मोहब्बत ऐन ईमान है जो जन्नत में ले जायेगी, और उनसे दुश्मनी सरासर कुफ़्र व निफ़ाक़ है जो दोज़ख़ में ला फेंकेगी, और पैग़म्बर[स०] ने अली[अ०] और अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम को इस अम्र से आगाह कर दिया था। मुतवक्किल कहते हैं कि फिर हज़रत ने फ़रमाया कि ज़ुहूर हज़रत क़ायम[अ०] से पहले हम अहलेबैत[अ०] में से ज़ुल्म को दूर करने या हक़ को सरबुलन्द करने के लिये किसी ने ख़ुरूज नहीं किया और न करेगा, मगर यह कि आफ़ात व बल्लियात इसकी बेख़कनी करेंगे।

और इसका यह इक़्दाम हमारे और हमारे दोस्तों के रंज व आलाम में इज़ाफ़ा कर देगा। मुतवक्किल इब्ने हारून का बयान है कि फिर हज़रत ने वह दुआयें मुझे लिखवा दीं और वह पछत्तर दुआयें थीं। ग्यारह दुआओं के ज़ब्त व हिफ़्ज़ से क़ासिर रहा और साठ से कुछ ऊपर दुआयें मैंने ज़बानी याद कर लीं।

(शेख़ अकबरी जिनका ज़िक्र पहले आ चुका है दूसरी सनद से इस तरह रिवायत करते हैं कि) हमसे अबुल फ़ज़ल ने बयान किया और उनसे मोहम्मद इब्ने हसन इब्ने रोज़बा अबुबक्र मदाएनी कातिब साकिन रहबा ने घर के अन्दर बयान किया और उन्होंने मोहम्मद इब्ने अहमद इब्ने मुस्लिम मुतहरी से रिवायत की, और उन्होंने अपने बाप (अहमद इब्ने मुस्लिम) से और उन्होंने उमैर इब्ने मुतवक्किल से और उन्होंने अपने बाप मुतवक्किल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इब्ने हारून से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि मैंने यहिया इब्ने ज़ैद इब्ने अली अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात की और फिर पैग़म्बर[स०] के ख़्वाब तक का पूरा वाक़िया बयान किया जिसे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने आबाए ताहेरीन सलवातुल्लाह अलैहिम से रिवायत किया है, और मुतहरी की रिवायत में दुआओं की फ़ेहरिस्त का भी इस तरह ज़िक्र है :—

नं०	दुआ	पेज
(1)	ख़ुदा वन्दे आलम की हम्दो सताइश	150
(2)	रसूले अकरम[स०] पर दुरूद व सलाम	166
(3)	हामलाने अर्श और मोक़र्रब फ़रिश्तों पर सलवात	171
(4)	अम्बिया[अ०] पर ईमान लाने वालों के हक़ में दुआ	181
(5)	अपने और अपने ख़ास दोस्तों के लिये दुआ	190
(6)	दुआये सुबह व शाम	195
(7)	मुश्किलात के वक़्त पढ़ने की दुआ	206
(8)	ख़्वास्तगारी पनाह के सिलसिले की दुआ	210
(9)	तलबे मग़फ़रत के सिलसिले में दुआ	225
(10)	तलबे पनाह के सिलसिले में दुआ	232
(11)	अन्जाम बख़ैर होने की दुआ	238
(12)	एतराफ़े गुनाह व तलबे तौबा के सिलसिले में दुआ	243
(13)	तलबे हाजात के सिलसिले में दुआ	251
(14)	दाद ख़्वाही की बाबत दुआ	259
(15)	मरज़ के दफ़ीये की दुआ	267
(16)	उज़्र व अफ़वो तक़सीर के सिलसिले में दुआ	273
(17)	शर्रे शैतान के दफ़ीये की दुआ	283
(18)	दफ़ा बल्लियात के सिलसिले में दुआ	293
(19)	तलबे बारां की दुआ	295
(20)	पाकीज़ा अख़लाक़ से आरास्तगी की दुआ	299

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(21)	रंज व अन्दोह के मौक़े की दुआ	340
(22)	शिद्दत व सख़्ती के वक़्त की दुआ	347
(23)	तलबे आफ़ियत की दुआ	356
(24)	वालदैन के हक़ में दुआ	360
(25)	औलाद के हक़ में दुआ	367
(26)	दोस्तों और हमसाईयों के हक़ में दुआ	374
(27)	हुदूदे ममलिकत की हिफ़ाज़त करने वालों के लिये दुआ	381
(28)	अल्लाह तआला से तज़र्रोअ व ज़ारी के सिलसिले में दुआ	391
(29)	तंगीए रिज़्क़ के मौक़े पर पढ़ने की दुआ	395
(30)	अदाये क़र्ज़ की दुआ	399
(31)	दुआए तौबा	402
(32)	नमाज़े शब के बाद की दुआ	413
(33)	दुआए इस्तेख़ारा	424
(34)	गुनाहों की रूस्वाई से बचने की दुआ	430
(35)	रिज़ाए इलाही पर ख़ुश रहने की दुआ	433
(36)	बिजली के कौंदने और रअद के गरजने के वक़्त की दुआ	438
(37)	शुक्र के सिलसिले में दुआ	442
(38)	उज़्र व तलबे मग़फ़िरत के सिलसिले में दुआ	450
(39)	तलबे उफ़ू व रहमत की दुआ	456
(40)	मौत को याद करने के वक़्त की दुआ	463
(41)	पर्दा पोशी व निगेहदाश्त की दुआ	467
(42)	दुआए ख़त्मुल कुरआन	470
(43)	दुआए रवैते हिलाल	485
(44)	इस्तेक़बाल माहे रमज़ान की दुआ	501
(45)	विदाए माहे रमज़ान की दुआ	513
(46)	ईदैन और जुमे की दुआ	526

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(47) रोज़े अरफ़ा की दुआ 535
(48) ईदे कुरबान और जुमे की दुआ 567
(49) दुश्मन के मकरो फ़रेब से बचने की दुआ 581
(50) ख़ौफ़े इलाही के सिलसिले में दुआ 588
(51) इज्ज़ व फ़रोतनी के सिलसिले में दुआ 594
(52) तज़र्रुअ व अलहाह के सिलसिले में दुआ 599
(53) इज्ज़ व ज़ारी के सिलसिले में दुआ 605
(54) रंज व अन्दोह के दूर होने के लिये दुआ 608
(55) तस्बीह व तक़दीस के सिलसिले में 613
(56) बुज़ुर्गी व अज़मते इलाही के बयान में 626
(57) तज़ल्लुल व आजिज़ी के सिलसिले में 633
(58) ज़िक्रे आले मोहम्मद के सिलसिले में 638
(59) हज़रत आदम[अ०] पर दुरूद व सलवात के सिलसिले में 643
(60) कर्ब व मुसीबत से तहफ़्फ़ुज़ व लग़्ज़िश के लिए 654
(61) ख़ौफ़ व ख़तर के मौक़े पर 660
(62) हफ़्ते के सात दिनों के पढ़ने के लिए 666

और दुआओं के ऊपर के उनवानात अबूअब्दुल्लाह हसन के अल्फ़ाज़ और रिवायत के मुताबिक़ हैं। (अबुल फ़ज़ल की पहली सनद में उनका ज़िक्र इस तरह हो चुका है कि) :— हमसे अबू अब्दुल्लाह जाफ़र इब्ने मोहम्मद हसनी ने कहा मुझसे अबू अब्दुल्लाह इब्ने उमर इब्ने ख़त्ताब ज़ियात ने नक़्ल किया, और उन्होंने अपने मामू अली इब्ने नोअमाने आलम से और उन्होंने उमैर इब्ने मुतवक्किल सक़फ़ी बलख़ी से, और उन्होंने अपने बाप मुतवक्किल इब्ने हारून से रिवायत की कि उन्होंने बयान किया कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुझे मेरे सैय्यद व सरदार अबू अब्दुल्लाह जाफ़र इब्ने मोहम्मद अलैहिस्सलाम ने यह दुआयें लिखवायीं और फ़रमाया कि मेरे दादा अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम ने मेरे वालिद मोहम्मद इब्ने अली अलैहिस्सलाम को मेरे सामने यह दुआयें लिखवायीं थीं •••

---

(1) असनाद सहीफ़े के सिलसिले में सैय्यद नजमुद्दीन बहउश् शरफ़ मोहम्मद इब्ने हसन से जिन बुज़ुर्गवार ने 'हद्देसना' कह कर इसे रिवायात किया है वह अक्सर उलमा व मोहद्देसीन के नज़दीक उमैदुय–रऊसा हबतुल्लाह इब्ने हामिद मुतवफ़्फ़ी सन् 609 हि० हैं। चुनान्चे उन्होंने अली इब्नुस सकून मुतवफ़्फ़ी हुदूद सन् 606 हि० के हाथ के लिखे हुए सहीफ़े पर जो इजाज़ए रिवायत अबू जाफ़र इब्ने मअया के लिये तहरीर फ़रमाया इसमें लिखते हैं कि (तरजमा) "मैंने उनके लिये सैय्यद बहाउद्दीन शरफ़ अबुल हसन मोहम्मद इब्ने हसन इब्ने अहमद से सहीफ़े की रिवायत की"। इस इजाज़े की तहरीर माहे रबीउल अव्वल सन् 603 हि० है और इसी इब्नुल सुकून के नुस्ख़े पर से यह इजाज़ा सन् 333 के लिखे हुए एक क़दीमी नुस्ख़े पर नक़्ल हुआ जिससे अल्लामा मजलिसी रहमतुल्लाह ने नक़्ल किया और शहीदे अव्वल मुतवफ़्फ़ी सन् 786 हि० के हाथ के लिखे हुए नुस्ख़े पर भी इसी इब्नुल सकून के नुस्ख़े पर से नक़्ल हुआ। सैय्यद नजमुद्दीन बहाउश शरफ़ का सिलसिलए रिवायत अबुल मुफ़ज़्ज़ल शीबानी पर मुन्तही होता है, और अबुल फ़ज़ल उसे दो तरीक़े से रिवायत करते हैं। एक अबु अब्दुल्लाह जाफ़र इब्ने मोहम्मद के सिलसिले से और दूसरे मोहम्मद इब्ने हसन इब्ने रोज़बा के तरीक़े से और यह दोनों असनाद

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुतवक्किल इब्ने हारून तक पहुंचते हैं, और मुतवक्किल इब्ने हारून को सादिक़[अ०] आले मोहम्मद[स०] ने यह दुआयें इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के तहरीरकर्दा नुस्ख़े से लिखवाई थीं, और जनाबे ज़ैद के हाथ का लिखा हुआ नुस्ख़ा भी जनाबे यहिया इब्ने ज़ैद के ज़रिये उनकी नज़र से गुज़रा और उन दोनों को एक दूसरे के मुताबिक़ करके देख भी लिया था•••

(2) जनाबे ज़ैद इब्ने अली रहमल्लाह सन् 80 हि० में पैदा हुऐ इमामत की दरख़शां फ़ज़ाओं में आंख खोली और इस्मत के सायों में परवरिश पाई। इल्म व अमल, जूदो सख़ा और हिम्मत व शुजाअत के एतबार से बड़ी अहम और पुर अज़मत शख़्सियत के मालिक थे। हमावक़्त तिलावते क़ुरआन व कसरते इबादत की वजह से हलीफ़ुल क़ुरआन और इस्तेवानतल मस्जिद के लक़ब से याद किये जाते थें शेख़ मुफ़ीद अलैहिर्रहमा ने उनके मुतअल्लिक़ इरशाद में तहरीर फ़रमाया है :–

> (तरजमा) "वह आबिद मुतवरअ फ़क़ीह सख़ी और बड़े शुजाअ थे। भलाइयों के इरतेक़ा और बुराईयों के इस्तेसाल और ख़ूने सैय्यदुश् शोहदा[अ०] के क़सास के लिये सरबकफ़ खड़े हुए"।•••

इस ख़ुरूज की इब्तिदा इस तरह हुई कि आप एक मर्तबा हाकिमे मदीना ख़ालिद इब्ने अब्दुल मलिक के ज़िल्लत आमेज़ बरताव की शिकायत हश्शाम इब्ने अब्दुल मलिक के कानों तक पहुंचाने के लिये रसाफ़ा तशरीफ़ ले गये, और जब हश्शाम के हां जाते तो वह मिलने से इन्कार कर देता और कोई तहरीर भेजते तो वह उसके नीचे लिख देता कि तुम वापस मदीने चले जाओ, और जो कहना सुनना हो वह ख़ालिद इब्ने अब्दुल मलिक से कहो। इस तरह एक मुद्दत गुज़र गयी और उसने मुलाक़ात का मौक़ा न दिया, और जब इधर से इसरार ज़्यादा हुआ तो उसने बिलआख़िर मुलाक़ात की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इजाज़त दी मगर इस तरह कि उन्हें मजलिस के आख़िरी कोने में जगह दी गयी, और गुफ़्तुगू में तहज़ीब व शराफ़त के मेयार को पसे पुश्त डाल दिया। अभी आप बैठे ही थे कि उसने कहा, मुझे मालूम हुआ है कि तुम हुकूमत व इक़्तिदार के ख़्वाब देख रहे हो हालांकि तुम्हारी हैसियत यह है कि तुम एक कनीज़ज़ादे हो। आपने फ़रमाया तुम्हारा यह कहना कि मैं हुकूमत व ख़िलाफ़त का ख़्वाहिशमन्द हूं। तो गैब का इल्म अल्लाह तआला के सिवा किसी को नहीं। रहा मेरी मां का कनीज़ी का सवाल तो "माओं की पस्ती मर्दों की बुलन्दियों की इन्तेहा तक पहुंचने से बैठा नहीं देती।" और तुम कनीज़ ज़ादा कह कर मुझे नज़रों से गिराना और लोगों की निगाहों में सुबुक करना चाहते हो हालांकि जनाबे इस्माईल[अ०] भी कनीज़ के बतन से थे मगर ख़ुदा ने उन्हें मुन्तख़ब क़रार दिया और उन्ही की सुल्ब से पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] पैदा हुए; जबकि मैं अली[अ०] व फ़ातेमा[स०] की औलाद हूं। हश्शाम यह सुनकर तिलमिलाया तो; मगर कुछ जवाब न दे सका। गुस्से में आकर हुक्म दिया कि इस सरफिरे को यहां से बाहर निकाल दो। चुनान्चे चन्द आदमियों की हिरासत में उन्हें शाम के हुदूद से ख़ारिज कर दिया गया। जब वह आदमी वापस चले गये तो आपने मदीने के बजाये इराक़ का रूख़ कर लिया और कूफ़े में क़याम के इरादे से ठहर गये। यहां के हालात यह थे कि लोग हुकूमत से बद्दिल और हश्शाम के ज़ुल्म व जौर से तंग आये हुए थे उन्होंने इस मौक़े को ग़नीमत समझा, और उनके हाथ पर बैअत करना शुरू कर दी। इन बैअत करने वालों में आयान व अशराफ़े कूफ़ा की भी एक कसीर जमाअत थी। जब हाकिमे इराक़ यूसुफ़ इब्ने उमर सक़फ़ी ने यह सूरतेहाल देखी तो वह इस तहरीक को कुचलने के लिये जंग पर आमादा हो गया। इधर से भी जंग की तैयारी शुरू हो गयी और आख़िरकार दोनों तरफ़ से तलवारें नियामों से बाहर निकल आयीं और हरबो पुकार के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शोले भड़कने लगे। जब अहले कूफ़ा ने जंग का रूख़ कुछ बदला हुआ पाया तो वह अपनी रवायती गद्दारी का सुबूत देते हुए छुटने लगे, और सिर्फ़ दो सौ बीस आदमी उनके हमराह रह गये। आप इन्हीं गिने चुने आदमियों को साथ ले कर बड़ी जुरअत व पामर्दी से यूसुफ़ सक़फ़ी की कई हज़ार फ़ौज का मुक़ाबिला करते रहे यहां तक कि लड़ते लड़ते अन्धेरा छा गया और जंग रोक देना पड़ी। जनाबे ज़ैद ज़ख़्मों से निढाल हो चुके थे; और कनपटी पर एक ऐसा तीर लगा था जो सर की हड्डी को तोड़कर दिमाग़ में पेवस्त हो गया था जब इस तीर को निकाला गया तो उसके निकलते ही रूह भी जस्दे उनसरी से परवाज़ कर गयी। मौक़े की नज़ाकत के पेशे नज़र उन्हें उसी वक़्त दफ़्न करना ज़रूरी था और वह भी इस तरह कि किसी को कानोकान ख़बर न हो। चुनान्चे पूरी एहतियात के साथ पानी की एक गुज़रगाह में गढ़ा खोद कर उन्हें दफ़्न कर दिया गया और उसके ऊपर से पानी बहा कर निशाने क़ब्र मिटा दिया गया। मगर यूसुफ़ सक़फ़ी ने एक मुख़बिर की इत्तिला पर क़ब्र का सुराग़ निकाल लिया और उसको खुदवाकर लाश निकलवाई, और सर को क़ता करके हश्शाम के पास भेज दिया जो दमिश्क़ के दरवाज़े पर नसब किया गया और लाश कुनासा कूफ़े में सूली पर लटका दी गयी जो चार बरस तक अपनी मज़लूमियत, ख़ुद्दारी और आज़ादिए ज़मीर की दास्तान दोहराती रही। हषशाम के बाद जब वलीद इब्ने यज़ीद बरसरे इक़्तिदार आया तो उसके हुक्म से यूसुफ़ सक़फ़ी ने पहले इस लाश को जलाया और फिर उसकी ख़ाक को हवा में उड़ा दिया। जनाबे ज़ैद की शहादत का वाक़िया रोज़े दोशम्बा 2 सफ़र सन् 121 हिजरी में पेश आया। उस वक़्त आप की उम्र सिर्फ़ बयालीस बरस की थी। आपने अपने बाद चार फ़रज़न्द छोड़े :– यहिया, अबू अब्दुल्लाह, हुसैन ज़ुलदमआ, अबू यहिया ईसा, और अबू जाफ़र मोहम्मद। जनाबे यहिया अपने वालिदे बुज़ुर्गवार की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शहादत के मौक़े पर कूफ़े में मौजूद थे मगर उनके बाद वह जंग का सिलसिला बरक़रार न रख सके क्योंकि इस सानहे के बाद तमाम अतबा व अन्सार मुतफ़र्रिक़ हो चुके थे और सिर्फ़ दस आदमी आपके हमराह रह गये थे। उस वक़्त बनी असद के एक शख़्स ने आपको मशविरा दिया कि वह खुरासान चले जायें क्योंकि वहां के बाशिन्दे अहलेबैते नबूवत[स०] से ख़ास अक़ीदत व इरादत रखते हैं चुनानचे आप अपने साथियों को ले कर रातों रात ख़ुरासान के इरादे से मदायन की तरफ़ चल दिये क्योंकि उस ज़माने में ख़ुरासान मदाइन ही के रास्ते से जाना होता था। इसी सफ़र में मुतवक्किल इब्ने हारून आपकी ख़िदमत में बारयाब हुए और आपने जनाबे ज़ैद[रज़ि] के हाथ का लिखा हुआ सहीफ़ए कामला उनके सुपुर्द फ़रमाया ताकि वह उसे मोहम्मद और इबराहीम फ़रज़न्दान अबदुल्लाह अल मख़लिस तक पहुंचा दें इस मौक़े पर मुतवक्किल ने जनाबे ज़ैद[रज़ि] के दावाय इमामत के मुतअल्लिक़ भी इसतफ़सार किया इसका जो जवाब जनाबे यहिया ने दिया उससे जनाबे ज़ैद[रज़ि] दावाए इमामत और ख़ुरूज की नौइयत पर भी रौशनी पड़ती है। मुतवक्किल कहते हैं कि मैंने दरियाफ़्त किया :–

"ऐ फ़रज़न्दे रसूल[स०] क्या आप के वालिदे बुज़ुर्गवार ने इमामत का दावा नहीं किया था? हालांकि पैग़म्बर[स०] ने इमामत का झूठा दावा करने वाले के लिये जो फ़रमाया है वह फ़रमाया है। फ़रमाया ख़ामोश ऐ बन्दए ख़ुदा! मेरे वालिद इससे कहीं ज़्यादा बाफ़हम थे कि वह किसी ऐसी चीज़ का दावा करते जिसका उन्हें हक़ न था। बल्कि उन्होंने ख़ुद फ़रमाया था कि मैं लोगों को रिज़ाए आले मोहम्मद[स०] की तरफ़ दावत देता हूं, और इससे मेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इब्ने अम जाफ़रे सादिक़[अ०] मुराद थे। मैंने कहा क्या वह इस ज़माने में साहेबुल अम्र हैं? फ़रमाया हां और वही तो तमाम बनी हाशिम में सबसे बड़े आलिम हैं।"

(कफ़ायतुल असर कुम्मी)

बहरहाल जब यहिया निकल गये और यूसुफ़ सक़फ़ी को इल्म हुआ तो उसने हरीस कलबी को उनकी गिरफ़्तारी के लिये मदायन भेजा। जब आपको उसके तआक़ुब का इल्म हुआ तो मदायन से रय और रय से सरख़स की तरफ़ चल दिये, और सरख़स में ज़ैद इब्ने उमरू तमीमी के हां छः महीने क़याम करने के बाद बलख़ रवाना हो गये और वहां हरीश इब्ने अब्दुल रहमान शीबानी के हां इतना अर्सा मुक़ीम रहे कि हश्शाम दुनिया से चल बसा, और वलीद इब्ने यज़ीद बरसरे इक़्तिदार आ गया। अब यूसुफ़ सक़फ़ी ने नसर इब्ने सयार आमिल ख़ुरासान को लिखा कि हरीश को पैग़ाम भेजो कि वह यहिया को अपनी निगाहों में रखे और कहीं आने जाने न दे। नसर इब्ने सयार ने अक़ील इब्ने मअक़िल आमिल बलख़ को लिखा कि हरीश को गिरफ़्तार कर लो, और जब तक वह यहिया को तुम्हारे हवाले न करे उसे न छोड़ो। अक़ील ने हरीश को गिरफ़्तार कर लिया और उनसे सख़्ती के साथ यहिया का मुतालबा किया, और उनके इन्कार करने पर छः सौ कोड़ों की उन्हें सज़ा दी गयी। मगर उन्होंने मेहमान नवाज़ी के इक़्दाम का तहफ़्फ़ुज़ करते हुए किसी तरह यहिया का पता देना गवारा न किया। बिलआख़िर उनसे कहा गया कि अगर तुम यहिया को हमारे हवाले न करोगे तो तुम को क़त्ल कर दिया जायेगा। हरीश के फ़रज़न्द क़ुरैश ने जब यह सुना तो अक़ील से कहा कि तुम मेरे बाप से कोई तअर्रुज़ न करो। मैं इस अम्र का ज़िम्मा लेता हूं कि बहुत जल्द उन्हें ढूंढ़ कर तुम्हारे हवाले

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करूंगा। यह अपनी एक जमाअत के साथ तलाश के लिये निकला और यहिया और उनके एक साथी यज़ीद इब्ने उमर को गिरफ़्तार कर लिया और नसर इब्ने सयार के पास रवाना कर दिया। नसर ने उन्हें तौक़ व ज़ंजीर में जकड़ कर क़ैदख़ाने में डाल दिया और तमाम वाक़िया यूसुफ़ सक़फ़ी को लिखा। वलीद ने हुक्म दिया कि यहिया और उसके साथियों को रिहा कर दिया जाये। जब यहिया क़ैद से रिहा हुए तो फिर सरख़स की तरफ़ रवाना हो गये, और वहां से अमरू इब्ने ज़रारा वालिये अबर शहर के हां गये। उसने आपको कुछ ज़ादे सफ़र दे कर ख़ुरासान की आख़री सरहद बहीक़ की तरफ़ रवाना कर दिया। बहीक़ से सत्तर आदमियों की एक फ़ौज तरतीब दे कर उमरू इब्ने ज़रारा से मुक़ाबिले के लिये तैयार हो गये। उमरू को जब आपकी नक़ल व हरकत का इल्म हुआ तो उसने नसर इब्ने सयार को लिखा। नसर ने वालिये सरख़स और हाकिमे तूस को पैग़ाम भेजा कि वह फ़ौरन् अमरू की मदद के लिये फ़ौजें रवाना करें। चुनान्चे दस हज़ार जंग जू सिपाही अमरू के परचम के नीचे जमा हो गये यहिया अपनी मुट्ठी भर फ़ौज के साथ मैदान में उतर आये और पूरी हिम्मत व जवांमर्दी के साथ मुक़ाबला किया। नतीजे में अमरू इब्ने ज़रारा मारा गया और उसकी तमाम फ़ौजें तितर–बितर हो गयीं। यहां से दुश्मन को शिकस्त दे कर हरात की तरफ़ रवाना हो गये और हरात से जोज़जान पहुंचे जो मरू और बलख़ के दरमियान एक छोटा सा शहर था। जब नसर इब्ने सयार को इस शिकस्त का इल्म हुआ तो उसने मुस्लिम इब्ने अहवज़ को आठ हज़ार की फौज दे कर उनके मुक़ाबले के लिये रवाना किया और जोज़जान के क़रीब मक़ामे अरग़वा में लड़ाई छिड़ गयी। दोनों ने एक दूसरे पर हमले शुरू कर दिये और तलवारें तलवारों से टकराकर चिंगारियां बरसाने लगीं। यहिया तीन शबाना रोज़ तक अपनी मुख़्तसर फ़ौज के साथ दुश्मन का मुक़ाबला करते

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रहे यहां तक कि आपकी फ़ौज का एक एक आदमी मारा गया, और ईसा अतरी ने एक तीर आपकी पेशानी पर ऐसा मारा जो सर की हड्डी को तोड़ कर निकल गया और आपने वहीं दम तोड़ दिया। सूरा इब्ने हुर ने आपके सर को क़ता किया और नसर के पास भिजवा दिया। नसर ने वलीद के पास भेजा और वलीद ने मदीने रवाना कर दिया जो उनकी वालिदा गिरामी रैता बिन्ते अबी हाशिम अब्दुल्लाह इब्ने मोहम्मदे हनफ़िया की गोद में लाकर डाल दिया गया, और जिस्मे नाज़नीन को जोज़जान के दरवाज़े पर लटका दिया गया। जब उमवी इक़्तेदार मुतज़लज़ल हुआ तो अबू मुस्लिम ख़ुरासानी ने उनकी लाश को उतरवा कर ग़ुस्लो कफ़न दिया और जोज़जान में हमेशा के लिये सुपुर्दे ख़ाक कर दिया, लेकिन अबू जाफ़र तबरी ने अपनी तारीख़ में लिखा है कि वलीद इब्ने यज़ीद ने यूसुफ़ सक़फ़ी को लिखा कि वह उनकी लाश को जला दे और ख़ाकस्तर को दरिया में बहा दे। चुनानचे ऐसा ही किया गया। बहरहाल इतना ज़रूर हुआ कि अबू मुस्लिम ख़ुरासानी ने जनाबे यहिया के क़ातिलों को चुन चुन कर क़त्ल किया बल्कि जिस जिस ने उस जंग में शिरकत की थी उसे भी तहे तेग़ कर दिया। अब चूंकि वक़्ती तौर पर फ़िज़ा का रंग कुछ बदल गया था इस लिये ख़ुरासान और उसके मज़ाफ़ात में जनाबे यहिया का एक हफ़्ते तक सोग मनाया गया, और उस साल ख़ुरासान में जो बच्चा पैदा हुआ उसका नाम यहिया रखा गया। जनाबे यहिया की शहादत का वाक़्या अस्र रोज़े जुमा सन् 125 हि0 में पेश आया। उस वक़्त आपकी उम्र सिर्फ़ अट्ठारह बरस की थी।

जनाबे यहिया ने अपने सिलसिले का क़ायम मक़ाम मोहम्मद और इब्राहीम फ़र्ज़न्दाने अब्दुल महज़ इब्ने हसने मुसन्ना को क़रार दिया और हालात इसकी ग़म्माज़ी करते थे कि वह इस सिलसिले में कोई न कोई क़दम ज़रूर उठायेंगे। चुनान्चे इन्हीं हालात के पेशे नज़र जनाब इमाम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इन दोनों को मुतवक्किल इब्ने हारून की मौजूदगी में तलब किया और यहिया की वसीयत के मुताबिक़ सहीफ़–ए–कामला उनके हवाले किया तो उनसे फ़रमाया कि तुम इस सहीफ़े को मदीने से बाहर न ले जाना, क्योंकि मुझे नज़र आ रहा है कि तुम ख़ुरूज करोगे और क़त्ल किये जाओगे। हज़रत[अ०] ऐसी ही पेशीनगोई ज़ैद और यहिया इब्ने ज़ैद के बारे में कर चुके थे जो हरफ़ ब हरफ़ पूरी हो चुकी थी, और यह चीज़ आपके इल्मे मख़फ़ी के हामिल और मरकज़े अलक़ा व इलहाम होने की दलील और मिन्जुमला आप के करामात के है। चुनान्चे इब्ने ख़ल्दून ने तहरीर किया है कि :–

> (तरजमा) "हज़रत जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने उन सबको वाक़आत से पहले ही आगाह कर दिया था और यह चीज़ आपके करामात में महसूब होती है।" (मुक़द्दमा)

जनाबे यहिया की शहादत एक ऐसा वाक़या था जिसने उमूवी हुकूमत के ख़िलाफ़ एक आम नफ़रत व बेज़ारी की लहर दौड़ा दी थी जिसका हुकूमत पर असर अन्दाज़ होना भी ज़रूरी था। चुनांचे उनका नय्यरे इक़बाल गहनाने लगा और वलीद इब्ने यज़ीद के मारे जाने के बाद तो उनका ज़वाल यक़ीनी हो गया। इस मौक़े पर बनी अब्बास और बनी हाशिम के नुमाइन्दों का माह ज़िलहिज 131 हि०में मदीने के अन्दर एक इज्तेमाअ हुआ और इस बज़्म मुशाविरत में यह तय किया गया कि उमूवी इक़्तेदार के दम तोड़ते ही मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह अलमहज़ की ख़िलाफ़त का एलान कर दिया जाये और उसी वक़्त उनके हाथ पर बैअत करके इस मुआहिदे की तकमील भी कर ली गयी। इन बैअत करने वालों में सफ़ाह और मन्सूर दवानीक़ी भी थे। जब यह मरहला तय हो गया तो इमाम जाफ़रे सादिक़[अ०] को भी वहां पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तलब किया गया। हज़रत[अ०] जब तशरीफ़ लाये और सूरतेहाल पर मुतलअ हुए तो आपने उनकी राय के ख़िलाफ़ राय दी, और जब आप की बात न सुनी गयी तो आप मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह के क़त्ल और आईन्दा होने वाले वाक़आत की तरफ़ इशारा करके उठ खड़े हुए। आख़िर वह वक़्त आया कि उमूवी हुकूमत का तख़्ता उलट गया और जिनके नाम की आड़ ले लेकर इन्क़ेलाबी हंगामे खड़े किये गये थे वह महरूम कर दिये गये और ख़िलाफ़ते बनी अब्बास के पाये नाम हो गयी! और मोहम्मद जिनके हाथ पर बैअत की गयी थी और उनके भाई इब्राहीम जंगलों और पहाड़ों में रूपोश हो गये यहां तक कि सफ़्फ़ाह का दौर अपने इक़्तेदार के इस्तेहकाम और बनी उमय्या के इस्तेसाल में गुज़र गया। उसके बाद मंसूर दवानिक़ी तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतमकिन हुआ उसने बरसरे इक़्तेदार आते ही मोहम्मद व इब्राहीम की तलाश शुरू कर दी, और वह दोनों भाई उसकी गिरफ़्त से बचने के लिये हिजाज़ के क़बाएल और ग़ैर मआरूफ़ मक़ामात में सर छुपाये पड़े रहे। सन् 140 हि0 में मंसूर हज से फ़ारिग़ होकर मदीने आया और अब्दुल्लाह अलमहज़ को तलब किया, और जब वह आये तो उनसे मोहम्मद व इब्राहीम के मुतअल्लिक़ पूछा कि वह कहां रूपोश हें। जनाब अब्दुल्लाह ने कहा मुझे उन दोनों के बारे में कोई इल्म नहीं है। मन्सूर यह सुनकर झल्ला उठा और बदज़बानी पर उतर आया, और हुक्म दिया कि इन्हें ले जाकर बन्द कर दो, चुनांचे मरवान के घर को ज़िन्दान क़रार दे कर उन्हें बन्द कर दिया गया, और उनके अलावा सादाते हसनी के दूसरे नुमायां अफ़राद को भी गिरफ़्तार करके उसी क़ैदख़ाने में डाल दिया गया। जब उन असीराने महन को तीन साल क़ैद वबन्द की सऊबतें झेलते गुज़र गये तो सन् 144 हि0 में मन्सूर दोबारा हज के लिये मक्के आया और वापसी में मदीने जाने के बजाये रबज़ा में उतर पड़ा और वहीं पर दारौग़ए जेल के ज़रिये तमाम असीरों को तलब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कर लिया। इन गिरफ़्ताराने बला में जनाबे मोहम्मद दीबाज इब्राहीम के खुसर भी थे। मन्सूर ने उन सबको अपने सामने खड़ा करके तहदीद व सरज़निश की और मोहम्मद दीबाज से मोहम्मद व इब्राहीम का पता पूछा। उन्होंने अपनी लाइल्मी का इज़हार किया जिस पर उन्हें चार सौ ताज़ियानों की सज़ा दी गयी और बाज़ दूसरे सादात को भी मुख़्तलिफ़ सज़ायें दी गयीं। फिर सब क़ैदियों को ज़ंजीरों में जकड़ कर और बेकजावा ऊँटों पर सवार करके कूफ़े की तरफ़ रवाना कर दिया जहां उन्हें मजलिसे हाशमिया में बन्द कर दिया गया। यह मजलिस एक तहख़ाना था जहां शबो रोज़ की तमीज़ न हो सकती थी। इन असीरों में से कुछ क़त्ल कर दिये गयें और कुछ क़ैद व बन्द की सऊबतें बर्दाश्त न कर सके और ख़त्म हो गये और कुछ उन मसाएब व आलाम के बावजूद सख़्त जान साबित हुए और इन्तेहाई सख़्तियों में सिसकते तड़पते ज़िन्दगी की सांसें लेते रहे। जब मज़ालिम की इन्तेहा हो गयी और इमाम हसन[अ०] की औलाद में से कोई शख़्स ऐसा न रहा जो क़त्ल या क़ैद न किया गया हो तो माहे रजब सन् 145 हि० में मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह हुकूमत के मज़ालिम के ख़िलाफ़ एहतेजाज करते हुए उठ खड़े हुए और ढाई सौ आदमियों की एक मुख़्तसर जमीअत के साथ खुरूज कर दिया, ओर मदीने में वारिद होते ही पहला काम यह किया कि शाही क़ैदख़ाने के तमाम दरवाज़े तोड़ डाले और जितने क़ैदी बन्द पड़े थे सबको रिहा कर दिया और क़ैदख़ाने के मुहाफ़िज़ रबाह इब्ने उस्मान को जेल में डाल दिया। उसके बाद अहले मदीना के एक उमूमी इज्तेमाअ में ख़ुतबा दिया और मन्सूर के घिनौने किरदार पर से पर्दा उठाया। उसके ज़ुल्म व सितम के लरज़ा बरअन्दाम कर देने वाले वाक़आत दोहराये जिससे हुकूमत के ख़िलाफ़ नफ़रत व हक़ारत के जज़बात पूरी शिद्दत से उभर आये। अब्बासी इक़्तेदार की बुनियादें मुतज़लज़ल होते नज़र आने लगीं, और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तबीअतें एक नये इन्क़ेलाब की पज़ीराई के लिये आमादा हो गयीं, अगर कोई माने था तो यह कि मन्सूर के हाथ पर बैअत की जा चुकी है। मगर मालिक बिन अनस ने फ़तवा दे दिया कि वह बैअत ज़बरो इकराह के नतीजे में हुई थी। इस लिये उसे तोड़ा जा सकता है। उनकी ताईद में इमामे अबूहनीफ़ा, इब्ने अजलां और अब्दुल हमीद इब्ने जाफ़र ने भी फ़तवे दिये। जब यह माने बरतरफ़ हो गया तो अहले मदीना मोहम्मद के हाथों पर बैअत के लिये टूट पड़े। और देखते ही देखते हिजाज़ व यमन पर उनका परचम लहराने लगा। जब मन्सूर को इन वाक़आत की इत्तिला हुई तो सख़्त परेशान हुआ और फ़ौरन् कूफ़े आया, और एक ख़त बतौरे अमाननामा मोहम्मद के पास भेजा और सियासी दांव पेच खेलते हुए सुलह की पेशकश की, और अमान का वादा किया। मोहम्मद ने ख़त पढ़ा और उसका एक मुफ़स्सिल जवाब लिखा, और अमान के सिलसिले में तहरीर किया कि तुम अमान देने वाले होते कौन हो, और फिर तुम्हारे क़ौल का एतबार ही क्या है। तुमने इब्ने हबीरा और अपने चचा अब्दुल्लाह इबने अली और अबू मुस्लिम ख़ुरासानी से भी अमान का वादा किया था, मगर उसका हश्र क्या हुआ। यही न कि सब को मौत के घाट उतरवा दिया। और अब मुझसे अमान का वादा करते हो। मुझ से मख़फ़ी नहीं है कि इस अमान के पर्दे में तुम्हारा मक़सद क्या है। जब मन्सूर का यह हरबा कारगर साबित न हुआ तो उसने ईसा इब्ने मूसा को चार हज़ार सवार और दो हज़ार पियादों का एक लश्कर दे कर मुक़ाबले के लिये रवाना किया। उस लश्कर ने मदीने पहुंच कर शहर का मुहासरा कर लिया और चारों तरफ़ से रसद रसानी के रास्ते बन्द कर दिये। मदीने के सूरमाओं ने जब चमकती हुई तलवारें देखीं तो सख़्त हरासां हुए, और इन्क़ेलाब आफ़रीन जज़बात जिस तेज़ी से उभरे थे उसी तेज़ी से दब गये। बैअत का रिश्ता फिर से जोड़ लिया और हुकूमत के सामने सर झुका दिये। हज़ारों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में सिर्फ़ तीन सौ सोलह आदमी मोहम्मद के हमराह रह गये जिन्होंने गुस्ल किया। जिस्मों पर हुनूत मला, सरों पर कफ़न बांधे और जान देने पर आमादा हो गये। इस मुख़्तसर सी फ़ौज ने अभी क़दम उठाया ही था कि ईसा ने कोहे सलअ पर से ललकार कर मोहम्मद को कहा ऐ मोहम्मद! तुम हथियार रख दो तुम्हारे लिये अमान है। मोहम्मद ने कहा कि न तुम्हारे वादे का कोई एतबार है और न उसका वादा जो तख़्ते इमारत पर मुतमक्किन है, और हो भी तो हम हमेशा इज़्ज़त की मौत को ज़िल्लत की ज़िन्दगी पर तरजीह देते रहे हैं। अब इस आर को कैसे गवारा कर सकते हैं। हम एक एक करके मर जायेंगे। मगर अपने ख़ानदानी दस्तूर के ख़िलाफ़ नहीं करेंगे, और यह कह कर तलवार नियाम से निकाल ली, और मुट्ठी भर फ़ौज के साथ हमला कर दिया, और इस तरह जी तोड़ कर लड़े कि तीन मर्तबा दुश्मन को अपनी जगह छोड़ने पर मजबूर कर दिया। दुश्मन के एक सिपह सालार हमीद इब्ने क़हतबा ने देखा कि इस तरह जीतना मुश्किल है; उसने ख़ंदक़ की तरफ़ से बढ़ना चाहा। मोहम्मद के हमराहियों ने तीर कमानों में जोड़ लिये और दुश्मन का रास्ता रोकने के लिये खड़े हो गये। मगर उनकी यह कोशिश कामयाब न हुई और वह ख़ंदक़ को उबूर करके आगे बढ़ आया और दस्त बदस्त जंग शुरू हो गयी। ईसा ने अपनी पूरी फ़ौज को एक दम हमला करने का हुक्म दे दिया। मोहम्मद की फ़ौज ने तलवारों के नियाम तोड़ डाले और ऐसा शदीद हमला किया कि ईसा की फ़ौज शिकस्त खा कर पीछे हट गयी, लेकिन यह पीछे हटना एक दूसरे हमले का पेश ख़ेमा था; चुंनान्चे उसने दूसरी तरफ़ से फिर हमला कर दिया यह हमला इतना शदीद था कि यह मुख़्तसर सी फ़ौज बेदस्त व पा हो कर रह गयी, और एक एक करके सब मौत के घाट उतर गये। हमीद इब्ने क़हतबा ने मोहम्मद के सीने पर नैज़ा मारा और उन्हें शहीद कर दिया और सर को क़ता करके मन्सूर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

के पास रवाना कर दिया जो कूफ़े में नसब किया गया, और मुख़्तलिफ़ शहरों में फिराया गया, और लाश को उनकी हमशीरा ज़ैनब और दुख़्तर फ़ातेमा ने मिल कर उठाया और जन्नतुल बक़ी में दफ़्न कर दिया। यह वाक़िया 15 माहे रमज़ान रोज़े दोशम्बा सन् 145 हि0 में पेश आया। उस वक़्त मोहम्मद की उम्र सिर्फ़ 45 बरस की थी।

इधर मोहम्मद का तो यह अन्जाम हुआ उस तरफ़ उन्होंने अपने भाई इब्राहीम को बसरा रवाना कर दिया था ताकि वहां की फ़िज़ा हमवार करें और जब हालात साज़गार हों तो ख़ुरूज कर दें। अभी उन्होंने कोई क़दम नहीं उठाया था कि मोहम्मद और उनके तमाम हमराहियों के क़त्ल की ख़बर आ गयी। आपने बग़ैर किसी ताख़ीर के कुछ फ़ौज फ़राहम की और यकुम शव्वाल सन् 145 हि0 को ख़ुरूज कर दिया। मन्सूर को इसकी इत्तिला हुई तो वह बहुत सटपटाया और यह अहद किया कि जब तक इब्राहीम को ठिकाने नहीं लगा लेगा बिस्तर पर आराम नहीं करेगा और न ऐश व तनअम से कोई सरोकार रखेगा। अगरचे उसकी फ़ौजें मुख़्तलिफ़ मुहाज़ों पर लड़ रही थीं और शाम, अफ़्रीक़ा और ख़ुरासान ऐसे दूर दराज़ मक़ामात पर फैली हुई थीं। फिर भी उसने एक फ़ौज तरतीब दी और ईसा इब्ने मूसा की ज़ेरे क़यादत उसे इब्राहीम के तआक़ुब में रवाना कर दिया। इब्राहीम ने अभी महाज़े जंग के लिये कुछ तय न किया था कि अहले कूफ़ा एक जमाअत उनके पास आई और उनसे अर्ज़ किया कि आप यहां से कूफ़ा तशरीफ़ ले चलिये वहां एक लाख जांबाज़ आपके परचम के नीचे जमा हैं। इब्राहीम अहले बसरा के रोकने के बावजूद आमादा हो गये और अपनी फ़ौज को यकजा करके कूफ़े की तरफ़ चल पड़े। अभी कूफ़ा तक़रीबन पचास मील के फ़ासले पर होगा कि मक़ामे बाख़मरी में ईसा के लश्कर से 'मुडभेड़' हो गयी। अब न आगे बढ़ने की कोई सूरत रही और न पीछे पलटने की वहीं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर टकराव शुरू हो गया। तलवारें बेनियाम होकर निकल आयीं तीर अन्दाज़ों ने कमानें सीधी कीं और देखते ही देखते जंग के शोले भड़कने लगे। इब्राहीम की फ़ौज ने इस तरह बढ़ बढ़ के हमले किये कि फ़ौजे मुख़ालिफ़ के क़दम उखड़ गये और वह मैदान छोड़ कर कूफ़े की हुदूद को छूने लगे। ईसा के हमराह सिर्फ़ सौ आदमी रह गये, और क़रीब था कि फ़ौज का एक रेला उन्हें भी बहा ले जाये कि इब्राहीम ने मैदाने जंग की कठिन और गर्मी व तपिश से घबरा कर बन्दे क़बा खोल दिये और सीने के ऊपर से पैराहन उठा लिया। एक तीर अन्दाज़ ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए आपके हलक़ पर एक ऐसा कारी तीर लगाया कि आपने बेदम होकर घोड़े की गर्दन में बाहें डाल दीं। और जब सम्भला न जा सका तो ज़मीन पर गिर पड़े और दम तोड़ दिया। उनके दम तोड़ते ही जंग का पूरा नक़्शा बदल गया। हारी हुई फ़ौज फ़ातेह बन गयी, मुरझाये हुए चेहरे शादाब हो गये, और शादाब चेहरे मुरझा गये। ईसा ने उनके सरको क़ता करके मन्सूर के पास रवाना कर दिया। उसने पहले तो उसे कूफ़े में आवेज़ां किया और फिर रबी के हाथ उनके वालिद अब्दुल्लाह अलमहज़ के पास भेज दिया। जब रबी उनका सर ले कर ज़िन्दान में दाख़िल हुआ तो देखा कि अब्दुल्लाह मुसल्लाए इबादत पर खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो वह सर उनके सामने पेश किया गया। आपने अपने फ़रज़न्द के सरे बुरीदा को सीने से लगाया और फ़रमाया (तरजमा) "ऐ इब्राहीम ऐ मेरी आंखों की ठण्डक मरहबा। बेशक तूने अल्लाह तआला के अहदो पैमान को पूरा किया"। उसके बाद रबी से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया कि मंसूर से बस इतना कहना कि हमारी मुसीबतों के दिन ख़त्म हो गये। तुम थोड़े दिन और ऐश व इशरत की ज़िन्दगी बसर कर लो, और याद रखो कि तुम्हें भी एक दिन मरना है। अब हमारी और तुम्हारी मुलाक़ात अल्लाह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तआला की मअदलतगाह में होगी और वही हमारा और तुम्हारा फ़ैसला करेगा।

इब्राहीम की शहादत का वाक़िया रोज़े दोशम्बा माह ज़िलहिज सन् 145 हि0 में पेश आया। उस वक़्त आपकी उम्र अड़तालीस बरस की थी।

इस मक़ाम पर यह सवाल पैदा होता है कि यह इक़्दामात दिफ़ाई हैसियत रखते थे कि उनके बग़ैर जान व माल व नामूस का तहफ़्फ़ुज़ मुम्किन ही न था, या जारहाना हैसियत रखते थे और मक़सद अमने आलम को ख़ाक में मिलाकर ज़ाती नफ़ूज़ व इक़्तेदार हासिल करना था या सही इस्लामी हुकूमत के क़याम, हुदूदे इलाहिया के अजरा और अम्र बिलमारूफ़ व नही अनिल मुन्कर के सिलसिले में थे, और इस सूरत में वह इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की इजाज़त से थे या अज़ख़ुद। अगर अज़ख़ुद थे तो इमाम अलैहिस्सलाम इन इक़दामात पर ख़ुश थे या नाराज़ कि उनकी इजाज़त व रिज़ामन्दी की सूरत में मज़हबी हैसियत से यह इक़्दामात सही समझे जायें वरना ग़लत। ज़रूरत है कि वाक़िआत को अक़ीदत के धुंधलिकों से बचा कर उन तमाम गोशों का एक इजमाई जाएज़ा लिया जाये ताकि उन शख़्सियतों का सही मौक़ूफ़ मालूम हो सके। जनाबे ज़ैद के बारे में लिखा जा चुका है कि वह इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम के एक जलीलुल क़द्र फ़रज़न्द थे और इस निस्बती रिफ़अत के साथ इल्म व अमल की बुलन्दियों पर भी फ़ायज़ थे, लेकिन एक वक़्त वह आता है कि हालात उन्हें मजबूर कर देते हैं कि हश्शाम इब्ने अब्दुल मलिक के सामने उसके आमिल ख़ालिद इब्ने अब्दुल मलिक की शिकायत पेश करें। मगर नख़ूते शाही उन्हें दरबार में हुज़ूरी की इजाज़त नहीं देती, और पैहम इसरार के बाद मौक़ा दिया जाता है तो उस वक़्त जब दरबार हाशिया नशीनों और उमवी कारिन्दों से खचाखच भरा हुआ था ताकि न उन्हें बैठने को जगह मिले और न खड़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होने को, और लौंडी बच्चा इस क़िस्म के दूसरे नाशाइस्ता अल्फ़ाज़ से उनकी तौहीन व तज़लील की जाती है, और फिर शिकायत का अज़ाला तो दरकिनार उसका सुनना भी गवारा नहीं किया जाता और ज़िल्लत के साथ बाहर निकाल दिया जाता है। इस तर्ज़े अमल ने उन्हें मजबूर किया कि वह घर का गोशा छोड़ कर इस तौहीन और उमवी इक़्तेदार के इन मज़ालिम का बदला लें जो उनके दादा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके ख़ानदान के दूसरे अफ़राद पर किये गये थे, और हरक़ली व क़ैसरी निज़ाम को ख़त्म करके इक़्तेदार को उसके सही मरकज़ पर क़ायम करें। इस तहरीक को कामयाब बनाने के लिये बज़ाहिर असबाब भी मोहय्या हो गये थे इस तरह कि मदाइन, बसरा, वास्त मौसिल, ख़ुरासान, जरजान और जज़ीरा के बाशिन्दों के अलावा सिर्फ़ कूफ़े के पन्द्रह हज़ार आदमियों ने उनके हाथ पर बैअत करके अपनी मदद का यक़ीन दिला दिया। अब सिर्फ़ इमाम अलैहिस्सलाम की इजाज़त की ज़रूरत थी। चुनांचे आप ने इमाम अलैहिस्सलाम से ख़ुरूज के मुतअल्लिक़ इस्तेफ़सार किया तो हज़रत ने फ़रमाया :–

(तरजमा) "ऐ चचा अगर आप इस पर राज़ी हैं कि कुनासए कूफ़ा में क़त्ल किये जायें और सूली दिये जायें तो फिर जैसे आपकी मर्ज़ी।"

इससे अगरचे वाज़ेह तौर पर इजाज़त ज़ाहिर नहीं होती मगर रिज़ामन्दी का पता ज़रूर चलता है और इसके साथ उन्हें अन्जाम से भी मुत्तला कर दिया है और यह रज़ामन्दी के मनाफ़ी नहीं है। इस रिज़ाए इमाम[अ०] के सिलसिले में अल्लामा मामग़ानी ने तन्क़ीहुल मक़ाल में तहरीर किया है :–

(तरजमा) "यह रिज़ामन्दी ज़ैद के बारे में तो सही है, और इसकी दलील हमारे असहाब का इज्माअ और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वह अहादीस हैं जो हदे इस्तेफ़ाज़ा बल्कि क़रीब क़रीब हदे तवातिर तक पहुंची हुई हैं।"

और शहीद अलैहिर्रहमा ने क़वाएद में अम्र बिलमारूफ़ व नही अनिल मुन्कर के तहत इसकी तसरीह की है कि जनाबे ज़ैद का ख़ुरूज इमाम अलैहिस्सलाम के इज़्न से था"। और जनाबे ज़ैद की मसलेहत अन्देशी थी कि उन्होंने इस इज़्न को मग़फ़ी रखने की कोशिश की ताकि उस ज़मानए इन्क़ेलाब व दौरे पुरफ़तन में इमाम अलैहिस्सलाम को कोई गज़न्द न पहुंचे। तो अब कोई वजह नहीं कि जनाबे ज़ैद के इक़्दाम को ग़लत और जेहादे इस्लामी के हुदूद से ख़ारिज तसव्वुर किया जाये। अब रहे जनाबे यहिया, तो वह अगरचे फ़िर्के ज़ैदिया के नज़दीक ज़ैदी मसलक और ब–सिलसिलए इमामत अपने पदरे गिरामी के जॉनशीन तसव्वुर किये जाते हैं इस लिये कि ज़ैद के नज़दीक इमाम के लिये सिर्फ़ दो बातों का होना ज़रूरी है। एक यह कि फ़ातमी[अ०] हो ख़्वाह इमाम हसन[अ०] की औलाद में से हो या इमाम हुसैन[अ०] की औलाद में से, और दूसरे यह कि वह ख़ुरूज व मारका आराई करे, और यह दोनों बातें जनाबे यहिया में जमा थीं, लेकिन हक़ीक़त यह है कि उन्हें फ़िर्क़ए ज़ैदिया से कोई तअल्लुक़ न था बल्कि वह आइम्मए असना अशर की इमामत के क़ायल थे। चुनान्चे किताब मुक़तज़िबुल असर से साहबे तन्क़ीहुल मक़ाल ने यह रिवायत नक़्ल की है:–

(तरजमा) "यहिया कहते हैं कि मैंने अपने वालिद ज़ैद बिन अली से आइम्मा[अ०] के मुतअल्लिक़ सवाल किया उन्होंने फ़रमाया आइम्मा[अ०] बारह हैं चार गुज़र चुके और आठ बाक़ी हैं। मैंने पूछा उनके नाम क्या क्या हैं? फ़रमाया जो गुज़र गये वह अली[अ०] इब्ने अबीतालिब, हसन[अ०], हुसैन[अ०] और अली[अ०] इब्नुल हुसैन[अ०]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हैं, और जो बाक़ी हैं उनमें से एक मेरे भाई मोहम्मद बाक़िर[अ०] हैं और उनके बाद उनके फ़रज़न्द जाफ़रे सादिक़[अ०] और उनके बाद मूसा इब्ने जाफ़र[अ०] और उनके बाद अली[अ०] इब्ने मूसा[अ०] और उनके बाद मोहम्मद[अ०] इब्ने अली[अ०] इब्ने मोहम्मद[अ०] और उनके बाद हसन[अ०] इब्ने अली[अ०] और उनके बाद उनके फ़रज़न्द हज़रत मेहदी अलैहिस्सलाम हैं। मैंने कहा बाबा क्या आप उनमें से नहीं हैं? फ़रमाया मैं नहीं हूं। मैंने अर्ज़ किया यह नाम आपको किस ज़रिये से मालूम हुए? फ़रमाया यह एक सिलसिला ब सिलसिला अहद की सूरत में रसूल उल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम से हम तक पहुंचे हैं।''

इस रिवायत से जहां जनाबे ज़ैद के अक़ाएद पर रौशनी पड़ती है वहां जनाबे यहिया के मुतअल्लिक़ भी वाज़ेह हो जाता है कि वह इमामत के सिलसिले में क्या अक़ीदा रखते थे इस लिये कि यह अम्र निहायत मुस्तबअद है कि वह एक रिवायत अपने पदरे गिरामी से नक़्ल करें और बग़ैर किसी रद्द व क़दह के उसे बयान फ़रमायें और ख़ुद उसके मुतअक़िद न हों। या जनाबे ज़ैद के इस इक़रार के बावजूद कि वह इमाम नहीं हैं उनकी इमामत के क़ायल हो कर फ़िर्क़ए ज़ैदिया के हमनवा हो जायें और उनके जेहाद बिस्सैफ़ से उनके ज़ैदी मसलक होने पर इशतेहाद भी सही नहीं है इस लिये कि हो सकता है कि उन्होंने अपने पदरे गिरामी के इन्तेक़ाम या हेफ़्ज़े जान के लिये जंग की हो या एलानिया फ़िस्क़ व फ़ुजूर को परवान चढ़ते और ज़ुल्म व इस्तेबदाद को फ़रोग़ पाते देख कर यह नज़रिया क़ायम किया हो कि यह तलवार के साथ अम्र बिलमारूफ़ व नही अनिल मुन्कर का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मौरूद है और इसमें फ़िर्क़ए ज़ैदिया के मोअतक़ेदात दख़ील न हों। बहरहाल उनके जेहाद बिस्सैफ़ की नौईयत के मुतअल्लिक़ एक राय नहीं क़ायम की जा सकती और उनका यह इक़दाम कितने भी हक़ बजानिब शिकायात का नतीजा हो कोई इस्तेनाद ख़ास नहीं रखता। अलबत्ता इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का उनके हक़ में दुआये ख़ैर करना, और यह फ़रमाना "ख़ुदा रहमत करे मेरे इब्ने अम पर और उन्हें उनके आबाओ अजदाद के साथ साथ रखे।" उनके हुस्ने अन्जाम से काशिफ़ है।

मोहम्मद व इब्राहीम के ख़ुरूज का पसमंज़र यह है कि जब उमूवी इक़्तिदार अपने जब्रो तशद्दुद और ज़ुल्म व इस्तबदाद के नतीजे में चिराग़े सहरी की तरह टिमटिमाने लगा और मुल्क में बग़ावत के आसार नमूदार हुए तो मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह अलमहज़ के हाथ पर बैयत कर ली गयी और यह अमरे यक़ीनी तसव्वुर किया जाने लगा कि बनी उमय्या का तख़्ता उलटते ही इक़्तिदार की बाग डोर औलादे अली[अ०] के हाथ में आ जायेगी। मगर सियासत ने अपना काम किया और इक़्तिदार औलादे अली[अ०] के बजाये बनी अब्बास की तरफ़ मुन्तक़िल हो गया जिसका नतीजा यह हुआ कि उन दोनों में खटक गयी। सफ़्फ़ाह ने अपनी हिक्मते अमली से काम ले कर अब्दुल्लाह अलमहज़ का मुंह अपनी दादो दहश से बन्द कर दिया और शुरू शुरू में मोहम्मद व इब्राहीम के मुतअल्लिक़ कुछ पूछ गछ की। मगर बाद में बिल्कुल सुकूत अख़्तियार कर लिया। सफ़्फ़ाह के बाद जब मन्सूर तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतमकिन हुआ तो उसके दिल में वह बैअत खटकने लगी जो उसने मोहम्मद के हाथ पर की थी। उसने चाहा कि जिस तरह हो सके मोहम्मद और इब्राहीम का ख़ात्मा कर दे ताकि यह ख़लिश मिट जाये। वरना मन्सूर को मोहम्मद व इब्राहीम की तलाश व जुस्तुजू की इतनी ज़रूरत ही क्या थी। इसके अलावा उसे इस ख़तरे का भी पूरी तरह एहसास

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

था कि वह किसी न किसी वक़्त शोला ज्वाला बन कर भड़क सकते हैं और पूरे मुल्क में आग लगा दे सकते हैं। इस ख़दशे के पेशे नज़र उसने तमाम बनी हसन[अ०] को गिरफ़्तार कर लिया ताकि उनके ज़रिये मोहम्मद व इब्राहीम का कुछ खोज निकल सके मगर वह दोनों इस तरह रूपोश रहे कि हुकूमत उन तक दस्तरस हासिल न कर सकी, लेकिन वह कब तक हुकूमत के पन्जए इस्तेबदाद से महफ़ूज़ और नज़रों से ओझल रह सकते थे। आख़िर उन्होंने ख़ुरूज का तहय्या कर लिया। इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम जो रूहानी सल्तनत के ताजदार और इल्मे नबूवत के ख़ज़ीनादार थे उन्होंने मोहम्मद के वालिद अब्दुल्लाह अलमहज़ को समझाया बुझाया और मोहम्मद को ख़ुरूज से मना किया और उसके अन्जाम से डराया। मगर उनकी मनचली तबिअत न मानी और गिनती के चन्द आदमियों के साथ हुकूमत से टक्कर लेने बरामद हो गये; और नतीजा वही हुआ जिसका ज़िक्र हज़रत ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम के इस इरशाद में है :—

> "ख़ुदा की क़सम ज़हूरे क़ायम[अ०] से पहले हममें से जो ख़ुरूज करेगा उसकी मिसाल उस परिन्दे की सी है जिसके बाल व पर पूरी तरह मुस्तहकम न हुए हों और वह घोंसले से उड़ खड़ा हो और बच्चे उसे पकड़ लें और जिस तरह चाहें उसे नोचें घसीटें।"

इस सिलसिले में जो चीज़ खटकती है वह यह कि यह इक़्दाम बिला शुबह इमाम अलैहिस्सलाम की रिज़ामन्दी के ख़िलाफ़ था और मुख़्तलिफ़ मवारिद पर उनके हुक्म से सरताबी की गयी जिसके बाद इस जंग की दीनी व मज़हबी हैसियत ख़त्म हो जाती है। मगर बा ईं हमा बईद नहीं कि इमाम अलैहिस्सलाम चश्मपोशी फ़रमायें और ख़ुदा वन्दे आलम उनकी मज़लूमियत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व बेचारगी के पेशे नज़र उनसे दरगुज़र फ़रमाये। इन शोहदा पर मुख़्तलिफ़ शोहदा ने मर्सिये कहे और देअबल ख़ज़ाई ने अपने मशहूर क़सीदए नाएया में उनका भी ज़िक्र किया है उनमें से चन्द शेर यह हैं :

"ऐ फ़ातेमा^स० ऐ पैग़म्बर^स० की बरगुज़ीदा बेटी उठिये और बयाबान में बिखरे हुए आसमान के तारों की सफ़े मातम बिछाइये
कुछ क़बरें कूफ़े में हैं कुछ मदीने में और कुछ मक्के के नज़दीक मक़ाम फख़ में उन क़ब्रों पर मेरा सलाम हो
और कुछ सर ज़मीने जोज़जान में वाक़े हैं और कुछ ग़रबात के पास मक़ामे बाख़मरी में
मेरे आंसूओं का सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक हाजी हज के लिये सफ़र करते रहेंगे और कुमरियां दरख़्तों पर नौहाख़्वानी करती रहेंगी"।

(3) आयते कुरआनी में शजरए मलऊन से मुराद बनी उमय्या हैं। सादिक़^अ० आले मोहम्मद^स० की रवायत के अलावा मोतअद्दिद मुफ़स्सेरीन ने इसका ज़िक्र किया है चुनान्चे इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी ने तहरीर किया है:–

"हज़रत इब्ने अब्बास से वारिद हुआ है कि कुरआन मजीद में शजरए मलऊना से मुराद बनी उमय्या हैं।"

और इसकी ताईद में हज़रत आयशा का यह क़ौल नक़्ल किया है कि उन्होंने मरवान से ख़िताब करके फ़रमाया "ख़ुदा ने तेरे बाप हकम पर लअनत की जबकि तू भी उसकी सुल्ब में था। लेहाज़ा तू भी वह है जिस पर अल्लाह ने लअनत की है।" इसी तरह तफ़सीर इब्ने जज़ीर तफ़सीर दुरे मंशूर, शरह इब्ने अबिल हदीद, तारीख़े ख़तीब बग़दादी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वग़ैरा में ज़िक्र है और यह एक नाक़ाबिले इन्कार हक़ीक़त है कि इस शजर के ज़ेरे साया नफ़सानियत व ख़्वाहिश परस्ती ने मंज़िल की, इसकी शाख़ों में फ़िस्क़ व बदकिरदारी ने अपना आशियाना बनाया, और इसके मसमूम फलों ने इस्लाम के काम व दहन को तलख़ कर दिया। इस दौर ने अख़लाक़ी इक़्तिदार यकसर ख़तम कर दिये। हक़ तलबी को जुर्म क़रार दे कर आज़ादिए राय को सल्ब कर लिया और अपने इक़्तिदार के तहफ़्फ़ुज़ के लिये अहलेबैते रसूल[स०] और उनके दोस्तों पर अर्सए हयात तंग कर दिया और उम्मत के लिये बलाये जान बन गये। चुनानचे अमीरूल मोमेनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम का इरशाद है "हर उम्मत के लिये एक आफ़त होती है और इस उम्मत के लिये बनी उमय्या आफ़त हैं।" चुनानचे सैंकड़ों नहीं हज़ारों इस्लाम की क़ीमती शख़्सियतें उनकी तेग़े ज़ुल्म की नज़्र होई, बेशुमार शहीदों की मुक़द्दस लाशें आग में जलाई और दौरे जाहलियत की रस्में फिर से ज़िन्दा कर दी गयीं। आख़िर इस ज़ुल्म व सफ़्फ़ाकी के नतीजे में इस मशऊम दौर पर ज़वाल आया और तेरासी साल चार महीने जो हज़ार महीनों के बराबर होते हैं हुकूमत करने के बाद सफ़हए आलम से हर्फ़े ग़लत की तरह हट गये।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अस् सहीफ़तुल कामेलतुस् सज्जादिया

जब आप दुआ मांगते तो उसकी इब्तिदा खुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की हम्दो सताएश से फ़रमाते इस सिलसिले में फ़रमाया

(तरजमा) "सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिये जो ऐसा अव्वल है जिसके पहले कोई अव्वल न था और ऐसा आख़िर है जिसके बाद कोई आख़िर न होगा। वह ख़ुदा जिसके देखने से देखने वालों की आंखें आजिज़ और जिसकी तौसीफ़ व सना से वस्फ़ बयान करने वालों की अक्लें क़ासिर हैं। उसने कायनात को अपनी कुदरत से पैदा किया, और अपने मन्शाए अज़ली से जैसा चाहा उन्हें ईजाद किया। फिर उन्हें अपने इरादे के रास्ते पर चलाया और अपनी मोहब्बत की राह पर उभारा। जिन हुदूद की तरफ़ उन्हें आगे बढ़ाया है उनसे पीछे रहना और जिनसे पीछे रखा है उनसे आगे बढ़ना उनके क़ब्ज़े व अख़्तियार से बाहर है। उसी ने हर (ज़ी) रूह के लिये अपने (पैदा करदा) रिज़्क़ में से मोअय्यन व मालूम रोज़ी मुक़र्रर कर दी है जिसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़्यादा दिया है उसे कोई घटाने वाला घटा नहीं सकता और जिसे कम दिया है उसे कोई बढ़ाने वाला बढ़ा नहीं सकता। फिर यह कि उसने उसकी ज़िन्दगी का एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और एक मोअय्यना मुद्दत उसके लिये ठहरा दी। जिस मुद्दत की तरफ़ वह अपनी ज़िन्दगी के दिनों से बढ़ता और अपने ज़मानए ज़ीस्त के सालों से उसके नज़दीक होता है यहां तक कि जब ज़िन्दगी की इन्तेहा को पहुंच जाता है और अपनी उम्र का हिसाब पूरा कर लेता है तो अल्लाह उसे अपने सवाबे बेपायां तक जिसकी तरफ़ उसे बुलाया था या ख़ौफ़नाक अज़ाब की जानिब जिसे बयान कर दिया था क़ब्ज़े रूह के बाद पहुंचा देता है ताकि अपने अदल की बिना पर बुरों को उनकी बदआमालियों की सज़ा और नेकूकारों को अच्छा बदला दे। उसके नाम पाकीज़ा और उसकी नेअमतों का सिलसिला लगातार है। वह जो करता है उसकी पूछ–गछ उससे नहीं हो सकती और लोगों से बहरहाल बाज़पुर्स होगी।

तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये हैं कि अगर वह अपने बन्दों को हम्दो शुक्र की मआरफ़त से महरूम रखता उन पैहम अतीय्यों पर जो उसने दिये हैं और उन पै दर पै नेअमतों पर जो उसने फ़रावानी से बख़्शी हैं तो वह उसकी नेअमतों में तसर्रुफ़ तो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करते मगर उसकी हम्द न करते, और उसके रिज़्क़ में फ़ारिग़ुलबाली से बसर तो करते मगर उसका शुक्र बजा न लाते, और ऐसे होते तो इन्सानियत की हदों से निकल कर चौपायों की हद में आ जाते, और उस तौसीफ़ के मिस्दाक़ होते जो उसने अपनी मोहकम किताब में की है कि वह तो बस चौपायों के मानिन्द हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा राहेरास्त से भटके हुए।''

तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिये हैं कि उसने अपनी ज़ात को हमें पहचनवाया और हम्दो शुक्र का तरीक़ा समझाया और अपनी परवर दिगारी पर इल्म व इत्तिला के दरवाज़े हमारे लिये खोल दिये और तौहीद में तंज़िया व इख़लास की तरफ़ हमारी रहनुमाई की और अपने मामले में शिर्क व कजरवी से हमें बचाया। ऐसी हम्द जिसके ज़रिये हम उसकी मख़लूक़ात में से हम्द गुज़ारों में ज़िन्दगी बसर करें और उसकी ख़ुशनूदी व बख़्शिश की तरफ़ बढ़ने वालों से सबक़त ले जायें ऐसी हम्द जिसकी बदौलत हमारे लिये बरज़ख़ की तारीकियां छट जायें और जो हमारे लिये क़यामत की राहों को आसान कर दे और हश्र के मजमए आम में हमारी क़द्रो मन्ज़िलत को बुलन्द कर दे जिस दिन हर एक को उसके किये का बदला दिया जायेगा और उन पर किसी तरह का ज़ुल्म न होगा। जिस दिन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आयेगा और न उनकी मदद की जायेगी। ऐसी हम्द जो एक लिखी हुई किताब में है जिसकी मोक़र्रब फ़रिश्ते निगेहदाश्त करते हैं हमारी तरफ़ से बेहिश्त बरीं के बुलन्द तरीन दरजात तक बुलन्द हो। ऐसी हम्द जिससे हमारी आंखों में ठण्डक आये जबकि तमाम आंखें हैरत व दहशत से फटी की फटी रह जायेंगी, और हमारे चेहरे रौशन व दरख़शां हों जबकि तमाम चेहरे सियाह होंगे। ऐसी हम्द जिसके ज़रिये हम अल्लाह तआला की भड़काई हुई अज़ीयतदेह आग से आज़ादी पाकर उसके जवारे रहमत में आ जायें। ऐसी हम्द जिसके ज़रिये हम उसके मोक़र्रब फ़रिश्तों के साथ शाना बशाना बढ़ते हुए टकरायें और उस मन्ज़िले जावेद व मक़ामे इज़्ज़त व रफ़अत में जिसे तग़य्युर व ज़वाल नहीं उसके फ़रस्तादा पैग़म्बरों के साथ यकजा हों।

तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये जिसने ख़िलक़त व आफ़रिनिश की तमाम ख़ूबियां हमारे लिये मुन्तख़ब कीं और पाक व पाकीज़ा रिज़्क का सिलसिला हमारे लिये जारी किया और हमें ग़लबा व तसल्लुत दे कर तमाम मख़लूक़ात पर बरतरी अता की चुनान्चे तमाम कायनात उसकी कुदरत से हमारे ज़ेरे फ़रमान और उसकी कूव्वत व सरबलन्दी की बदौलत हमारी एताअत पर आमादा है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने अपने सिवा तलब व हाजत का हर दरवाज़ा हमारे लिये बन्द कर दिया तो हम (उस हाजत व एहतियाज के होते हुए) कैसे उसकी हम्द से ओहदाबरा हो सकते हैं और कब उसका शुक्र अदा कर सकते हैं। नहीं! किसी वक़्त भी उसका शुक्र अदा नहीं हो सकता। तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने हमारे (जिस्मों में) फैलने वाले आसाब और सिमटने वाले अज़लात तरतीब दिये और ज़िन्दगी की असाइशों से बहरामन्द किया और कारोकसब के आज़ा हमारे अन्दर वदिअत फ़रमाए और पाक व पाकीज़ा रोज़ी से हमारी परवरिश की और अपने फ़ज़ल व करम के ज़रिये हमें बेनयाज़ कर दिया और अपने लुत्फ़ व एहसान से हमें (नेअमतों का) सरमाया बख़्शा। फिर उसने अपने अवामिर की पैरवी का हुक्म दिया ताकि फ़रमांबरदारी में हमको आज़माए और नवाही के इरतेकाब से मना किया ताकि हमारे शुक्र को जांचे मगर हमने उसके हुक्म की राह से इन्हेराफ़ किया और नवाही के मरकब पर सवार हो लिये। फिर भी उसने अज़ाब में जल्दी नहीं की, और सज़ा देने में तअजील से काम नहीं लिया बल्कि अपने करम व रहमत से हमारे साथ नरमी का बर्ताव किया और हिल्म व राफ़्त से हमारे बाज़ आ जाने का मुन्तज़िर रहा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने हमें तौबा की राह बताई कि जिसे हमने सिर्फ़ उसके फ़ज़ल व करम की बदौलत हासिल किया है। तो अगर हम उसकी बख़्शिशों में से इस तौबा के सिवा और कोई नेअमत शुमार में न लायें तो यही तौबा हमारे हक़ में उसका उम्दा इनाम, बड़ा एहसान और अज़ीम फ़ज़ल है इस लिये कि हमसे पहले लोगों के लिये तौबा के बारे में उसका यह रवय्या न था। उसने तो जिस चीज़ के बर्दाश्त करने की हमें ताक़त नहीं है वह हमसे हटा ली है और हमारी ताक़त से बढ़ कर हम पर ज़िम्मेदारी आयद नहीं की और सिर्फ़ सहल व आसान चीज़ों की हमें तक्लीफ़ दी है और हममें से किसी एक के लिये हील व हुज्जत की गुंजाइश नहीं रहने दी। लेहाज़ा वही तबाह होने वाला है जो उसकी मन्शा के ख़िलाफ़ अपनी तबाही का सामान करे और वही ख़ुश नसीब है जो उसकी तरफ़ तवज्जोह व रग़बत करे।

अल्लाह के लिये हम्द व सताइश है हर वह हम्द जो उसके मुक़र्रब फ़रिश्ते बुज़ुर्ग तरीन मख़लूक़ात और पसन्दीदा हम्द करने वाले बजा लाते हैं। ऐसी सताइश जो दूसरी सताइशों से बढ़ी चढ़ी हुई हो जिस तरह हमारा परवर दिगार तमाम मख़लूक़ात से बढा हुआ है। फिर उसी के लिये हम्दो सना है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उसकी हर हर नेअमत के बदले में जो उसने हमें और तमाम गुज़िश्ता व बाक़ी मान्दा बन्दों को बख़्शी है उन तमाम चीज़ों के शुमार के बराबर जिन पर उसका इल्म हावी है और हर नेअमत के मुक़ाबले में दोगुनी चौगुनी जो क़यामत के दिन तक दाएमी व अबदी हो। ऐसी हम्द जिसका कोई आख़री किनार और जिसकी गिनती का कोई शुमार न हो। जिसकी हुदूद निहायत दस्तरस से बाहर और जिसकी मुद्दत ग़ैर मुख़ततिम हो। ऐसी हम्द जो उसकी एताअत व बख़्शिश का वसीला, उसकी रिज़ामन्दी का सबब, उसकी मग़फ़ेरत का ज़रिया, जन्नत का रास्ता, उसके अज़ाब से पनाह, उसके ग़ज़ब से अमान, उसकी एताअत में मोईन, उसकी मअसियत से माने और उसकी हुक़ूक़ व वाजिबात की अदायगी में मददगार हो। ऐसी हम्द जिसके ज़रिये हम उसके ख़ुश नसीब दोस्तों में शामिल होकर ख़ुश नसीब क़रार पायें और उन शहीदों के ज़मरे में शुमार हों जो उसके दुश्मनों की तलवारों से शहीद हुए। बेशक वही मालिक व मुख़्तार और क़ाबिले सताइश है।''

यह कलमात दुआ का इफ़्तेताहिया हैं जो सताइशे इलाही पर मुश्तमिल हैं। हम्द व सताइश अल्लाह तआला के करम व फ़ैज़ान और बख़्शिश व एहसान के एतराफ़ का एक मुज़ाहिरा है और दुआ से क़ब्ल उसके जूद व करम की फ़रावानियों और एहसान फ़रमाईयों से जो तास्सुर दिल व दिमाग़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर तारी होता है उसका तक़ाज़ा यही है कि ज़बान से उसकी हम्द व सताइश के नग़मे उबल पड़ें जिसने एक तरफ़ "अल्लाह से उसके फ़ज़ल का सवाल करो" कह कर तलब व सवाल का दरवाज़ा खोल दिया और दसूरी तरफ़ "मुझसे दुआ करो मैं कुबूल करूंगा" फ़रमा कर इस्तजाबते दुआ का ज़िम्मा लिया।

इस तमहीद में ख़ुदा वन्दे आलम की वहदत व यकताई, जलाल व अज़मत, अदल दराएफ़त और दूसरे सिफ़ात पर रौशनी डाली गयी है चुनान्चे सरनामए दुआ में ख़ल्लाक़े आलम की तीन अहम सिफ़तों की तरफ़ इशारा किया है जिनमें तंज़िया व तक़दीस के तमाम जौहर सिमट कर जमा हो गये हैं। पहली सिफ़त यह कि वह अव्वल भी है और आख़िर भी, लेकिन ऐसा अव्वल व आख़िर कि न उससे पहले कोई था और न उसके बाद कोई होगा। उसे अव्वल व आख़िर कहने के साथ दूसरों से अव्वलियत व आख़रियत के सल्ब करने के माने यह हैं कि उसकी अव्वलियत व आख़रियत इज़ाफ़ी नहीं बल्कि हक़ीक़ी है यानी वह अज़ली व अबदी है जिसका न कोई नुक़्तए आग़ाज है और न नुक़्तए इख़तेताम। न उसकी इब्तिदा का तसव्वुर हो सकता है और न उसकी इन्तेहा का। न यह कहा जा सकता है कि वह कब से है, और न यह कहा जा सकता है कि वह कब तक है। और जो "कब से" और "कब तक" के हुदूद से बालातर हो उसके लिये एक लम्हा भी ऐसा फ़र्ज़ नहीं किया जा सकता जिसमें वह नीस्ती से हमकिनार रहा हो और जिसके लिये अदम व नीस्ती को तजवीज़ न किया जा सके वह है "वाजिबुल वजूद" जो मबदए अव्वल होने के लिहाज़ से अव्वल और ग़ायत आख़िर होने के लिहाज़ से आख़िर होगा।

दूसरी सिफ़त यह है कि वह आंखों से दिखाई नहीं दे सकता, क्योंकि किसी चीज़ के दिखाई देने के लिये ज़रूरी है कि वह किसी तरफ़ में वाक़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हो, और जब अल्लाह किसी तरफ़ में वाक़े होगा तो दूसरी तरफ़ें उससे ख़ली मानना पड़ेंगी, और ऐसा अक़ीदा क्योंकर दुरूस्त तस्लीम किया जा सकता है जिसके नतीजे में बाज़ जहात को उससे ख़ाली मानना पड़े, और दूसरे यह कि अगर वह किसी तरफ़ में वाक़े होगा तो उस तरफ़ को मोहताज होगा, और चूंकि वह ख़ालिक़े अतराफ़ है इस लिये किसी तरफ़ का मोहताज नहीं हो सकता वरना उसका ख़ालिक़ न रहेगा और तीसरे यह कि जहत में वही चीज़ वाक़े हो सकती है जिस पर हरकत व सुकून तारी हो सकता हो और हरकत व सुकून चूंकि मुम्किन की सिफ़ात हैं इस लिये अल्लाह के लिये उन्हें तजवीज़ नहीं किया जा सकता, और जब वह हरकत व सुकून से बरी और अर्ज़ व जौहरे जिस्मानी की सतह से बुलन्दतर है तो उसके दिखाई देने का सवाल ही पैदा नहीं होता। मगर इसके बावजूद एक जमाअत इसकी रविय्यत की क़ायल है। यह जमाअत तीन मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अक़ाएद के लोगों पर मुश्तमिल है। उनमें से कुछ का अक़ीदा यह है कि उसकी रोइय्यत सिर्फ़ आख़ेरत में होगी। दुनिया में रहते हुए उसे देखा नहीं जा सकता, और कुछ अफ़राद का नज़रिया यह है कि वह आख़ेरत की तरह दुनिया में भी नज़र आ सकता है अगरचे ऐसा कभी हुआ नहीं, और कुछ लोगों का ख़याल यह है कि जिस तरह आख़ेरत में उसकी रोइय्यत होगी उसी तरह दुनिया में भी देखा जा चुका है। पहले गिरोह की दलील यह है कि रोइय्यत का कुरआन व हदीस में सराहतन ज़िक्र है जिसके बाद इन्कार का कोई महल बाक़ी नहीं रहता। चुनान्चे इरशादे बारी है :– "उस दिन बहुत से चेहरे तरोताज़ा व शादाब और अपने परवर दिगार की तरफ़ निगरान होंगे" इससे साफ़ ज़ाहिर है कि वह क़यामत में नज़र आयेगा। और दुनिया में इस लिये नज़र नहीं आ सकता कि यहां हमारे और इदराकात व क़वा कमज़ोर हैं जो तजल्लीए इलाही की ताब नहीं रखते, और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आख़रत में हमारे हिस व शऊर की कुव्वतें तेज़ हो जायेंगी जैसा कि इरशादे इलाही है "हमने तुम्हारे सामने से पर्दे हटा दिये अब तुम्हारी आंखें तेज़ हो गयीं। लेहाज़ा वहां पर रोविय्यत से कोई अम्र माने नहीं हो सकता।"

दूसरे गिरोह की दलील यह है कि अगर दुनिया में उसकी रोविय्यत मुम्किन न होती तो हज़रत मूसा[अ०] "ऐ मेरे परवर दिगार! मुझे अपनी झलक दिखा ताकि मैं तुझे देखूं"। कह कर एक अनहोनी और नामुम्किन बात की ख़्वाहिश न करते, और अल्लाह तआला भी उसे इस्तेक़रारे जबल पर मौक़ूफ़ करके इम्कान रोविय्यत की तरफ़ इशारा कर दिया। इस तरह अगर रोविय्यत मुम्किन न होती, तो उसे पहाड़ के ठहराओ पर कि जो एक अम्र मुम्किन है मौक़ूफ़ न करता। चुनाँचे इरशादे इलाही है "उस पहाड़ की तरफ़ देखो, अगर यह अपनी जगह पर ठहरा रहे तो फिर मुझे भी देख लोगे और अगर इस सिलसिले में तुम मुझे क़तअन् नहीं देख सकते" फ़रमाया तो इससे सिर्फ़ दुनिया में वक़ूअ रोविय्यत की नफ़ी मुराद है न इम्कान रोविय्यत की और न इससे रोविय्यत आख़ेरत की नफ़ी मक़सूद है, क्योंकि जब यह कहा जाये कि ऐसा कभी नहीं होगा। तो उर्फ़े आम में उसके माने यही होते हैं कि दुनिया में ऐसा कभी नहीं होगा। यह मक़सद नहीं होता कि आख़ेरत में भी ऐसा नहीं होगा। चुनाँचे कुरआन मजीद में यहूद के मुतअल्लिक़ इरशाद है कि "वह मौत की कभी तमन्ना नहीं करेंगे"। तो यह तमन्ना की नफ़ी दुनिया के लिये है कि वह दुनिया में रहते हुए मौत के ख़्वाहिशमन्द कभी नहीं होंगे और आख़ेरत में तो वह अज़ाबे जहन्नम से छुटकारा हासिल करने के लिये बहरहाल मौत की तमन्ना व आरज़ू करेंगे। तो जिस तरह यहां पर नफ़ी का तअल्लुक़ सिर्फ़ दुनिया से है उसी तरह वहां भी नफ़ी का तअल्लुक़ सिर्फ़ दुनिया से है न आख़ेरत से।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तीसरे गिरोह की दलील यह है कि जब बयान साबिक़ से दुनिया में इसकी रोविय्यत का इम्कान साबित हो गया तो उसके वक़ूअ के लिये हसन बसरी और अहमद बिन हंबल वग़ैरा का यह क़ौल काफ़ी है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम ने लैलतुल असरा में उसे देखा।

जब इन दलाएल का जाएज़ा लिया जाता है तो वह इन्तेहाई कमज़ोर और असबाते मुद्दआ से क़ासिर नज़र आते हैं। चुनान्चे पहले गिरोह का यह दावा कि कुरआन व हदीस में रोविय्यत के शवाहिद ब–कसरत हैं एक ग़लत और बेबुनियाद दावा है और कुरआन व हदीस से क़तअन् इसका असबात नहीं होता बल्कि कुरआन के वाज़ेह तसरीहात इसके ख़िलाफ़ हैं और कुरआनी तसरीहात के ख़िलाफ़ अगर कोई हदीस होगी भी तो वह मौज़ूअ व मतरूह क़रार पायेगी। चुनांचे कुरआन मजीद में नफ़ी रोविय्यत के सिलसिले में इरशादे इलाही है कि "आंखें उसे देख नहीं सकतीं और वह आंखों को देख रहा है, और वह हर छोटी से छोटी चीज़ से आगाह और बाख़बर है"। और जिस आयत को असबाते रोविय्यत के सिलसिले में पेश किया गया है उसमें लफ़्ज़ नाज़ेरत से रोविय्यत पर इस्तेदलाल सही नहीं है क्योंकि अहले लुग़त ने नज़र के माने इन्तेज़ार, ग़ौर व फ़िक्र, मोहलत, शफ़क़त और इबरत अन्दोज़ी के भी किये हैं और जब एक लफ़्ज़ में और माने का भी एहतमाल हो तो उसे दलील बनाकर पेश नहीं किया जा सकता। चुनांचे कुछ मुफ़स्सेरीन ने इस मक़ाम पर नज़र के माने इन्तेज़ार के लिये हैं और इस माने के लिहाज़ से आयत का मतलब यह है कि वह उस दिन अल्लाह की नेअमतों के मुन्तज़िर होंगे और इस माने की शाहिद यह आयत है "वह मुन्तज़िर थी कि क़ासिद क्या जवाब ले कर पलटते हैं"। और कुछ मुफ़स्सेरीन ने नज़र के माने देखने के किये हैं और इस सूरत में लफ़्ज़ सवाब को यहां मख़दूफ़ माना है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और आयत के माने यह हैं कि वह अपने परवर दिगार के सवाब की जानिब निगरां होंगे। जिस तरह इरशादे इलाही "तुम्हारा परवर दिगार आया"। में लफ़्ज़े अम्र मख़दूफ़ माना गया है और माने यह किये गये हैं कि तुम्हारे परवर दिगार का हुक्म आया, और फिर यह कहां ज़रूरी है कि जहां नज़र सादिक़ आये वहां रोवियत भी सादिक़ आये। चुनानचे अरब का मक़ूला है कि "मैंने चांद की तरफ़ नज़र की मगर देख न सका"। यहां नज़र साबित है मगर रोवियत साबित नहीं है। अब रहा यह कि वह दुनिया में इस लिये नज़र नहीं आ सकता कि यहां इन्सानी अदराकात व क़वा ज़ईफ़ हैं और आख़ेरत में यह अदराकात क़वी हो जायेंगे तो यह दुनिया व आख़ेरत की तफ़रीक़ इस बिना पर तो सही हो सकती है अगर उसकी ज़ात दिखाई दिये जाने के क़ाबिल हो और हमारी निगाहें अपने इज्ज़ व कुसूर की बिना पर क़ासिर रहें, लेकिन जब उसकी ज़ात का तक़ाज़ा ही यह है कि वह दिखाई न दे तो महल व मक़ाम के बदलने से नाक़ाबिले रोवियत ज़ात क़ाबिले रोवियत नहीं क़रार पा सकती, और इस सिलसिले में जो आयत पेश की गयी है उसमें तो यह नहीं है कि इदराकात व हवास के तेज हो जाने से ख़ुदा को भी देखा जा सकेगा बल्कि आयत के माने तो यह हैं कि उस दिन पर्दे हटा दिये जायेंगे और आंखें तेज़ हो जायेंगी। जिसका वाज़ेह मतलब यह है कि वहां पर तमाम शुबहात मिट जायेंगे और आंखों पर पड़े हुए ग़फ़लत के पर्दे उठ जायेंगे, यह माने नहीं कि वह अल्लाह को भी देखने लगेंगे, और अगर ऐसा ही है तो यह ग़फ़लत के पर्दे तो काफ़िरों की आंखों से उठेंगे लेहाज़ा उन्हीं को नज़र आना चाहिये।

दूसरे गिरोह की दलील का जवाब यह है कि हज़रत मूसा[अ०] ने रोवियत बारी की ख़्वाहिश इस लिये नहीं की थी कि वह[अ०] रोवियत को मुम्किन समझते थे और उन्हें इसके नाक़ाबिले रोवियत होने का इल्म न था।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

यक़ीनन् वह जानते थे कि यह इदराके हवास व मुशाहिदए बसरी से बुलन्दतर है तो इस सवाल की नौबत इस लिये आई कि बनी इस्राईल ने कहा कि "ऐ मूसा[अ०] हम उस वक़्त तक ईमान नहीं लायेंगे जब तक ख़ुदा को ज़ाहिर बज़ाहिर न देख लेंगे" तो मूसा अलैहिस्सलाम ने चाहा कि इन पर इनकी बेराहेरवी साबित कर दें और यह वाज़ेह कर दें कि वह कोई दिखाई देने वाली चीज़ नहीं है। इस लिये अल्लाह के सामने उनका सवाल पेश किया ताकि वह अपने सवाल का नतीजा देख लें और इस ग़लत ख़याल से बाज़ आ जायें। चुनांचे ख़ुदा वन्दे आलम का इरशाद है कि "यह लोग तो मूसा[अ०] से इससे भी बड़ा सवाल कर चुके हैं और वह यह कि मूसा[अ०] से कहने लगे कि हमें ख़ुदा को ज़ाहिर बज़ाहिर दिखा दीजिये" जब मूसा[अ०] ने उनके कहने पर सवाल किया तो उस मौक़े पर क़ुदरत का यह इरशाद कि "तुम उस पहाड़ की तरफ़ देखो अगर यह अपनी जगह पर बरक़रार रहे तो मुझे देख लोगे।" इम्काने रोवियत का पता नहीं देता। इस लिये मौक़ूफ़ अलैहे सिर्फ़ पहाड़ का ठहराव नहीं था क्योंकि वह तो उस वक़्त भी ठहरा हुआ था जब रोवियत को इस पर मोअल्लक़ किया जा रहा था बल्कि तजल्ली के वक़्त उसका ठहराव मक़सूद था, और जब तक इस मौक़े के लिये उसके ठहराव का इम्कान साबित न हो इस ठहराव को इम्कान रोवियत की दलील नहीं क़रार दिया जा सकता। हालांकि इस मौक़े पर तो यह हुआ कि "तजल्ली ने इस पहाड़ को चकना चूर कर दिया और मूसा[अ०] बेहोश हो कर गिर पड़े" और बनी इस्राईल पर उनके बेमहल सवाल की वजह से बिजली गिरी। जैसा कि इरशादे इलाही है "उनकी शरपसन्दी की वजह बिजली ने उन्हें जकड़ लिया" अगर ख़ुदा वन्दे आलम की रोवियत मुम्किन होती तो एक मुम्किनुलवक़ूअ चीज़ से ईमान को वाबस्ता करना ऐसा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जुर्म न था कि उन्हें साएक़ा के अज़ाब में जकड़ लिया जाये और उनकी ख़्वाहिश को ज़ुल्म से तआबीर किया जाये आख़िर हज़रत इब्राहीम[अ०] ने भी तो अपने इत्मिनान को मुर्दों को ज़िन्दा करने से वाबस्ता किया था, चुनांचे उन्होंने कहा कि "ऐ मेरे परवर दिगार! मुझे दिखा कि तू क्योंकर मुर्दों को ज़िन्दा करता है" इसके जवाब में कुदरत ने फ़रमाया "क्या तुम ईमान नहीं लाये" इब्राहीम[अ०] ने अर्ज़ किया "हां ईमान तो लाया! लेकिन चाहता हूं कि दिल मुत्मईन हो जाये" अगर हज़रत इब्राहीम[अ०] अपने इत्मिनान को मुर्दों के ज़िन्दा होने से वाबस्ता कर सकते हैं तो उन लोगों ने अगर अपने ईमान को रोवियत बारी पर मोअल्लक़ किया तो जुर्म ही कौन–सा किया जिस पर उन्हें लरज़ा बर अन्दाम कर देने वाली सज़ा दी जाये, और यह कहा जाये कि सज़ा इस बिना पर न थी कि उन्होंने रोवियत बारी का मुतालबा किया था बल्कि उनकी साबेक़ा ज़िद, हटधर्मी और कट हुज्जती के पेशे नज़र थी। मगर यह देखते हुए कि वह मुतालबा तो वह करें जो किया जा सकता है और मुम्किनुलवक़ूअ है और इस ज़रिये से अपने ईमान की तक्मील चाहें मगर उनकी किसी साबेक़ा ज़िद और सरकशी को सामने रखते हुए उन्हें ऐसी सज़ा दी जाये जो उन्हें नेस्त व नाबूद कर दे, अक़्ल में आने वाली बात नहीं है, और अगर यह कहा जाये कि रोवियत के सिलसिले में उनकी ज़िद पर उन्हें सज़ा दी गयी थी तो इसमें ज़िद की क्या बात थी अगर उन्होंने मूसा[अ०] के क़ौल को मुशाहिदे के मुताबिक़ करके देखना चाहा; और अगर रोवियत मुर्दों को ज़िन्दा करने की तरह मुम्किन थी तो इसमें मुज़ाएक़ा क्या था कि उनकी ख़्वाहिश को पूरा कर दिया जाता, और जिस तरह इब्राहीम[अ०] के हाथों पर मुर्दों को ज़िन्दा करके उनकी ख़लिश को हटा दिया था, उसी तरह यहां भी रोवियत से उनके ईमान की सूरत पैदा कर दी होती, और अगर मसलेहत इसकी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुक़्तज़ी न थी तो हज़रत मूसा[अ०] के ज़रिये उन्हें समझा दिया जाता कि दुनिया में न सही आख़ेरत में उसे देख लेना। मगर उनका मुतालबा पूरा करने के बजाये उन्हें मौरूदे इताब ठहराया जाता है और उनकी ख़्वाहिश को ज़ुल्म व हदशिक्नी से ताबीर किया जाता है और आख़िर उन्हें ख़िरमन हस्ती को जलाने वाली बिजलियों में जकड़ लिया जाता है। यह सिर्फ़ इस लिये कि उन्होंने एक ऐसी ख़्वाहिश का इज़हार किया जिससे ख़ुदा के दामने तन्ज़िया पर धब्बा आता था, और यह एक ऐसी अन्होनी चीज़ का मुतालबा था जिस पर उन्हें सज़ा देना ज़रूरी समझा गया ताकि दूसरों को इबरत हासिल हो, और बनी इस्राईल के अन्जाम को देख कर रोविय्यत बारी का तसव्वुर न करें। चुनांचे अल्लाह सुब्हानहू ने अपनी रोविय्यत को पहाड़ पर मोअल्लक़ करने से पहले वाज़ेह अल्फ़ाज़ में फ़रमाया कि "ऐ मूसा[अ०]! तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते" न दुनिया में और न आख़ेरत में, क्योंकि लफ़्ज़ लन नफ़ी ताबीद के लिये आता है और नफ़ी ताबीद को दवामे उर्फ़ी पर महमूल करना ग़लत है। यह दवामे उर्फ़ी वहां पर तो सही हो सकता है जहां मुतकल्लिम व मुख़ातिब दोनों फ़ानी और मोअरिज़ ज़वाल में हों और जहां मुतकल्लिम अबदी सरमदी और दायमी हो वहां नफ़ी के हुदूद भी वहां तक फैले हुए होंगे जहां तक उस ज़ाते सरमदी का दामने बक़ा फैला हुआ है, और चूंकि वह हमेशा हमेशा रहने वाला है इस लिये उसकी तरफ़ से जो नफ़ी ताबीद वारिद होगी वह दुनिया के मुद्दते बक़ा में महदूद नहीं की जा सकती और जिस आयत की नफ़ी को दवामे उर्फ़ी के माने में पेश किया गया है इससे इस्तेशहाद इस बिना पर सही नहीं कि वह उन लोगों के मुतअल्लिक़ है जो फ़ानी व महदूद हैं। लेहाज़ा उस मक़ाम की नफ़ी का उस मक़ाम की नफ़ी पर क़यास नहीं किया जा सकता, और अगर आयत "वह मौत की हरगिज़ तमन्ना नहीं करेंगे" में भी ताबीदे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हक़ीक़ी के माने मुराद लिये जायें तो लिये जा सकते हैं, क्योंकि आख़ेरत में वह मौत की तमन्ना करेंगे तो वह दरहक़ीक़त मौत की तमन्ना होगी बल्कि अस्ल तमन्ना अज़ाब से निजात हासिल करने की होगी जिसे तलबे मौत के पर्दे में तलब करेंगे, और यह मौत की तलब न होगी बल्कि राहत व सुकून नसीब हो तो वह यक़ीनन् ज़िन्दगी के ख़्वाहाँ होंगे और फिर जब अस्ल माने ताबीदे हक़ीक़ी के हैं तो इससे ताबीदे उर्फ़ी मुराद लेने के लिये किसी क़रीने की ज़रूरत है और यहां कोई क़रीना व दलील मौजूद नहीं है कि हक़ीक़ी माने से उदूल करना सही हो सके।

तसीरे गिरोह की दलील का जवाब यह है कि अगर कुछ सहाबा व ताबेईन का क़ौल यह है कि पैग़म्बरे अकरम[स०] ने लैलतुल असरा में अपने रब को देखा तो सहाबा व ताबेईन की एक जमाअत इसकी भी तो क़ायल है कि ऐसा नहीं हुआ। चुनांचे हज़रत आयशा और सहाबा की एक बड़ी जमाअत का यही मसलक है; लेहाज़ा चन्द अफ़राद की ज़ाती राय को कैसे सनद समझा जा सकता है जबकि इसके मुक़ाबले में वैसे ही अफ़राद उसके ख़िलाफ़ नज़रिया रखते हैं। चुनाँचे जनाबे आयशा का क़ौल है :–

> "जो शख़्स तुम से यह बयान करे कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम ने अपने रब को देखा तो उसने झूठ कहा, और अल्लाह का इरशाद तो यह है कि उसे निगाहें देख नहीं सकतीं अलबत्ता वह निगाहों को देख रहा है और वह हर छोटी से छोटी चीज़ से आगाह व ख़बरदार है।"

तीसरी सिफ़त यह है कि अक़्ले इन्सानी उसके औसाफ़ की नक़ाब कुशाई से क़ासिर हैं क्योंकि ज़बान उन्हीं माने व मफ़ाहीम की तर्जुमानी कर सकती है जो अक़्ल व फ़हम में समा सकते हों और जिनके समझने से अक़्लें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आजिज़ हों वह अल्फ़ाज़ की सूरत में ज़बान से अदा भी नहीं हो सकते और खुदा के औसाफ़ का इदराक इस लिये नामुम्किन है कि उसकी ज़ात का इदराक नामुम्किन है, और जब तक उसकी ज़ात का इदराक न हो उसके नफ़्सुल अमरी औसाफ़ को भी नहीं समझा जा सकता, और ज़ात का इदराक इस लिये नहीं हो सकता कि इन्सानी इदराकात महदूद होने की वजह से ग़ैर महदूद ज़ात का अहाता नहीं कर सकते। लेहाज़ा इस सिलसिले में जितना भी ग़ौर व ख़ौज़ किया जाये उसकी ज़ात और उसके नफ़्सुल अमरी औसाफ़ अक़्ल व फ़हम के इदराक से बालातर ही रहेंगे।

तमहीद व सताइश के बाद रसूलल्लाह[स0अ0] पर दुरूद व सलाम के सिलसिले में आप[अ0] की दुआ

"तमाम तारीफ़ उस अल्लाह तआला के लिये हैं जिसने अपने पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की बेअसत से हम पर वह एहसान फ़रमाया जो न गुज़िश्ता उम्मतों पर किया और न पहले लोगों पर। अपनी इस कुदरत की कारफ़रमाई से जो किसी शै से आजिज़ व दरमान्दा नहीं होती अगरचे वह कितनी ही बड़ी हो; और कोई चीज़ उसके क़ब्ज़े से निकलने नहीं पाती आगरचे वह कितनी ही लतीफ़ व नाज़ुक हो। उसने अपने मख़लूक़ात में हमें आख़िरी उम्मत क़रार दिया, और इन्कार करने वालों पर गवाह बनाया, और अपने लुत्फ़ व करम से कम तादाद वालों के मुक़ाबले में हमें कसरत दी। ऐ अल्लाह! तू रहमत नाज़िल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर जो तेरी वही के अमानतदार तमाम मख़लूक़ात में तेरे बरगुज़ीदा, तेरे बन्दों में पसन्दीदा, रहमत के पेशवा, ख़ैरो सआदत के पेशरव और बरकत का सरचश्मा थे जिस तरह उन्होंने तेरी शरीअत की ख़ातिर अपने को मज़बूती से जमाया और तेरी राह में अपने जिस्म को हर तरह के आज़ार का निशाना बनाया और तेरी तरफ़ दावत देने के सिलसिले में अपने अज़ीज़ों से दुश्मनी का मुज़ाहरा किया और तेरी रिज़ामन्दी के लिये अपने क़ौम क़बीले से जंग की और तेरे दीन को ज़िन्दा करने के लिये सब रिश्ते नाते क़तअ कर लिये। नज़दीक के रिश्तेदारों को इन्कार की वजह से दूर कर दिया और दूर वालों को इक़रार की वजह से करीब किया, और तेरी वजह से दूर वालों से दोस्ती और नज़दीक वालों से दुश्मनी रखी और तेरा पैग़ाम पहुंचाने के लिये तकलीफ़ें उठायीं और दीन की तरफ़ दावत देने के सिलसिले में ज़हमतें बर्दाश्त कीं और अपने नफ़्स को उन लोगों के पन्द व नसीहत करने में मसरूफ़ रखा जिन्होंने तेरी दावत को कुबूल किया और अपने महले सुकूनत व मक़ामे रिहाइश और जाये विलादत व वतन मालूफ़ से परदेस की सरज़मीन और दूर व दराज़ मक़ाम की तरफ़ महज़ इस मक़सद से हिजरत की कि तेरे दीन को मज़बूत करें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और तुझ से कुफ़्र अख़्तियार करने वालों पर ग़लबा पायें यहां तक कि तेरे दुश्मनों के बारे में जो उन्होंने चाहा था वह मुकम्मल हो गया और तेरे दोस्तों (को जंग व जेहाद पर आमादा करने) की तदबीरें कामिल हो गयीं तो वह तेरी नुसरत से फ़तह व कामरानी चाहते हुए और अपनी कमज़ोरी के बावजूद तेरी मदद की पुश्त पनाही पर दुश्मनों के मुक़ाबले के लिये उठ खड़े हुए और उनके घरों के हुदूद में उनसे लड़े और उनकी क़यामगाहों के वस्त में उन पर टूट पड़े। यहां तक कि तेरा दीन ग़ालिब और तेरा कलमा बुलन्द होकर रहा। अगरचे मुश्रिक उसे नापसन्द करते रहे। ऐ अल्लाह! उन्होंने तेरी ख़ातिर जो कोशिशें की हैं उनकी एवज़ उन्हें जन्नत में ऐसा बुलन्द दर्जा अता कर कि कोई मर्तबे में उनके बराबर न हो सके और न मंज़िलत में उनका हमपाया क़रार पा सके और न कोई मुक़र्रिब बारगाह फ़रिश्ता, और न कोई फ़रस्तादा पैग़म्बर तेरे नज़दीक उनका हमसर हो सके और उनके अहलेबैते[अ०] अतहार और मोमेनीन की जमाअत के बारे में जिस क़ाबिले क़ुबूल शफ़ाअत का तूने उनसे वादा फ़रमाया है उस वादे से बढ़ कर उन्हें अता फ़रमा ऐ वादे के नाफ़िज़ करने वाले क़ौल के पूरा करने और बुराईयों को कई गुना ज़ायद अच्छाईयों से बदल देने वाले बेशक तू फ़ज़्ले अज़ीम का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मालिक है।

यह दुआ का दूसरा इफ़्तेताहिया है जो पहले इफ़्तेताहिये के लिये एक तकमिला की हैसियत रखता है। इस लिये वाओअतफ़ के ज़रिये इसका सिलसिला पहले इफ़्तेताहिया से जोड़ दिया गया है। पहला इफ़्तेताहिया हम्दो सनाए इलाही पर मुश्तमिल था और यह रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम के सिलसिले में है। हम्द व सताइश और दुरूद व सलाम एक दूसरे से मुरतबित और एक क़ुदरती तरतीब के ज़ेरे असर एक दूसरे से वाबस्ता हैं। चुनांचे जब ख़ुदा वन्दे आलम के इस एहसान व इनआम पर नज़र जाती है कि उसने नौए इन्सानी की हिदायत के लिये पैग़म्बरों और दीन के रहनुमाओं का सिलसिला जारी किया ताकि वहीअ व तन्ज़ील के ज़रिये हिदायत की तालीम होती रहे तो बेसाख़्ता ज़बान उसकी तहमीद व सताइश के इस्तेहक़ाक़ का एतराफ़ करने पर मजबूर हो जाती है कि जिसने माद्दी तरबियत के सरो सामान के साथ रूहानी तरबियत के सामान की भी तक्मील की। तो जब ख़ुदा के इनआमात उसकी हम्दो सताइश के मोहर्रिक होते हैं तो जो इरफ़ाने इलाही का ज़रिया हों और इन्सानी सलाहियतों को इस क़ाबिल बनायें कि उनमें हिदायत के अनासिर नशोनुमा पा सकें, तो तहमीदे इलाही के बाद एहसान शिनासी का तक़ाज़ा यह होगा कि उन हस्तियों से भी दुरूद व सलाम के ज़रिये इज़हारे अक़ीदत व इरादत किया जाये, और उन ज़वाते मुक़द्देसा में सबसे अकमल व अफ़ज़ल हस्ती रसूले अकरम[स०] की थी जिन्होंने तहज़ीबे नफ़्स व तरक्क़ी–ए–रूहानी की राहें बतायीं और सदाक़त व रूहानियत की तालीम से मुर्दा इन्सानियत को निशाते सानिया अता किया। लेहाज़ा हम्द के बाद दुरूद व सलाम को नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। चुनांचे दुआ के साथ जिस तरह हम्द को मुनज़्ज़म किया गया है उसी तरह दुरूद व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सलवात को भी इस्तेजाबते दुआ का ज़रिया क़रार दिया गया है। चुनांचे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजमा) "जब अल्लाह तआला से कोई हाजत तलब करो तो पहले रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम पर दुरूद भेजो फिर अपनी हाजत मांगो, क्योंकि ख़ुदा इससे बुलन्दतर है कि उससे दो हाजतें तलब की जायें और एक पूरी कर दे और एक रोक ले।"

इमाम अलैहिस्सलाम ने दुरूद व सलवात के सिलसिले में आंहज़रत[स०] की शख़्सियत पर इस तरह जंचे तुले अल्फ़ाज़ में रौशनी डाली है कि उनकी ज़िन्दगी के तमाम गोशों की मुकम्मल तस्वीर निगाहों के सामने आ जाती है। चुनांचे इन कलेमात से आपकी हस्ती के हस्बे ज़ैल औसाफ़ व कमालात वाज़ेह होते हैं। आप वहीए इलाही के हामिल, पाकीज़ा नसब और बरगुज़ीदा ख़लाएक़ थे। ख़ुदा वन्दे आलम ने आप को तमाम अम्बिया के आख़िर में भेजा जिसके बाद सिलसिलए नबूवत ख़त्म कर दिया। लेहाज़ा आप आख़िरी पैग़म्बर[स०] और आपकी उम्मत आख़िरी उम्मत है, और उनके अहलेबैत लोगों के आमाल के निगरान और उनके गवाह हैं। आप रहमत व रॉफ़्त का मुजस्सिमा और ख़ैरोबरकत का सरचश्मा थें उनकी दोस्ती व दुश्मनी का मेयार सिर्फ़ ईमान व अमले सालेह है और इस सिलसिले में अपने और बेगाने में कोई इम्तियाज़ व तफ़रिक़ा रवा नहीं रखा। उन्होंने तबलीग़े एहकाम और आलाए कलमतुल्लाह के लिये जान की बाज़ी लगा दी। दीन की ख़ातिर दुख सहे। मुसीबतें झेलीं। घर बार छोड़ा और हिजरत अख़्तियार की और अपनी सलाहियत नज़्म व नस्क़ से मुसलमानों की शीराज़ाबन्दी की और उनकी फ़लाह व नजाह का सामान किया और हर तरह के ख़तरात

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ना मुक़ाबला करते हुए दुश्मनों से सफ़आरा हुए और किसी मौक़े पर अपनी क़ुव्वत व ताक़त पर भरोसा नहीं किया बल्कि हमेशा ख़ुदा की नुसरत व ताईद के ख़्वाहाँ ओर उसकी मदद के तालिब रहे और आख़िर हुस्ने नीयत । हुस्ने अमल की बदौलत अन्जामकार की कामयाबी उन्हें नसीब हुई और क़ुबूलियते शिफ़ाअत के दर्जए रफ़ीआ पर फ़ाएज़ हुए।

हामलाने अर्श और दूसरे मुक़र्रब फ़रिश्तों पर दुरूद व सलात के सिलसिले में आप की दुआ

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! तेरे अर्श के उठाने वाले फ़रिश्ते जो तेरी तस्बीह से उक्ताते नहीं और न तेरी एबादत से ख़स्ता व मलूल होते हैं और न तेरे तामीले अम्र में सअ़ी व कोशिश के बजाये कोताही बरतते हैं और न तुझसे लौ लगाने से ग़ाफ़िल होते हैं और इसराफ़ील[अ०] साहबे सूर जो नज़र उठाये हुए तेरे इजाज़त और निफ़ाज़े हुक्म के मुन्तज़िर हैं ताकि सूर फूंक कर क़ब्रों में पड़े हुए मुर्दों को होशियार करें और मीकाइल[अ०] जो तेरे यहां मर्तबे वाले और तेरी एताअत की वजह से बलन्द मंज़िलत हैं और जिबरईल[अ०] जो तेरी वहीइ के अमानतदार और अहले आसमान जिनके मुतीअ व फ़रमान्बरदार हैं और तेरी बारगाह में मक़ामे बलन्द और तक़र्रूबे ख़ास रखते हैं और वह रूह जो फ़रिश्तगाने हिजाब पर मोअक्किल है और वह रूह जिसकी ख़िलक़त

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तेरे आलमे अम्र से है उन सब पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा और इसी तरह उन फ़रिश्तों पर जो उनसे कम दर्जे और आसमानों में साकिन और तेरे पैग़ामों के अमीन हैं और उन फ़रिश्तों पर जिनमें किसी सअ़ी व कोशिश से बददिली और किसी मशक़्क़त से ख़स्तगी व दरमान्दगी पैदा नहीं होती और न तेरी तस्बीह से नफ़सानी ख़्वाहिशें उन्हें रोकती हैं और न उनमें ग़फ़लत की रू से ऐसी भूल चूक पैदा होती है जो उन्हें तेरी ताज़ीम से बाज़ रखे। वह आंखें झुकाये हुए हैं कि (तेर नूरे अज़मत की तरफ़) निगाह उठाने का इरादा भी नहीं करते और ठोड़ियों के बल गिरे हुए हैं और तेरे यहां के दरजात की तरफ़ उनका इश्तियाक़ बेहद व बेनिहायत है और तेरी नेअमतों की याद में खोये हुए हैं और तेरी अज़मत व जलाले किबरियाई के सामने सरअफ़गन्दा हैं, और उन फ़रिश्तों पर जो जहन्नुम को गुनाहगारों पर शोलावर देखते हैं तो कहते हैं:—

पाक है तेरी ज़ात! हमने तेरी एबादत जैसा हक़ था वैसी नहीं की। (ऐ अल्लाह!) तू उन पर और फ़रिश्तगाने रहमत पर और उन पर जिन्हें तेरी बारगाह में तक़र्रुब हासिल है और तेरे पैग़म्बरों की तरफ़ छुपी हुई ख़बरें ले जाने वाले और तेरी वही के अमानतदार हैं, और इन क़िस्म क़िस्म के फ़रिश्तों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर जिन्हें तूने अपने लिये मख़सूस कर लिया है और जिन्हें तस्बीह व तक़दीस के ज़रिये खाने पीने से बेनयाज़ कर दिया है और जिन्हें आसमानी तबक़ात के अन्दरूनी हिस्सों में बसाया है और उन फ़रिश्तों पर जो आसमान के किनारों में तवक़्क़ुफ़ करेंगे जब कि तेरा हुक्म वादे के पूरा करने के सिलसिले में सादर होगा, और बारिश के ख़ज़ीनेदारों और बादलों के हंकाने वालों पर और उस पर जिसके छिड़कने से रअद की कड़क सुनाई देती है और जब इस डांट डपट पर गरजने वाले बादल रवां होते हैं तो बिजली के कौंदे तड़पने लगते हैं, और उन फ़रिश्तों पर जो बर्फ़ और ओलों के साथ साथ रहते हैं और जब बारिश होती है तो उसके क़तरों के साथ उतरते हैं और हवा के ज़ख़ीरों की देख भाल करते हैं और उन फ़रिश्तों पर जो पहाड़ पर मोवक्किल हैं ताकि वह अपनी जगह से हटने न पायें और उन फ़रिश्तों पर जिन्हें तूने पानी के वज़्न और मूसलाधार और तलातुम अफ़ज़ा बारिशों की मिक़दार पर मुत्तेलअ किया है और उन फ़रिश्तों पर जो नागवार इब्तिलाओं और ख़ुश आईन्द आसाइशों को ले कर अहले ज़मीन की जानिब तेरे फ़रस्तादा हैं और उन पर जो आमाल का एहाता करने वाले गिरामी मंज़िलत और नेकूकार हैं और उन पर जो निगेहबानी करने वाले करामन् कातेबीन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हैं और मलकुल मौत और उसके आवान व अन्सार और मुन्किर नकीर और अहले कुबूर की आज़माइश करने वाले रूमान पर और बैतुल मअमूर का तवाफ़ करने वालों पर और मालिक और जहन्नम के दरबानों पर और रिज़वान और जन्नत के दूसरे पासबानों पर और उन फ़रिश्तों पर जो ख़ुदा के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते और जो हुक्म उन्हें दिया जाता है उसे बजा लाते हैं, और उन फ़रिश्तों पर जो (आख़ेरत में) सलाम अलैकुम के बाद कहेंगे कि दुनिया में तुमने सब्र किया (यह उसी का बदला है) देखो तो आख़ेरत का घर कैसा अच्छा है और दोज़ख़ के उन पासबानों पर कि जब उनसे यह कहा जायेगा कि इसे गिरफ़्तार करके तौक़ व ज़ंजीर पहना दो फिर उसे जहन्नम में झोंक दो तो वह उसकी तरफ़ तेज़ी से बढ़ेंगे और उसे ज़रा मोहलत न देंगे। और हर उस फ़रिश्ते पर जिसका नाम हमने नहीं लिया और न हमें मालूम है कि उसका तेरे हां क्या मर्तबा है और यह कि तूने किस काम पर उसे मोअय्यन किया है और हवा, ज़मीन और पानी में रहने वाले फ़रिश्तों पर और उन पर जो मख़लूक़ात पर मोअय्यन हैं उन सब पर रहमत नाज़िल कर उस दिन कि जब हर शख़्स इस तरह आयेगा कि उसके साथ एक हंकाने वाला होगा और एक गवाही देने वाला और उन सब पर ऐसी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रहमत नाज़िल फ़रमा जो उनके लिये इज़्ज़त बालाए इज़्ज़त और तहारत बाएस तहारत का बाअस हो। ऐ अल्लाह! जब तू अपने फ़रिश्तों और रसूलों पर रहमत नाज़िल करे और हमारे सलवात व सलाम को उन तक पहुंचाये तो हम पर भी अपनी रहमत नाज़िल करना इस लिये कि तूने हमें उनके ज़िक्रे ख़ैर की तौफीक़ बख़्शी। बेशक तू बख़्शने वाला और करीम है।

इस दुआ में इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों और मलाएआला के रहने वालों पर दुरूद व सलवात के सिलसिले में उनके औसाफ़ व अक़्साम और मदारिज व तबक़ात का ज़िक्र फ़रमाया है और यह हक़ीक़त है कि मलाएका के बारे में वही कुछ कह सकता है जिसकी निगाहे आलमे मलकूत की मंज़िलों से आशना हों। चुनाँचे इस सिलसिले में सब से पहले जिसने तफ़सील से रौशनी डाली वह हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलात वस्सलाम हैं और इसके लिये आपके ख़ुतबात शाहिद हैं जिनमें मलाएका के सूर व इश्काले सिफ़ात व ख़ुसूसियात और अल्लाह से उनकी वालिहाना मोहब्बत व शेफ़्तगी और उनकी एबादत व वारफ़्तगी की मुकम्मल तस्वीरकशी की है। जिस की नज़ीर न अगलों के कलाम में मिलती है न पिछलों के। इस्लाम से क़ब्ल अगरचे कुछ अफ़राद ऐसे मौजूद थे जो हक़ाएक़ व मआरिफ़ से वाबस्तगी रखते थे, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, उमय्या इब्ने अबीस्सलत, वरक़ा इब्ने नोफ़िल, क़लस इब्ने साएदा, अक्सम इब्ने सैफ़ी वग़ैरा। मगर इस सिलसिले में वह ज़बान व क़लम को हरकत न दे सके, और अगर कुछ कहते भी तो वह तर्ज़े बयान और कलाम पर इक़्तिदार उन्हें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कहां नसीब था जो परवरदए आग़ोशे नबूव्वत अमीरूल मोमेनीन[अ०] को हासिल था, और दूसरे अदबा व शोराए अरब थे तो उनका मौज़ूए कलाम उमूमन घोड़ा, नील गाय, ऊँट वग़ैरा होता था या हरब व पैकार के ख़ूनी हंगामों और खुद सताई व तफ़ाखुर के तज़किरों पर मुश्तमिल होता था या इसमें बादोबारां के मनाज़िर इश्क़ व मोहब्बत के वारदात और खण्डरों और वीरानों के निशानात का ज़िक्र होता था और माद्दियात से बुलन्दतर चीज़ों तक उनके ज़हनों की रसाई ही न थी कि उनके मुतअल्लिक़ वह कुछ कह सकते। अगरंचे वह फ़रिश्तों के वजूद के क़ाएल थे मगर उन्हें ख़ुदा की चहीती और लाड़ली बेटियां तसव्वुर किया करते थे। चुनाँचे कुरआन मजीद में उनके ग़लत अक़ीदे का तज़किरा इस तरह है :–

> "ऐ रसूल[स०]! उनसे पूछो कि क्या तुम्हारे परवर दिगार की बेटियां हैं और उनके बेटे हैं। क्या हमने फ़रिश्तों को तबक़ए अनास से पैदा किया तो वह देख रहे थे?

अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम के बाद हज़रत अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम ने मलाएका के असनाफ़, उनके दरजात व मरातिब के तफ़ावत और उनके फ़राएज़ व मज़ाहिरा–ए–उबूदियत पर तफ़सील से रौशनी डाली है।

मज़ाहिबे आलम में फ़रिश्तों के मुतअल्लिक़ मुख़तलिफ़ नज़रिये पाये जाते हैं। कुछ तो उन्हें नूर का मज़हर क़रार देते हैं और कुछ सअद सितारों को मलाएका रहमत और नहस सितारों को मलाएका अज़ाब तसव्वुर करते हैं, और कुछ का ख़याल है कि वह उकूले मुजर्रदा नफ़ूस फ़ल्किया हैं और कुछ का मज़ऊमा यह है कि वह तबाएअ व क़वा हैं या दफ़अ व जज़्ब की कूव्वतें हैं, और फिर जो उन्हें किसी मुस्तक़िल हैसियत से मानते हैं उनमें भी एख़तलाफ़ात हैं कि आया वह रूहानी महज़ हैं या जिस्मानी महज़ या

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिस्म व रूह से मुरक्कब हैं, और अगर जिस्मानी हैं तो जिस्मे लतीफ़ रखते हैं या जिस्मे ग़ैरे लतीफ़, और लतीफ़ हैं तो अज़ क़बीले नूर हैं या अज़ क़बीले हवा। या उनमें से बअज़ अज़ क़बीले नूर हैं और बअज़ अज़ क़बीले हवा। बहरहाल उनकी हक़ीक़त कुछ भी हो हमें यह अक़ीदा रखना लाज़िम है कि वह अल्लाह की एक ज़ीअक़्ल मख़लूक़ हैं जो गुनाहों से बरी और अम्बिया व रोसुल की जानिब इलाही एहकाम के पहुंचाने पर मामूर हैं। चुनाँचे इन पर ईमान लाने के सिलसिले में कुदरत का इरशाद है :–

> (तरजुमा) "(हमारे) पैग़म्बर[स०] जो कुछ उन पर उनके परवर दिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाये और मोमेनीन भी सबके सब ख़ुदा पर और उसके फ़रिश्तों पर ईमान लाये।"

हज़रत[अ०] ने इस दुआ में दस फ़रिश्तों को नाम के साथ याद किया है जो यह हैं। जिबरईल[अ०], मीकाईल[अ०], इसराफ़ील[अ०], मल्कुल मौत (इज़्राईल[अ०]) रूह (अलकुद्स), मुनकिर[अ०] नकीर[अ०], रूमान[अ०], रिज़वान[अ०], मालिक[अ०]। इनमें पहले चार फ़रिश्ते जिनके नाम का आख़िरी जुज़ ईल है जिसके माने इबरानी या सुरयानी ज़बान में "अल्लाह" के होते हैं, सब मलाएका से अफ़ज़ल व बरतर हैं, और मीकाईल[अ०] के मुतअल्लिक़ यह भी कहा गया है कि यह कील से मुश्तक़ है जिसके माने नापने के होते हैं और यह चूंकि पानी की पैमाइश पर मोअय्यन हैं, इस लिये इन्हें मीकाइल[अ०] कहा जाता है। इस सूरत में उनके नाम का आख़िरी जुज़ ईल ब–माने "अल्लाह" नहीं होगा, और रूह के मुतअल्लिक़ मुख़तलिफ़ रिवायात हैं। बअज़ रवायात से यह मालूम होता है कि यह एक फ़रिश्तें का नाम है जो तमाम फ़रिश्तों से ज्यादा क़द्रो मंज़िलत का मालिक है और बअज़ रवायात से यह ज़ाहिर होता है कि जिबरईल[अ०] ही का दूसरा नाम रूह है और बअज़ रवायात में यह है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कि रूह एक नौअ है जिसका कसीरूल तादाद मलाएका पर इतलाक़ होता है और मुनकिर नकीर और रोमान क़ब्र के सवाल व जवाब से तअल्लुक़ रखते हैं। चुनानचे रोमान, मुन्कर नकीर से पहले क़ब्र में आता है और हर आदमी को जांचता है और फिर मुन्कर नकीर को उसकी अच्छाई या बुराई से आगाह करता है और रिज़वाने जन्नत के पासबानों का रास व रईस और मालिके जहन्नम के दरबानों का सरख़ील है जिनकी तादाद उन्नीस है। चुनाँचे कुदरत का इरशाद है "जहन्नम पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं"। इनके अलावा हस्बेज़ैल मलाएका का तज़किरा फ़रमाया है :

(1) हामलाने अर्श : यह वह फ़रिश्ते हैं जो अर्शे इलाही को उठाये हुए हैं। चुनांचे उनके मुतअल्लिक़ इरशादे इलाही है "जो फ़रिश्ते अर्श उठाये हुए हैं और जो इसके गिर्दा–गिर्द हैं अपने परवर दिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं।"

(2) मलाएका हजब : इससे मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो इस आलमे अनवार व तजल्लियात से तअल्लुक़ रखते हैं जिसके गिर्द सरादिक़ जलाल व हिजाबे अज़मत के पहरे हैं और इन्सानी इल्म व इदराक से बालातर हैं।"

(3) मलाएका समावात : इससे मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो तबक़ाते आसमानी में पाये जाते हैं। चुनाँचे कुदरत का इरशाद है "हमने आसमानों को टटोला तो क़वी निगेहबानों से भरा हुआ पाया।"

(4) मलाएका रूहानीयीन : इससे मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो आसमाने हफ़्तुम में ख़तीरतुल कुदस के अन्दर मुक़ीम हैं और शबेक़द्र में ज़मीन पर उतरते हैं। चुनाँचे इरशादे इलाही है : "इस रात फ़रिश्ते और रूह (अलकुदस) हर बात का हुक्म ले कर अपने परवर दिगार की इजाज़त से उतरते हैं।"

(5) मलाएका मुक़र्रेबीन : यह वह फ़रिश्ते हैं जिन्हें बारगाहे इलाही

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ं ख़ास तक़र्रुब हासिल है और इन्हें कर्रोबीन से भी याद किया जाता है जो कर्ब ब–माने कुर्ब से माख़ूज़ है। इनके मुतअल्लिक़ इरशादे कुदरत है : "मसीह[अ०] को इसमें आर नहीं कि वह अल्लाह का बन्दा हो और न उसके मुक़र्रब फ़रिश्तों को।"

(6) मलाएका रुसुल : यह वह फ़रिश्ते हैं जो पैग़ाम्बरी का काम अन्जाम देने पर मामूर हैं। चुनांचे कुदरत का इरशाद है : सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जो आसमान व ज़मीन का बनाने वाला और फ़रिश्तों को अपना क़ासिद बना कर भेजने वाला है।"

(7) मलाएका मुदब्बेरात : यह वह फ़रिश्ते हैं जो अनासिर बसीत व अजसामे मुरक्कबा जैसे पानी, हवा, बर्क़, बादो बारां रआद और जमादात व नबातात व हैवान पर मुक़र्रर हैं। चुनाँचे कुरआन मजीद में है "उन फ़रिश्तों की क़सम जो उमूरे आलम के इन्तेज़ाम में लगे हुए हैं"। फिर इरशाद है : "झिड़क कर डांटने वालों की क़सम"। इब्ने अब्बास का क़ौल है कि इससे वह फ़रिश्ते मुराद हैं, जो बादलों पर मुक़र्रर हैं।

(8) मलाएका हफ़्ज़ा : यह वह फ़रिश्ते हैं जो अफ़रादे इन्सानी की हिफ़ाज़त पर मामूर हैं। चुनाँचे कुदरत का इरशाद है "उसके लिये उसके आगे और पीछे हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो ख़ुदा के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त व निगरानी करते हैं।"

(9) मलाएका क़ातेबीन : वह फ़रिश्ते जो बन्दों के आमाल ज़ब्तो तहरीर में लाते हैं। चुनांचे कुदरत का इरशाद है : "जब वह कोई काम करता है तो दो लिखने वाले जो उसके दायें बायें हैं लिख लेते हैं और वह कोई बात नहीं कहता मगर एक निगराँ उसके पास तैयार रहता है।

(10) मलाएका मौत : वह फ़रिश्ते जो मौत का पैग़ाम लाते और रूह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

को क़ब्ज़ करते हैं। चुनांचे इरशादे इलाही है : "इन फ़रिश्तों की क़सम जो डूब कर इन्तेहाई शिद्दत से काफ़िरों की रूह खैंच लेते हैं, और उनकी क़सम जो बड़ी आसानी से मोमिनों की रूह क़ब्ज़ करते हैं।"

(11) मलाएका ताएक़ीन : वह फ़रिश्ते जो अर्श और अर्श के नीचे बैतुल मअमूर का तवाफ़ करते रहते हैं। चुनांचे कुदरत का इरशाद है : "तुम अर्श के गिर्दा–गिर्द फ़रिश्तों को घेरा डाले हुए देखोगे"।

(12) मलाएका हश्र : वह फ़रिश्ते जो मैदाने हश्र में इन्सानों को लायेंगे और उनके आमाल व अफ़आल की गवाही देंगे चुनांचे कुदरत का इरशाद है : "और हर शख़्स हमारे पास आयेगा और उसके साथ एक फ़रिश्ता हंकाने वाला और एक आमाल की शहादत देने वाला होगा।"

(13) मलाएका जहन्नम : वह फ़रिश्ते जो दोज़ख़ की पासबानी पर मुक़र्रर हैं। चुनांचे इरशादे इलाही है : "जहन्नम पर वह फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो तुन्दोख़ू और तेज़ मिज़ाज हैं।"

(14) मलाएका बहिश्त : वह फ़रिश्ते जो जन्नत के दरवाज़ों पर मुक़र्रर हैं। चुनांचे कुदरत का इरशाद है : "यहां तक कि जब वह जन्नत के पास पहुंचेगे और उसके दरवाज़े खोल दिये जायेंगे और उसके निगेहबान उनसे कहेंगे सलाम अलैकुम तुम ख़ैर व ख़ूबी से रहे लेहाज़ा बेहिश्त में हमेशा के लिये दाख़िल हो जाओ।"

यह वह असनाफ़े मलाएका हैं जिनका इस दुआ में तज़किरा है और उनके अलावा और कितने इक़्साम व असनाफ़ हैं तो उनका एहाता अल्लाह के सिवा कौन कर सकता है। "तुम्हारे परवर दिगार के लश्करों को उसके अलावा कोई नहीं जानता"।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

"अम्बिया[अ०] के ताबेईन और उन पर ईमान लाने वालों के हक़ में हज़रत[अ०] की दुआ"

"ऐ अल्लाह! तू अहले ज़मीन में से रसूलों की पैरवी करने वालों और उन मोमेनीन को अपनी मग़फ़रत और ख़ुशनूदी के साथ याद फ़रमा जो ग़ैब की रू से उन पर ईमान लाये, उस वक़्त कि जब दुश्मन उनके झुटलाने के दरपै थे और उस वक़्त कि जब वह ईमान की हक़ीक़तों की रौशनी में उनके (ज़ुहूर के) मुश्ताक़ थे। हर उस दौर और हर उस ज़माने में जिसमें तूने कोई रसूल भेजा और उस वक़्त के लोगों के लिये कोई रहनुमा मुक़र्रर किया। हज़रत आदम[अ०] के वक़्त से लेकर हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के अहद तक जो हिदायत के पेशवा और साहेबाने तक़वा के सरबराह थे (उन सब पर सलाम हो) बारे इलाहा! ख़ुसूसियत से असहाबे मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम में से वह अफ़राद जिन्होंने पूरी तरह पैग़म्बर[स०] का साथ दिया और उनकी नुसरत में पूरी शुजाअत का मुज़ाहरा किया और उनकी मदद पर कमर बस्ता रहे और उन पर ईमान लाने में जल्दी और उनकी दावत की तरफ़ सबक़त की, और जब पैग़म्बर[स०] ने अपनी रिसालत की दलीलें उनके गोश गुज़ार कीं तो उन्होंने लब्बैक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कही और उनका बोल बाला करने के लिये बीवी बच्चों को छोड़ दिया और अमरे नबूवत के इस्तेहकाम के लिये बाप और बेटों तक से जंगे कीं और नबीए अकरम[स०] के वजूद की बरकत से कामयाबी हासिल की इस हालत में कि उनकी मोहब्बत दिल के हर रग व रेशे में लिये हुए थे और उनकी मोहब्बत व दोस्ती में ऐसी नफ़अ बख़्श तिजारत के मुतवक़्क़े थे जिसमें कभी नुक़्सान न हो, और जब उनके दीन के बन्धन से वाबस्ता हुए तो उनके क़ौम क़बीले ने उन्हें छोड़ दिया और जब उनके सायए क़ुर्ब में मंज़िल की तो अपने बेगाने हो गये। तो ऐ मेरे मअबूद! उन्होंने तेरी ख़ातिर और तेरी राह में जो सबको छोड़ दिया तो (जज़ा के मौक़े पर) उन्हें फ़रामोश न कीजियो और उनकी इस फ़िदाकारी और ख़ल्क़े ख़ुदा को तेरे दीन पर जमा करने और रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के साथ दाइये हक़ बन कर खड़ा होने के सिले में उन्हें अपनी ख़ुशनूदी से सरफ़राज़ व शादकाम फ़रमा और उन्हें इस अम्र पर भी जज़ा दे कि उन्होंने तेरी ख़ातिर अपने क़ौम क़बीले के शहरों से हिजरत की और वुसअ़ते मआश से तंगीए मआश में जा पड़े और यूँ ही उन मज़लूमों की ख़ुशनूदी का सामान कर कि जिनकी तादाद को तूने अपने दीन को ग़लबा देने के लिये बढ़ाया बारे इलाहा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिन्होंने असहाबे रसूल[स०] की एहसन तरीके से पैरवी की उन्हें बेहतरीन जज़ाए ख़ैर दे जो हमेशा यह दुआ करते रहे कि "ऐ हमारे परवर दिगार! तू हमें और हमारे उन भाईयों को बख़्श दे जो ईमान लाने में हमसे सबक़त ले गये।" और जिनका मुतमहे नज़र असहाब का तरीक़ रहा और उन्हीं का तौर तरीक़ा अख़्तियार किया और उन्हीं की रविश पर गामज़न हुए। उनकी बसीरत में कभी शुबहा का गुज़र नहीं हुआ कि उन्हें (राहे हक़ से) मुन्हरिफ़ करता और उनके नक़्शे क़दम पर गाम फ़रसाई और उनके रौशन तर्ज़े अमल की इक़्तिदा में उन्हें शक व तरद्दुद ने परेशान नहीं किया वह असहाबे नबी[स०] के मआविन दस्तगीर और दीन में उनके पैरोकार और सीरत व अख़लाक़ में उनसे दर्स आमूज़ रहे और हमेशा उनके हमनवा रहे और उनके पहुंचाये हुए एहकाम में उन पर कोई इल्ज़ाम न धरा। बारे इलाहा! इन ताबेईन और उनके अज़वाज और आल व औलाद और उनमें से जो तेरे फ़रमांबरदार व मुतीअ हैं उन पर आज से ले कर रोज़े क़यामत तक दुरूद व रहमत भेज। ऐसी रहमत जिसके ज़रिये तू उन्हें मआसियत से बचाये, जन्नत के गुलज़ारों में फ़राख़ी व वुसअत दे। शैतान के मक्र से महफ़ूज़ रखे और जिस कारेख़ैर में तुझसे मदद चाहें उनकी मदद करे और शब व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रोज़ के हवादिस से सिवाये किसी नवैदे ख़ैर के उनकी निगेहदाश्त करे और इस बात पर उन्हें आमादा करे कि वह तुझसे हुस्ने उम्मीद का अक़ीदा वाबस्ता रखें और तेरे हाँ की नेअमतों की ख़्वाहिश करें और बन्दों के हाथों में फ़राख़िए नेअमत को देख कर तुझ पर (बेइन्साफ़ी का) इल्ज़ाम न धरें ताकि तू उनका रूख़ अपने उम्मीद व बीम की तरफ़ फेर दे और दुनिया की वुसअत व फ़राख़ी से उन्हें बेतअल्लुक़ कर दे और अमले आख़ेरत और मौत के बाद की मंज़िल का साज़ व बर्ग मोहय्या करना उनकी निगाहों में ख़ुश आइन्द बना दे, और रूहों के जिस्मों से जुदा होने के दिन हर कर्ब व अन्दोह जो उन पर वारिद हो आसान कर दे और फ़ितना व आज़माइश से पैदा होने वाले ख़तरात और जहन्नम की शिद्दत और उसमें हमेशा पड़े रहने से निजात दे और उन्हें जाये अमन की तरफ़ जो परहेज़गारों की आसाइशगाह है मुन्तक़िल कर दे।

हज़रत ने इस दुआ में सहाबा व ताबेईन बिल एहसान और साबेक़ीन बिल ईमान के लिये कलेमाते तरहिम इरशाद फ़रमाये हैं और हस्बे इरशादे इलाही कि अहले ईमान गुज़रे हुए अहद के मोमेनीन के लिये दुआ करते हुए कहते हैं कि "ऐ हमारे परवर दिगार! तू हमें और हमारे उन भाईयों को बख़्श दे जो ईमान लाने में हमसे सबक़त ले गये"। उनके लिये दुआए उफ़ू व मग़फ़ेरत फ़रमाते हैं। इमाम अलैहिस्सलाम के तर्ज़े अमल और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इस आयते कुरआनी से हमें यह दर्स हासिल होता है कि जो मोमेनीन रहमते इलाही के जवार में पहुंच चुके हैं उनके लिये हमारी ज़बान से कलेमाते तरहम निकलें और उनकी सबक़ते ईमानी के पेशे नज़र उनके लिये दुआए मग़फ़ेरत करें और यह हक़ीक़त भी वाज़ेह हो जाती है कि ईमान में सबक़त हासिल करना भी फ़ज़ीलत का एक बड़ा दर्जा है तो इस लिहाज़ से सबक़त ले जाने वालों में सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत का हामिल वह होगा जो इन सबसे साबिक़ हो और यह अम्र, मुस्लिमा अम्र है कि सबसे पहले ईमान में सबक़त करने वाले अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम थे। चुनांचे इब्ने अब्दुल बर मक्की ने तहरीर किया है :

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के बाद जो सबसे पहले अल्लाह तआला पर ईमान लाया वह अली इब्ने अबीतालिब[अ०] थे।"

ख़ुदा वन्दे आलम ने अपने इरशाद : "ऐ हमारे परवर दिगार! तू हमें और हमारे उन भाईयों को जो ईमान में हमसे साबिक़ थे बख़्श दे। की रू से हर मुसलमान पर अपने कलाम में यह फ़रीज़ा आयद कर दिया है कि वह अली[अ०] इब्ने अबीतालिब[अ०] के लिये दुआए मग़फ़ेरत व रहमत करता रहे। लेहाज़ा हर वह शख़्स जो अली इब्ने अबीतालिब[अ०] के बाद ईमान लाये वह आपके हक़ में दुआये मग़फ़ेरत करे।" (शरह इब्ने अबिल हदीद जिल्द 3 स0 256)

बहरहाल जिन सहाबा और साबेक़ीन बिल ईमान का इस दुआ में तज़किरा है यह वह असहाब थे जिन्होंने हर मरहले पर फ़िदाकारी के जौहर दिखाये, बातिल की तागूती कूव्वतों के सामने सीना सिपर रहे। रसूलुल्लाह[स०] के उस्वए हुस्ना के सांचे में अपनी ज़िन्दगियों को ढाल के दूसरों के लिये मिनारे हिदायत क़ायम कर गये और जादए हक़ की निशानदेही और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इस्लाम की सही तालीमात की तरफ़ रहनुमाई करते रहे। दीन की ख़ातिर हर कुरबानी पर आमादा नज़र आये; क़ौम क़बीले को छोड़ा; बीवी बच्चों से मुंह मोड़ा; घर से बेघर हुए, जंग की शोला फ़िशानियों में तलवारों के वार सहे और सब्रो इस्तेक़लाल के साथ दुश्मन के मुक़ाबले में जम कर लड़े, जिससे इस्लाम उनका रहीने मिन्नत और अहले इस्लाम उनके ज़ेरे एहसान हैं। क्या सलमान, अबूज़र, मिक़दाद, अम्मार इब्ने यासिर, ख़बाब इब्ने अरत, बिलाल इब्ने रबाह, क़ैस इब्ने सअद, जारिया इब्ने क़दामा, हजर इब्ने अदी, हज़ीफ़ा इब्ने यमानी, हन्ज़ला इब्ने नोअमान, ख़ज़ीमा इब्ने साबित, अहनफ़ इब्ने क़ैस, अमरू इब्नुल हमक़, उस्मान बिन हनीफ़ ऐसे जलीलुल क़द्र सहाबा को अहले इस्लाम फ़रामोश कर सकते हैं जिनकी जाँफ़रोशाना ख़िदमात के तज़किरों से तारीख़ का दामन छलक रहा है।

यह ज़ाहिर है कि यह दुआ अहदे नबवी[स०] के तमाम मुसलमानों को शामिल नहीं है क्योंकि उनमें ऐसे भी थे जो बनसे कुरआनी फ़ासिक़ थे जैसे वलीद इब्ने अक़बा; ऐसे भी थे जिन्हें पैग़म्बर[स०] ने फ़ितना परवरी व शरअन्गेज़ी की वजह से शहर बदर कर दिया था जैसे हकम इब्ने आस और उसका बेटा मरवान। ऐसे भी थे जिन्होंने महज़ हुसूले इक़्तिदार व तलबे जाह के लिये अहलेबैते रसूल[स०] से जंगें कीं जैसे माविया, अमरू इब्ने आस, बसर इब्ने अबी अरताता, हबीब इब्ने मुस्लिमा, उमर इब्ने सअद, वग़ैरा। ऐसे भी थे जो पैग़म्बर[स०] को मस्जिद में तन्हा छोड़कर अलग हो जाते थे। चुनाँचे इरशादे बारी है:

> (तरजमा) "यह वह हैं कि जब कोई तिजारत या बेहूदगी की बात देखते हैं तो उसकी तरफ़ टूट पड़ते हैं और तुमको खड़ा हुआ छोड़ जाते हैं।"

और ऐसे भी थे जिनके दिमाग़ों में जाहेलियत की बू बसी हुई थी और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पैग़म्बरे अकरम[स0] की रेहलत के बाद अपनी साबेक़ा सीरत की तरफ़ पलट गये। चुनाँचे मोहम्मद इब्ने इस्माईल बुख़ारी यह हदीस तहरीर करते हैं :

(तरजमा) "फ़रमाया कि क़यामत के दिन मेरे असहाब की एक जमाअत मेरे पास आयेगी जिसे हौज़े कौसर से हटा दिया जायेगा। मैं उस मौक़े पर कहूंगा कि ऐ मेरे परवर दिगार! यह तो मेरे असहाब हैं। इरशाद होगा कि तुम्हें ख़बर नहीं है कि इन्होंने तुम्हारे बाद दीन में क्या क्या बिद्अतें पैदा कीं। यह तो उल्टे पांव अपने साबेक़ा मज़हब की तरफ़ पलट गये थे।"(सही बुख़ारी बाबुल हौज़)

इन हालात में इन सबके मुतअल्लिक़ यकसां हुस्ने अक़ीदत रखना और इन सबको एक–सा आदिल क़रार दे लेना एक तक़लीदी अक़ीदत का नतीजा तो सकता है मगर वाक़िआत व हक़ाएक़ की रौशनी में परखने के बाद उस अक़ीदे पर बरक़रार रहना बहुत मुश्किल है। आख़िर एक होशमन्द इन्सान यह सोंचने पर मजबूर होगा कि पैग़म्बर[स0] के रेहलत फ़रमाते ही यह एक दम इन्क़ेलाब कैसे रूनुमा हो गया कि उनके ज़िन्दगी में तो उनके मरातिब व दरजात में इम्तियाज़ हो और अब सब के सब एक सतेह पर आकर आदिल क़रार पा जायें और उन्हें हर तरह के नक़द व जरह से बालातर समझते हुए अपनी अक़ीदत का मरकज़ बना लिया जाये; आख़िर क्यों? बेशक बैअते रिज़वान के मौक़े पर अल्लाह तआला ने उनके मुतअल्लिक़ अपनी ख़ुशनूदी का इज़हार किया चुनाँचे इरशादे इलाही है : "जिस वक़्त ईमान लाने वाले तुम से दरख़्त के नीचे बैअत कर रहे थे तो ख़ुदा उनकी इस बात से ज़रूर ख़ुश हुआ।" तो इस एक बात से ख़ुशनूद होने के माने यह नहीं होंगे कि बस अब इनका हर अमल और हर इक़्दाम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रिज़ामन्दी ही का तर्जुमान होगा और अब वह जो चाहें करें यह ख़ुशनूदी उनके शरीके हाल ही रहेगी, और फिर यह कि ख़ुदा वन्दे आलम ने इस आयत में अपनी रिज़ामन्दी को सिर्फ़ बैअत से वाबस्ता नहीं किया बल्कि बैअत और ईमान दोनों के मजमूए से वाबस्ता किया है लेहाज़ा यह रिज़ामन्दी सिर्फ़ उनसे मुतअल्लिक़ होगी जो दिल से ईमान लाये हों, और अगर कोई मुनाफ़िक़त के साथ इज़हारे इस्लाम करके बैअत करे तो उससे रिज़ामन्दी का तअल्लुक़ साबित नहीं होगा, और फिर जहां यह रिज़ामन्दी साबित हो वहां यह कहां ज़रूरी है कि वह बाक़ी व बरक़रार भी रहेगी, क्योंकि यह ख़ुशनूदी तो इस मुआहदे पर मब्नी थी कि वह दुश्मन के मुक़ाबले में पैग़म्बरे अकरम[स०] का साथ नहीं छोड़ेंगे और जेहाद के मौके़ पर जम कर हरीफ़ का मुक़ाबला करेंगे। तो अगर वह इस मुआहदे के तक़ाज़ों को नज़र अन्दाज़ करके मैदान से मुंह मोड़ लें और बैअत के मातहत किये हुए क़ौल व क़रार को पूरा न करें तो यह ख़ुशनूदी कहां बाक़ी रह सकती है, और वाक़िआत यह बताते हैं कि उनमें से ऐसे अफ़राद भी थे जिन्होंने इस मुआहदे को दरख़ोरे एतना नहीं समझा और हिमायते पैग़म्बर[स०] के फ़रीज़े को नज़र अन्दाज़ कर दिया। चुनाँचे जंगे हुनैन इसकी शाहिद है कि जो इस्लाम की आख़िरी जंग थी। अगरचे इसके बाद ग़ज़वए ताएफ़ व ग़ज़वए तबूक पेश आया। मगर इन ग़ज़वों में जंग की नौबत नहीं आई। इस आख़िरी मारके में मुसलमानों की तादाद चार हज़ार से ज़्यादा थी जो दुश्मन की फ़ौज से कहीं ज़्यादा थी। मगर इतनी बड़ी फ़ौज में से सिर्फ़ सात आदमी निकले जो मैदान में जमे रहे और बाक़ी दुश्मन के मुक़ाबले में मैदान छोड़ कर चले गये। चुनाँचे क़ुरआन मजीद में है : "ज़मीन अपनी वुसअत के बावजूद तुम पर तंग हो गयी फिर तुम पीठ फिरा कर चल दिये" यह कोई और न थे बल्कि वही लोग थे जो बैअते रिज़वान में शरीक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

थे। चुनाँचे पैग़म्बर[स०] ने इस मुआहिदे का ज़िक्र करते हुए अब्बास[रज़ि०] से फ़रमाया :

(तरजमा) "इन दरख़्तों के नीचे बैअत करने वाले मुहाजिरों को पुकारो और उन पनाह देने वाले और मदद करने वाले अन्सार को लल्कारो।" (सेवती जिल्द 3 स0 270)

क्या इस मौक़े पर यह तसव्वुर किया जा सकता है कि अल्लाह की ख़ुशनूदी उनके शामिले हाल रही होगी। हरगिज़ नहीं, क्योंकि ख़ुशनूदी तो सिर्फ़ मुआहिदे से वाबस्ता थी और जब इस मुआहिदे की पाबन्दी न की जा सकी तो ख़ुशनूदी के क्या माने, और बैअते रिज़वान में शामिल होने वाले भी यह समझते थे कि अल्लाह की ख़ुशनूदी बशर्ते उस्तवारी ही बाक़ी रह सकती थी। चुनानचे मोहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी तहरीर करते हैं :

(तरजुमा) "हिलाल इब्ने मुसय्यब अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा कि मैंने बरॉ इब्ने आज़िब से मुलाक़ात की और उनसे कहा कि ख़ुशा नसीब तुम्हारे कि तुम नबी[स०] की सोहबत में रहे और दरख़्त के नीचे उनके हाथ पर बैअत की। फ़रमाया कि ऐ बिरादर ज़ादे! तुम नहीं जानते कि हमने उनके बाद क्या क्या बिदअतें पैदा कीं।" (सही बुख़ारी जिल्द 3 स0 30)

लेहाज़ा न महज़ सहाबियत कोई दलीले अदालत है और न बैअते रेज़वान से उनकी अदालत पर दलील लाई जा सकती है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अपने लिये और अपने दोस्तों के लिये हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजुमा) "ऐ वह जिसकी बुज़ुर्गी व अज़मत के अजाएब ख़त्म होने वाले नहीं; तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें अपनी अज़मत के परदों में छुपा कर कजअन्देशियों से बचा ले। ऐ वह जिसकी शाही व फ़रमारवाई की मुद्दत ख़त्म होने वाली नहीं तू रहमत नाज़िल कर मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमारी गर्दनों को अपने ग़ज़ब व अज़ाब (के बन्धनों) से आज़ाद रख। ऐ वह जिसकी रहमत के ख़ज़ाने ख़त्म होने वाले नहीं; रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और अपनी रहमत में हमारा भी हिस्सा क़रार दे। ऐ वह जिसके मुशाहिदे से आंखें क़ासिर हैं। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और अपनी बारगाह से हम को क़रीब कर ले। ऐ वह जिसकी अज़मत के सामने तमाम अज़मतें पस्त व हक़ीर हैं, रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमें अपने हां इज़्ज़त अता कर। ऐ वह जिसके सामने राज़हाए सरबस्ता ज़ाहिर हैं रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमें अपने सामने रुसवा न कर। बारे इलाहा! हमें अपनी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बख़्शिश व अता की बदौलत बख़्शिश करने वालों की बख़्शिश से बेनियाज़ कर दे और अपनी पैवस्तगी के ज़रिये क़तअ तअल्लुक़ करने वालों के बेतअल्लुक़ी व दूरी की तलाफ़ी कर दे ताकि तेरी बख़्शिश व अता के होते हुए दूसरे से सवाल न करें और तेरे फ़ज़्ल व एहसान के होते हुए किसी से हरासां न हों। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमारे नफ़अ की तदबीर कर और हमारे नुक़्सान की तदबीर न कर और हम से मक्र करने वाले दुश्मनों को अपने मक्र का निशाना बना और हमें उसकी ज़द पर न रख, और हमें दुश्मनों परग़लबा दे दुश्मनों को हम पर ग़लबा न दे। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें अपनी नाराज़ी से महफ़ूज़ रख और अपने फ़ज़्ल व करम से हमारी निगेहदाश्त फ़रमा अपनी जानिब हमें हिदायत कर और अपनी रहमत से दूर न कर कि जिसे तू अपनी नाराज़ी से बचायेगा वही बचेगा और जिसे तू हिदायत करेगा वही (हक़ाएक़ पर) मत्तलाअ होगा और जिसे तू (अपनी रहमत से) क़रीब करेगा वही फ़ायदे में रहेगा। ऐ मअबूद! तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें ज़माने के हवादिस की सख़्ती और शैतान के हथकण्डों की फ़ितनाअंगेज़ी और सुल्तान के क़हर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व ग़लबे की तलख़कामी से अपनी पनाह में रख। बारे इलाहा! बेनयाज़ होने वाले तेरे ही कमाले क़ूव्वत व इक़्तिदार के सहारे बेनयाज़ होते हैं। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमें बेनयाज़ कर दे और अता करने वाले तेरी ही अता, व बख़्शिश के हिस्सए वाफ़िर में से अता करते हैं। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमें भी (अपने ख़ज़ानए रहमत से) अता फ़रमा, और हिदायत पाने वाले तेरी ही ज़ात की दरख़्शन्दगियों से हिदायत पाते हैं। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमें हिदायत फ़रमा। बारे इलाहा! जिसकी तूने मदद की उसे मदद न करने वालों का मदद से महरूम रखना कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता, और जिसे तू अता करे उसके हां रोकने वालों के रोकने से कुछ कमी नहीं हो जाती। और जिसकी तू ख़ुसूसी हिदायत करे उसे गुमराह करने वालों का गुमराह करना बेराह नहीं कर सकता। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और अपने ग़ल्बे व कुव्वत के ज़रिये बन्दों (के शर) से हमें बचाये रख और अपनी अता व बख़्शिश के ज़रिये दूसरों से बेनयाज़ कर दे और अपनी रहनुमाई से हमें राहे हक़ पर चला। ऐ मअबूद! तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हमारे दिलों की सलामती अपनी अज़मत की याद में क़रार दे और हमारी जिस्मानी फ़रागत (के लम्हों) को अपनी नेअमत के शुक्रिये में सर्फ़ कर दे और हमारी ज़बानों की गोयाई को अपने एहसान की तौसीफ़ के लिये वक़्फ़ कर दे ऐ अल्लाह! तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमें उन लोगों में से क़रार दे जो तेरी तरफ़ दावत देने वाले और तेरी तरफ़ का रास्ता बताने वाले हैं और अपने ख़ासुल ख़ास मुक़र्रबीन में से क़रार दे ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले।"

यह दुआ जिसकी इब्तिदा अज़मते इलाही के तज़करे से है बन्दों को अल्लाह की अज़मत व रिफ़अत के आगे झुकने और सिर्फ़ उसी से सवाल करने की तालीम देती है। अगर इन्सान हर दरवाज़े से अपनी हाजतें वाबस्ता करेगा तो यह चीज़ इज़्ज़ते नफ़्स व खुद्दारी के मनाफ़ी होने के अलावा ज़ेहनी इन्तेशार का बाएस बन कर उसे हमेशा परेशानियों और उलझनों में मुब्तला रखेगी और जो शख़्स क़दम क़दम पर दूसरों का सहारा ढूंढ़ता है और हर वक़्त यह आस लगाये रहता है कि यह मक़सद फ़लां से पूरा होगा और यह काम फ़लां शख़्स के ज़रिये अन्जाम पायेगा तो कभी किसी की चौखट पर झुकेगा और कभी किसी के आस्ताने पर सरे नयाज़ ख़म करेगा कभी किसी से तवक़्क़ो रखेगा और कभी किसी से उम्मीद बांधेगा, कहीं मायूसी का सामना होगा कहीं ज़िल्लत का और नतीजे में ज़ेहन मुन्तशिर और ख़यालात परागन्दा हो जायेंगे। न सुकूने क़ल्ब नसीब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होगा न ज़ेहनी यकसूई हासिल होगी और अगर उसकी तमाम उम्मीद आरज़ूओं और हाजतों का एक ही महवर हो तो वह अपने को इन्तिशा ज़ेहनी से बचा ले जा सकता है। उसे यूं समझना चाहिये कि अगर को शख़्स छोटी छोटी रक़्मों का बहुत से आदमियों का मक़रूज़ हो और सुब से शाम तक उसे मुख़्तलिफ़ क़र्ज़ख़्वाहों से निपटना पड़ता हो तो वह य चाहेगा कि मुतअद्दिद आदमियों का मक़रूज़ होने के बजाये एक ही आदम का मक़रूज़ हो। अगरचे उससे क़र्ज़े की मिक़दार में कमी वाक़ेअ नहीं होग मगर मुतअद्दिद क़र्ज़ख़्वाहों के तक़ाज़ों से तो बच जायेगा। अब तक़ाज़ होगा तो एक का और ज़ेरबारी होगी तो एक की, और अगर यह मालूम ह कि वह क़र्ज़ख़्वाह ज़्यादा तक़ाज़ा करने वाला नहीं है और न होने की सूर में दरगुज़र करने वाला भी है तो उससे ज़ेहनी बार और हल्का हो जायेगा इसी तरह अगर कोई अपनी हाजतों और तलबगारियों का एक ही मरकज़ क़रार दे ले और सिर्फ़ उसी से अपने तवक़्क़आत वाबस्ता करे और तमा मुत्तफ़र्रिक़ व पाशां और नाक़ाबिले इत्मिनान मरकज़ों से रूख़ मोड़ ले त उसके नतीजे में ज़ेहनी आसूदगी हासिल कर सकता है और दिल व दिमा को परेशान ख़याली से बचा ले जा सकता है। गोया कि वह मुतअद्दि क़र्ज़ख़्वाहों के चंगुल से छूट कर अब सिर्फ़ एक का ज़ेरे बार और हलक़ ब–गोश है :

एक दर पा बैठ गर है तवक्कुल करीम पर
अल्लाह के फ़क़ीर को फेरा न चाहिये

इस दुआ में हर जुमले के बाद दुरूद का तकरार इस्तेजाबते दुआ वे लिये है क्योंकि दुआ में मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर दुरूद भेजन इस्तेजाबते दुआ का ज़िम्मेदार और उसकी क़ुबूलियत का ज़ामिन है और वह दुआ जिसका तकमला दुरूद न हो वह बाबे क़ुबूलियत तक नहीं पहुंचती

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

चुनाँचे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

"दुआ उस वक़्त तक रूकी रहती है जब तक मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर दुरूद न भेजा जाये।"

दुआए सुबह व शाम

(तरजुमा) "सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने अपनी कूव्वत व तवानाई से शब व रोज़ को खल्क़ फ़रमाया और अपनी क़ुदरत की कारफ़रमाई से उन दोनों में इम्तियाज़ क़ायम किया और इनमें से हर एक को मोअय्यना हुदूद व मुक़र्ररा औक़ात का पाबन्द बनाया, और उनके कम व बेश होने का जो अन्दाज़ा मुक़र्रर किया उसके मुताबिक़ रात की जगह पर दिन और दिन की जगह पर रात को लाता है ताकि इस ज़रिये से बन्दों की रोज़ी और उनकी परवरिश का सरो सामान करे। चुनांचे उसने उनके लिये रात बनाई ताकि वह इसमें थका देने वाले कामों और ख़स्ता कर देने वाली कुल्फ़तों के बाद आराम करें और इसे पर्दा क़रार दिया ताकि सुकून की चादर तान कर आराम से सोयें और यह उनके लिये राहत व निशात और तबई कूव्वतों के बहाल होने और लज़्ज़त व कैफ़ अन्दोज़ी का ज़रिया हो! और दिन को उनके लिये रौशन व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुरख़्शां पैदा किया ताकि इसमें (कारोकस्ब में सरगर्मे अमल होकर) उसके फ़ज़्ल की जुस्तुजू करें और रोज़ी का वसीला ढूंढ़ें और दुनियावी मुनाफ़े और ओख़रवी फ़वाएद के वसाएल तलाश करने के लिये उसकी ज़मीन में चलें फिरें। इन तमाम कारफ़रमाईयों से वह उनके हालात संवारता और उनके आमाल की जांच करता है और यह देखता है कि वह लोग एताअत की घड़ियों, फ़राएज़ की मंज़िलों और तामीले एहकाम के मौक़ों पर कैसे साबित होते हैं ताकि बुरों को उनकी बद्आमालियों की सज़ा और नेकूकारों को अच्छा बदला दे। ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ व तौसीफ़ है कि तूने हमारे लिये (रात का दामन चाक करके) सुबह का उजाला किया और इस तरह दिन की रौशनी से हमें फ़ायदा पहुंचाया और तलबे रिज़्क़ के मवाक़े हमें दिखाये और इसमें आफ़ात व बलइयात से हमें बचाया। हम और हमारे अलावा सब चीज़ें तेरी हैं। आसमान भी और ज़मीन भी और वह सब चीज़ें जिन्हें तूने उनमें फैलाया है। वह साकिन हों या मुतहर्रिक, मुक़ीम हों या राहे नोरिद, फ़िज़ा में बुलन्द हों या ज़मीन की तहों में पोशीदा। हम तेरे क़ब्ज़ए कुदरत में हैं और तेरा इक़्तिदार और तेरी बादशाहत हम पर हावी है और तेरी मशीय्यत का मुहीत हमें घेरे हुए है। तेरे हुक्म से हम तसर्रुफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करते और तेरी तदबीर व कारसाज़ी के तहत हम एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ पलटते हैं जो अम्र तूने हमारे लिये नाफ़िज़ किया और जो ख़ैर और भलाई तूने हमें बख़्शी इसके अलावा हमारे अख़्तियार में कुछ नहीं है और यह दिन नया और ताज़ा वारिद है जो हम पर ऐसा गवाह है जो हमावक़्त हाज़िर है। अगर हमने अच्छे काम किये तो वह तौसीफ़ व सना करते हुए हमें रुख़सत करेगा और अगर बुरे काम किये तो बुराई करता हुआ हम से अलाहदा होगा। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें उस दिन की अच्छी रिफ़ाक़त नसीब करना और किसी ख़ता के इरतेकाब करने या सग़ीरा व कबीरा गुनाह में मुब्तला होने की वजह से उसके चीं ब जबीं होकर रुख़सत होने से हमें बचाये रखना और इस दिन में हमारी नेकियों का हिस्सा ज़्यादा कर, और बुराईयों से हमारा दामन ख़ाली रख, और हमारे लिये इसके आग़ाज व अन्जाम को हम्दो सिपास, सवाब व ज़ख़ीरए आख़ेरत और बख़्शिश व एहसान से भर दे। ऐ अल्लाह! करामन् कातेबीन पर (हमारे गुनाह क़लमबन्द करने की) ज़हमत कम कर दे और हमारा नामए आमाल नेकियों से भर दे और बद्आमालियों की वजह से हमें उनके सामने रुसवा न कर। बारे इलाहा! तू उस दिन के लम्हों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में से हर लम्हा व साअत में अपने ख़ास बन्दों का हज़ व नसीब और अपने शुक्र का एक हिस्सा और फ़रिश्तों में से एक सच्चा गवाह हमारे लिये क़रार दे। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और आगे पीछे और दाहिने और बांय और तमाम अतराफ़ व जवानिब से हमारी हिफ़ाज़त कर। ऐसी हिफ़ाज़त जो हमारे लिये गुनाह व मअसियत से सद्देराह हो तेरी एताअत की तरफ़ रहनुमाई करे और तेरी मोहब्बत में सर्फ़ हो। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा, और हमें आज के दिन और आज की रात और ज़िन्दगी के तमाम दिनों में तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि हम नेकियों पर अमल करें, बिद्अतों से अलग थलग रहें और नेक कामों का हुक्म दें और बुरे कामों से रोकें। इस्लाम की हिमायत व तरफ़दारी करें, बातिल को कुचलें और उसे ज़लील करें। हक़ की नुसरत करें और उसे सरबुलन्द करें। गुमराहों की रहनुमाई, कमज़ोरों की एआनत और दर्दमन्दों की चाराजूई करें। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा, और आज के दिन को उन तमाम दिनों से जो हमने गुज़ारे ज़्यादा मुबारक दिन और उन तमाम साथियों से जिनका हमने साथ दिया उसको बेहतरीन रफ़ीक़ और उन तमाम वक़्तों से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिनके ज़ेरे साया हमने ज़िन्दगी बसर की उसको बेहतरीन वक़्त क़रार दे और हमें उन तमाम मख़लूक़ात में से ज़्यादा राज़ी व ख़ुशनूद रख जिन पर शब व रोज़ के चक्कर चलते रहे हैं और उन सब से ज़्यादा अपनी अता की हुई नेअमतों का शुक्रगुज़ार और उन सबसे ज़्यादा अपने जारी किये हुए एहकाम का पाबन्द और उन सबसे ज़्यादा उन चीज़ों से किनाराकशी करने वाला क़रार दे जिनसे तूने ख़ौफ़ दिला कर मना किया है। ऐ ख़ुदा! मैं तुझे गवाह करता हूं और तू गवाही के लिये काफ़ी है और तेरे आसमान और तेरी ज़मीन को और उनमें जिन जिन फ़रिश्तों और जिस जिस मख़लूक़ को तूने बसाया है। आज के दिन और इस घड़ी और इस रात में और इस मक़ाम पर गवाह करता हूं कि मैं इस बात का मोअतरिफ़ हूं कि सिर्फ़ तू ही वह मअबूद है जिसके अलावा कोई मअबूद नहीं। इन्साफ़ का क़ायम करने वाला हुक्म में अदल मल्हूज़ रखने वाला, बन्दों पर मेहरबान, इक़्तिदार का मालिक और कायनात पर रहम करने वाला है, और इस बात की भी शहादत देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम तेरे ख़ास बन्दे, रसूल[स०] और बरगुज़ीदए कायनात हैं। उन पर तूने रिसालत की ज़िम्मेदारियां आयद कीं तो उन्होंने उसे पहुंचाया, और अपनी उम्मत को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पन्द व नसीहत करने का हुक्म दिया तो उन्होंने नसीहत फ़रमाई। हमारी तरफ़ से उन्हें वह बेहतरीन तोहफ़ा अता कर जो तेरे हर उस इनाम से बढ़ा हुआ हो जो अपने बन्दों में से तूने किसी एक को दिया हो, और हमारी तरफ़ से उन्हें वह जज़ा दे जो हर उस जज़ा से बेहतर व बरतर हो जो अम्बिया में से किसी एक को तूने उसकी उम्मत की तरफ़ से अता फ़रमाई हो। बेशक तू बड़ी नेअमतों का बख़्शने वाला और बड़े गुनाहों से दरगुज़र करने वाला और हर रहीम से ज़्यादा रहम करने वाला है। लेहाज़ा तू मोहम्मद[स०] और उनकी पाक व पाकीज़ा और शरीफ़ व नजीब औलाद पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

इस दुआ का सरनामा "दुआए सुबह व शाम" है जिसमें एख़्तिलाफ़े शब व रोज़ की करिश्मासाज़ी, औक़ात की तब्दीली व तनव्वोअ की हिकमत और कुदरत के इरादे व मशीयत की कारफ़रमाई का ज़िक्र फ़रमाया है और हुस्ने अमल, शुक्रे नेअमत, इत्तिबाए सुन्नत, तर्के बिदअत, अम्र बिलमआरूफ़ व नही अनिल मुन्कर, इस्लाम की तरफ़दारी व हिफ़ाज़त, बातिल की तज़लील व सरकूबी, हक़ की नुसरत व हिमायत, इरशाद व हिदायत में सरगर्मी और कमज़ोर व नातवां की ख़बरगीरी के लिये तौफ़ीक़े इलाही के शामिले हाल होने की दुआ फ़रमाई है ताकि दुआ के तास्सुरात, अमली इस्तेहकाम का पेश ख़ेमा साबित हों और ज़िन्दगी के लम्हात मक़सदे हयात की तकमील में सर्फ़ हों।

यह औक़ात का तबद्दुल, तुलूअ व गुरूब का तसलसुल और सुबह के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बाद शाम और शाम के बाद सपेदए सहर की नमूद कारफ़रमाए फ़ितरत की वह हसीन कारफ़रमाई है जो निगाहों के लिये हज़ व कैफ़ और क़ल्ब व रूह के लिये सुरूर व निशात का सामान होने के अलावा बेशुमार मसालेह व फ़वाएद की भी हामिल है। चुनाँचे शब व रोज़ की तअय्युन महीनों और सालों का इन्ज़ेबात और कारोबार, मईशत और आराम व इस्तेराहत के औक़ात की हद बन्दी इसी से वाबस्ता है और फिर इसमें ज़िन्दगी की तस्कीन व राहत का भी सामान है क्योंकि वक़्त अगर हमेशा एक हालत पर रहता और लैल व नहार के सियाह व सफ़ैद वर्क़ निगाहों के सामने उलटे न जाते तो तबीअतें बेकैफ़, दिल सैर और ज़िन्दगी के लिए दिल बस्तर्गी के तमाम ज़राए ख़त्म हो जाते और हुस्ने यक रंग आंखों में खटकने लगता, और नग़मा बेज़ेरो–बम वबाल गोश हो जाता, क्योंकि इन्सान की तनव्वोअ पसन्द तबीअत यकसानी व यकरंगी की हालत से जल्द उक्ता जाती है इस लिये कुदरत ने इन्सानी तबीअत के ख़्वास के मुताबिक़ शब व रोज़ की तफ़रीक़ क़ायम कर दी ताकि शाम के बाद सुबह और सुबह के बाद शाम का इन्तेज़ार ज़िन्दगी की ख़स्तगियों और उसकी मुसलसल उलझनों और परेशानियों से सहारा देता रहे। चुनांचे कुदरत ने एख़्तलाफ़े शब व रोज़ की मसलेहत की तरफ़ मुतवज्जह करते हुए इरशाद फ़रमाया है :–

(तरजुमा) "अगर ख़ुदा तुम्हारे लिये क़यामत के दिन तक दिन ही रखता तो अल्लाह के अलावा और कौन है जो तुम्हारे लिये रात लाता कि तुम उसमें आराम करो। क्या तुम इतना भी नहीं देखते, और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिये रात और दिन क़रार दिये हैं ताकि रात को आराम करो और दिन को उसका रिज़्क़ तलाश करो ताकि इसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नतीजे में तुम शुक्र अदा करो।"

इसी नज़्मे औक़ात का नतीजा है कि जब सुबह नमूदार होती है और सूरज की ताब नाक किरनें फ़ज़ा में फैल कर कारगाहे हस्ती के गोशे गोशे को जगमगा देती हैं तो ख़ामोश व पुरसुकून फ़िज़ा में गहमागहमी शुरू हो जाती है। परिन्दे आशियानों से हैवान भटों और खोओं से, कीड़े मकोड़े बिलों और सुराख़ों से और इन्सान झोंपड़ों और मकानों से निकल खड़े होते हैं। हरकत व अमल की दुनिया आबाद हो जाती है और हर सिन्फ़ अपने कारोकसब में मसरूफ़ और अपने मशाग़ल में सरगर्मे अमल नज़र आने लगती है। परिन्दे फ़िज़ा में, हैवान ज़मीन के ऊपर से और कीड़े मकोड़े ज़मीन के अन्दर से अपनी रोज़ी ढूंढ़ने लगते हैं और चियूंटियां भी अपनी मुख़्तसर जसामत के बावजूद सऒ पैहम व जेहद मुसलसल का वह मुज़ाहरा करती हैं कि इन्सानी अक़लें दंग रह जाती हैं धूप हो या साया न मेहनत से जी चुराती हैं न मशक़्क़त से मुंह मोड़ती हैं और हर वक़्त दौड़ धूप करती और तलब व तलाश में मसरूफ़ नज़र आती हैं। ग़र्ज़ कायनात की हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी मख़लूक़ मेहनत व काविश को अपना दस्तूरे हयात बनाये हुए पेट पालने के लिये भाग दौड़ करती है और कमज़ोर से कमज़ोर हैवान भी यह गवारा नहीं करता कि जब तक उसके हाथ पांव में सकत है बेकार पड़ा रहे और अपने हमजिन्सों से भीक मांगे और उनके आगे हाथ फैलाये। यह हैवानी सीरत इन्सानी ग़ैरत के लिये एक ताज़ियाना है और इन्सान के लिये एक दाइयए फ़िक्र है कि जब हैवान उसकी सतह से कहीं पस्त तर होने के बावजूद सवाल में आर महसूस करता है तो वह अपने हम जिन्सों के आगे किस तरह हाथ फैलाना गवारा कर लेता है। इन्सानी बुलन्दी का तक़ाज़ा तो यह है कि अपने कुव्वते बाज़ू से कमाये और सवाल की ज़िल्लत और एहतियाज की निक्बत से इज़्ज़ते

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़्स पर हर्फ़ न आने दे वह अफ़राद जो तने आसानी की वजह से बेकार ड़े रहते हैं वह आराम व सुकून की हक़ीक़ी लज़्ज़त से यकसर महरूम हते हैं। सच्ची राहत और असली सुकून तो मेहनत व मशक़्क़त के बाद ही ासिल होता है। साये की क़द्रो क़ीमत को वही जान सकता है जो सूरज ी तमाज़त और धूप की तपिश में मसरूफ़ेकार हो और ठण्डी हवा के झोंकों । वही कैफ़ अन्दोज़ हो सकता है जो गर्मी व हिद्दत की शोलाबारियों में सीने से शराबोर हो, और रात के पुरसुकून लम्हात उसी के लिये सुकून व ाहत का पैग़ाम साबित हो सकते हैं जिसका दिन मेहनत व जफ़ाकशी का ामिल हो। चुनांचे एक टोकरी ढोने वाला मज़दूर और चिलचिलाती धूप में ल चलाने वाला किसान जब दिन के कामों से फ़ारिग़ होता है तो फ़ितरत ी फ़राग़ हौसलगी से उसके लिये सरो सामाने राहत मोहय्या कर देती है। ूरज का चिराग़ गुल हो जाता है, चांद की हल्की और ठण्डी शुआओं का ामियाना तन जाता है सितारों की क़ंदीलें टिमटिमाने लगती हैं शफ़क़ के गीन पर्दे आवेज़ां हो जाते हैं। हरी भरी घास का मख़मली फ़र्श बिछ जाता । शाख़ें झूम कर मरूहा जन्बानी करती हैं और पत्ते हवा के झोंकों से कराकर फ़िज़ा के दामन को ख़्वाब और नग़मों से भर देते हैं और फ़र्शे मीन के ऊपर और शामियानए फ़लक के नीचे सोने वाला रात की सियाह ादर ओढ़ कर आराम से सो जाता है। क्या इसके मुक़ाबले में वह काहिल आराम तलब जिसके हां नर्म व गुदाज़ गद्दे, आरामदेह मसहरियां, हवा लहरें पैदा करने वाली बिजली के पंखे और आंखों को ख़ीरगी से बचाने ाले हल्के सब्ज़ रंग के कुमकुमे और दूसरे मसनवी और ख़ुद साख़्ता सामाने ासाइश मोहय्या हों ज़्यादा पुरसुकून व पुरकैफ़ रात बसर कर सकता है? हरहाल कारख़ानए हस्त व बूद की बू क़लमूनिया और फ़ितरत की तनव्वूअ रानाइयां इन्सान के हिस्सियात की तस्कीन और ज़िन्दगी की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दिलबस्तगी व आसाइश का मुकम्मल सरो सामान लिये हुए हैं, लेकिन यह आलम के दिल आवेज़ नक़ूश और राहत व आसाइश के सामान किस लिये हैं? क्या इस लिये हैं कि इन्सान चन्द दिन खाये पिये, घूमे, फिरे और फिर क़ब्र में जा सोये। अगर ऐसा हो तो ज़िन्दगी का कोई मआल व मक़सद ही नहीं रहता। हालंकि दुनियाए कायनात की हर चीज़ का एक मक़सद और एक मुद्दआ है तो फिर ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के सरो सामान बग़ैर मक़सद के क्योंकर हो सकते हैं। इसका भी कोई मक़सद होना चाहिये और वह मक़सद सिर्फ़ आख़ेरत की ज़िन्दगी है। जिसकी सआदतों और कामरानियों को हासिल करने के लिये दुनिया को एक ज़रिया और इम्तेहानगाह क़रार दिया गया है। चुनाँचे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "लेकिन जो उसने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हें आज़माना चाहता है लेहाज़ा नेकियों की तरफ़ बढ़ने में एक दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश करो।"

यह आज़माइश इसी सूरत में आज़माइश रह सकती है जब उन नेकियों पर अमल पैरा होने और उनमें सबक़त ले जाने में इन्सानी अख़्तियार का अमल दख़ल हो और अगर वह ईमान व अमले सालेह पर मजबूर हो तो आज़माइश के माने ही क्या बल्कि ऐसी सूरत में तो हर एक को ईमान लाना पड़ता और आमाल बजा लाने पड़ते क्योंकि क़ुदरत अपनी बात के मनवाने में मजबूर व क़ासिर नहीं है। चुनाँचे इरशादे इलाही है :–

(तरजमा) "और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो ज़मीन में बसने वाले सबके सब उस पर ईमान ले आते।"

बेशक कायनात का हर ज़र्रा उसकी मशीय्यत के ताबे है। इस तरह कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कोई उसके मुहीत इक़्तेदार से बाहर नहीं है वह ज़मीन हो या उस पर चलने फिरने वाली मख़लूक़। पहाड़ों या उनके दामन में मअदनियात; दरिया हों या उनमें रहने वाली मछलियां; समन्दर हों या उनमें अम्बर मूंगे और मोतियों के ख़ज़ाने; फ़िज़ा हो या उसमें परवाज़ करने वाले परिन्दे; बादलों के लक्के हों या उनमें उमड़ते हुए पानी के ज़ख़ीरे; चांद सूरज हों या उनकी जौहरी शुआयें; सितारे हों या उनकी मख़सूस तासीरें; फ़रिश्ते हों या उनकी सरगर्मियां सब ही तो उसकी मशीय्यत के अन्दर जकड़ी बन्धी हुई हैं। अगर इन्सान भी एतक़ाद व आमाल में इसी तरह बेबस होता और मशीय्यत हर एक को एक मख़सूस तरीक़ेकार का पाबन्द बना देती तो जज़ा व सज़ा बेकार हो जाती। हालांकि क़ानूने मकाफ़ात की रू से जज़ा व सज़ा से दो चार होना ज़रूरी है जैसा कि इरशादे इलाही है :–

> (तरजमा) "अगर उसने अच्छा काम किया तो अपने फ़ायदे के लिये और बुरा काम किया तो उसका वबाल उसके सर पड़ेगा।"

तो जब अपने ही आमाल सामने आते हैं तो वही औक़ात व लम्हाते ज़िन्दगी का सरमाया हैं जिनमें आमाल ख़ैर के ज़रिये आख़ेरत का सरमाया बहम पहुंचा लिया गया हो, और वही शब व रोज़ मुबारक व मसऊद हैं जिनमें ओख़रवी हलाकत व तबाही से बचने का सामान कर लिया गया हो। यह दिन और यह रातें हमारे अच्छे और बुरे आमाल की निगरान हैं। अगर उनके सामने हमारी नेकियां आती हैं तो उनकी पेशानी की गिरहें खुल जाती हैं और उनके चेहरे पर मुस्कुराहट फैल जाती है और वह हम से ख़ुश ख़ुश रुख़सत होते हैं, और अगर बुराईयों को देखते हैं तो उनकी जबीन पर शिकनें पड़ जाती हैं और बुराई करते हुए रुख़सत होते हैं। चुनाँचे हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजमा) "इन्सान की ज़िन्दगी का जो दिन गुज़रता है वह (ज़बाने हाल से) ख़िताब करते हुए उससे कहता है कि मैं तेरे लिये नया दिन और तेरे आमाल का गवाह हूँ। लेहाज़ा ज़बान और आज़ा से नेक अमल करो। मैं इसकी क़यामत के दिन गवाही दूंगा।"

लेहाज़ा सुबह की पुरसुकून फ़िज़ा और सितारों की ठण्डी छांव में आने वाले दिन का इस्तेक़बाल इस दुआ से किया जाये ताकि कम अज़ कम उस दिन तो उसके तास्सुरात हमारी ज़िन्दगी पर छाये रहें, और फ़िक्र व अमल की पाकीज़गी हमारे तसव्वुरात पर मुहीत रहे और यही इस दुआ का मरकज़ी नुक़्तए निगाह है।

जब कोई मुहिम दरपेश होती या कोई मुसीबत नाज़िल होती या किसी क़िस्म की बेचैनी होती तो हज़रत यह दुआ पढ़ते थे

(तरजमा) "ऐ वह जिसके ज़रिये मुसीबतों के बन्धन खुल जाते हैं। ऐ वह जिसके बाइस सख़्तियों की बाढ़ कुन्द हो जाती है। ऐ वह जिससे (तंगी व दुशवारी से) वुसअत व फ़राख़ी की आसाइश की तरफ़ निकाल ले जाने की इल्तेजा की जाती है; तू वह है कि तेरी क़ुदरत के आगे दुश्वारियां आसान हो गयीं; तेरे लुत्फ़ से सिलसिलए असबाब बरक़रार रहा और तेरी क़ुदरत से फ़िज़ा का निफ़ाज़ हुआ और तमाम चीज़ें तेरे इरादे के रूख़ पर गामज़न

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हैं। वह बिन कहे तेरी मशीय्यत की पाबन्द और बिन रोके ख़ुद ही तेरे इरादे से रुकी हुई हैं। मुश्किलात में तुझे ही पुकारा जाता है और बलिय्यात में तू ही जाये पनाह है। इनमें से कोई मुसीबत टल नहीं सकती मगर जिसे तू टाल दे और कोई मुश्किल हल नहीं हो सकती मगर जिसे तू हल कर दे। परवर दिगारा! मुझ पर एक ऐसी मुसीबत नाज़िल हुई है जिसकी संगीनी ने मुझे गिरांबार कर दिया है और एक ऐसी आफ़त आ पड़ी है जिससे मेरी कुव्वते बरदाश्त आजिज़ हो चुकी है। तूने अपनी कुदरत से इस मुसीबत को मुझ पर वारिद किया है और अपने एकतदार से मेरी तरफ़ मुतवज्जेह किया है, तो जिसे तू वारिद करे, उसे कोई हटाने वाला और जिसे तू मुतवज्जेह करे उसे कोई पलटाने वाला, और जिसे तू बन्द करे उसे कोई खोलने वाला और जिसे तू खोले उसे कोई बन्द करने वाला और जिसे तू दुशवार बनाये उसे कोई आसान करने वाला और जिसे तू नज़र अन्दाज़ करे उसे कोई मदद देने वाला नहीं है। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर, और अपनी करम नवाज़ी से ऐ मेरे पालने वाले मेरे लिये आसाइश का दरवाज़ा खोल दे और अपनी कुव्वत व तवानाई से ग़म व अन्दोह का ज़ोर तोड़ दे और मेरे इस शिकवे के पेशे नज़र अपनी निगाहे करम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

का रूख़ मेरी तरफ़ मोड़ दे और मेरी हाजत को पूरा करके शीरीनए एहसान से मुझे लज़्ज़त अन्दोज़ कर, और अपनी तरफ़ से रहमत और ख़ुशगवार आसूदगी मरहमत फ़रमा और मेरे लिये अपने लुत्फ़े ख़ास से जल्द छुटकारे की राह पैदा कर और इस ग़म व अन्दोह की वजह से अपने फ़राएज़ की पाबन्दी और मुस्तहबात की बजाआवरी से ग़फ़लत में न डाल दे, क्योंकि मैं इस मुसीबत के हाथों तंग आ चुका हूं और इस हादसे के टूट पड़ने से दिल रंज व अन्दोह से भर गया है। जिस मुसीबत में मुब्तिला उसके दूर करने और जिस बला में फंसा हुआ हूं उससे निकालने पर तू ही क़ादिर है लेहाज़ा अपनी कुदरत को मेरे हक़ में कारफ़रमा कर। अगरचे तेरी तरफ़ से मैं इसका सज़ावार न क़रार पा सकूं। ऐ अर्शे अज़ीम के मालिक।

जब ज़हरे ग़म रगो पै में उतरता और कर्ब व अन्दोह के शरारों से दिल व दिमाग़ फुंकता है तो दर्दो अलम की टींसे सुकून व क़रार छीन लेती हैं और सब्र व शकीब का दामन हाथ से छूट जाता है। न तसल्ली व तस्कीन का कोई सामान नज़र आता है न सब्र व ज़ब्त की कोई सूरत। ऐसी हालत में यास व नाउम्मीदी कभी जुनून व दीवान्गी में मुब्तिला और कभी मौत का सहारा ढूंढने पर मजबूर कर देती है। अगर इन्सान इस मौक़े पर बुलन्द नज़री से काम ले तो उसे एक ऐसा सहारा मिल सकता है जो हवादिस व आलाम के भंवर और रंज व अन्दोह के सैलाब से निकाल ले जा सकता है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और वह सहारा अल्लाह है। जो इज़्तेराब की तसल्ली और दर्द व कर्ब का चारा कर सकता है। चुनाँचे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है "जब बेचैनी हद से बढ़ जाये तो फिर अल्लाह ही तस्कीन का नरकज़ है।" और अगर अल्लाह की हस्ती पर ईमान न भी हो जब भी फ़ेतरते ख़्वाबीदा करवट ले उसका रास्ता दिखा देती है और मुसीबत व बेचारगी किसी अनदेखी हस्ती के आगे झुकने और उसका सहारा लेने के लिये पुकारती है। चुनानचे एक शख़्स ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से वजूदे बारी के सिलसिले में गुफ़्तुगू की तो आपने उससे दरियाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हें कश्ती पर सवार होने का कभी इत्तेफ़ाक़ हुआ है। उसने कहा हां। फ़रमाया कभी ऐसा इत्तेफ़ाक़ भी पेश आया है कि कश्ती भंवर में घेर गई हो और समन्दर की तिलमिलाती लहरों ने तुम्हें अपनी लपेट में ले लेया हो? उसने कहा कि जी हां, ऐसा भी हुआ है। फ़रमाया कि उस वक़्त तुम्हारे दिल में कोई ख़याल पैदा हुआ था? कहा कि हां। जब हर तरफ़ से नायूसी ही मायूसी नज़र आने लगी तो मेरा दिल कहता था कि एक ऐसी बालादस्त कुव्वत भी मौजूद है जो चाहे तो इस भंवर से मुझे निकाल ले जा सकती है। फ़रमाया बस वही तो ख़ुदा था जो इन्तेहाई मायूसकुन हालतों में भी मायूस नहीं होने देता, और जब कोई सहारा न रहे तो वह सहारा साबित होता है। चुनाँचे जब इन्सान अल्लाह तआला पर मुकम्मल यक़ीन व एतमाद पैदा करके उस पर अपने उमूर को छोड़ देता है तो वह अपनी ज़ेहनी कुव्वतों को मुन्तशिर होने से बचा ले जाता है, और जब हमातन उसकी याद में खो जाता है तो उलझनें और परेशानियां उसका साथ छोड़ देती हैं। क्योंकि ज़ेहन का सुकून और क़ल्ब की तमानीनत उसके ज़िक्र का लाज़मी नतीजा है। जैसा कि इरशादे इलाही है : "दिल तो अल्लाह तआला के ज़िक्र से मुतमईन हो जाते हैं।" वह लोग जो इत्मिनान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

को बज़ाहिर ग़म ग़लत करने वाली कैफ़ अंगेज़ व मसर्रते अफ़ज़ां चीज़ों में तलाश करने की कोशिश करते हैं वह कभी सुकून व इत्मिनान हासिल करने में कामयाब नहीं हो सकते। क्योंकि न इशरत कदों में इत्मिनान नज़र आता है, न ताज व दीहीम के सायों में, न नग़मे व सुरूर की महफ़िलों में सुकून व क़रार बटता है, न नाव व नोश की मजलिसों में। बेशक हर मौक़े पर ज़िक्र व एबादत के लिये दिल आमादा और तबीअत हाज़िर नहीं होती ख़ुसूसन जब कि इन्सान किसी मुसीबत की वजह से ज़ेहनी कशमकश में मुब्तिला हो। इस लिये कि मुसीबत बहर सूरत मुसीबत है और इससे मुतास्सिर होना तबई व फ़ितरी है। तो ऐसे मौक़े पर नवाफ़िल से दस्तकश हुआ जा सकता है मगर बहुत से लोग ऐसे भी मिलेंगे जो परेशान कुन हालात में फ़राएज़ तक से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। तो उन्हें इमाम अलैहिस्सलाम की इस दुआ पर नज़र करना चाहिये कि वह बारगाहे इलाही में यह दुआ करते हुए नज़र आते हैं कि ख़्वाह कितने जानकाह हवादिस व आलाम से साबक़ा पड़े मगर तेरे फ़राएज़े नवाफ़िल से ग़फ़लत न होने पाये, क्योंकि फ़राएज़ बहर सूरत फ़राएज़ हैं और नवाफ़िल उबूदियत का तक़ाज़ा हैं, और ऐसा न हो कि मसाएब व आलाम के तास्सुरात उबूदियत के इज़हार पर ग़ालिब आ जायें।

मुसीबतों से बचाव और बुरे अख़लाक़ व आमाल से हिफ़ाज़त के सिलसिले में हज़रत की दुआ

(तरजमा) "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे पनाह मांगता हूं हिर्स की तुग़यानी ग़फ़लत की शिद्दत, हसद की चीरा दस्ती, बेसबरी क़नाअत की कमी, कज अख़लाक़ी, ख़्वाहिशे नफ़्स की फ़रावानी, असबीय्यत के ग़लबे,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हवा व हवस की पैरवी, हिदायत की ख़िलाफ़वर्ज़ी, ख़्वाबे ग़फ़लत (की मदहोशी) और तकल्लुफ़ पसन्दी से नेज़ बातिल को हक़ पर तरजीह देने, गुनाहों पर इसरार करने, मुसीबत को हक़ीर और एताअत को अज़ीम समझने, दौलतमन्दों के से तफ़ाख़ुर, मोहताजों की तहक़ीर और अपने ज़ेर दस्तों की बुरी निगेहदाश्त और जो हम से भलाई करे उसकी नाशुक्री से और उससे कि हम किसी ज़ालिम की मदद करें और मुसीबतज़दा को नज़र अन्दाज़ करें या उस चीज़ का क़सद करें जिसका हमें हक़ नहीं या दीन में बेजाने बूझे दख़ल दें, और हम तुझ से पनाह मांगते हैं इस बात से कि किसी को फ़रेब देने का क़सद करें या अपने आमाल पर नाज़ां हों और अपनी उम्मीदों का दामन फैलायें, और हम तुझसे पनाह मांगते हैं बदबातिनी और छोटे गुनाहों को हक़ीर तसव्वुर करने और इस बात से कि शैतान हम पर ग़लबा हासिल कर ले जाये या ज़माना हम को मुसीबत में डाले या फ़रमांरवा अपने मज़ालिम का निशाना बनाये और हम तुझसे पनाह मांगते हैं फ़ुज़ूलख़र्ची में पड़ने, और हस्बे ज़रूरत रिज़्क़ के न मिलने से, और हम तुझसे पनाह मांगते हैं दुश्मनों की शमातत, हमचश्मों की एहतियाज, सख़्ती में ज़िन्दगी बसर करने और तोशए आख़रत के बग़ैर मर जाने से और तुझसे पनाह मांगते हैं बड़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तास्सुफ़, बड़ी मुसीबत, बदतरीन बदबख़्ती, बुरे अन्जाम, सवाब से महरूमी और अज़ाब के वारिद होने से। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स॰] और तमाम मोमेनीन व मोमनात को इन सब बुराईयों से पनाह दे। ऐ तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

इन्सान उस वक़्त तक मकारिमे अख़लाक़ से आरास्ता नहीं हो सकता जब तक एक सेहतमन्द ज़ेहनियत की तख़लीक़ न करे और इमराज़े नफ़सानिया के जरासीम से क़ल्ब व ज़मीर की ततहीर करके अपने को फ़ज़ाएल व फ़वाज़िल के क़ुबूल करने के क़ाबिल न बनाये। इस दुआ में जिन मआएब व रज़ाएल को गिनवाया गया है वह वही जरासीम हैं जो इमराज़े नफ़सानिया की तौलीद करते और उन्हें परवान चढ़ाते हैं और इन्सान के अरफ़अ व आला एहसानात को ख़त्म करके उसे ख़्वाहिशात का परसतार बना देते हैं जिसके बाद वह इस सतेह पर आ जाता है जो एक आम हैवान की सतेह होती है जहां पर पहुंच कर फ़ज़ाएल की बुलन्दियां उसके दस्तरस से बाहर हो जाती हैं और रज़ाएल व क़बाएह उसकी तवज्जो का मरकज़ बन जाते हैं और उसे उनकी बुराई का एहसास तक नहीं होता कि उन्हें छोड़ने की ज़रूरत महसूस करे। यूं तो उन मआएब में से हर ऐब हलाकत आफ़रीन व तबाहकुन है मगर हिर्स, ग़ज़ब हसद और शहवत सरेफ़ेहरिस्त और सब बुराईयों का सरचश्मा हैं।

हिर्स यह है कि माले दुनिया की हवस हद्दे एतदाल से तजावुज़ कर जाये और रुपया पैसा, घरबार सब कुछ होने के बावजूद तलब व ख़्वाहिश बढ़ती ही चली जाये और कहीं भी इसमें कमी पैदा न होने पाये। हरीस का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुनतहाये मक़सद यह होता है कि जिस तरह बन पड़े दुनिया जहान की दौलत समेट ले चाहे इसके लिये जो सा ज़रिया भी अख़्तियार करना पड़े। चुनानचे इसी तगो–दौ में अपनी उम्र और कुव्वते फ़िक्र व अमल को ज़ाया कर देता है, और चूंकि अपनी ही सओ़ी व कोशिश पर एतमाद करने का आदी हो जाता है इस लिये ख़ुदा पर से उसका एतमाद उठ ज़ाता है, और जहां ख़ुदा पर एतमाद ख़त्म हो जाता है वहां इन्सानी क़द्रों की अहमियत भी उसकी नज़रों में बाक़ी नहीं रहती। उसे न किसी के मफ़ाद का लिहाज़ होता है न किसी के नुक़्सान की परवा बल्कि दूसरों के मफ़ाद से अगर तसादुम होता है तो उनके बड़े से बड़े नुक़्सान को नज़र अन्दाज़ करके अपने थोड़े से फ़ायदे को तरजीह देता है और नतीजे में एक ऐसी ख़ुदग़र्ज़ाना ज़ेहनियत तशकील पा जाती है. जो हसद, नफ़रत व बदख़्वाही ऐसे जज़बात पैदा करके उसकी ज़िन्दगी को तलख़ कर देती है। वह माल की अन्धी हवस में दूसरों से उलझता और टकराता है जिससे एक तरफ़ मुआशिरे पर बुरा असर पड़ता है और दूसरी तरफ़ वह इस ख़ुशनुमा जाल से निकलने के बजाये उसमें फंसता ही चला जाता है। चुनांचे इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "दुनिया में हरीस रेशम के कीड़े के मानिन्द है कि जितना अपने ऊपर रेशम लपेटता जाता है उतना ही उसमें फंसता चला जाता है और निकलना उसके लिये दुश्वार हो जाता है यहां तक कि उसी में घुट कर मर जाता है।"

इस्लाम ने माल की परस्तारी सरमाया अन्दोज़ी के इन्सदाद के लिये जमा आवरी के बजाये दौलत की तक़सीम पर ज़्यादा ज़ोर दिया है और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

माली फ़राएज़, खुम्स, ज़कात, रद्दे मज़ालिम वग़ैरा की सूरत में आयद कर दिये ताकि दौलत आती भी रहे, बटती भी रहे। इस तरह जमा आवरी का वह जज़बा क़हरन् बाक़ी नहीं रहता जिसे हिर्स से ताबीर किया जा सके।

ग़ज़ब, यह एक दिफ़ाई जज़्बा है जो इन्सानी फ़ितरत में वदीअत है जिससे इन्सान उन चीज़ों की रोक थाम करता है जो उसे नागवार मालूम देती हैं या जिनसे गज़न्द पहुंचता है। चुनांचे जब नागवारियों से दो चार होता है तो उसके ग़ुस्से का पारा चढ़ जाता है और क़ुव्वते बर्दाश्त कम या बिल्कुल ख़त्म हो जाती है। यह नागवारी की सूरत अगर ऐसे शख़्स के मुक़ाबले में हो जो उससे ज़्यादा ताक़तवर और बाइक़्तिदार हो और उससे इन्तेक़ाम लेना उसके लिये मुम्किन न हो तो उससे ख़ून का दबाओ दिल की तरफ़ बढ़ जाता है जिससे एक घुटन सी महसूस करता है। इस इन्क़ेबाज़ी कैफ़ियत का नाम ग़म व हुज़्न है और अगर ऐसे शख़्स के मुक़ाबले में हो जो उसकी सतेह पर हो तो उससे इन्क़ेबाज़ व इन्बेसात की एक मिली जुली कैफ़ियत पैदा होती है जिससे वह तिलमिलाता और पेच व ताब खाता है। इस हालत को हसद (कीना) से ताबीर किया जाता है, और अगर उस शख़्स के मुक़ाबले में हो जिसे अपने से पस्त तर तसव्वुर करता है तो उससे ख़ून खौलता और बाहर की तरफ़ जोश मारता है जिससे गर्दन की रगें फूल जाती हैं और चेहरा और आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं। इस हैजानी कैफ़ियत का नाम ग़ज़ब है जो बरमहल और ख़ुदएतदाल में हो तो ममदूह और हद से बढ़ जाये तो मज़मूम। इफ़रात की हालत में पेश बीनी व माल अन्देशी के औसाफ़ सल्ब हो जाते हैं। दिमाग़ी रुतूबतें ख़ुश्क हो जाती हैं और ज़ेहनी तवाज़ुन बरक़रार नहीं रहता। चुनाँचे हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "ग़ुस्सा एक क़िस्म की दीवानगी है,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

क्योंकि गुस्सेवर बाद में पशेमान ज़रूर होता है, और अगर पशेमान नहीं होता तो उसकी दीवानगी पुख़्ता है।"

यह एक ऐसी बेहीमाना ख़सलत है जो इन्सान को मुजस्सम हैवान और सरापा दरिन्दा बना देती है। चुनांचे आदमी को बेतहाशा गुस्सा आता है तो उसकी निगाहों में क़हर की घटायें उमण्ड आती हैं। मुंह से झाग बहने लगती है। सांस फूल जाती है। हवास मुन्तशिर और चेहरा भयानक हो जाता है भवें चढ़ जाती हैं। आंखों से शरारे बरसने लगते हैं जिस्म पर कपकपी तारी हो जाती है। ज़बान से औल फ़ौल बकता है। ज़रा तसव्वुर तो कीजिये कि गुस्से में उसकी हैय्यत कज़ाई क्या से क्या हो जाती है। और अगर मद्दे मुक़ाबिल को ज़ेर न कर सके तो और अजीब व ग़रीब क़िस्म की वहशियाना हरकतें करता है। कभी कपड़े फाड़ता है, कभी मुंह पर तमांचे मारता है, बद्हवासी में इधर से उधर दौड़ता है; चीज़ें उठा उठा कर फेंकता और तोड़ फोड़ कर रख देता है, और गालियां देने पर आता है तो दरो दीवार तक को गालियां देता है और कभी ग़ज़ब इन्तेहाई ख़तरनाक इक़दामात को जन्म देता है और क़त्ल तक नौबत पहुंच जाती है और अक्सर व बेशतर क़त्ल की वारदातें इसी ग़ैज़ो ग़ज़ब का नतीजा होती हैं और कभी इन्तहाई तैश में ख़ुद उसकी अपनी मौत वाक़े हो जाती है। ऐसे मौक़े पर समझाना बुझाना और गुस्से के नतायज बद से आगाह करना उमूमन् बेकार साबित होता है बल्कि बाज़ औक़ात उलटा असर करता है, और समझाने वाला ख़ुद उसके गुस्से की ज़द में आ जाता है इस लिये समझाने बुझाने के बजाये नफ़सियाती तरीक़े पर इलाज करना चाहिये। चुनाँचे पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम से उसका नफ़सियाती इलाज यूं वारिद हुआ है कि अगर गुस्से की हालत में इन्सान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

खड़ा हो तो बैठ जाये, बैठा हो तो टेक लगा ले, और टेक लगाये हो तो लेट जाये, और ठण्डे पानी से जिस्म को धोये, और अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम से मरवी है कि ग़ुस्से की हालत में एक से ले कर दस तक उंगलियों पर गिनती करे। इस तरह जिस्म को उलटने पलटने और बदन को तर करने और गिनती गिन्ने से तबीअत पलटा खायेगी और तबीअत के साथ ग़ुस्से का धारा भी मुड़ जायेगा।

हसद :– यह भी एक नफ़सानी मर्ज़ है जो इन्सान को घुन की तरह अन्दर ही अन्दर चाट जाता है। हासिद अपनी ख़ुद साख़्ता तबीअत से मजबूर होकर दूसरे की बुलन्दी व बरतरी और जाह व इक़बाल को देखता है तो अंगारों पर लोटता और पेच व ताब खाता है और यह चाहता है कि उसकी बरतरी ज़िल्लत में, और इक़बाल व दौलत निकबत व अदबार में बदल जाये, और अगर यह चाहे कि यह इज़्ज़त व इक़बाल उसे भी हासिल हो जाये तो यह ग़बता है, और अगर इसे हासिल करने के लिये अमलन् तगवदौ भी करे तो यह मुनाफ़िसा है और ग़तबा और मुनाफ़िसा दोनों ममदूह सिफ़तें हें, और हसद, पस्त ज़ेहनियत व बदबातिनी की अलामत है। चुनाँचे पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है कि "मोमिन ग़बता करता है और मुनाफ़िक़ हसद करता है।" और मुनाफ़िसा के मुतअल्लिक़ इरशादे इलाही है :"उसकी तरफ़ रग़बत करने वालों को शौक़ से बढ़ना चाहिये।" और अगर इन्सान यह सोचे कि उसके हसद करने से दूसरे का कुछ नहीं बिगड़ता और न उसके जलने कुढ़ने से किसी की क़द्रो मंज़िलत और माल व दौलत में कमी वाक़े हो सकती है तो वह अपने को हसद की आग में झोंकने से बचा ले जा सकता है और यह समझ लेना कि उसके हसद से दूसरे की नेअमतें ज़ायल हो जायेंगी इन्तेहाई जेहालत का नतीजा है। इस लिये कि अगर हसद से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नेअमतें ज़ायल होने लगतीं तो फिर दुनिया में किसी के पास नेअमत व दौलत न रहती क्योंकि साहबे नेअमत व सरवत दूसरों के हसद से बच नहीं सकता। चुनानचे पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है "हर साहबे नेअमत महसूद होता है।" और इससे बढ़कर यह जेहालत है कि वह यह समझे कि उसके हसद से तो दूसरों की नेअमत पर असर पड़ सकता है और कोई उस पर हसद करे तो उसका बाल भी बीका न होगा और न उसकी नेअमतों पर ज़वाल आयेगा।

शहवत : हवस व ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी का नाम है। ख़्वाह उस ख़्वाहिश का तअल्लुक़ शिकम से हो या जज़्बए नफ़सानी से। यूं तो दोनों कशिश का मरकज़ और हज़ अन्दोज़ी का सरचश्मा हैं मगर नफ़सानी जज़्बा सब जज़बात से ज़्यादा इन्सान के ज़ेहन व अवातिफ़ को मग़लूब व मुतास्सिर करता है और जब इन्सान उसमें मुनहमिक रहने का ख़ूगर हो जाता है तो फिर इससे दस्तकश होना उसके लिये मुश्किल हो जाता है। इसकी मिसाल यूं समझिये कि एक सवार ऐसी तंग गली में दाख़िल होना चाहता है जिसमें सवारी समेत दाख़िल तो हो सकता है मगर न आगे रास्ता है कि गुज़र सके और न सवारी के मोड़ने की कोई जगह है तो अब एक सूरत तो यह है कि गली के बाहर सवारी को खड़ा करे और खुद अन्दर दाख़िल हो जाये और दूसरी सूरत यह है कि सवारी समेत अन्दर दाख़िल हो जाये और जब पलटना चाहे तो उसे बाहर निकालने के लिये दुम से पकड़ कर घसीटे और ज़ोर लगाये ज़ाहिर है कि पहली सूरत एक आसान सूरत है और दूसरी सूरत मुश्किल, और अगर सवारी अड़ियल और मुंह ज़ोर हो तो दुश्वारी और बढ़ जायेगी और उसे निकाल ले जाना ताक़त व अख़्तियार से बाहर हो जायेगा। इसी तरह इब्तिदा में नफ़्स को रोकना सहल होता है मगर आदी व ख़ूगर बना देने के बाद रोकना ऐसा ही है जैसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अड़ियल जानवर को दुम से पकड़ कर पीछे की तरफ़ घसीटना। चुनांचे जब आदमी ख़ूगर हो जाता है और हवस परस्ती का जज़्बा हद से बढ़ जाता है तो वह हलाल व हराम का इम्तियाज़ भी ख़त्म कर देता है और उस मंज़िल पर पहुंच जाता है जहां न मज़हबी क़यूद आड़े आते हैं और न अख़लाक़ी हुदूद माने होते हैं और वह नफ़्स की ज़रा सी तहरीक पर ख़्वाहिशात के बहाव में बहता हुआ चला जाता है। किसी को ख़ौफ़ व ख़तर, शर्म व हया और तहफ़्फ़ुज़े सेहत का ख़ुसूसी ख़याल माने हो तो हो वरना उमूमन् यह मरहला इन्तेहाई शकीब आज़मा होता है और इन्सान हुस्न की मुस्कुराहटों और जवानी की अंगड़ाईयों में खो जाता है और अपनी सीरत दाग़दार बना लेता है और जो नफ़्स की मुंह ज़ोरी और ख़्वाहिश की तोग़यानी पर क़ाबू पाकर अपने किरदार पर धब्बा नहीं आने देता और अपना दामन बचा ले जाता है वह एक शहीदे राहे ख़ुदा से भी बढ़ कर अज्र व सवाब का मुस्तहक़ होता है। चुनांचे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलातो वस्सलाम का इरशाद है:–

> (तरजुमा) "वह मुजाहिद जो ख़ुदा की राह में शहीद हो उस शख़्स से ज़्यादा अज्र का मुस्तहक़ नहीं है जो क़ुदरत व अख़्तियार रखते हुए पाक दामन रहे; क्या बईद है कि पाक दामन फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता हो जाये।"

इन नफ़सानी जज़बात की इश्तेआल अंगेज़ी का सरचश्मा निगाहों का तसादुम और उनका बेबाकाना टकराव है। चुनांचे इरशादे नबवी[स०] है : "नज़र ज़हर में बुझा हुआ एक तीर है"। चुनान्चे जिस तरह सम (ज़हर) आलूदा तीर के ज़हर का असर जिस्म के तमाम रग व पै में सरायत कर जाता है, और सिर्फ़ तीर ख़ुर्दा मक़ाम ही मुतअस्सिर नहीं होता उसी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तरह निगाहों का तबादला फ़िक्र व ख़याल और जज़बात व हिस्सियात को मुतअस्सिर करता हुआ अपनी ख़ुमार आगीं कैफ़ियतों से अक़्ल व ख़िरद पर छा जाता है। इसी की मीर तक़ी मीर ने तर्जुमानी की है :–

मीर इन नीम बाज़ आंखों में
सारी मस्ती शराब की सी है

इस लिये नज़र के मसमूम असरात से बचने के लिये निगाहों का एहतेसाब ज़रूरी है और इसमें सहल अंगारी से काम लेना एक तरह से मफ़ासिद को दावत देना है, और वह मफ़ासिद क्या हैं? इन्हें एक मिस्री शायर ने इन्तेहाई इख़्तेसार के साथ एक तिब्बी तरतीब से इस शेर में जमा कर दिया है जिसमें शायरी के हुस्न के साथ हक़ीक़त की रअनाई भी जलवागर है :–

"पहले नावक निगाह, फिर दिलफ़रेब मुस्कुराहट, फिर सलामे शौक़, फिर बाहमी गुफ़्तगू, फिर ईफ़ाए अहद के तहत मुलाक़ात।"

बहरहाल हिर्स, ग़ज़ब, हसद और हवाये नफ़्स के अलावा जिन दूसरे रज़ाएल व अख़लाक़ी बुराईयों का इस दुआ में ज़िक्र है उनका सरचश्मा इन्हीं चारों उयूब में से किसी एक न एक को समझना चाहिये। चुनानचे बेजा तगो–दौ, अद्मे क़नाअत, बेसब्री और तूले अमल हिरस की पैदावार हैं और जिन रज़ाएल में तफ़व्वुक़ व सरबुलन्दी का शायबा है। जैसे ख़ुदपसन्दी हमीय्यत, जाहेलियत, कज अख़लाक़ी, ग़ुरूर, एताअत, एहसान नाशिनासी, फ़ख़्र व मुबाहात, ग़रीबों की तहक़ीर व तज़लील, ज़ेरदस्तों पर ज़ुल्म व तअदी यह सब ग़ज़ब का शाख़साना हैं इस लिये कि ग़ज़ब का तजज़िया किया जाये तो इसका असली सबब किब्र व एहसासे बरतरी ही नज़र आयेगा, और इसी बिना पर ग़ज़ब का मुज़ाहरा हमेशा इसके मुक़ाबले में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किया जाता है जिसे अपने से पस्त तर तसव्वुर किया जाता है, और यह तफ़व्वुक़ व सरबुलन्दी का जज़्बा उस आतशी कैफ़ियत का नतीजा है जो ग़ज़ब में कारफ़रमाई होती है। चुनानचे हदीस में वारिद हुआ है कि "ग़ज़ब औलादे आदम के दिल में चिंगारी की सूरत में दहकता है।" और आग तबअन् बुलन्दी की तरफ़ मायल होती है। चुनान्चे इसी माद्दए नारी की वजह से शैतान ने हज़रत आदम[अ०] के मुक़ाबले में ग़ुरूर और सरबलन्दी का मुज़ाहरा किया जैसा कि अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है : "उसने अपने माद्दए तख़लीक़ की बिना पर आदम[अ०] के मुक़ाबले के घमण्ड किया और अपनी अस्ल के लिहाज़ से उनके सामने अकड़ गया।" और ख़बसे बातिन, ग़श व फ़रेब और शमातित, हसद का करिश्मा हैं और फ़ुज़ूलख़र्ची, ग़फ़लत व बेएतनाई, हक़ व हिदायत से बेरूख़ी और छोटे गुनाहों को हक़ीर समझना यह सब हवाए नफ़्स की कारफ़रमाई का नतीजा हैं।

इन तमाम मआएब व मआसी में एताअत पर ग़ुरूर और छोटे गुनाहों को हक़ीर तसव्वुर करना सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है इस लेहाज़ से कि ग़ुरूर एताअत को ऐब ही तसव्वुर नहीं किया जाता कि इस जज़्बे को ख़त्म करने की ज़रूरत महसूस की जाये हालांकि एताअत पर ग़ुरूर व इफ़्तिख़ार करने और उसे ग़ैर मामूली अहमियत देने से इज्ज़ व ख़ुलूस की रूह ख़त्म हो जाती है और एताअत एताअत ही नहीं रहती कि उसे सरमायए नाज़िश समझ लिया जाये, क्योंकि रूहे बन्दगी तो यह है कि अल्लाह के हुज़ूर इज्ज़ व तक़सीर का एतेराफ़ अपनी कोताही व बेबज़ाअती का इक़रार और उसके अलूहियत के पहलू के मुक़ाबले में बड़ी से बड़ी एबादत को भी हक़ीर व पस्त तसव्वुर किया जाये, और छोटे गुनाहों को हक़ीर और ग़ैर अहम समझना दो लिहाज़ से ख़तरनाक है। एक तो यह कि यही छोटे गुनाह बड़े गुनाहों का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ुश ख़ेमा होते हैं। मसलन् ज़िना गुनाहे कबीरा है मगर उसका इरतेकाब राहे रास्त कम ही होता है, बल्कि नज़र, लम्स वग़ैरा जज़बात में तहरीक दा करके इस मंज़िल तक ले आते हैं। इस लिये नब्ज़ शिनास फ़ितरत ने ढ़े में गिरने से रोकने के लिये उसके इर्द–गिर्द चक्कर काटने से भी मना र दिया, क्योंकि जो आस पास रहता है वही गिरता है, और जो उससे र रहता है उसके गिरने का अन्देशा नहीं होता। चुनान्चे कबीरा गुनाह में ही मुब्तिला होता है जिसके लिये सग़ीरा गुनाह रास्ता हमवार करते, क़दम क़दम चलाते और हिम्मत बढ़ाते उस मक़ाम पर लाकर खड़ा करते हैं हां गुनाहे कबीरा अपनी मक़नातीसी कशिश से जज़्ब कर लेता है और न्सान बेअख़्तियार उसकी तरफ़ खिंच जाता है। इस लिये ज़रूरी है कि ग़ीरा गुनाह से बचा जाये ताकि कबीरा की नौबत ही न आये।

और दूसरे यह कि यही सग़ीरा इसरार से कबीरा हो जाते हैं। चुनान्चे ग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है : अगर सग़ीरा पर इसरार हो तो सग़ीरा नहीं रहता और कबीरा े साथ तौबा व इसतग़फ़ार हो तो वह कबीरा नहीं रहता।" क़सद यह है कि अगर गुनाहे कबीरा के बाद सिदक़े दिल से तौबा कर ी जाये तो ख़ुदा उस गुनाह को बख़्श देता है जिसके बाद वह गुनाह ही हीं रहता। चे जाये कि गुनाहे कबीरा और सग़ीरा का अगर बार बार रतेकाब होता रहे तो वह संगीनी में कबीरा के हमवज़्न हो जाता है, और ूंकि उसके हलाकत आफ़रीन पहलू पर नज़र नहीं की जाती और उससे ौबा करने में सहल अंगारी में काम लिया जाता है इस लिये तौबा के बाद ुनाहे कबीरा इतना हलाकत आफ़रीन नहीं होता जितना सग़ीरा पर इसरार ोहलिक साबित होता है। चुनान्चे अगर किसी पत्थर पर क़तरा क़तरा रके पानी टपकता रहे तो उससे पत्थर पर निशान सा पड़ जाता है, और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अगर उन्हीं क़तरों के मजमूई वज़्न के बराबर एक दम उस पर पानी उण्डे दिया जाये तो उससे न पत्थर पर कुछ असर होता है और न कोई निशान उभरता है। उसी तरह अगर सग़ीरा गुनाह का सिलसिला मुसलसल जारी रहे तो वह अपना देरपा असर छोड़ जाता है, और कबीरा गुनाह की हलाकत आफ़रीनी तौबा से ख़त्म हो जाती है।

बहरहाल वह मआएब जो बुनियादी हैसियत रखते हों या वह जो उनसे जन्म लेते हों सब ऐसे हैं जिनसे निगेहदाश्त ही से इन्सानियत का जौहर बाक़ी रह सकता है। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम दूसरों को इन उयूब के उयूब होने से आगाह करने और उनसे दामन बचाने की तालीम देने के लिये उन रज़ाएल से यकसर पाक होने के बावजूद अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह उनसे बचने की तौफ़ीक़ शामिले हाल रखे, और यह ख़ासाने ख़ुदा और रहबराने हक़ीक़ी का शेवा है कि वह ज़ेवरे कमाल से आरास्ता होने के बावजूद कमाले उलूहियत के आगे अपने नुक़्स का इक़रार और पाकीज़गीए नफ़्स के हर गोशे की तकमील के बाद उसके मक़ामे तक़दीस के सामने इज्ज़ व तक़सीर का एतराफ़ करते हैं ताकि हिदायत का फ़रीज़ा भी अदा होता रहे और उबूदियत का हुस्न भी निखरता रहे, वरना इस क़िस्म के उयूब न उनके मनसब के लिहाज़ से दुरूस्त और न उनके मिज़ाजे इमामत से साज़गार हो सकते हैं चुनान्चे जब इब्ने उमैर से हश्शाम इब्ने हकम ने इस्मते आईम्मा की दलील तलब की तो उन्होंने कहा कि तमाम गुनाहों के मोहरिक हिरस, ग़ज़ब, हसद और शहवत के जज़बात होते हैं और दूसरे तमाम गुनाह उन्हीं की पैदावार हैं। तो जब यह साबित कर दिया जाये कि इनमें से किसी चीज़ का वुजूद इमाम में नहीं पाया जा सकता तो इस्मत अपने मक़ाम पर साबित हो जायेगी। चुनान्चे हिर्स इस लिये नहीं हो सकती कि वह ऐसे ख़ज़ानों के मालिक होते हैं जिनके सामने फ़रमांरवाओं के ख़ज़ाने हीच होते

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

। जिसके बाद उनसे हिर्स व तमअ की तवक़्क़ो नहीं की जा सकती। इस सिलसिले में यह वाक़िआ शाहिद है कि अब्दुल मलिक जब हज के लिये आया तो उसने इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम को याद किया। जब हज़रत[अ०] उसके हां गये तो उसने कहा कि आप गाहे बगाहे मिलते रहा कीजिये ताकि इसके ज़रिये आपकी दुनयवी ज़रूरतें पूरी होती रहें। आप[अ०] ने यह सुनकर दोश पर से अबा उतारी और उसे ज़मीन पर बिछा दिया और कुछ रेत जमा करके उस पर डाल दी। अब्दुल मलिक ने देखा कि वह रेत के ज़र्रे जवाहरात की सूरत में चमक रहे हैं। इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि जिसे अल्लाह की तरफ़ से यह दौलत नसीब हो वह दुनिया के लिये किसी आस्ताने पर नहीं झुक सकता। जिसके बाद अब्दुल मलिक खुद अपनी पेश–कश पर शर्मसार हुआ! और ग़ज़ब इस लिये नहीं होता कि इमाम[अ०] के फ़राएज़ में से यह है कि वह हक़ व इन्साफ़ के साथ बाहमी क़ज़ियों का तसफ़िया करे हुदूदे शरिआ को नाफ़िज़ करे। तो अगर वह अपने ज़ाती ग़ज़ब से मुतअस्सिर होगा तो उससे अदल व इन्साफ़ के क़ायम करने की तवक़्क़ो नहीं की जा सकती। इस लिये कि हो सकता है कि वह अपने ज़ाती ग़ज़ब से मुशतइल होकर कोई बेजा एक़दाम कर बैठे, इसलिए इमान का ग़ज़ब किसी ज़ाती जज़्बे के ज़ेरे असर नहीं होता। बल्कि जहां ग़ज़ब का मज़ाहिरा होता है वहां अल्लाह तआला की रिज़ामन्दी ही पेशे नज़र होती है। चुनान्चे इसका शाहिद यह वाक़िआ है कि अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम ने मैदाने जंग में एक दुश्मन को ज़मीन पर गिरा दिया और उसके सीने पर सवार हो गये। उसने तैश में आपके चेहरे पर थूक दिया। आप फ़ौरन् उसके सीने से उतर आये। जब वजह पूछी गयी तो फ़रमाया कि मैं किसी मरहले पर भी ज़ाती ग़ज़ब को कारफ़रमा करना नहीं चाहता।

और हसद इस लिये नहीं होता कि हसद का महल वह है जहां फ़रीक़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुख़ालिफ़ अपने से बुलन्द मर्तबा का हामिल हो। लेहाज़ा अमीर ग़रीब पर, आलिम जाहिल पर, क़वी कमज़ोर पर और बुलन्द मर्तबा पस्त दर्जे वाले पर हसद नहीं करेगा तो इस उसूल से इमाम उसी पर हसद करेगा जो उससे बुलन्द दर्जे का मालिक हो, और जब इमाम से बुलन्दतर दूसरा मन्सब नहीं है तो इस मन्सब पर फ़ायज़ होने वाला किस पर हसद करेगा और मनसबे इमामत की रिफ़अत का सुबूत यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इमामत का एलान 'इन्नी जाएलोका लिन्नासे इमामा' के ज़रिये उस वक़्त किया जाता है जब वह नबूवत व रिसालत के मनसब पर फ़ायज़ हो चुके थे। तो जो मनसब, नबूवत व रिसालत और ख़ुसूसी इम्तेहान की कामयाबी के बाद हासिल हुआ हो उसके रिफ़अत से कौन इन्कार कर सकता है। लेहाज़ा बुलन्द मंज़िल पर फ़ायज़ होने वाला महसूद हो सकता है मगर हासिद नहीं हो सकता। चुनान्चे इरशादे इलाही : "या उन लोगों पर हसद करते हैं उस नेअमत पर जो ख़ुदा ने उनको अपने फ़ज़्ल से अता की है।" के ज़ैल में इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम! हम ही वह हैं जिन पर हसद किया गया।"

और हवाए नफ़्स की चीरादस्तियों से इस लिये मग़लूब नहीं होता कि यह एक फ़ितरी चीज़ है कि फूलों को छोड़ कर कांटों के लिये दामन में जगह पैदा नहीं की जाती और कव्वे की कायें कायें की ख़ातिर गुलबांगे हज़ार से कान बन्द नहीं किये जाते तो जिसकी निगाहों के सामने जन्नत के दिलफ़रेब नज़्ज़ारे और हसीन पैकरों के महजूब इशारे हों वह हुस्ने दुनिया पालने वाला फ़ितना और नफ़्स की तरग़ीब से मुतअस्सिर नहीं होता। चुनान्चे यह वाक़या इसका शाहिद कि हारून रशीद ने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम बदनाम करने के लिये उनके ज़मानए असीरी में एक कनीज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ा उनके पास भेजने का इरादा किया। मक़सद यह था कि इमाम^{अ०} पर ल्ज़ाम आयद करके उनके क़त्ल का जवाज़ पैदा करे। इमाम अलैहिस्सलाम ो जब मालूम हुआ तो आप^{अ०} ने फ़रमाया : "मुझे इसकी कोई ज़रूरत हीं है।" मगर उसे तो बहरसूरत भेजना था वह भेज दी गयी, और फिर ास्र के वक़्त एक शख़्स टोह लगाने के लिये तआक़ुब में रवाना किया। जब ह ज़िन्दान में पहुंचा तो देखा कि कनीज़ सज़दे में पड़ी है। उसने पलट र हारून रशीद को इसकी इत्तिला दी। हारून ने उस कनीज़ को तलब ़िया और सजदे की वजह दरियाफ़्त की। उसने कहा कि जब मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा कि वह मसरूफ़े नमाज़ हैं। जब नमाज़ से ारिग़ हुए तो मैंने कहा कि मुझे आप^{अ०} की ख़िदमत में भेजा गया है यह ुनकर आप ने एक तरफ़ हाथ का इशारा किया। मैंने उधर देखा तो एक ाजीब मन्ज़र था। फलों से लदे फंदे दरख़्तों के झुण्ड, बुलन्द व बाला मारतें और उनमें ऐसी ताबनाक सूरतें कि मेरी निगाहें ख़ीरा हो गयीं। न्होंने मुझसे कहा कि ऐ कनीज़ तू क्या ख़िदमत करेगी। हम मुद्दत से न्तज़िर हैं कि यह अब्दे सालेह हमें कोई हुक्म दे तो हम उसे बजा लायें, ाह देख कर मुझ पर एक दहशत सी तारी हो गयी, और बेअख़्तियार सजदे ं गिर पड़ी। यहां तक कि आपका आदमी आया और मुझे यहां ले आया।

तलबे मग़फ़ेरत के इश्तियाक़ में हज़रत^{अ०} की दुआ

(तरजमा) "ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद^{स०} और उनकी आल^{अ०} पर और हमारी तवज्जोह उस तौबा की तरफ़ मबज़ूल कर दे जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तुझे पसन्द है और गुनाह के इसरार से हमें दूर रख जो तुझे नापसन्द है बारे इलाहा! जब हमारा मौक़िफ़ कुछ ऐसा हो कि (हमारी किसी कोताही के बाएस) दीन काज़ियां होता हो या दुनिया का तो नुक़्सान (दुनिया में) क़रार दे कि जो जल्द फ़ना पज़ीर है और अफ़वो व दरगुज़र को (दीन के मामले में) क़रार दे जो बाक़ी व बरक़रार रहने वाला है और जब हम ऐसे दो कामों का इरादा करें कि उनमें से एक तेरी ख़ुशनूदी का और दूसरा तेरी नाराज़ी का बाअस हो तो हमें उस काम की तरफ़ माएल करना जो तुझे ख़ुश करने वाला हो, और उस काम से हमें बे दस्त व पा कर देना जो तुझे नाराज़ करने वाला हो, और उस मरहले पर हमें अख़्तियार दे कर आज़ाद न छोड़ दे, क्योंकि नफ़्स तो बातिल ही को अख़्तियार करने वाला है मगर जहां तेरी तौफ़ीक़ शामिले हाल हो और बुराई का हुक्म देने वाला है मगर जहां तेरा रहम कारफ़रमा हो। बारे इलाहा! तूने हमें कमज़ोर और सुस्त बुनियाद पैदा किया है, और पानी के एक हक़ीर क़तरा (नुत्फ़े) से ख़ल्क़ फ़रमाया है। अगर हमें कुछ कुव्वत व तसर्रूफ़ हासिल है तो तेरी कुव्वत की बदौलत, और अख़्तियार है तो तेरी मदद के सहारे से लेहाज़ा अपनी तौफ़ीक़ से हमारी दस्तगीरी फ़रमा और अपनी रहनुमाई से इस्तेहकाम व कुव्वत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बख़्श और हमारे दीदए दिल को उन बातों से जो तेरी मोहब्बत के ख़िलाफ़ हैं नाबीना कर दे और हमारे आज़ा के किसी हिस्से में मअसियत के सरायत करने की गुंजाइश पैदा न कर। बारे इलाहा! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमारे दिल के ख़यालों, आज़ा की जुम्बिशों, आंख के इशारों और ज़बान के कलमों को उन चीज़ों में सर्फ़ करने की तौफ़ीक़ दे जो तेरे सवाब का बाएस हों यहां तक कि हम से कोई ऐसी नेकी छूटने न पाये, जिससे हम तेरे अज्र व सवाब के मुस्तहक़ क़रार पायें और न हम में कोई बुराई रह जाये जिससे तेरे अज़ाब के सज़ावार ठहरें।

यह दुआ अल्लाह तआला से तौबा व इसतग़फ़ार हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ और मग़फ़रत व ख़ुशनूदी की तलब पर मुश्तमिल है। अगरचे इमाम अलैहिस्सलाम मासूम और आग़ोशे इस्मत के परवरदा थे और इस्मते फ़िक्री व अमली व एतक़ादी हर क़िस्म के गुनाह से हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदार होती है मगर फिर भी गुनाह का एतराफ़ करते और तौबा व इस्तग़फ़ार का दामन फैलाते हैं, क्योंकि तौबा ख़ुद एक एबादत और एहसासे उबूदियत का जौहर है, और इस्मत, उबूदियत व नयाज़मन्दी से बेनियाज़ नहीं कर देती कि तौबा व अनाबत का हाथ न उठे जबकि उबूदियत के तक़ाज़ों की तकमील ही का नाम इस्मत है। इस लिये आप गुनाहों की आलूदगियों से महफ़ूज़ होने के बावजूद जो तौबा व इस्तग़फ़ार में मसरूफ़ रहते ताकि तौबा का सवाब भी हासिल हो और दूसरे गुनाहगार तौबा की तालीम भी पा सकें। तौबा ज़बान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से गुनाह के इक़रार और उसके तर्क के इज़हार का नाम नहीं है बल्कि अपने गुनाहों पर सिदक़े दिल से निदामत और आईन्दा तर्के गुनाह के अज़्म और क़ाबिले तलाफ़ी उमूर के तदारुक का नाम है, और जब इस तरह से तौबा होती है तो ख़ुदा वन्दे आलम न सिर्फ़ गुनाहों से दरगुज़र करता है बल्कि तौबा पर मज़ीद अज्र व सवाब अता करता और तौबा करने वाले को पसन्दीदगी व कुबूलियत की सनद देता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है : "अल्लाह तौबा करने वालों को दोस्ता रखता है"। इसी बिना पर इमाम अलैहिस्सलाम ने तौबा को अल्लाह की एक महबूब व पसन्दीदा चीज़ क़रार देने के साथ इसरारे गुनाह को मकरूह व नापसन्दीदा चीज़ क़रार दिया है, क्योंकि गुनाह परइसरार के माने ही यह हैं कि तौबा को नज़र अन्दाज़ किया जा रहा है, और जब कि तौबा मतलूब व मरग़ूब है तो जो चीज़ तर्के तौबा का नतीजा होगी वह बहरहाल मबग़ूज़ व नापसन्द होगी। गुनाह और ख़ुसूसन् गुनाह पर इसरार इन्सान के इर्द–गिर्द एक ऐसी मसमूम फ़िज़ा पैदा कर देता है जहां अख़लाक़ी रूह मुर्दा हो जाती है और बहुत सी हलाकत आफ़रीन चीज़ों का उसे सामना करना पड़ता है। और इसकी ज़िम्मेदारी ख़ुद उसी पर आयद होती है, क्योंकि जो चीज़ें ज़हूर में आती हैं वह गुनाह के तबअी नताएज की हैसियत रखती हैं। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजमा) "जो मुसीबत भी तुम पर वारिद होती है वह तुम्हारे हाथों हीकी कमाई होती है।"

यह गुनाह के नताएज व असरात कभी दीनी नुक़्सान की सूरत में रूनुमा होते हैं जैसे सल्बे तौफ़ीक़ इबादत से बेरुख़ी, इल्म की फ़रामोशी वग़ैरा जैसा कि पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजमा) "बन्दा कभी ऐसे गुनाह का मुरतकब होता है जिसके नतीजे में सीखे हुए इल्म पर निस्यान तारी हो जाता है और कभी ऐसा गुनाह करता है जिसके नतीजे में इबादते शब की सआदत से महरूम हो जाता है।"

और कभी दुनयवी नुक़्सान की सूरत में ज़ाहिर होते हैं जैसे हवादिस व आलाम, तंगी, मआश, ज़वाले नेअमत वग़ैरा जैसा कि अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

"ख़ुदा की क़सम वह लोग जो ऐश व आराम में ज़िन्दगी बसर करते थे और फिर उनकी नेअमतें उनसे छिन गयीं, तो यह उन गुनाहों का नतीजा था जिनका वह इरतेकाब करते थे।"

इमाम अलैहिस्सलाम इस दुआ में दीनी व दुनयवी दोनों नुक़्सानों का ज़िक्र किया है और फिर दीन के दाएमी नताएज और दुनिया के आरज़ी नुक़्सानात पर अमल करते हुए बारगाहे इलाही में अर्ज़ करते हैं कि अगर हमारे गुनाह के नतीजे में दीन की बर्बादी होती हो या दुनिया का नुक़्सान तो तमाम नुक़्सानात का बोझ दुनिया पर डाल दे और हमारे दीन को हर क़िस्म के ख़तरात से महफ़ूज़ कर दे क्योंकि दुनिया के नुक़्सानात आरज़ी और चन्द रोज़ा हैं और दीन का नुक़्सान उस ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ होता है जो हमेशा रहने वाली है, और दायमी फ़ायदे की ख़ातिर आरज़ी नुक़्सान को बर्दाश्त किया जा सकता है। उसके बाद अल्लाह तआला से हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ का सवाल करते हुए फ़रमाते हैं कि हमें बस उस अमल की तौफ़ीक़ दे जो तेरी ख़ुशनूदी व रज़ामन्दी का बाअस हो, और ऐसे कामों से बचाये रख जो तेरी नाराज़ी का सबब हों। यह इरशाद हज़रत[अ०]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

की बुलन्द नजरी का आईनादार है कि उनकी नज़रें उठती हैं तो अल्लाा की रिज़ामन्दी पर और यह ख़ासाने ख़ुदा का तक़ाज़ाए वारफ़तगी है वि उनकी नज़र न जन्नत पर होती है न नईमे जन्नत पर। उनकी मंज़िल सिफ रिज़ाये इलाही की मंज़िल होती है जिसकी तलब उन्हें हर कैफ़ व लज़्ज़त से बेगाना और हर रंज व तकलीफ़ से बेनयाज़ बना देती है। वह दुख झेलते तकलीफ़ें उठाते और पूरी लगन के साथ बरसरे अमल रह कर इस मंज़िल रिज़ा का खोज लगाते हैं और यही उनकी एबादत का मक़सद और यही उनकी ज़िन्दगी का मआल होता है और यही कामरानी की आख़री मंज़िल है। रही जन्नत! तो वह अल्लाह के तफ़ज़्ज़ुल का एक करिश्मा है। अस्ल फ़लाह व नजाह उसकी रिज़ामन्दी ही से वाबस्ता है और यही सबसे बड़ी सआदत है। चुनान्चे इरशादे इलाही है : "अल्लाह की रिज़ामन्दी सबसे बड़ी चीज़ है।" इस मंज़िले रिज़ामन्दी की राह में सबसे बड़ी रुकावट नफ़्से अमारा की कार्रफ़रमाई है जो लज़्ज़त व ऐश के पर्दे में जुर्म व मअसियत की दावत देता और अपनी फ़ुसूं कारियों से बुराईयों की तरफ़ खींच ले जाता है। चुनान्चे कुरआने मजीद में हज़रत यूसुफ़[अ०] की ज़बानी इरशाद है "बेशक नफ़्स बुराईयों पर उभारने वाला है मगर यह कि मेरा परवर दिगार रहम करे।" लेकिन जब इन्सान इस नफ़्स की फ़रेबकारियों पर मुतनब्बेह होता और ग़फ़लत की अंध्यारियों से निकलता है तो उसे निदामत व शर्मसारी घेर लेती है। वह अपने किये पर पछताता है और ज़मीर व वुजदान उसे मलामत करता है। यह नफ़्स लव्वामा की कारफ़रमाई है, जिससे नफ़्से अम्मारा की फ़ितना सामानियां दब जाती हैं। चुनान्चे इरशादे इलाही है : "बुराईयों पर सरज़निश करने वाले नफ़्स की मैं क़सम खाता हूं।" इस ज़मीर की मलामत और शर्मसारी के तास्सुरात से नफ़्स नेकी की राहों को देख लेता है और नेकी को नेकी समझ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कर अख़्तियार करता और बुराई को बुराई समझ कर छोड़ देता है। यह नफ़्स मुलहमा (दिल में डाला जाये) का करिश्मा है। चुनान्चे इरशादे कुदरत है "उसने बदकिरदारी और परहेज़गारी नफ़्स को समझा दी। और जब इन्सान हमातन नेक आमाल में मसरूफ़ और बुराईयों से किनाराकश हो जाता है और तमाम अलाएक़ से क़तअ नज़र कर लेता है तो सब्र व यक़ीन की रूह उसके अन्दर दौड़ जाती है। जिसके बाद न कोई मुसीबत उसे मुतज़लज़ल करती है और न उसका यक़ीन डांवां डोल होता है। यह नफ़्से मुतमइन्ना की मंज़िल है जहां अल्लाह की रिज़ा व ख़ुशनूदी उसके दामन में सिमट आती है। चुनानचे इरशादे इलाही है : "ऐ नफ़्से मुतमइन्ना! अपने परवर दिगार की तरफ़ पलट आ इस हालत में कि तू उससे ख़ुश, वह तुझसे राज़ी।" बहरहाल इस नफ़्से अम्मारा की चीरा दस्तियों से बच कर वही आगे बढ़ सकता है जिसे अल्लाह तआला की तरफ़ से ताईद हासिल हो और तौफ़ीक़े इलाही उसके शामिले हाल हो। इसी लिये हज़रत ने नफ़्से अम्मारा की बुराईयों से बचने के लिये अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ व ताईद का सहारा ढूंढ़ा है, क्योंकि इन्सान हर बुरी तहरीक के आगे सर ख़म कर देता और हर नफ़सानी ख़्वाहिश के अदना इशारे पर हथियार डाल देता है। इसी बिना पर क़ुदरत ने इन्सान को कमज़ोर व ज़ईफ़ क़रार दिया है जेसा कि इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "अल्लाह वह है जिसने तुम्हें कमज़ोर व ज़ईफ़ पैदा किया"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अल्लाह तआला से पनाह तलब करने के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजुमा) "बारे इलाहा! अगर तू चाहे कि हमें माफ़ कर दे तो यह तेरे फ़ज़्ल के सबब से है और अगर तू चाहे कि हमें सज़ा दे तो यह तेरे अदल की रू से है। तू अपने शेवए एहसान के पेशे नज़र हमें पूरी माफ़ी दे और हमारे गुनाहों से दरगुज़र करके अपने अज़ाब से बचा ले। इस लिये कि हमें तेरे अदल की ताब नहीं है, और तेरे अफ़वो के बग़ैर हममें से किसी एक की भी नजात नहीं हो सकती। ऐ बेनयाज़ों के बेनयाज़! हां तो फिर हम सब तेरे बन्दे हैं जो तेरे हुज़ूर खड़े हैं। और मैं सब मोहताजों से बढ़ कर तेरा मोहताज हूं। लेहाज़ा अपने भरे ख़ज़ाने से हमारे दामने फ़क़रो एहतियाज को भर दे, और अपने दरवाज़े से रद्द करके हमारी उम्मीदों को क़तअ न कर, वरना जो तुझसे ख़ुश हाली का तालिब था वह तेरे हां से हिरमां नसीब होगा और जो तेरे फ़ज़ल से बख़्शिश व अता का ख़्वास्तगार था वह तेरे दर से महरूम रहेगा। तो अब हम तुझे छोड़ कर किस के पास जायें और तेरा दर छोड़ कर किधर का रूख़ करें। तू इससे मुनज़्ज़ा है (कि हमें ठुकरा दे जब कि) हम ही वह आजिज़ व बेबस हैं जिनकी दुआयें कुबूल करना तूने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है, और वह दर्दमन्द हैं जिनके दुख

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दर्द दूर करने का तूने वादा किया है, और तमाम चीज़ों में तेरे मुक़तज़ाए मशीयत के मुनासिब और तमाम उमूर में तेरी बुज़ुर्गी व अज़मत के शायान यह है कि जो तुझसे रहम की दरख़्वास्त करे तू उस पर रहम फ़रमाए औरजो तुझसे फ़रयाद रसी चांहे तू उसकी फ़रयादरसी करे। तो अब अपनी बारगाह में हमारी तज़र्रा व ज़ारी पर रहम फ़रमा, और जब कि हमने अपने को तेरे आगे (ख़ाके मुज़ल्लत पर) डाल दिया है तो हमें (फ़िक्रो ग़म से) निजात दे। बारे इलाहा! जब हमने तेरी मअसियत में शैतान की पैरवी की तो उसने (हमारी इस कमज़ोरी पर) इज़हारे मसर्रत किया। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आले[अ०] अतहर पर दुरूद भेज, और जब हमने तेरी ख़ातिर उसे छोड़ दिया और उससे रुगरदानी करके तुझसे लौ लगा चुके हैं तो कोई ऐसी उफ़ताद न पड़े कि वह हम पर शमातत करे।"

यह दुआ तलबे पनाह, ख़्वास्तगारी, रहमत और अद्ले इलाही के तक़ाज़ों से बेबसी व नाताक़ती के एतराफ़ के सिलसिले में है। रहमत व अदालत अल्लाह की दो सिफ़तें हैं जो दो मुख़्तलिफ़ पहलूओं को नुमायां करती हैं। एक पहलू बख़शिश व मग़फ़रत का है और दूसरा पहलू तअज़ीर व उक़ूबत का। रहमत का तक़ाज़ा यह है कि वह गुनहगारों और मुजरिमों से दरगुज़र करे और अदालत का तक़ाज़ा यह है कि उनके गुनाहों और जुर्मों की उन्हें सज़ा दे। जब उसके अफ़वो व रहमत की वुसअत पर नज़र

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जाती है तो दिल में रिजा की कैफ़ियत पैदा होती है, और जब उसके ग़ज़ब व इन्तेक़ाम का तसव्वुर होता है तो दिल ख़ौफ़ से लरज़ उठता है। मगर इस ख़ौफ़ व रिजा के मिले जुले जज़बात में रहमत का नक़्श पहले दिल व दिमाग़ पर उभरता है और क़हर व ग़ज़ब का एहसास बाद में होता है, क्योंकि दुनिया व आख़रत के हर गोशे में अस्ल रहमत ही की कारफ़रमाई है और तअज़ीर व इन्तेक़ाम तो बाज़ नागुज़ीर हालतों के लिये है जहां सज़ा व उक़ूबत के बग़ैर चारा ही नहीं है। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम ने अपने दिल नशीन और मख़सूस अन्दाज़ तलब में पहले रहमत का तज़करा किया है और बाद में अदालत का। इस तरह कि अगर तू माफ़ कर दे तो यह तेरी रहमत की कारसाज़ी है और अगर सज़ा दे तो यह तेरी अदालत का तक़ाज़ा है। फिर उसकी रहमत व अदालत के दोनों रूख़ों को सामने रखते हुए बारगाहे इलाही में अर्ज़ करते हैं कि अगर नजात का फ़ैसला तेरे अदल की रू से हो तो दुनिया में कोई भी नजात हासिल नहीं कर सकता, और कौन ऐसा हो सकता है जो तेरी रहमत से बेनयाज़ हो कर सिर्फ़ अपने आमाल के बल बूते पर नजात व रुस्तगारी का परवाना हासिल कर ले जाये। लेहाज़ा जब नजात तेरे दामने अफ़वो व रहमत से वाबस्ता है तो बग़ैर किसी मुहासबा व बाज़पुरसी के हमें माफ़ कर दे और अपने फ़ज़ल व अहसान से महरूम न कर। इस लिये कि "ऐ बेनयाज़ों के बेनयाज़! हम सब बन्दे तेरे हुज़ूर खड़े हैं और मैं सब मोहताजों से बढ़ कर तेरा मोहताज हूं।" इस जुमले में न मालूम तलब व नियाज़ की कितनी मंज़िलें तय हो गयी हैं और इल्तजाओ तलबे रहमत के कितने दफ़्तर सिमट आये हैं। सैय्यद नेअमत उल्लाह जज़ाएरी रहमतुल्लाह इस जुमले के ज़ैल में तहरीर करते हैं कि : "अगर ग़ौर किया जाये तो इस जुमले से सौ के बक़द्र व क़ाएक़ व नुकात मुस्तनबित हो सकते हैं" चुनान्चे पहली नज़र इस सनअत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तबाक़ व तज़ाद पर पड़ती है जो अग़नियुल अग़निया और अफ़क़रूल फ़क़रा में है कि जब उसे सब से ज़्यादा ग़नी कहा है तो उसके मुक़ाबले में. अपने को बहुत ज़्यादा फ़क़ीर कह कर पेश किया है, और इससे तलब व सवाल के इस्तेहक़ाक़ पर भी रौशनी पड़ती है इस तरह कि जब वह ग़नी है तो किसी नेअमत व दौलत के बख़्शने से क़ासिर नहीं हो सकता, और इधर फ़क्र है तो फ़क़ीर अपनी ज़रूरत व एहतेयाज के पेशे नज़र मांगेगा और जब कि पानी का बहाव उधर का रूख़ करता है जिधर नशेब होता है तो करीम का दस्ते करम भी उधर बढ़ना चाहिये, जहां फ़क्र व एहतेयाज हो, और फिर वह सिर्फ़ ग़नी नहीं बल्कि ग़नीयुल अग़निया है जिसके माने यह हैं कि वह हर लिहाज़ से ग़नी व बेनयाज़ है ऐसा नहीं कि एक लिहाज़ से ग़नी हो और एक एतबार से मोहताज कि यह कहा जा सके कि इस सवाल का तअल्लुक़ इस पहलू से है जिसमें एहतेयाज कारफ़रमा है और इसी तरह दूसरी तरफ़ सिर्फ़ एहतेयाज नहीं बल्कि हद से बढ़ी हुई एहतेयाज है तो उसके फ़ज़्ल व करम का ज़्यादा महल वही होगा जहां एहतेयाज अपनी पूरी बेसरोसामानी के साथ हो। इस मक़ाम पर लफ़्ज़े हा से जो हर्फ़ तन्बीह है कुदरत को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह किया है। हालांकि हर्फ़ तन्बीह उस महल पर इस्तेमाल होता है जहां मुख़ातिब को झिंझोड़ना और ग़फ़लत व बेतवज्जेही से होशियार करना मक़सूद होता है। मगर अल्लाह को मुतनब्बेह व होशियार करने के क्या मआनी जबकि उस पर न ग़फ़लत तारी हो सकती है और न वह बन्दों के हाल से ग़ाफ़िल व बेख़बर रह सकता है। तो इस महल पर अल्लाह को मुतनब्बेह करना नहीं है बल्कि इस तन्बीह के पर्दे में अपनी ग़फ़लत व कोताही का एतराफ़ मक़सूद है। इस तरह कि जब इन्सान गुनाह करता है तो अल्लाह तआला से मअनवी लिहाज़ से दूर हो जाता है और जूं जूं गुनाह में बढ़ता जाता है इस दूरी का एहसास भी बढ़ता जाता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है और वह यह तसव्वुर करने लगता है कि अब वह अल्लाह से इतना दूर हो चुका है कि वह उसे नज़र अन्दाज़ कर दे और नाक़ाबिले इल्तेफ़ात समझ कर अपनी तवज्जोह का रुख़ उससे मोड़ ले। इस एहसास के पेशे नज़र जो ख़ुद उसकी ग़फ़लत का नतीजा होता है। अल्लाह को गोया अपने से ग़ाफ़िल क़रार दे लेता है और इस मौक़े पर ख़िताब के लिये हर्फ़ तन्बीह की ज़रूरत महसूस करता है, और जब तज़रअ व ज़ारी और दुआ व मुनाजात से उसकी तरफ़ रूजूअ होता है तो यह दूरी का एहसास ख़त्म हो जाता है और उसकी तरफ़ मुतवज्जाह होने से उसे अपने से क़रीब तर तसव्वुर करने लगता है। चुनान्चे जब अपनी ग़फ़लत के पेशे नज़र दूरी का तसव्वुर हुआ तो लफ़्ज़े हा से उसे मुतवज्जाह किया, और जब उसकी तरफ़ रूजूअ होने से कुर्ब का एहसास हुआ तो फ़रमाया "हम तेरे सामने ही तो है" और इसी अम्र की तरफ़ इस हदीसे कुदसी में इशारा है :–

(तरजुमा) "जो एक बालिश्त मुझसे क़रीब होता है
मैं एक हाथ उसके क़रीब जाता हूं।"

और कभी इस महल पर भी हर्फ़ तन्बीह लाया जाता है जहां मुख़ातिब को ख़ुसूसी तवज्जोह दिलाकर कोई अहम और ग़ैर मामूली बात कहना होती है और इस तरीक़े से मक़सद की अहमियत को वाज़ेह करना मक़सूद होता है और ज़ाहिर है कि इस मक़सद से अहम मक़सद क्या हो सकता है जो इन्सान की दाएमी फ़लाह व बहबूद से मुतअल्लिक़ हो, और फिर मक़सद की अहमियत उसकी मुक़तज़ी होती है कि पूरी आजिज़ी व इन्केसारी के साथ सवाल किया जाये और इन्तेहाई तज़र्रअ व इसरार से दामने तलब फैलाया जाये तो इस मुख़्तसर और दो हर्फ़ी लफ़्ज़े हा में अपनी ग़फ़लत और उसके नतीजे में अल्लाह की तरफ़ से बेतवज्जेही, मुद्दआ व मक़सद की अहमियत और उसके लिये गिड़गिड़ाहट सब माने सिमट कर जमा हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ाये हैं। हज़रत[अ०] ने इस मौरिद पर लफ़्ज़े एबाद इस्तेमाल की है जो अब्द क़ी जमा है। तो यह वही असलूब है जो इरशादे इलाही "हम तेरी ही इबादत करते हैं।" का है। कि तन्हा इबादत करने वाला भी उबूदियत का इज़हार बसूरते जमा करता है गोया वह एबादत गुज़ारों के ज़मरे में मुन्सलिक हो कर अपनी एबादत को अल्लाह के हुज़ूर में पेश करता है ताकि उनमें से कुबूल होने वाली एबादतों के साथ साथ यह भी कुबूलियत का ारफ़ हासिल कर ले जाये। इसी तरह हज़रत[अ०] के इरशाद का मक़सद यह कि अगर मैं तेरे करम व रहमत का सज़ावार नहीं तो उन बन्दों में जिन्हें ने अपने साथ शामिल किया है, बेगुनाह, कमज़ोर व नातवां, बूढ़े, आजिज़ दरमांदा अफ़राद भी हैं। उनमें कोई न कोई तो तेरी नज़रे करम का स्तहक़ और क़ाबिले शफ़क़त व मरहमत होगा। तो मैं भी उनकी सफ़ में ड़ा हुआ जाता हूं ताकि जब तेरी रहमत जोश में आये और तेरे फ़ज़ल व नाम की घंघोर घटायें बरसें तो मेरा दामन भी छलक जाये क्योंकि अब्रे ारां जब बरसता है बिला इम्तियाज़ बरसता है, और फिर लफ़्ज़ अब्द से इस ायत की तरफ़ इशारा भी है कि "ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपने फ़सों पर ज़्यादती की है मेरी रहमत से बेआस न हो जाओ।" क़सद यह है कि जब तूने अपने एबाद को अपनी रहमत का उम्मीदवार नाया है तो हम वही एबाद तो हैं जो झोली फैलाये तुझसे आस लगाये तेरे र पर ईस्तादा हैं। बल्कि "हमने अपने को तेरे आगे ख़ाके मज़ल्लत र डाल दिया है।" तो अब आगे तेरी ख़ुशी जो सरफ़राज़ करे।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अन्जाम बख़ैर होने की दुआ

(तरजुमा) ''ऐ वह ज़ात! जिसकी याद, याद करने वालों के लिये सरमायए इज़्ज़त; ऐ वह जिसका शुक्र, शुक्रगुज़ारों के लिये वजहे कामरानी; ऐ वह जिसकी फ़रमांबरदारी फ़रमांबरदारों के लिये ज़रियए नजात है। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमारे दिलों को अपनी याद में और हमारी ज़बानों को अपने शुक्रिये में और हमारे आज़ा को अपनी फ़रमांबरदारी में मसरूफ़ रख कर हर याद, हर शुक्रिये और हर फ़रमांबरदारी से बेनयाज़ कर दे, और अगर तूने हमारी मसरूफ़ियतों में कोई फ़रागत का लम्हा रखा है तो उसे सलामती से हमकनार कर, इस तरह कि नतीजे में कोई गुनाह दामनगीर न हो और न ख़स्तगी रूनुमा हो ताकि बुराईयों को लिखने वाले फ़रिश्ते इस तरह पलटें कि नामाए आमाल हमारी बुराईयों के ज़िक्र से ख़ाली हो और नेकियों को लिखने वाले फ़रिश्ते हमारी नेकियों को लिख कर मसरूर व शादां वापस हों और जब हमारी ज़िन्दगी के दिन बीत जायें और सिलसिलए हयात क़तअ हो जाये और तेरी बारगाह में हाज़िर होने का बुलावा आये जिसे बहरहाल आना और जिस पर बहरसूरत लब्बैक कहना है। तो मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमारे कातबाने आमाल हमारे जिन आमाल का शुमार करें उनमें आख़िरी अमल मक़बूल तौबा को क़रार दे कि उसके बाद

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हमारे उन गुनाहों और हमारी उन मआसियतों पर जिनके हम मुरतकब हुए हैं सरज़निश न करे और जब अपने बन्दों के हालात जांचे तो उस पर्दे को जो तूने हमारे गुनाहों पर डाला है सबके रूबरू चाक न करे। बेशक जो तुझे बुलाये तू उस पर मेहरबानी करता है और जो तुझे पुकारे तू उसकी सुनता है।

सरनामए दुआ में ज़िक्रे इलाही को करने वालों के लिये सरमायए ़ज़्ज़त व शरफ़ क़रार दिया है, क्योंकि जब बन्दा अल्लाह को याद करता ै तो अल्लाह भी उसे याद रखता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है : तुम मुझे ाद करो, मैं तुम्हें याद रखूंगा।" और हदीसे क़ुदसी में वारिद हुआ ै :—

(तरजमा) "जो शख़्स किसी बज़्म में मेरा ज़िक्र करता है मैं उससे बेहतर इज्तेमाअ में उसका ज़िक्र करता हूं, और जो ख़ुफ़िया तौर पर मेरा ज़िक्र करता है मैं उसका एलानिया ज़िक्र करता हूं।"

और ज़ाहिर है कि ख़ालिक़ अपने मख़लूक़ को और मअबूद का अपने ाब्द को याद रखना और अपने अल्ताफ़ का मोरिद क़रार देना बन्दे के लिये ाअसे इज़्ज़त व इफ़्तेख़ार है और चूंकि यह नतीजा है ज़िक्रे इलाही का, ाहाज़ा ज़िक्रे इलाही भी शरफ़ में महसूब होगा।

अहले इरफ़ान के नज़दीक ज़िक्रे इलाही के चार मरतबे हैं। पहला रतबा यह है कि अल्लाह का ज़िक्र और उसकी तस्बीह व तहमीद सिर्फ़ ाबान से हो और दिल उसकी याद से यकसर ख़ाली हो। यह ज़िक्र का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पस्त तरीन मरतबा है ता हम फ़ायदे से यह भी ख़ाली नहीं है।" क्योंकि जितनी देर ज़बान उसके ज़िक्र में मसरूफ़ रहेगी, ग़ीबत, बदगोई, फ़ोहश कलामी और दूसरी बेहूदा बातों से महफ़ूज़ रहेगी, और हो सकता है कि रफ़्ता रफ़्ता दिल भी ज़बान का साथ देने लगे और अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जाह हो जाये, क्योंकि जब ज़िक्र की आवाज़ें पैहम कान के परदों से टकरायेंगी तो कब तक दिल मुताअस्सिर न होगा। दूसरा मर्तबा यह है कि दिल ज़बान का साथ तो दे मगर तवज्जोह व इन्हेमाक न हो। ऐसा मालूम हो कि उसे जबरन् व क़हरन् इस तरफ़ लाया जा रहा है। यह मरतबा पहले मरतबे से कुछ बलन्द है क्योंकि दिल कुछ थोड़ा बहुत तो ज़बान का हमनवा है। तीसरा मरतबा यह है कि ज़बान के साथ दिल भी उसकी याद में खो जाये, लेकिन दूसरी तरफ़ मुतवज्जाह करने से मुतवज्जाह भी हो जाये, अगरचे यह तवज्जाह वक़्ती व आरज़ी हो। यह रूसूख़ की मंज़िल है, और चौथा मरतबा यह है कि दिल में ज़िक्र इस तरह रच बस जाये कि ख़ून के साथ रग व पै में दौड़ने लगे और हयात का हर लम्हा सोज़ व गुदाज़ का लाफ़ानी मुरक्क़ा और जिस्म व जान का हर रेशा मोहब्बत की शोला फ़िशानियों का मरकज़ बन जाये। यह इश्क़े इलाही की मंज़िल फ़ना फ़िल्लाह का दर्जा और उबूदियत का वह बलन्द मक़ाम है जिसके अन्दर रुबूबियत के जौहर पोशीदा हैं। हज़रत के इरशाद "हमारे दिलों को अपने ज़िक्र की बदौलत हर ज़िक्र से बेनयाज़ कर दे"। में इसी मरतबे की तरफ़ इशारा हैं। चुनान्चे ज़िक्रे इलाही में हज़रत[अ०] के इन्हमाक का यह आलम होता था कि न कोई ख़्वाहिश आपके तसव्वुरात पर ग़ालिब आती थी और न कोई हादसा तवज्जाह को मोड़ने में कामयाब हो सकता था। कमालुद्दीन अबी तलहा शाफ़ई ने मतालिबुस्सऊल में तहरीर किया है कि हज़रत मेहराबे एबादत में ईस्तादा नमाज़े शब पढ़ रहे थे कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ैतान एक अज़दहे की सूरत में सामने से नमूदार हुआ, मगर आप हस्बे ामूल नमाज़ में मसरूफ़ रहे। उसने बढ़कर आपके पैर का अंगूठा अपने ांतों में दबा लिया। फिर भी आपकी तवज्जाह को हटाने में कामयाब न हो का। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो देखा कि वह अज़दहे की सूरत में ैतान है। आपने उसे ठोकर लगाई और फिर मसरूफ़े एबादत हो गये। इस ज़र को देख कर हातिफ़े ग़ैबी ने पुकार कर कहा "आप[अ०] इबादत ुज़ारों की ज़ीनत हैं।"

दूसरी चीज़ यह बयान फ़रमाई है कि अल्लाह का शुक्रिया अदा करना ुक्रगुज़ारों के लिये बाअसे कामरानी है। चुनान्चे इरशादे इलाही है कि अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं तुम्हारी नेअमतों में इज़ाफ़ा रूंगा और अगर तुमने कुफ़्राने नेअमत किया तो याद रखो कि रा अज़ाब सख़्त अज़ाब है"। लेहाज़ा जब जब कुफ़राने नेअमत, ेअमतों से महरूमी और अज़ाब का बाअस है तो शुक्र नेअमतों की फ़ज़ाइश और अज़ाब से रेहाई का ज़रिया होगा और यही फ़ोज़ व ामरानी है जो अदाये शुक्र की बदौलत हासिल होती है।

तीसरी चीज़ यह बयान की है कि अल्लाह तआला की एताअत, एताअत ुज़ारों के लिये नजात व रास्तगारी की ज़ामिन और उख़रवी कामरानी की ज़ेम्मेदार है। चुनान्चे जब इन्सान में एताअत का जज़्बा पैदा होता है और ह अल्लाह के एहकाम की पाबन्दी और उसके ममनूआत व मोहर्रमात से नारा करता है तो क़हरन् उसके अफ़कार व आमाल पर एक ख़ुशगवार सर पड़ता है और वह अच्छाई, बुराई दुरूस्त व नादुरूस्त और सही व लत में इम्तियाज़ करके बुराईयों से अलाहिदगी अख़्तियार करता और च्छाईयों को अपने अन्दर नशोनुमा देता है जिसके नतीजे में वह इज़्ज़त कामरानी की जिन्दगी बसर करता और मरने के बाद अल्लाह तआला के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इनामात से सरफ़राज़ होता है चुनान्चे इरशादे इलाही है:

(तरजमा) "जो अल्लाह तआला और उसके रसूल[स०] की एताअत करते हैं वह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने अपना इनआम किया है।"

और जो उसके एताअत से इन्हेराफ़ करता हुआ उसके हुदूद को तोड़ता और गुनाह व मअसियत में पड़ा रहता है वह अपने नापाक अमल व किरदार की वजह से दिलों में कोई मक़ाम व मंज़िलत हासिल नहीं कर सकता और उन दुन्यवी ज़िल्लतों और तबाहियों के साथ आख़ेरत की हलाकतों के असबाब भी फ़राहम कर लेता है। चुनान्चे इरशादे बारी है :-

(तरजुमा) "जो अल्लाह तआला और उसके रसूल[स०] की मुख़ालफ़त करते हैं और उसके हुदूद से तजावुज़ करते हैं उन्हें हमेशा के लिये जहन्नम में दाख़िल करेगा और उसके लिये रुस्वा करने वाला अज़ाब है।"

बहरहाल ज़िक्र, शुक्र और एताअत यह वह आमाल हैं जो इन्सान के दिल, ज़बान और आज़ा को गुनाह से बचा ले जाते हैं। चुनान्चे दिल में अगर उसकी याद होगी तो ख़यालाते फ़ासिदा और मोअतक़दाते बातला के कुबूल करने की गुंजाइश उसमे न रहेगी, और ज़बान पर उसका ज़िक्र या शुक्र होगा तो वह झूठ, बोहतान, ग़ीबत और इस क़बील के दूसरे उयूब से बचा रहेगा, और अगर आज़ा उसकी एताअत में मसरूफ़ रहेंगे तो वह गुनाह जो उन आज़ा से तअल्लुक़ रखते हैं जैसे ज़ुल्म, सरक़ा, क़त्ल, ज़िना वग़ैरा उससे सरज़द न होंगे और यही दिल, ज़बान और आज़ा गुनाह व मआसी का सरचश्मा हैं। जब उन पर ज़िक्र, शुक्र और एताअत का पहरा बैठ जायेगा तो कुल्लियतन गुनाहों का इन्सदाद हो जायेगा और यही मक़ाम,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मक़ामे इस्मत है।

उसके बाद ख़ुदा वन्दे आलम की बारगह में यह इल्तेजा की है कि वह हमावक़्त ज़िक्र, शुक्र और एताअत में मसरूफ़ रहने की तौफ़ीक़ करामत फ़रामाए और अगर एबादत से कुछ फ़राग़त के लम्हात मयस्सर हों तो इस फ़राग़त की वजह से दिल में तंगी की सूरत पैदा न हो कि फिर ज़िक्र व एबादत की तरफ़ रुजूअ होना तबीअत पर शाक़ गुज़रे, और कोई ऐसी बात न होने पाये जो रज़ाए इलाही के ख़िलाफ़ हो। मक़सद यह है कि बेकारी और तअत्तुल पैदा ही न हो, और न कोई लम्हा ऐसा गुज़रे जिसमें मक़सदे हयात से फ़रामोशी होने पाये।

एतराफ़े गुनाह और तलबे तौबा के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! मुझे तीन बातें तेरी बारगाह में सवाल करने से रोकती हैं और एक बात इस पर आमादा करती है। जो बातें रोकती हैं उनमें से एक यह है कि जिस अम्र का तूने हुक्म दिया मैंने उसकी तामील में सुस्ती की। दूसरे यह कि जिस चीज़ से तूने मना किया उसकी तरफ़ तेज़ी से बढ़ा। तीसरे जो नेअमतें तूने मुझे अता कीं उनका शुक्रिया अदा करने में कोताही की, और जो बात मुझे सवाल करने की जुरअत दिलाती है वह तेरा तफ़ज़्ज़ुल व अहसान है जो तेरी तरफ़ रूजूअ होने वालों और हुस्ने ज़न के साथ आने वालों के हमेशा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शरीके हाल रहा है, क्योंकि तेरे तमाम अहसानात सिर्फ़ तेरे तफ़ज़्ज़ुल की बिना पर हैं और तेरी हर नेअमत बग़ैर किसी साबक़ा इस्तेहक़ाक़ के है। अच्छा फिर ऐ मेरे मअबूद! मैं तेरे दरवाज़ए इज़्ज़ो व जलाल पर एक अब्द मुतीअ व ज़लील की तरह खड़ा हूं और शर्मिन्दगी के साथ एक फ़क़ीर व मोहताज की हैसियत से सवाल करता हूं इस अम्र का इक़रार करते हुए कि तेरे अहसानात के वक़्त तर्क मअसियत के अलावा और कोई एताअत (अज़ क़बील हम्द व शुक्र) न कर सका, और मैं किसी हालत में तेरे इनाम व अहसान से ख़ाली नहीं रहा, तो क्या ऐ मेरे मअबूद! यह बदआमालियों का इक़रार तेरी बारगाह में मेरे लिये सूदमन्द हो सकता है और वह बुराईयां जो मुझसे सरज़द हुई हैं उनका एतराफ़ तेरे अज़ाब से नजात का बाअस क़रार पा सकता है। या यह कि तूने उस मक़ाम पर मुझ पर ग़ज़ब करने का फ़ैसला कर लिया है और दुआ के वक़्त अपनी नाराज़गी को मेरे लिये बरक़रार रखा है। तू पाक व मुनज़्ज़ा है। मैं तेरी रहमत से मायूस नहीं हूं इस लिये कि तूने अपनी बारगाह की तरफ़ मेरे लिये तौबा का दरवाज़ा खोल दिया है। बल्कि मैं उस बन्दए ज़लील की सी बात कह रहा हूं जिसने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया और अपने परवर दिगार की हुरमत का लिहाज़ न रखा। जिसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गुनाह अज़ीम और रोज़ अफ़ज़ूँ हैं जिसकी ज़िन्दगी के दिन गुज़र गये और गुज़रते जा रहे हैं। यहां तक कि जब उसने देखा कि मुद्दते अमल तमाम हो गयी और उम्र अपनी आख़िरी हद को पहुंच गयी और यह यक़ीन हो गया कि अब तेरे हां हाज़िर हुए बग़ैर कोई चारह और तुझसे निकल भागने की कोइ सूरत नहीं है तो वह हमातन तेरी तरफ़ रुजूअ हुआ और सिदक़े नीय्यत से तेरी बारगाह में तौबा की। अब वह बिल्कुल पाक व साफ़ दिल के साथ तेरे हुज़ूर खड़ा हुआ। फिर कपकपाती आवाज़ से और दबे लहजे में तुझे पुकारा इस हालत में कि ख़ुशूअ व तज़ल्लुल के साथ तेरे सामने झुक गया और सर को न्योढ़ा कर तेरे आगे ख़मीदा हो गया। ख़ौफ़ से उसके दोनों पांव थर्रा रहे हैं और सैलें अश्क उसके रूख़सारों पर रवां है, और तुझे इस तरह पुकार रहा है : ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले। ऐ उन सबसे बढ़ कर रहम करने वाले जिनसे तलबगाराने रहम व करम बार बार रहम की इल्तेजायें करते हैं ऐ उन सबसे ज्यादा मेहरबानी करने वाले जिनके गिर्द माफ़ी चाहने वाले घेरा डाले रहते हैं। ऐ वह जिस का अफ़वो व दरगुज़र उसके इन्तेक़ाम से फ़ुज़ूँतर है। ऐ वह जिसकी ख़ुशनूदी उसकी नाराज़गी से ज्यादा है। ऐ वह जो बेहतरीन अफ़वो दरगुज़र

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

के बाअस मख़लूक़ात के नज़दीक हम्द व सताइश का मुस्तहक़ है। ऐ वह जिसने अपने बन्दों को क़ुबूले तौबा का ख़ूगर किया है और तौबा के ज़रिये उनके बिगड़े हुए कामों की दुरुस्तगी चाही है। ऐ वह जो उनके ज़रा से अमल पर ख़ुश हो जाता है और थोडे से काम का बदला ज़्यादा देता है। ऐ वह जिसने उनकी दुआओं को क़ुबूल करने का ज़िम्मा लिया है। ऐ वह जिसने अज़ रुए तफ़ज़्ज़ुल व अहसान बेहतरीन जज़ा का वादा किया है जिन लोगों ने तेरी मअसियत की और तूने उन्हें बख़्श दिया, मैं उनसे ज़्यादा गुनहगार नहीं हूं, और जिन्होंने तुझसे मअज़रत की और तूने उनकी मअज़रत को क़ुबूल कर लिया उनसे ज़्यादा क़ाबिले सरज़निश नहीं हूं और जिन्होंने तेरी बारगाह में तौबा की और तूने (तौबा को क़ुबूल फ़रमाकर) उन पर अहसान किया उनसे ज़्यादा ज़ालिम नहीं हूं। लेहाज़ा मैं अपने इस मौक़िफ़ को देखते हुए तेरी बारगाह में तौबा करता हूं उस शख़्स की सी तौबा जो अपने पिछले गुनाहों पर नादिम और ख़ताओं के हुजूम से ख़ौफ़ज़दा और जिन बुराईयों का मुरतकब होता रहा है उन पर वाक़ई शर्मसार हो और जानता हो कि बड़े से बड़े गुनाह को माफ़ कर देना तेरे नज़दीक कोई बड़ी बात नहीं है और बड़ी से बड़ी ख़ता से दरगुज़र करना तेरे लिये कोई मुश्किल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नहीं है और सख़्त से सख़्त जुर्म से चश्मपोशी करना तुझे ज़रा गरां नहीं है यक़ीनन् तमाम बन्दों में से वह बन्दा तुझे ज़्यादा महबूब है जो तेरे मुक़ाबले में सरकशी न करे। गुनाहों पर मुसिर न हो और तौबा व इस्तग़फ़ार की पाबन्दी करे, और मैं तेरे हुज़ूर ग़ुरूर व सरकशी से दस्तबरदार होता हूं और गुनाहों पर इसरार से तेरे दामन में पनाह मांगता हूं, और जहां जहां कोताही की है उसके लिये अफ़वो व बख़्शिश का तलबगार हूं, और जिन कामों के अन्जाम देने से आजिज़ हूं उनमें तुझसे मदद का ख़्वास्तगार हूं। ऐ अल्लाह! तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और तेरे जो जो हुक़ूक़ मेरे ज़िम्मे आयद होते हैं उन्हें बख़्श दे और जिस पादाश का मैं सज़ावार हूं उससे माफ़ी दे और मुझे उस अज़ाब से पनाह दे जिससे गुनाहगार हरासां हैं। इस लिये कि तू माफ़ कर देने पर क़ादिर है; और तुझ ही से मग़फ़रत की उम्मीद की जा सकती है, और तू इस सिफ़ते अफ़वो व दरगुज़र में मारूफ़ है, और तेरे सिवा हाजत के पेश करने की कोई जगह नहीं है और न तेरे अलावा कोई मेरे गुनाहों का बख़्शने वाला है। हाशा व कल्ला कोई और बख़्शने वाला नहीं है और मुझे अपने बारे में डर है तो बस तेरा। इस लिये कि तू ही इसका सज़ावार है कि तुझसे डरा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जाये, और तू ही इसका अहल है कि बख़्शिश व आमरज़िश से काम ले। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा मेरी हाजत बर ला और मेरी मुराद पूरी कर। मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे दिल को ख़ौफ़ से मुतमईन कर दे। इस लिये कि तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है, और यह काम तेरे लिये सहल व आसान है। मेरी दुआ कुबूल फ़रमा ऐ तमाम जहां के परवर दिगार।

फ़िरक़ए इमामिया का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि अम्बिया[अ०] व आइम्मा मासूमीन[अ०] होते हैं और ज़िन्दगी के किसी लम्हे में अमदन् व सहवन् ख़ता गुनाह के मुरतकब नहीं होते ख़्वाह गुनाह सग़ीरा हो या कबीरा। मगर अहसासे उबूदियत के पेशे नज़र वह अल्लाह की बारगाह में अफ़वो व दरगुज़र की इल्तेजा करते और तौबा व अनाबत का हाथ उठाते थे। क्योंकि अल्लाह के हुकूक़ और उसके अनगिनत अहसानात व इनआमात के शुक्रिये से कोई भी ओहदा बरां नहीं हो सकता। इस लिहाज़ से हर शख़्स ख़्वाह वह गुनाहों से महफ़ूज़ हो तौबा व इस्तग़फ़ार का मोहताज है। इस बिना पर अम्बिया व अइम्मा अलैहिस्सलाम इस हक़ की अदायगी से इज्ज़ का एतराफ़ और तौबा व इस्तग़फ़ार करते थे। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :– "मैं हर रोज़ सत्तर मरतबा तौबा व इस्तग़फ़ार करता हूं"। ज़ाहिर है कि यह तौबा व इस्तग़फ़ार किसी गुनाह के नतीजे में नहीं होती थी बल्कि यह एक तरह से उबूदियत का मुज़ाहिरा है। चुनान्चे साहबे कशफ़ुल ग़म्मा ने तहरीर किया है कि अम्बिया व अइम्मा हमावक़्त ज़िक्र व एबादत में मुस्तग़रक़ और उनके कुलूब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व अज़हान मलाउल आला से वाबस्ता रहते थे और जब वह अल्लाह की अज़मत व जलाल और उसके मक़ामे रफ़ीअ के तसव्वुर के बाद अपनी एबादतों और रियाज़तों का जाएज़ा लेते और ज़िन्दगी के उन लम्हात को देखते जो एबादत व अस्तग़राक़ के अलावा दूसरे मशाग़िल में बसर होते थे जैसा खाना पीना, आराम व इसतराहत वग़ैरा। तो वह उन मशग़ूलियतों को अल्लाह के हुकूक़ में कोताही का मुरादिफ़ समझते और उन्हें गुनाह से तअबीर करते हुए तौबा व इस्तग़फ़ार का सहारा ढूंडते थे बहरहाल यह तौबा व अनाबत बुलन्दिए दरजात और हुसूले सवाब की ग़रज़ से होती थी और वह अपने को इससे बेनयाज़ तसव्वुर न करते थे कि अल्लाह उन पर मज़ीद लुत्फ़ व अहसान फ़रमाए और उनके मरातिब को बुलन्द से बुलन्दतर करे। यह अम्र क़ाबिले लिहाज़ है कि जब मासूम अफ़राद तौबा व अनाबत से बेनयाज़ न रह सके तो वह लोग जो आसी व ख़ताकार हों वह क्योंकर तौबा व इस्तग़फ़ार से बेनयाज़ हो सकते हैं जबकि तौबा ही अफ़वो व दरगुज़र का ज़रिया और इक़रारे गुनाह ही निजात का वसीला है। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम का इरशाद है :—

(तरजमा) "ख़ुदा की क़सम! गुनाहों की पादाश से वही निजात हासिल कर सकता है जो गुनाहों का एतराफ़ करे।"

अब इमाम अलैहिस्सलाम की दुआ पर एक नज़र कीजिये और देखिये के वह गुनाहों की कसाफ़त व आलाइश से यकसर पाक होने और हमावक़्त अल्लाह तआला से लौ लगाने और उसकी याद में खोये रहने की बावजूद ख़ौफ़ व रेजा के संगम पर खड़े हो कर किस तरह उसे पुकारते और मुजरिमों और गुनाहगारों की तरह फ़रयाद करते हैं। हालत यह है कि अज़मते इलाही के तसव्वुर और गुनाह व तक़सीर के अहसास ने पैरों में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

राशा, आवाज़ में कपकपी और जिस्म में थरथरी पैदा कर दी है और दिल में ख़ौफ़ व हरास आंखों में अश्के निदामत और निगाहों में गुबारे हसरत लिये उसकी बारगाह में सर शर्म व हया से झुकाये हुए हैं। गोया ज़बाने हाल की सदा यह है।

हया एक नफ़सियाती कैफ़ियत है जो किसी अम्र में कोताही या किसी ऐसे फ़ेल के नतीजे में इन्सान पर तारी होती है जिसे वह क़ाबिले मज़म्मत व सरज़निश तसव्वुर करता है। ख़ुदा वन्दे आलम से हया कभी गुनाह, कभी उमूरे मुस्तहब्बा में कोताही और कभी उसके जलाल व जबरूत से मुतास्सिर होने के नतीजे में महसूस होती है। चुनान्चे इन्हीं तास्सुरात की बिना पर फ़रमाते हैं कि ऐ मअबूद! मैं किस मुंह से तेरी बारगाह का रूख़ करूं और किस तरह सवाल करने की जुरअत करूं जबकि मैंने तेरे अहकाम के बजा लाने में सुस्ती, मोहर्रमात व ममनूआत की तरफ़ पेश क़दमी और तेरे इनाम व इकराम के शुक्रिये में कोताही की और फिर यह जानते हुए कि अहसासे निदामत व एतराफ़े गुनाह से उसकी रहमत का इरादा जोश में आता है क्योंकि :–

रहमत यह चाहती है कि अपनी ज़बान से
कह दे गुनाहगार कि तक़सीर हो गयी

अपने गुनाहों की संगीनी व अहमियत को नुमायां करने के लिये बारगाहे इलाही में बतौर इस्तफ़हाम अर्ज़ करते हैं कि क्या मेरे गुनाह भी इस क़ाबिल हैं जिनका एतराफ़ मेरे लिये सूदमन्द और जिनका इक़रार बख़्शिश व निजात की सूरत पैदा कर दे सकता है। इस इक़रार व एतराफ़ के बाद अल्लाह तआला के सामने अफ़वो व बख़्शिश के लिये झोली फैलाते हैं कि मेरे मअबूद! तेरा अफ़वो व दरगुज़र तीन हाल से ख़ाली नहीं। या तू अपनी रहमत के पेशे नज़र गुनाहगारों से दरगुज़र करेगा जैसा कि तेरा इरशाद है :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

"इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवर दिगार लोगों के जुल्म के बावजूद उनसे बड़ा ही दरगुज़र करने वाला है।"

या गुनाहगार के उज़्र व इक़रार की बिना पर दरगुज़र से काम लेगा। ा तौबा व इस्तग़फ़ार के नतीजे में बख़्शेगा। तो मैं पहला गुनाहगार, पहला ुजरिम और पहला आसी नहीं हूं जिसे बख़्शने में तुझे तरद्दुद हो और तेरी स हमागीर रहमत से महरूम रहूं और जिन मअज़रत करने वालों को तूने ख़्श दिया उनसे ज़्यादा क़ाबिले सरज़निश नहीं हूं कि इक़रार व एतज़ार े बाद भी मुझे न बख़्शे; और जिन्होंने गुनाह के बाद तेरी बारगाह में तौबा ी और तूने उनके गुनाहों पर ख़ते अफ़वो खींच दिया उनसे ज़्यादा ुनाहगार नहीं हू कि मुझसे दरगुज़र करने में दरेग़ करे। लेहाज़ा अपनी हमत की फ़रावानी और मेरे एतराफ़े गुनाह और तौबा व इस्तग़फ़ार के ातीजे में मेरे गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा और तेरे अलावा और कौन है जेससे बख़्शिश की उम्मीद की जाये और तेरे सिवा कौन मग़फ़रत करने ाला है जिससे मगफ़रत की भीख मांगी जाये।

खुदा वन्दे आलम से तलबे हाजात के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजुमा) "ऐ मअबूद! ऐ वह जो तलबे हाजात की मंज़िले मुन्तहा है; ऐ वह जिसके यहां मुरादों तक रसाई होती है; ऐ वह जो अपनी नेअमतें क़ीमतों के एवज़ फ़रोख़्त नहीं करता और न अपने अतियों को अहसान जता कर मुकद्दर करता है; ऐ वह जिसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़रिये बेनयाज़ी हासिल होती है और जिससे बेनयाज़ नहीं रहा जा सकता; ऐ वह जिसकी ख़्वाहिश व रग़बत की जाती है और जिससे मुंह मोड़ा नहीं जा सकता; ऐ वह जिसके ख़ज़ाने तलब व सवाल से ख़त्म नहीं होते और जिसकी हिक्मत व मसलेहत को वसाएल व असबाब के ज़रिये तब्दील नहीं किया जा सकता। ऐ वह जिससे हाजतमन्दों का रिश्तए एहतियाज क़तअ नहीं होता और जिसे पुकारने वालों की सदा ख़स्ता व मलूल नहीं करती। तूने ख़ल्क़ से बेनयाज़ होने की सिफ़त का मुज़ाहरा किया है और तू यक़ीनन् उनसे बेनयाज़ है और तूने उनकी तरफ़ फ़िक़्रो एहतियाज की निस्बत दी है, और वह बेशक तेरे मोहताज हैं। लेहाज़ा जिसने अपने अफ़लास के रफ़अ करने के लिये तेरा इरादा किया और अपनी एहतेयाज के दूर करने के लिये तेरा क़सद किया उसने अपनी हाजत को उसके महल व मक़ाम से तलब किया और अपने मक़सद तक पहुंचने का सही रास्ता अख़्तियार किया, और जो अपनी हाजत को ले कर मख़लूक़ात में से किसी एक की तरफ़ मुतवज्जह हुआ या तेरे अलावा दूसरे को अपनी हाजत बरारी का ज़रिया क़रार दिया वह हिरमां नसीबी से दोचार और तेरे एहसान से महरूमी का सज़ावार हुआ। बारे इलाहा! मेरी तुझसे एक हाजत है जिसे पूरा करने से मेरी ताक़त

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जवाब दे चुकी है और मेरी तदबीर व चाराजूई भी नाकाम हो कर रह गयी है और मेरे नफ़्स ने मुझे यह बात ख़ुशनुमा सूरत में दिखाई कि मैं अपनी हाजत को उसके सामने पेश करूं जो ख़ुद अपनी हाजतें तेरे सामने पेश करता है और अपने मक़ासिद में तुझसे बेनयाज़ नहीं है। यह सरासर ख़ताकारों की ख़ताओं में से एक ख़ता और गुनाहगारों की लग़ज़िशों में से एक लग़ज़िश थी, लेकिन तेरे याद दिलाने से मैं अपनी ग़फ़लत से होशियार हुआ और तेरी तौफ़ीक़ ने सहारा दिया तो ठोकर खाने से संभल गया और तेरी राहनुमाई की बदौलत इस ग़लत इक़दाम से बाज़ आया और वापस पलट आया और मैंने कहा वाह सुब्हानल्लाह! किस तरह एक मोहताज दूसरे मोहताज से सवाल कर सकता है, और कहां एक नादार दूसरे नादार से रूजूअ कर सकता है। (जब यह हक़ीक़त वाज़ेह हो गयी) तो मैंने ऐ मेरे मअबूद! पूरी रग़बत के साथ तेरा इरादा किया और तुझ पर भरोसा करते हुए अपनी उम्मीदें तेरे पास लाया हूं, और मैंने इस अम्र को बख़ूबी जान लिया है कि मेरी कसीर हाजतें तेरी तवन्गरी के आगे कम और मेरी अज़ीम ख़्वाहिशें तेरी वुसअते रहमत के सामने हेच हैं। तेरे दामने करम की वुसअत किसी के सवाल करने से तंग नहीं होती और तेरा दस्ते करम अता व बख़्शिश में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हर हाथ से बुलन्द है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपने करम से मेरे साथ तफ़ज़्ज़ुल व एहसान की रविश अख़्तियार कर और अपने अद्ल से काम लेते हुए मेरे इस्तेहक़ाक़ की रू से फ़ैसला न कर क्योंकि मैं पहला वह हाजतमन्द नहीं हूं जो तेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और तूने उसे अता किया हो हालांकि वह रद्द किये जाने का मुस्तहक़ हो और पहला वह साएल नहीं हूं जिसने तुझसे मांगा हो और तूने उस पर अपना फ़ज़्ल किया हो हालांकि वह महरूम किये जाने के क़ाबिल हो। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी दुआ का क़ुबूल करने वाला, मेरी पुकार पर इल्तेफ़ात फ़रमाने वाला, मेरी इज्ज़ व ज़ारी पर रहम करने वाला और मेरी आवाज़ का सुनने वाला साबित हो और मेरी उम्मीद जो तुझसे वाबस्ता है उसे न तोड़ और मेरा वसीला अपने से क़तअ न कर, और मुझे इस मक़सद और दूसरे मक़ासिद में अपने सिवा दूसरे की तरफ़ मुतवज्जाह न होने दे, और इस मक़ाम से अलग होने से पहले मेरी मुश्किल कुशाई और तमाम मआमलात में हुस्ने तक़दीर की कारफ़रमाई से मेरे मक़सद के बर लाने, मेरी हाजत के रवा करने और मेरे सवाल के पूरा करने का ख़ुद ज़िम्मा ले, और मोहम्मद[स०] और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा। ऐसी रहमत जो दायमी और रोज़ अफ़ज़ूँ हो; जिसका ज़माना ग़ैर मुख़ततिम और जिसकी मुद्दत बेपायां हो, और उसे मेरे लिये मोअय्यन और मक़सद बरारी का ज़रिया क़रार दे। बेशक तू वसीअ रहमत और जूद व करम की सिफ़त का मालिक है। ऐ मेरे परवर दिगार! मेरी कुछ हाजतें यह हैं (इस मक़ाम पर अपनी हाजतें बयान करो। फिर सजदा करो और सजदे की हालत में यह कहो) तेरे फ़ज़्ल व करम ने मेरी दिल जमई और तेरे अहसान ने रहनुमाई की, इस वजह से मैं तुझसे तेरे ही वसीले से और मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद अलैहिमुस्सलात व सलाम के ज़रिये से सवाल करता हूं कि मुझे (अपने दर से) नाकाम व नामुराद न फेर।

इस दुआ में ख़ुदा वन्दे आलम को हाजत रवाईयों की इन्तेहा और क़सद बरारियों की हद्दे आख़िर क़रार दिया है। यह इस लिहाज़ से कि ब इन्सान अपने को हर दरवाज़े से नाकाम होते देखता है और कहीं से जत रवाई व मक़सद बरारी की कोई सूरत नज़र नहीं आती और हर तरफ़ राहे चारह व तदबीर मसदूद हो जाती है तो वह अन्जामकार अल्लाह की रफ़ रुजूअ होता और उससे हाजत रवाई का तालिब होता है या इस तबार से कि जितनी भी हाजतें बज़ाहिर दूसरों से पूरी होती हैं वह दर क़ीक़त अल्लाह तआला ही की कारसाज़ी व कामरानी का करिश्मा है योंकि तमाम मक़सदों और हाजतों के बर आने के असबाब व वसाएल उसी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

की ज़ात पर मुन्तही होते हैं। चुनान्चे अगर कोई शख़्स किसी को कुछ देता है तो उसी में से जो अल्लाह तआला ने उसको दिया है और किसी के लिये तगवदू करता है तो उसी कुव्वत व ताक़त से जो अल्लाह की बख़्शी हुई है। इस लिहाज़ से जो कुछ भी दूसरों के हाथ से मिलता है वह अल्लाह तआला ही की तरफ़ से मिलता है और जो काम औरों के ज़रिये अन्जाम पाता है दर हक़ीक़त अल्लाह तआला ही की कारसाज़ी का नतीजा है वरना जो ख़ुद सरापा एहतियाज हो वह दूसरे की एहतियाज क्या दूर कर सकता है और जो ख़ुद आजिज़ व दरमानन्दा हो वह दूसरे की क्या मदद कर सकता है। लेहाज़ा तमाम एहतियाजों और बेनवाईयों का इलाज उसी ज़ाते बेनयाज़ से होगा जिससे तमाम कायनात का दामने एहतियाज वाबस्ता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

ऐ लोगों! तुम सबके सब अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह ग़नी व बेनयाज़ और हर लिहाज़ से क़ाबिले सताइश है।''

जब वही ज़ात (जल्ला शानहू) तमाम नेअमतों का सरचश्मा और हाजत रवाईयों का नुक़्तए आख़िर है तो फिर दस्ते सवाल भी उसी के सामने बढ़ाना चाहिये न उनके सामने जो ख़ुद मांगने वाले और सरापा एहतियाज हैं।

''जो लोगों से मांगेगा वह उसे महरूम रखेंगे और अल्लाह से मांगने वाला कभी महरूम नहीं होता।''

और फिर अल्लाह के फ़ैज़ान व बख़्शिश और दूसरों की दादो दहश में फ़र्क़ यह है कि लोगों की अता व बख़्शिश एवज़ व बदल की हैसियत रखती है और वह किसी न किसी मौक़े पर अहसान जता कर तफ़व्वुक़ व बरतरी का मुज़ाहरा ज़रूरी करेंगे। मगर अल्लाह सिर्फ़ अपने तफ़ज़्ज़ुल व अहसान की बिना पर नेअमतों से माला माल करता है और उनके मुक़ाबले में किसी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज्र व एवज़ का तलबगार नहीं होता और न वह अहसान जताता है कि ने यह दिया और यह दिया, और अगर वह अपनी नेअमतों का ज़िक्र करता तो इस लिये कि बन्दों में शुक्रगुज़ारी का जज़्बा पैदा हो और इसके नतीजे उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा नेअमतें हासिल हों। इससे मक़सद अहसान ताना नहीं है क्योंकि अहसान तो वह जताता है जो अपनी अता को बड़ा सव्वुर करता और मामूली बख़्शिश को भी अहम समझता हो, और ख़ुदा न्दे आलम ख़्वाह कितनी नेअमतें बख़्शे और कितने अहसानात करे वह सके करम व वुसअत के मुक़ाबले में कोई वज़्न नहीं रखते और न उसके र मुतनाही मक्दूरात को देखते हुए उसके हां कमी का तसव्वुर हो सकता । चुनान्चे वह न ख़ुद अहसान जताता है और न अहसान जताने को पसन्द रता है, क्योंकि यह दनायत व कमज़रफ़ी की अलामत और हाजतमन्दों ो दिलशिक्नी व तनफ़्फ़ुर का बाअस है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

ऐ ईमान वालों! अपने सदक़ात को एहसान जताने और अज़ीय्यत पहुंचाने से राएगां न करो।"

इस दुआ में इन्सान की उसकी तबई कमज़ोरी का भी ज़िक्र है कि जब से अपनी कोशिशें राएगां और तदबीरें बेनतीजा नज़र आती हैं तो वह इधर धर से वसाएल व ज़राए ढूंढ़ता है ताकि अपने मक़सदों और हाजतों में ामयाबी हासिल करे। यह चीज़ें इस पर नज़र करते हुए कि दुनिया आलमे सबाब है और एक का काम दूसरे से निकलता ही है मज़मूम नहीं है। शर्ते कि अस्ल कारफ़रमा और हक़ीक़ी हाजत रवा अल्लाह ही को माने ौर उसकी मशीय्यत के अमल दख़ल का अक़ीदा रखे। चुनान्चे क़ुरआन जीद में हज़रत यूसुफ़[अ०] के मुतअल्लिक़ है कि उन्होंने क़ैदख़ाने के दो ाथियों में से जिसके मुतअल्लिक़ यह समझा कि यह बच रहेगा कहा कि "अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र कीजियो।" मगर हज़रत[अ०] उसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तवक्कुल और इन्क़ेताअ एलल्लाह के मनाफ़ी समझते और अपने मक़ामे रफ़ीअ के पेशे नज़र उसे ख़ता व लग़ज़िश से ताबीर करते हैं। अगरचे इस हद तक यह लग़ज़िश व ख़ता नहीं है, लेकिन जब इन वसाएल व ज़राए पर वुसूक़ व एतमाद कर लिया जाये तो फिर इससे बढ़कर दूसरी लग़ज़िश नहीं हो सकती, क्योंकि यह अल्लाह पर से बेएतमादी और उसके दरवाज़े से मुंह मोड़कर दूसरों के आसतानों की परस्तारी है, इस लग़ज़िश व कजरवी से अगर कोई चीज़ बचा ले जा सकती है तो वह यह कि अपने दिल व दिमाग़ में यह तसव्वुर रासिख़ करे कि उस बेनयाज़ के अलावा कोई हाजत रवा और मुश्किलकुशा नहीं है और मोहताज, मोहताज के और बेनवा, बेनवा के कुछ काम नहीं आ सकता। चुनान्चे जब यह तसव्वुर पुख़्ता और नीयत व इरादा मज़बूत और यक़ीन मुस्तहकम हो जाता है तो ग़फ़लत के पर्दे चाक और लड़खड़ाते क़दम संभल जाते हैं, और हर तलब व नयाज़ उसी की बारगाह के लिये मख़सूस हो कर रह जाती है और ख़ुदा वन्दे आलम जब यह देखता है कि वह सब से मुंह मोड़ कर मेरे आस्ताने की तरफ़ हमातन मुतवज्जह हो चुका है तो वह अपने फ़ज़्ल व करम से उसकी हाजतें बर लाता और मुश्किलें हल कर देता है।

यह दुआ तलबे हाजात का एक इफ़्तेताहिया है जब इसे पढ़ ले तो इसके ख़ात्मे पर अपनी हाजतें बयान करे। अगरचे ख़ुदा वन्दे आलम सबकी हाजतों और ख़्वाहिशों को जानता है मगर वह यह चाहता है कि उसके सामने हाजतों को पेश किया जाये। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

> (तरजमा) "ख़ुदा वन्दे आलम ब–ख़ूबी जानता है कि जब बन्दा दुआ करता है तो वह अपने परवर दिगार से क्या चाहता है, लेकिन अल्लाह इस चीज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

को पसन्द करता है कि तुम अपनी हाजतें खुल कर उसके सामने पेश करो। लेहाज़ा दुआ करो तो अपनी हाजतों का नाम बनाम ज़िक्र करो।"

दुआ के बाद सजदा करे और सजदे में हज़रत[अ०] के फ़रमूदा कलेमात ढ़े ताकि दुआ जल्द शरफ़े क़ुबूलियत हासिल करे इस लिये कि सजदा ज़र्रअ व अलहाह की आख़िरी सूरत और इज्ज़ व नयाज़मन्दी की ख़ास लामत है, और इज्ज़ व इलहाह क़ुबूलियते दुआ का जरिया और बारगाहे लाही में तक़र्रुब का वसीला है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ा इरशाद है :–

(तरजमा) "बन्दा अपने परवर दिगार की बारगाह में उस वक़्त ज़्यादा तक़र्रुब पर फ़ाएज़ होता है जब सजदे की हालत में अपने परवर दिगार को पुकारे और उससे दुआ मांगे।"

जब आप पर कोई ज़्यादती होती या ज़ालिमों से कोई नागवार बात देखते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजमा) "ऐ वह जिससे फ़रियाद करने वालों की फ़रियादें पोशीदा नहीं हैं। ऐ वह जो उनकी सरगुज़िश्तों के सिलसिले में गवाहों की गवाही का मोहताज नहीं है। ऐ वह जिसकी नुसरत मज़लूमों के हम रकाब और जिसकी मदद ज़ालिमों से कोसों दूर है। ऐ मेरे मअबूद! तेरे इल्म में हैं वह ईज़ायें जो मुझे फ़लां इब्ने फ़लां से उसके तेरी नेअमतों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर इतराने और तेरी गिरफ़्त से ग़ाफ़िल होने के बाएस पहुंची हैं। जिन्हें तूने उस पर हराम किया था और मेरी हतके इज़्ज़त का मुरतकिब हुआ जिससे तूने उसे रोका था। ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और अपनी कुव्वत व तवानाई से मुझ पर ज़ुल्म करने वाले और मुझ से दुश्मनी करने वाले को ज़ुल्म व सितम से रोक दे और अपने इक़्तेदार के ज़रिये उसके हरबे कुन्द कर दे और उसे अपने ही कामों में उलझाए रख और जिससे आमादए दुश्मनी है उसके मुक़ाबले में उसे बेदस्त व पा कर दे। ऐ मअबूद! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और उसे मुझ पर ज़ुल्म करने की खुली छूट न दे और उसके मुक़ाबले में अच्छे असलूब से मेरी मदद फ़रमा और उसके बुरे कामों जैसे कामों से मुझे महफ़ूज़ रख और उसकी हालत ऐसी हालत न होने दे। ऐ अल्लाह मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उसके मुक़ाबले में ऐसी बरवक़्त मदद फ़रमा जो मेरे ग़ुस्से को ठण्डा कर दे और मेरे ग़ैज़ व ग़ज़ब का बदला चुकाये। ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और उसके ज़ुल्म व सितम के एवज़ अपनी माफ़ी और उसकी बदसुलूकी के बदले में अपनी रहमत अता फ़रमा क्योंकि हर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नागवार चीज़ तेरी नाराज़गी के मुक़ाबले में हेच है और तेरी नाराज़ी हो तो हर (छोटी बड़ी) मुसीबत आसान है। बारे इलाहा! जिस तरह ज़ुल्म सहना तूने मेरी नज़रों में नापसन्द किया है यूंहि ज़ुल्म करने से भी मुझे बचाये रख। ऐ अल्लाह! मैं तेरे सिवा किसी से शिकवा नहीं करता और तेरे अलावा किसी हाकिम से मदद नहीं चाहता। हाशा कि मैं ऐसा चाहूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मेरी दुआ को क़ुबूलियत से और मेरे शिकवे को सूरतेहाल की तब्दीली से जल्द हमकिनार कर, और मेरा इस तरह इम्तेहान न करना कि तेरे अद्ल व इन्साफ़ से मायूस हो जाऊँ और मेरे दुश्मन को इस तरह न आज़माना कि वह तेरी सज़ा से बेख़ौफ़ हो कर मुझ पर बराबर ज़ुल्म करता रहे और मेरे हक़ पर छाया रहे और उसे जल्द अज़ जल्द उस अज़ाब से रूशिनास कर जिससे तूने सितमगरों को डराया धमकाया है और मुझे क़ुबूलियते दुआ का वह असर दिखा जिसका तूने बेबसों से वादा किया है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे तौफ़ीक़ दे कि जो सूदोज़ियां तूने मेरे लिये मुक़द्दर कर दिया है उसे (बित्तैब ख़ातिर) क़ुबूल करूं, औरजो कुछ तूने दिया है और जो कुछ लिया है इस पर मुझे राज़ी व ख़ुशनूद रख और मुझे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सीधे रास्ते पर लगा और ऐसे काम में मसरूफ़ रख जो आफ़त व ज़ियां से बरी हो। ऐ अल्लाह! अगर तेरे नज़दीक मेरे लिये यही बेहतर हो कि मेरी दादरसी को ताख़ीर में डाल दे और मुझ पर ज़ुल्म ढाने वाले से इन्तेक़ाम लेने को फ़ैसले के दिन और दावेदारों के महले इज्तेमाअ के लिये उठा रखे तो फिर मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल कर और अपनी जानिब से नीयत की सच्चाई और सब्र की पाएदारी से मेरी मदद फ़रमा और बुरी ख़्वाहिश और हरीसों की बेसब्री से बचाये रख और जो सवाब तूने मेरे लिये ज़ख़ीरा किया है और जो सज़ा व उक़ूबत मेरे दुश्मन के लिये मोहय्या की है उसका नक़्शा मेरे दिल में जमा दे और उसे अपने फ़ैसला क़ज़ा व क़द्र पर राज़ी रहने का ज़रिया और अपनी पसन्दीदा चीज़ों पर इत्मिनान व वुसूक़ का सबब क़रार दे। मेरी दुआ को क़ुबूल फ़रमा ऐ तमाम जहान के पालने वाले, बेशक तू फ़ज़्ले अज़ीम का मालिक है और तेरी क़ुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं है।"

हर मज़हब व मिल्लत इस पर मुत्तफ़िक़ है कि ज़ुल्म व जौर इन्सानी सीरत के दामन पर एक बदनुमा धब्बा है और ज़ालिम अपनी ख़ू ख़सलत के लिहाज़ से इन्सानी सफ़ में खड़ा किये जाने के बजाये हैवानी सफ़ में खड़ा किये जाने के ज़्यादा लाएक़ है और इससे ज़्यादा बहीमाना ख़सलत का और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ध्या मुज़ाहिरा होगा कि इन्सान ताक़त के बल बूते पर आजिज़ों और नातवानों को सताये और दौलत व इक़्तिदार के नशे में कमज़ोर व शिकस्ता हाल लोगों को अपने मज़ालिम का निशाना बनाये। हज़रत अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम I अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ियों में अपने फ़रज़न्द हज़रत इमाम मोहम्मद ाक़र अलैहिस्सलाम को वसीय्यत करते हुए फ़रमाया:

(तरजमा) "ऐ फ़रज़न्द! उस आजिज़ व बेकस पर ज़ुल्म करने से डरो जो तुम्हारे मुक़ाबले में अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं रखता।"

ज़ुल्म ऐसा संगीन जुर्म है जो अफ़ो व दरगुज़र के क़ाबिल है ही नहीं, क्योंकि खुदा वन्दे आलम उन गुनाहों को तो बख़्श दे सकता है जो खुद उसकी ज़ात से मुतअल्लिक़ हों, लेकिन वह गुनाह जिनका तअल्लुक़ हुक़ूक़ुल एबाद से है वह उस वक़्त तक बख़्शे नहीं जा सकते जब तक साहबे हक़ खुद न बख़्शे। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है।

(तरजमा) "और वह गुनाह कि जिसे नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता वह बन्दों का एक दूसरे पर ज़ुल्म व ज़्यादती करना है जिसका आख़ेरत में सख़्त बदला लिया जायेगा।"

ज़ुल्म के बुरे नताएज दुनिया में भी ज़ाहिर होते हैं इस तरह कि ज़ालिम कभी फलता भूलता और कामयाब व कामरान नहीं होता जैसा कि इरशादे इलाही है:– "ज़ालिम कभी फ़लाह व कामरानी हासिल नहीं करता।" और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है "ज़ुल्म के नतीजे में नेअमतें छिन जाती हैं।" और आख़ेरत में भी मौरिदे एताब व गिरफ़्तारे अज़ाब होगा। चुनान्चे इरशादे बारी है:–

(तरजमा) "गिरफ़्त उन लोगों की होगी जो लोगों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ शर व फ़साद करते फिरते हैं। उन ही लोगों के लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

और उन सख़्तियों से कहीं ज़्यादा सख़्तियों से दो चार होगा जो दुनिय में उसने मज़लूम व बेकस अफ़राद पर रवा रखी थीं। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजमा) "मज़लूम के ज़ालिम पर क़ाबू पाने का दिन उस दिन से कहीं ज्यादा सख़्त होगा जिसमें ज़ालिम मज़लूम के ख़िलाफ़ अपनी ताक़त दिखाता है।"

उसके मुक़ाबले में मज़लूम अपनी मज़लूमियत व सितमज़दगी का सिला दुनिया में भी पाता है और आख़ेरत में भी पायेगा। दुनिया में इस तरह कि लोग ज़ालिम से नफ़रत करते हुए उसे दिल व जान से चाहने लगते हैं और उनकी हमदर्दियां उसे हासिल हो जाती हैं और अल्लाह तआला भी उसकी मज़लूमियत की बिना पर उसकी फ़रियाद को सुनता और उसकी दुआ को क़ुबूल करता है। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] का इरशाद है :–

(तरजमा) "ज़ुल्म से डरो क्योंकि मज़लूम की पुकार सबसे पहले आसमान की तरफ़ बुलन्द होती है।"

और आख़ेरत में उसे बुलन्द से बुलन्द दरजात हासिल होंगे और वहां पर मज़लूमियत के मताए गरांबहा की क़द्रो क़ीमत का अन्दाज़ा होगा। चुनान्चे रबीउल अबरार ज़मख़शरी में है कि जब हज्जाज ने एक बेगुनाह शख़्स को सूली पर लटकाया तो आमिर इब्ने बहदला तड़प उठा और अल्लाह से मुख़ातिब हो कर कहा : "परवर दिगारा! यह ज़ालिमों को ढील देने ही का नतीजा है कि मज़लूम इस तरह तख़्तेदार पर खींचे जा रहे हैं।" कहने को तो यह कह दिया मगर उसी रात ख़्वाब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

देखा कि क़यामत का मैदान है और हर शख़्स अपनी फ़िक्र में लगा हुआ है, लेकिन वह मज़लूम हिसाब व किताब से फ़ारिग़ हो कर जन्नत के तबक़ए आला में पहुंच चुका है। अभी यह सोच ही रहा था कि ग़ैब से आवाज़ सुनी के "ज़ालिमों को ढील देने और मेरे हिल्म अख़्तियार करने ही ने मज़लूमों को इस बुलन्द तरीन दर्जे पर पहुंचाया है।"

हर मज़लूम की आख़िरी उम्मीदगाह अल्लाह की बारगाह होती है जहां वह गिड़गिड़ाता और ज़ालिम के पंजों से छूटने की इल्तेजा करता है इस मौक़े पर दुआ का अन्दाज़ क्या होना चाहिये? इसके लिये हज़रत[अ०] की यह दुआ एक बेहतरीन नमूना व मिसाल है जिसमें सब्रो रिज़ा और तवक्कुल अलल्लाह की तालीम और सवाबे आख़ेरत और नुसरते इलाही पर यकीन के साथ मज़लूम की नफ़सियाती कैफ़ियत की तर्जुमानी भी है क्योंकि यह उस मज़लूम व सितम रसीदा की दुआ है जिसकी पूरी ज़िन्दगी मज़लूमियत व सितमज़दगी की एक मुसलसल दास्तान थी जो ज़ुल्म सहते रहे मगर ज़ुल्म का जवाब ज़ुल्म से देना गवारा न किया। जोरो सितम का तख़्ता-ए-मश्क़ बने रहे मगर सब्रो ज़ब्त का दामन हाथ से जाने न दिया और कर्ब व इज़्तेराब के शोलों में फुंकते रहे मगर ज़बान को शिकवा व शिकायत से आलूदा न होने दिया। अगर ज़बान पर हर्फ़े शिकायत आता तो यह कि : "ऐ अल्लाह! मैं तेरे सिवा किसी से गिला नहीं करता।" और अल्लाह तआला से शिकायत आईन सब्र व तहम्मुल के मनाफ़ी नहीं है, बल्कि उबूदियत व नयाज़मन्दी का एक मुज़ाहरा है, और ख़ासाने ख़ुदा का यह शेवा रहा है कि अल्लाह से अपना दुख दर्द बयान करते और अपनी बेताबी व बेक़रारी का इज़हार करते थे। चुनान्चे क़ुरआन मजीद में हज़रत याक़ूब[अ०] की ज़बानी इरशाद है :– "मैं सिर्फ़ अल्लाह तआला से अपने ग़म व अन्दोह का शिकवा करता हूं।" और हज़रत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अय्यूब[अ०] के मुतअल्लिक़ इरशाद है : "और अय्यूब[अ०] को देखो जब उन्होंने अपने परवर दिगार को पुकारा था कि मैं दुखिया हूं और तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।" अगरचे मज़लूमियत का तक़ाज़ा यह है कि मज़लूम अपनी सितमज़दगी व बेचारगी की दास्तान दोहराये और दूसरों की हमदर्दियों का सहारा ढूंढे मगर यहां सब्र व ज़ब्त दूसरों के सामने ज़बान खोलने से माने है। इस लिये उसी के सामने गिड़गिड़ाते हैं जो उन शिकवों का सुनने वाला और उसी से ज़ुल्म व जौर के शिकन्जों को तोड़ने की इल्तेजा करते हैं जो उन्हें तोड़ कर निकाल ले जा सकता है। फिर उमूमन सताये जाने के बाद इन्तेक़ामी जज़्बात मुश्तइल हो जाया करते हैं और दुश्मन की तबाही व बर्बादी की ख़्वाहिश ज़बान पर आये बग़ैर नहीं रहा करती मगर इस दुआ में एक जुमला भी ऐसा नहीं है जिससे कीना तोज़ी व बदख़्वाही के जज़्बात का इज़्हार होता हो बल्कि ज़ालिम के बारे में कुछ चाहते हैं तो यह कि ज़ुल्म से कनाराकश हो जाये और मेरे दिल सदपारा पर ज़ुल्म के आशियाने तामीर न करे रही ज़ुल्म की पादाश तो उसे अल्लाह तआला के हवाले कर देते हैं कि वह जो चाहे करे। ख़्वाह दुनिया में इन्तेक़ाम ले या आख़रत में। अलबत्ता अपने लिये यह चाहते हैं कि वह उन ज़ालिमों के झेलने के सिले में अपनी ख़ुशनूदी व रिज़ामन्दी अता फ़रमाये चाहे जोरो सितम के तीर दिल की एक एक रग को तोड़ दें और ज़ुल्म व इस्तेबदाद के तमाम तरकश ख़ाली हो जायें मगर अल्लाह तआला की नाराज़ी से दो चार होना न पड़े, क्योंकि दुनिया की हर तलख़ी व नागवारी को बर्दाश्त किया जा सकता है मगर उसकी नाराज़ी के नतीजे में जिस यास व कुनूतियत से दो चार होना पड़ेगा वह नाक़ाबिले बर्दाश्त है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जब किसी बीमारी या कर्ब व अज़ियत में मुब्तिला होते तो यह दुआ पढ़ते

"ए माबूद! तेरे ही लिये हम्दो सपास है इस सेहत व सलामतिए बदन पर जिसमें हमेशा ज़िन्दगी बसर करता रहा और तेरे ही लिये हम्दो सपास है उस पर जो अब मेरे जिस्म में तेरे हुक्म से रूनुमा हुआ है। ऐ मअबूद! मुझे नहीं मालूम कि इन दोनों हालतों में से कौन–सी हालत पर तू शुक्रिये का ज़्यादा मुस्तहक़ है और इन दोनों वक़्तों में से कौन–सा वक़्त तेरी हम्द व सताइश के ज़्यादा लाएक़ है। आया सेहत के लम्हे जिनमें तूने अपनी पाकीज़ा रोज़ी को मेरे लिये ख़ुशगवार बनाया और अपनी रिज़ा व ख़ुशनूदी और फ़ज़ल व अहसान के तलब की उमन्ग मेरे दिल में पैदा की और उसके साथ अपनी एताअत की तौफ़ीक़ दे कर उससे ओहदेबरा होने की कुव्वत बख़्शी या यह बीमारी का ज़माना जिसके ज़रिये मेरे गुनाहों को दूर किया और नेअमतों के तोहफ़े अता फ़रमाये ताकि उन गुनाहों का बोझ हल्का कर दे जो मेरी पीठ को गरांबार बनाये हुए हैं और उन बुराईयों से पाक़ कर दे जिनमें डूबा हुआ हूं और तौबा करने पर मुतनब्बेह कर दे और गुज़िश्ता नेअमत (तन्दरुस्ती) की याद्दहानी से (कुफ़्राने नेअमत के) गुनाह को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

महो कर दे और इस बीमारी के असना में कातिबाने आमाल मेरे लिये वह पाकीज़ा आमाल भी लिखते रहे जिनका न दिल में तसव्वुर हुआ था न ज़बान पर आये थे और न किसी अज़ो ने इसकी तकलीफ़ गवारा की थी। यह सिर्फ़ तेरा तफ़ज़्ज़ुल व अहसान था जो मुझ पर हुआ। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और जो कुछ तूने मेरे लिये पसन्द किया है वही मेरे नज़रों में पसन्दीदा क़रार दे और जो मुसीबत मुझ पर डाल दी है उसे सहल व आसान कर दे, और मुझे गुज़िश्ता गुनाहों की आलाइश से पाक और साबक़ा बुराईयों को नीस्त व नाबूद कर दे और तन्दरुस्ती की लज़्ज़त से कामरान और सेहत की ख़ुशगवारी से बहरअन्दोज़ कर और मुझे इस बीमारी से छुड़ा कर अपने अफ़वों की जानिब ले आ और इस हालते उफ़तादगी से बख़्शिश व दरगुज़र की तरफ़ फेर दे और इस बेचैनी से नजात दे कर अपनी राहत तक और शिद्दत व सख़्ती को दूर करके कशाएश व वुसअत की मंज़िल तक पहुंचा दे इस लिये कि तू बेइस्तेहक़ाक़ अहसान करने वाला और गरांबहा नेअमतें बख़्शने वाला है और तू ही बख़्शिश व करम का मालिक और अज़मत व बुज़ुर्गी का सरमायादार है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ग़रीबी, अमीरी, दुख, आराम और बीमारी व सेहत वह लवाज़िमे हयात हैं जिनसे ज़िन्दगी के लम्हात कभी ख़ाली नहीं रहते कभी निकबत व अफ़लास है तो कभी सख़्त व इक़बाल। कभी रंज व अलम है तो कभी ऐश व आराम, कभी मरज़ की जान का ही है तो कभी सेहत की कैफ़ अफ़ज़ाई। अगरचे यह दो मुख़्तलिफ़ कैफ़ियतें और अलग अलग हालतें हैं जिनके तास्सुरात भी जुदा जुदा हैं इस तरह कि सेहत व रफ़ाहियत से शुक्रिये के और बीमारी व कुल्फ़त से शिकवा व शिकायत के जज़बात पैदा होते हैं मगर जिसके आब व गिल में रिज़ाये इलाही का अुनसुर शामिल हो वह हर हालत में यकसां शुक्रगुज़ार रहता है और किसी वक़्त अपनी ज़बान को शिकवा व शिकायत से आलूदा नहीं होने देता। चुनान्चे जब बिस्तरे बीमारी पर बेक़रारी की करवटें बेचैन करती और कर्ब व अज़ीय्यत की टीसें सुकून व क़रार छीन लेती हैं तो उसकी ज़बान पर सब्रो शुक्र और हम्द व सना ही का तराना गूंजता है, क्योंकि उसे यह यक़ीन होता है कि सेहत हो या मर्ज़ दोनों शुक्रो सताइश के क़ाबिल हैं। बेशक सेहत एक गरां माया दौलत है जिसकी सही क़द्रो क़ीमत का अन्दाज़ा उसे ही हो सकता है जो उसे हाथ से खो चुका हो, लेकिन इतना तो हर शख़्स समझता है कि यह सेहत ही के ख़ुशगवार अहसास का नतीजा है कि इन्सान चाक चौबन्द और आमादए अमल नज़र आता है और जोश, जुरअत, हौसला, अहसासे ख़ुद्दारी और वलवला सब उसी का करिश्मा हैं। इसी से कस्बे मईशत और इबादत व एताअत की सरगर्मी वाबस्ता है और उसी की बदौलत दुनिया की लज़्ज़तों से हज़ अन्दोज़ हुआ जाता है। मगर मर्ज़ भी अपने नताएज व असरात के लिहाज़ से फ़ायदों से ख़ाली नहीं है। चुनान्चे हज़रत[अ०] ने इसके चन्द फ़वाएद की तरफ़ इस दुआ में इशारा किया है।

पहला फ़ायदा यह है कि मर्ज़ गुनाहों से ततहीर और गुनाहों की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गिरांबारी से सुबुकदोशी का बाअस होता है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनी अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "मर्ज़ गुनाहों को दूर करता और इस तरह झाड़ देता है जिस तरह पत्ते झड़ते हैं।"

दूसरा फ़ायदा यह है कि इन्सान हालते मर्ज़ में अपने गुनाहों पर नादिम होता, तौबा व अनाबत करता और अल्लाह तआला से लौ लगाता है चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "जब इन्सान दुखिया होता है तो अपने पहलू पर लेटा हो या बैठा हो या खड़ा हो हमें पुकारता है।"

तीसरा फ़ायदा यह है कि इससे सेहत व आफ़ियत की सही क़द्रो क़ीमत का अन्दाज़ा होता है और भूली बिसरी नेअमत की याद ताज़ा होती है। वरना इस नेअमते तन्दरुस्ती को नेअमत ही तसव्वुर न किया जाता। चुनान्चे हदीस़ में वारिद हुआ है कि "दो नेअमतें ऐसी हैं जिन्हें नेअमत ही नहीं समझा गया। एक अमन और दूसरे आफ़ियत"। और चूंकि नेअमत की फ़रामोशी व नाक़द्री एक गुनाह है और बीमारी इस नेअमत की तरफ़ मुतवज्जाह करती और कुफ़्राने नेअमत से बचा कर शुक्रगुज़ारीका जज़्बा पैदा करती है इस लिये यह भी नेअमत की याददहानी की वजह से नेअमत में महसूब होगी।

चौथा फ़ायदा यह है कि जब मज़ की वजह से इन्सान के अमल की रफ़्तार सुस्त हो जाती है या अमल के क़ाबिल ही नहीं रहता। तो वह जिन आमाल को सेहत की हालत में बजा लाया करता था वह उसके नामए आमाल में बराबर दर्ज होते रहते हैं। चुनान्चे हदीसे नबवी है कि :–

(तरजमा) "जब मोमिन बीमार होता है तो ख़ुदा वन्द

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तआला उस फ़रिश्ते को जो उस पर मुकर्रर होता है हुक्म देता है कि मर्ज़ में भी उसके वह आमाल जिन्हें वह बजा लाया करता था लिखते रहो क्योंकि उसे मरज़ के शिकन्जे में असीर करने वाला मैं ही हूं"

पांचवा फ़ायदा यह है कि जब इन्सान मर्ज़ में मुब्तला होता है तो दफ़िए के लिये सदक़ा व ख़ैरात करता है और यह भी एक कारगर इलाज है जैसा कि अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है : "सदक़ा एक कामयाब दवा है।" और इस सदक़े और दादो दहश से तबीअत का रुख़ बुख़ल व हिरस और ज़रअन्दोज़ी की ख़्वाहिश से जूदो सख़ा की तरफ़ मुड़ जाता है और नफ़सानी रोग इन्हेतात पज़ीर हो जाता है।

छठा फ़ायदा यह है कि मर्ज़ दुनिया की बेसबाती व नापाएदारी और मौत की याद दिलाता है क्योंकि सेहते जिस्मानी का फ़ुक़दान मौत का पेश ख़ेमा है और मौत का तसव्वुर इन्सान को अल्लाह से लौ लगाने और उसकी तरफ़ रुजूअ होने पर आमादा कर देता है बल्कि दुनिया की हर उफ़ताद और हर कुलफ़त अल्लाह की तरफ़ झुकाती और उसे पुकारने पर मजबूर कर देती है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो तुम उसके सामने गिड़गिड़ाते हो।"

सातवां फ़ायदा यह है कि अक्सर गुनाहों का सरचश्मा कुव्वते ग़ज़बिया व शहवानिया होती है, और बीमारी से जहां और क़वाए बदनी में कमज़ोरी आ जाती है वहां उन दोनों पर भी असर अन्दाज़ होती है जिसके नतीजे में इन्सान बहुत से गुनाहों के इरतेकाब से बच जाता है।

आठवां फ़ायदा यह है कि अगर बेसब्री व बेक़रारी का इज़हार न करे और सब्र व ज़ब्त से काम ले तो इस मशक़्क़त व ज़हमतकशी के नतीजे में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अज्रो सवाब का भी मुस्तहक़ होगा।

नवां फ़ायदा यह है कि अगर किसी गुनाह के इरतेकाब की आदत जड़ पकड़ चुकी है तो तूले मर्ज़ से इस आदत के छूट जाने का भी इम्कान पैदा हो जाता है, और हो सकता है कि हमेशा के लिये इससे छुटकारा हासिल हो जाये।

दसवां फ़ायदा यह है कि बाज़ छोटे मोटे अमराज़ इस नौइयत के होते हैं कि वह किसी बड़े मर्ज़ के लिये रोक बन कर खड़े हो जाते हैं इस लिये हो सकता है कि मौजूदा मर्ज़ भी किसी दूसरे मर्ज़ की रोक थाम कर दे। चुनान्चे अतबा का यह मुत्तफ़िक़ अलैह नज़रिया है कि ज़ुकाम व मल बुख़ार वग़ैरा से बदने इन्सानी को मुख़्तलिफ़ फ़ायदे पहुंचते हैं और बाज़ ज़हरीले माद्दे ख़ारिज हो जाते हैं जो दूसरे अमराज़ के लिये हिफ़्ज़े मातक़द्दुम का काम दे जाते हैं।

मज़कूरा बाला फ़वाएद के बावजूद फिर इन्सान सेहत को मर्ज़ पर तरजीह देता और तन्दरुस्ती का ख़्वाहाँ होता है और किसी तरह मर्ज़ को गवारा नहीं करता। इसकी वजह यह है कि सेहत व आफ़ियत हुब्बे तिब्बी का करिश्मा है और मर्ज़ हुब्बे अक़्ली का तक़ाज़ा है, और हुब्बे तिब्बी हुब्बे अक़्ली से ज़्यादा इन्सानी एहसासात को मुतास्सिर करती और उसके बशरी जज़्बात से साज़गार रहती है। इस लिये वह मर्ज़ के फ़ायदा बख़्श नताएज के बावजूद सेहत व सलामती का ख़्वाहिशमन्द रहता है। मगर जिसमें हुब्बे अक़्ली के तक़ाज़े हुब्बे तिब्बी के तक़ाज़ों पर ग़ालिब हों वह अपनी हर माद्दी तलब व ख़्वाहिश को भी रिज़ाए इलाही से वाबस्ता कर देता है और इस रिज़ाए इलाही के अलावा उसका कोई और मक़सद नहीं होता, और यही वह मक़ाम है जहां हज़रत[अ०] की ज़िन्दगी के अतवार आम इन्सानी ज़िन्दगी के अतवार से बुलन्दतर नज़र आते हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जब गुनाहों से माफ़ी चाहते या अपने ऐबों से दरगुज़र की इल्तेजा करते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजमा) "ऐ ख़ुदा! ऐ वह जिसे गुनाहगार उसकी रहमत के वसीले से फ़रियादरसी के लिये पुकारते हैं। ऐ वह जिसके तफ़ज़्ज़ुल व अहसान की याद का सहारा बेकस व लाचार ढूंढ़ते हैं। ऐ वह जिसके ख़ौफ़ से आसी व ख़ताकार नाला–ओ–फ़रियाद करते हैं। ऐ हर वतन आवारा व दिल गिरफ़्ता के सरमायए इन्स, हर ग़मज़दा व दिल शिकस्ता के ग़मगुसार, हर बेकस व तन्हा के फ़रियादरस और हर रान्दा व मोहताज के दस्तगीर, तू वह है जो अपने इल्म व रहमत से हर चीज़ पर छाया हुआ है और तू वह है जिसने अपनी नेअमतों में हर मख़लूक़ का हिस्सा रखा है। तू वह है जिसका अफ़वो दरगुज़र उसके इन्तेक़ाम पर ग़ालिब है। तू वह है जिसकी अतायें फ़ैज़ व अता के रोक लेने से ज़्यादा हैं। तू वह है जिसके दामने वुसअत में तमाम कायनाते हस्ती की समाई है। तू वह है कि जिस किसी को अता करता है उससे एवज़ की तवक़्क़ो नहीं रखता और तू वह है कि जो तेरी नाफ़रमानी करता है उसे हद से बढ़ कर सज़ा नहीं देता। ख़ुदाया! मैं तेरा वह बन्दा हूं जिसे तूने दुआ का हुक्म दिया तो वह लब्बैक लब्बैक पुकार उठा। हां

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तो वह में हूं ऐ मेरे मअबूद! जो तेरे आगे ख़ाके मुज़ल्लत पर पड़ा है। मैं वह हूं जिसकी पुश्त गुनाहों से बोझल हो गयी है। मैं वह हूं जिसकी उम्र गुनाहों में बीत चुकी है। मैं वह हूं जिसने अपनी नादानी व जेहालत से तेरी नाफ़रमानी की। हालांकि तू मेरी जानिब से नाफ़रमानी का सज़ावार न था। ऐ मेरे मअबूद! जो तुझसे दुआ मांगने आया तू उस पर रहम फ़रमाएगा ताकि मैं लगातार दुआ मांगू। या जो तेरे आगे रोये उसे बख़्श देगा ताकि मैं रोने पर जल्द आमादा हो जाऊँ। या जो तेरे सामने इज्ज़ व नयाज़ से अपना चेहरा ख़ाक पर मले उससे दरगुज़र करेगा। या जो तुझ पर भरोसा करते हुए अपनी तेही दस्ती का शिकवा करे उसे बेनयाज़ कर देगा। बारे इलाहा! जिसका देने वाला तेरे सिवा कोई नहीं है उसे ना उम्मीद न कर और जिसका तेरे अलावा और कोई ज़रिया बेनयाज़ी नहीं है उसे महरूम न कर। ख़ुदा वन्दा! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझसे रुगरदानी अख़्तियार न कर जब कि मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जाह हो चुका हूं और मुझे नाउम्मीद न कर जब कि तेरी तरफ़ ख़्वाहिश ले कर आया हूं और मुझे सख़्ती से धुतकार न दे जबकि मैं तेरे सामने खड़ा हूं। तू वह है जिसने अपनी तौसीफ़ रहम व करम से की है। लेहाज़ा मोहम्मद[स०] और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और तूने अपना नाम दरगुज़र करने वाला रखा है लेहाज़ा मुझसे दरगुज़र फ़रमा। बारे इलाहा! तू मेरे अश्कों की रवानी को जो तेरे ख़ौफ़ के बाअस मेरे दिल की धड़कन जो तेरे डर की वजह से है और मेरे आज़ा की थरथरी को जो तेरी हैबत के सबब से है देख रहा है। यह सब अपनी बद्आमालियों को देखते हुए तुझसे शर्म व हया महसूस करने का नतीजा है यही वजह है कि तज़र्रुअ व ज़ारी के वक़्त मेरी आवाज़ रुक जाती है और मुनाजात के मौक़े पर ज़बान काम नहीं देती ऐ ख़ुदा तेरे ही लिये हम्दो सपास है कि तूने मेरे कितने ही ऐबों पर पर्दा डाला और मुझे रुस्वा नहीं होने दिया और कितने ही मेरे गुनाहों को छुपाया और मुझे बदनाम नहीं किया और कितनी ही बुराईयों का मैं मुरतकब हुआ मगर तूने पर्दा फ़ाश न किया और न मेरे गले में बन्धने आर की ज़िल्लत का तौक़ डाला और न मेरे ऐबों की जुस्तुजू में रहने वाले हमसाईयों और उन नेअमतों पर जो मुझे अता की हैं हसद करने वालों पर उन बुराईयों को ज़ाहिर किया। फिर भी तेरी मेहरबानियां मुझे उन बुराईयों के इरतेकाब से जिनका तू मेरे बारे में इल्म रखता है रोक न सकें। तो ऐ मेरे मअबूद! मुझसे बढ़ कर कौन अपनी इसलाह व बहबूद से बेख़बर,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अपने हिज़ व नसीब से ग़ाफ़िल और इस्लाहे नफ़्स से दूर होगा जबकि हमें इस रोज़ी को जिसे तूने मेरे लिये क़रार दिया है उन गुनाहों में सर्फ़ करता हूं जिनसे तूने मना किया है और मुझसे ज़्यादा कौन बातिल की गहराई तक उतरने वाला और बुराइयों पर इक़दाम की जुरअत करने वाला होगा जब कि मैं ऐसे दो राहे पर खड़ा हूं कि जहां एक तरफ़ तू दावत दे और दूसरी तरफ़ शैतान[ल०] आवाज़ दे; तो मैं उसकी कारस्तानियों से वाक़िफ़ होते हुए और उसकी शरअंगेज़ियों को ज़ेहन में महफ़ूज़ रखते हुए उसकी आवाज़ पर लब्बैक कहता हूं हालांकि मुझे उस वक़्त भी यक़ीन होता है कि तेरी दावत का मआल जन्नत और उसकी आवाज़ पर लब्बैक कहने का अन्जाम दोज़ख़ है। अल्लाहो अकबर! कितनी यह अजीब बात है जिसकी गवाही मैं ख़ुद अपने ख़िलाफ़ दे रहा हूं और अपने छुपे हुए कामों को एक एक करके गिन रहा हूं और इससे ज़्यादा अजीब तेरा मुझे मोहलत देना और अज़ाब में ताख़ीर करना है। यह इस लिये नहीं कि मैं तेरी नज़रों में बावक़ार हूं, बल्कि यह मेरे मामले में तेरी बुर्दबारी और मुझ पर तेरा लुत्फ़ व अहसान है ताकि मैं तुझे नाराज़ करने वाली नाफ़रमानियों से बाज़ आ जाऊँ और ज़लील व रुस्वा करने वाले गुनाहों से दस्तकश हो जाऊँ और इस लिये है कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुझ से दरगुजर करना सज़ा देने से तुझे ज़्यादा पसन्द है, बल्कि मैं तो ऐ मेरे मअबूद! बहुत गुनहगार, बहुत बद्सिफ़ात व बदआमाल और ग़लत कारियों में बेबाक और तेरी एताअत के वक़्त सुस्तगाम और तेरी तहदीद सरज़निश से ग़ाफ़िल और उसकी तरफ़ बहुत कम निगरान हूं तो किस तरह मैं अपने उयूब तेरे सामने शुमार कर सकता हूं या अपने गुनाहों का ज़िक्र व बयान से एहाता कर सकता हूं और जो इस तरह मैं अपने नफ़्स को मलामत व सरजनिश कर रहा हूं तो तेरी इस शफ़क़त व मरहमत के लालच में जिससे गुनहगारों के हालात इस्लाह पज़ीर होते हैं और तेरी उस रहमत की तवक़्क़ो में जिसके ज़रिये ख़ताकारों की गर्दनें (अज़ाब से) रेहा होती हैं। बारे इलाहा! यह मेरी गर्दन है, जिसे गुनाहों ने जकड़ रखा है। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और अपने अफ़वो दरगुज़र से उसे आज़ाद कर दे। और यह मेरी पुश्त है जिसे गुनाहों ने बोझल कर दिया है। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और अपने लुत्फ़ व इनाम के ज़रिये इसे हल्का कर दे। बारे इलाहा! अगर मैं तेरे सामने इतना रोऊँ कि मेरी आंखों की पलकें झड़ जायें, और इतना चीख़ चीख़ कर गिरया करूं कि आवाज़ बलन्द हो जाये और तेरे सामने इतनी देर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

खड़ा रहूं कि दोनों पैरों पर वर्म आ जाये और इतने रुकूअ करूं कि रीढ़ की हड्डियां अपनी जगह से उखड़ जायें और इस क़द्र सजदे करूं कि आंखे अन्दर को धंस जायें और उम्र भर ख़ाक फांकता रहूं और ज़िन्दगी भर गन्दला पानी पीता रहूं, और इस असना में तेरा ज़िक्र इतना करूं कि ज़बान थक कर जवाब दे जाये फिर शर्म व हया की वजह से आसमान की तरफ़ निगाह न उठाऊँ इसके बावजूद मैं अपने गुनाहों में से एक गुनाह के बख़्शे जाने का भी सज़ावार न हूंगा, और अगर तू मुझे बख़्श दे जब कि मैं तेरी मग़फ़रत के लाएक़ क़रार पाऊँ और मुझे माफ़ कर दे जबकि मैं तेरी माफ़ी के क़ाबिल समझा जाऊँ तो यह मेरे इस्तेहक़ाक़ की बिना पर लाज़िम नहीं होगा, और न मैं इस्तेहक़ाक़ की बिना पर इसका अहल हूं। क्योंकि जब मैंने पहले पहल तेरी मअसियत की तो मेरी सज़ा जहन्नम तय थी। लेहाज़ा तू मुझ पर अज़ाब करे तो मेरे हक़ में ज़ालिम नहीं होगा। ऐ मेरे मअबूद! जब कि तूने मेरी पर्दापोशी की और मुझे रुस्वा नहीं किया और अपने लुत्फ़ व करम से नर्मी बरती और अज़ाब में जल्दी नहीं की और अपने फ़ज़्ल से मेरे बारे में हिल्म से काम लिया और अपनी नेअमतों में तब्दीली नहीं की और न अपने अहसान को मुकद्दर किया है तू मेरी इस तवील तज़र्रअ व ज़ारी और सख़्त

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

एहतियाज और मौकूफ़ की बदहाली पर रहम फ़रमा। ऐ अल्लाह मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे गुनाहों से महफ़ूज़ और एताअत में सरगरमे अमल रख और मुझे हुस्ने रुजूअ की तौफ़ीक़ दे और तौबा के ज़रिये पाक कर दे और अपनी हुस्ने निगेहदाश्त से नुसरत फ़रमा और तन्दुरूस्ती से मेरी हालत साज़गार कर और मग़फ़रत की शीरीनी से काम व दहन को लज़्ज़त बख़्श और मुझे अपने अफ़्वो का रेहाशुदा और अपनी रहमत का आज़ादकर्दा क़रार दे और अपने अज़ाब से रेहाई का परवाना लिख दे और आख़रत से पहले दुनिया ही में नजात की ऐसी ख़ुश ख़बरी सुना दे जिसे वाज़ेह तौर से समझ लूं और उसकी ऐसी अलामत दिखा दे जिसे किसी शाएबा अबहाम के बग़ैर पहचान लूं और यह चीज़ तेरे हमागीर इक़्तिदार के सामने मुश्किल और तेरी कुदरत के मुक़ाबले में दुश्वार नहीं है। बेशक तेरी कुदरत हर चीज़ पर मुहीत है।"

यह दुआ उम्मीद व बीम का एक मुरक़्क़ा है जिसके नुक़ूशे ज़िन्दगी को ख़ौफ़ व रिजा के ख़ुतूत पर चलाने के लिये शम–ए–हिदायत का काम देते हैं। ख़ौफ़ व रिजाअ दोनों अमली ज़िन्दगी की बुनियाद और उख़रवी कामरानी का पेश ख़ेमा हैं। अगर ख़ौफ़ न हो तो इन्सान पादाशे अमल से ग़ाफ़िल हो जायेगा और उम्मीद न हो तो अमल में सरगर्मी पैदा न होने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पायेगी और यह ख़ौफ़ व रिजाअ की कैफ़ियत ख़ुदा की सिफ़त अदालत व रहमत के तसव्वुर से पैदा होती है क्योंकि अदालत का तक़ाज़ा यह है कि जो उसके दरवाज़ए रहमत पर दस्तक दे, तौबा व अनाबत का हाथ फैलाये और उससे अफ़वो दरगुज़र का सवाल करे उसे बेआस न करे जिससे उम्मीद का सोता फूटेगा और मग़फ़ेरत की आस मायूसियों से बचाकर बरसरे अमल रखेगी। यह उसकी रहमत ही की कारफ़रमाई है कि वह बड़े बड़े गुनाहों पर भी सज़ा व उक़ूबत में तअजील से काम नहीं लेता और सख़्त से सख़्त जुर्म की पादाश में भी फ़ौरी गिरफ़्त नहीं करता, और अगर वह सज़ा देने में जल्दी करता तो तौबा व अनाबत का वक़्त कहां मिलता। बल्कि तौबा का वसीला ढूंढ़ने और अनाबत का हाथ फैलाने से पहले ही हलाकत व तबाही घेर लेती। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

> "और जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिये जल्दी करते हैं उसी तरह अगर ख़ुदा (उन गुनाहों की) सज़ा में जल्दी करता तो उनका मुक़र्रर वक़्त कब का आ चुका होता।"

अगर वह गुनाह के फ़ौरन् बाद अपने ग़ज़ब से काम लेता और मुजरिम को उसके जुर्म की सज़ा देता तो यह उसके अद्ल व इन्साफ़ के मनाफ़ी तो न होता लेकिन तक़ाज़ाए रहमत के ख़िलाफ़ ज़रूर होता। हालांकि उसकी रहमत उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब है। चुनान्चे जहां ग़ज़ब व रहमत में कशमकश होती है वहां रहमत आगे बढ़ जाती है और ग़ज़ब को पीछे छोड़ जाती है, क्योंकि रहमत उसकी ज़ात का तक़ाज़ा है और ग़ज़ब मुख़ालिफ़त व नाफ़रमानी का नतीजा। चुनान्चे ग़ज़ब ख़ास ख़ास मौक़ों के लिये हे और रहमत आम व हमागीर है इस तरह कि अगर दुनिया में सरकशी व तुग़यान और कुफ़्र व इसयान का वुजूद न होता तो फिर रहमत ही रहमत होती और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

क़हर व ग़ज़ब का नामो निशान भी न होता, क्योंकि अस्ल रहमत ही कारफ़रमाई है और ग़ज़ब एक तबई व फ़रई हैसियत रखता है जो सिर्फ़ बदआमालियों के नतीजे में मुश्तइल होता है, और फिर ऐसा नहीं कि एक दफ़ा मुश्तइल हो जाये तो फिर फ़र्द न हो, बल्कि उसके ग़ज़ब की सूरत तो यह है कि इधर किसी ने अपनी ग़फ़लतों और कोताहियों का एतराफ़ करके इस्लाहे अमल का अहद किया ग़ज़ब का रुख़ मुड़ गया, और किसी ने अपने गुनाहों पर पशेमान हो कर उसकी बारगाह का रुख़ किया, रहमत का इरादा जोश में आ गया और गुनाहों को इस तरह मलिया मेट कर दिया गोया उसके दामन पर कभी धब्बा पड़ा ही न था। चुनान्चे इरशादे नबवी है:—

(तरजुमा) "गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उसने गुनाह किया ही न हो।"

अब इस दुआ पर एक नज़र डालिये और देखिये कि हज़रत[अ०] के कलमात में ख़ौफ़ व रिजा की जो रूह मुज़मर है वह किस तरह ग़फ़लत से झिंझोड़ती है और दिल व दिमाग़ को मुतास्सिर करती है। वह अल्लाह के सामने उबूदियत के तक़ाज़ों में कोताही का एतराफ़ करते हैं मगर ख़ौफ़ व ख़शीयत से हालत यह है कि पैरों में राशा, बदन में थरथरी और जिस्म पर कपकपी तारी है, बोझल पलकों में आंसू तैर रहे हैं और दिल की धड़कनें कपकपाती आवाज़ से हम आहंग हैं और फ़रियाद का अन्दाज़ यह है कि "ऐ मअबूद! अगर रोते रोते पलकें झड़ जायें, खड़े खड़े पैर सूज जायें, रुकूअ करते करते पुश्त ख़म हो जाये, सजदों में उम्र बीत जाये, ज़िन्दगी भर ख़ाक फांकूं और ख़ाक बसर ज़िन्दगी बसर करूं फिर भी तेरी रहमत ही का सहारा है, और मैं किसी इस्तेहक़ाक़ की बिना पर अफ़वो मग़फ़रत का मुस्तहक़ नहीं हो सकता"। इन अल्फ़ाज़ में इज्ज़ व नयाज़ की जो तस्वीर खींची है वह आपकी ज़िन्दगी का हू–ब–हू नक़्शा है। चुनान्चे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तारीख़ शाहिद है कि जब आप वज़ू करते तो चेहरे का रंग ज़र्द हो जाता, और मुसल्ल–ए–एबादत पर खड़े होते तो लरज़ा बर अन्दाम हो जाते, और शब व रोज़ के क़याम से पैरों पर वर्म आ जाता। जब किसी नेअमत का ज़िक्र करते तो सजदा करते जब कोई नेअमत मिलती तो सजदा करते, जब किसी कारेख़ैर का इरादा करते तो सजदा करते। और माहे रमज़ान में तस्बीह व इस्तग़फ़ार के अलावा कोई कलमा आपकी ज़बान से न निकलता था, और अक्सर व बेशतर ग़शी की हालत तारी हो जाती थी। चुनान्चे इब्ने ऐयना कहते हैं कि मैंने मक्के के रास्ते में देखा कि आप ने सवारी को रोक कर एहराम बांधना चाहा तो जिस्म कांपने लगा। चेहरे पर ज़र्दी छा गयी और ज़बान से कलमाते तलबिया न कह सके। मेंने आगे बढ़ कर अर्ज़ किया कि आप तलबिया क्यों नहीं करते। फ़रमाया अन्देशा है कि मैं लब्बैक कहूं और उधर से ला लब्बैक व ला सअदैक की आवाज़ आये। और जब संभल कर तलबिया किया तो ग़श खा कर गिर पड़े और हज के इख़्तेताम तक बराबर यही सूरत रही कि कभी संभल गये और कभी बेहोश होकर गिर पड़े। बहरहाल अगर एक तरफ़ ज़िन्दगी के चेहरे पर ख़ौफ़ व ख़शयत का गुबार छाया हुआ था तो दूसरी तरफ़ उम्मीद की मुस्कुराती हुई किरने नूर व निकहत बिखेर रही थीं और क़दम रिजा की उस मंज़िल पर थे जहां कभी यास व नाउम्मीदी की परछाई भी नहीं पड़ी और रूह उस मक़ामे तक़र्रुब से वाबस्ता थी जहां दिल का रेशा रेशा निदाये हक़ के लिये गोश बर आवाज़ और सामेआ नवेदे रहमत का मुन्तज़िर था कि कब उधर से आमरज़िश व रहमत का पैग़ाम आता है।

चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम का इरशाद है कि :

(तरजुमा) "वह लोग जो ईमान लाये और ख़ौफ़ खाते रहे उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में भी बशारत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है और आख़ेरत में भी।"

यह बशारत रोयाए सालेहा के ज़रिये होती है। चुनान्चे अबुलदरदा से ावायत है कि उन्होंने रसूल उल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि सल्लम से दरयाफ़्त किया कि इस आयत में बुशरा से क्या मुराद है ापस० ने फ़रमाया : "वह रोयाए सालेहा है जिसे मोमिन ख़ुद ापने लिये देखता है या कोई उसके लिये देखता है।" यह ायाए सालेहा पाकीज़गिये नफ़्स व सिफ़ाए बातिन और आलमे कुद्दस इत्तेसाल के नतीजे में देखा जाता है। इस तरह कि मर्दे मोमिन अपने स्ने अन्जाम को ख़्वाब में देखता या उसके मुतअल्लिक़ ख़्वाब में निदाये ाब सुनता है या दूसरा उसके बारे में ख़्वाब देखता या ख़्वाब में कोई ावाज़ सुनता है। चुनान्चे इस क़िस्म के ख़्वाब सोलहा व मतुरऐन के तअल्लिक़ कुतुब में मज़कूर हैं हो सकता है कि इस दुआ में बुशरा से सी ही बशारत मुराद हो या किसी दूसरी क़िस्म की बशारत जो इस आम शारत से बुलन्द तर हो।

ाब शैतान का ज़िक्र आता तो उससे और उसके ाकरो अदावत से बचने के लिये यह दुआ पढ़ते

"ऐ अल्लाह! हम शैतान मरदूद के वसवसों, मकरों और हीलों से और उसकी झूठी तिफ़्ल तसल्लियों पर एतमाद करने और उसके हथकण्डों से तेरे ज़रिये पनाह मांगते हैं और इस बात से कि उसके दिल में यह तमअ व ख़्वाहिश पैदा हो कि वह हमें तेरी एताअत से बहकाये और तेरी मअसियत के ज़रिये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हमारी रूस्वाई का सामान करे या यह कि जिस चीज़ को वह रंग व रौग़न से आरास्ता करे वह हमारी नज़रों में खुब जाये या जिस चीज़ को वह बद्नुमा ज़ाहिर करे वह हमें शाक़ गुज़रे। ऐ अल्लाह! तू अपनी एबादत के ज़रिये उसे हमसे दूर कर दे और तेरी मोहब्बत में मेहनत व जॉफ़िशानी करने के बाअस उसे ठुकरा दे और हमारे और उसके दरमियान एक ऐसा पर्दा जिसे वह चाक न कर सके और एक ऐसी ठोस दीवार जिसे वह तोड़ न सके हाएल कर दे। ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और उसे हमारे बजाये अपने किसी दुश्मन के बहकाने में मसरूफ़ रख, और हमें अपनी हुस्ने निगेहदाश्त के ज़रिये उससे महफ़ूज़ कर दे। उसके मकरो फ़रेब से बचा ले औरहम से रूगरदान कर दे और हमारे रास्ते से उसके नक़्शे क़दम मिटा दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें वैसी ही (महफ़ूज़) हिदायत से बहरामन्द फ़रमा जैसी उसकी गुमराही (मुस्तहकम) है और हमें उसकी गुमराही के मुक़ाबले में तक़वा व परहेज़गारी का ज़ादेराह दे और उसकी हलाकत आफ़रीन राह के ख़िलाफ़ रुशद और तक़वे के रास्ते पर ले चल। ऐ अल्लाह हमारे दिलों में उसे अमल दखल का मौक़ा न दे और हमारे पास की चीज़ों में उसके लिये मंज़िल मोहय्या न कर। ऐ अल्लाह वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिसे बेहूदा बात को खुशनुमा बना के हमें दिखाये वह हमें पहचनवा दे, और जब पहचनवा दे तो उससे हमारी हिफ़ाज़त भी फ़रमा, और हमें उसको फ़रेब देने के तौर तरीक़ों में बसीरत और उसके मुक़ाबले में सरो सामान की तैयारी की तालीम दे और उस ख़्वाबे ग़फ़लत से जो उसकी तरफ़ झुकाव का बाअस हो होशियार कर दे और अपनी तौफ़ीक़ से उसके मुक़ाबले में कामिल नुसरत अता फ़रमा। बारे इलाहा! उसके आमाल से नापसन्दीदगी का जज़्बा हमारे दिलों में भर दे, और उसके हीलों को तोड़ने की तौफ़ीक़ करामत फ़रमा। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद^{स०} और उनकी आल^{अ०} पर और शैतान^{ल०} के तसल्लुत को हमसे हटा दे और उसकी उम्मीदें हम से क़तअ कर दे और हमें गुमराह करने की हिरस व आज़ से उसे दूर कर दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद^{स०} और उनकी आल^{अ०} पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमारे बाप दादाओं, हमारी माओं हमारी औलादों, हमारे क़बीले वालों, अज़ीज़ों, रिश्तेदारों और हमसाया में रहने वाले मर्दों और मोमेना औरतों को उसके शर से एक मोहकम जगह हिफ़ाज़त करने वाले क़िले और रोक थाम करने वाली पनाह में रख और उससे बचा ले जाने वाली ज़िरहें उन्हें पहना और उसके मुक़ाबले में तेज़ धार वाले हथियार उन्हें अता कर। बारे इलाहा! इस दुआ में उन लोगों को भी शामिल कर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जो तेरी रबूबियत की गवाही दें और दुई के तसव्वुर के बग़ैर तुझे यकता समझें और हक़ीक़ते उबूदियत की रौशनी में तेरी ख़ातिर उसे दुश्मन रखें और इलाही उलूम के सीखने में उसके बरख़िलाफ़ तुझसे मदद चाहें। ऐ अल्लाह! जो गिरह वह लगाये उसे खोल दे, जिसे जोड़े उसे तोड़ दे, और जो तदबीर करे उसे नाकाम बना दे, और जब कोई इरादा करे उसे रोक दे और जिसे फ़राहम करे उसे दरहम व बरहम कर दे। ख़ुदाया! उसके लश्कर को शिकस्त दे, उसके मकरो फ़रेब को मलियामेट कर दे; ऐ अल्लाह! हमें उसके दुश्मनों में शामिल कर और उसके दोस्तों में शुमार होने से अलाहदा कर दे ताकि वह हमें बहकाये तो उसकी एताअत न करे और जब हमें पुकारे तो उसकी आवाज़ पर लब्बैक न कहें और जो हमारा हुक्म माने हम उसे उससे दुश्मनी रखने का हुक्म दें और जो हमारे रोकने से बाज़ आये उसे उसकी पैरवी से मना करें। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर जो तमाम नबीयों के ख़ातिम और सब रसूलों के सरताज हैं और उनके अहलेबैत[अ०] पर जो तय्यब व ताहिर हैं और हमारे अज़ीज़ों, भाईयों और तमाम मोमिन मर्दों और मोमेना औरतों को उस चीज़ से पनाह में रख जिससे हमने पनाह मांगी है और जिस चीज़ से ख़ौफ़ खाते हुए हमने तुझसे अमान चाही है उससे अमान दे और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जो दरख़्वास्त की है उसे मंज़ूर फ़रमा और जिसके तलब करने में ग़फ़लत हो गयी है उसे मरहमत फ़रमा और जिसे भूल गये हैं उसे हमारे लिये महफ़ूज़ रख और इस वसीले से हमें नेकूकारों के दर्जों और अहले ईमान के मरतबों तक पहुंचा दे। हमारी दुआ क़ुबूल फ़रमा ऐ तमाम जहान के परवर दिगार।

वह मोहर्रकाते शर जो इन्सान पर हर तरफ़ से हुजूम किये हुए हैं। उनमें वह ख़तरात व वसावस भी शामिल हैं जो इन्सान के दिल में पैदा होते और उसे मुतास्सिर करते हैं। फ़लासफ़ा के नज़दीक यह ख़यालाते फ़ासदा क़ुव्वते वाहमा के तसल्लुत का नतीजा हैं जो इन्सानी हिस्सयात को मुतास्सिर करती और अक़्ल के तक़ाज़ों से मुतसादिम रहती है और बाज़ लोगों का ख़याल यह है कि जिस्म से अलग होने वाली रुहों में जो अच्छी रुहें होती हैं वह नेकूकाराना ज़िन्दगी का रास्ता हमवार करती और हक़ व सदाक़त की राह का सालिक बनाती हैं, और जो बुरी होती हैं वह बुराईयों की तरफ़ ले चलती हैं और गुनाहों पर उभारती हैं। इन अच्छी रूहों को वह जिन्नात से और बुरी रूहों को शैतान से ताबीर करते हैं और ख़यालाते फ़ासदा को उन्हीं अरवाहे ख़बीसा की तहरीक का नतीजा समझते हैं। मगर इस्लामी नुक्तए नज़र यह है कि बुरे इफ़्कार व तख़य्युलात चाहे वह किसी अमले बद के मोहर्रिक हों या सिर्फ़ ख़यालात तक महदूद हों एक नारी मख़लूक़ की वसवसा अंगेज़ी से पैदा होते हैं। जो हसद व खुदपसन्दी की वजह से मरदूदे बारगाह क़रार पाई और एक मोअय्यना अर्से तक ज़लालत व मअसियत की तरफ़ दावत देती रहेगी। उसे शैतान के नाम से पुकारा जाता है, और अच्छे ख़यालात व जज़बात ख़्वाह वह किसी अमले ख़ैर का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पेश ख़ेमा हों या सिर्फ़ ख़यालात तक महदूद हों, फ़ैज़ाने इलाही का करिश्मा हैं जिसे अल्क़ा व इलहाम से ताबीर किया जाता है। चुनानचे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :

(तरजुमा) "इन्सान के दिल में दो तरह के ख़यालात व अफ़्कार वारिद होते हैं। एक मलक की जानिब से और वह दिल में नेकी का इरादा और हक़ की तस्दीक़ का जज़्बा पैदा करते हैं और दूसरे शैतान की तरफ़ से, और वह गुनाह व शर और हक़ की तकज़ीब पर आमादा करते हैं।"

और इन्सान का दिल इन दोनों क़िस्म के ख़यालात की आमाजगाह है और दोनों की यकसां सलाहियत रखता है। अलबत्ता कभी बद्आमालियों में हद से बढ़ जाने की वजह से तौफ़ीक़ सल्ब कर ली जाती है और नूरे हिदायत से महरूम हो कर तारीकियों में भटकता रहता है, और कभी ख़ुश अतवारियों के नतीजे में तौफ़ीक़ात बढ़ जाते हैं और शैतान की फ़रेबकारियों के बन्धन ढीले पड़ जाते हैं। इन अच्छी और बुरी तहरीकात के असरात उसके अक़्वाल व आमाल और हरकात व सकनात से ज़ाहिर होते रहते हैं। जहां तक इन अच्छे और बुरे कामों का तअल्लुक़ है वह उसी के हुस्ने अख़्तियार व सूए अख़्तियार का नतीजा हैं। न तौफ़ीक़ ब–जब्र उसे नेकी की तरफ़ लाती है और न वसवसा ब–जब्र उसे बुराई की जानिब लाता है कि उसे मजबूर व मअज़ूर क़रार दे लिया जाये, क्योंकि इन्सानी अफ़आल व आमाल की नौइयत यह है कि वह एक तबई तरतीब से वाबस्ता हैं इस तरह कि पहले किसी चीज़ में लज़्ज़त व मुनफ़अत का तसव्वुर पैदा होता है इस तसव्वुर का नाम दाई है। जिसके नतीजे में इन्सान उसके हुसूल की तरफ़ माएल होता है। इस मैलान का नाम इरादा है। फिर क़ुदरत व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़्तियार के ज़ेरे असर आज़ा में हरकत पैदा होती है और वह फ़ेल ज़हूर आता है जिससे उस शै का हुसूल वाबस्ता है और ज़ाहिर है कि जब सी चीज़ में लज़्ज़त व मनअफ़त का तसव्वुर होगा तो उसकी तरफ़ मैलान होना एक लाज़मी व तबई अम्र है, और अगर कोई माने न हो तो इरादा क़ुदरत के इज्तेमाअ से फ़ेल का ज़हूर भी ज़रूरी है। लेहाज़ा इनमे से सी एक में भी शैतान का अमल दख़ल नहीं माना जा सकता। अब सिर्फ़ एक सूरत रह जाती है कि जिस चीज़ में लज़्ज़त व मनफ़अत का व्वुर पैदा हुआ है वह शैतान के बहकाने का नतीजा है। चुनान्चे यही वह ल है जहां वह अपने फ़रेबों और हीलों से काम लेता और ज़हर हलाहल शहेद व शक्कर कह कर पेश करता है और उसके बाद के मराहिल के इरादे व अख़्तियार से वाबस्ता हैं इस लिये उसे माज़ूर नहीं क़रार ा जा सकता कि यह कह कर छूट जाये कि शैतान के बहकाने में आ ा, क्योंकि एक तरफ़ अक़्ल का चिराग़ रौशन है, और दूसरी तरफ़ ामानी तालीम हिदायत के लिये मौजूद है। अब वह इन दोनों के सद्दे होने के बावजूद बुराई की तरफ़ क़दम उठाता और हुसूले लज़्ज़त की में अवाक़िब व नताएज से आंखें बन्द कर लेता है तो इस हलाकत फ़रीनी की ज़िम्मेदारी उसी पर आयद होगी। चुनान्चे क़ुरआन मजीद में शैतान ज़बानी वारिद हुआ है :–

(तरजुमा) :–"मुझे तुम पर कोई तसल्लुत न था सिवा इसके कि मैंने तुम्हें पुकारा तो तुमने मेरी आवाज़ पर लब्बैक कही।"

इन शैतानी तहरीसात व तरग़ीबात का सिलसिला इस तरह शुरूअ ा है कि पहले वह इन्सान के दिल में फ़ासिद ख़यालात के लिये राह पैदा ता है और जब इन्सान का दिल व दिमाग़ इन फ़ासिद ख़यालात को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बग़ैर रोक टौक के कुबूल कर लेता है तो उसके तहतुश् शऊर में लज़्ज़त अन्दोज़ी की ख़्वाहिश बेदार होती है। मगर अख़लाक़ी क़वानीन, शरई एहकाम और माहौल के असरात उसे गुनाह की जुरअत नहीं होने देते। इस मौक़े पर वह इन्सान की ख़्वाहिश परस्त तबीअत को गुनाहे सग़ीरा की तरफ़ माएल करता है इस तरह कि एक तरफ़ उस गुनाह की अहमियत को कम करके दिखाता है और दूसरी तरफ़ उसकी हिम्मत व जुरअत बढ़ाता है और जब गुनाह की ख़्वाहिश उसे गुनाहे सग़ीरा की मंज़िल में ला खड़ा करती है तो फिर वह गुनाहे कबीरा की दावत देता है और जब वह उसके इरतेकाब से हिचकिचाता और पादाशे अमल से डरता है तो यह ढारस देता है कि तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है जब चाहो तौबा कर सकते हो, और जब वह तौबा के सहारे पर गुनाह कर लेता है तो फिर दोबारा यह कह कर उकसाता है कि जहां एक दफ़ा गुनाह किया है वहां एक दफ़ा और सही और दोनों से एक साथ तौबा हो जायेगी, और जब दूसरी दफ़ा इरतेकाबे गुनाह के बाद तौबा का क़सद करता है तो यह कहता है कि अभी ज़िन्दगी बहुत बाक़ी है एक आध मरतबा और सही फिर तौबा कर लेना। यहां तक कि गुनाह की आदत इस हद तक पुख़्ता हो जाती है कि गुनाह से दस्तबरदार होना मुश्किल हो जाता है और भूले से भी तौबा का ख़याल नहीं आता, और जिस तरह वह नासूर जिसका शुरूअ में इलाज न किया जाये अपने ज़हरीले असरात तमाम जिस्म में फैला देता है उसी तरह गुनाह के मसमूम असरात रग व पै में सरायत कर जाते हैं और गुनाह का एहसास तक बाक़ी नहीं रहता और वह बेझिझक गुनाहों में फांदता, गुमराहियों में भटकता और अपनी मस्तियों में खोया रहता है। चुनान्चे इरशादे इलाही हैः–

(तरजुमा) "शैतान ने उनके लिये उनके कामों को सज दिया। चुनान्चे वह सीधे रास्ते से बेराह हो गये।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

यूं ही किसी अमले ख़ैर से रोकना चाहता है तो पहले सहल निगारी की तरफ़ लाता है फिर ग़फ़लत की राह पर डालता है चुनान्चे सुबह के वक़्त जब फ़ितरत की मसर्रत आमेज़ तरोताज़गी हर चीज़ में दौड़ती है और फ़ेज़ा तकबीर की सदाओं से गूंज उठती है तो वह बिस्तर पर करवटें बदलने वाले को थपकियां दे कर सुलाता है कि अभी वक़्त बहुत है कुछ देर और आराम कर लो। यहां तक कि जब वक़्त तंग रह जाता है तो वह कसमसाता और आंखे मलता हुआ उठता है और ब–मुश्किल सुबह का दोगाना अदा कर पाता है, और रफ़्ता रफ़्ता यह होता है कि वक़्त गुज़र जाता है और उसे बिस्तर से उठना दूभर हो जाता है, और जब सूरज निकलने के बाद बिस्तर से उठता है तो नमाज़ क़ज़ा करके पढ़ता है। फिर उसमें भी सुस्ती होने लगती है और ज़ोहर की नमाज़ के साथ नमाज़े सुबह क़ज़ा करके पढ़ी जाती है, और जब ज़ोहर व अस्र की नमाज़ भी क़रीब ग़ुरूब पढ़ी जाती है तो सुबह की नमाज़ को कल पर टाल दिया जाता है यहां तक कि सुबह की नमाज़ की यह सूरत हो जाती है कि कभी कजा पढ़ ली और कभी छोड़ दी। अब इस सहल अंगारी का असर दूसरी नमाज़ों पर भी पड़ना शुरूअ हुआ इस तरह कि दोस्त व अहबाब की बातों में लगे रहे और वक़्त खो दिया। कुछ तबीअत में इज़्मेहलाल महसूस किया और नमाज़ छोड़ दी। रफ़्ता रफ़्ता नाग़ों में इज़ाफ़ा होने लगा और नौबत यहां तक पहुंची कि सिर्फ़ ईद व बक़रीद की नमाज़ रह गयी और बाक़ी ख़त्म, और वह भी इस लिये कि ज़रा ईदगाह की चहल पहल देख लें और अइज़्ज़ा व अहबाब से मुलाक़ात हो जाये।

इसी तरह जब माली एबादात से रोकना चाहता है तो यह फ़रेब देता है कि फ़िल्हाल ख़ुम्स व ज़कात वग़ैरा को अपने ज़िम्मे कर लो फ़लां मद का रुपया आयेगा तो अदा कर देना और इस वक़्त अदा करने से कारोबार

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर बुरा असर पड़ेगा और इस्लाम यह नहीं चाहता कि तुम अपनी इक़्तेसादी हालत को ख़राब होने दो। अगरचे फुक़रा व मसाकीन मौजूद हैं मगर इनका इन्हेसार हम ही पर तो नहीं है, इन्हें कहीं और से मिल जायेगा, और फिर इन मोहताजों और फ़क़ीरों को देने से ख़ुद भी तो मोहताज होने का अन्देशा है लेहाज़ा इनमें से अगर एक मोहताज कम होगा तो उसकी जगह दूसरा आ जायेगा। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "शैतान तुम्हें मुफ़लिसी से डराता है और बुरे कामों का हुक्म देता है।"

नतीजा यह होता है कि वह हालात के साज़गार होने का मुन्तज़िर रहता है और वह कभी साज़गार होते ही नहीं कि वह सदक़ाते वाजिबा और माली एबादात से ओहदाबरा हो सके। बहरहाल शैतान की पुरफ़रेब व इशरत अंगेज़ दावत के मुक़ाबले में गुनाह की आलूदगियों से हिफ़ाज़त करना मुश्किल है और उसके हील व वसावस से एक आम इन्सान बच कर नहीं रह सकता। मगर वह नफ़ूसे कुदसिया जो जौहरे इस्मत से आरास्ता और मलकूती सिफ़ात के हामिल होते हैं वह किसी मरहले पर उसके फ़रेब में नहीं आते और न उसका कोई हरबा उन पर चल सकता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :– "मेरे ख़ास बन्दों पर तुझे ग़लबा व तसल्लुत हासिल नहीं।" और शैतान ने भी "मगर तेरे मुख़्लिस बन्दे" कह कर उनके मुक़ाबले में अपने इज्ज़ का इज़हार किया है। मगर फिर भी उन्हें क़ुदरत ने शैतान से पनाह मांगने की तलक़ीन की है। चुनान्चे नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम को हुक्म दिया :– "जब तुम क़ुरआन पढ़ने लगो तो शैतान मरदूद से पनाह मांग लिया करो।" यह इस्तेआज़ा दुआ ही की एक क़िस्म है, और जिस तरह बाज़ उमूर दुआ में वाबस्ता हैं। उसी तरह शैतानी हरबों से हिफ़ाज़त का एक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़रिया इस्तेआज़ा भी है और अम्बिया व अइम्मा के इस्तेआज़ा का मक़सद दूसरों को तालीम देना भी होता है कि जब वह उसके फ़रेब से मामून और उसके तसल्लुत से आज़ाद होने के बावजूद पनाह मांगते हैं तो जो उसकी ज़द पर हैं और ब–आसानी उसके क़ाबू में आ जाते हैं, वह किस तरह इस्तेआज़ा से मुस्तग़नी हो सकते हैं। इस दुआ में इस्तेआज़ा के अलावा उसके वसवसों को मुज़महिल करने के लिये दो चीज़ों की तालीम भी दी गयी है। एक मोहब्बते इलाही और दूसरे बन्दगी व एबादत। क्योंकि जब दिल अल्लाह तआला की मोहब्बत में सरशार होगा तो उसके दुश्मन की फ़रेब कारियां बहका न सकेंगी, और जब एबादत में इन्हेमाक होगा तो नफ़्स में इज्ज़ व तज़ल्लुल की कैफ़ियत पैदा होगी और यह कैफ़ियत शैतानी वसावस से सद्देराह हो जाती है।

जब कोई मुसीबत बरतरफ़ होती या कोई हाजत पूरी होती तो यह दुआ पढ़ते

(तरजमा) "ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये हम्दो सताइश है तेरे बेहतरीन फ़ैसले पर और इस बात पर कि तूने बलाओं का रुख़ मुझसे मोड़ दिया। तू मेरा हिस्सा अपनी रहमत में से सिर्फ़ इस दुन्यवी तन्दरुस्ती में मुन्हसिर न कर दे कि मैं अपनी इस पसन्दीदा चीज़ की वजह से (आख़ेरत की) सआदतों से महरूम रहूं और दूसरा मेरी नापसन्दीदा चीज़ की वजह से ख़ुशबख़्ती व सआदत हासिल कर ले जाये, और अगर यह तन्दरुस्ती कि जिसमें दिन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गुज़ारा है या रात बसर की है किसी लाज़वाल मुसीबत का पेशेखेमा और किसी दायमी वबाल की तम्हीद बन जाये तो जिस (ज़हमत व अन्दोह) को तूने मोअख़्ख़र किया है उसे मुक़द्दम कर दे और जिस (सेहत व आफ़ियत को मुक़द्दम किया उसे मोअख़्ख़र कर दे क्योंकि जिस चीज़ का नतीजा फ़ना हो वह ज़्यादा नहीं और जिसका अन्जाम बक़ा हो वह कम नहीं। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

दुनिया के मसाएब व आलाम अबदी ऐश व आराम का पेशख़ेमा हैं इस लिये ख़ुदा वन्दे आलम अपने मख़सूस बन्दों को रंज व ज़हमत में मुब्तिला देखना चाहता है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है ख़ुदा जिन लोगों को दोस्त रखता है उन्हें मुसीबत व बला में जकड़ लेता है और जिसका मरतबा जितना बलन्द होता है उसी क़दर उसे रंज व मेहन से साबेक़ा पड़ता है। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़र[अ०] का इरशाद है :– "सबसे ज़्यादा मुसीबत में अम्बिया मुब्तिला होते हैं फिर औसिया फिर अलत् तरतीब दूसरे बरगुज़ीदाने ख़ुदा।" और इस मुसीबत के लिहाज़ से उनके अज्रो सवाब में इज़ाफ़ा और उनके दरजात में बुलन्दी होती है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :– "बड़ी मुसीबत की जज़ा भी बड़ी होती है, और अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को अपनी मोहब्बत का मरकज़ बनाता है तो उसे सख़्तियों से आज़माता है।" चुनान्चे ख़ासाने ख़ुदा बड़ी से बड़ी मुसीबतों में डाले गये, तरह तरह की आज़माईशों से दो चार हुए मगर मोहब्बत व रिज़ा के जज़्बए बे पायां के ज़ेरे असर रंज व मुसीबत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

े कड़वे घूंट ख़ुशी से पीते रहे। न उनके चेहरों पर कड़वाहट खुली न ानकी पेशानियों पर बल आये और न ज़बान शिकवा व शिकायत से आलूदा ुई, बल्कि मुसीबत के फंदों से रेहाई नसीब होती या किसी मर्ज़ से शिफ़ा ासिल होती तो जहां उनके दिल में शुक्र का जज़्बा पैदा होता था वहां यह न्देशा भी दामनगीर होता था कि कहीं यह आसाइश व आफ़ियत आख़ेरत ी किसी कामरानी और ओक़बा की किसी सआदत से महरूमी का बाअस ा बन जाये। चुनान्चे इमाम अलैहिस्सलाम इस दुआ में एक तरफ़ सेहत व ाफ़ियत के हुसूल और इब्तिला व मुसीबत से रेहाई पर शुक्रिया अदा करते ैं तो दूसरी तरफ़ यह अन्देशा भी ज़ाहिर करते हैं कि अगर आफ़ियत का ौर तवील हो जाये तो यह कहीं सब्र व ज़ब्त के सवाब से महरूमी का ाअस न बन जाये। मक़सद यह है कि दुनिया के किसी आराम व राहत ा असर आख़रत की ज़िन्दगी पर न पड़े और अगर पड़ता है तो फिर वहां ी तकलीफ़ के बजाये दुनिया ही में मुझ पर तकलीफ़ डाल दी जाये। क्योंकि दुनिया की तकलीफ़ें ख़्वाह कितनी शदीद हों उन्हें झेला जा सकता ै। इस लिये कि उन्हें एक न एक दिन ख़त्म होना है, और आख़रत की ाकलीफ़ों और सऊबतों को बरदाश्त नहीं किया जा सकता क्योंकि इनका सेलसिला ख़ुदा जाने कहां पर खत्म होने वाला है। लेहाज़ा यह सेहत व ान्दुरुस्ती और आसाइश व राहत जो दुनिया में मुझे नसीब हुई है उस पर ऐसी सूरत में ख़ुश हूं कि यह मुसीबतों पर अज्र व सवाब और आख़ेरत की सआदत व कामरानी से महरूमी का सबब न बने।

क़हत साली के मौक़े पर तलबे बारां की दुआ

(तरजमा) "बारे इलाहा! अबरे बारां से हमें सेराब फ़रमा और उन अबरों के ज़रिये हम पर दामने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रहमत फैला जो मूसला धार बारिशों के साथ ज़मीन के सब्ज़ए ख़ुश रंग की रोएदगी का सरो सामान लिये हुए अतराफ़े आलम में रवाना किये जाते हैं और फलों के पुख़्ता होने से अपने बन्दों पर अहसान फ़रमा और शगूफ़ों के खिलने से अपने शहरों को ज़िन्दगिए नौ बख़्श और अपने मोअज़्ज़िज़ व बावक़ार फ़रिश्तों और सफ़ीरों को ऐसी नफ़अ रसां बारिश पर आमादा कर जिसकी फ़रावानी दायम और रवानी हम्मागीर हो। और बड़ी बूंदों वाली तेज़ी से आने वाली और जल्द बरसने वाली हो जिससे तू मुर्दा चीज़ों में ज़िन्दगी दौड़ा दे। गुज़री हुई बहारें पलटा दे और जो चीज़ें आने वाली हैं उन्हें नमूदार कर दे और सामाने मईशत में वुसअत पैदा कर दे ऐसा अब्र छाये जो तह ब तह, ख़ुश आइन्द व ख़ुश गवार ज़मीन पर मुहीत और घन गरज वाला हो और उसकी बारिश लगा तार न बरसे (कि खेतों और मकानों को नुक़सान पहुंचे) और न उसकी बिजली धोका देने वाली हो (कि चमके, गरजे और बरसे नहीं) बारे इलाहा! हमें उस बारिश से सेराब कर जो ख़ुश्क साली को दूर करने वाली (ज़मीन से) सब्ज़ा उगाने वाली (दश्त व सहरा को) सरसब्ज़ करने वाली बड़े फैलाव और बढ़ाव और अनथाह गहराव वाली हो जिससे तू मुरझाये हुई घास की रौनक़ पलटा दे और सूखे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सड़े सब्ज़े में जान पैदा कर दे। ख़ुदाया! हमें ऐसी बारिश से सेराब कर जिससे तू टीलों पर से पानी के धारे बहा दे, कुंएं छलका दे, नहरें जारी कर दे; दरख़्तों को तरोताज़ा व शादाब कर दे, शहरों में नरख़ों की अरज़ानी कर दे, चौपाओं और इन्सानों में नई रूह फूंक दे, पाकीज़ा रोज़ी का सरोसामान हमारे लिये मुकम्मल कर दे; खेतों को सरसब्ज़ो शादाब कर दे और चौपावों के थनों को दूध से भर दे और उसके ज़रिये हमारी कुव्वत व ताक़त में मज़ीद कुव्वत का एज़ाफ़ा कर दे बारे इलाहा! इस अब्र की साया अफ़गनी को हमारे लिये झुलसा देने वाला लू का झोंका उसकी खुनकी को नहूसत का सरचश्मा और उसके बरसने को अज़ाब का पेश ख़ेमा और उसके पानी को (हमारे काम व दहन के लिये) शोर न क़रार देना। बारे इलाहा! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और हमें आसमान व ज़मीन की बरकतों से बहरामन्द कर इस लिये कि तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

जब बारिश के रूक जाने से ख़ुश्कसाली के आसार ज़ाहिर होते हैं तो इससे सबही मुतास्सिर होते हैं ज़मीन पर तशनगी व बेआबी की वजह से ख़ाक उड़ती है और सेराबी के न होने से मुर्दा हो जाती है। हरे भरे खेत मुरझा कर रह जाते हैं। हैवान बौखलाए हुए परेशान हाल फिरते हैं। किसान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हसरत भरी नज़रों से आसमान को देखता और मायूसी से सर झुका लेता है। ग़र्ज़ हर चेहरा क़हतज़दगी से उदास उदास नज़र आता है। उस मौक़े पर गुनाहों से तौबा व इस्तग़फ़ार करना, अल्लाह से लौ लगाना और उससे बारिश की दुआ मांगना चाहिये कि यही इसका हल है, और बेहतर यह है कि नमाज़ के बाद दुआ मांगे कि वह जल्द मुस्तजाब होती है और इससे बेहतर यह है कि नमाज़े इस्तसक़ा की सूरत में दुआ करे। नमाज़े इस्तसक़ा का तरीक़ा यह है कि जुमे के दिन ख़तीब यह एलान करे कि लोग अपने अख़लाक़ व अतवार शाइस्ता बनायें, तौबा व इस्तग़फ़ार करें। हुक़ूक़ से सुबुकदोश हों और कल से तीन रोज़े मुसलसल रखें। और तीसरे दिन इज्ज़ व इन्केसार के साथ तौबा व इस्तग़फ़ार करते हुए सहरा की तरफ़ निकल खड़े हों इस तरह कि जूते उतार कर हाथों में उठा लें। बच्चे, बूढ़े, बूढ़ी औरतें और चौपाय भी साथ हों और बच्चों को माओं से अलाहिदा कर दिया जाये और सेहरा में पहुंच कर मोअज़्ज़िन तीन मर्तबा अस्सलात पुकारे, और इमाम दो रकअत नमाज़े इस्तसक़ा की नीयत करे और हम्द व सूरत बुलन्द आवाज़ से पढ़े। सूरत ख़त्म करने के बाद पांच मर्तबा तकबीर कहे, और हर तकबीर के बाद कुनूत के लिये हाथ उठाये और यह दुआ पढ़े :–

> (तरजमा) "बारे इलाहा! तू अपने बन्दों, कनीज़ों और चौपाओं को सेराब फ़रमा और अपने दामने रहमत को फैला दे और अपने मुर्दा शहरों में फिर से ज़िन्दगी पैदा कर दे।"

फिर छठी तकबीर कह कर रुकूअ में जाये और दोनों सजदों के बाद दूसरी रकअत के लिये उठ खड़ा हो और हम्द व सूरत के बाद चार मर्तबा तकीबर कहे और हर तकबीर के बाद यही दुआए कुनूत पढ़े और पांचवीं तकबीर कह कर रुकूअ में जाये और सजूद और तशहूद के बाद नमाज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़त्म करे और ख़त्मे नमाज़ के बाद मिम्बर पर जाये और अबा का दायां हिस्सा बायीं तरफ़ और बायां हिस्सा दायीं तरफ़ कर ले। अबा को इस तरह पलटने से उस तरफ़ इशारा है कि खुदा वन्दे आलम इसी तरह मौसम में तब्दीली कर दे सकता और खुश्कसाली को शादाबी व सेराबी से बदल सकता है। फिर दो खुतबे पढ़े और खुतबों से फ़ारिग़ होने के बाद क़िब्ला रूख़ होकर सौ मर्तबा अल्लाहो अकबर कहे। फिर दायीं तरफ़ रूख़ करे और सौ मर्तबा ला इलाहा इल्लल्लाह कहे। फिर बायें तरफ़ रूख़ करे और सौ मर्तबा सुब्हानल्लाह कहे फिर लोगों की तरफ़ मुंह करके सौ मर्तबा अलहम्दो लिल्लाह कहे। और दूसरे लोग भी इन कलमात को साथ साथ दोहराते जायें। यह नमाज़ तुलूए आफ़ताब से ले कर ज़वाले आफ़ताब तक पढ़ी जा सकती है।

पसन्दीदा अख़लाक़ी व शाएस्ता किरदार के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजमा) "बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे ईमान को कामिल तरीन ईमान की हद तक पहुंचा दे और मेरे यक़ीन को बेहतरीन यक़ीन क़रार दे और मेरी नीय्यत को पसन्दीदा तरीन नीय्यत और मेरे आमाल को बेहतरीन आमाल के पाय तक बुलन्द कर दे। खुदा वन्दा! अपने लुत्फ़ से मेरी नीय्यत को ख़ालिस व बे–रिया और अपनी रहमत से मेरे यक़ीन को उस्तवार और अपनी कुदरत से मेरी ख़राबियों की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इस्लाह कर दे। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे उन मसरूफ़ियतों से जो एबादत में माने हैं बेनयाज़ कर दे और उन्हीं चीज़ों पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ दे जिनके बारे में मुझसे कल के दिन सवाल करेगा और मेरे अय्यामे ज़िन्दगी को ग़रज़े-ख़िलक़त की अन्जामदेही के लिये मख़सूस कर दे और मुझे (दूसरों से) बेनयाज़ कर दे और मेरे रिज़्क़ में कशाइश व वुसअत अता फ़रमा। एहतियाज व दस्तनगरी में मुब्तिला न कर। इज़्ज़त व तौक़ीर दे, किबरो ग़ुरूर से दो चार न होने दे। मेरे नफ़्स को बन्दगी व एबादत के लिये राम कर और ख़ुदपसन्दी से मेरी एबादत को फ़ासिद न होने दे और मेरे हाथों से लोगों को फ़ैज़ पहुंचा और उसे एहसान जताने से रायगाँ न होने दे। मुझे बुलन्द पाया अख़लाक़ मरहमत फ़रमा और ग़ुरूर और तफ़ाख़िर से महफ़ूज़ रख। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और लोगों में मेरा दरजा जितना बुलन्द करे उतना ही मुझे ख़ुद अपनी नज़रों में पस्त कर दे और जितनी ज़ाहिरी इज़्ज़त मुझे दे उतना ही मेरे नफ़्स में बातिनी बेवक़्अती का एहसास पैदा कर दे। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे ऐसी नेक हिदायत से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बहरामन्द फ़रमा कि जिसे दूसरी चीज़ से तब्दील न करूं और ऐसे सही रास्ते पर लगा जिससे कभी मुंह न मोड़ूं, और ऐसी पुख़्ता नीय्यत दे जिसमें ज़रा शुबह न करूं और जब तक मेरी ज़िन्दगी तेरी एताअत व फ़रमांबरदारी के काम आये मुझे ज़िन्दा रख और जब वह शैतान की चरागाह बन जाये तो इससे पहले कि तेरी नाराज़गी से साबक़ा पड़े या तेरा ग़ज़ब मुझ पर यक़ीनी हो जाये, मुझे अपनी तरफ़ उठा ले। ऐ मअबूद! कोई ऐसी ख़सलत जो मेरे लिये मअयूब समझी जाती हो उसकी इस्लाह किये बग़ैर न छोड़ और कोई ऐसी बुरी आदत जिस पर मेरी सरज़निश की जा सके उसे दुरूस्त किये बग़ैर न रहने दे और जो पाकीज़ा ख़सलत अभी मुझमें नातमाम हो उसे तकमील तक पहुंचा दे। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मेरी निस्बत कीना तोज़ दुश्मनों की दुश्मनी को उल्फ़त से, सरकशों के हसद को मोहब्बत से, नेकों से बेएतमादी को एतमाद से, क़रीबियों की अदावत को दोस्ती से, अज़ीज़ों की क़तअ तअल्लुक़ी को सिला रहमी से, क़राबतदारों की बेएतनाई को नुसरत व तआवुन से, ख़ुशामदियों की ज़ाहिरी मोहब्बत को सच्ची मोहब्बत से और साथियों के एहानत आमेज़ बरताव को हुस्ने मुआशरत से और ज़ालिमों के ख़ौफ़ की तलख़ी को अम्न की शीरीनी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से बदल दे। ख़ुदा वन्दा! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर और जो मुझ पर ज़ुल्म करे उस पर मुझे ग़लबा दे। जो मुझसे झगड़ा करे उसके मुक़ाबले में ज़बान (हुज्जत शिकन) दे। जो मुझसे दुश्मनी करे उस पर मुझे फ़तह व कामरानी बख़्श। जो मुझसे मक्र करे उसके मक्र का तोड़ अता कर। जो मुझे दबाए उस पर क़ाबू दे। जो मेरी बदगोई करे उसे झुटलाने की ताक़त दे और जो डराये धमकाये, उससे मुझे महफ़ूज़ रख। जो मेरी इस्लाह करे उसकी एताअत और जो राहेरास्त दिखाये उसकी पैरवी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे इस अम्र की तौफ़ीक़ दे कि जो मुझसे ग़श व फ़रेब में उसकी खै़र ख़्वाही करूं; जो मुझे छोड़ दे उससे हुस्ने सुलूक से पेश आऊँ; जो मुझे महरूम करे उसे अता व बख़्शिश के साथ एवज़ दूं और जो क़तअ रहमी करे उसे सिला रहमी के साथ बदला दूं और जो पसे पुश्त मेरी बुराई करे मैं उसके बरख़िलाफ़ उसका ज़िक्रे खै़र करूं और हुस्ने सुलूक पर शुक्रिया बजा लाऊँ और बदी से चश्मपोशी करूं। बारे इलाहा! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अद्ल के नश्र, गुस्से के ज़ब्त और फ़ितने के फ़रू करने, मुतफ़र्रिक़ व परागन्दा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लोगों को मिलाने, आपस में सुलह सफ़ाई कराने, नेकी के ज़ाहिर करने, ऐब पर पर्दा डालने, नर्म ख़ुई व फ़रोतनी और हुस्ने सीरत के अख़्तियार करने, रख रखाव रखने हुस्ने अख़लाक़ से पेश आने, फ़ज़ीलत की तरफ़ पेश क़दमी करने, तफ़ज़्ज़ुल व अहसान को तरजीह देने, ख़ुर्दागीरी से किनारा करने और ग़ैर मुस्तहक़ के साथ हुस्ने सुलूक के तर्क करने और हक़ बात के कहने में अगरचे वह गरां गुज़रे, और अपनी गुफ़्तार व किरदार की भलाई को कम समझने में अगरचे वह ज़्यादा हो और अपने क़ौल व अमल की बुराई को ज़्यादा समझने में अगरचे वह कम हो मुझे नेकूकारों के ज़ेवर और परहेज़गारों की सज व धज से आरास्ता कर और उन तमाम चीज़ों को दाएमी एताअत और जमाअत से वाबस्तगी और अहले बिदअत और ईजाद कर्दा रायों पर अमल करने वालों से अलाहिदगी के ज़रिये पायए तकमील तक पहुंचा दे। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ तो अपनी वसीअ रोज़ी मेरे लिये क़रार दे और जब आजिज़ व दरमान्दा हो जाऊँ तो अपनी क़वी ताक़त से मुझे सहारा दे और मुझे इस बात में मुब्तला न कर कि तेरी एबादत में सुस्ती व कोताही करूं, तेरी राह की तशख़ीस में भटक जाऊँ, तेरी मोहब्बत के तक़ाज़ों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

की ख़िलाफ़वर्ज़ी करूं और जो तुझसे मुतफ़र्रिक़ व परागन्दा हों उनसे मेल जोल रखूं और जो तेरी जानिब बढ़ने वाले हैं उनसे अलाहदा रहूं। ख़ुदा वन्दा! मुझे ऐसा क़रार दे कि ज़रूरत के वक़्त तेरे ज़रिये हमला करूं; हाजत के वक़्त तुझसे सवाल करूं और फ़क़रो एहतियाज के मौक़े पर तेरे सामने गिड़गिड़ाऊँ और इस तरह मुझे न आज़माना कि इज़्तेराब में तेरे ग़ैर से मदद मांगू और फ़क़रो नादारी के वक़्त तेरे ग़ैर के आगे आजिज़ाना दरख़्वास्त करूं और ख़ौफ़ के मौक़े पर तेरे सिवा किसी दूसरे के सामने गिड़गिड़ाऊँ कि तेरी तरफ़ से महरूमी, नाकामी और बेएतनाई का मुस्तहक़ क़रार पाऊँ। ऐ तमाम रहम करने वालों में से सबसे ज़्यादा रहम करने वाले ख़ुदाया! जो हिरस, बदगुमानी और हसद के जज़बात शैतान मेरे दिल में पैदा करे उन्हें अपनी अज़मत की याद अपनी क़ुदरत में तफ़क्कुर और दुश्मन के मुक़ाबले में तदबीर व चारासाज़ी के तसव्वुरात से बदल दे और फ़ोहश कलामी या बेहूदा गोई, या दुशनाम तराज़ी या झूठी गवाही या ग़ाएब मोमिन की ग़ीबत या मौजूद से बदज़बानी और इस क़बील की जो बातें मेरी ज़बान पर लाना चाहे उन्हें अपनी हम्द सराई, मद्दह में कोशिश व इन्हेमाक, तमजीद व बुज़ुर्गी के बयान, शुक्रे नेअमत व एतराफ़े अहसान और अपनी नेअमतों के शुमार

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से तब्दील कर दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझ पर ज़ुल्म न होने पाये जब कि तू इसके दफ़अ करने पर क़ादिर है, और किसी पर ज़ुल्म न करूं जब कि तू मुझे ज़ुल्म से रोक देने की ताक़त रखता है और गुमराह न हो जाऊ। जब कि मेरी राहनुमाई तेरे लिये आसान है और मोहताज न हूं जबकि मेरी फ़ारिग़ुलबाली तेरी तरफ़ से है, और सरकश न हो जाऊँ जब कि मेरी ख़ुशहाली तेरी जानिब से है। बारे इलाहा मैं तेरी मग़फ़रत की जानिब आया हूं, और तेरी माफ़ी का तलबगार और तेरी बख़्शिश का मुश्ताक़ हूं। मैं सिर्फ़ तेरे फ़ज़्ल पर भरोसा रखता हूं और मेरे पास कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो मेरे लिये मग़फ़रत का बाअस बन सके और न मेरे अमल में कुछ है कि तेरे अफ़वो का सज़ावार क़रार पाऊँ और अब इसके बाद कि मैं ख़ुद ही अपने ख़िलाफ़ फ़ैसला कर चुका हूं तेरे फ़ज़्ल के सिवा मेरा सरमाया–ए–उम्मीद क्या हो सकता है। लेहाज़ा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल कर और मुझ पर तफ़ज़्ज़ुल फ़रमा। ख़ुदाया! मुझे हिदायत के साथ गोया कर, मेरे दिल में तक़वा व परहेज़गारी का अलक़ा फ़रमा, पाकीज़ा अमल की तौफ़ीक़ दे, पसन्दीदा काम में मशग़ूल रख। ख़ुदाया मुझे बेहतरीन रास्ते पर चला और ऐसा कर कि तेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दीन व आईन पर मरूं और उसी पर ज़िन्दा रहूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे (गुफ़्तार व किरदार में) मियानारवी से बहरामन्द फ़रमा और दुरूस्तकारों और हिदायत के रहनुमाओं और नेक बन्दों में से क़रार दे और आख़ेरत की कामयाबी और जहन्नम से सलामती अता कर। ख़ुदाया मेरे नफ़्स का एक हिस्सा अपनी (इब्तिला व आज़माइश के) लिये मख़सूस कर दे ताकि उसे (अज़ाब से) रेहाई दिला सके और एक हिस्सा कि जिससे उसकी (दुन्यवी) इस्लाह व दुरूस्ती वाबस्ता है मेरे लिये रहने दे क्योंकि मेरा नफ़्स तो हलाक होने वाला है मगर यह कि तू उसे बचा ले जाये। ऐ अल्लाह! अगर मैं ग़मगीन हूं तो मेरा साज़ो सामाने (तस्कीन) तू है, और अगर (हर जगह से) महरूम रहूं तो मेरी उम्मीदगाह तू है, और अगर मुझ पर ग़मों का हुजूम हो तो तुझ ही से दाद फ़रियाद है। जो चीज़ जा चुकी, उसका एवज़ और जो शै तबाह हो गयी उसकी दुरूस्ती और जिसे तू ना पासन्द करे उसकी तब्दीली तेरे हाथ में है। लेहाज़ा बला के नाज़िल होने से पहले आफ़ियत मांगने से पहले ख़ुशहाली, और गुमराही से पहले हिदायत से मुझ पर अहसान फ़रमा। और लोगों की सख़्त व दुरूश्त बातों के रंज से महफ़ूज़ रख और क़यामत के दिन अम्न व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इत्मिनान अता फ़रमा और हुस्ने हिदायत व इरशाद की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद^{स०} और उनकी आल^{अ०} पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपने लुत्फ़ से (बुराईयों को) मुझसे दूर कर दे और अपनी नेअमत से मेरी परवरिश और अपने करम से मेरी इस्लाह फ़रमा और अपने फ़ज़ल व अहसान से (जिस्मानी व नफ़सानी इमराज़ से) मेरा मदावा कर। मुझे अपनी रहमत के साय में जगह दे। और अपनी रिज़ामन्दी में ढांप ले, और जब उमूर मुश्तबा हो जायें तो जो इनमें ज़्यादा क़रीने सवाब हो और जब आमाल में इश्तेबाह वाक़े हो जाये तो जो इनमें पाकीज़ातर हो और जब मज़ाहिब में अख़्तिलाफ़ पड़ जाये तो जो इन में पसन्दीदा तर हो उस पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद^{स०} और उनकी आल^{अ०} पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे बेनयाज़ी का ताज पहना और मुतअल्लिक़ा कामों और अहसन तरीक़ से अन्जाम देने पर मामूर फ़रमा और ऐसी हिदायत से सरफ़राज़ फ़रमा जो दवाम व सबात लिये हुए हो और ग़िना व ख़ुशहाली से मुझे बेराह न होने दे और आसूदगी व आसाइश अता फ़रमा, और ज़िन्दगी को सख़्त दुश्वार न बना दे। मेरी दुआ को रद्द न कर क्योंकि मैं किसी को तेरा मद्दे मुक़ाबिल नहीं क़रार देता और न तेरे साथ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किसी को तेरा हमसर समझते हुए पुकारता हूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे फ़ुज़ूल ख़र्ची से बाज़ रख और मेरी रोज़ी को तबाह होने से बचा और मेरे माल में बरकत देकर इसमें इज़ाफ़ा कर और मुझे इसमें उमूरे ख़ैर में ख़र्च करने की वजह से राहे हक़ व सवाब तक पहुंचा। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे कसबे मअ़ीशत के रंज व ग़म से बेनयाज़ कर दे, और बेहिसाब रोज़ी अता फ़रमा ताकि तलाशे मआश में उलझ कर तेरी एबादत से रूगरदान न हो जाऊँ और (ग़लत व नामशरूअ) कारोकसब का ख़मियाज़ा न भुगतूं। ऐ अल्लाह! मैं जो कुछ तलब करता हूं उसे अपनी कुदरत से मोहय्या कर दे और जिस चीज़ से ख़ाएफ़ हूं उससे अपनी इज़्ज़त व जलाल के ज़रिये पनाह दे। ख़ुदाया! मेरी आबरू को ग़ना व तवन्गरी के साथ महफ़ूज़ रख और फ़क्र व तंगदस्ती से मेरी मंज़िलत को नज़रों से न गिरा। कि तुझसे रिज़्क़ पाने वालों से रिज़्क़ मांगने लगूं और तेरे पस्त बन्दों की निगाहे लुत्फ़ व करम को अपनी तरफ़ मोड़ने की तमन्ना करूं और जो मुझे दे उसकी मदह व सना और जो न दे उसकी बुराई करने में मुब्तिला हो जाऊँ और तू ही अता करने और रोक लेने का अख़्तियार रखता है न कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वह। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे ऐसी सेहत दे जो इबादत में काम आये और ऐसी फ़ुरस्त जो दुनिया से बेतअल्लुक़ी में सर्फ़ हो और ऐसा इल्म जो अमल के साथ हो और ऐसी परहेज़गारी जो हद्दे एतदाल में हो (कि वसवास में मुब्तिला न हो जाऊँ)। ऐ अल्लाह! मेरी मुद्दते हयात को अपने अफ़वो व दरगुज़र के साथ ख़त्म कर और मेरी आरज़ू को रहमत की उम्मीद में कामयाब फ़रमा और अपनी ख़ुशनूदी तक पहुंचने के लिये राह आसान कर और हर हालत में मेरे अमल को बेहतर क़रार दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे ग़फ़लत के लम्हात में अपने ज़िक्र के लिये होशियार कर और मोहलत के दिनों में अपनी एताअत में मसरूफ़ रख और अपनी मोहब्बत की सहल व आसान राह मेरे लिये खोल दे और इसके ज़रिये मेरे लिये दुनिया व आख़ेरत की भलाई को कामिल कर दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी औलाद[अ०] पर बेहतरीन रहमत नाज़िल फ़रमा। ऐसी रहमत जो इससे पहले तूने मख़लूक़ात में से किसी एक पर नाज़िल की हो और उसके बाद किसी पर नाज़िल करने वाला हो और हमें दुनिया में भी नेकी अता कर और आख़रत में भी और अपनी रहमत से हमें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रख।

बादीउन नज़र में नेकी व बदी में इम्तियाज़ नहीं किया जा सकता क्योंकि नेक व बदआमाल ज़ाहिरी सूरत के लिहाज़ से यकसां होते हैं और उनमें कोई इम्तियाज़ी फ़र्क़ नज़र नहीं आता। चुनान्चे ज़न व मर्द के तअल्लुक़ात वह जाएज़ जरिये से हों या नाजाएज़ तरीक़े से दोनों एक से हैं। इसी तरह दरोग़े मसलेहत आमेज़ व दरोग़े बेमसलेहत, अकले हलाल और अकले हराम, क़त्ले बेगुनाह और क़त्ले ख़ताकारान इनमें बज़ाहिर कोई फ़र्क़ नहीं है। वहां भी एक ख़िलाफ़े वाके चीज़ का बयान करना है और यहां भी। वहां भी पेट भरना है और यहां भी। वहां भी इन्सानी जान से खेलना है और यहां भी। यूंहि मुतकब्बिर के मुक़ाबले में तकब्बुर करने और आम तौर से इतराने और माहे रमज़ान में दिन के वक़्त खाने पीने और दूसरे दिनों में खाने पीने में फ़ेल की नौईयत यकसां है। तो इस यकसानियत के बावजूद एक को अच्छाई और एक को बुराई, और एक को कारे सवाब और दूसरे को गुनाह से ताबीर करने की क्या वजह और दोनों में तफ़रीक़ करने की क्या ज़रूरत है? अगरचे हुदूद व कुयूद से आज़ाद निगाहें इनमें तफ़रिक़ा नहीं कर सकतीं मगर जो लोग किसी आईन व शरीअत और ज़ाब्तए अख़लाक़ के पाबन्द होते हैं वह उनकी ज़ाहिरी हैइयत व सूरत और यकसानियत व यकरंगी पर नज़र नहीं करते बल्कि इन दोनों के दरमियान जो हद्दे फ़ासिल हाएल है उस पर नज़र करते हुए दोनों को बिल्कुल जुदाजुदा तसव्वुर करते हैं और इसी हदें फ़ासिल से खैर व शर की हद्दें क़ायम होती और उयूब व मुहासिन के पैमाने मुक़र्रर होते हैं और यह हद्दे फ़ासिल उसी वक़्त नज़र आती है जब ईमान के साथ तक़वा अपना नूरानी परतौ डालता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "ऐ ईमानदारो! अगर तुम तक़वा व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

परहेज़गारी अख़्तियार करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे लिये (नेक व बद में) एक हद्दे फ़ासिल क़रार देगा।"

अगर इस हद्दे फ़ासिल को नज़र अन्दाज़ करके अख़लाक़े फ़ाज़िला और औसाफ़ रज़ीला का मेअयार अवामी अक़्ल को क़रार दे लिया जाये तो अगरचे वह एक हद तक अख़लाक़ी उसूलों की तरफ़ राहनुमाई करती है मगर अख़लाक़ का अमली लाएहा पेश करने से क़ासिर है। चुनान्चे जिन्होंने अक़्ल पर अख़लाक़ की बुनियाद रखी। वह यह नहीं कहते कि रास्त गुफ़्तारी व अद्ल गुस्तरी मअयूब और सख़ावत व शुजाअत बुरी चीज़ है, और इसके मुक़ाबले किज़्ब व ज़ुल्म और बुख़्ल व बुज़दिली अच्छी सिफ़तें हैं मगर इनके हुदूद और मवाक़े इस्तेमाल क्या हैं। तो इस में उनकी रायें मुख़्तलिफ़ नज़र आती हैं और एक, एक राह पर चलता है तो दूसरा उससे बिल्कुल अलग रास्ता अख़्तियार करता है, क्योंकि मुख़्तलिफ़ ओक़ूल व इफ़हाम के क़ाएमकर्दा नज़रियात किसी एक मरकज़ी नुक़्ते पर मुजतमअ नहीं हो सकते। ऐसी सूरत में उनकी पैरवी करने में क़दम क़दम पर रूकावटें पैदा होंगी और मुख़्तलिफ़ नज़रियात में से सही नज़रिये का इन्तख़ाब मुश्किल हो जायेगा। इसके अलावा अक़्ल का दायरए अमल महदूद है और वह दुनियाए महसूसात से अलग होकर किसी क़िस्म का कोई क़तई फ़ैसला नहीं कर सकती और क़दम क़दम पर हवास का सहारा ढूंढने पर मजबूर हो जाती है और उसके मुक़ाबले में ख़्वाहिशात व जज़बात भी परा जमाए हुए हैं जो उसे सिपर अन्दाख़ता होने पर मजबूर कर देते हैं। चुनान्चे जब इन्सान में ख़्वाहिशात व जज़बात उभरते हैं तो वह अक़्ल के मुक़ाबले में उनसे जल्द मग़लूब हो जाता है और अक़्ल के सरीही एहकाम को ठुकरा कर हवाये नफ़सानी के पीछे हो लेता है। लेहाज़ा तन्हा अक़्ल न किसी सूरत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में काफ़ी हो सकती है और न हर जगह उसे मेयार क़रार दिया जा सकता है, और उसकी रौशनी में इज्तेमाई ज़िन्दगी का निसबुल ऐन तो दरकिनार इन्फ़ादी ज़िन्दगी का भी कोई यक़ीनी, सही और नाक़ाबिले तरमीम आईने अख़लाक़ तरतीब नहीं दिया जा सकता। इन हालात में एक ऐसे मेअयार की ज़रूरत से इन्कार नहीं हो सकता जो अक़्ल की दरमान्दगियों में रहनुमाई कर सके और एक ऐसा क़ाबिले तग़य्युर आईन पेश करे जो हयाते इन्सानी के हर दौर में क़ाबिले अमल हो, और वह मेयार वही तंज़ील है जिसकी रौशनी में तरतीब दिया हुआ आईन वह है जिसके उसूल मनज़बत और ज़वाबित नाक़ाबिले तरमीम हैं और जिसे हामिलाने नबूव्वत व रिसालत हर दौर में पेश करते रहे और इसके ज़रिये तहज़ीबे नफ़्स व तज़कियए अख़लाक़ का दर्स देते रहे हैं। इन मोअल्लेमीने अख़लाक़ में सबसे बुलन्द मरतबत हज़रते ख़त्मी मरतबत[स०] हैं। जिन्होंने ज़ेवरे अख़लाक़ से आरास्ता करने और इन्सानियत की ज़ुल्फ़े परेशान को संवारने के लिये वह तालीमात दिये जो मुहासिने अख़लाक़ का सरचश्मा हैं। यह तालीमात सिर्फ़ क़ौल तक महदूद न थे बल्कि उनकी ज़िन्दगी का एक एक लम्हा पाकीज़गीए सीरत का एक ज़ाब्ता और हुस्ने अख़लाक़ का एक ज़िन्दा क़ानून था, और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की बेअसत का मक़सद ही यह था कि वह इल्मन व अमलन अख़लाक़े हुस्ना की तकमील फ़रमायें। चुनान्चे इरशादे नबवी[स०] है कि :– "मैं इस लिये मबऊस हुआ हूं ताकि मकारिमुल अख़लाक़ को पायए तकमील तक पहुंचाऊँ"। और इन अख़लाक़ी तालीमात को ज़िन्दा रखने के लिये उनके औसिया व नाएबीन जो सीरत व किरदार और अख़लाक़ व अतवार में उनके वुरसादार और इल्म व अमल में उनके आईनादार थे इन तालीमात को नश्र करते और अपने क़ौल व अमल से उनका अहया करते रहे। चुनान्चे उनके चौथे वसी व जानशीन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हज़रत ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम ने इस दुआए मकारिमुल अख़लाक़ में अख़लाक़ियात के वह दर्स दिये हैं जो अख़लाक़े नबवी[स०] के आईनादार और अल्हामी तालीमात के हामिल हैं और उन तमाम जवाहिर पारों को समेट लिया है जो तहल्ली बिल फ़ज़ाएल (इल्मी व अमली औसाफ़ से आरास्तगी) और तख़ल्ली अनिर् रज़ाएल (क़बीह व पस्त आदात से अलाहिदगी) पर मुश्तमिल हैं। इन दोनों जनबों में से अगर एक जनबा कमज़ोर है तो इससे दूसरे जनबे का मुतासिर होना भी ज़रूरी है। इस लिये अख़लाक़ी तकमील के लिये इन ईजाबी व सलबी दोनों पहलूओं को मलहूज़ रखने की ज़रूरत है। वह ईजाबी सिफ़ात जो इस दुआ में बयान हुए हैं यह हैं :–

ईमान : यह तमाम मुहासिने अख़लाक़ का सरचश्मा है इस लिये इसे सरेफ़ेहरिस्त जगह दी है। ईमान के माने तस्दीक़ के हैं और कभी तस्दीक़ व अमल दोनों के मजमूए पर इसका इतेलाक़ होता है। इसके मुतअद्दिद दरजात हैं और अहले ईमान के मरातिब व दरजात में जो तफ़ावुत होता है वह ईमान ही के दर्जात के बुलन्द व पस्त होने के लिहाज़ से होता है। ज़बीरी कहते हैं कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के सामने कहा के :–

> (तरजुमा) "ईमान के मुख़्तलिफ़ दरजे और मरतबे हैं जिनके एतबार से ईमान लाने वाले अल्लाह के नज़दीक एक दूसरे से फ़ज़ीलत ले जाते हैं। हज़रत[अ०] ने फ़रमाया कि हां ऐसा ही है।"

चुनान्चे पहला दरजा यह है कि सिर्फ़ ज़बान से अल्लाह की उलूहियत और पैग़म्बर[स०] की रिसालत का इक़रार किया जाये और बस। यह ईमान इस्लाम का मुरादिफ़ है। जब इन्सान यह इक़रार कर लेता है तो वह मुस्लिम कहलाने लगता है और उसका ज़बीहा हलाल और जान व माल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

महफ़ूज़ हो जाता है।

दूसरा मर्तबा यह है कि ज़बान से इक़रार किया जाये और दिल से एतक़ाद भी रखा जाये। मगर इस्लाम के तालीमात और उसके अवामिर व नवाही पर अमल न किया जाये।

तीसरा मर्तबा यह है कि इस इक़रार व एतक़ाद के साथ कबीरा गुनाहों से बचा जाये और उन फ़राएज़ को पूरा किया जाये जिन्हें तर्क करना कबाएर में दाख़िल है। जैसे नमाज़, ज़कात, हज वग़ैरा। यह वाज़ेह रहे कि अहादीस में जो नमाज़ व हज व ज़कात के तारिक को काफ़िर कहा गया है तो उससे मुराद यह है कि वह इस मर्तबए ईमान से ख़ारिज हो गया है; यह मक़सद नहीं है कि वह तमाम मरातिबे ईमान से ख़ारिज हो गया है कि अब उस पर कुफ़्र के एहकाम आयद होने लगें।

चौथा मर्तबा यह है कि इक़रार व एतक़ाद के साथ तमाम वाजिबात भी बजा लाये जायें और तमाम मोहर्रेमात से इज्तेनाब भी किया जाये।

पांचवां मर्तबा यह है कि वाजिबात के साथ मुस्तहबात भी अदा किये जायें और मोहर्रेमात के साथ मकरूहात से भी परहेज़ किया जाये।

छठा मर्तबा यह है कि बाज़ मुबाहात को भी इस ख़याल से छोड़ दिया जाये कि मुबादा यह किसी बुराई का पेशख़ेमा बन जायें और कोई ग़लत क़दम उठ जाये। जेसे ज़्यादा बातें करने से इस लिये इज्तेनाब किया जाये कि ज़बान से कोई नाशाइस्ता कलमा या झूठी बात न निकल जाये; या किसी की ग़ीबत व बदगोई न हो जाये। यह अम्बिया व औसिया के ईमान का दर्जा है और इसी दर्जे को इमाम अलैहिस्सलाम ने अकमलुल ईमान से ताबीर किया है।

ईमान सिर्फ़ ओक़बा ही का सरमाया नहीं है बल्कि दुनिया में भी इन्सान की इन्फ़ेरादी व इज्तेमाई ज़िन्दगी की फ़लाह व बहबूद इससे वाबस्ता है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ुनान्चे जब इन्सान के दिल व दिमाग़ में एक बालादस्त हस्ती का तसव्वुर ादा होता और ख़ुदा परस्ती का जज़्बा उभरता है तो उसे कुछ ज़िम्मेदारियों का एहसास होता है जिसके पेशे नज़र वह चोरी, रिश्वत, ख़यानत, ज़ुल्म ौर इस क़िस्म के दूसरे अख़लाक़ी उयूब से कनाराकश हो जाता है और ख़ुदग़र्ज़ी व मफ़ाद परस्ती की सतह से बुलन्द हो कर सीरत व किरदार के ह आला नमूने पेश करता है जिससे इजतमाई ज़िन्दगी मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहती और बड़ी हद तक मुआशिरे की बेएतदालियां कम हो जाती हैं। अगरचे हुकूमत का क़ानून और इसका एहतेसाब एक हद तक इन मुफ़ासिद की रोक थाम करता है मगर क़ानून का ख़ौफ़ इन्सान के बातिन में कोई तब्दीली नहीं कर सकता, और इक़्तेदार उसी हद तक हिफ़ाज़त कर सकता है जहां तक उसका दस्तरस है। वह बाज़ारों, कूचों, आम गुज़रगाहों और मफ़ासिद के मरकज़ों से बुराईयों को दूर कर सकता है। मगर घर के गोशों और रात के अन्धेरों में उसका बस नहीं चलता और बुराई का चलन बदस्तूर बाक़ी रहता है। इस मौक़े पर ख़ुदा का ख़ौफ़ ही क़ल्ब व रूह को मुतास्सिर कर सकता और बुराईयों से माने हो सकता है। हुकूमत के कारिन्दे कभी नज़रों से ओझल भी हो जाते हैं और कभी उनकी बेराहरवी की वजह से ख़ुद उन पर निगरान छोड़ने की ज़रूरत पड़ जाती है। मगर अख़लाक़ी वुजदान जो ईमान की बदौलत ताक़तवर होता है हर दम निगरानी व हिफ़ाज़त का फ़रीज़ा अन्जाम देता है ख़्वाह दिन का उजाला हो या रात का अन्धेरा, ख़िलवत हो या जलवत आबादी हो या वीराना।

यक़ीन : किसी चीज़ का इल्म इस तरह हो जाये कि उसके ख़िलाफ़ कोइ एहतमाल न रहे यक़ीन कहलाता है। इस लिहाज़ से यक़ीन दो इल्मों का मजमूआ होगा। एक मालूम का इल्म और दूसरे उसके ख़िलाफ़ के मुहाल होने का इल्म, और यह ईमान ही का दूसरा नाम है। चुनान्चे पैग़म्बरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :– "यक़ीन ही ईमाने कामिल है।" इस यक़ीन के तीन दर्जे हैं। पहला दर्जा यह है कि धुंएं को देख कर आग की मौजूदगी का इल्म हासिल हो। यह अहले नज़र व इस्तेदलाल का यक़ीन है जो उन्हें तरतीब मुक़द्दमात से हासिल होता है, यह इल्मुल यक़ीन कहलाता है।

दूसरा दर्जा यह है कि उस आग को आंख से देख लिया जाये। यह ख़्वास को चश्मे बसीरत व दीदए बातिन के मुशाहिद से हासिल होता है। चुनान्चे ज़अलिबे यमानी ने अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि "क्या आपने अपने परवर दिगार को देखा है"? फ़रमाया "मैं उस रब की परस्तिश नहीं करता जिसकी जलवा तराज़ी मेरी आंखों के सामने न हो।" यह ऐनुल यक़ीन कहलाता है।

तीसरा दर्जा यह है कि आग के शोलों में कूदकर आग का इल्म हासिल हो। यह अहले शहूद का यक़ीन है जो उन्हें मुब्दाए फ़ैज़ से इत्तसाले मानवी के बाद हासिल होता है। यह हक़्क़ुल यक़ीन कहलाता है। इमाम अलैहिस्सलाम ने इस यक़ीन को अफ़ज़लुल यक़ीन फ़रमाया है और इसी मर्तबे आलिया पर फ़ाएज़ होने की अल्लाह तआला से इल्तेजा है।

नीय्यत : किसी अमल की अन्जामदेही के क़स्द व इरादे का नाम नीय्यत है, और यह इल्म व अमल के दरमियान एक वास्ता है जो एक तरफ़ इल्म से वाबस्ता है और दूसरी तरफ़ अमल से क्योंकि इल्म न हो तो क़स्द नहीं हो सकता और क़स्द न हो तो अमल वाक़े नहीं हो सकता, और क़वाए अमल के इस्तेमाल के मौक़े पर यह एक नागुज़ीर और तबई चीज़ है। चुनान्चे शारअ[अ0] की तरफ़ से अगर बग़ैर नीय्यत के आमाल व एबादात के बजा लाने का हुक्म होता तो इससे कोई भी ओहदाबरा न हो सकता। इससे यह अम्र भी वाज़ेह हो गया कि नीय्यत उन अल्फ़ाज़ का नाम नहीं है जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ऩसी अमल के बजा लाने के वक़्त ज़बान से कहे जाते हैं, क्योंकि नीय्यत ा तअल्लुक़ दिल से होता है और अल्फ़ाज़ का तअल्लुक़ ज़बान से। इस मये ज़बान के अल्फ़ाज़ के बजाये दिल के क़स्द व इरादे को नीयत तसव्वुर ़रना चाहिये। इस नीय्यत के मुख़्तलिफ़ दरजात हैं जिनके लिहाज़ से ामाल में रफ़अत या पस्ती पैदा होती है। अगर नीय्यत में सिद्क़ व ख़ुलूस तो अमल बुलन्द और अगर रिया व नमूद है तो अमल फ़ासिद। चुनान्चे ग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम का इरशाद है :– नीय्यत पर अमल का इन्हेसार है।" इन दरजात में से पहला दरजा ़ह है कि इसमें रिया व नमूद कारफ़रमा हो। इस नीय्यत के मातहत जो ़मल वाक़े होगा इस पर सवाब का मुरत्तब होना तो दरकिनार गुनाह ायद होगा। एबादात में जो रिया कारफ़रमा होता है इसकी तीन क़िस्में हैं। हली क़िस्म यह है कि नफ़्से एबादत में तो रिया न हो लेकिन उसके दूसरे ौसाफ़ में नुमाइश मक़सूद हो। इस तरह कि घर पर नमाज़ पढ़ी जाये तो ुख़्तसर और घर से बाहर दूसरों के सामने पढ़ी जाये तो तवील। दूसरी क़िस्म यह है कि मुस्तहब इबादतों में रिया करे इस तरह कि घर में या ़न्हाई में तो नवाफ़िल बजा न लाये मगर कहीं दूसरी जगह हो तो नवाफ़िल ़ी पढ़े और नमाज़े शब भी बजा लाये। और तीसरी क़िस्म यह है कि वाजिब ़बादतों में रिया करे। इस तरह कि घर में तो न नमाज़ पढ़े और न रोज़ा ़खे और जब दिखलाने का मौक़ा हो तो नमाज़ भी पढ़े और रोज़ा भी रखे। ़रिया की यह सूरत सब से ज़्यादा मोहलिक और ख़तरनाक है।

नीय्यत का दूसरा दरजा यह है कि जन्नत की ख़्वाहिश और अज़ाब से बचाव के लिये अमल करे। यह नीय्यत अख़लास के मनाफ़ी नहीं है, क्योंकि शरअ ने ख़ुद तरग़ीब व तरहीब से काम लिया है। यह अमल भी ख़ुलूस का हामिल होगा। इसी तरह उन एबादात में जो दुनिया के अग़राज़ से वाबस्ता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होती हैं उनमें रिज़्क़, औलाद वग़ैरा का क़स्द करना सेहत व अख़लास के मनाफ़ी न होगा।

तीसरा दरजा : यह है शुक्र व सपास को मलहूज़ रखते हुए अमल करें ताकि इस शुक्र के नतीजे में उसकी नेअमतों में इज़ाफ़ा हो।

चौथा दरजा यह है कि हया के एहसास से मुतास्सिर हो कर एबादत करे।

पांचवां दरजा यह है कि ख़ुदा के जलाल व जबरूत के असर से मुतास्सिर हो कर आमाल बजा लाये।

छठा दरजा यह है कि तामीले हुक्म के लिहाज़ से एबादत करे।

सातवां दरजा यह है कि उसे एबादत का अहल व सज़ावार समझते हुए उसके आगे सरे नयाज़ ख़म करे। यह नीय्यत उन बन्दों से मख़सूस है जो तक़र्रुब के मदारिजे आलिया पर फ़ाएज़ होते हैं और उसी को हज़रत[अ०] ने अहसनुन नीय्यात से ताबीर फ़रमाया है क्योंकि उसके अन्दर हुस्न व ख़ूबी और इज़हारे उबूदियत के अलावा और कोई जज़्बा नहीं होता। इसका ज़िक्र अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम के इस इरशाद में है

> (तरजुमा) "मैंने तेरी परस्तिश जहन्नम के डर से और जन्नत की तमअ से नहीं की बल्कि तुझे इबादत का सज़ावार पाया है इस लिये तेरी परस्तिश की है।"

अमल : इस्लाम ने अगरचे इल्म को बड़ी अहमियत दी है मगर अमल की अहमियत भी नाक़ाबिले-इन्कार है। बल्कि इल्म की अहमियत भी उसी सूरत में है जब उसके मुक़तज़यात पर अमल किया जाये, और अगर उसके तक़ाज़ों को ठुकरा दिया जाये तो वह इल्मे जहल बल्कि जहल से भी बद्तर है। क्योंकि जेहालत कभी मअज़ूरी का सबब क़रार पा जाती है मगर इल्म

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

के बाद तो कोई उज़्र मसमूअ नहीं होता। लेहाज़ा इल्म उसी सूरत में सूदमन्द समझा जा सकता है जब इसके साथ अमल भी हो। और अमल चूंकि नीय्यत से वाबस्ता है इस लिये जिस मरतबे पर नीय्यत होगी उसी मरतबे पर अमल होगा। अगर इसमें नमूद व रिया हो तो वह अमल वबाले जान है, और अगर सिदक़ व ख़ुलूस का हामिल हो तो वह उख़रवी फ़ोज़ व कामरानी का परवाना है। खुदा वन्दे आलम अमल की ज़ाहिरी शक्ल व सूरत और उसकी कमीत व मिक़दार को नहीं देखता बल्कि उस जज़्बए अख़लास को देखता है जिसके मातहत वह अमल बजा लाया गया हो। अगर ख़ुलूस के साथ कम एबादत हो तो वह उस तवील ज़िक्र व रियाज़त से बेहतर है जिसमें ख़ुलूस कारफ़रमा न हो। ऐसे आमाल ही को इमाम अलैहिस्सलाम ने अहसनुल आमाल से याद किया है और क़ुदरत ने इन्हें आमाले सालेहा से ताबीर किया है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

> (तरजुमा) "जो शख़्स लक़ाए परवर दिगार की आरज़ू रखता है उसे अमले सालेह बजा लाना चाहिये और अपने परवर दिगार की एबादत में किसी को शरीक न करना चाहिये।"

अद्ल : इफ़रात व तफ़रीत की दो मुख़्तलिफ़ सिमतों के दरमियान हद्दे वसत का नाम अद्ल है। इस हद्दे वसत के इल्तेज़ाम से फ़ज़ाएल और इससे इन्हेराफ़ के नतीजे में रज़ाएल वुजूद में आते हैं। चुनान्चे अख़लाक़ के बुनियादी अनासिर चार हैं :– हिक्मत, इफ़्फ़त, शुजाअत और अदालत। और इनमें से हर उनसुर वसत और नुक़्तए एतदाल पर वाक़ेअ है, और अगर मरकज़े एतदाल से उसे हटा दिया जाये तो एक दूसरी ही नौईयत की चीज़ पैदा हो जायेगी। हिक्मत में अगर इफ़रात की सूरत हो तो वह ख़बासत और चालाकी बन जाती है, और तफ़रीत की सूरत हो तो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वह नाफ़हमी व कुन्द ज़हनी हो जाती है। इफ़्फ़त में अगर इफ़रात हो तो खुमूद व बेहिसी है और तफ़रीत हो तो हवस रानी व शहवत परस्ती कहलाती है। शुजाअत में अगर इफ़रात हो तो वह क़हर व तहव्वुर है और तफ़रीत हो तो बुज़दिली व कमहिम्मती के नाम से पुकारी जाती है, और अदालत हद्दे वसत से इन्हेराफ़ की सूरत में ज़ुल्म या ज़िल्लत व ख़्वारी की शक्ल अख़्तियार करेगी। इसी तरह दूसरे अख़लाक़े फ़ाज़ला में अद्ल व तवाज़ुन ही बाएसे हुस्न व ख़ूबी है। चुनान्चे इक़्तिसाद व मियानारवी में ख़ूबी इसी लिये हैं कि वह बुख़ल और इसराफ़ के वसत में है, और तवाज़ुअ में हुस्न इसी लिये है कि वह न गुरूर की हद तक पहुंचती है और न ज़िल्लते नफ़्स की सतह पर उतर आती है। ग़र्ज़ हर फ़ज़ीलत वह क़ौल से मुतअल्लिक़ हो या अमल से या एतक़ाद से, अद्ल ही उसका अस्ल जौहर है। और चूंकि हर चीज़ में हद्दे वसत से इन्हेराफ़ की सूरत में मुतफ़र्रिक़ राहें पैदा हो जाती हैं इस लिये ज़लालत के रास्ते मुतअद्दिद और हिदायत का रास्ता एक होगा। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

> (तरजुमा) "यह मेरा सीधा रास्ता है इसकी पैरवी करो, और दूसरे मुतअद्दिद रास्तों की पैरवी न करो, वरना वह तुम्हें हक़ की राह से मुन्तशिर कर देंगे।"

ज़िक्र व फ़िक्र : ज़िक्र यह है कि दिल अल्लाह तआला की याद से ग़ाफ़िल न रहे और फ़िक्र यह है कि इन्सान ख़िलक़ते कायनात व मज़ाहिरे फ़ितरत पर नज़रे ग़ाएर डाल कर सानेअ के हुस्ने सनअत का करिश्मा देखे। ज़िक्र से तज़कीयए नफ़्स होता है और ग़फ़लत के पर्दे चाक हो जाते हैं और फ़िक्र से इल्म व यक़ीन की रौशनी बढ़ती है। चुनान्चे जब वह तअक़्क़िल व तफ़क्कुर से काम लेता है और अपने अन्दर और बाहर की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

:यनात में ग़ौरो फ़िक्र करता है तो उसे हर चीज़ की तह में एक हकीमाना :ब्बुर व फ़हम कारफ़रमा नज़र आता है। खुद अपनी ज़ात पर नज़र करता तो देखता है कि नुतफ़े के हक़ीर क़तरे से उसके वुजूद की बुनियाद रखी ो और एक मोअय्यना मुद्दत तक शिकमे मादर में उसके नशो नुमा के मान होते रहे और दुनियाए हस्त व बूद में क़दम रखते ही सांस लेने के ये हवा तशनगी बुझाने के लिये पानी और गुरसनगी दूर करने के लिये तरफ़ रिज़्क़ के अम्बार फ़रावानी से मौजूद और जिस्मानी साख़्त का ा मुस्तहकम निज़ाम जिसमें ज़र्रा भर नुक़्स नहीं। इस तरह कि हड्डियों सहारे पर जिस्म को खड़ा किया गया। इसमें रगों का जाल इस तरह ाया गया कि अज़ सर ता पा ख़ून की गरदिश होती रहे और हर अज़ो उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ गिज़ा मिलती रहे, और हड्डियों के जोड़ बन्द तरह मिलाये कि उठने, बैठने, चलने फिरने में ज़रा रुकावट न हो और ाम वज़ाएफ़ खुश असलूबी से अन्जाम पाते रहें। इस मुनज़्ज़म कारख़ाने र इसके नज़्म व नस्क़ को देखने के बाद वह यह तस्लीम करने के लिये ी आमादा न होगा कि यह बेशऊर माद्दे की कारफ़रमाई और बाज़ ासिर के इत्तेफ़ाक़ी तसादुम का नतीजा है। इस लिये कि अगर ऐसा ा तो कायनात में यकसानियत और नज़्मे ख़िलक़त में वहदत नज़र न ती जब कि यह मुसल्लम है कि इत्तेफ़ाक़ न हुदूद का पाबन्द होता है न ूद का। लेहाज़ा यह नज़्म व इन्ज़बाते आलम इसकी क़वी दलील है कि व भाल करने वाली कोई मुदब्बिर हस्ती मौजूद है और जूं जूं ग़ौरो फ़िक्र तरक़्क़ी होगी अल्लाह तआला की हस्ती का यक़ीन दिल के हर रग व में सरायत करता जायेगा और उसके रूख़े मस्तूर से शक व अबहाम परदा उठ जायेगा। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का शाद है :—

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "तअज्जुब है उस पर जो यह गुमान करता है कि अल्लाह अपने बन्दों की नज़रों से ओझल है। हालांकि वह अपने अन्दर उसकी सनअत के ऐसे आसार देखता है जिनकी तरबियत व तरतीब उसकी अक़्ल को हैरान और उसके ख़िलाफ़ उसकी हर दलील को तोड़ देती है।"

यूंहि कायनाते आलम की तरफ़ निगाह दौड़ाता है तो देखता है कि किस हिक्मते कामेला से सूरज, चांद और अनगिनत सितारे ज़ियापाशी का सामान कर रहे हैं, और फ़िज़ा में हर तरफ़ हवायें फैली हुई हैं ताकि ज़मीन के हर हिस्से पर सांस ली जा सके और उसकी मुतमव्विज लहरों के ज़रिये शर्क़ व ग़र्ब आलम की आवाज़ों को समेटा जाये और इस फ़र्शे ज़मीन को किस तरह इन्सानी बूदो मान्द के क़ाबिल बनाया गया है कि न इतना सख़्त कि चलने फिरने में तकलीफ़ हो और न इतना नर्म कि पैर अन्दर धंसने लगें, और इजज़ाये अर्ज़ी में कुव्वते नामिया वदीअत करके उसकी उरयानी को सब्ज़े से ढांपा और उसकी गोद को फलों और ख़ुशरंग फूलों से भरा गया है, और उसकी सेराबी के लिये बादलों से मेंह बरसाये गये और पहाड़ों से आबे शीरीं के चश्मे जारी किये गये, और उसकी तह में क़ीमती धातों के ख़ज़ाने भर दिये गये। क्या यह सब कुछ खुद बखुद हो गया है या किसी सानेअ की एजाज़ नुमाई है। जब वह अपने अन्दर और आलम में बिखरी हुई निशानियों को देखता तो इसमें शक व तज़बज़ुब का शाएबा भी बाक़ी नहीं रहता और उसकी हस्ती का यक़ीन दिल में रासिख़ हो जाता है चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "यक़ीन रखने वालों के लिये ज़मीन में बेशुमार निशानियां हैं और ख़ुद तुम्हारे अन्दर भी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तो क्या तुम इतना भी नहीं देखते"

फिर दुनिया के तग़य्युरात व इन्क़ेलाबात को देखता है कि जो बनता है वह बिगड़ता है, जो खिलता है वह मुरझाता है और जो पैदा होता है वह मरता है। तो क्या यह तमाम कारख़ाना शिकस्त व रीख़्त बग़ैर किसी मक़सद के है। ग़ौरो फ़िक्र उसे इस नतीजे तक पहुंचायेगा कि जब हर चीज़ का कोई न कोई मक़सद है तो इस दुनिया की अज़ीम ज़िन्दगानी का भी कोई मक़सद होना चाहिये। और जब कि हर बिगाड़ के पीछे बनाव और सुल्झाव है तो इस फ़ानी ज़िन्दगी के पीछे भी कोई बाक़ी व जावेदां ज़िन्दगी होना चाहिये जिसे दुनयवी ज़िन्दगी का मक़सद क़रार दिया जा सके, और जब इन दोनों ज़िन्दगियों में मवाज़ना करता है और देखता है कि एक का नतीजा फ़ना और एक का अन्जाम बक़ा है तो वह आख़रत की दायमी राहत को दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी पर तरजीह देगा। जब ग़ौरो फ़िक्र से इस नतीजे पर पहुंचता है तो अमल की तहरीक और आख़ेरत के सरो सामान की फ़िक्र दामनगीर होती है और इस तरह वह ज़ख़ीरए आख़रत फ़राहम करने और अमले सालेह बजा लाने पर आमादा हो जाता है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "तफ़क्कुर, नेकी और इस पर अमल पैरा होने की दावत देता है।"

तक़वा : नाम है उस तास्सुर का जो अज़मत व इक़्तिदारे इलाही के तसव्वुर से इन्सान के दिल व दिमाग़ पर तारी होता है जिसके नतीजे में अल्लाह तआला के एताअत और अदाये फ़र्ज़ पर आमादा होता है ताकि आक़बा की बाज़ पुर्स और जहन्नम के अज़ाब से अपना तहफ़्फ़ुज़ कर सके। ख़ुदा वन्दे आलम ने बहुत से महामिद व औसाफ़ को तक़वे से वाबस्ता किया जिनमें चन्द यह हैं जो क़ुरआन मजीद में बयान हुए हैं :–

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(1) तक़वा एक ममदूह सिफ़त है। चुनान्चे इरशादे इलाही है : "अगर तुम सब्र करो और तक़वा अख़्तियार करो तो बेशक यह बड़े हौसले के काम हैं।"

(2) यह कीदो मक्र से हिफ़्ज़ व निगेहदाश्त करता है। चुनान्चे इरशाद है : "अगर तुम सब्र और तक़वा अख़्तियार करो तो तुम्हें इनका मक्र ज़रा नुक़्सान न पहुंचा सकेगा।"

(3) यह ताईद व नुसरते इलाही का वसीला है। चुनान्चे इरशाद है : "अल्लाह तआला तो बस उन लोगों के साथ है जो उससे डरते हैं।"

(4) यह सख़्तियों से रेहाई और रिज़्क़ की फ़रावानी का बाएस है। चुनान्चे इरशाद है : "जो ख़ुदा से डरेगा तो ख़ुदा उसके लिये रेहाई की सूरत पैदा कर देगा और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा जहां से शानगुमान भी न हो।"

(5) यह इस्लाहे अमल का ज़रिया है। चुनान्चे इरशाद है : "ख़ुदा से डरते रहो और जब कहो तो दुरूस्त बात कहो तो ख़ुदा तुम्हारे आमाल दुरूस्त कर देगा।"

(6) यह मोहब्बते इलाही का पेशख़ेमा है। चुनान्चे इरशादे बारी है : "बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है।"

(7) इस पर कुबूलियते आमाल का इन्हेसार है। चुनान्चे इरशादे ख़ुदावन्दी है : "अल्लाह तआला सिर्फ़ परहेज़गारों के आमाल कुबूल करता है।"

(8) यह दुश्वारियों के हल करने का ज़रिया है। चुनान्चे इरशादे इलाही है : "जो ख़ुदा से डरता है ख़ुदा उसके काम में सहूलत व आसानी पैदा कर देता है।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(9) यह अफ़वो गुनाह और अजरे सवाब का बाअस है। चुनान्चे इरशाद है : "जो ख़ुदा से डरता रहेगा तो वह उसके गुनाह दूर कर देगा और उसे बड़ा अज्र देगा।"

(10) यह फ़लाह व कामरानी का बाअस है। चुनान्चे इरशाद है: "ख़ुदा से डरो ताकि तुम फ़लाह व कामरानी हासिल करो।"

(11) यह इज़्ज़त व सरफ़राज़ी का सबब है। चुनान्चे इरशाद है: "बेशक ख़ुदा के नज़दीक तुममें सबसे ज़्यादा बाइज़्ज़त वही है जो बडा परहेज़गार हो।"

(12) यह मौत के वक़्त नवेद व बशारत का सबब है। चुनान्चे इरशादे इलाही है : "वह लोग जो ईमान लाये और ख़ौफ़ खाते रहे उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में भी बशारत है और आख़ेरत में भी।"

(13) यह नजात का ज़रिया है। चुनान्चे इरशाद है : "फिर उन्हीं को नजात देंगे जो डरते रहे हैं।"

(14) यह फ़ौज़े उख़रवी का ज़ामिन है। चुनान्चे इरशाद है : "परहेज़गारी ही का तो अन्जाम बख़ैर है।"

मोहब्बत व मोवद्दत : दुनिया में ज़िन्दगी बसर करने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत है उनमें सबसे ज़्यादा ज़रूरी चीज़ तअल्लुक़ात की ख़ुशगवारी और बाहमी तआवुन व साज़गारी है। क्योंकि इन्सान अपने ज़रूरियात में एक दूसरे का मोहताज है और दूसरों से बेनयाज़ रह कर ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकता, और मोहब्बत व बाहमी वाबस्तगी की सूरत में ब-आसानी इन ज़रूरियात को पूरा किया जा सकता है और मोहब्बत के होते हुए किसी को किसी से शिकायत का मौक़ा न मिलेगा, क्योंकि मोहब्बत ईसार की मुक़तज़ी होती है और रवाबित मोहब्बत की इस्तवारी के बाद अगर कोई नुक़्सान होता भी हो तो उसे नज़र अन्दाज़ किया जा सकता है। इसी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लिये शारेअ इस्लाम ने नमाज़े पन्जगाना, जुमे के इज्तेमाअ, मुसाफ़ेहा और मेल मुलाक़ात को ख़ास अहमियत दी है ताकि लोगों में उल्फ़त व यगानगत के राब्ते बढ़ें, और एक दूसरे के दुख दर्द में शरीक हों, दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करें और अपने बनी नोअ के काम आयें।

सिल्ल-ए-रहमी : सिल्ला-ए-रहमी यह है कि अपने अज़ीज़ों और क़रीबियों से कतअ तअल्लुक़ न करे। न उन्हें किसी क़िस्म का गुज़न्द पहुंचाये और न उनके मुतअल्लिक़ कोई ऐसी बात कहे जो रंजिश व दिल शिकस्तगी का बाअस हो। बल्कि हर तरह से उनकी दिलजोई व हमदर्दी करे। एहतियाज व ज़रूरत के मौक़े पर अगर इस्तेताअत रखता हो तो उनकी मदद करे। किसी मुसीबत में मुब्तिला हों तो उनकी रेहाई के लिये तगोदव (दौड़ धूप) करे। बीमार हों तो अयादत के लिये जाये, ग़मी ख़ुशी में शिरकत करे। इस सिल्ला-ए-रहमी का फ़ायदा यह है कि इससे मोहब्बत व मवानस्त के जज़बात क़वी होते हैं जो एक दूसरे से वाबस्ता कर देते हैं जिसके नतीजे में वह वक़्त पर काम आते हैं। दुख दर्द में शरीक होते हैं और इस इज्तेमाअ व इत्तिहाद से कुव्वत व पुश्त पनाही हासिल होती है। और अहादीस में वारिद हुआ है कि इससे उम्र में इज़ाफ़ा और फ़क़रो परेशानी का एज़ाला होता है।

एहसान : किसी के साथ नेकी करना एहसान कहलाता है। एहसान का फल दुनिया में मिलता है और आख़ेरत में भी। चुनान्चे इन्सान जब दूसरे के साथ अच्छा सुलूक करता है तो "इन्सान बन्दए एहसान है।" की बिना पर दूसरा इस हुस्ने सुलूक व हमदर्दी से मुतास्सिर होगा और उसके दिल में मोहब्बत व ख़ैरसगाली के जज़बात पैदा होंगे और वह इस अहसान के बदले में अपनी तमाम हमदर्दियों को उसके लिये वक़्फ़ कर देगा, औरवह ख़ुद भी जब नाम व नमूद और ज़ाती अग़राज़ के जज़बात से अलग होकर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किसी के साथ नेकी करता है मसलन किसी भूखे को खाना खिलाता है या किसी नादार की मदद करता है तो एक ऐसी मलकूती मसर्रत महसूस करता है जो मादी लज़ाएज़ से कहीं ज़्यादा कैफ़ अफ़ज़ा होती है, और अगर उसके अहसान को नाक़द्री व नाशुक्री की निगाहों से देखा जाता है तो उसे इस पर कबीदा ख़ातिर होना चाहिये, क्योंकि उसका अहसान रायगां नहीं गया। इस लिये कि उसने रूहानी मसर्रत के साथ मोहब्बते इलाही की दौलत हासिल कर ली है। चुनान्चे इरशादे इलाही है : "अल्लाह तआला की मोहब्बत उनके लिये है जो एहसान करने वाले हैं।"

चश्मपोशी : अगर इन्सान दूसरों के ओयूब ही पर नज़र रखे और किसी मौक़े पर चश्मपोशी से काम न ले तो वह कभी अपनी ज़िन्दगी को ख़ुशगवार नहीं बना सकता। क्योंकि इन्सानों में ऐब तो होते ही हैं। अगर उनकी हर हर ग़लती पर नज़र रखी जाये और हर बात से असर लिया जाये तो वह उनकी नजरों में खटकने लगेगा और तअल्लुक़ात की ख़ुशगवारी ख़त्म हो जायेगी और इस तरह वह अपने हाथ से अपने दोस्तों को खो देगा और वक़्त उसे कोई मोआविन व मददगार न मिल सकेगा।

ख़ुश ख़लक़ी : यह वह जौहर है जो अपनी ताबानियों से चारों तरफ़ मुसर्रत फैलाता और दिल व दिमाग़ को ग़म व गुस्से के मुज़िर जज़बात से बचा कर एक कैफ़ अफ़ज़ा माहौल में पहुंचा देता है। चुनान्चे जो ख़ुश ख़ूई व नर्म रवी के सिफ़ात रखता है वह न तन्हा अपनी ज़ेहनी फ़िज़ा को पुरमसर्रत बनाता है बल्कि दूसरों के लिये भी बिसाते मसर्रत चुन देता है और इस तरह वह बड़ी आसानी से दूसरों का तआवुन हासिल करता और अपने बिगड़े कामों को बना लेता है।

इस्लाहे ज़ातुलबीन : बाहम ग़लत फ़हमियों को दूर करके दो शख़्सों को आपस में मिला देना "इस्लाहे ज़ातुलबीन कहलाता" है। इस सिलसिले

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में अगर कोई बात ख़िलाफ़े वाक़आ कहनी पड़े इस तरह कि एक को दूस की तरफ़ से यह कहे कि वह तुम्हारे मुतअल्लिक़ बड़े अच्छे ख़याल व इज़हार करता था और दूसरे से यह कहे कि वह तुम्हारे फ़लां काम की बड़ तारीफ़ करता था तो यह बातें अगरचे ख़िलाफ़े वाक़ेआ हैं, लेकिन मक़स की अहमियत के पेशे नज़र इस दरोग़े मसलेहत आमेज़ की शरअन इजाज़त है। इसका नतीजा यह होगा कि दोनों तरफ़ से दिल साफ़ हो जायेंगे औ कदूरतें ख़त्म हो जायेंगी। इसी अहमियत के पेशे नज़र कुदरत का इरशा है : मोमिन आपस में भाई भाई हैं लेहाज़ा अपने दो भाईयों मे (अगर रंजिश हो तो) मेल करा दिया करो।"

रास्तगोई : इल्म व यक़ीन के मुताबिक़ किसी बात के कहने का नाम सच और ख़िलाफ़े वाक़आ इज़हार का नाम झूठ है। ख़्वाह यह ख़िलाफ़े वाक़आ इज़हारे ज़बान से हो या सर की हरकत से या हाथ के इशारे से। सच अख़लाक़ी तामीर की बुनियाद और ख़ुद एतमादी व ज़ेहनी सुकून का सरचश्मा है और झूठ से इत्मिनान व ज़ेहनी एतमाद ख़त्म हो जाता है, क्योंकि सच फ़ितरी और झूठ फ़ितरत से बग़ावत है। चुनान्चे एक बच्चे से जो अभी ग़लत माहौल से मुतास्सिर न हुआ हो, कोई बात दरयाफ़्त की जाये तो बेसाख़्ता उसकी ज़बान पर सच्ची बात आयेगी, और जब पहले पहल किसी से कोई ख़िलाफ़ वाक़आ बात सुनता है तो उसे एक तरह से हैरत होती है कि यह क्या? और उसकी साफ़ व सादा तबीअत पर यह चीज़ गरां गुज़रती है। सच्चा इन्सान बग़ैर किसी हथियार के अपने अन्दर इतनी कुव्वत रखता है कि उसका मुक़ाबला मुश्किल होता है। इसके बरख़िलाफ़ झूठा आदमी झूठ के ज़ाहिर हो जाने के अन्देशे से ग़ैर मुतमईन और ज़ेहनी उल्झाव में मुब्तिला और मुतज़बज़ब व मुतज़लज़ल रहता है, और चूंकि लोग उसकी बात पर एतमाद नहीं करते इस लिये वह उनकी निगाहों में भी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़लील और ख़ुद अपनी नज़रों में भी हक़ीर हो जाता है। इस्लाम इस्लाहे मुआशरा और बाहमी तआवुन व एतमाद का दाई है और यह दोनों चीज़ें सच्चाई से वाबस्ता हैं इस लिये वह एक मुसलमान को ज़िन्दगी के हर शोबे में सच्चाई की राह पर गामज़न देखना चाहता है ख़्वाह सच्चाई बहुत से मुनाफ़े से महरूमी और झूठ बहुत से फ़वाएद का बाअस क्यों न हो। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

> (तरजुमा) "ईमान की अलामत यह है कि जहां सच्चाई से नुक़्सान और झूठ से कुछ फ़ायदा भी हासिल हो रहा हो, सच्चाई ही को अख़्तियार करे।"

वह औसाफ़ जिनसे इन्सान को ख़ाली होना चाहिये ताकि अख़लाक़ की तरबियत ब अहसन तरीक़ हो सके, यह हैं :-

बिद्अत : बिद्अत के लग़वी माने नई चीज़ के हैं और इस्तेलाहन उस चीज़ को कहते हैं जो क़ुरआन व सुन्नत के ख़िलाफ़ होने के बावजूद दीन में दाख़िल कर ली गयी हो। यह हराम और सरासर ज़लालत व गुमराही है जैसे नवाफ़िल में जमाअत, जुमे के दिन अज़ान में एज़ाफ़ा, क़ब्ल अज़ वक़्त अफ़तार, आज़ाए मसह को मसह के बजाये धोना, इमामे हक़ के ख़िलाफ़ बग़ावत वग़ैरा, और हर नई चीज़ पर बिद्अत का इतलाक़ सही नहीं है। चुनान्चे शहीद रहमतुल्लाह अलैह ने क़वाएद में तहरीर किया है कि सिर्फ़ उन्हीं चीज़ों को बिद्अत से ताबीर किया जायेगा जो अव्वला तहरीम के तहत में आती हों, और जो उसके तहत में न आती हों उन्हें हराम नहीं कहा जायेगा, बल्कि उनमें से बाज़ वाजिब हैं जैसे किताब व सुन्नत की तदवीन जबकि उनके तल्फ़ होने का अन्देशा हो, और बाज़ मुस्तहब हैं जैसे दीनी मदारिस की तासीस और बाज़ मकरूह हैं जैसे तज़ईन मसाजिद और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बाज़ मुबाह हैं जैसे आराम व रफ़ाहियत की ज़िन्दगी बसर करना।

क़यास : दीन में क़यास के माने यह हैं कि किसी अम्र मुश्तरिक की वजह से एक चीज़ का हुक्म दूसरी चीज़ पर जारी करना क्योंकि वह अम्र मुश्तरक ही इस हुक्म की इल्लत है और इल्लत का इत्तेहाद हुक्म के इत्तेहाद का मक़तज़ी होता है। इस क़यास की तीन क़िस्में हैं पहली क़िस्म क़यास मनसूसुल इल्लह है जैसे इरशादे नबवी "शराब नशा आवर होने के सबब से हराम है" से हर नशा आवर चीज़ को हराम क़रार देना। यह क़यास सही है, क्योंकि शारेअ ने ख़ुद इल्लत को बयान कर दिया है।

दूसरी क़िस्म क़यास बतरीक़े औला है, जैसे इरशादे इलाही : "माँ बाप को उफ़ तक न कहो।" से गज़न्द व अज़ीयत का हराम क़रार देना। यह क़यास भी अपनी उलूवियत की बिना पर दुरूस्त है।

तीसरी क़िस्म क़यास मुस्तनबेतुल इल्ला है। इसका मतलब यह है कि अपनी राये से इल्लत का इस्तँबात कर लिया जाये और इसे मनाते हुक्म क़रार दे लिया जाये। यह क़यास शीअी नुक़्तए नज़र से सही नहीं है क्योंकि क़यास व राय की तजवीज़ की हुई इल्लत का इल्लत होना ज़रूरी नहीं है। चुनान्चे चोर का हाथ अगर एक चौथाई दीनार की वजह से काटा जाता है तो अज़रूए क़यास ग़ासिब का हाथ भी इस मिक़दार पर क़तअ होना चाहिये। हालांकि वह हज़ार दीनार भी ग़सब कर ले जब भी उसके हाथ क़तअ नहीं होंगे। इस लिये अइम्मए मासूमीन अलैहिस्सलाम ने इस क़िस्म के क़यास से मना किया है ताकि इन्सानी रायों से शरीअत के ख़दोख़ाल मस्ख़ न होने पायें। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :

(तरजुमा) "सुन्नत में अगर क़यास किया जाये तो दीन ही ख़त्म हो जायेगा।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अलबत्ता एक गिरोह इस क़िस्म के क़यास को सही समझता और उसे शरई माख़ज़ क़रार देता है। इब्ने क़तीबह ने अलमआरूफ़ में इस गिरोह के नुमायां अफ़राद के नाम गिनवाये हैं जो यह हैं : इब्ने अबी लैली, अबू हनीफ़ा, रबिआ बिन अबी अब्दुर्रहमान, ज़फ़र इब्ने बज़ील, अब्दुर्रहमान इब्ने अमरू अवज़ाई, सुफ़ियान सूरी, मालिक बिन अनस, क़ाज़ी अबू यूसुफ़ और मोहम्मद इब्नुल हसनुल फ़क़ीह। इन सब में हज़रत अबूहनीफ़ा[रह०] को एक ख़ास शोहरत व इम्तियाज़ हासिल है। चुनान्चे ज़हबी ने मीज़ानुल एतदाल में और दमीरी ने हयातुल हैवान में इन्हें अहले क़यास व राय का इमाम तहरीर किया है और ज़मख़शरी ने रबीउल अबरार में यूसुफ़ इब्ने असबात का यह क़ौल नक़्ल किया है : "इमाम अबू हनीफ़ा ने चार सौ या इससे ज़्यादा हदीसों को क़यास के मुक़ाबले में नाक़ाबिले अमल क़रार दिया।"

उजब व किब्र : उजब (ख़ुदबीनी) यह है कि इन्सान अपनी किसी ख़ूबी पर नाज़ करते हुए दूसरों से अपने को बुलन्द व बरतर तसव्वुर करे। आम इससे कि वह ख़ूबी उसमें पाई जाती हो या न पाई जाती हो या जिसे वह ख़ूबी समझ रहा है वह वाक़ेअ में ख़ूबी हो या सिर्फ़ उसे ख़ूबी तसव्वुर कर लिया हो, और किब्र (गुरूर) यह है कि दूसरों के मुक़ाबले में ऐसे अफ़आल व हरकात का मुज़ाहरा करे जिनमें अपनी बुलन्दी और दूसरों की तहक़ीर का पहलू निकलता हो। मसलन किसी के साथ खाने पीने में नाक भौं चढ़ाये, ग़रीब के साथ उठना बैठना और तअल्लुक़ात पैदा करना पसन्द न करे। रास्ता चलने में साथ वालों से आगे रहने की कोशिश करे। दूसरों से सलाम का मुन्तज़िर रहे और बात चीत में बेरूख़ी व बेइल्तेफ़ाती का रवय्या अख़्तियार करे। यह तमाम चीज़ें तकब्बुर की अलामत है और वह शख़्स फ़ैज़ाने रहमत से हमेशा महरूम रहता है। चुनान्चे जब मेह बरसता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है तो सर बुलन्द चोटियों पर से पानी भर जाता है और जहां नशेब हो है वहां जमा हो जाता है और उसके रग व रेशे को सेराब कर देता है। इ ग़ुरूर व ख़ुद पसन्दी का इलाज यह है कि इन्सान अपने आग़ाज व अन्जा को देखे कि "इसकी इब्तेदा नुत्फ़ा और इन्तेहा मुरदार है।" औ अपनी शिकस्तगी व दरमान्दगी पर नज़र करे कि वह ज़िन्दगी के हर गो में सरापा एहतियाज है और हर मरहले पर दूसरों के सहारे का मुन्तज़िर जब पैदा हुआ उस वक़्त दूसरों की तरबियत व निगरानी का दस्तनिगर, ज मरेगा उस वक़्त दोस्तों के क़ब्र तक पहुंचाने का मोहताज, और जब त ज़िन्दा रहा लिबास, रेहाइश, ग़िज़ा, दवा, ग़रज़ ज़िन्दगी के तमाम जरूरिया में दूसरों का सहारा ढूंढ़ता रहा। इसके मुक़ाबले में हैवान का दायर एहतियाज कहीं महदूद है। वह अपनी जाये रेहाइश ख़ुराक ख़ुद मोहय्य कर लेता है, लिबास की उसे एहतियाज नहीं। मर्ज़ का हमला उस पर बहु कम होता है और जब होता है तो अपनी दवा ख़ुद तलाश कर लेता है अगर इन्सान को अपने हसब व नसब पर ग़ुरूर हो तो उसे ग़ौर करन चाहिये कि उसमें उसकी कारकरदगी का क्या दख़ल है कि बुलन्द नस्ब उसके लिये सरमायए इफ़्तिख़ार बन सके। उसे यह देखना चाहिये कि वह अपने आबा के कमालात का वरसादार है या नंगे इस्लाफ़। अगर वरसादार है तो यही ज़ाती जौहर क्या कम है कि वह क़सरे इज़्ज़ो इफ़्तिख़ार की तामीर के लिये बोसीदा हड्डियों का सहारा ढूंढ़े, और अगर बाएसे नंग है तो उस पर इफ़्तिख़ार मूजिबे आर है और अगर माल व दौलत की वजह से ग़ुरूर है, तो यह देखे कि यह तो मबसस और कोढ़ी लोगों के पास भी फ़रावानी के साथ हो सकती है और काफ़िर व बेदीन भी इसमें से ज़्यादा हिस्सा समेट सकता है। तो इस पर फ़ख़्र ही क्या जिसमें एक काफ़िर भी बढ़ जाये, और क़ुव्वत व ताक़त पर नाज़ हो तो एक चूंटी को देखे कि वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ेन भर चलती फिरती और अपने से चार सौ गुना बोझ उठा लेती है मगर ाकती नहीं, और शहद की मक्खी एक क़तरा शहद तैयार करने के लिये ीन सौ फूलों का रस चूस्ती है मगर थकन महसूस नहीं करती, और मच्छर न्तेहाई क़लील ग़िज़ा के बावजूद दिन भर परवाज़ कर सकता है और उसे न्द घण्टे भी पैदल चलना पड़े तो हल्कान हो जाये।

हसद : यह एक शदीद क़िस्म का नफ़सानी मर्ज़ है जो हासिद को घुन ी तरह अन्दर ही अन्दर चाट लेता है यह समझते हुए कि हसद से न ़सूद का कुछ बिगड़ सकता है न उसकी नेअमतें और आसाइशें सल्ब हो कती हैं। फिर जलना और कुढ़ना तक़ाज़ाए होशमन्दी के सरासर ख़िलाफ़ । बल्कि दूसरे को नुक़्सान पहुंचने के बजाये ख़ुद उसके लिये तल्ख़ियों ऐसे असबाब फ़राहम हो जाते हैं जो उसे हमेशा क़रार व सुकून से ़रूम और ज़ेहनी उल्झनों में मुब्तिला रखते हैं। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम ़ल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है कि : "हसद सब से ़ कर तल्ख़ काम होता है।" अगर उसे यह यक़ीन हो कि ख़ुदा वन्दे लम जो कुछ करता है उसमें ख़ैर व मसलेहत ही कारफ़रमा होती है। ार किसी को इज़्ज़त व इक़बाल और जाह व सरवत से वाफ़िर हिस्सा ा है, तो इसमें भी उसकी हिक्मत व मसलेहत होती है। लेहाज़ा हसद ़ना हिक्मत व मसलेहते इलाही के ख़िलाफ़ चाहना है और यह एक तरह सरकशी व इलहाद है जो ख़ैर व सआदत से महरूमी का बाअस होता

ग़ैज़ व ग़ज़ब : यह भी एक नफ़सानी मर्ज़ है जिसके नतीजे में ़ान बेक़ाबू हो जाता है और ज़बान से ऐसे नाज़ेबा कलमात निकल जाते ़या हाथ से ऐसी हरकत सरज़द हो जाती है जिसके नताएज उमूमन ़ुशगवार होते हैं। अगर इस हैजानी कैफ़ियत पर सब्र व ज़ब्त के ज़रिये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ग़लबा पा लिया जाये तो बहुत से मफ़ासिद का सद्दे बाब हो जाता है, औ दूसरे फ़रीक़ पर यह असर पड़ता है कि वह इस ज़्यादती पर जो ग़ुस्स दिलाने का बाअस हुई है ख़ुद नादिम व शर्मसार होता है और अपनी ख़त का एतराफ़ करते हुए मअज़रत पर आमादा हो जाता है जिससे तलख़ी फि ख़ुशगवारी से बदल जाती है।

ग़ीबत : किसी मोमिन की पसे पुश्त बुराई करना ग़ीबत कहलाता है यह एक ऐसी नाशायस्ता ख़सलत है कि इन्सान दूसरों के उयूब की टो में लगा रहता है ताकि अपनी आदत को पूरा करने के लिये उसे मवा हासिल होता रहे। कुदरत ने इस ख़सलत को मुरदार ख़्वारी से ताबीर किय है ताकि इन्सान की फ़ितरी कराहत को उभार कर उसे नफ़रत दिलाये चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "तुम आपस में एक दूसरे की ग़ीबत न करो, क्या तुममें से कोई यह गवारा करेगा कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाये।"

ग़ीबत से मना करने और उससे नफ़रत दिलाने के लिये इससे बेहतर क्या ताबीर होगी कि यह ग़ीबत करना ऐसा ही है जैसे मुर्दा भाई का गोश्त खाना। यह कै़द इस लिये है कि मुर्दा न ज़बान से कुछ कह सकता है और न हाथ से रोक सकता है जिस तरह चाहो उसे चीरो फाड़ो और उसकी बोटियां नोचो। यही हालत उस शख़्स की होती है जिसकी ग़ीबत की जाती है कि वह न ग़ीबत करने वाले की ज़बान रोक सकता है और न उसे मना कर सकता है क्योंकि यह सब बुराई उसके पसे पुश्त होती है। इस ग़ीबत का नतीजा यह होता है कि पहले आपस में नफ़रत पड़ती है, फिर रफ़्ता रफ़्ता इस नफ़रत का दायरा इतना वसीअ़ हो जाता है कि ख़ानदान और क़ौमों को अपनी लपेट में ले लेता है जिससे ऐसे मफ़ासिद जन्म लेते हैं जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तबाही व बर्बादी की तकमील कर देते हैं।

तआयीर : किसी शख़्स को उसके ऐब या गुनाह की बिना पर मतऊन क़रार देना तआयीर कहलाता है। यह भी बाज़ लोगों का दिलचस्प मशग़ला है कि वह जिसमें कोई बुरी बात देखते हैं उसकी तन्क़ीस शुरू कर देते हैं और बाज़ तो अपनी तक़श्शुफ़ पसन्दी व तंग मिज़ाजी की वजह से उसे नही अनिल मुन्कर के क़बील से तसव्वुर करते हुए मौक़े व बे मौक़े ज़बाने तअन खोल देते हैं हालांकि अगर वह खुद अपना जाएज़ा लें तो उस जैसे कितने ही ओयूब उनके अन्दर मौजूद होंगे। दरहक़ीक़त यह ऐब बीनी व नुक्ताचीनी अपनी ही ख़ामी होती है जो दूसरों के अन्दर नज़र आती है :

अगर यह गुनाह से नफ़रत दिलाने और नसीहत व ख़ैरख़्वाही के उनवान से हो तो यह नही अनिल मुन्कर के क़बील से समझी जायेगी जो अपने महल व मोरिद से वाबस्ता है। मगर यह नुक्ता चीनी तो इलाज के बजाये दूसरे की तहक़ीर व तज़लील के लिये होती है जिससे यह ज़ाहिर करना मक़सूद होता है कि वह खुद इस ऐब से बरी हैं, लेकिन बरी हों भी तो इसका ज़िम्मा नहीं ले सकते कि उनका दामन कभी दाग़दार न होगा। हो सकता है कि जो आज दूसरों में कीड़े डाल रहे हैं कल उनमें भी पड़ जायें। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

> (तरजुमा) "जो किसी मोमिन पर उसके किसी गुनाह की वजह से ऐब लगाता है वह वैसे ही गुनाह का मुरतकब हो कर मरता है।"

सूएज़न : किसी मुस्लिम व मोमिन के मुतअल्लिक़ खुद साख़्ता क़राएन की बिना पर ख़याले फ़ासिद क़ायम करना सूएज़न कहलाता है। यह चीज़ ख़ब्से फ़ितरत व सूए बातिन की दलील है जिसके नतीजे में बाहमी तआवुन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व एतमाद का माहौल ख़त्म हो जाता है इस लिये कुदरत ने बदगुमानी को गुनाह से ताबीर करते हुए इससे मना फ़रमाया है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "ऐ इमान वालों! बहुत सी बद्गुमानियों से बचे रहा करो क्योंकि बाज़ गुमाने बद गुनाह होते हैं।"

और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "ख़ुदा वन्दे आलम ने मुस्लिम का ख़ून बहाने, उसकी इज़्ज़त पर हमलाआवर होने और उसके मुतअल्लिक़ सूएज़न रखने को हराम क़रार दिया है।"

बदगुमानी को वही शख़्स अपने दिल में जगह देगा जिसका दिल ख़ुद साफ़ न होगा इस लिये कि इन्सान हर आईने में अपनी ही सूरत देखता है; और जैसा वह होता है वैसा ही दूसरों के मुतअल्लिक़ तसव्वुर क़ायम करने लगता है, और जिसका दिल पाक व साफ़ होगा वह बदगुमानी को अपने दिल में न आने देगा और न ज़बान से कोई ऐसी बात कहेगा जिससे बदगुमानी का इज़हार होता हो। इस क़िस्म की बद्गुमानी सिर्फ़ अग़वाए शैतानी का नतीजा होती हैं, क्योंकि अन्दरूनी कैफ़ियत व बातिनी हालत पर ख़ुदा वन्दे अलीम व ख़बीर के अलावा कोई दूसरा आगाह नहीं हो सकता और न कोई दूसरे के अन्दर झांक कर नीय्यत की अच्छाई या बुराई को देख सकता और दिल का हाल जान सकता है। लेहाज़ा किसी के मुतअल्लिक़ बे जाने बे देखे एक ख़याल क़ायम कर लेना सिर्फ़ इस वजह से हो सकता है कि शैतान ने उसकी कुव्वत वाहेमा में नेकी का तसव्वुर क़ायम करने के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जाये बुरा तसव्वुर क़ायम कर दिया है और जो तसव्वुर शैतानी वसवसे का तीजा हो उस पर असरात मुरत्तब करना ग़लत होगा। इस तरह कि किसी ो खै़रात करते देखें तो यह ख़याल क़ायम कर लें कि यह नाम व नमूद लिये ऐसा कर रहा है या कोई और अमले खै़र कर रहा हो तो उसे सकी ज़ाती ग़रज़ पर महमूल किया जाये। हमें ज़ाहिर को देखते हुए हुस्ने न ही से काम लेना चाहिये। रहा नीय्यत का सवाल तो इसका मुहासबा रने वाला अल्लाह तआला है लेकिन इससे यह न समझ लेना चाहिये कि ब हुस्ने ज़न ही पर बुनियाद है तो फिर जो हुआ उस पर एतमाद कर लेना हिये। जिसे चाहें घर में छोड़ जायें जिसे चाहें अपना माल सुपुर्द कर दें र जो शख़्स कोई दावा करे उसे बग़ैर दलील व सनद के तस्लीम कर तो यह हज़्म व एहतियात और तक़ाज़ाये अक़्ल के ख़िलाफ़ होगा। ऐसे ारिद पर हुस्ने ज़न को बुनियाद नहीं क़रार दिया जा सकता और न हर ़ पर परखे बग़ैर एतमाद किया जा सकता है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन ़ैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "परखे बग़ैर हर एक पर भरोसा कर लेना इज्ज़ व कमज़ोरी की दलील है।"

फ़ोहश कलामी : यह बाज़ारी लोगों का वतीरा है कि वह अपने जैसे गों में उठने बैठने की वजह से औल फ़ौल बकने के आदी हो जाते हैं। र एक शरीफ़ व मेयारी इन्सान कभी यह गवारा नहीं करता कि वह नी ज़बान पर कोई फ़ोहश कलमा आने दे, और अगर किसी मौके़ पर ी ज़रूरत पड़ जाये कि कोई फ़ोहश कलमा कहना पड़े तो वह उसे इशारे ाए से अदा करेगा और खुलकर कहने से हिचकिचाएगा।

दशनाम तराज़ी : यह आदत नफ़्स की ख़बासत व दनायत की ामत है। इससे मक़सद दूसरों को गज़िन्द पहुंचाना होता है और कभी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बुरे लोगों में उठने बैठने की वजह से उसकी आदत पड़ जाती है। बहरहा॰ यह किसी को गज़िन्द पहुंचाने के लिये हो या बर बिनाये आदत, इन्तेहा इश्तेआल अंगेज़ी का बाएस होती है जिससे झगड़े फ़साद और ख़ून ख़रा तक नौबत पहुंच जाती है और कभी क़त्ल ऐसे संगीन जुर्म का भी इरतेका हो जाता है। लेहाज़ा कोई गाली दे तो गाली का जवाब गाली से देने ॰ बजाये सब्र व तहम्मुल से काम लेना चाहिये, और गाली गलोच से अप॰ ज़बान को बचाये रखना चाहिये ताकि यह सिलसिला आगे न बढ़े।

इसराफ़ : जहां जितना सर्फ़ करना चाहिये उससे ज़्यादा मिक़दार सर्फ़ करना इसराफ़ कहलाता है, और बाज़ इसे दरियादिली समझते ह॰ जहां एक सर्फ़ करना चाहिये वहां दस सर्फ़ करते हैं और दावतों अ॰ नुमाइशी कामों में दिल के हौसले निकालते हैं, और जहां किसी ग़रीब नादार की एआनत और किसी बेवा व यतीम की मदद का सवाल आता तो माली कमज़ोरी व कसादबाज़ी का रोना लेकर बैठ जाते हैं। ऐ॰ दरियादिली नाम व नमूद की हवस का नतीजा होती है और यही इसरा॰ है। यह इसराफ़ अगर खाने पीने के सिलसिले में हो तो इसके नतीजे तरह तरह के अमराज़ से दो चार होना पड़ता है और दूसरे उमूर में हो इसका नतीजा तबाही व बदहाली की सूरत में ज़ाहिर होता है। चुनान्चे ऐ॰ मिसालों की कमी नहीं कि किसी मनचली तबीअत वाले ने किसी तक़र॰ में नाम व नमूद की ख़ातिर या रस्म व रवाज को निबाहने के लिये ज़म॰ या मकान को रेहन रखा और एक आध दिन ख़ूब चहल पहल और तु॰ व एहतेशाम दिखाने में गुज़ारा और हुआ यह कि जो रहा सहा पास था॰ ख़त्म हुआ। सूद दर सूद की बदौलत मकान नीलाम हुआ। अब न क॰ ठिकाना रहा और न सर छुपाने की कोई जगह। इन्सान राहत व आसा॰ की ज़िन्दगी इसी सूरत में गुज़ार सकता है जब वह एतदाल व मियाना॰

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से काम ले। वरना इसराफ़ के नतीजे में इक़्तिसादी उलझन और तंग दस्ती व परेशानी से महफ़ूज़ नहीं रह सकता।

तबज़ीर : जहां सर्फ़ न करना चाहिये वहां सर्फ़ करना तबज़ीर कहलाता है। इस बेमहल जूद व सख़ा के मुज़ाहिरे का नतीजा यह होता है कि ऐसे शख़्स के गिर्द ख़ुशामदियों और बाज़ारी क़िस्म के लोगों का एक हलक़ा पैदा हो जाता है जो उसकी बेजां तारीफ़ व ख़ुशामद करके उसे ख़ुद पसन्द बना देते हैं और वह उन्हें अपना ख़ैरख़्वाह दोस्त समझ कर देता दिलाता रहता है, और ग़रीब व नादार और मुस्तहक़ व फ़क़ीर उसके हां से महरूम रहते हैं। यह बेमहल दादो दहश बदबख़्ती की अलामत और उख़रवी सआदत से महरूमी का बाएस होती है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "जब तुम यह जानना चाहो कि फ़लां शख़्स बदबख़्त है या नेक, तो उसकी दादो दहिश को देखो कि वह किनसे हुस्ने सुलूक करता है अगर वह अहल व मुस्तहक़ अफ़राद को देता है तो वह भलाई की राह पर गामज़न है, और अगर नाअहल से सुलूक करता है तो याद रखो कि अल्लाह तआला के नज़दीक उसके लिये कोई भलाई नहीं है।"

सवाल : दूसरों के आगे हाथ फैलाना अपनी इज़्ज़त से हाथ उठाना है। इस लिये कि कोई बाइज़्ज़त इन्सान इन्तेहाई तंगी व उसरत के बावजूद सवाल करना गवारा नहीं कर सकता। यह दुनिया में भी रूसियाही का सबब है और आख़रत में भी। उससे जवाबदेही होगी। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "लोगों से सवाल करने और मांगने से बचे रहो क्योंकि यह दुनिया में ज़िल्लत व फ़क्र का बाअस है और आख़रत में हिसाब किताब देना होगा।"

सवाल की आदत उमूमन फ़क़रो नादारी की वजह से पैदा होती है जिससे इन्सान इज़्ज़ते नफ़्स खो बैठता है। इसी चीज़ के पेशे नज़र सुल्हा व अबरार एहतियाज व तंगदस्ती से पनाह मांगते रहे हैं कि मुबादा यह तंग दस्ती सवाल पर मजबूर कर दे। और अख़लाक़ की पाकीज़गी ख़त्म हो जाये। माल व दौलत से भी अगर उसका मसरफ़ सही हो तो अख़लाक़ की निगेहदाश्त की जा सकती है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है : "वुस्अते माली तक़वाए इलाही में मोईन व मआवुन होती है। इसी माल व दौलत की वजह से इन्सान माली इबादात को सर अन्जाम देता है और हज, ख़ुम्स, ज़कात, कफ़्फ़ारा, सिलए रहम व सदक़ात सब इसी से वाबस्ता हैं।

जब किसी बात से ग़मगीन या गुनाहों की वजह से परेशान होते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजमा) "ऐ अल्लाह! ऐ यक्कओ तन्हा और कमज़ोर व नातवान की (मुहिमों में) किफ़ायत करने वाले और ख़तरनाक मरहलों से बचा ले जाने वाले! गुनाहों ने मुझे बेयारो मददगार छोड़ दिया है। अब कोई साथी नहीं है और तेरे ग़ज़ब के बर्दाश्त करने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से आजिज़ हूं। अब कोई सहारा देने वाला नहीं है तेरी तरफ़ बाज़गश्त का ख़तरा दरपेश है; अब इस दहशत से कोई तस्कीन देने वाला नहीं है और जबकि तूने मुझे ख़ौफ़ज़दा किया है तो कौन है जो मुझे तुझसे मुतमईन करे, और जब कि तूने मुझे तन्हा छोड़ दिया है तो कौन है जो मेरी दस्तगीरी करे, और जबकि तूने मुझे नातवान कर दिया है तो कौन है जो मुझे कुव्वत दे ऐ मेरे मअबूद! परवरदा को कोई पनाह नहीं दे सकता सिवाये उसके परवर दिगार के और शिकस्त ख़ुर्दा को कोई अमान नहीं दे सकता सिवाये उस पर ग़लबा पाने वाले के, और तलबकर्दा की कोई मदद नहीं कर सकता सिवाये उसके तालिब के। यह तमाम वसाएल ऐ मेरे मअबूद तेरे ही हाथ में हैं और तेरी ही तरफ़ राहे फ़रार व गुरेज़ है। लेहाज़ा तू मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे गुरेज़ को अपने दामन में पनाह दे और मेरी हाजत बर ला। ऐ अल्लाह! अगर तूने अपना पाकीज़ा रूख़ मुझ से मोड़ लिया और अपने अहसाने अज़ीम से दरेग़ किया या अपने रिज़्क़ को बन्द कर दिया, या अपने रिश्तए रहमत को मुझसे क़तअ कर लिया तो मैं अपनी आरज़ूओं तक पहुंचने का वसीला तेरे सिवा कोई पा नहीं सकता और तेरे हां की चीज़ों पर तेरी मदद के सिवा दस्तरस हासिल नहीं कर सकता,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

क्योंकि मैं तेरा बन्दा और तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में हूं और तेरे ही हाथ में मेरी बागडोर है। तेरे हुक्म के आगे मेरा हुक्म नहीं चल सकता। मेरे बारे में तेरा फ़रमान जारी और मेरे हक़ में तेरा फ़ैसला अद्ल व इन्साफ़ पर मब्नी है। तेरे क़लमर्वे सल्तनत से निकल जाने का मुझे यारा नहीं और तेरे एहातए क़ुदरत से क़दम बाहर रखने की ताक़त नहीं और न तेरी मोहब्बत को हासिल कर सकता हूं। न तेरी रज़ामन्दी तक पहुंच सकता हूं और न तेरे हां की नेअमतें पा सकता हूं मगर तेरी एताअत और तेरी रहमत फ़रावां के वसीले से। ऐ अल्लाह! मैं हर हाल में तेरा ज़लील बन्दा हूं; तेरी मदद के बग़ैर मैं अपने सूद व ज़ियां का मालिक नहीं। मैं इस इज्ज़ व बेबज़ाअती की अपने बारे में गवाही देता हूं और अपनी कमज़ोरी व बेचारगी का एतराफ़ करता हूं। लेहाज़ा जो वादा तूने मुझसे किया है उसे पूरा कर और जो दिया है उसे तकमील तक पहुंचा दे इस लिये कि मैं तेरा वह बन्दा हूं जो बेनवा, आजिज़, कमज़ोर, बेसरोसामान, हक़ीर, ज़लील, नादार, ख़ौफ़ज़दा और पनाह का ख़्वास्तगार है। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे उन अतियों में जो तूने बख़्शे हैं फ़रामोशकार और उन नेअमतों में जो तूने अता की हैं अहसान नाशिनास न बना दे और मुझे दुआ की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कुबूलियत से नाउम्मीद न कर अगरचे उसमें ताख़ीर हो जाये। आसाइश में हूं या तकलीफ़ में तंगी में हूं या फ़ारिग़ुलबाली में। तन्दुरूस्ती की हालत में हूं या बीमारी की। बदहाली में हूं या ख़ुशहाली में। तवंगरी में हूं या उसरत में। फ़क्र में हूं या दौलतमन्दी में। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे हर हालत में मदह व सताइश व सपास में मसरूफ़ रख यहां तक कि दुनिया में से जो कुछ तू दे उस पर ख़ुश न होने लगूं औरजो रोक ले उस पर रंजीदा न हूं, और परहेज़गारी को मेरे दिल का शआर बना और मेरे जिस्म से वही काम ले जिसे तू कुबूल फ़रमाए और अपनी एताअत में इन्हेमाक के ज़रिये तमाम दुनयवी अलाएक़ से भर दे ताकि उस चीज़ को जो तेरी नाराज़ी का सबब है दोस्त न रखूं और जो चीज़ तेरी ख़ुशनूदी का बाअस है उसे नापसन्द न करूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और ज़िन्दगी भर मेरे दिल को अपनी मोहब्बत के लिये फ़ारिग़ कर दे। अपनी याद में इसे मशग़ूल रख; अपने ख़ौफ़ व हरास के ज़रिये (गुनाहों की) तलाफ़ी का मौक़ा दे, अपनी तरफ़ रुजूअ होने से इसको कुव्वत व तवानाई बख़्श; अपनी एताअत की तरफ़ इसे माएल कर और अपने पसन्दीदा तरीन रास्ते पर चला और अपनी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नेअमतों की तलब पर इसे तैयार कर और परहेज़गारी को मेरा तोशा, अपनी रहमत की जानिब मेरा सफ़र, अपनी ख़ुशनूदी में मेरा गुज़र और अपनी जन्नत में मेरी मंज़िल क़रार दे और मुझे ऐसी कुव्वत अता फ़रमा जिससे तेरी रिज़ामन्दियों का बोझ उठा लूं, और मेरे गुरेज़ को अपनी जानिब और मेरी ख़्वाहिश को अपने हां की नेअमतों की तरफ़ क़रार दे और बुरे लोगों से मेरे दिल में नफ़रत पैदा कर दे और अपने और अपने दोस्तों और फ़रमाबरदारों से मानूस कर दे और किसी बदकार और काफ़िर का मुझ पर एहसान न हो। न उसकी निगाहे करम मुझ पर हो और न उसकी मुझे कोई एहतियाज हो बल्कि मेरे दिली सुकून, क़लबी लगाव और मेरी बेनयाज़ी व कारगुज़ारी को अपने और अपने बरगुज़ीदा बन्दों से वाबस्ता कर। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे उनका हमनशीन व मददगार क़रार दे और अपने शौक़ व वारफ़्तगी और उन आमाल के ज़रिये जिन्हें तू पसन्द करता और जिनसे ख़ुश होता है। मुझ पर एहसान फ़रमा इस लिये कि तू हर चीज़ पर क़ादिर है और यह काम तेरे लिये आसान है।

जब इन्सान को गुनाहों का एहसास होता है तो वह अपने को यक्कउ तन्हा महसूस करता है, क्योंकि वह देखता है कि उसका बोझ बटाने वाल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और इन गुनाहों का बार हल्का करने वाला कोई नहीं है इस लिये अपने गिर्दो पेश दोस्तों के इज्तेमाअ के बावजूद वह अपने को तन्हा समझने पर मजबूर हो जाता है, और जब गुनाह के नतीजे में ग़ज़ब व इन्तेक़ामे इलाही का तसव्वुर करता है तो उसके मुक़ाबले में अपनी कुव्वत व ताक़त को आजिज़ व कमज़ोर पाता है और जब हश्र व नश्र, हिसाब व किताब और बरज़ख़ व क़ब्र की सख़्तियों का तसव्वुर करता है तो उस पर ख़ौफ़ व हरास तारी हो जाता है। यह ख़ौफ़ व परागन्दगी के तमाम हालात गुनाह ग़ज़बे इलाही और हश्र व नश्र के तसव्वुर से पैदा होते हैं इसी लिये इमाम अलैहिस्सलाम ने इन चीज़ों की निस्बत इलाही असबाब की तरफ़ दी है। फिर असबाब व वसाएल से क़तअ नज़र करते हुए अल्लाह सुबहनहू की तरफ़ निस्बत देते हैं, क्योंकि हक़ीक़तन् वही इज्ज़ो व तन्हाई व ख़ौफ़ के असबाब पैदा करने वाला है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :-

(तरजुमा) "यह वह अज़ाब है जिससे ख़ुदा ने अपने बन्दों को डराया है ऐ मेरे बन्दों! मुझसे डरते रहो।"

ऐसी सूरत में ख़ौफ़ व हरास से तसल्ली हासिल करने का जब कोई ज़रिया नज़र नहीं आता तो वह अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ होता और उसी से ख़ौफ़ व परेशानी तन्हाई व बेकसी और अपनी आजिज़ी व बेबसी का मदावा चाहता है, क्योंकि उसके अलावा कोई पनाह देने वाला, और ख़ौफ़ व इज़तेराब का दूर करने वाला नहीं है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है : "अल्लाह तआला के अज़ाब से अल्लाह तआला ही के दामन में पनाह मांगो"। और हज़रत[अ०] ने इस दुआ में सिर्फ़ उसी को पनाह देहिन्दा क़रार देने पर इस तरह इस्तेदलाल फ़रमाया है कि वह रब्ब है जिसके माने मालिक के हैं और उसके अलावा हर फ़र्द

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ममलूक और उसके दायरए रबूबियत के अन्दर है तो ममलूक का मालिक के मुक़ाबले में क्या बस चल सकता है कि वह उसके ग़ज़ब व इन्तेक़ाम से सिपर बन सके, और वह ग़ालिब है और उसके अलावा सब शिकस्त ख़ुर्दा व मग़लूब हैं। लेहाज़ा जो ख़ुद मग़लूब हो वह ग़ालिब के मुक़ाबले में क्या पनाह दे सकता है जबकि उसे ग़लबा व तसल्लुत हासिल ही नहीं है, और वह तालिब है; बा ई मआ़नी कि वह सब को अपनी बारगाह में तलब करने वाला और उनके आमाल का जाएज़ा लेने वाला है, और उसके अलावा सबके सब वहां हिसाब व किताब के लिये मतलूब हैं और एक फ़र्द के लिये भी जाये गुरेज़ नहीं है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :– "अल्लाह उनका आगे से और पीछे से एहाता किये हुए है।" लेहाज़ा जो ख़ुद मतलूब व माख़ूज़ हो वह तालिब के मुक़ाबले में क्या मदद कर सकता है। अब अगर कहीं पनाह तलब की जा सकती है तो उसी के सायए रहमत में और ख़ौफ़ व हरास के अन्धेरे छट सकते हैं तो उसी के फ़ज़्लो क़रम की रौशनी से, और इन्सान उसके सामने आजिज़ व दरमान्दा और बेबस व लाचार है, क्योंकि हर चीज़ में उसी का अम्र नाफ़िज़ और उसी का हुक्म कारफ़रमा है और उसी के हाथ में तमाम असबाब व वसाएल हैं। इसके यह माने न समझे जायें कि इन्सान अपने अफ़आल पर अख़्तियार ही नहीं रखता और इस सिलसिले में बेबस व मजबूर है, क्योंकि कुदरत की तरफ़ से सिर्फ़ असबाब और वसाएल मोहय्या होते हैं जिसके बाद वह अच्छे और बुरे कामों को ब–अख़्तियार ख़ुद अन्जाम देता है। चुनान्चे जहां तक उन अफ़आल के लिये कुव्वतें दरकार थीं वह कुदरत का अतिया हैं जिन्हें अच्छे और बुरे दोनों क़िस्म के कामों में सर्फ़ किया जा सकता है, और जब तौफ़ीक़े इलाही से इन्हें अच्छे कामों में सर्फ़ करता है तो यह उसका अख़्तियारी फ़ेल होता है जिस पर वह जज़ा व सवाब का मुस्तहक़ क़रार पाता है, और कुदरत की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रफ़ से असबाब व क़्वा का मोहय्या होना अफ़आल के वक़ूअ की इल्लत हीं है कि उसे अपने कामों में मजबूर समझ लिया जाये। अलबत्ता तौफ़ीक़े लाही का शामिले हाल होना एक इनआमे ख़ुदा वन्दी है। जो हर उस ाख़्स की दस्तगीरी के लिये आमादा है जो फ़िक्र व अमल से उसके लिये ास्ता हमवार कर देता है। और यह उसकी तौफ़ीक़ ही का करिश्मा है कि न्सान ख़्वाहिशात व जज़बात को दबाकर अपने आज़ा को उसकी एबादत ं, अपने दिल को उसकी याद में और अपनी ज़बान को उसके ज़िक्र में ासरूफ़ रखता है और ख़्वाहिश परस्ती के मुक़ाबले में उसकी ख़ुशनूदी व ेज़ामन्दी को तरजीह देता है। यहां तक कि किसी से मोहब्बत है तो इस लेये कि वह अल्लाह का फ़रमांबरदार और उसका दोस्त है और किसी से ग़ज़ है तो इस लिये कि वह आसी व नाफ़रमान और उसका दुश्मन है। ार्ज़ उसका जीना, मरना, उठना, बैठना, मेल मिल्लत रखना सब अल्लाह ाआला की ख़ातिर और उसकी ख़ुशनूदी के लिये होता है और उसके ुक़ाबले में न किसी मुसीबत को मुसीबत और न किसी नुक़्सान को नुक़्सान ासव्वुर करता है।

शदाएद व मुश्किलात के मौक़े पर यह दुआ पढ़ते

(तरजुमा) "ऐ मेरे मअबूद! तूने (इस्लाह व तहज़ीबे नफ़्स के बारे में) जो तकलीफ़ मुझ पर आयद की है उस पर तू मुझसे ज़्याद क़ुदरत रखता है और तेरी क़ुव्वत व तवानाई इस अम्र पर और ख़ुद मुझ पर मेरी क़ुव्वत व ताक़त से मज़बूततर है लेहाज़ा मुझे उन आमाल की तौफ़ीक़ दे जो तेरी ख़ुशनूदी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

का बाअस हों, और सेहत व सलामती की हालत में अपनी रिज़ामन्दी के तक़ाज़े मुझसे पूरे कर ले। बारे इलाहा! मुझमें मशक़्क़त के मुक़ाबले में हिम्मत, मुसीबत के मुक़ाबले में सब्र और फ़क्र व एहतियाज के मुक़ाबले में कुव्वत नहीं है। लेहाज़ा मेरी रोज़ी को रोक न ले और मुझे अपनी मख़लूक़ के हवाले न कर। बल्कि बिलवास्ता मेरी हाजत बर ला और ख़ुद ही मेरा कारसाज़ बन और मुझ पर नज़रे शफ़क़त फ़रमा और तमाम कामों के सिलसिले में मुझ पर नज़रे करम रख। इस लिये कि अगर तूने मुझे मेरे हाल पर छोड़ दिया तो मैं अपने उमूर की अन्जामदेही से आजिज़ रहूंगा, और जिन कामों में मेरी बहबूदी है उन्हें अन्जाम न दे सकूंगा, और अगर तूने मुझे लोगों के हवाले कर दिया तो वह तेवरियों पर बल डाल कर मुझे देखेंगे और अगर अज़ीज़ों की तरफ़ ढकेल दिया तो वह मुझे नाउम्मीद रखेंगे, और अगर कुछ देंगे तो क़लील व नाख़ुशगवार, और उसके मुक़ाबले में अहसान ज़्यादा रखेंगे और बुराई भी हद से बढ़ कर करेंगे। लेहाज़ा ऐ मेरे मअबूद! तू अपने फ़ज़लो करम के ज़रिये मुझे बेनयाज़ कर, और अपनी बुज़ुर्गी व अज़मत के वसीले से मेरी एहतियाज को बरतरफ़ फ़रमा और अपनी तवंगरी व वुसअत से मेरा हाथ कुशादा कर दे और अपने हां की नेअमतों के ज़रिये मुझे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(दूसरों से) बेनयाज़ बना दे। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे हसद से निजात दे, और गुनाहों के इरतेकाब से रोक दे और हराम कामों से बचने की तौफ़ीक़ दे और गुनाहों पर जुरअ़त पैदा न होने दे और मेरी ख़्वाहिश व रग़बत अपने से वाबस्ता रख और मेरी रज़ामन्दी उन्हीं चीज़ों में क़रार दे जो तेरी तरफ़ से मुझ पर वारिद हों और रिज़्क़ व बख़्शिश व इनाम में मेरे लिये अफ़ज़ाइश फ़रमा और मुझे हर हाल में अपने हिफ़्ज़ व निगेहदाश्त, हिजाब व निगरानी और पनाह व अमान में रख। ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे हर क़िस्म की एताअत के बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा जो तूने अपने लिये या मख़लूक़ात में से किसी के लिये मुझ पर लाज़िम व वाजिब की हो। अगरचे उसे अन्जाम देने की सकत मेरे जिस्म में न हो और मेरी क़ुव्वत उसके मुक़ाबले में कमज़ोर साबित हो और मेरी मक़दरत से बाहर हो और मेरा माल व असासा इसकी गुंजाइश न रखता हो। वह मुझे याद हो या भूल गया हूं। वह तो ऐ मेरे परवर दिगार! उन चीज़ों में से है जिन्हें तूने मेरे ज़िम्मे शुमार किया है और मैं अपनी सहल निगारी की वजह से उसे बजा न लाया। लेहाज़ा अपनी वसीअ बख़्शिश और कसीर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रहमत के पेशे नज़र इस (कमी) को पूरा कर दे। इस लिये कि तू तवनगर व करीम है। ताकि ऐ मेरे परवर दिगार जिस दिन मैं तेरी मुलाक़ात करूं उसमें से कोई ऐसी बात मेरे ज़िम्मे बाक़ी न रहे कि तू उसके मुक़ाबले में यह चाहे कि मेरी नेकियों में कमी या मेरी बदियों में इज़ाफ़ा कर दे। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और आख़रत के पेशे नज़र सिर्फ़ अपने लिये अमल की रग़बत अता कर यहां तक कि मैं अपने दिल में उसकी सेहत का एहसास कर लूं और दुनिया में ज़ोहद व बेरग़बती का जज़्बा मुझ पर ग़ालिब आ जाये और नेक काम शौक़ से करूं और ख़ौफ़ व हरास की वजह से बुरे कामों से महफ़ूज़ रहूं, और मुझे ऐसा नूर (इल्म व दानिश) अता कर जिसके परतौ में लोगों के दरमियान (बे खटके) चलूं फिरूं और उसके ज़रिये तारीकियों में हिदायत पाऊँ और शुकूक व शुबहात के धुंधलकों में रौशनी हासिल करूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अन्दोह अज़ाब का ख़ौफ़ और सवाब आख़रत का शौक़ मेरे अन्दर पैदा कर दे ताकि जिस चीज़ का तुझसे तालिब हूं उसकी लज़्ज़त और जिससे पनाह मांगता हूं उसकी तलख़ी महसूस कर सकूं। बारे इलाहा! जिन चीज़ों से मेरे दीनी और दुनयवी उमूर की बहबूदी वाबस्ता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है तू उन्हें ख़ूब जानता है। लेहाज़ा मेरी हाजतों की तरफ़ ख़ास तवज्जोह फ़रमा। ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और ख़ुशहाली व तंगदस्ती और सेहत व बीमारी में जो नेअमतें तूने बख़्शी हैं उन पर अदाये शुक्र में कोताही के वक़्त मुझे एतराफ़े हक़ की तौफ़ीक़ अता कर ताकि मैं ख़ौफ़ व अमन, रिज़ा व ग़ज़ब और नफ़ा व नुक़्सान के मौक़े पर तेरे हुक़ूक़ व वज़ाएफ़ के अन्जाम देने में मसर्रते क़लबी व इत्मिनाने नफ़्स महसूस करूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे सीने को हसद से पाक कर दे ताकि मैं मख़लूक़ात में से किसी एक पर उस चीज़ की वजह से जो तूने उसे अपने फ़ज़लो करम से अता की है हसद न करूं यहां तक कि मैं तेरी नेअमतों में से कोई नेअमत, वह दीन से मुतअल्लिक़ हो या दुनिया से, आफ़ियत से मुतअल्लिक़ हो या तक़वा से, वुस्अते रिज़्क़ से मुतअल्लिक़ हो या आसाइश से, मख़लूक़ात में से किसी एक के पास न देखूं मगर यह कि तेरे वसीले से, और तुझसे ऐ ख़ुदाए यगाना व ला शरीक इससे बेहतर की अपने लिये आरज़ू करूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और दुनिया व आख़रत के उमूर में ख़्वाह ख़ुशनूदी की हालत हो या ग़ज़ब की, मुझे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

खताओं से तहफ्फुज़ और लग़जिशों से इज्तेनाब की तौफ़ीक़ अता फ़रमा यहां तक कि ग़ज़ब व रिज़ा की जो हालत पेश आये मेरी हालत यकसां रहे और तेरी एताअत पर अमल पैरा रहूं। और दोस्त व दुश्मन के बारे में तेरी रिज़ा और एताअत को दूसरी चीज़ों पर मुक़द्दम करूं यहां तक कि दुश्मन को मेरे ज़ुल्म व जौर का कोई अन्देशा न रहे और मेरे दोस्त को भी जम्बादारी और दोस्ती की रौ में बह जाने से मायूसी हो जाये, और मुझे उन लोगों में क़रार दे जो राहत व आसाइश के ज़माने में पूरे अख़लास के साथ उन मुख़लेसीन की तरह दुआ मांगते हैं जो इज़तेरार व बेचारगी के आलम में दस्त ब–दुआ रहते हैं बेशक तू क़ाबिले सताइश और बुज़ुर्ग व बरतर है।

दुनिया की मुसीबत व इब्तिला और ज़माने की शिद्दत व सख़्ती से कम व बेश हर शख़्स को दो चार होना पड़ता है। ऐसे वक़्त में ज़ाबित से ज़ाबित इन्सान भी बेसब्री का मुज़ाहरा कर बैठता है और मुसीबतों से घबराकर कभी मुक़द्दर का गिला करता है कभी फ़लक कज रफ़्तार का, कभी ज़माना का शिकवा करता है और कभी अहले ज़माना का, और बहुत कम लोग ऐसे होंगे जो ज़माने की उँच, नीच में अपनी सतह को हमवार रख सकें और यह तबीअते बशरी का ख़ासा है कि वह मुसीबत से मुतास्सिर हो, और मुसीबत को मुसीबत न समझना तो फ़ितरत के ख़िलाफ़ है लेकिन इस तास्सुर पर सब्र व ज़ब्त से क़ाबू पा लेना "मुसीबत के एहसास को कम कर देता है और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बेसब्री से उसकी तलख़ी बढ़ जाती है इस लिये रंज व इन्दोह के मौक़े पर सब्र व ज़ब्त से काम ले और दूसरे मुसीबतज़दा लोगों को देख कर अपने लिये तसल्ली का सामान मोहय्या करे। यह मसाएब व आला आलाम जहां तलख़कामी का बाअस होते हैं वहां ऐसे तालीमी असबाक़ भी उनसे हासिल होते हैं जो ज़िन्दगी की पुरपेच राहों में सआदत व कामरानी की राह दिखाते हैं। चुनान्चे इन मुसीबत ही के लम्हों से आराम व राहत की क़द्रो क़ीमत का अन्दाज़ा होता है, क्योंकि जब तक दरिया की तुग़यानियों और समन्दर की तूफ़ानी मौजों से वास्ता न पड़े, साहिल की पुरसुकून व बेख़तर फ़िज़ा की क़द्र नहीं होती, और इन्ही मसाएब व शदाएद के झेल ले जाने से सब्र व इस्तेक़ामत की सलाहियत पैदा होती है जो आइन्दा कठिन मौक़ों पर काम आती और इज़्तेराब व परेशानी से बचा ले जाती है और मुसीबत ही के मौक़े पर दोस्तों, अज़ीज़ों की आज़माइश होती है जो इन्सान को मोहतात बना देती है, और एक फ़ायदा यह भी है कि इससे नख़वत व रऊनत के जज़बात को ठेस लगती है और इज्ज़ व बेबसी का एहसास शिकस्तगी व इन्केसारी की कैफ़ियत पैदा कर देता है।

अगर ज़िन्दगी के लम्हात सुकून व इत्मिनान ही का गहवारा बने रहें और राहत व आसाइश के तमाम सामान मोहय्या और तमन्नायें और आरज़ूएं कामयाबी से हमकिनार रहें तो लाज़िमन् दुनिया से वाबस्तगी का जज़्बा ज़्यादा होगा और इससे रूख़ मोड़ना इन्तेहाई रंज व अलम और हसरत व इन्दोह का बाअस होगा। इसके बरअक्स अगर ज़िन्दगी के मसाएब व आलाम की गोद में करवटें ले तो दुनिया से दिलचस्पी व वाबस्तगी का एहसास कम होगा। और ज्यों ज्यों मुसीबतें बढ़ेंगी दिल ज़्यादा उचाट होगा और दुनिया एक क़ैदख़ाना मालूम देगी और दुनिया को छोड़ने और तंगनाए दहर से निकलने का सदमा चन्दाँ महसूस न होगा। जब इन मसाएब के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नतीजे में दुनियासे रग़बत कम होगी तो आख़रत से वाबस्तगी लाज़मन् बढ़ेगी और वह दुनिया के आराम व सुकून का आरज़ी और उसके ऐश को ढलती छांव समझ कर अबदी सुकून के लिये अल्लाह तआला से अपना रिश्ता जोड़ेगा। चुनान्चे यह दुआ शिद्दत व सख़्ती के मौक़े पर अल्लाह तआला की कुव्वत व कुदरत की तरफ़ मुतवज्जह करके उससे वाबस्तगी का दर्स देती है कि इन्सान अपनी कारगुज़ारी पर ग़र्रा न करे। बल्कि अल्लाह तआला की अज़मत व बालादस्ती को नज़र में रखे कि वह नुफ़ूसे इन्सानी पर इतना अख़्तियार व इक़्तिदार रखता है कि वह ख़ुद इतना अख़्तियार नहीं रखते और जितना वह उनकी दुरूस्ती व इस्लाह पर क़ादिर है वह ख़ुद उतने क़ादिर नहीं हैं, क्योंकि हर कुव्वत व ताक़त का वही सरचश्मा है और कोई कुव्वत उससे बालातर मतसव्वुर नहीं हो सकती। अगर चे इन्सान फ़ाअले मुख़्तार है मगर जब तक कुदरत की तरफ़ से असबाब व ज़राए मोहय्या न हों वह कुछ भी नहीं कर सकता। यह हाथ पांव में सकत, आंखों में बीनाई, कानों में सुनवाई उसी की बख़्शी हुई है और उसी ने हवास के चराग़ रौशन किये और अक़्ल व शऊर की कुव्वतें दी हैं। लेहाज़ा जो क़दम उठेगा उसी की दी हुई कुव्वत से और जो काम सरअन्जाम पायेगा उसी की दी हुई सेहत व तवानाई से। ख़ुद इन्सान न अपने मसालेह को समझ सकता है न अपने सूदोज़ियां पर अख़्तियार रखता है। न इब्तिला व मुसीबत के धारे को मोड़ सकता है न फ़क्रो एहतियाज को दूर कर सकता है। इसी लिये हज़रत शिद्दत व मुसीबत और फ़क्रो बेचारगी के मुक़ाबले में अपने इज्ज़ का इज़हार करते हुए उसी से अपने हवाएज व मक़ासिद वाबस्ता करते हैं इस तरह कि न कोई वास्ता गवारा किया और न कोई सहारा ढूंढा है इस लिये जो हाजतें दूसरों के ज़रिये पूरी होती हैं उनमें अहसान की आमेज़िश होती है, और जो बेमिन्नते ख़ल्क़ मिलता है वह हर कदूरत से पाक होता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ैं और फ़राएज़ व वाजिबात की अदायगी में भी उसी से तौफ़ीक़ तलब करते ैं, क्योंकि जब तक उसकी तौफ़ीक़ शामिले हाल न हो एक शम्मा भी उसके ुक़ूक़ का अदा नहीं हो सकता। अल्लाह तआला के हुक़ूक़ के पहलू ब ाहलू हुक़ूक़ुन्नास का भी ज़िक्र किया है, क्योंकि वह हुक़ूक़ अल्लाह से अहमियत में कम नहीं हैं, बल्कि ख़ुदा वन्दे आलम अपने हुक़ूक़ को तो माफ़ कर दे सकता है मगर हुक़ूक़ुन्नास को नज़र अन्दाज़ नहीं करता। यहां तक के अगर कोई शख़्स किसी की बुराई करता है तो उस वक़्त तक माफ़ नहीं करता जब तक साहबे हक़ ख़ुद माफ़ न कर दे, और अगर माफ़ न करे तो वह गुनाह उससे बरतरफ़ नहीं हो सकता, और उसकी नेकियों को कम करके जिसकी ग़ीबत की है उसके नामए आमाल में दर्ज कर देगा। ज़रत[अ०] ने अल्लाह तआला के हुक़ूक़ को सिर्फ़ दो लफ़्ज़ों में बयान कर देया है एक एताअत और दूसरे रज़ा। एताअत यह है कि उसके एहकाम की पाबन्दी करे, और रज़ा यह है कि हर ख़ुशगवार व नागवार को हिक्मत । मसलेहते इलाही के ज़ेरे असर समझे और उस पर ख़ुश व ख़ुशनूद रहे जेसके बाद न किसी चौखट पर सरे नयाज़ ख़म करेगा न दुनिया की तल्ख़ियों से मुतास्सिर होगा, और इस तरह अपनी उबूदियत को कमाल की ंज़िल तक पहुंचा देगा। और आख़िर में इन्सान को ग़फ़लत से होशियार हने की तालीम दी है कि वह ऐश व तनअम की राहतों में खो कर मुसीबत की घड़ियों को फ़रामोश न करे बल्कि राहत व आसाइश के दिनों में भी फ़िक्रो एहतियाज और मुसीबत व इब्तिला से पनाह मांगता रहे, क्योंकि अम्न । इत्मिनान के मौक़े पर जो दुआ मांगी जाती है वह बुरे वक़्त में हर मुसीबत । उफ़्ताद से सिपर बन जाया करती है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :—

(तरजुमा) "वुसअत व कशाइश के मौक़े पर दुआ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुसीबत के मौके पर मक़सद बरारी का ज़रिया होती है।''

जब तलबे आफ़ियत करते और उस पर शुक्र अदा करते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजुमा) ''ऐ अल्लाह! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे अपनी आफ़ियत का लिबास पहना, अपनी आफ़ियत की रिदा ओढ़ा, अपनी आफ़ियत के ज़रिये महफ़ूज़ रख। अपनी आफ़ियत के ज़रिये इज़्ज़त व विक़ार दे। अपनी आफ़ियत के ज़रिये बेनयाज़ कर दे। अपनी आफ़ियत की भीख मेरी झोली में डाल दे अपनी आफ़ियत मुझे मरहमत फ़रमा। अपनी आफ़ियत को मेरा ओढ़ना बिछोना क़रार दे। अपनी आफ़ियत की मेरे लिये इस्लाह व दुरुस्ती फ़रमा और दुनिया व आख़रत में मेरे और अपनी आफ़ियत के दरमियान जुदाई न डाल। ऐ मेरे मअबूद! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे ऐसी आफ़ियत दे जो बेनयाज़ करने वाली, शिफ़ा बख़्शने वाली (अम्राज़ के दस्तरस से) बाला और रोज़ अफ़ज़ूं हो। ऐसी आफ़ियत जो मेरे जिस्म में दुनिया व आख़रत की आफ़ियत को जन्म दे और सेहत, अमन, जिस्म व ईमान की सलामती, क़ल्बी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बसीरत, इन्फ़ाज़े उमूर की सलाहियत, बीम व ख़ौफ़ का जज़्बा और जिस एताअत का हुक्म दिया है उसके बजा लाने की कुव्वत औरजिन गुनाहों से मना किया है उनसे इज्तेनाब की तौफ़ीक़ बख़्श कर मुझ पर अहसान फ़रमां। बारे इलाहा! मुझ पर यह एहसान भी फ़रमा कि जब तक तू मुझे ज़िन्दा रखे, हमेशा इस साल भी और हर साल हज व उमरा और क़ब्रे रसूल स्वल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और कुबूरे आले रसूल सलामुल्लाह अलैहिम की ज़ियारत करता रहूं और उन इबादात को मक़बूल व पसन्दीदा क़ाबिले इल्तेफ़ात और अपने हां ज़ख़ीरा क़रार दे और हम्दो शुक्र व ज़िक्र और सनाए जमील के नग़में से मेरी ज़बान को गोया रख और दीनी हिदायतों के लिये मेरे दिल की गिरहें खोल दे और मुझे और मेरी औलाद को शैतान मरदूद और ज़हरीले जानवरों, हलाक करने वाले हैवानों और दूसरे जानवरों के गज़न्द और चश्मे बद से पनाह दे और हर सरकश शैतान, हर ज़ालिम हुक्मरान, हर जमा जत्थे वाले मग़रूर, हर कमज़ोर और ताक़तवर, हर आला व अदना, हर छोटे बड़े और हर नज़दीक और दूर वाले और जिन व इन्स मेंसे तेरे पैग़म्बर और उनके अहलेबैत से बरसरे पैकार होने वाले और हर हैवान के शर से जिन पर तुझे तसल्लुत हासिल है, महफ़ूज़ रख। इस लिये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कि तू हक व अद्ल की राह पर है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जो मुझसे बुराई करना चाहे उसे मुझसे रूगरदान कर दे। उसका मक्र मुझसे दूर, उसका असर मुझसे दफ़ा कर दे और उसके मक्र व फ़रेब (के तीर) उसी के सीने की तरफ़ पलटा दे और उसके सामने एक दीवार खड़ी कर दे यहां तक कि उसकी आंखों को मुझे देखने से नाबीना और उसके कानों को मेरा ज़िक्र सुनने से बहरा कर दे और उसके दिल पर कुफ़्ल चढ़ा दे ताकि मेरा उसे ख़याल न आये, और मेरे बारे में कुछ कहने सुनने से उसकी ज़बान को गुंग कर दे, उसका सर कुचल दे। उसकी इज़्ज़त पामाल कर दे, उसकी तमकनत को तोड़ दे। उसकी गर्दन में ज़िल्लत का तौक़ डाल दे उसका तकब्बुर ख़त्म कर दे, और मुझे उसकी ज़रर रसानी, शरपसन्दी, तानाज़नी, ग़ीबत, ऐब जूई, हसद, दुशमनी और उसके फन्दों हथकण्डों, पियादों और सवारों से अपने हिफ़्ज़ व अमान में रख। यक़ीनन् तू ग़लबा व इक़्तिदार का मालिक है।

यह दुआ तलबे आफ़ियत के सिलसिले में है। आफ़ियते दीन व दुनिय के तमाम अनवाए ख़ैर को शामिल है। वह जिस्म से मुतअल्लिक़ हो जैसे सेहत व तन्दरुस्ती या रूह से जैसे सीरत व किरदार की पाकीज़गी। वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुनिया की कामरानी सें मुतअल्लिक़ हो या आख़रत की फ़लाह से ग़र्ज़ ज़ाहिर व बातिन और दुनिया व आख़रत की हर फ़लाह व बहबूद उसके ज़िम्न में आ जाती है। इसी जामअ़ीय्यत के लिहाज़ से पैग़म्बरे अकरम[स०] को तलबे आफ़ियत से बढ़ कर कोई दुआ मतलूब व मरग़ूब न थी। चुनान्चे वारिद हुआ कि :–

(तरजुमा) "पैग़म्बरे अकरम[स०] ने अल्लाह तआला से कोई ऐसी चीज़ तलब नहीं की जो उन्हें तलबे आफ़ियत से ज्यादा पसन्द हो।"

इस दुआ में लफ़्ज़े आफ़ियत का तकरार उससे मुत्तइद माने के एतबार से है। चुनान्चे हर जुमले में लफ़्ज़े आफ़ियत के अलग अलग माने हैं, और वह माने बिलतरतीब यह हैं :

(1) जिस्मानी सेहत, (2) ज़िल्लत व रुस्वाई से नजात (3) दुश्मन से बचाव (4) उयूब व रज़ाएल से अलैहिदगी (5) फ़क्र व एहतियाज से दूरी (6) इज़्ज़ते नफ़्स (7) इस्तग़ना (8) बेख़ौफ़ी (9) अज़ालए नक़ाहत (10) उमूरे दुनिया व आख़रत की इस्लाह।

इन तमाम अनवाए आफ़ियत के सवाल के बाद हज, उमरा, ज़ियारते क़ब्रे रसूल[स०] और ज़ियारते कुबूरे अइम्मा[अ०] के लिये दुआ फ़रमाई है और इन आमाल पर दुआए आफ़ियत को इस लिये मुक़द्दम किया है कि यह तमाम आमाल सेहत, आफ़ियत और वुस्अते माल से वाबस्ता हैं। हज के लग़वी माने क़सद व इरादे के हैं और उमरा एतमार से है जिसके माने ज़ियारत के हैं, और शरअन मक्कए मुकर्रमा में मख़सूस दिनों में मख़सूस आमाल व अरकान के बजा लाने का नाम है। उन लोगों के लिये जो मक्के से 12 मील दूर के रहने वाले हैं हज तमत्तोअ है जिसमें दो मर्तबा एहराम बांधा जाता है। पहली मर्तबा उमरे की नीय्यत से जिसके बाद उमरे के मख़सूस आमाल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बजा लाये जाते हैं। और दूसरी मर्तबा आठ ज़िलहिज को हज का एहराम बांधा जाता है जिसके बाद हज के मख़सूस आमाल अदा किये जाते हैं। हज के बाद या हज से पहले मदीने में ज़ियारते क़ब्रे रसूल[स०] मुस्तहब मोवक्कद और सवाबे अज़ीम की हामिल है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम[स०] का इरशाद है:–

(तरजुमा) "जो शख़्स मेरी रेहलत के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत करे वह उस शख़्स के मानिन्द है जिसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी तरफ़ हिजरत की हो।"

यह ज़ियारत हज ही का एक ततिम्मा है, और इमाम शाफ़ई[रू०ह०] ने इसे हजे असग़र से ताबीर किया है। इसे तर्क करना हक़े पैग़म्बर[स०] को नज़र अन्दाज़ करना और एहसान नाशिनासी का मुज़ाहरा है। इसी तरह अइम्मए अतहार[अ०] के मशाहिद की ज़ियारत मुस्तहब मोवक्कद और उनके हुक़ूक़ के एतराफ़ की दलील है। चुनान्चे इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम का इरशाद है:–

"हर इमाम के लिये उसके दोस्तों और शियों के ज़िम्मे एक अहदो पैमान है और वफ़ाए अहद व हुस्ने अदायगी की तकमील यह है कि उनकी क़ब्रों की ज़ियारत की जाये।"

अपने वालिदैन (अलैहिस्सलाम) के हक़ में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! अपने अब्दे ख़ास और रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और उनके पाक व पाकीज़ा अहलेबैत[अ०] पर रहमत नाज़िल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़रमा और उन्हें बेहतरीन रहमत व बरकत और दुरूद व सलाम के साथ ख़ुसूसी इम्तियाज़ बख़्श और ऐ मअबूद! मेरे मां बाप को भी अपने नज़दीक इज़्ज़त व करामत और अपनी रहमत से मख़सूस फ़रमा। ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उनके जो हुकूक़ मुझ पर वाजिब हैं उनका इल्म बज़रिये इल्हाम अता कर और उन तमाम वाजिबात का इल्म बेकम व कास्त मेरे लिये मोहय्या फ़रमा दे। फिर जो मुझे बज़रिये इल्हाम बताये उस पर कारबन्द रख और इस सिलसिले में जो बसीरते इल्मी अता करे उस पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ दे ताकि उन बातों में से जो तूने मुझे तालीम की हैं कोई बात अमल में आये बग़ैर न रह जाये और इस ख़िदमत गुज़ारी से जो तूने मुझे बतलाई है, मेरे हाथ पैर थकन महसूस न करें। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा। क्योंकि तूने उनकी तरफ़ इन्तेसाब से हमें शरफ़ बख़्शा है। मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा। क्योंकि तूने उनकी वजह से हमारा हक़ मख़लूक़ात पर क़ायम किया हैं ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे कि मैं उन दिनों से इस तरह डरूं जिस तरह किसी जाबिर बादशाह से डरा जाता है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और इस तरह इनके हाल पर शफ़ीक़ व मेहरबान रहूं जिस तरह शफ़ीक़ मां (अपनी औलाद पर) शफ़क़त करती है और उनकी फ़रमांबरदारी और उनसे हुस्ने सुलूक के साथ पेश आने को मेरी आंखों के लिये इससे ज़्यादा कैफ़ अफ़ज़ा इक़रार दे जितना चश्मे ख़्वाब आलूद में नींद का ख़ुमार और मेरे क़ल्ब व रूह के लिये इससे बढ़ कर मसर्रत अंगेज़ क़रार दे जितना प्यासे के लिये जुरए आब। ताकि मैं अपने ख़्वाहिश पर उनकी ख़्वाहिश को तरजीह दूं और अपनी ख़ुशी पर उनकी ख़ुशी को मुक़द्दम रखूं और उनके थोड़े अहसान को भी जो मुझ पर करें, ज़्यादा समझूं और मैं जो नेकी उनके साथ करूं वह ज़्यादा भी हो तो उसे कम तसव्वुर करूं। ऐ अल्लाह! मेरी आवाज़ को उनके सामने आहिस्ता मेरे कलाम को उनके लिये ख़ुशगवार मेरी तबीअत को नर्म और मेरे दिल को मेहरबान बना दे और मुझे उनके साथ नर्मी व शफ़क़त से पेश आने वाला क़रार दे। ऐ अल्लाह! उन्हें मेरी परवरिश की जज़ाए ख़ैर दे और मेरी हुस्ने निगेहदाश्त पर अज्र व सवाब अता कर और कमसिनी में मेरी ख़बरगीरी का उन्हें सिला दे। ऐ अल्लाह! उन्हें मेरी तरफ़ से कोई तकलीफ़ पहुंची हो या मेरी जानिब से कोई नागवार सूरत पेश आई हो या उनकी हक़ तलफ़ी हुई हो तो उसे उनके गुनाहों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

को कफ़्फ़ारा दर्जात की बुलन्दी और नेकियों में इज़ाफ़ा का सबब क़रार दे। ऐ बुराईयों को कई गुना नेकियों से बदल देने वाले बारे इलाहा! अगर उन्होंने मेरे साथ गुफ़्तुगू में सख़्ती या किसी काम में ज़्यादती यामेरे किसी हक़ में फ़र्दगुज़ाश्त या अपने फ़र्ज़े मनसबी में कोताही की हो तो मैं उनको बख़्शता हूं और उसे नेकी व अहसान का वसीला क़रार देता हूं और पालने वाले! तुझसे ख़्वाहिश करता हूं कि इसका मवाख़िज़ा उनसे न करना। इस लिये कि मैं अपनी निस्बत उनसे कोई बदगुमानी नहीं रखता और तरबियत के सिलसिले में उन्हें सहल अंगार समझता हूं और न उनकी देख भाल को नापसन्द करता हूं इस लिये कि उनके हुक़ूक़ मुझ पर लाज़िम व वाजिब, उनके अहसानात देरीना और उनके इनामात अज़ीम हैं। वह इससे बालातर हैं कि मैं उनको बराबर का बदला या वैसा ही एवज़ दे सकूं। अगर ऐसा कर सकूं तो ऐ मेरे मअबूद! वह उनका हमावक़्त मेरी तरबियत में मशग़ूल रहना मेरी ख़बरगीरी में रंज व तअब उठाना और ख़ुद उसरत व तंगी में रह कर मेरी आसूदगी का सामान करना कहां जायेगा भला कहां हो सकता है कि वह अपने हुक़ूक़ का सिला मुझसे पा सकें और न मैं ख़ुद ही उनके हुक़ूक़ से सुबकदोश हो सकता हूं और न उनकी ख़िदमत का फ़रीज़ा अन्जाम दे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सकता हूं। रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मेरी मदद फ़रमा ऐ बेहतर उन सबसे जिनसे मदद मांगी जाती है और मुझे तौफ़ीक़ दे ऐ ज़्यादा रहनुमाई करने वाले उन सबसे जिनकी तरफ़ (हिदायत के लिये) तवज्जोह की जाती है, और मुझे उस दिन जब कि हर शख़्स को उसके आमाल का बदला दिया जायेगा और किसी पर ज़्यादती न होगी उन लोगों में से क़रार न देना। जो मां बाप के आक़ व नाफ़रमांबरदार हों। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे मां बाप को इससे बढ़कर इम्तियाज़ दे जो मोमिन बन्दों के मां बाप को तूने बख़्शा है। ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले ऐ अल्लाह! उनकी याद को नमाज़ों के बाद रात की साअतों और दिन के तमाम लम्हों में किसी वक़्त फ़रामोश न होने दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे उनके हक़ में दुआ करने की वजह से और उन्हें मेरे साथ नेकी करने की वजह से लाज़मी तौर पर बख़्श दे और मेरी सिफ़ारिश की वजह से उनसे क़तई तौर पर राज़ी व ख़ुशनूद हो और उन्हें इज़्ज़त व आबरू के साथ सलामती की मंज़िलों तक पहुंचा दे। ऐ अल्लाह! अगर तूने उन्हें मुझ से पहले बख़्श दिया तो उन्हें मेरा शफ़ी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बना, और अगर मुझे पहले बख़्श दिया तो मुझे उनका शफ़ी क़रार दे। ताकि हम सब तेरे लुत्फ़ व करम की बदौलत तेरे बुज़ुर्गी के घर और बख़्शिश व रहमत की मंज़िल में एक साथ जमा हो सकें। यक़ीनन् तू बड़े फ़ज़्ल वाला, क़दीम अहसान वाला और सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

ख़ुदा वन्दे आलम के अज़ीम अहसानात के बाद मां बाप के अहसानात ा दर्जा है जिनकी परवरिश व तरबियत में रुबूबियते इलाही की झलक ज़र आती है और वह बग़ैर किसी तमअ, ग़र्ज़ और एवज़ के पैहम तरबियत ा एहतेमाम करते और शफ़क़त व मेहरबानी के सायों में परवान चढ़ाते हैं। नान्चे वह बच्चा जो गोश्त व पोस्त का एक लोथड़ा होता है जिसका शऊर ातमाम, हवास कमज़ोर, क़वा नाक़िस, नफ़े व नुक़्सान के समझने से ासिर, न अपनी किसी ज़रूरत को पूरा कर सकता है, न बग़ैर सहारे रवट बदल सकता है, न बैठ सकता है, न खड़ा हो सकता है, हर लम्हे क निगरानी करने वाले का मोहताज, हर मरहले पर दूसरों का दस्तेनिगर, ौन है जो उसे अपने आराम व राहत की क़ुर्बानी करके पालता है; वह मां जो ऐसी हालत में तरबियत और देख भाल का बीड़ा उठाती है, और रातों ी नींद और दिन का सुकून उसके लिये क़ुर्बान कर देती है। जब उसमें उने बैठने की सकत नहीं होती, उसे गोद में उठाये फिरती है। जब कुछ ानाई आती है तो हाथ का सहारा दे कर चलना सिखाती है, और जब श संभलता है तो बाप उसकी तालीम व अख़लाक़ी तरबियत की तरफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुतवज्जोह हो जाता है और उसकी ख़ातिर तरह तरह की मशक़्क़तें बर्दाश्त करता है और अपने ख़ून पसीने की कमाई से उसे इल्म व हुनर से आरास्ता करता है। अगर शरीअते इस्लाम का यह हुक्म न भी होता कि उनके साथ खुश रफ़तारी से पेश आया जाये जब भी हक़ शिनासी व शुक्रगुज़ारी का तक़ाज़ा यह है कि उनके पैहम एहसानात के बदले में उनके हुक़ूक़ का एतराफ़ किया जाये और उनका एहतेराम मलहूज़ रखा जाये यह जानके कि शरीअत ने भी उनके साथ नेकी का ताकीदी हुक्म दिया है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "तुम्हारे परवर दिगार का हुक्म है कि उसके सिवा किसी की परस्तिश न करो और मां बाप के साथ भलाई करो। अगर उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंचें तो उन्हें (किसी नागवार बात पर) उफ़ तक न कहो और न उन्हें झिड़को। और उनसे नर्मी के साथ बात करो। और शफ़क़त व मेहरबानी से उनके सामने आजिज़ी का इज़हार करो, और कहो कि ऐ मेरे परवर दिगार! जिस तरह इन दोनों ने बचपन में मेरी परवरिश की है, उसी तरह तू भी इन पर रहम फ़रमा।"

अल्लाह तआला ने इस आयत में अपनी इबादत का बिला शिरकत ग़ैरे हुक्म दिया है और इसके पहलू ब पहलू मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक का भी ज़िक्र किया है ताकि रुबूबियत हक़ीक़ी के साथ रुबूबियत मिजाज़ी नज़र अन्दाज़ न होने पाये और दोनों के तक़ाज़े यकसां पूरे हों इस तरह कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अल्लाह तआला की परस्तिश करे और मां बाप के साथ नेकी करे। इस नेकी को सिर्फ़ उनकी ज़िन्दगी तक महदूद न समझना चाहिये बल्कि उनके मरने के बाद भी उनके हुकूक़ बरक़रार रहते हैं। चुनान्चे उनके हुकूक़ में से यह है कि उनका क़र्ज़ा अदा करे, उनकी वसीय्यत की तामील करे और जो वाजिबात उनके ज़िम्मे हों उन्हें अदा करे। जैसे नमाज़, रोज़ा, हज वग़ैरा, और उनके लिये हमेशा दुआए मग़फ़रत करे। इरशादाते मासूमीन[अ०] से मुस्तफ़ाद होता है कि अगर उनकी ज़िन्दगी में उनके हुकूक़ में फ़र्दगुज़ाश्त की गई हो तो उनके ज्वारे रहमत में पहुंचने के बाद उनके हक़ में दुआए मग़फ़रत करने और उनके दूसरे हुकूक़ अदा करने से इसकी तलाफ़ी हो जाती है, और अगर आक़ भी हो तो अहले उक़ूक़ की फ़ेहरिस्त से ख़ारिज कर दिया जाता है, और दरसूरते कि न ज़िन्दगी में उनका कुछ ख़याल किया हो और न मरने के बाद उनके हुकूक़ की तरफ़ तवज्जोह की हो, तो उसके नतीजे में उम्र कम और ज़िन्दगी तल्ख़ हो जाती है और फ़क्र व परेशानी और जानकनी की इन्तेहाई शिद्दत में मुब्तिला हो कर मरता है।

औलाद के हक़ में हज़रत की दुआ

(तरजुमा) "ऐ मेरे मअबूद! मेरी औलाद की बक़ा और उनके इस्लाह और उनसे बहरामन्दी के सामान मोहय्या करके मुझे ममनूने अहसान फ़रमा और मेरे सहारे के लिये उनकी उम्रों में बरकत और ज़िन्दगयों में तूल दे और उनमें से छोटों की परवरिश फ़रमा और कमज़ोरों को तवानाई दे और उनकी जिस्मानी, ईमानी और अख़लाक़ी हालत को दुरूस्त फ़रमा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और उनके जिस्म व जान और उनके दूसरे मामलात में जिनमें मुझे एहतेमाम करना पड़े उन्हें आफ़ियत से हमकिनार रख, और मेरे लिये और मेरे ज़रिये उनके लिये रिज़्क़े फ़रावां जारी कर और उन्हें नेकूकार, परहेज़गार, रौशन दिल, हक़ नियूश और अपना फ़रमांबरदार और अपने दोस्तों का दोस्त व ख़ैरख़्वाह और अपने तमाम दुश्मनों का दुश्मन व बदख़्वाह क़रार दे। आमीन। ऐ अल्लाह! उनके ज़रिये मेरे बाज़ूओं को क़वी और मेरी परेशान हाली की इस्लाह कर और इनकी वजह से मेरी जमीअत में इज़ाफ़ा और मेरी मजलिस की रौनक़ दोबाला फ़रमा और इनकी बदौलत मेरा नाम ज़िन्दा रख और मेरी अदम मौजूदगी में इन्हें मेरा क़ायम मक़ाम क़रार दे और इनके वसीले से मेरी हाजतों में मेरी मदद फ़रमा और इन्हें मेरे लिये दोस्त, मेहरबान, हमातन मुतवज्जोह साबित क़दम और फ़रमांबरदार क़रार दे। वह नाफ़रमान, सरकश, मुख़ालिफ़ व ख़ताकार न हों और उनकी तरबियत व तादीब और उनसे अच्छे बरताव में मेरी मदद फ़रमा, और इनके अलावा भी मुझे अपने ख़ज़ानए रहमत से नरीना औलाद अता कर और इन्हें मेरे लिये सरापा ख़ैरो बरकत क़रार दे और इन्हें उन चीज़ों में जिनका मैं तलबगार हूं मेरा मददगार बना और मुझे और मेरी ज़ुर्रियत को शैतान मरदूद से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पनाह दे। इस लिये कि तूने हमें पैदा किया और अम्रो नही की और जो हुक्म दिया उसके सवाब की तरफ़ राग़िब किया और जिससे मना किया उसके अज़ाब से डराया। और हमारा एक दुश्मन बनाया जो हम से मक्र करता है और जितना हमारी चीज़ों पर उसे तसल्लुत दिया है उतना हमें उसकी किसी चीज़ पर तसल्लुत नहीं दिया। इस तरह कि उसे हमारे सीनों में ठहरा दिया और हमारे रग व पै में दौड़ा दिया। हम ग़ाफ़िल हो जायें मगर वह ग़ाफ़िल नहीं होता। हम भूल जायें मगर वह नहीं भूलता। वह हमें तेरे अज़ाब से मुतमईन करता और तेरे अलावा दूसरों से डराता है। अगर हम किसी बुराई का इरादा करते हैं तो वह हमारी हिम्मत बंधाता है और अगर किसी अमले ख़ैर का इरादा करते हैं तो हमें उससे बाज़ रखता है और गुनाहों की दावत देता और हमारे सामने शुबहे खड़े कर दता है। अगर वादा करता है तो झूठा, और उम्मीद दिलाता है तो ख़िलाफ़वर्ज़ी करता है। अगर तू उसके मक्र को न हटाये तो वह हमें गुमराह करके छोड़ेगा और उसके फ़ितनों से न बचाये तो वह हमें डगमगा देगा। ख़ुदाया! उस[लo] के तसल्लुत को अपनी कुव्वत व तवानाई के ज़रिये हमसे दफ़ा कर दे ताकि कसरते दुआ के वसीले से उसे हमारी राह ही से हटा दे और हम उसकी मक्कारियों से महफ़ूज़ हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जायें ऐ अल्लाह! मेरी हर दरख़्वास्त को कुबूल फ़रमा और मेरी हाजतें बर ला और जब कि तूने इस्तेजाबते दुआ का ज़िम्मा लिया है तो मेरी दुआ को रद्द न कर और जब कि तूने मुझे दुआ का हुक्म दिया है तो मेरी दुआ को अपनी बारगाह से रोक न दे, और जिन चीज़ों से मेरा दीनी व दुनयवी मफ़ाद वाबस्ता है उनकी तकमील से मुझ पर अहसान फ़रमा। जो याद हों और जो भूल गया हूं। ज़ाहिर की हों, या पोशीदा रहने दी हों। एलानिया तलब की हों या दरपर्दा, इन तमाम सूरतों में इस वजह से कि तुझसे सवाल किया है (नीयत व अमल की) इस्लाह करने वालों और इस बिना पर कि तुझसे तलब किया है कामयाब होने वालों और इस सबब से कि तुझ पर भरोसा किया है ग़ैर मुस्तरद होने वालों में से क़रार दे और (उन लोगों में शुमार कर) जो तेरे दामन में पनाह लेने के ख़ूगर, तुझसे व्योपार में फ़ायदा उठाने वाले और तेरे दामने इज़्ज़त में पनाह गुज़ीन हैं। जिन्हें तेरे हमगीर फ़ज़ल और जूद व करम से रिज़्क़े हलाल में फ़रावानी हासिल हुई है और तेरी वजह से ज़िल्लत से इज़्ज़त तक पहुंचे हैं और तेरे अद्ल व इन्साफ़ के दामन में ज़ुल्म से पनाह ली है और रहमत के ज़रिये बला व मुसीबत से महफ़ूज़ हैं और तेरी बेनयाज़ी की वजह से गुनाहों, लग़ज़िशों और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

खताओं से मासूम हैं और तेरी एताअत की वजह से ख़ैर व रशद व सवाब की तौफ़ीक़ उन्हें हासिल है और तेरी कुदरत से उनके और गुनाहें के दरमियान पर्दा हाएल है और जो तमाम गुनाहों से दस्तबरदार और तेरे जवारे रहमत में मुक़ीम हैं बारे इलाहा! अपनी तौफ़ीक़ ब रहमत से यह तमाम चीज़ें हमें अता फ़रमा और दोज़ख़ के आज़ार से पनाह दे और जिन चीज़ों का मैंने अपने लिये और अपनी औलाद के लिये सवाल किया है ऐसी ही चीज़ें तमाम मुस्लेमीन व मुस्लेमात और मोमेनीन व मोमेनात को दुनिया व आख़रत में मरहमत फ़रमा। इस लिये कि तू नज़दीक और दुआ का कुबूल करने वाला है, सुनने वाला और जानने वाला है, माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला और शफ़ीक़ व मेहरबान है, और हमें दुनिया में नेकी (तौफ़ीक़े एबादत) और आख़रत में नेकी (बेहिश्ते जावेद) अता कर, और दोज़ख़ के अज़ाब से बचाये रख।

फ़ितरते इन्सानी के हसय्यात और तबीअते बशरी के जज़बात में सबसे ज़्यादा पुरजोश, देरपा और नाक़ाबिले शिकस्त औलाद की मोहब्बत का जज़्बा होता है। वजह यह है कि औलाद गोश्त, पोस्त और ख़ून में बाप की शरीक और उसी का एक जुज़ होती है इस लिये उसे कभी नूरेदीदा, कभी पारए दिल, और कभी लख़्ते जिगर से ताबीर करता है। चुनान्चे अरब का एक शाएर कहता है :

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "यह हमारे गिर्दो पेश हमारे बच्चे, हमारे जिगर पारे हैं जो ज़मीन पर चल फिर रहे हैं।"

इस फ़ितरी लगाव और तबई जज़्बे की बिना पर बाप ख़ुलूस और बेलोसी का वह किरदार पेश करता है जिसकी मिसाल दूसरे रवाबित व तअल्लुक़ात में नज़र नहीं आती। वह उसकी तालीम व तरबियत में अपना वक़्त, अपनी काविश और अपनी दौलत बेदरोग़ सर्फ़ करता है। ताकि उसकी ज़ीस्त का क़स्र बुलन्द इक़्दार पर उस्तवार हो। मगर बाज़ औक़ात ग़लत और नामुकम्मल तरतीब की वजह से औलाद बेराह हो जाती है। शुरू शुरू में लाड और प्यार में उसकी बुरी हरकतों की तरफ़ तवज्जह नहीं दी जाती और जब बुरी आदतें रासिख़ हो जाती हैं तो फिर दरिया का धारा मोड़ने की सई लाहासिल की जाती है। इस लिये ज़रूरत है कि एब्तिदा ही में ऐसी तालीम व तरबियत दी जाये जो एक सेहतमन्द ज़ेहनियत की तशकील करे और ग़लत अन्दाज़े फ़िक्र से आशना ही न होने दे, क्योंकि इब्तिदा में बच्चे के ज़ेहन में जो नक़्श बैठा दिया जाता है वह हमेशा के लिये बैठ जाता है। तालीम व तरबियत के मौक़े पर सिर्फ़ दुनयवी तरक़्क़ी के पहलू पर नज़र न होना चाहिये बल्कि उसके साथ दीनी व अख़लाक़ी ज़िन्दगी के संवारने का भी सामान करना चाहिये और शुरू ही में दीन व मज़हब की अहमियत, ख़ुदा की अज़मत और ग़रज़े ख़िलक़त को ज़ेहन नशीन कराना चाहिये ताकि आगे बढ़ कर यह तास्सुराते ज़िन्दगी के हर गोशे में कारफ़रमा रहें। इसके साथ बड़ों की इज़्ज़त, बुज़ुर्गों का एहतेराम, हमजोलियों से प्यार मोहब्बत और दूसरों से हमदर्दी व ग़मख़्वारी की तालीम दे। बुरी सोहबत से दूर रखे और लड़ाई झगड़े, बेमहल हंसने, किसी का मज़ाक़ उड़ाने, झूठ, गाली, ग़ीबत, बेमौक़ा चीख़ पुकार और औल फ़ौल बकने से मना करे और उसके हरकात व सकनात पर कड़ी नज़र रखे, और जब किसी बुरी बात से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रोकना चाहे तो एतदाल की हद में रह कर समझाये और तशद्दुद व सख़्ती से काम न ले कि उसका बाज़ औक़ात उलटा असर होता है और वह रद्दे अमल के तौर पर उस आदत पर बज़िद हो जाता है। बहरहाल हुस्ने तरबियत व तालीम ही औलाद के साथ सबसे बड़ी नेकी है और उनके लिये दुआ करना भी उनके साथ अहसान करने में शुमार होता है और बाप की दुआ औलाद के हक़ में मिन्जुमला उन दुआओं के है जो रद्द नहीं होतीं। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार का इरशाद है कि :

> (तरजुमा) "पांच दुआयें ऐसी हैं जिन्हें अल्लाह तबारक व तआला कभी रद्द नहीं करता। इमाम आदिल की दुआ; मज़लूम की दुआ जब वह दुआ करता है तो अल्लाह तआला कहता है कि मैं तेरा इन्तेक़ाम लूंगा अगर चे कुछ देर हो जाये। फ़रज़न्दे सालेह की दुआ मां बाप के हक़ में, सालेह बाप की दुआ औलाद के हक़ में, मर्दे मोमिन की दुआ अपने किसी भाई के लिये उसकी ग़ैबत में। जब वह दुआ करता है तो अल्लाह तआला कहता है कि जो तुमने उसके लिये मांगा है उससे दोगुना तुम्हारे लिये है।"

हज़रत[अ०] की यह दुआ एक नमूना है कि औलाद के लिये किस तरह और क्या दुआ करे। इस दुआ में वह तमाम चीजें समो दी गयी हैं जो एक सालेह बाप अपनी सालेह औलाद के लिये तलब कर सकता है। उनके लिये ज़िन्दगी, रिज़्क़, सेहत और कुव्वत व तवानाई की दुआ की है ताकि वह ख़ल्क़े ख़ुदा से बेनयाज़ हो कर अल्लाह तआला की एबादत व एताअत में मसरूफ़ रहें और रौशन दिल और रौशन ख़याल बुलन्द नफ़्स, बुलन्द

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किरदार, अख़लाके हुस्ना से आरास्ता, मुतीअ व फ़रमांबरदार, ख़ैर व सआदत के ख़ज़ीनादार, दोस्ताने ख़ुदा के दोस्त, दुश्मनाने ख़ुदा के दुश्मन, अस्लाफ़ की ज़ीनत और बाक़ियातुल सालेहात साबित हों।

जब हमसायों और दोस्तों को याद करते तो उनके लिये यह दुआ फ़रमाते

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! मोहम्मद^स^० और उनकी आल^अ^० पर रहमत नाज़िल फ़रमा, और मेरी इस सिलसिले में बेहतरीन नुसरत फ़रमा कि मैं अपने हमसायों और उन दोस्तों के हुक़ूक़ का लिहाज़ रखूं जो हमारे हक़ के पहचानने वाले और हमारे दुश्मनों के मुख़ालिफ हैं और उन्हें अपने तरीक़ों के क़ायम करने और उमदा अख़लाक़ व आदाब से आरास्ता होने की तौफ़ीक़ दे इस तरह कि वह कमज़ोरों के साथ नर्म रवय्या रखें और उनके फ़क्र का मदावा करें। मरीज़ों की बीमारियों तालिबाने हिदायत की हिदायत, मशविरा करने वालों की ख़ैरख़्वाही और ताज़ा वारिद की मुलाक़ात करें। राज़ों को छुपायें, उयूबों पर पर्दा डालें, मज़लूम की नुसरत और घरेलू ज़रूरियात के ज़रिये हुस्ने मवासात करें और बख़्शिश व इनाम से फ़ायदा पहुंचायें और सवाल से पहले उनके ज़रूरियात मोहय्या करें। ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना कि मैं उनमें से बुरे के साथ भलाई

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से पेश आऊँ और ज़ालिम से चश्मपोशी करके दरगुज़र करूं और उन सबके बारे में हुस्ने ज़न से काम लूं। और नेकी व अहसान के साथ सबकी ख़बरगीरी करूं, और परहेज़गारी व इफ़्फ़त की बिना पर उन (के उयूब) से आंखें बन्द रखूं। तवाज़े व फ़रोतनी की रू से उनसे नर्म रवय्या अख़्तियार करूं और शफ़क़त की बिना पर मुसीबतज़दा की दिलजोई करूं। उनकी ग़ैबत में भी उनकी मोहब्बत को दिल में लिये रहूं और ख़ुलूस की बिना पर उनके पास सदा नेअमतों का रहना पसन्द करूं और जो चीज़ें अपने ख़ास क़रीबियों के लिये ज़रूरी समझूं उनके लिये भी ज़रूरी समझूं, और जो मराआत अपने मख़सूसीन से करूं वही मराआत उनसे भी करूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे भी उनसे वैसे ही सुलूक का रवादार क़रार दे और जो चीज़ें उनके पास हैं उनमें मेरा हिस्सा वाफ़िर क़रार दे और उन्हें मेरे हक़ की बसीरत और मेरे फ़ज़्ल व बरतरी की मारेफ़त में अफ़ज़ाइश व तरक़्क़ी दे ताकि वह मेरी वजह से सआदतमन्द और मैं उनकी वजह से मुसाब व माजूर क़रार पाऊँ। आमीन ऐ तमाम जहान के परवरदिगार।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करने के लिये बाहमी हमदर्दी व तआवुन की तालीम देता है और नोए बशर का एक फर्द होने की हैसियत से दूसरे पर उसका हक़ आयद करता है ख़्वाह वह उसका हम मसलक हो या न हो उसका हम क़ौम हो या न हो उसका हम वतन हो या न हो, क्योंकि सब का सिलसिलए नस्ल वह मश्रिक़ का बाशिन्दा हो या मग़रिब का एक ही मां बाप तक मिन्तही होता है और सब एक ही ख़ालिक़ के बनाये संवारे हुए हैं। यह वह तालीम है जो तहज़ीब व तमद्दुन एज्तेमाई के लिये संगे बुनियाद की हैसियत रखती है। इसलिये कि अगर तआवुन व इत्तिहाद बाहमी का जज़्बा और दूसरों के दुख दर्द का एहसास न हो तो तमद्दुन व इज्तेमाअ की सूरत तशकील पज़ीर हो ही नहीं सकती, क्योंकि इन्सान हमदर्दी व साज़गारी ही की बदौलत एक दूसरे के क़रीब होता और मदनियत की जरूरत का एहसास करते हुए तमद्दुन व इज्तेमाअ की बुनियादें उस्तवार करता है। बेशक इस्लामी बरादरी में शमूलियत से एक मुसलमान का हक़ दूसरे मुसलमान पर क़ायम हो जाता है। मगर इसके यह मआनी नहीं हैं कि जो हम मसलक व हम अक़ीदा न हों उनका कोई हक़ ही नहीं है। अगर उन्हें वह हुक़ूक़ हासिल नहीं हैं जो इस्लामी बिरादरी से वाबस्ता होने की सूरत में आयद होते हैं तो मुश्तरका इन्सानी हुक़ूक़ से तो महरूम नहीं किये जा सकते। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम ने मालिक अशतर नख़ई के लिये जो अहदनामा तहरीर किया उसमें इन्सानी हुक़ूक़ की तरफ़ मुतवज्जह करते हुए फ़रमाते हैं:– "रेआया में दो क़िस्म के लोग हैं, एक तो तुम्हारे दीनी भाई और दूसरे तुम्हारे जैसी मख़लूक़े ख़ुदा।" मक़सद यह है कि जहां मज़हब व मसलक के इत्तिहाद की बिना पर हुक़ूक़ का लिहाज़ रखो, वहां इन्सानी हुक़ूक़ को नज़र अन्दाज़ न करना, क्योंकि सब एक ही ख़ालिक़ के बनाये हुए हैं और इन दोनों को हुक़ूक़ के सिलसिले में तुम्हें जवाबदेह होना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है। अलबत्ता दोनों के हुकूक़ यकसां नहीं हैं इस लिये कि जहां नुक़ात मुश्तरका कम होंगे वहां हुकूक़ भी कम होंगे, और जहां नुक़ाते मुश्तरका ज़्यादा होंगे वहां हुकूक़ भी ज़्यादा होंगे। चुनान्चे रिश्तए इन्सानियत के साथ जहां मज़हबी रिश्ता भी होगा वहां हुकूक़ बढ़ जायेंगे, क्योंकि एक मक़ाम पर इश्तेराक सिर्फ़ इन्सानियत में है और दूसरे मक़ाम पर इन्सानियत और मज़हब दोनों में है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन^अ० का इरशाद है:–

(तरजुमा) "उसने मुसलमान की इज़्ज़त व हुरमत को तमाम हुरमतों पर फ़ज़ीलत दी है और मुसलमानों के हुकूक़ को उनके मौक़े व महल पर अख़लास व तौहीद के दामन से बांध दिया है। चुनान्चे मुसलमान वही है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान बचे रहें। मगर यह कि किसी हक़ की बिना पर उन पर हाथ डाला जाये और उनको ईज़ा पहुंचाना जाएज़ नहीं मगर जहां वाजिब हो जाये।"

यह एक आम मुसलमान का हक़ है कि उसे हाथ और ज़बान से गज़न्द न पहुंचाया जाये, और मोमिन के हुकूक़ तो उससे कहीं ज़्यादा हैं। चुनान्चे अबूइस्माईल रिवायत करते हैं कि :–

(तरजुमा) "मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि हमारे हां शियों की तादाद बहुत है। फ़रमाया कि उनमें का दौलतमन्द फ़क़ीर और नादार से हुस्ने सुलूक और अच्छा बुरे से दरगुज़र करता है और क्या वह आपस में हमदर्दी व मवासात का बरताव करते हैं? मैंने कहा "ऐसा तो नहीं करते"। फ़रमाया कि फिर वह शिया कहां के,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शिया तो वह है जो यह सब कुछ करे।''

फिर कुछ हुकूक़ कौम व क़बीले और ख़ानदानी इश्तेराक के लिहाज़ से आयद होते हैं यह हुकूक़ भी अहम और क़ाबिले लिहाज़ हैं। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) ''अपने क़ौम व क़बीले का इकराम व एहतेराम करो क्योंकि वह तुम्हारे ऐसे पर वबाल हैं जिनसे तुम परवाज़ करते हो और ऐसी बुनियादें हैं जिनका तुम सहारा लेते हो और तुम्हारे वह दस्तबाज़ू हैं जिनसे हमला करते हो।''

फिर क़ौम व क़बीले में जो क़रीबी अज़ीज़ हों उनके हुकूक़ अल अक़रब फ़ल अक़रब के लिहाज़ से आम क़ौम व क़बीले के हुकूक़ से ज़्यादा हैं। जैसे मां, बाप, औलाद, भाई, बहन, वग़ैरा। यह तमाम हुकूक़ वह हैं जो इन्सानियत, इत्तिहाद मज़हब और ख़्वेशी व क़राबत की वजहसे आयद होते हैं। अब उनके साथ अगर शहर व वतनी इत्तिहाद भी हो तो हम वतनी के हुकूक़ का भी इज़ाफ़ा हो जाता है यह हुकूक़ भी अपने मक़ाम पर अहमियत रखते हैं। चुनान्चे ज़कात व सदक़ात की तक़सीम में ख़ित्तए अर्ज़ी के लिहाज़ से हम वतनों को दूसरों पर तरजीह दी गयी है। फिर अहले शहर में से जिनके साथ मुआशरी तअल्लुक़ात ज़्यादा वाबस्ता होते हैं वह इर्द–गिर्द बसने वाले हमसाये होते हैं। इस लिये उनका हक़ दूसरे अहले शहर से ज़्यादा होगा। इस हक़्क़े हमसाएगी के साथ मज़हब या क़राबत या दानों का इन्ज़माम भी हो तो इस इन्ज़माम के लिहाज़ से उसकी अहमियत भी ज़्यादा हो जायेगी। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

(तरजुमा) ''हमसाये की तीन क़िस्में हैं। एक वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिसके लिये तीन हक़ हैं "हक़े हमसाएगी, हक़े इस्लाम और हक़े क़राबत" और एक वह जिसके लिये दो हक़ हैं। हक़े इस्लाम, और हक़े हमसाएगी, और एक वह जिसके लिये सिर्फ़ एक हक़ है, और वह काफ़िर है जो हमसाये में हो।"

उस हमसाएगी के हुदूद क्या हैं? तो इस सिलसिले में उर्फ़ की तरफ़ ृजूअ किया जायेगा और जो उर्फ़ में हमसाया कहला सकता हो उसे ही मसाया क़रार दिया जायेगा, और रिवायात से मालूम होता है कि मसाएगी के हुदूद हर चहार तरफ़ से चालीस चालीस घर हैं। चुनान्चे माम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम का इरशाद है:

(तरजुमा) "हमसाएगी की हद सामने, पीछे और दायें बायें हर चहार जानिब से चालीस घरों तक है।"

इस दुआ में पड़ोसियों के जिन हुक़ूक़ का तज़किरा फ़रमाया है वह यह :—

उनसे तवाज़े व खुश अख़लाक़ी से पेश आये, फ़क्र व एहतियाज में हो नके तो माली इमदाद करे और उनकी हालत का अन्दाज़ा करके खुद से ाली इमदाद की पेशकश करे और उनके तलब करने पर मौक़ूफ़ न रखे। ़र्ज़ा मांगें या आम घरेलू इस्तेमाल की चीज़ें तलब करें तो इन्कार न करे। पनी निगाहों को ताक झांक से रोके। उनके उयूब की टोह न लगाये और गर इत्तेफ़ाक़िया उनके किसी ऐब पर मुतलअ हो जाये तो उसे ज़ाहिर न रे और उनके बारे में ख़्वाह मख़्वाह बदगुमानी से काम न ले। बीमारी में यादत करे। मज़लूम व सितम रसीदा की नुसरत करे। उनके बारे में ज़ाहिर व बातिन यक्सां रखे अगर हज व ज़ियारत या सफ़र से पलटें तो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुलाक़ात के लिये जाये। उन्हें अपनी क़रीबी अज़ीज़ों और रिश्तेदारों के तरह समझें। उनकी ख़ुशहाली व फ़ारिग़ुलबाली को दल से चाहे। मशविरे के मौक़े पर सही मशविरे दे। उन्हें तालीम व हिदायत के मौक़े पर तालीम व हिदायत करे और अगर बुरा सुलूक करें तो भी उनसे अच्छा बरताव करे ग़र्ज़ उन्हें किसी तरह से गज़न्द न पहुंचायें। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

(तरजुमा) ''जो शख़्स अल्लाह तआला और रोज़े क़यामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने हमसाये को कोई तकलीफ़ न पहुंचाये।''

इस दुआ के इब्तिदाई हिस्से में दुआ का रूख़ दोस्तों और हमसाईयों की तरफ़ है कि उन्हें यह तौफ़ीक़ हासिल हो कि वह उन चीज़ों पर अमल पैरा हो कर दुनिया व आख़रत में सआदत हासिल करें और दुआ के आख़िरी हिस्से में ख़ुद अपने लिये दुआ फ़रमाई हे कि मुझे भी उनके साथ हुस्ने सुलूक और शफ़क़त व अहसान की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ताकि मेरी तालीम और मेरा अमल उनके लिये एक अख़लाक़ आमोज़ उसवा क़रार पाये। क्योंकि इन्सान नासेह की हैसियत से उतना मुतास्सिर नहीं होता जितना उसके अमल से मुतास्सिर होता है, और फिर यह तमाम औसाफ़ दुआइया पैराया में बयान फ़रमाए हैं जिससे उस अम्र की तरफ़ इशारा है कि यह ख़साएल व आदात जब ही पैदा हो सकते हैं जब ख़ुदा वन्दे आलम की तरफ़ से तौफ़ीक़ भी शामिलेहाल हो। बहरहाल यह वह ख़साएल व आदात हैं कि अगर इन्सान इन पर आमिल हो तो तरीक़कार को मोहब्बत व हमदर्दी के सांचे में ढाल लेगा, और बईद नहीं कि उसके तर्ज़े अमल से दूसरों की ज़िन्दगी में भी इन्क़ेलाब आ जाये और एक पाकीज़ा मुआशरा तशकील पा जाये।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सरहदों की निगेहबानी करने वालों के लिये हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजुमा) "बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपने ग़लबे व इक़्तिदार से मुसलमानों की सरहदों को महफ़ूज़ रख, और अपनी कुव्वत व तवानाई से उनकी हिफ़ाज़त करने वालों को तक़वियत दे और अपने ख़ज़ानए बेपायां से इन्हें माला माल कर दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उनकी तादाद बढ़ा दे। उनके हथियारों को तेज़ कर दे। उनकी हुदूद व एतराफ़ और मरकज़ी मक़ामात की हिफ़ाज़त व निगेहदाश्त कर। उनकी जमीअत मेंउन्स व यकजेहती पैदा कर, उनके उमूर की दुरुस्ती फ़रमा। रसद रसानी के ज़राए मुसलसल क़ायम रख। उनके मुश्किलात के हल करने का ख़ुद ज़िम्मा ले। उनके बाज़ू क़वी कर। सब्र के ज़रिये उनकी एआनत फ़रमा। और दुश्मन से छुपी तदबीरों में इन्हें बारीक निगाही अता कर। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जिस शै को वह नहीं पहचानते वह उन्हें पहचनवा दे और जिस बात का इल्म नहीं रखते वह उन्हें बता दे और जिस चीज़ की बसीरत उन्हें नहीं है वह उन्हें सुझा दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और दुश्मन से मद्दे मुक़ाबिल होते वक़्त ग़द्दार व फ़रेबकार दुनिया की याद उनके ज़ेहनों से मिटा दे, और गुमराह करने वाले माल के अन्देशे उनके दिलों से निकाल दे और जन्नत को उनकी निगाहों के सामने कर दे, और जो दायमी क़यामगाहें इज़्ज़त व शरफ़ की मंज़िलें और (पानी, दूध, शराब और साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ शहद की) बहती हुई नहरें और तरह तरह के फूलों (के बार) से झुके हुए अशजार वहां फ़राहम किये है।, उन्हें दिखा दे ताकि उनमें से कोई पीठ फिराने का इरादा और अपने हरीफ़ के सामने से भागने का ख़याल न करे। ऐ अल्लाह! इस ज़रिये से उनके दुश्मनों के हरबे कुन्द और उन्हें बेदस्त व पा कर दे और उनमें और उनके हथियारों में तफ़रिक़ा डाल दे, (यानी हथियार छोड़ कर भाग जायें) और उनके रगे दिल की तनाबें तोड़ दे और उनमें और उनके आज़ोक़ा में दूरी पैदा कर दे और उनकी राहों में उन्हें भटकने के लिये छोड़ दे और उनके मक़सद से उन्हें बेराह कर दे। उनकी कमक का सिलसिला क़तअ कर दे उनकी गिनती कम कर दे। उनके दिलों में दहशत भर दे। उनकी दराज़ दस्तियों को कोताह कर दे उनकी ज़बानों में गिरह लगा दे कि बोल न सकें और उन्हें सज़ा देकर उनके साथ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

साथ उन लोगों को भी तितर बितर कर दे जो उनके पसे पुश्त हैं और पसे पुश्त वालों को ऐसी शिकस्त दे कि जो उनके पुश्त पर हैं उन्हें इबरत हासिल हो और उनकी हज़ीमत व रूसवाई से उनके पीछे वालों के हौसले तोड़ दे। ऐ अल्लाह! उनकी औरतों के शिकम बांझ, उनके मर्दों के सुल्ब ख़ुश्क और उनके घोड़ों, ऊँटों, गायों, बकरियों की नस्ल क़तअ कर दे और उनके आसमान को बरसने की और ज़मीन को रूवैदगी की इजाज़त न दे। बारे इलाहा! इस ज़रिये से अहले इस्लाम की तदबीरों को मज़बूत, उनके शहरों को महफ़ूज़ और उनकी दौलत व सरवत को ज़्यादा कर दे और उन्हें एबादत व ख़िलवत गुज़ीनी के लिये जंग व जदाल और लड़ाई झगड़े से फ़ारिग़ कर दे। ताकि रूए ज़मीन पर तेरे अलावा किसी की परस्तिश न हो और तेरे सिवा किसी के आगे ख़ाक पर पेशानी न रखी जाये। ऐ अल्लाह! तू मुसलमानों को उनके हर हर इलाक़े में बरसरे पैकार होने वाले मुश्रिकों पर ग़लबा दे और सफ़ दर सफ़ फ़रिश्तों के ज़रिये उनकी इमदाद फ़रमा। ताकि इस ख़ित्तए ज़मीन में उन्हें क़त्ल व असीर करते हुए उसके आख़िरी हुदूद तक पस्पा कर दें या यह कि वह इक़रार करें कि तू वह ख़ुदा है जिसके अलावा कोई मअबूद नहीं और यकता व लाशरीक है। ख़ुदाया! मुख़्तलिफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

एतराफ़ व जवानिब के दुश्मनाने दीन को भी इस क़त्ल व ग़ारत की लपेट में ले ले। वह हिन्दी हों या रोमी, तुर्की हों या ख़ज़री, हबशी हों या नोबी, ज़ंगी हों या सक़लबी व दीलमी और नेज़ उन मुशरिक जमाअतों को जिनके नाम और सिफ़ात हमें मालूम नहीं और तू अपने इल्म से उन पर मुहीत और अपनी कुदरत से उन पर मुत्तलआ है। ऐ अल्लाह! मुश्रिकों को मुश्रिकों से उलझा कर मुसलमानों के हुदूदे ममलिकत पर दस्तदराज़ी से बाज़ रख और उनमें कमी वाक़े करके मुसलमानों में कमी करने से रोक दे और उनमें फूट डलवा कर अहले इस्लाम के मुक़ाबले में सफ़ आराई से बिठा दे। ऐ अल्लाह उनके दिलों को तस्कीन व बेख़ौफ़ी से उनके जिस्मों को कुव्वत व तवानाई से ख़ाली कर दे। उनकी फ़िक्रों को तदबीर व चाराजूई से ग़ाफ़िल और मैदाने कारज़ार के मुक़ाबले में उनके दस्त व बाज़ू को कमज़ोर कर दे और दिलेराने इस्लाम से टक्कर लेने में उन्हें बुज़दिल बना दे और अपने अज़ाबों में से एक अज़ाब के साथ उन पर फ़रिश्तों की सिपाह भेज। जैसा कि तूने बद्र के दिन किया था। उसी तरह तू उनकी जड़ बुनियादे काट दे। उनकी शान व शौकत मिटा दे और उनकी जमीअत को परागन्दा कर दे। ऐ अल्लाह! उनके पानी में वबा और उनके खानों में अमराज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(के जरासीम) की आमेज़िश कर दे। उनके शहरों को ज़मीन में धंसा दे, उन्हें हमेशा पत्थरों का निशाना बना और क़हत साली उन पर मुसल्लत कर दे। उनकी रोज़ी ऐसी सरज़मीन में क़रार दे जो बंजर और उनसे कोसों दूर हो। ज़मीन के महफ़ूज़ क़िले उनके लिये बन्द कर दे। और उन्हें हमेशा की भूख और तकलीफ़देह बीमारियों में मुब्तिला रख। बारे इलाहा! तेरे दीन व मिल्लत वालों में से जो ग़ाज़ी उनसे आमादए जंग हो या तेरे तरीक़े की पैरवी करने वालों में से जो मुजाहिद क़सदे जेहाद करे इस ग़र्ज़ से कि तेरा दीन बलन्द, तेरा गिरोह क़वी और तेरा हिस्सा व नसीब कामिल तर हो तो उसके लिये आसानियां पैदा कर तकमीलेकार के सामान फ़राहम कर। इस कामयाबी का ज़िम्मा ले उसके लिये बेहतरीन हमराही इन्तेख़ाब फ़रमा। क़वी व मज़बूत सवारी का बन्दोबस्त कर। ज़रूरियात पूरा करने के लिये वुसअत व फ़राख़ी दे। दिल जमई व निशाते ख़ातिर से बहरामन्द फ़रमा, उसके इश्तियाक़े (वतन) का वलवला ठण्डा कर दे; तन्हाई के ग़म का उसे एहसास न होने दे। ज़न व फ़रज़न्द की याद उसे भुला दे; क़सदे ख़ैर की तरफ़ रहनुमाई फ़रमा, उसकी आफ़ियत का ज़िम्मा ले, सलामती को उसका साथी क़रार दे, बुज़दिली को उसके पास न फटकने दे। उसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दिल में जुरअत पैदा कर, ज़ोर व कुव्वत उसे अता फ़रमा, अपनी मददगारी से उसे तवानाई बख़्श, राह व रविश (जेहाद) की तालीम दे और हुक्म में सही तरीक़ेकार की हिदायत फ़रमा, रिया व नमूद को उससे दूर रख, हवस, शोहरत का कोई शाएबा उसमें न रहने दे। उसके ज़िक्र व फ़िक्र और सफ़र व क़याम को अपनी राह में और अपने लिये क़रार दे और जब वह तेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों से मद्दे मुक़ाबिल हो तो उसकी नज़रों में उनकी तादाद थोड़ी करके दिखा उसके दिल में उनके मक़ाम व मंज़िलत को पस्त कर दे उसे उन पर ग़लबा दे और उनको उस पर ग़ालिब न होने दे। अगर तूने उस मर्दे मुजाहिद के ख़ात्मे बिलख़ैर और शहादत का फ़ैसला कर दिया है तो यह शहादत उस वक़्त वाक़े हो जब वह तेरे दुश्मनों को क़त्ल करके कैफ़र किरदार तक पहुंचा दे बा–असीरी उन्हें बेहाल कर दे और मुसलमानों के इतराफ़े ममलिकत में अम्न बरक़रार हो जाये और दुश्मन पीठ फेर कर चल दे। बारे इलाहा वह मुसलमान जो किसी मुजाहिद या निगहबाने सरहद के घर का निगरान हो या उसके अहल व अयाल की ख़बरगीरी करे या थोड़ी बहुत माली एआनत करे या आलाते जंग से मदद दे या जेहाद पर उभारे या उसके मक़सद के सिलसिले में दुआए ख़ैर करे या उसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पसे पुश्त उसकी इज़्ज़त व नामूस का ख़याल रखे तो उसे भी इसके अज्र के बराबर पूरा पूरा अज्र और उसके अमल का हाथों हाथ बदला दे जिससे वह अपने पेश किये हुए अमल का नफ़ा और अपने बजा लाये हुए काम की मसर्रत दुनिया में फ़ौरी तौर से हासिल कर ले। यहां तक कि ज़िन्दगी की साअतें उसे तेरे फ़ज़्ल व अहसान की उस नेअमत तक जो तूने उसके लिये जारी की है और उस इज़्ज़त व करामत तक जो तूने उसके लिये मोहय्या की है पहुंचा दे। परवर दिगार! जिस मुसलमान को इस्लाम की फ़िक्र परेशान और मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुश्रिकों की जत्था बन्दी ग़मगीन करे इस हद तक कि वह जंग की नीयत और जेहाद का इरादा करे मगर कमज़ोरी उसे बिठा दे या बेसरो सामानी उसे क़दम न उठाने दे या कोई हादसा इस मक़सद से ताख़ीर में डाल दे या कोई मानेअ उसके इरादे में हाएल हो जाये तो उसका नाम एबादतगुज़ारों में लिख और उसे मुजाहिदों का सवाब अता कर और उसे शहीदों और नेकूकारों के ज़ुमरे में शुमार फ़रमा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] पर जो तेरे अब्दे ख़ास और रसूल[स०] हैं और उनकी औलाद पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जो शरफ़ व रुतबे में तमाम रहमतों से बुलन्दतर और तमाम दुरूदों से बालातर हो। ऐसी रहमत जिसकी मुद्दत इख़्तिताम पज़ीर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

न हो, जिसकी गिनती का सिलसिला कहीं क़तअ न हो। ऐसी कामिल व अकमल रहमत जो तेरे दोस्तों में से किसी एक पर नाज़िल हुई हो इस लिये कि तू अता व बख़्शिश करने वाला, हर हाल में क़ाबिले सताइश, पहली दफ़ा पैदा करने वाला, और दोबारा ज़िन्दा करने वाला और जो चाहे वह करने वाला है।

यह दुआ किसी ख़ास गरोह या किसी ख़ास जमाअत से मख़सूस नहीं है, बल्कि जो भी इस्लामी सरहदों की हिफ़ाज़त का फ़रीज़ा अन्जाम देने के लिये उठ खड़े होते हैं अब सबको शामिल है। ख़्वाह वह उन्हीं सरहदों के रहने वाले हों या वहां इस मक़सद से क़याम करें ताकि मुश्रेकीन व कुफ़्फ़ार अगर मुसलमानों के जान व माल व नामूस पर हमलाआवर हों तो बरवक़्त उनकी रोक थाम कर सकें और उनकी चीरा दस्तियों से इस्लामी मुमलिकत को बचा सकें, और इस्लाम में जेहाद का मफ़हूम यही है कि जो लोग सुलह व आशती के उसूलों को तोड़ कर इस्लाम की बर्बादी और मुसलमानों की बेख़ कनी पर आमादा हों उनकी सरकोबी की जाये। यह मक़सद नहीं है कि एख़्तलाफ़े मज़हब की बिना पर अम्न पसन्दोंसुलह जू अफ़राद के ख़िलाफ़ एलाने जंग कर दिया जाये, और इस्लाम की आड़ ले कर ताख़्त व ताराज को जाएज़ समझ लिया जाये। इस्लाम के मुतअल्लिक़ ऐसा तसव्वुर करना भी उसकी तक़दीस पर हर्फ़ रखता है जबकि वह नागुज़ीर सूरते दिफ़ाअ और हिफ़ाज़त खुद अख़्तियारी के अलावा जंग की इजाज़त नहीं देता। चुनान्चे इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम का इरशाद है :—

(तरजुमा) "अगर इस्लाम और अहले इस्लाम के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुतअल्लिक़ ख़तरा हो तो क़ताल करे यह क़ताल दरहक़ीक़त हिफ़ाज़त ख़ुदअख़्तियारी के लिये होगा न किसी फ़रमांरवा के लिये। रावी कहता है कि मैंने अर्ज़ किया कि अगर दुश्मन वहां तक आगे बढ़ जाये जहां यह हिफ़ाज़त के लिये मुक़ीम है तो क्या करे? फ़रमाया कि इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये जंग करे न हुक्मरानों की तरफ़ से यह इस लिये कि अगर इस्लाम मिटेगा तो दीने मोहम्मदी[स०] के हक़ीक़ी नुक़ूश भी मिट जायेंगें"

इसी ज़ज्बए बक़ाए इस्लाम के पेशे नज़र हज़रत ने इस्लामी सरहदों की निगेहदाश्त करने वालों के हक़ में दुआ फ़रमाई है ताकि हक़ीक़ी इस्लाम की हिफ़ाज़त उमूमी इस्लाम की हिफ़ाज़त के पर्दे में होती रहे और यही इस दुआ मक़सूदे असली है। उन मुहाफ़िज़ों और निगहबानों के हक़ में सिदक़ नीय्यत, ख़ुलूसे अमल और सबाते क़दम की दुआ के साथ उन कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन के लिये बद्दुआ भी करते हैं जो इस्लामी इलाक़ों पर हमलाआवर हो कर मुसलमानों को क़त्ल व ग़ारत करने की कोशिश करते हैं। इसमें एक जुमला यह है कि "उनके पानी में वबा की और उनके खानों में अमराज़ की आमेज़िश कर दे।" जिस वक़्त तक माईक्रोब दरियाफ़्त न हुए थे इस जुमले के माने पूरे तौर से न समझे जा सकते थे और न समझाये जा सकते थे। मगर जरासीम के इल्म व मुशाहिदे में आने के बाद जहां इस जुमले के माने मुनकशफ़ हुए हैं वहां इसकी अहमियत और क़द्र व क़ीमत का भी अन्दाज़ा हुआ है। चुनान्चे अब नज़रिये में कोई शुबहा नहीं है कि ख़राब और कच्ची ख़ूराक और पानी में ऐसे जरासीम की आलूदगी पाई जाती है जो मोहलिक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व वबाई अमराज़ की तौलीद करते हैं। इन जरासीम की अहमियत को सबसे पहले ल्यून हाक ने समझा और उसके बाद सन् 1881 ई० के फ़्रांसीसी डाक्टर लोई पासचर ने इसे साबित कर दिया और सन् 1883 ई० में जर्मन डाक्टर काख़ ने हैज़े के जरासीम दरियाफ़्त किये और मुख़्तलिफ़ अमराज़ के मुख़्तलिफ़ जरासीम दरयाफ़्त होते रहे। चुनान्चे हैज़ा, तपेदिक़, नमूनिया, तप मोहर्रिका, मलेरिया वग़ैरा के जरासीम ही होते हैं जो खाने और पानी में और दूसरे ज़राये से एक से दूसरे की तरफ़ मुन्तक़िल होते हैं और ख़ून के सफ़ेद ज़र्रो को मग़लूब करके अपना असर फैलाना शुरू कर देते हैं। यह इतने छोटे होते हैं कि एक मुरब्बा इन्च में चालीस करोड़ तक समा सकते हैं और आंख से इन्हें देखा नहीं जा सकता बल्कि आला दर्जे की इलेक्ट्रांनिक ख़ुर्दबीन ही से देखे जा सकते हैं। क्या यह एक हैरतअंगेज़ चीज़ नहीं कि जब जरासीम का तसव्वुर भी पैदा न हुआ था और न ख़ुर्दबीन ही ईजाद हुई थी। इस लिये कि ख़ुर्दबीन तो सन् 1608 ई० में ईजाद हुई। उस वक़्त यह आवाज़ बुलन्द होती है कि वह पानी जो हयात का सरचश्मा है वबा का पेशख़ेमा और वह ग़िज़ा जिससे इन्सानी ज़िन्दगी वाबस्ता है अमराज़ की तौलीद का सबब बन जाया करती है। इसके अलावा पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम से भी ऐसे कलमात मनकूल हैं जिनसे यह ज़ाहिर होता है कि वह इन्तेहाई छोटी मख़लूक़ से नाआशना न थे। चुनान्चे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :– जुज़ामी से इस तरह दूर रहो जिस तरह शेर से दूर रहा जाता है।" असरी तहक़ीक़ ने बताया है कि जुज़ामी के अन्दर जो माइक्रोब पाये जाते हैं उनकी शक्ल व सूरत हू बहू शेर की सी होती है जो आस पास बैठने वालों को मुतास्सिर करते हैं और अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इरशाद है कि : "तुम' में से कोई शख़्स पानी में पेशाब न करे इस 'लिये कि पानी के अन्दर भी एक मख़लूक़ आबाद है।"

अल्लाह तआला से तलब व फ़रयाद के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

"ऐ अल्लाह! मैं पूरे ख़ुलूस के साथ दूसरों से मुंह मोड़ कर तुझ से लौ लगाये हूं और हमातन तेरी तरफ़ मुतवज्जह हूं और उस शख़्स से जो ख़ुद तेरी अता व बख़्शिश का मोहताज है मुंह फेर लिया है और उस शख़्स से जो तेरी फ़ज़्ल व अहसान से बेनयाज़ नहीं है, सवाल का रूख़ मोड़ लिया है, और इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि मोहताज का मोहताज से मांगना सरासर समझ बूझ की सुबकी और अक़्ल की गुमराही है। क्योंकि ऐ मेरे अल्लाह! मैंने बहुत से ऐसे लोगों को देखा है जो तुझे छोड़ कर दूसरों के ज़रिये इज़्ज़त के तलबगार हुए तो वह ज़लील व रूसवा हुए। और दूसरों से नेअमत व दौलत के ख़्वाहिशमन्द हुए तो फ़क़ीर व नादार ही रहे। और बुलन्दी का क़सद किया तो पस्ती पर जा गिरे। लेहाज़ा उन जैसों को देखने से एक दूर अन्देशी की दूर अन्देशी बिल्कुल बरमहल है कि इबरत के नतीजे में उसे तौफ़ीक़ हासिल हुई और उसके (सही) इन्तेख़ाब ने उसे सीधा रास्ता दिखाया। जब हक़ीक़त यही है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तो फिर ऐ मेरे मालिक! तू ही मेरे सवाल का मरजअ है न वह जिससे सवाल किया जाता है, और तू ही मेरा हाजत रवा है न वह जिनसे हाजत तलब की जाती है और उन तमाम लोगों से पहले जिन्हें पुकारा जाता है। तू मेरी दुआ के लिये मख़सूस है और मेरी उम्मीद में तेरा कोई शरीक नहीं है और मेरी दुआ में तेरा कोई हम पाया नहीं है, और मेरी आवाज़ तेरे साथ किसी और को शरीक नहीं करती। ऐ अल्लाह! अदद की यकताई, क़ुदरते कामला की कारफ़रमाई और कमाले क़ुव्वत व तवानाई और मक़ामे रफ़अत व बुलन्दी तेरे लिये है और तेरे अलावा जो है वह अपनी ज़िन्दगी में तेरे रहम व करम का मोहताज, अपने उमूर में दरमान्दा और अपने मक़ाम पर बेबस व लाचार है। जिसके हालात गोना गूं हैं और एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ पलटता रहता है। तू मानिन्द व हमसर से बलन्दतर और मिस्ल व नज़ीर से बालातर है। तू पाक है तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं है।

यह दुआ ख़ुलूस, एतमाद, तवक्कल अलल्लाह और उसी को हाजत रवा व मरकज़े सवाल क़रार देने के सिलसिले में है। ख़ुलूस, तवक्कल और एतमाद का तक़ाज़ा यह है कि दूसरे आस्तानों से मुंह मोड़ कर सिर्फ़ उसी से लौ लगाई जाये और उसी के सामने दामने सवाल फैलाया जाये और किसी हालत में भी दूसरे से सवाल न किया जाये ताकि इज़्ज़तो वक़ार

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

महफ़ूज़ और शराफ़ते नफ़्स बरक़रार रहे। इस लिये कि जब इन्सान अपने ऐसों से एहतियाज वाबस्ता नहीं करता तो वह अपने नफ़्स में संगीनी व वक़ार और अपने को एक बाइज़्ज़त व पुरसुकून फ़िज़ा में महसूस करता है जहां न दिल व दिमाग़ पर दबाव, न क़ल्ब व ज़मीर पर बोझ, न एहसासात मजरूह, न ख़यालात परागन्दा, न हाथों में एहसानमन्दी की बोझल हथकड़ियां और न दूसरों की तफ़व्वुक़ पसन्दाना ज़हनियत के मुक़ाबले में एहसासे कमतरी होता है, और फिर यही क्या ज़रूरी है कि मांगने से कुछ मिल भी जाये जब कि अक्सर जगहों से नाकामी, दिलशिकस्तगी और मायूसी के सिवा कुछ हासिल नहीं होता। अगर अक़्ल व बसीरत से काम लेया जाये तो नतीजे पर ब–आसानी पहुंचा जा सकता है कि जो खुद दूसरों की मददगारी का मोहताज हो वह किसी और की एहतियाज का मदावा क्या कर सकता है, और अगर कर सकता होता तो पहले अपने दामन से एहतियाज के धब्बे दूर करता। फिर दूसरों की एहतियाज रफ़ा करता, और जब मांगना ही है तो फिर उसी से क्यों न मांगा जाये जिससे यह मांगता है और उसी के सामने हाथ क्यों न फैलाया जाये जो उससे ज़्यादा करीम, ग़नी और हाजत रवा है और जब कि वह भी उस जैसा मोहताज है तो फिर मोहताज से हाजत बरआरी की क्या उम्मीद और ज़मीने शोर से रवैदगी की क्या तवक़्क़ो हो सकती है।

(तरजुमा) "अल्लाह तआला ने उससे ज़्यादा कमअक़्ल दूसरा पैदा ही नहीं किया जो अपने ऐसे मांगने वाले से गना व सरवत की तवक़्क़ो रखता है।"

बहरहाल जो अल्लाह तआला के अलावा दूसरों से बेनयाज़ी का ख़्वाहां, जाह व हशम का तालिब होता है वह हमेशा ज़िल्लत व ख़्वारी में मुब्तला

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इत्मिनान व यकसूई से महरूम और हक़ीक़ी सरवत व ग़ना से तिही दामन रहता है। चुनान्चे हदीसे क़ुदसी में वारिद हुआ है :–

(तरजुमा) ''मैंने इज़्ज़त को अपनी ख़िदमत से वाबस्ता किया है और लोग उसे शाही दरबारदारी में ढूंढ़ते हैं जो उन्हें हासिल नहीं होती और मैंने दौलतमन्दी को क़नाअत में क़रार दिया है और लोग उसे माल की फ़राहमी में तलाश करते हैं जो उन्हें नसीब नहीं होती।''

ख़ुदा वन्दे आलम हर शख़्स को उसके ज़र्फ़ व वुसअत के लिहाज़ से और अपनी मसलेहत व मशीय्यत के एतबार से देता है और वही हर बख़्शिश व अता का सरचश्मा और हर रिफ़अत व सरबुलन्दी का मम्बाअ़ है, और दूसरे को इस सिफ़त में उसका शरीक क़रार देना उसके फ़ज़ल व अहसान और रुबूबियत को नाक़िस व नातमाम समझना है। इसके नतीजे में ख़ुदा वन्दे आलम ऐसे लोगों को उन्हीं के हवाले कर देता है जिन्हें वह अपना हाजतरवा व क़िब्ला मक़सूद समझते हैं, और यह अल्लाह तआला की बख़्शिश व अता से महरूमी ख़ुद उन्हीं के पैदाकर्दा असबाब का नतीजा होती है। वरना उसकी नेअमतें और बख़्शाइशें किसी फ़र्द या गिरोह के लिये मख़सूस नहीं हैं, बल्कि हर एक को हिस्सा रसदी उसके ख़्वाने नेअमत से मिलता है। अब अगर कोई ख़ुद ही फ़यूज़े इलाही के आगे रोक बन कर खड़ा हो जाये तो उसे महरूमी व नाकामी से दो चार होना ही पड़ेगा। इस हरमां नसीबी के असबाब में सबसे बड़ा सबब यही है कि इन्सान दूसरों को मरकज़े उम्मीद क़रार दे कर अल्लाह से उम्मीद व तलब का सिलसिला क़ताअ कर ले। चुनान्चे हदीसे क़ुदसी में वारिद हुआ है कि :–

(तरजमा) ''मुझे अपने जलाल व इज़्ज़त और अर्श

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर बुलन्दी व रिफ़अत की क़सम जो मेरे अलावा दूसरों से उम्मीद रखेगा मैं उसकी उम्मीद को यास से बदल दूंगा और लोगों में उसे ज़िल्लत व रुस्वाई का जामा पहनाऊँगा।

जब रिज़्क़ की तंगी होती तो यह दुआ पढ़ते

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह तूने रिज़्क़ के बारे में बेयक़ीनी से और ज़िन्दगी के बारे में तूले अमल से हमारी आज़माइश की है। यहां तक कि हम उनसे रिज़्क़ तलब करने लगे जो तुझसे रिज़्क़ पाने वाले हैं और उम्र रसीदा लोगों की उम्रें देख कर हम भी दराज़िए उम्र की आरज़ूयें करने लगे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें ऐसा पुख़्ता यक़ीन अता कर जिसके ज़रिये तू हमें तलब व जुस्तुजू की ज़हमत से बचा ले और ख़ालिस इत्मिनानी कैफ़ियत हमारे दिलों में पैदा कर दे जो हमें रंज व सख़्ती से छुड़ा ले और वही के ज़रिये जो वाज़ेह और साफ़ वादा तूने फ़रमाया है और अपनी किताब में इसके साथ साथ क़सम भी खाई है। उसे इस रोज़ी के एहतेमाम से जिसका तू ज़ामिन है सुबुकदोशी का सबब क़रार दे और जिस रोज़ी का ज़िम्मा तूने लिया है उसकी मशग़ूलियतों से अलाहिदगी का वसीला बना दे। चुनान्चे तूने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़रमाया है और तेरा क़ौल हक़ और बहुत सच्चा है, और तूने क़सम खाई है और तेरी क़सम सच्ची और पूरी होने वाली है कि तुम्हारी रोज़ी और वह कि जिसका तुमसे वादा किया जाता है आसमान में है। फिर तेरा इरशाद है :– ज़मीन व आसमान के मालिक की क़सम! यह अम्र यक़ीनी व क़तई है जैसे यह कि तुम बोल रहे हो।"

वह राज़ि व मुरब्बी जो शिकमे मादर और ज़मानए तफ़ूलियत में जब कि न हाथ पांव में सकत होती है न इक्तेसाबे रिज़्क़ पर क़ुदरत, न कारोकसब का शऊर होता है न ज़राए मईशत पर इत्तिला मोहब्बत व शफ़क़्क़त के साये में बक़ाये ज़िन्दगी के तमाम सरो सामान मोहय्या करता है तो वह ज़िन्दगी के दूसरे अदवार में क्योंकर ग़फ़लत करेगा। जबकि वही सबका ख़ालिक़ और सबका रोज़ी रसान है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "ऐ लोगों! अल्लाह तआला ने जो नेअमतें तुम्हें बख़्शी हैं उन्हें याद करो, क्या अल्लाह तआला के अलावा कोई और भी ख़ालिक़ है जिसने तुम्हारे लिये आसमान व ज़मीन से रिज़्क़ मोहय्या किया है।"

लेकिन अल्लाह तआला की हिक्मत व मसलेहत कभी उसकी मुक़्तज़ी होती है कि वह अपने ख़ास बन्दों को तंगीए मईशत में मुब्तिला करे। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के मुतअल्लिक़ वारिद हुआ है कि : "गुरसनगी की वजह से अपने पेट पर पत्थर बांध लेते थे।" और फ़रमाया करते थे कि मुझे यही पसन्द है कि एक दिन सेर हूं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ऑौर एक दिन भूखा रहूं। इसी तरह हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम तंगीए मईशत में मुब्तिला हुए हालांकि वह अपने ज़माने में बड़े मालदार शुमार होते थे। ज़मीन थी, बाग़ात थे। बार बरदारी के तीन हज़ार ऊँट, पांच सौ गधे और खेती बाड़ी के लिये एक हज़ार बैल। इसके अलावा सात हज़ार भेड़ें और ख़िदमत व निगेहदाश्त के लिये चार सौ नौकर थे कि अचानक हालात बदल जाते हैं दौलत जाती रहती है, मवेशी लूट लिये जाते हैं औलाद भी एक एक करके ख़त्म हो जाती है। बीमारी की वजह से नक़्ल व हरकत से मजबूर हो जाते हैं और ज़बान से यह फ़रियाद निकलती है कि "पालने वाले! मैं दुखिया हूं और तू सब रहीमों से ज़्यादा रहीम है" यूंहि हज़रत दाऊद, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा और दूसरे अम्बिया (अला नबीय्यना अलैहिमुस्सलात वस्सलाम) पर मआशी लिहाज़ से आज़माइशी दौर आये। मगर इस तंगी व उसरत में अगर मांगा तो अल्लाह तआला से और दूसरे के आगे हाथ न फैलाया। इस इब्तिला व तंगिए मईशत से मक़सद यह होता है कि अल्लाह तआला उनके सब्र व शकीब पर उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा अज्र व सवाब दे और वह अल्लाह तआला से लौ लगा कर उससे तज़र्रा व ज़ारी करते रहें। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

> (तरजुमा) "ख़ुदा अपने बन्दे को दोस्त रखने के बावजूद मुब्तिला करता है ताकि उसके तज़र्रा व ज़ारी की आवाज़ें सुने।"

आम इन्सानों की निगाहें ऐसे मौक़े पर असबाब व वसाएल पर होती हैं लेकिन ख़ासाने ख़ुदा अपने इल्म व यक़ीन की रौशनी में यह समझते हैं कि अगरचे उसने रिज़्क़ को असबाब से वाबस्ता किया है, लेकिन वह जब चाहे इन असबाब को बेनतीजा भी बना दे सकता है। इस लिये महज़ असबाब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। चुनान्चे एक शख़्स तिजारत को वसीला क़रार देता है मगर नफ़े के बजाये नुक़्सान होता है और यही वसीला अस्ल सरमाया को भी ले डूबता है। और दूसरा ज़राअत के ज़रिये रोज़ी हासिल करना चाहता है तो खड़ी खेती को बर्क़ व ज़ाला बारी तबाह कर देती है और कभी खलियान को आग लग जाती है और किये कराये पर पानी फिर जाता है। अगर यह असबाब व वसाएल ही काफ़ी होते तो घर में ताला लगाने और दरबान छोड़ने के बाद चोरी न होती। और दुश्मन के मुक़ाबले में हथियार मोहय्या करने के बाद उस पर कामयाबी यक़ीनी होती। हालांकि अक्सर ऐसा होता रहता है कि ताला टूट जाता है और घर का असासा लुट जाता है और हथियार के होते हुए दुश्मन से शिकस्त हो जाती है। यह इस लिये कि एक कुव्वत उनको बेनतीजा बनाने वाली है। तो जिन असबाब व वसाएल की बाग डोर दूसरे के हाथ में हो उन पर एतमाद क्योंकर किया जा सकता है। यह तो उसी वक़्त नतीजा खेज़ साबित हो सकते हैं जब अल्लाह तआला की मशीअत भी कारफ़रमा हो। लेहाज़ा अस्ल कारसाज़ी उसी की होगी जो इन असबाब के नतीजा खेज़ बनाने की कुदरत रखता है। इससे यह न समझना चाहिये कि जब वही कारसाज़ व रिज़्क़ रसां है तो फिर हरकत व अमल और असबाब मोहय्या करने की ज़रूरत ही क्या है, क्योंकि यह दुनिया आलमे असबाब है और असबाब से कुल्लियतन् अलग नहीं रहा जा सकता, और यह यक़ीन रखना कि यह असबाब भी उसी के पैदाकर्दा हैं और उसी ने क़वाए अमल दिये हैं ऐन तवक्कल है। अगर इन्सान हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाये तो यह क़वाए अमल ऐसी नेअमत की नाशुक्री है जो हमागीर होने की सूरत में नज़्मे आलम की तबाही का बाअस है। इस दुआ का मक़सद यह नहीं है कि असबाब से क़ता नज़र कर ली जाये बल्कि मक़सद यह है कि इन असबाब पर एतमाद के बजाये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ग़ालिके असबाब पर एतमाद रखा जाये, और इन क़वाए अमल को सिर्फ़ ़सूले रिज़्क़ के लिये वक़्फ़ न कर दिया जाये बल्कि उनसे अल्लाह तआला ी एबादत व एताअत का भी काम लिया जाये कि यही ज़िन्दगी का क़सूद असली है।

अदाये क़र्ज़ के सिलसिले में अल्लाह तआला से तलबे एआनत की दुआ

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे ऐसे क़र्ज़ से नजात दे जिससे तू मेरी आबरू पर हर्फ़ न आने दे और मेरा ज़ेहन परेशान और फ़िक्र परागन्दा रहे और उसकी फ़िक्र व तदबीर में हमावक़्त मशग़ूल रहूं। ऐ मेरे परवर दिगार! मैं तुझसे पनाह मांगता हूं, क़र्ज़ के फ़िक्र व अन्देशे से और इसके झमेलों से और इसके बाअस बेख़्वाबी से तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे इससे पनाह दे। परवर दिगार! मैं तुझसे ज़िन्दगी में इसकी ज़िल्लत और मरने के बाद इसके वबाल से पनाह मांगता हूं। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे माल व दौलत की फ़रावानी और पैहम रिज़्क़ व रसानी के ज़रिये इससे छुटकारा दे ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा, और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुझे फ़ुज़ूलख़र्ची और मसारिफ़ की ज़्यादती से रोक दे और अता व मेयाना रवी के साथ नुक़्तए एतदाल पर क़ायम रख और मेरे लिये हलाल तरीक़ों से रोज़ी का सामान कर और मेरे माल का मसरफ़ उमूरे ख़ैर में क़रार दे और उस माल को मुझसे दूर ही रख जो मेरे अन्दर गुरूर व तमकनत पैदा करे या ज़ुल्म की राह पर डाल दे या उसका नतीजा तुग़यान व सरकशी हो। ऐ अल्लाह! दरवेशों की हमनशीनी मेरी नज़रों में पसन्दीदा बना दे और इत्मिनान अफ़ज़ा सब्र के साथ उनकी रिफ़ाक़त अख़्तियार करने में मेरी मदद फ़रमा। दुनियाए फ़ानी के माल में से जो तूने मुझसे रोक लिया है उसे अपने बाक़ी रहने वाले ख़ज़ानों में मेरे लिये ज़ख़ीरा कर दे और इसके साज़ो बर्ग में से जो तूने दिया है और इसके सरो सामान में से जो बहम पहुंचाया है उसे अपने जवारे (रहमत) तक पहुंचने का ज़ादे राह, हुसूले तक़र्रुब का वसीला और जन्नत तक रसाई का ज़रिया क़रार दे इस लिये कि तू फ़ज़्ले अज़ीम का मालिक और सख़ी व करीम है।

अगर एहसासात ज़िन्दा हों तो इन्सान मक़रूज़ होने की सूरत में एक लम्हे भी इत्मिनान व यकसूई से बसर नहीं कर सकता। और इस फ़िक्र व अन्देशे में न रात को आराम से सो सकता है न दिन चैन से गुज़ार सकता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

:। उसे हर वक़्त यह खटका लगा रहता है कि न जाने कब क़र्ज़ख़्वाह आ जाये और मुतालबा शुरू कर दे या कहीं रास्ते में घेर ले और सच झूठ वादों से भी पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाये। ऐसे हालात में यक़ीनन् ज़ेहन परेशान, ख़यालात परागन्दा और तबीअत मुन्तशिर रहेगी। और इस बोझ के नीचे अपने को बेहिस महसूस करेगा, क्योंकि क़र्ज़ का ज़ेहनी बोझ माद्दी बोझ से कहीं ज़्यादा ख़स्ता व हल्कान कर देता है। चुनान्चे बज़रे जमहर का क़ौल है कि मैंने जंग के वज़नी हथियारों को उठाया और पत्थरों को लाद कर एक जगह से दूसरी जगह ले गया। मगर मैंने क़र्ज़ से ज़्यादा किसी चीज़ को बोझल नहीं पाया, और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे आलेहि वसल्लम का इरशाद है कि :–

(तरजुमा) "दर्दे चश्म से बढ़ कर कोई दर्द और अन्दोहे क़र्ज़ से ज़्यादा कोई अन्दोह नहीं है।"

और हज़रत अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "क़र्ज़ से बचे रहो। इस लिये कि दिन हो तो यह ज़िल्लत व रुस्वाई का सबब, और रात हो तो ग़म व अन्दोह का सामान और दुनिया व आख़रत में वाजिबुल अदा है।"

इस ज़िल्लत व रुस्वाई और फ़िक्र व परेशानी से वही शख़्स बच सकता जिसे इज़्ज़ते नफ़्स का एहसास हो कि वह फ़क़्र व फ़ाक़ा की सख़्तियों को गवारा करे। तंगी व उसरत में ज़िन्दगी बसर करे मगर क़र्ज़ ले कर अपनी आबरू को ख़तरे में न डाले, और अगर कोई शदीद ज़रूरत मजबूर कर दे तो बस इतना क़र्ज़ ले जिससे ज़रूरत रफ़ा हो जाये और उसे जल्द से जल्द अदा करने की कोशिश करे, और अगर सिरे से अदा करने का इरादा ही न हो तो ऐसा शख़्स ब–मंज़िलए ख़ाएन व सारिक़ के है। चुनान्चे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजमा) "जो शख़्स क़रज़ा ले और अदा करने की नीय्यत न रखता हो वह बमनज़िलए सारिक़ के है।"

अगर इरादा हो मगर किसी मजबूरी की वजह से वक़्त पर अदा न कर सके तो वह मअज़ूर क़रार पायेगा। ऐसी सूरत में क़र्ज़ ख़्वाह को चाहिये कि उसे मोहलत दे और सख़्ती से मुतालबा न करे। ऐसा करने से उसे हर रोज़ उतना ही माल सदक़ा करने का सवाब हासिल होगा और अगर वह अदाए क़र्ज़ से बिल्कुल ही मजबूर हो जाये तो वह अद्मे अदायगी की वजह से अल्लाह तआला के नज़दीक क़ाबिले मवाख़िज़ा नहीं होगा बशर्ते कि उस माल को हराम में सर्फ़ न किया हो। अगर क़र्ज़ख़्वाह उसे माफ़ कर दे तो वह अल्लाह तआला से ज़्यादा से ज़्यादा अज्र पाने का मुस्तहक़ होगा, और अगर माफ़ न करे तो अल्लाह तआला सिर्फ़ उसे उसके क़र्ज़ का बदल देगा।

दुआए तौबा

"ऐ मअबूद! ऐ वह जिसकी तौसीफ़ से वस्फ़ करने वालों के तौसीफ़ी अल्फ़ाज़ क़ासिर हैं। ऐ वह जो उम्मीदों की उम्मीदों का मरकज़ है। ऐ वह जिसके हां नेकूकारों का अज्र ज़ाया नहीं होता। ऐ वह जो एबादत गुज़ारों के ख़ौफ़ की मंज़िले मुनतहा है। ऐ वह जो परहेज़गारों के बीम व हरास की हद्दे आख़िर है यह उस शख़्स का मौक़ूफ़ है जो गुनाहों के हाथों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में खेलता है और ख़ताओं की बागों ने जिसे खेंच लिया है और जिस पर शैतान ग़ालिब आ गया है। इस लिये तेरे हुक्म से लापरवाही करते हुए उसने (अदाये क़र्ज़) में कोताही की और फ़रेब ख़ुर्दगी की वजह से तेरे मिनहयात का मुरतकब होता है। गोया वह अपने को तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में समझता ही नहीं है और तेरे फ़ज़ल व अहसान को जो तूने उस पर किये हैं मानता ही नहीं है। मगर जब उसकी चश्मे बसीरत वा हुई और इस कोरी व अन्धेपन के बादल उसके सामने से छटे तो उसने अपने नफ़्स पर किये हुए ज़ुल्मों का जाएज़ा लिया और जिन जिन मवारिद पर अपने परवर दिगार की मुख़ालफ़तें की थीं उन पर नज़र दौड़ाई तो अपने बड़े गुनाहों को (वाक़ेअन्) बड़ा और अपनी अज़ीम मुख़ालिफ़तों को (हक़ीक़तन्) अज़ीम पाया तो वह इस हालत में कि तुझसे उम्मीदवार भी है और शर्मसार भी, तेरी जानिब मुतवज्जह हुआ और तुझ पर एतमाद करते हुए तेरी तरफ़ राग़िब हुआ और यक़ीन व एत्मेनान के साथ अपनी ख़्वाहिश व आरज़ू को ले कर तेरा क़सद किया और (दिल में) तेरा ख़ौफ़ लिये हुए ख़ुलूस के साथ तेरी बारगाह का इरादा किया इस हालत में कि तेरे अलावा उसे किसी से ग़रज़ न थी और तेरे सिवा उसे किसी का ख़ौफ़ न था। चुनान्चे वह आजिज़ाना सूरत में तेरे सामने आ खड़ा हुआ और फ़रोतनी से अपनी आंखें ज़मीन में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गाड लीं और तज़ल्लुल व इन्केसार से तेरी अज़मत के आगे सर झुका लिया और इज्ज़ व नयाज़मन्दी से अपने राज़हाए दरूने परदा वह जिन्हें तू उससे बेहतर जानता है तेरे आगे खोल दिये और आजिज़ी से अपने वह गुनाह जिनका तू उससे ज़्यादा हिसाब रखता है एक एक करके शुमार किये और उन बड़े गुनाहों से जो तेरे इल्म में उसके लिये मोहलिक उन बद्आमालियों से जो तेरे फ़ैसले के मुताबिक़ उसके लिये रुस्वाकुन हैं, दादो फ़रियाद करता है। वह गुनाह कि जिनकी लज़्ज़त जाती रही है और उनका वबाल हमेशा के लिये बाक़ी रह गया है। ऐ मेरे मअबूद! अगर तू इस पर अज़ाब करे तो वह तेरे अद्ल का मुनकिर नहीं होगा, और अगर इससे दरगुज़र करे और तरस खाये तो वह तेरे अफ़वो को कोई अजीब और बड़ी बात नहीं समझेगा। इसलिये कि तू वह परवर दिगार करीम है। जिसके नज़दीक बड़े से बड़े गुनाह को भी बख़्श देना कोई बड़ी बात नहीं है। अच्छा तो ऐ मेरे मअबूद! मैं तेरी बारगाह में हाज़िर हूं। तेरे हुक्मे दुआ की एताअत करते हुए और तेरे वादे का ईफ़ा चाहते हुए जो कुबूलियते दुआ के मुतअल्लिक़ तूने अपने इस इरशाद में किया है। "मुझसे दुआ मांगों तो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा।" खुदा वन्दा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी मग़फ़रत मेरे शामिले हाल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कर। जिस तरह मैं (अपने गुनाहों का) इक़रार करते हुए तेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ हूं और उन मक़ामात से जहां गुनाहों से मग़लूब होना पड़ता है मुझे (सहारा दे कर) ऊपर उठा ले जिस तरह मैंने अपने नफ़्स को तेरे आगे (ख़ाके मज़ल्लत पर) डाल दिया है, और अपने दामने रहमत से मेरी पर्दा पोशी फ़रमा जिस तरह मुझसे इन्तेक़ाम लेने में सब्रो हिल्म से काम लिया है। ऐ अल्लाह! अपनी एताअत में मेरी नीय्यत को उस्तवार और अपनी एबादत में मेरी बसीरत को क़वी कर और मुझे इन आमाल के बजा लाने की तौफ़ीक़ दे जिनके ज़रिये तू मेरे गुनाहों के मैल को धो डाले, और जब मुझे दुनिया से उठाये तो अपने दीन और अपने नबी मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के आईन पर उठा। ऐ मअबूद! मैं इस मक़ाम पर अपने छोटे बड़े गुनाहों पोशीदा व आशकार मआसियतों और गुज़िश्ता व मौजूदा लग़ज़िशों से तौबा करता हूं, उस शख़्स की सी तौबा जो दिल में मअसियत का ख़याल भी न लाये और गुनाह की तरफ़ पलटने का तसव्वुर भी न करे। ख़ुदा वन्दा! तूने अपनी मोहकम किताब में फ़रमाया है कि तू बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और गुनाहों को मआफ़ करता है और तौबा करने वालों को दोस्त रखता है। लेहाज़ा तू मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा जैसा कि तूने वादा किया है, और मेरे गुनाहों को मआफ़ कर दे जैसा कि तूने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़िम्मा लिया है; और हस्बे क़रारदाद अपनी मोहब्बत को मेरे लिये ज़रूरी क़रार दे, और मैं तुझसे ऐ मेरे परवर दिगार! यह इक़रार करता हूं कि तेरी नापसन्दीदा बातों की तरफ़ रूख़ नहीं करूंगा और यह क़ौल व क़रार करता हूं कि क़ाबिले मज़म्मत चीज़ों की तरफ़ रूजूअ न करूंगा, और यह अहद करता हूं कि तेरी तमाम नाफ़रमानियों को यकसर छोड़ दूंगा। बारे इलाहा! तू मेरे अमल व किरदार से ख़ूब आगाह है। अब जो भी तू जानता है उसे बख़्श दे और अपनी कुदतरे कामला से पसन्दीदा चीज़ों की तरफ़ मुझे मोड़ दे। ऐ अल्लाह! मेरे ज़िम्मे कितने ऐसे हुकूक़ हैं जो मुझे याद हैं और कितने ऐसे मज़लमे हैं जिन पर निसयान का पर्दा पड़ा हुआ है, लेकिन वह सबकेसब तेरी आंखों के सामने हैं। ऐसी आंखें जो ख़्वाब आलूदा नहीं होतीं, और तेरे इल्म में हैं ऐसा इल्म जिसमें फ़रोगुज़ाश्त नहीं होती। लेहाज़ा जिन लोगों का मुझ पर कोई हक़ है उसका उन्हें एवज़ दे कर उसका बोझ मुझसे बरतरफ़ और उसका बार हल्का कर दे, और मुझे फिर वैसे गुनाहों के इरतेकाब से महफ़ूज़ रख। ऐ अल्लाह! मैं तौबा पर क़ायम नहीं रह सकता मगर तेरी ही निगरानी से और गुनाहों से बाज़ नहीं आ सकता मगर तेरी ही कुव्वत व तवानाई से। लेहाज़ा मुझे बेनयाज़ करने वाली कुव्वत से तक़वियत दे और (गुनाहों से) रोकने वाली निगरानी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

का ज़िम्मा ले। ऐ अल्लाह! वह बन्दा जो तुझसे तौबा करे और तेरे इल्मे गैब में वह तौबा शिकनी करने वालों और गुनाह व मअसियत की तरफ़ दोबारा पलटने वाला हो तो मैं तुझसे पनाह मांगता हूं कि उस जैसा हूं। मेरी तौबा को ऐसी तौबा क़रार दे कि उसके बाद फिर तौबा की एहतियाज न रहे जिससे गुज़िश्ता गुनाह महो हो जायें और ज़िन्दगी के बाक़ी दिनों में (गुनाहों से) सलामती का सामान हो। ऐ अल्लाह! मैं अपनी जेहालतों से उज़्रख़्वाह और अपनी बदआमालियों से बख़्शिश का तलबगार हूं। लेहाज़ा अपने लुत्फ़ व अहसान से मुझे पनाहगाह रहमत में जगह दे और अपने तफ़ज़्ज़ुल से अपनी आफ़ियत के पर्दे में छुपा ले। ऐ अल्लाह! मैं दिल में गुज़रने वाले ख़यालात और आंख के इशारों और ज़बान की गुफ़्तुगूओं, ग़र्ज़ हर उस चीज़ से जो तेरे इरादा व रिज़ा के ख़िलाफ़ हो औरतेरी मोहब्बत के हुदूद से बाहर हो, तेरी बारगाह में तौबा करता हूं। ऐसी तौबा जिससे मेरा हर हर अज़ो अपनी जगह पर तेरी उक़ूबतों से बचा रहे और उन तकलीफ़देह अज़ाबों से जिनसे सरकश लोग ख़ाएफ़ रहते हैं महफ़ूज़ रहे। ऐ मअबूद! यह तेरे सामने मेरा आलमे तन्हाई, तेरे ख़ौफ़ से मेरे दिल की धड़कन, तेरी हैबत से मेरे आज़ा की थरथरी। इन हालतों पर रहम फ़रमा। परवर दिगार मुझे गुनाहों ने तेरी बारगाह में रुस्वाई की मंज़िल पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ला खड़ा किया है। अब अगर चुप रहूं तो मेरी तरफ़ से कोई बोलने वाला नहीं है और कोई वसीला लाऊँ तो शफ़ाअत का सज़ावार नहीं हूं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपने करम बख़्शिश को मेरी ख़ताओं का शफ़ीअ क़रार दे और अपने फ़ज़ल से मेरे गुनाहों को बख़्श दे और जिस सज़ा का मैं सज़ावार हूं वह सज़ा न दे और अपना दामने करम मुझ पर फैला दे और अपने परदए अफ़वो व रहमत में मुझे ढांप ले और मुझसे उस ज़ी इक़्तिदार शख़्स का सा बरताव कर जिसके आगे कोई बन्दए ज़लील गिड़गिड़ाए तो वह उस पर तरस खाये या उस दौलतमन्द का सा जिससे कोई बन्दए मोहताज लिपटे तो वह उसे सहारा दे कर उठा ले। बारे इलाहा! मुझे तेरे (अज़ाब) से कोई पनाह देने वाला नहीं है। अब तेरी कुव्वत व तवानाई ही पनाह दे तो दे। और तेरे यहां कोई मेरी सिफ़ारिश करने वाला नहीं, अब तेरा फ़ज़्ल ही सिफ़ारिश करे तो करे और मेरे गुनाहों ने मुझे हरासां कर दिया है। अब तेरा अफ़वो व दरगुज़र ही मुझे मुतमईन करे तो करे। यह जो कुछ मैं कह रहा हूं इस लिये नहीं कि मैं अपनी बदआमालियों से नावाक़िफ़ और अपनी गुज़िश्ता बदकिरदारियों को फ़रामोश कर चुका हूं बल्कि इस लिये कि तेरा आसमान और जो उसमें रहते सहते हैं और तेरी ज़मीन और जो इस पर आबाद हैं, मेरी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

निदामत को जिस का मैंने तेरे सामने इज़हार किया है और मेरी तौबा को जिसके ज़रिये तुझसे पनाह मांगी है सुन लें। ताकि तेरी रहमत की कारफ़रमाई की वजह से किसी को मेरे हालेज़ार पर रहम आ जाये या मेरी परेशान हाली पर उसका दिल पसीजे तो मेरे हक़ में दुआ करे जिसकी तेरे हां मेरी दुआ से ज़्यादा सुनवाई हो। या कोई ऐसी सिफ़ारिश हासिल कर लूं जो तेरे हां मेरी दरख़्वास्त से ज़्यादा मोअस्सिर हो और इस तरह तेरे ग़ज़ब से नजात की दस्तावेज़ और तेरी ख़ुशनूदी का परवाना हासिल कर सकूं। ऐ अल्लाह! अगर तेरी बारगाह में निदामत व पशेमानी ही तौबा है तो मैं पशेमान होने वालों में सबसे ज़्यादा पशेमान हूं, और अगर तर्के मअसियत ही तौबा व अनाबत है तो मैं तौबा करने वालों में अव्वल दर्जे पर हूं, और अगर तलबे मग़फ़ेरत गुनाहों को ज़ायल करने का सबब है तो मग़फ़ेरत चाहने वालों में से एक मैं भी हूं। ख़ुदाया जब कि तूने तौबा का हुक्म दिया है और कुबूल करने का ज़िम्मा लिया है और दुआ पर आमादा किया है और कुबूलियत का वादा फ़रमाया है तो रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मेरी तौबा को कुबूल फ़रमा और मुझे अपनी रहमत से नाउम्मीदी के साथ न पलटा क्योंकि तू गुनाहगारों की तौबा कुबूल करने वाला और रूजूअ होने वाले ख़ताकारों पर रहम करने वाला है। ऐ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने उनके वसीले से हमारी हिदायत फ़रमाई है। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल कर जिस तरह उनके ज़रिये हमें (गुमराही के भंवर से) निकाला है तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल कर, ऐसी रहमत जो क़यामत के रोज़ और तुझसे एहतियाज के दिन हमारी सिफ़ारिश करे इस लिये कि तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है और यह अम्र तेरे लिये सहल व आसान है।

सहीफ़—ए—कामेला की अक्सर दुआयें एतराफ़े गुनाह, अफ़वे तक़सीर और तौबा व अनाबत पर मुश्तमिल हैं। मगर यह दुआ दुआये तौबा ही के नाम से मौसूम है जिससे उसके ख़ुसूसियात ज़ाहिर हैं। तौबा के लग़वी माने पलटने और रुजूअ होने के हैं और इस्तेलाहन तौबा का मतलब यह है कि बन्दा अपने गुनाहों पर पशेमान हो कर बारगाहे इलाही में उनसे बाज़ रहने का अहद करे और जिन गुनाहों का तदारुक मुम्किन है उनका तदारुक करे। इस तरह कि जो हुकूक़ उसके ज़िम्मे हों उन्हें अदा करे या अहले हुकूक़ से मआफ़ी हासिल करे, और यह न हो सके तो उनके लिये ऐसे आमाले ख़ैर बजा लाये कि वह क़यामत के रोज़ उससे ख़ुश होकर दरगुज़र करें। तौबा का अस्ल मोहर्रिक जज़ा व सज़ा का इल्म व यक़ीन है जो गुनाहगार को कसाफ़ते गुनाह की आलूदगियों से दूर रहने पर आमादा करता है। चुनान्चे जब वह गुनाहों के हलाकत आफ़रीन नताएज के पेशे नज़र अपना मुहासिबा करता है। तो यह एहतेसाबे नफ़्स उसे झिंझोड़ता और मतऊन करता है। जिससे वह नफ़सियाती तौर पर एक क़िस्म की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तकलीफ़ व अज़ीयत महसूस करता है। इस एहसासे तकलीफ़ को निदामत व पशेमानी से ताबीर किया जाता है और जब यह निदामत उसके एहसासात पर ग़ालिब आते हैं तो वह गुनाहों से बाज़ रहने का इरादा कर लेता है, और तौबा उसी इल्म, निदामत और इरादे के मजमूए का नाम है जिसके बाद आमाल में तब्दीली का होना नागुज़ीर हो जाता है।

इस दुनिया में रहते हुए कोई शख़्स भी तौबा से बेनयाज़ नहीं हो सकता, क्योंकि कभी हाथ, ज़बान और दूसरे आज़ा से कोई गुनाह सरज़द होगा, कभी झूठ बोला होगा, कभी किसी की ग़ीबत की होगी, कभी किसी पर ज़ुल्म किया होगा, कभी किसी से नाहक़ झगड़ा किया होगा। और अगर उसके आज़ा व जवारेह हर क़िस्म के गुनाह से बरी हों, तो वह बुराई के क़सद, गुनाह के इरादे और नफ़्स के दूसरे रज़ाएल से ख़ाली नहीं होगा, और अगर उन चीज़ों से भी पाक हो तो शैतानी वसावस और गुनाह के तसव्वुरात व ख़यालात से ख़ाली नहीं होगा, और अगर इनसे भी पाक हो तो ख़ुदा वन्दे आलम की क़ुदरत व हिक्मत और उसके आसार व सिफ़ात में नज़र व फ़िक्र से ग़ाफ़िल रहा होगा, और अगर इस क़ुसूर व ग़फ़लत से भी बरी और हर लिहाज़ से मासूम हो तो उस सवाब से तो बेनयाज़ नहीं हो सकता जो तौबा पर मुरत्तब होता है। लेहाज़ा गुनाहगार हो या मासूम, सब ही को तौबा करना चाहिये। चुनान्चे इरशादे इलाही है:–

> (तरजुमा) "ऐ ईमान वालों! तुम सबके सब अल्लाह से तौबा करो ताकि तुम हर लिहाज़ से बेहतरी पा सको।"

अगर इन्सान गुनाह का मुरतकिब हो तो उसे फ़ौरन् तौबा करना चाहिये और तौबा को ताख़ीर में न डालना चाहिये। एक तो इस लिये कि नामालूम कब मौत का पैग़ाम आ जाये और तौबा किये बग़ैर इस दुनिया से रख़ते

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सफ़र बांध लेना पड़े। और दूसरे यह कि तौबा में ताख़ीर करने का नतीज यह होता है कि तौबा की नौबत ही नहीं आती और गुनाह की आदत इस तरह उसमें रासिख़ हो जाती है कि तबीअत सानिया बन जाती है और फि वह बग़ैर किसी एहसासे निदामत के गुनाह पर गुनाह किये जाता है जिसर दिल व दिमाग़ पर तारीकी की तहें चढ़ जाती हैं, और दिल की सफ़ा अं नूरानियत के साथ तौफ़ीक़ की रौशनी भी ख़त्म हो जाती है, और जिस तरह तबीअत मर्ज़ से मग़लूब हो जाये तो सेहत के अूद करने की तवक़्क़ो नह रहती उसी तरह गुनाह के रग व पै में सरायत करने के बाद गुनाहगा लाइलाज हो जाता है। लेहाज़ा इस यास आफ़रीन हालत के पैदा होने स पहले तौब कर लेना चाहिये, और यह तौबा इसकी दलील है कि अभी दिल फ़ितरी सलामती पर बाक़ी है जिसने एहसासे निदामत पैदा करके तौबा की तरफ़ मुतवज्जह किया है और यह ख़ुदा वन्दे आलम का इन्तेहाई लुत्फ़ व करम है कि वह यक़ीने मौत की सूरत के अलावा हर सूरत में तौबा कुबूल फ़रमाता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

(तरजुमा) "वही तो अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता और गुनाहों को माफ़ करता है।"

और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम से मरवी है कि अगर बन्दा अपने मरने से एक साल पहले तौबा कर ले तो ख़ुदा उसकी तौबा को कुबूल फ़रमाएगा। फिर फ़रमाया कि साल भर की मुद्दत तो बहुत ज़्यादा है। अगर मरने से एक महीने भी पहले तौबा कर ले, तो ख़ुदा कुबूल करेगा। फिर फ़रमाया कि एक महीना भी बहुत है, अगर मरने से एक दिन पहले तौबा कर ले तो ख़ुदा कुबूल फ़रमाने वाला है। फिर फ़रमाया कि एक दिन भी बहुत है, अगर मौत से एक साअत भी पहले तौबा कर ले तो ख़ुदा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ान्दे आलम अपनी रहमत से उसकी तौबा कुबूल कर लेगा, और उसके ुनाहों से दरगुज़र फ़रमायेगा। तौबा सिर्फ़ गुनाहों को दूर करने ही का ज़रिया नहीं है बल्कि सवाबे अज़ीम और अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी व ोहब्बत भी उससे वाबस्ता है। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ना इरशाद है :—

(तरजमा) "ख़ुदा वन्दे आलम उस शख़्स से भी ज़्यादा अपने बन्दे की तौबा से ख़ुश होता है जो अन्धेरी रात में अपनी सवारी और ज़ादेराह खो कर अचानक उसे पा ले।"

़तराफ़े गुनाह के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ जिसे नमाज़े शब के बाद पढ़ते

(तरजमा) "ऐ अल्लाह! ऐ दाएमी व अबदी बादशाही वाले और लश्कर व एवान के बग़ैर मज़बूत फ़रमांरवाई वाले और ऐसी इज़्ज़त व रिफ़अत वाले जो सदियों, सालों, ज़मानों और दिनों के बीतने गुज़रने के बावजूद पाइन्दा व बरक़रार है। तेरी बादशाही ऐसी ग़ालिब है जिसकी इब्तिदा की कोई हद है और न इन्तेहा का कोई आख़िरी किनारा है। और तेरी जहांदारी का पाया इतना बुलन्द है कि तमाम चीज़ें उसकी बुलन्दी को छूने से क़ासिर हैं और तारीफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करने वालों की इन्तेहाई तारीफ़ तेरी इस बुलन्दी के पस्त तरीन दर्जे तक भी नहीं पहुंच सकती जिसे तूने अपने लिये मख़सूस किया है। सिफ़तों के कारवां तेरे बारे में सरगरदाँ हैं और तौसीफ़ी अल्फ़ाज़ तेरे लाएक़े हाल मदह तक पहुंचने से आजिज़ हैं और नाज़ुक तसव्वुरात तेरे मक़ामे किबरियाई में शशदर व हैरान हैं। तू वह ख़ुदाए अज़ली है जो अज़ल ही से ऐसा है और हमेशा बग़ैर ज़वाल के ऐसा ही रहेगा। मैं तेरा वह बन्दा हूं जिसका अमल कमज़ोर और सरमायए उम्मीद ज़्यादा है। मेरे हाथ से तअल्लुक़ व वाबस्तगी के रिश्ते जाते रहे हैं। मगर वह रिश्ते जिसे तेरी रहमत ने जोड़ दिया है और उम्मीदों के वसीले भी एक एक करके टूट गये हैं। मगर तेरे अफ़्वो व दरगुज़र का वसीला जिस पर सहारा किये हुए हूं। तेरी एताअत जिसे किसी शुमार में ला सकूं, न होने के बराबर है, और वह मअसियत जिसमें गिरफ़्तार हूं बहुत ज़्यादा है। तुझे अपने किसी बन्दे को माफ़ कर देना अगरचे वह कितना ही बुरा क्यों न हो दुश्वार नहीं है।" तो फिर मुझे भी माफ़ कर दे। ऐ अल्लाह तेरा इल्म तमाम पोशीदा आमाल पर मुहीत है और तेरे इल्म व इत्तिलाअ के आगे हर मग़फ़ी चीज़ ज़ाहिर व आशकारा है और बारीक से बारीक चीज़ें भी तेरी नज़र से पोशीदा नहीं हैं और न राज़ हाए दरूने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर्दा तुझसे मग़फ़ी हैं। तेरा वह दुश्मन जिसने मेरे बेराहरौ होने के सिलसिले में तुझसे मोहलत मांगी और तूने उसे मोहलत दी और मुझे गुमराह करने के लिये रोज़े क़यामत तक फ़ुरसत तलब की और तूने उसे फ़ुरसत दी मुझ पर ग़ालिब आ गया है और जबकि मैं हलाक करने वाले सग़ीरा गुनाहों और तबाह करने वाले कबीरा गुनाहों से तेरे दामन में पनाह लेने के लिये बढ़ रहा था उसने मुझे आ गिराया और जब मैं गुनाह का मुरतकब हुआ और अपनी बदआमाली की वजह से तेरी नाराज़ी का मुस्तहक़ बना तो उसने अपने हीला व फ़रेब की बाग मुझसे मोड़ ली और अपने कलमए कुफ़्र के साथ मेरे सामने आ गया और मुझसे बेज़ारी का इज़हार किया और मेरी जानिब से पीठ फिरा कर चल दिया और मुझे खुले मैदान में तेरे ग़ज़ब के सामने अकेला छोड़ दिया, और तेरे इन्तेक़ाम की मंज़िल में मुझे खींच तान कर ले आया। इस हालत में कि न कोई सिफ़ारिश करने वाला था जो तुझसे मेरी सिफ़ारिश करे और न कोई पनाह देने वाला था जो मुझे तेरे अज़ाब से ढारस दे और न कोई चार दीवारी थी जो मुझे तेरी निगाहों से छुपा सके, और न कोई पनाहगाह थी जहां तेरे ख़ौफ़ से पनाह ले सकूं। अब यह मंज़िल मेरे पनाह मांगने और यह मक़ाम मेरे गुनाहों के एतराफ़ करने का।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लेहाज़ा ऐसा न हो कि तेरे दामने फ़ज़्ल (की वुस्अतें) मेरे लिये तंग हो जायें और अफ़वो व दरगुज़र मुझ तक पहुंचने ही न पाये और न तौबा गुज़ार बन्दों में सबसे ज़्यादा नाकाम साबित हूं, और न तेरे पास उम्मीदें ले कर आने वालों में सबसे ज़्यादा नाउम्मीद रहूं (बारे इलाहा) मुझे बख़्श दे इस लिये कि तू बख़्शने वालों में सबसे बेहतर है। ऐ अल्लाह! तूने मुझे (एताअत का) हुक्म दिया मगर मैं उसे बजा न ला सका और (बुरे आमाल से) मुझे रोका मगर उनका मुरतकब होता रहा, और बुरे ख़यालात ने जब गुनाह को ख़ुशनुमा करके दिखाया तो (तेरे एहकाम में) कोताही की। मैं न रोज़ा रखने की वजह से दिन को गवाह बना सकता हूं और न नमाज़े शब की वजह से रात को अपनी सिपर बना सकता हूं और न किसी सुन्नत को मैंने ज़िन्दा किया है कि उससे तहसीन व सना की तवक़्क़ो करूं सिवाये तेरे वाजिबात के कि जो उन्हें ज़ाया करे वह बहरहाल हलाक व तबाह होगा और नवाफ़िल के फ़ज़्ल व शरफ़ की वजह से भी तुझसे तवस्सुल नहीं कर सकता और ऐसी सूरत में कि तेरे वाजिबात के बहुत से शराएत से ग़फ़लत करता रहा और तेरे एहकाम के हुदूद से तजावुज़ करता हुआ महारिमे शरीअत का दामन चाक करता रहा, और कबीरा गुनाहों का मुरतकब होता रहा जिनकी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रुस्वाईयों से सिर्फ़ तेरा दामने अफ़वो व रहमत पर्दापोश रहा। यह (मेरा मौक़फ़) उस शख़्स का मौक़फ़ है जो तुझसे शर्म व हया करते हुए अपने नफ़्स को बुराईयों से रोकता हो, और उस पर नाराज़ हो और तुझसे राज़ी हो, और तेरे सामने ख़ौफ़ज़दा दिल, ख़मीदा गर्दन और गुनाहों से बोझल पीठ के साथ उम्मीद व बीम की हालत में ईस्तादा हो, और तू उन सबसे ज़्यादा सज़ावार है जिनसे उसने आस लगाई और उन सबसे ज़्यादा हक़दार है जिनसे वह हरासां व ख़ाएफ़ हुआ। ऐ मेरे परवर दिगार! जब यही हालत मेरी है तो मुझे भी वह चीज़ मरहमत फ़रमा जिसका मैं उम्मीदवार हूं और उस चीज़ से मुतमइन कर जिससे ख़ाएफ़ हूं और अपनी रहमत के इनाम से मुझ पर अहसान फ़रमा। इस लिये कि तू उन तमाम लोगों से जिनसे सवाल किया जाता है ज़्यादा सख़ी व करीम है। ऐ अल्लाह! जब कि तूने मुझे अपने दामने अफ़वो में छुपा लिया है और हमसरों के सामने उस दारे फ़ना में फ़ज़्ल: व करम का जामा पहनाया है तो दारे बक़ा की रुस्वाईयों से भी पनाह दे। उस मक़ाम पर कि जहां मुक़र्रब फ़रिश्ते, मोअज़्ज़िज़ व बाविक़ार पैग़म्बर, शहीद व सालेह अफ़राद सब हाज़िर होंगे। कुछ तो हमसाये होंगे जिनसे मैं अपनी बुराईयों को छुपाता रहा हूं, और कुछ ख़वैश व अक़ारिब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होंगे जिनसे मैं अपने पोशीदा कामों में शर्म व हया करता रहा हूं। ऐ मेरे परवर दिगार! मैंने अपनी परदापोशी में उन पर भरोसा नहीं किया और मग़फ़ेरत के बारे में परवर दिगारा तुझ पर एतमाद किया है और तू उन तमाम लोगों से जिन पर एतमाद किया जाता है ज़्यादा सज़ावारे एतमाद है और उन सबसे ज़्यादा अता करने वाला है जिनकी तरफ़ रुजूअ हुआ जाता है और उन सबसे ज़्यादा मेहरबान है जिनसे रहम की इल्तेजा की जाती है। लेहाज़ा मुझ पर रहम फ़रमा। ऐ अल्लाह! तूने मुझे बाहम पेवस्ता हड्डियों और तंग राहों वाली सल्ब से तंग नाए रहम में कि जिसे तूने पर्दों में छुपा रखा है एक ज़लील पानी (नुत्फ़े) की सूरत में उतारा जहां तू मुझे एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ मुन्तक़िल करता रहा यहां तक कि तूने मुझे इस हद तक पहुंचा दिया जहां मेरी सूरत की तकमील हो गयी। फिर मुझमें आज़ा व जवारेह वदिअत किये। जैसा कि तूने अपनी किताब में ज़िक्र किया है कि (मैं) पहले नुत्फ़ा था, फिर मुन्जमिद ख़ून हुआ, फिर गोश्त का एक लोथड़ा, फिर हड्डियों का एक ढांचा, फिर उन हड्डियों पर गोश्त की तहें चढ़ा दीं। फिर जैसा तूने चाहा एक दूसरी तरह की मख़लूक़ बना दिया, और जब मैं तेरी रोज़ी का मोहताज हुआ और तेरे लुत्फ़ व अहसान की दस्तगीरी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से बेनयाज़ न रह सका, तो तूने उस बचे हुए खाने पानी में से जिसे तूने उस कनीज़ के लिये जारी किया था जिसके शिकम में तूने मुझे ठहरा दिया और जिसके रहम में मुझे वदीअत किया था, मेरी रोज़ी का सरो सामान कर दिया। ऐ मेरे परवर दिगार इन हालात में अगर तू खुद मेरी तदबीर पर मुझे छोड़ देता या मेरी ही कुव्वत के हवाले कर देता तो तदबीर मुझसे कनाराकश और कुव्वत मुझसे दूर रहती। मगर तूने अपने फ़ज़ल व अहसान से एक शफ़ीक़ व मेहरबान की तरह मेरी परवरिश का एहतेमाम किया जिसका तेरे फ़ज़्ले बेपायां की बदौलत उस वक़्त तक सिलसिला जारी है कि न तेरे हुस्ने सुलूक से कभी महरूम रहा और न तेरे अहसानात में कभी ताख़ीर हुई, लेकिन इसके बावजूद यक़ीन व एतमाद क़वी न हुआ कि मैं सिर्फ़ उसी काम के लिये वक़्फ़ हो जाता जो तेरे नज़दीक मेरे लिये ज़्यादा सूदमन्द है (इस बेयक़ीनी का सबब यह है कि) बदगुमानी और कमज़ोरी, यक़ीन के सिलसिले में मेरी बाग शैतान के हाथ में है इस लिये मैं उसकी बद्हमसाएगी और अपने नफ़्स की फ़रमांबरदारी का शिकवा करता हूं और उसके तसल्लुत से तेरे दामन में हिफ़्ज़ व निगेहदाश्त का तालिब हूं, और तुझसे आजिज़ी के साथ इल्तेजा करता हूं कि उसके मक्रो फ़रेब का रूख़ मुझसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मोड़ दे, और तुझसे सवाल करता हूं कि मेरी रोज़ी की आसान सबील पैदा कर दे। तेरे ही लिये हम्दो सताइश है कि तूने अज़ खुद बलन्द पाया नेअमतें अता कीं और एहसान व इनाम पर (दिल में) शुक्र का अल्क़ा किया। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे लिये रोज़ी को सहल व आसान कर दे और जो अन्दाज़ा मेरे लिये मुक़र्रर किया है उस पर क़नाअत की तौफ़ीक़ दे और जो हिस्सा मेरे लिये मोअय्यन किया है उस पर मुझे राज़ी कर दे और जो जिस्म काम में आ चुका और जो उम्र गुज़र चुकी है उसे अपनी एताअत की राह में महसूब फ़रमा। बिलाशुबहा तू असबाबे रिज़्क़ मोहय्या करने वालों में सबसे बेहतर है। बारे इलाहा! मैं उस आग से पनाह मांगता हूं जिसके ज़रिये तूने अपने नाफ़रमानों की सख़्त गिरफ़्त की है और जिससे तूने उन लोगों को जिन्होंने तेरी रिज़ा व ख़ुशनूदी से रूख़ मोड़ लिया, डराया धमकाया है और उस आतिशे जहन्नम से पनाह मांगता हूं जिसमें रौशनी के बजाये अन्धेरा, जिसका ख़फ़ीफ़ लपका भी इन्तेहाई तकलीफ़देह और जो कोसों दूर होने के बावजूद (गर्मी व तपिश के लिहाज़ से) क़रीब है और उस आग से पनाह मांगता हूं जो आपस में एक दूसरे को खा लेती है और एक दूसरे पर हमला आवर होती है और उस

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आग से पनाह मांगता हूं जो हड्डियों को ख़ाकस्तर कर देगी और दोज़ख़ियों को खौलता हुआ पानी पिलायेगी, और उस आग से कि जो उसके आगे गिड़गिड़ायेगा। उस पर तरस नहीं खायेगी और जो उससे रहम की इल्तेजा करेगा उस पर रहम नहीं करेगी और जो उसके सामने फ़रोतनी करेगा और ख़ुद को उसके हवाले कर देगा उस पर किसी तरह की तख़फ़ीफ़ का उसे अख़्तियार नहीं होगा। वह दर्दनाक अज़ाब और शदीद अक़ाब की शोला सामानियों के साथ अपने रहने वालों का सामना करेगी। (बारे इलाहा!) मैं तुझसे पनाह मांगता हूं जहन्नम के बिच्छुओं से जिनके मुंह खुले हुए होंगे और उन सांपों से जो दांतों को पीस पीस कर फुंकार रहे होंगे और उसके खौलते हुए पानी से जो अन्तड़ियों और दिलों को टुकड़े टुकड़े कर देगा और (सीनों को चीर कर) दिलों को निकाल लेगा। ख़ुदाया! मैं तुझसे तौफ़ीक़ मांगता हूं उन बातों की जो उस आग से दूर करें, और उसे पीछे हटा दें। ख़ुदा वन्दा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे अपनी रहमते फ़रावां के ज़रिये उस आग से पनाह दे और हुस्ने दरगुज़र से काम लेते हुए मेरी लग़ज़िशों को माफ़ कर दे और मुझे महरूम व नाकाम न कर। ऐ पनाह देने वालों में सबसे बेहतर पनाह देने वाले ख़ुदाया

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तू सख़्ती व मुसीबत से बचाता और अच्छी नेअमतें अता करता और जो चाहे वह करता है और तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है। ऐ अल्लाह! जब भी नेकूकारों का ज़िक्र आये तो मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जब तक शब व रोज़ के आने जाने का सिलसिला क़ायम रहे तो मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा। ऐसी रहमत जिसका ज़ख़ीरा ख़त्म न हो और जिसकी गिनती शुमार न हो सके। ऐसी रहमत जो फ़िज़ाए आलम को पुर कर दे और ज़मीन व आसमान को भर दे। ख़ुदा उन पर रहमत नाज़िल करे इस हद तक कि वह ख़ुशनूद हो जाये और ख़ुशनूदी के बाद भी उन पर और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल करता रहे। ऐसी रहमत जिसकी न कोई हद हो और न कोई इन्तेहा। ऐ तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।"

इस दुआ को नमाज़े शब के बाद पढ़ना चाहिये। नमाज़े शब का इतलाक़ कभी आठ रकअतों पर होता है और कभी शिफ़ा व वित्र की नमाज़ों को मिला कर ग्यारह रकअतों पर और कभी नाफ़िलए सुबह को भी उनके साथ मिलाकर तेरह रकअतों पर। अल्लामा सैय्यद अली ख़ां रहमतुल्लाह ने तहरीर फ़रमाया है कि शेख़ अल्ताएफ़ा शेख़ अबू जाफ़र तूसी ने मिसबाह में और शेख़ बहाउद्दीन वालिदैन आमली ने मिफ़ताह में लिखा है कि इसे तेरह रकअतों के बाद पढ़ना चाहिये, और कफ़अमी रहमतुल्लाह ने इस दुआ को नक़्ल किया है और फ़रमाया है कि इसे ग्यारह रकअतों के बाद पढ़ना

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ञाहिये। बहरहाल ख़्वाह तेरह रकअतों के बाद पढ़े या ग्यारह रकअतों के पा आठ रकअतों के, तीनों सूरतों में इसे पढ़ा जा सकता है।

नमाज़े शब का आसान व मुख़्तसर तरीक़ा यह है कि निस्फ़ शब के बाद ो दो रकअत करके आठ नवाफ़िल पढ़े। पहली रकअत में हम्द और सूरः ौहीद और दूसरी रकअत में हम्द और कुल या अय्योहल काफ़ेरूना या ूरः तौहीद पढ़े और दूसरी रकअतों में हम्द और जो सूरः चाहे पढ़े और हर ूसरी रकअत में क़ब्ल रुकूअ कुनूत पढ़े। जिसमें तीन मर्तबा सुब्हानल्लाह ़ह लेना काफ़ी है। उसके बाद दो रकअत नमाज़े शिफ़ा पढ़े और दोनों कअतों में सूरः हम्द के बाद सूरः तौहीद पढ़े। नमाज़े शिफ़ा के बाद एक कअत नमाज़े वित्र पढ़े और उसमें भी सूरः हम्द व सूरः तौहीद पढ़े और ़ब्ल रुकूअ कुनूत भी पढ़े, और मुस्तहब है कि कुनूत में चालीस अफ़राद े लिये नाम बनाम दुआ मांगे और फिर रुकूअ व सुजूद व तशहूद के बाद माज़ तमाम करे, और बाद ख़त्म नमाज़ तस्बीह हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह लैहा पढ़े।

नमाज़े शब का वक़्त अगर चे निस्फ़ शब के बाद शुरूअ हो जाता है गर जिस क़द्र सुबह सादिक़ के क़रीब हो उतना बेहतर है, और अगर कोई ़ज्र मानेअ हो तो निस्फ़ शब से पहले भी पढ़ी जा सकती है लेकिन इससे हतर यह है कि बाद में बानीयत क़ज़ा पढ़े, और अगर तुलूए सुबहे सादिक़ । पहले चार रकअत पढ़ चुका हो तो फिर बक़िया रकअतें भी अदा कर ले ौर इस सूरत में सिर्फ़ सूरः हम्द पर इक्तिफ़ा करे।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुआए इस्तेख़ारा

(तरजुमा) "बारे इलाहा! मैं तेरे इल्म के ज़रिये तुझसे ख़ैर व बहबूद चाहता हूं। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल कर और मेरे लिये अच्छाई का फ़ैसला सादर फ़रमा और हमारे दिल में अपने फ़ैसले (की हिक्मत व मसलेहत) का अल्क़ा कर और उसे एक ज़रीया क़रार दे कि हम तेरे फ़ैसले पर राज़ी रहें और तेरे हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म करें। इस तरह हम से शक की ख़लिश दूर कर दे और मुख़लेसीन का यक़ीन हमारे अन्दर पैदा करके हमें तक़वियत दे, और हमें ख़ुद हमारे हवाले न कर दे कि जो तूने फ़ैसला किया है उसकी मआरफ़त से आजिज़ रहें और तेरी क़द्रो मंज़िलत को सुबक समझें, और जिस चीज़ से तेरी रिज़ा वाबस्ता है उसे नापसन्द करें और जो चीज़ अन्जाम की ख़ूबी से दूर और आफ़ियत की ज़िद से क़रीब हो उसकी तरफ़ माएल हो जायें। तेरे जिस फ़ैसले को हम नापसन्द करें वह हमारी नज़रों में पसन्दीदा बना दे और जिसे हम दुश्वार समझें उसे हमारे लिये सहल व आसान कर दे और जिस मशीयत व इरादे को हमसे मुतअल्लिक़ किया है उसकी एताअत हमारे दिल में अल्क़ा कर। यहां तक कि जिस चीज़ में तूने ताजील की है उसमें ताख़ीर और जिसमें ताख़ीर की है उसमें ताजील न चाहें। और जिसे तूने पसन्द किया है उसे नापसन्द और जिसे नागवार समझा है उसे अख़्तियार न करें,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और हमारे कामों का उस चीज़ पर ख़ात्मा कर जो अन्जाम के लिहाज़ से पसन्दीदा और मआल के एतबार से बेहतर हो। इस लिये कि तू नफ़ीस व पाकीज़ा चीज़ें अता करता और बड़ी नेअमतें बख़्शता है और जो चाहता है वही करता है और तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

ख़ुदा वन्दे आलम से ख़ैरो बरकत तलब करना या ख़ैरो सआदत की तरफ़ रहनुमाई चाहना इस्तेख़ारा कहलाता है। जब इस्तेख़ारा दुआ की सूरत में हो तो उसके असरात व नताएज मुख़्तलिफ़ सूरतों से ज़ाहिर होते हैं। कभी इन्सान के दिल में ऐसी रौशनी पैदा होती है जिससे सही सूरतेहाल मुन्कशिफ़ हो जाती है, उसे अल्क़ाए ग़ैबी से ताबीर किया जाता है, और हज़रत[अ०] ने अपने इरशाद "में इसे इल्हाम से ताबीर फ़रमाया है।" इस के लिये ज़ाहिर व बातिन की पाकीज़गी, क़ल्ब व नज़र की ततहीर और अल्लाह तआला से वाबस्तगी की ज़रूरत है ताकि इन्सान का दिल कश्फ़ व अल्क़ा का महल क़रार पा सके, और अइम्मए अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम अपने बाअज़ असहाब को इस इस्तेख़ारे की तालीम व तलक़ीन फ़रमाते थे। चुनान्चे हसन इब्ने जहम ने इमाम रिज़ा अलैहिमुस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि फ़रज़न्दे रसूल[स०] हमें सफ़र करना है मगर तरद्दुद है कि ख़ुश्की का सफ़र करें या पानी का, आपकी क्या राय है? फ़रमाया :–

(तरजमा) "नमाज़े फ़रीज़ा के औक़ात के अलावा मस्जिद में जाओ और दो रकअत नमाज़ पढ़ो और सौ मर्तबा अस्तख़ीरूल्लाह बेरहमतेहि कहो, उसके बाद देखो कि तुम्हारे दिल में किस बात का अल्क़ा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होता है। बस उस पर अमल करो।"

और कभी तलबे ख़ैर का असर इस तरह ज़ाहिर होता है कि जिस काम में बेहतरी होती है दिल में उस का अज़्म पुख़्ता हो जाता है और ज़ेहन यकसूई के साथ उस पर ठहर जाता है। चुनान्चे इस्हाक़ बिन अम्मार कहते हैं कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि बाज़ औक़ात किसी काम का इरादा करता हूं तो कुछ लोग उसके मवाफ़िक़ राय देते हैं और कुछ ख़िलाफ़ और मैं कुछ तय नहीं कर सकता कि किन लोगों की राय पर अमल करूं। आपने फ़रमाया कि :–

(तरजुमा) "जब ऐसी सूरत हो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ो और एक सौ एक मर्तबा अस्तख़ीरूल्लाह बेरहमतेहि कहो तो उन दोनों कामों में से जिसमें हिज़्म व एहतियात का पहलू नज़र आये उसे अख़्तियार करो। इन्शाअल्लाह तआला उसी में बेहतरी होगी।"

और कभी तलबे ख़ैर का असर इस तरह ज़ाहिर होता है कि जिस अम्र में बेहतरी होती है वह अल्लाह तआला किसी ज़बान से जारी करा देता है। चुनान्चे हारून इब्ने ख़ारिजा कहते हैं कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना कि जो शख़्स किसी काम को करना चाहे तो वह दूसरों से मशवरा लेने से पहले अल्लाह तआला से मशवरा ले। मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला से किस तरह मशवरा ले? फ़रमाया :–

(तरजुमा) "पहले उस काम में अल्लाह तआला से ख़ैरो बरकत चाहे फिर मशवरा करे तो जब अल्लाह तबारक तआला से तलबे ख़ैर के बाद दूसरों से मशविरा लेगा तो अल्लाह तआला मख़लूक़ात में से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिसकी ज़बान से चाहेगा ऐसी बात निकलवा देगा
जो उसके हक़ में भलाई और बेहतरी की होगी।"

और वह इस्तेख़ारा जो नफ़ा व नुक़्सान के सिलसिले में रहनुमाई चाहने के लिये देखा जाता है जैसे तस्बीह के दानों का ताक़ व जुफ़्त होना, रक़ओं का ला और नअम की सूरत में निकलना और आयते कुरआनी का सवाब या अज़ाब के मज़मून पर मुश्तमिल होना तो यह भी अल्क़ा व कशफ़ की तरह मशवरए इलाही के मज़ाहिर में से एक मज़हर है। जिससे ज़ेहनी यकसूई व दिलजमई हासिल होती है और राय में कुव्वत पैदा हो जाती है। इस इस्तेख़ारे के हस्बे ज़ैल आदाब व शराएत हैं जिन्हें मल्हूज़ रखना चाहिये। पहले यह कि इस्तेख़ारे से क़ब्ल तहारत करे और दो रकअत नमाज़ पढ़े। दूसरे यह कि दिल व दिमाग़ से हर तरह के फ़ासिद ख़यालात दूर रखे तीसरे यह कि हमातन अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह रहे और दौराने इस्तेख़ारे में गुफ़्तुगू न करे। चौथे यह कि जिस अम्र के लिये इस्तेख़ारा देखे वह मुबाह हो, और वाजिबात व मोहर्रेमात में इस्तेख़ारा न देखे इस लिये कि वाजिबात को बहर सूरत बजा लाना है और मोहर्रेमात से बहरहाल परहेज़ करना है। पांचवें यह कि बेमहल इस्तेख़ारा न देखे। इस तरह कि इस्तेख़ारा मना आने पर कुछ तवक़्कुफ़ के बाद फिर इस्तेख़ारा करे इस ख़याल से कि शायद अब बेहतर आ जाये और जब तक बेहतर न आये यूंहि इस्तेख़ारा देखता रहे या कहीं जाने के लिये इस्तेख़ारा करे और मना आने की सूरत में किसी ख़ास रास्ते की नीय्यत करके फिर इस्तेख़ारा करे यह समझ कर के अब नीय्यत बदल गयी है या बग़ैर किसी ज़रूरत के बात बात पर इस्तेख़ारा देखे। यह सब बाज़ीचए अतफ़ाल है जो उमूमन् क़वाए अक़लिया के ज़ईफ़ और सोच बिचार की कुव्वतों के मोअत्तल होने का नतीजा होता है और बाज़ लोग उसे बिला वजह सिर्फ़ मुज़ाहिरए तक़द्दुस के लिये मामूल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बना लेते हैं जो रिया की एक क़िस्म है। अब ज़ैल में इस्तेख़ारे के तीन तरीक़े दर्ज किये जाते हैं जो मरवी और मामूल बेही हैं :–

इस्तेख़ारए कुरआनी :– कुरआन से इस्तेख़ारा देखने का तरीक़ा यह है कि पहले तीन मर्तबा सूरः तौहीद और फिर तीन मर्तबा दुरूद पढ़े और फिर यह दुआ पढ़े :– *"अल्लाहुम्मा इन्नी तफ़ाएलतो बेकेताबेका व तवक्कलतो अलैका फ़–अरेनी मिन केताबेका म–हुआ मकतूबा मिन सिर्रेकल मकनून फ़ी ग़ैबका .."* और फिर नीय्यत के बाद कुरआन मजीद को खोले और उसके पहले सफ़हे की पहली आयत को देखे और उसके मज़मून पर नज़र करने के बाद फ़ेल या तर्क का फ़ैसला करे इस तरह कि अगर आयत बशारत व नवेद पर मुश्तमिल हो तो उस काम को करे और अगर अज़ाब व वईद के सिलसिले में हो तो उसे तर्क करे।

इस्तेख़ारए ज़ातुल रुक़ाअ :– हारून इब्ने ख़ारजा रवायत करते हैं कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब किसी काम का इरादा करो तो काग़ज़ के छः पुर्ज़ों पर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ख़यरतः मिनल्लाहिल अज़ीज़ुल हकीमुल फ़लाना इब्ने फ़लानतः लिखो (फ़लां की जगह अपना और फ़लाना की जगह अपनी मां का नाम लिखना चाहिये) और उनमें तीन पर अफ़अल और तीन पर ला तफ़अल तहरीर करो, और उन पुर्ज़ों को मिला कर मुसल्ले के नीचे रख दो और दो रकअत नमाज़े इस्तेख़ारा बजा लाओ और बाद ख़त्म नमाज़ सजदे में सौ मर्तबा अस्तख़ीरुल्लाह बेरहमते ख़यरतन फ़ी आफ़ियः कहो और सजदे से सर उठा कर यह दुआ पढ़ो :– अल्लाहुम्मा–हज़ली व अख़तरली फ़ी जमीअ उमूरी फ़ी यसरा मन्नका व आफ़ेया। फिर एक एक करके तीन पुर्ज़े निकालो। अगर तीनों पर अफ़अल तहरीर हो तो उस काम को करो, और अगर तीनों पर लातफ़अल तहरीर हो तो उस

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

काम को न करो और अगर मुख़्तलिफ़ हों तो दो पुर्ज़े और निकालो। अब अगर अफ़अल तीन हों तो उस काम को करो और ला तफ़अल तीन हों तो उस काम को न करो।

इस्तेख़ारए तस्बीह :– यह इस्तेख़ारा भी इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है। इस का तरीक़ा यह है कि पहले एक दफ़ा सूरः फ़ातेहा और तीन दफ़ा सूरः तौहीद और पन्द्रह मर्तबा दुरूद पढ़ो और उसके बाद यह दुआ पढ़ो :– अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोका बेहक़्क़ेल हुसैन[अ०] व जद्देहि व अबीहे व उम्मीहे वल अइम्मता मिन ज़ुर्रियतेहि अन तसली अला मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद[स०] व अन तजअल लेल ख़ैरते फ़ी हाजेहिस् सबहते व अन तरीनी माहोवाल असलह ली फ़िद्दीने वद्दुनिया व आजेला अमरी व अजलेहि फ़अल मा अना आज़िम अलैहे फ़मरनी व एला फ़ा नहनी इन्नका अला कुल्ले शैइन क़दीर। फिर नीयत करो और मुट्ठी भर तस्बीह के दाने हाथ में लो और पहले दाने पर सुब्हानल्लाह और दूसरे पर अलहम्दो लिल्लाह और तीसरे पर ला इलाहा एलल्लाह पढ़ते जाओ, और आख़िरी दाने पर सुब्हानल्लाह हो तो यह इस्तेख़ारा दरमियाना है चाहे इस काम को करो या उसे तर्क करो, और अगर अलहम्दो लिल्लाह आये तो इस्तेख़ारा बेहतर है इस काम को करो, और अगर ला इलाहा एलल्लाह आये तो इस्तेख़ारा बेहतर नहीं है इस काम को तर्क करो व होवल अलीम बेअवाक़िब अमूरना।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जब खुद मुब्तिला होते या किसी को गुनाहों की रुस्वाई में मुब्तिला देखते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजुमा) "ऐ मअबूद! तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ है इस बात से कि तूने (गुनाहों के) जानने के बाद पर्दा पोशी की और (हालात पर) इत्तिलाअ के बाद आफ़ियत व सलामती बख़्शी। यूं तो हम में से हर एक ही उयूब व नक़ाएस के दरपै हुआ मगर तूने उसे मुश्तहिर न किया और अफ़आले बद का मुरतकब हुआ मगर तूने उसको रुस्वा न होने दिया और पर्दए ख़फ़ा में बुराईयों से आलूदा रहा। मगर तूने उसकी निशान देही न की। कितने ही तेरे मिन्हियात थे जिनके हम मुरतकब हुए और कितने ही तेरे अहकाम थे जिन पर तूने कारबन्द रहने का हुक्म दिया था। मगर हमने उनसे तजावुज़ किया। और कितनी ही बुराईयां थीं जो हमसे सरज़द हुई और कितनी ही ख़तायें थीं जिनका हम ने इरतेकाब किया और आनहालेके दूसरे देखने वालों के बजाये तू उन पर आगाह था और दूसरे (गुनाहों की तशहीर पर) क़ुदरत रखने वालों से तू ज़्यादा उनके अफ़शा पर क़ादिर था। मगर इसके बावजूद हमारे बारे में तेरी हिफ़ाज़त व निगेहदाश्त उनकी आंखों के सामने पर्दा और उनके कानों के बिलमुक़ाबिल दीवार बन गयी तो फिर इस पर्देदारी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व ऐब पोशी को हमारे लिये एक नसीहत करने वाला और बदख़ूई व इरतेकाबे गुनाह से रोकने वाला और (गुनाहों को) मिटाने वाली राहे तौबा और तरीक़ पसन्दीदा पर गामज़नी का वसीला क़रार दे और इस राह पैमाई के लम्हे (हम से) क़रीब कर, और हमारे लिये ऐसे असबाब मोहय्या न कर जो तुझसे हमें ग़ाफ़िल कर दें। इस लिये कि हम तेरी तरफ़ रुजूअ होने वाले और गुनाहों से तौबा करने वाले हैं। बारे इलाहा! मोहम्मद स० पर जो मख़लूक़ात में तेरे बरगुज़ीदा और उनकी पाकीज़ा इज़्ज़त पर जो कायनात में तेरी मुन्तख़ब कर्दा है रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें अपने फ़रमान के मुताबिक़ उनकी बात पर कान धरने वाला और उनके एहकाम की तअमील करने वाला क़रार दे।

यह दुआ खुदा वन्दे आलम की सिफ़ते पर्दापोशी के सिलसिले में है। अल्लाह तआला की शाने सत्तारियत ही का यह नतीजा है कि बन्दों के उयूब पर पर्दा पड़ा रहता है, क्योंकि वह यह गवारा नहीं करता कि उसके बन्दे हमचश्मों की निगाहों में सुबुक हों और अपने छुपे हुए उयूब की वजह से ज़लील हों। इस लिये वह मआएब पर पर्दा डालता है और किसी का ऐब आशकारा नहीं करता। हालांकि वह जब चाहे गुनाहगारों के राज़हाय दरूने पर्दे को बेनक़ाब करके उन्हें रुस्वा व ज़लील कर सकता है, और उनकी बद्आमालियों का तक़ाज़ा भी यह होता है कि उन्हें ज़िल्लत व रुस्वाई से दो चार किया जाये मगर उसकी शाने सत्तारियत आड़े आ जाती है और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उन्हें रुस्वाईयों से बचा ले जाती है। अगर उनकी तरफ़ से पर्दा पोशी न होती तो फिर कौन ऐसा है जो अपनी कारस्तानियों की बदौलत रुस्वा व ज़लील न होता।

चुनान्चे जो शख़्स भी अपनी बातिनी हालत का जाएज़ा लेगा वह इस अम्र के एतराफ़ पर मजबूर होगा कि उसके वह उयूब जो अफ़शा हुए हैं उमूमन् ऐसे ही थे कि जिनके छुपाने की उसने कभी फ़िक्र की ही न थी। मगर इसके बावजूद उसके ढके छुपे हुए गुनाह उन गुनाहों से कहीं ज़्यादा होंगे जो ज़ाहिर हुए हैं। यह उसकी सिफ़ते पर्दा पोशी ही का तो करिश्मा है कि बावजूद अफ़शाए उयूब व मआसी के असबाब मोहय्या करने के वह पर्दा चाक नहीं करता और दूसरों को उसके मआएब पर मुत्तलअ नहीं होने देता। इसी पर्दा पोशी की बिना पर उसने ज़िना के सुबूत के लिये चार ऐनी गवाहों की कड़ी शर्त लगा दी है ताकि गुनाहगार के गुनाह पर पर्दा पड़ा रहे, और दूसरों के उयूब उछालने से मना फ़रमाया है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "जो लोग यह पसन्द करते हैं कि ईमान लाने वालों की बुराइयां नश्र हों उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।"

ख़ुदा वन्दे आलम की यह पर्दा पोशी सिर्फ़ दुनिया में नहीं है बल्कि आख़रत में भी वह पर्दादारी से काम लेगा। चुनान्चे वारिद हुआ है कि पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम मौक़िफ़ हिसाब में अर्ज़ करेंगे कि ऐ मेरे मअबूद! मेरी उम्मत का हिसाब व किताब अम्बिया और दूसरी उम्मतों के सामने न लिया जाये। ताकि मेरी उम्मत के गुनाहों और लग़ज़िशों पर कोई मुतलअ न हो। लेहाज़ा मेरी उम्मत का मुहासबा सिर्फ़ मेरे सामने हो। उस मौक़े पर क़ुदरत की तरफ़ से इरशाद होगा कि ऐ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ाहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) मैं अपने बन्दों पर तुम से ़्यादा रहीम व मेहरबान हूं। जब तुम्हें यह गवारा नहीं कि तुम्हारी उम्मत ; गुनाह व मआएब किसी और पर ज़ाहिर हों तो मैं भी यह गवारा नहीं कर ़कता कि मैं अपने बन्दों को तुम्हारे सामने नादिम व रुस्वा करूं। लेहाज़ा जानूं इनका हिसाब व किताब।

बहरहाल इस दुनिया में पर्दा पोशी का नफ़सियाती तौर पर यह असर ाता है कि बन्दा इसकी मरहमत व ऐब पोशी को देखते हुए खुद अपने क़ाम पर शर्मिन्दा होता है और यह शर्मिन्दगी उसे झिंझोड़ती और तौबा की ह दिखाती है और वह जज़्बए ममनूनीयत से मुतास्सिर हो कर गुनाहों से स्तबरदार होने का इरादा कर लेता है, और जिसका पर्दा खुद अपने हाथों क हो जाता है और ज़बानों पर उसके मआएब का चर्चा होने लगता है दूसरे लोग अगरचे वैसे ही गुनाहों के मुरतकिब होते हों या होते रहे हों स पर ज़बाने तअन खोलते और उसे मौरुदुल इल्ज़ाम ठहराते हैं जिसके ीजे में उसके दिल में नफ़रत भर जाती है और यह जोशे नफ़रत ज़िद र हटधर्मी की सूरत अख़्तियार कर लेता है और वह मज़ीद रुस्वाई की वा किये बग़ैर गुनाहों में जरी व बेबाक हो जाता है और जो शर्म की न्की सी नक़ाब उसके चेहरे पर होती है उतर जाती है और एलानिया ाहों का मुरतकब होने लगता है।

जब अहले दुनिया को देखते तो राज़ी ब-रिज़ा रहने के लिये यह दुआ पढ़ते

(तरजमा) "अल्लाह तआला के हुक्म पर रिज़ा व ख़ुशनूदी की बिना पर अल्लाह तआला के लिये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हम्दो सताइश है। मैं गवाही देता हूं कि उसने अपने बन्दों की रोज़ियां आईने अद्ल के मुताबिक़ तक़सीम की हैं और तमाम मख़लूक़ात से फ़ज़ल व अहसान का रवैया अख़्तियार किया है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद^{स०} और उन की आल^{अ०} पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे उन चीज़ों से जो दूसरों को दी हैं आशुफ़ता व परेशान न होने दे कि मैं तेरी मख़लूक़ पर हसद करूं, और तेरे फ़ैसले को हक़ीर समझूं और जिन चीज़ों से मुझे महरूम रखा है उन्हें दूसरों के लिये फ़ितना व आज़माइश न बना दे (कि वह अज़रूए ग़ुरूर मुझे बा नज़रे हिक़ारत देखें) ए अल्लाह! मोहम्मद^{स०} और उन की आल^{अ०} पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे अपने फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र पर शादमां रख और अपने मुक़द्दरात की पज़ीराई के लिये मेरे सीने में वुस्अत पैदा कर दे और मेरे अन्दर वह रूहे एतमाद फूंक दे कि मैं यह इक़रार करूं कि तेरा फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र ख़ैरो बहबूदी के साथ नाफ़िज़ हुआ है और उन नेअमतों पर अदाये शुक्र की ब–निस्बत जो मुझे अता की हैं उन चीज़ों पर मेरे शुक्रिये को कामिल व फ़ोज़ूंतर क़रार दे जो मुझसे रोक ली हैं और मुझे इससे महफ़ूज़ रख कि मैं किसी नादार को ज़िल्लत व हिक़ारत की नज़र से देखूं या किसी साहबे सरवत के बारे में मैं (उसकी सरवत की बिना पर) फ़ज़ीलत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व बरतरी का गुमान करूं। इस लिये कि साहबे शरफ़ व फ़ज़ीलत वह है जिसे तेरी एताअत ने शरफ़ बख़्शा हो और साहबे इज़्ज़त वह है जिसे तेरी एबादत ने इज़्ज़त व सरबलन्दी दी हो। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें ऐसी सरवत व दौलत से बहराअन्दोज़ कर जो ख़त्म होने वाली नहीं और ऐसी इज़्ज़त व बुज़ुर्गी से हमारी ताईद फ़रमा जो ज़ाएल होंने वाली नहीं, और हमें मुल्के जावेदां की तरफ़ रवां दवां कर। बेशक तू यकता व यगाना और ऐसा बेनयाज़ है कि न तेरी कोई औलाद है और न तू किसी की औलाद है और न तेरा कोई मिस्ल व हमसर है।

यह दुआ तलबे तस्लीम व रिज़ा के सिलसिले में है। तस्लीम व रिज़ा ़क़ीन के बुलन्दतरीन दर्जे का नाम है जहां ईक़ान की पुख़्तगी में लचक ़ौर एतक़ाद की मज़बूती में कमज़ोरी का रूनुमा होना तो दरकिनार मक़सद मन्शाए इलाही के ख़िलाफ़ ज़ेहन किसी तसव्वुर को क़ुबूल करने के लिये ़ो आमादा नहीं होता। यह जज़्बए रिज़ा, इश्क़ व मोहब्बते इलाही के नतीजे पैदा होता है, क्योंकि यह मोहब्बत ही का तक़ाज़ा है कि महबूब की तरफ़ ़ राहत पहुंचे या गज़न्द, कोई चीज़ बारे ख़ातिर न हो और तल्ख़ से तल्ख़ ़लात में भी चेहरे पर कड़वाहट न खिले। चुनान्चे जब दिल में इश्क़े इलाही ़ी शरर अफ़शानी होती है तो फिर रंज व राहत, इज़्ज़त व ज़िल्लत, ़क़बाल व अदबार, ख़ुशहाली व तंगदस्ती, मर्ज़ व सेहत और मौत व हयात

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में कोई फ़र्क़ नहीं रहता, और इन्सान मर्ज़ में उतनी ही कशिश महसूस करता है जितनी सेहत व तन्दरुस्ती में, और अज़ीयत व कुलफ़त से उतनी ही लज़्ज़त हासिल करता है जितनी आराम व राहत से। उसके लिये कांटों की चुभन, फूलों की सेज और कर्ब व मुसीबत की जान का ही ऐश व राहत का गहवारा बन जाती है। वह नेश को नूस और ज़हर को शहेद व शक्कर समझ कर इस तरह पी जाता है कि उसे बदमज़गी व तल्ख़कामी का एहसास तक नहीं होता। जब इन्सान मुक़द्देराते इलाहिया के आगे सरे तस्लीम ख़म कर देता है तो इस जज़्बए रिज़ा के नतीजे में दो तरह की हालतें पेश आती हैं। एक यह कि दर्द व कुलफ़त का एहसास तो होता है मगर उसे ख़न्दा पेशानी से बर्दाश्त कर लेता है। न सिर्फ़ बर्दाश्त करता है बल्कि उसमें इत्मिनान व राहत महसूस करता है जैसे वह मरीज़ जो फ़सद के मौक़े पर तकलीफ़ तो महसूस करता है मगर उस तकलीफ़ को तकलीफ़ तसव्वुर नहीं करता, बल्कि हुसूले सेहत के पेशे नज़र उस तकलीफ़ को भी एक गोना राहत समझता है, और दूसरी हालत यह है कि सिरे से कर्ब व अज़ीयत का एहसास ही बाक़ी न रहे। हो सकता है कि इस पर बाज़ अफ़राद को हैरत व इस्तेजाब हो कि यह कैसे मुम्किन है कि आग लगे और जिस्म व जान न फुंके, और दर्द व कर्ब की ईज़ा रसानी हो और अज़ीयत का एहसास न हो। मगर मुशाहदा और वाक़आत इसके शाहिद हैं कि इन्सान पर ऐसे कैफ़ियात तारी होते रहते हैं जो दर्द व तकलीफ़ का एहसास ख़त्म कर देते हैं। चुनान्चे इन्तेहाई ग़ैज़ व ग़ज़ब की हालत में या शदीद ख़ौफ़ व हरास की सूरत में कोई चोट लग जाये तो जब तक ग़ुस्सा फ़र्द और ख़ौफ़ कम नहीं होता उस वक़्त तक चोट की तकलीफ़ का एहसास नहीं होता। इसी तरह मअरकए कारज़ार में बहुत से ज़ख़्मी सिपाहियों को ज़ख़्म की अज़ीयत का एहसास उस वक़्त तक नहीं होता जब तक वह हर्ब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व पैकार में मुन्हमिक रहते हैं और जब उधर से तवज्जह हटती है तो तबीअत का रूख़ अपनी तरफ़ पलटता है और तकलीफ़ का एहसास उभर आता है। यह वह सूरतें हैं जिनमें मोहब्बत व शेफ़्तगी के जज़बात कारफ़रमा नहीं होते। मगर फिर भी इन्सानी एहसासात मग़लूब हो जाते हैं, और अगर मोहब्बत व वारफ़्तगी की सूरत हो तो दर्द व अलम का एहसास कैसा। दर्द की लज़्ज़त अंगेज़ी बढ़ती ही चली जाती है और आग के शोलों में तड़पने के बावजूद आतिश कदाए इश्क़ में जलने का ज़ौक़ कम नहीं होता।

चुनान्चे इश्क़ व मोहब्बत के वारदात में से यह एक मामूली वाक़िआ है कि एक दिल बाख़्ता मोहब्बत अपने महबूब के सामने एक बरतन में दवा को जोश दे रहा था और नज़ारए जमाल में इस हद तक महो था कि बरतन में चमचे के बजाये उसका हाथ हरकत करता रहा मगर उसे एहसास तक न हुआ, और जब उसे मुतवज्जह किया गया तो हाथ से गोश्त व पोस्त अलग हो चुका था यूंहि ज़नाने मिस्र की दिल बाख़्तगी का आलम कि जो छुरियां फलों के कांटने के लिये उन्हें दी जाती हैं वह उनके हाथों पर चल जाती हैं मगर न तो उन्हें हाथों के कटने का इल्म होता है और न अज़ीय्यत ही का एहसास होता है। तो अगर इश्के मजाज़ी व जमाले बशरी इस तरह हवास को मग़लूब कर दे सकता है तो जमाले अबदी व हुस्ने सरमदी के तास्सुरात किस हद तक खुद फ़रामोशी की कैफ़ियत तारी कर सकते हैं इस का अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता। यह मोहब्बते इलाही ही की करिश्मासाज़ी थी कि ख़लील[अ०] नारे नमरूद[ल०] में बेधड़क फांद पड़ते हैं, और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम के पैरों से हालते नमाज़ में तीर निकाल लिया जाता है तो जमाले अज़ली का इस्तग़राक़ अज़ीयत के अहसास से माने हो जाता है, और बाज़ शोहदा राहे ख़ुदा के मुतअल्लिक़ वारिद हुआ है कि उन्हें मैदाने जंग में तीर व तलवार और तेग़ व तबर की भरपूर चोटों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

का एहसास तक न होता था।

बहरहाल जब इन्सान मोहब्बते इलाही के नतीजे में राज़ी ब–रिज़ा रहने का ख़ूगर हो जाता है तो जिस हालत में होता है, उसी हालत में ख़ुश रहता है। न उसे अपनी शिकस्तगी व बद्हाली का शिकवा होता है और न ज़िन्दगी की तल्ख़ गामी का गिला। न दूसरों का जाह व इक़बाल उसे मुतास्सिर करता है और न दूसरों की दौलत व सरवत को देखकर उसमें हिरस व तमअ का जज़्बा उभरता है। क्योंकि उसे यह यक़ीन होता है कि रंज व कुलफ़त हो या आराम व राहत, उसरत व तंगी हो या सरवत व ख़ुशहाली सब में हिक्मत व मसलेहत कारफ़रमा है, और अल्लाह तआला का कोई फ़ेल हुदूदे अद्ल व इन्साफ़ से बाहर नहीं होता।

जब बादल और बिजली को देखते और रअद की आवाज़ सुनते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजमा) "बारे इलाहा! यह (अब्रो बर्क़) तेरी निशानियों में से दो निशानियां और तेरे ख़िदमत गुज़ारों में से दो ख़िदमत गुज़ार हैं जो नफ़ा रसां रहमत या ज़रर रसां उक़ूबत के साथ तेरे हुक्म की बजाआवरी के लिये रवां दवां हैं। तो अब इनके ज़रिये ऐसी बारिश न बरसा जो ज़रर व ज़ियां का बाअस हो और न इनकी वजह से हमें बला व मुसीबत का लिबास पहना। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उन बादलों की मुनफ़अत व बरकत हम पर नाज़िल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कर और इनके ज़रर व आज़ार का रूख़ हम से मोड़ दे और इनसे हमें कोई गज़न्द न पहुंचाना और न हमारे सामाने मईशत पर तबाही वारिद करना। बारे इलाहा! अगर इन घटाओं को तूने बतौरे अज़ाब भेजा है और बसूरते ग़ज़ब रवाना किया है तो फिर हम तेरे ग़ज़ब से तेरे ही दामन में पनाह के ख़्वास्तगार हैं। और अफ़वो व दरगुज़र के लिये तेरे सामने गिड़गिड़ा कर सवाल करते हैं। तू मुश्रिकों की जानिब अपने ग़ज़ब का रूख़ मोड़ दे और काफ़िरों पर आसियाए अज़ाब को गर्दिश दे ऐ अल्लाह! हमारे शहरों की ख़ुश्कसाली को सेराबी के ज़रिये दूर कर दे और हमारे दिल के वसवसों को रिज़्क़ के वसीले से बरतरफ़ कर दे और अपनी बारगाह से हमारा रूख़ मोड़ कर हमें दूसरों की तरफ़ मुतवज्जह न फ़रमा और हम सबसे अपने एहसानात का सरचश्मा ख़ता न कर, क्योंकि बेनयाज़ वही है जिसे तू बेनयाज़ करे और सालिम व महफ़ूज़ वही है जिसकी तू निगेहदाश्त करे। इस लिये कि तेरे अलावा किसी के पास (मुसीबतों का) दफ़ीया और किसी के हां तेरी सितवत व हैबत से बचाव का सामान नहीं है तू जिसकी निस्बत जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है और जिसके बारे में जो फ़ैसला करता है वह सादिर कर देता है तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें हैं कि तूने हमें मुसीबतों से महफ़ूज़ रखा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और तेरे ही लिये शुक्र है कि तूने हमें नेअमतें अता कीं। ऐसी हम्द जो तमाम हम्द गुज़ारों की हम्द को पीछे छोड़ दे। ऐसी हम्द जो ख़ुदा के आसमान व ज़मीन की फ़ज़ाओं को झलका दे। इस लिये कि तू बड़ी से बड़ी नेअमतों का अता करने वाला. और बडे से बड़े इनआमात का बख़्शने वाला है। मुख़्तसर सी हम्द को भी कुबूल करने वाला और थोड़े से शुक्रिये की भी क़द्र करने वाला है और असान करने वाला और बहुत नेकी करने वाला और साहेबे करम व बख़्शिश है। तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं और तेरी ही तरफ़ (हमारी) बाज़गश्त है।"

जब सूरज की तेज़ शुआएं समन्दरों और झीलों की सतह से बुख़ारात उठाती हैं तो वह बुख़ारात जो नन्ही नन्ही बूंदों का मजमूआ होते हैं बादलों की दिलफ़रेब सूरत में फ़िज़ा में लहराने और हवा में उड़ने लगते हैं और जब हवा के झोंके उन्हें हरकत में लाते हैं तो उनकी तहों में पानी का जमा शुदा ज़ख़ीरा कभी हल्की फूहार और कभी धुवांदार बारिश की सूरत में बरसने लगता है और टीलों, चट्टानों पर से गुज़रता नदी नालों को छलकाता, ज़मीन के ज़र्रे ज़र्रे को सेराब कर देता है जिससे ज़मीन की सतह पर हरियाली और काश्तकार के चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ जाती है। चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम का इरशाद है :—

(तरजुमा) "ख़ुदा ही वह है जो हवाओं को चलाता है तो वह बादलों को हरकत में लाती हैं। फिर वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिस तरह चाहता है उन्हें फ़िज़ा में फैला देता है और उन्हें टुकड़े टुकड़े कर देता है। फिर तुम देखते हो कि उन बादलों के अन्दर से बूंदें निकल पड़ती हैं, फिर ख़ुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उन्हें बरसाता है तो वह ख़ुशियां मनाने लगते हैं।"

जब इन बादलों में नन्ही नन्ही बूंदें हवा से टकराती या आपस में रगड़ खाती हैं तो इस टकराव से इनमें बर्क़ी कुव्वत पैदा होती है जो बाज़ बादलों में मुस्बत होती है और बाज़ में मनफ़ी। इस तरह कि जिस तरफ़ से बिजली आती है उसे मुस्बत का नाम दे दिया गया है और जिधर जाती है उसे मनफ़ी कह लेते हैं। जब यह मुस्बत और मनफ़ी वाले बादल एक दूसरे के क़रीब आते हैं तो यह दोनों मुतज़ाद क़िस्में आपस में टकराती हैं जिससे रौशनी का एक शरारह पैदा होता है जो अपनी तेज़ी और चमक की वजह से आंखों में चकाचौंद पैदा कर देता है; इस शरारह का नाम बर्क़ है। यह बर्क़ हर वक़्त दरख़्शां रहती है और एक सेकेण्ड में कम व बेश सौ मर्तबा चमकती है, और उसके हर शरारह में दस करोड़ वोल्ट से ले कर बीस अरब तक बिजली होती है। इस शरारह से इस क़द्र गर्मी पैदा होती है कि आस पास की हवा गर्म हो जाती है और इस गर्मी की वजह से इसका फैलाव बढ़ जाता है और उसकी जगह पर चारों तरफ़ से ठण्डी हवायें इन्तेहाई तेज़ रफ़्तारी के साथ बढ़ती हैं जिससे कड़क की आवाज़ पैदा होती है। इस कड़क का नाम रअद है। यह कड़क बिजली के चमकने के चन्द दक़ीक़े बाद सुनाई देती है। इस लिये कि आवाज़ की रफ़्तार रौशनी की रफ़्तार से बहुत सुस्त होती है। चुनान्चे रौशनी की रफ़्तार एक लाख छियासी हज़ार दो सौ चौरासी मील फ़ी सेकेण्ड है और आवाज़ की रफ़्तार तीन सौ सत्तर गज़ फ़ी सेकेण्ड है। इस लिहाज़ से अगर एक मील के फ़ासले से रौशनी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और आवाज़ एक साथ चलें तो आवाज़ पांच सेकेण्ड बाद में पहुंचेगी। कभी कभी यह बिजली ज़मीन पर गिर भी पड़ती है। इसकी वजह यह है कि जब बर्क़ी कुव्वत वाला बादल ठण्डक पाकर ज़मीन के क़रीब आ जाता है तो उससे ऊँची और बुलन्द सतह इमारतें ऊँचे ऊँचे दरख़्त और खुले मैदान और उनमें चलने फिरने वाले इन्सान और चौपाये बर्क़ाए जाते हैं। और जब उनकी जमा शुदा बर्क़ी कुव्वत बादलों की मुख़ालिफ़ बर्क़ी कुव्वत से टकराती है तो धमाके के साथ रौशनी और गर्मी पैदा होती है। इसे उरफ़े आम में बिजली का गिरना कहते हैं। इससे हर वह चीज़ मुतास्सिर होती है जो उसकी ज़द में आ जाती है। न इससे सरबुलन्द इमारतें महफ़ूज़ रह सकती हैं और न कोई जानदार ज़िन्दा व सलामत रह सकता है। मगर जहां यह हलाकत व तबाही का सरो सामान लिये हुए है वहां बेश बहा फ़वाएद की भी हामिल है। चुनान्चे इस बिजली से एक साल के अर्से में दस करोड़ टन नाईट्रोजन गैस पैदा होती है। जो बारिश के साथ ज़मीन पर उतरती है और ज़मीन की कुव्वत व नशो नुमा को बढ़ाती और उसके लिये खाद का काम देती है चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम ने इसके दोनों पहलूओं की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया। ''उसकी निशानियों में से एक यह है कि उसने तुम्हें बिजली का मन्ज़र दिखाया जिसका एक रुख़ ख़ौफ़नाक और दूसरा उम्मीद अफ़ज़ा है।''

जब अदाये शुक्र में कोताही का एतराफ़ करते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजुमा) ''बारे इलाहा कोई शख़्स तेरे शुक्र की किसी मंज़िल तक नहीं पहुंचता। मगर यह कि तेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इतने अहसानात मुजतमा हो जाते हैं कि वह उस पर मज़ीद शुक्रिया लाज़िम व वाजिब कर देते हैं और कोई शख़्स तेरी एताअत के किसी दर्जे पर चाहे वह कितनी ही सरगर्मी दिखाये, नहीं पहुंच सकता, और तेरे इस इस्तेहक़ाक़ के मुक़ाबले में जो बरबिनाये फ़ज़्ल व एहसान है, क़ासिर ही रहता है। जब यह सूरत है तो तेरे सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बन्दे भी अदाये शुक्र से आजिज़ और सबसे ज़्यादा एबादत गुज़ार भी दरमान्दा साबित होंगे; कोई इस्तेहक़ाक़ ही नहीं रखता कि तू उसके इस्तेहक़ाक़ की बिना पर बख़्श दे या उसके हक़ की वजह से उससे ख़ुश हो। जिसे तूने बख़्श दिया तो यह तेरा इनाम है, और जिससे तू राज़ी हो गया तो यह तेरा तफ़ज़्ज़ुल है। जिस अमले क़लील को तू कुबूल फ़रमाता है उसकी जज़ा फ़रावां देता है और मुख़्तसर इबादत पर भी सवाब मरहमत फ़रमाता है यहां तक कि गोया बन्दों का वह शुक्र बजा लाना जिसके मुक़ाबले में तूने अज्रो सवाब को ज़रूरी क़रार दिया और जिसके एवज़ को अज्रे अज़ीम अता किया, एक ऐसी बात थी कि इस शुक्र से दस्तबरदार होना उनके अख़्तियार में था तो इस लिहाज़ से तूने अज्र दिया (कि उन्होंने बाअख़्तियारे ख़ुद शुक्र अदा किया) या यह कि अदाये शुक्र के असबाब तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में न थे (और उन्होंने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़ुद असबाबे शुक्र मोहय्या किये) जिस पर तूने उन्हें जज़ा मरहमत फ़रमाई। (ऐसा तो नहीं है) बल्कि ऐ मेरे मअबूद! तू उनके जुमला उमूर का मालिक था। क़ब्ल इसके कि वह तेरी एबादत पर क़ादिर व तवाना हों और तूने उनके लिये अज्र व सवाब को मोहय्या कर दिया था क़ब्ल इसके कि वह तेरी एताअत में दाख़िल हों और यह इस लिये कि तेरा तरीक़ए इनाम व इकराम तेरी आदते तफ़ज़्ज़ुल व अहसान और तेरी रविश अफ़वो व दरगुज़र है। चुनान्चे तमाम कायनात इसकी मोअतरिफ़ है कि तू जिस पर अज़ाब करे उस पर कोई ज़ुल्म नहीं करता और गवाह है इस बात की कि जिसको तू मआफ़ कर दे, उस पर तफ़ज़्ज़ुल व एहसान करता है, और हर शख़्स इक़रार करेगा अपने नफ़्स की कोताही का उस (एताअत) के बजा लाने में जिसका तू मुस्तहक़ है। अगर शैतान उन्हें तेरी इबादत से न बहकाता तो फिर कोई शख़्स तेरी नाफ़रमानी न करता। और अगर बातिल को हक़ के लिबास में उनके सामने पेश न करता तो तेरे रास्ते से कोई गुमराह न होता। पाक है तेरी ज़ात, तेरा लुत्फ़ व करम, फ़रमांबरदार हो या गुनाहगार हर एक के मामले में किस क़द्र आशकारा है यूं कि एताअत गुज़ार को इस अमले ख़ैर पर जिसके असबाब तूने ख़ुद फ़राहम किये हैं जज़ा देता है; और गुनाहगार

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

को फ़ौरी सज़ा देने का एख़्तियार रखते हुए फिर मोहलत देता है। तूने फ़रमांबरदार व नाफ़रमान दोनों को वह चीज़ें दी हैं जिनका उन्हें इस्तेहक़ाक़ न था। और उनमें से हर एक पर तूने वह फ़ज़ल व एहसान किया है जिसके मुक़ाबिले में उनका अमल बहुत कम था। और अगर तू एताअत गुज़ार को सिर्फ़ उन आमाल पर जिनका सरो सामान तूने मोहय्या किया है जज़ा देता तो क़रीब था कि वह सवाब को अपने हाथ से खो देता और तेरी नेअमतें उससे ज़ायल हो जातीं। लेकिन तूने अपने जूद व करम से फ़ानी व कोताह मुद्दत के आमाल के एवज़ तूलानी व जावदानी मुद्दत का अज्र व सवाब बख़्शा और क़लील व ज़वाल पज़ीर आमाल के मुक़ाबले में दाएमी व सरमदी जज़ा मरहमत फ़रमाई। फिर यह कि तेरे ख़्वाने नेअमत से जो रिज़्क़ खा कर उसने तेरी एताअत पर कुव्वत हासिल की उसका कोई एवज़ तूने नहीं चाहा और जिन आज़ा व जवारेह से काम ले कर तेरी मग़फ़रत तक राह पैदा की उसका सख़्ती से कोई मुहासिबा नहीं किया, और अगर तू ऐसा करता तो उसकी तमाम मेहनतों का हासिल और सब कोशिशों का नतीज़ा तेरी नेअमतों और एहसानों में से एक अदना व मामूली क़िस्म की नेअमत के मुक़ाबिले में ख़त्म हो जाता और बक़िया नेअमतों के लिये तेरी बारगाह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में गिरवी होकर रह जाता। (यानी उसके पास कुछ न होता कि अपने को छुड़ाता) तो ऐसी सूरत में वह कहां तेरे किसी सवाब का मुस्तहक़ हो सकता था? नहीं! वह कब मुस्तहक़ हो सकता था। ऐ मेरे मअबूद! यह तो तेरी एताअत करने वाले का हाल और तेरी इबादत करने वाले की सरगुज़श्त है और वह जिसने तेरे अहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी की और तेरे मन्हीय्यात का मुरतकब हुआ उसे भी सज़ा देने में तूने जल्दी नहीं की ताकि वह मअसियत व नाफ़रमानी की हालत को छोड़ कर तेरी एताअत की तरफ़ रुजूअ हो सके। सच तो यह है कि जब पहले पहल उसने तेरी नाफ़रमानी का क़सद किया था जब ही वह हर उस सज़ा का जिसे तूने तमाम ख़ल्क़ के लिये मोहय्या किया है मुस्तहक़ हो चुका था तो हर वह अज़ाब जिसे तूने उससे रोक लिया और सज़ा व उक़ूबत का हर वह जुमला जो उससे ताख़ीर में डाल दिया, यह तेरा अपने हक़ से चश्म पोशी करना और इस्तेहक़ाक़ से कम पर राज़ी होना है। ऐ मेरे मअबूद! ऐसी हालत में तुझसे बढ़ के कौन करीम हो सकता है और इससे बढ़ के जो तेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तबाह व बर्बाद हो कौन बदबख़्त हो सकता है? नहीं! कौन है जो उससे ज़्यादा बदबख़्त हो! तू मुबारक है कि तेरी तौसीफ़ लुत्फ़ व अहसान ही के साथ हो सकती है, और तू

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बुलन्द तर है इससे कि तुझसे अदल व इन्साफ़ के खिलाफ़ का अन्देशा हो। जो शख़्स तेरी नाफ़रमानी करे तुझसे यह अन्देशा हो ही नहीं सकता कि तू उस पर ज़ुल्म व जौर करेगा और न उस शख़्स के बारे में जो तेरी रिज़ा व खुशनूदी को मलहूज़ रखे तुझसे हक़ तलफ़ी का ख़ौफ़ हो सकता है। तू मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी आरज़ूओं को बर ला और मेरे लिये हिदायत और रहनुमाई में इतना इज़ाफ़ा फ़रमा कि मैं अपने कामों में तौफ़ीक़ से हमकिनार रहूं इस लिये कि तू नेअमतों का बख़्शने वाला और लुत्फ़ व करम करने वाला है।

यह दुआ अदाये शुक्र में एतराफ़े तक़सीर के सिलसिले में है। यह अम्र किसी दलील का मोहताज नहीं है कि ख़ुदा वन्दे आलम की नेअमतों का शुक्र मुम्किन ही नहीं है। अव्वलन् यह कि उसकी नेअमतों का शुमार नहीं हो सकता जैसा कि इरशादे बारी है : "अगर तुम अल्लाह तआला की नेअमतों को गिनना चाहो तो उनका एहसा नहीं कर सकते"। और दूसरे यह कि शुक्रे नेअमत ख़ुद एक नेअमत है। इस तरह कि उसने नेअमत का एहसास पैदा करके शुक्रे नेअमत की तौफ़ीक़ अता की। लेहाज़ा इस नेअमत पर भी शुक्र वाजिब होगा, और यह सिलसिला सिवाये एतराफ़े इज्ज़ के कहीं ख़त्म नहीं हो सकता। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि ख़ुदा वन्दे आलम ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि मूसा[अ०]! मेरा शुक्र बजा लाओ, ऐसा कि मेरे शुक्र का हक़ अदा हो जाये।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं क्योंकर तेरे शुक्र का हक़ अदा कर सकता हूं, जबकि अदाये शुक्र खुद एक नेअमत है। तो कुदरत की तरफ़ से इरशाद हुआ :– "ऐ मूसा[अ०]! अब तुमने मेरा शुक्र अदा किया, जबकि यह जान लिया कि अदाये शुक्र भी मेरी एक नेअमत है।"

शुक्र के चन्द अरकान व अजज़ा हैं, और जिस तरह इन अजज़ा के मजमूए पर शुक्र का इतलाक़ होता है इसी तरह उसके हर जुज़ पर भी शुक्र का इतलाक़ होता है और इलाही अजज़ा के बक़द्र अजरो सवाब का इस्तेहक़ाक़ पैदा होता है। पहला जुज़ यह है कि इन्सान यह इल्म व यक़ीन पैदा करे कि अल्लाह तआला ही तमाम नेअमतों का सर चश्मा और वही मुनअ़मे हक़ीक़ी व वली नेअमत है; और जो कुछ बिलवास्ता या बिलावास्ता मिलता है उसी की तरफ़ से मिलता है। जब वह इस हक़ीक़त को समझ लेता और इस पर यक़ीन कर लेता है तो वह शुक्र के एक दर्जे से ओहदाबरा हो जाता है। चुनान्चे मरवी है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बारगाहे एज़दी में अर्ज़ की कि ऐ मेरे परवर दिगार! मैं क्योंकर तेरे शुक्र से ओहदाबरा हो सकता हूं जबकि शुक्र भी तेरी एक नेअमत है जिस पर शुक्र वाजिब है तो खुदा वन्दे आलम ने उन पर वही की कि : "मैं मक़ामे शुक्र में इस बात पुर तुम से ख़ुश हूं कि तुमने यह जान लिया कि तमाम नेअमतें मेरी जानिब से हैं।"

दूसरा जुज़ यह है कि अल्लाह तआला की नेअमतों पर खुशव ख़ुशनूद रहे। न इस लिहाज़ से कि यह नेअमतें दुनयवी लज़्ज़त व कामरानी का ज़रिया हैं बल्कि इस एतबार से कि वह उनके ज़रिये खुदाई ख़ुशनूदी हासिल कर सकता है। इस तरह कि सदक़ा व ख़ैरात दे, फ़राएज़े माली अदा करे अज़ीज़ों, रिश्तेदारों, मोहताजों को इमदाद दे कर उन्हें एहतियाज की सतह से बुलद कर दे। दीनी व मज़हबी और रिफ़ाहे आम्मा के कामों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में हिस्सा ले। इन दोनों हालतों में इस तरह इम्तियाज़ किया जा सकता है के अगर उमूरे ख़ैर में सर्फ़ करने से दिल में मसर्रत पैदा हो तो यह नेअमतों ार ख़ुशनूदी अल्लाह तआला के लिये है, और अगर उमूरे ख़ैर में सर्फ़ करने ार दिल आमादा न हो या इन में सर्फ़ करने से दिल में इत्मिनान व मसर्रत ही कैफ़ियत पैदा न हो तो यह ख़ुशनूदी सिर्फ़ दुनयवी हिज़ान्दोज़ी के लिये े जो शुक्रे इलाही में महसूब न होगी।

तीसरा जुज़ यह है कि दिल और ज़बान से अल्लाह तआला की तारीफ़ । सताइश करे। दिल से सताइश यह है कि उसके अज़मत व जलाल और ःबत व अजलाल से मुतास्सिर हो उसके अफ़आल व आसार में ग़ौरो फ़िक्र ःरे और ख़ल्क़े ख़ुदा के लिये नेक ख़यालात व जज़्बात को दिल में जगह ः और उनसे नेकी व अहसान का इरादा रखे और ज़बान से सताइश यह ः कि हम्दो सना के अल्फ़ाज़ अपनी ज़बान से अदा करे चुनान्चे इमाम ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :– "नेअमत ख़्वाह कितनी ड़ी हो उस पर अदाये शुक्र का तरीक़ा यह है कि तुम अल्लाह ी हम्द व सना करो।"

चौथा जुज़ यह है कि अल्लाह तआला की नेअमतों को सिर्फ़ उन चीज़ों सर्फ़ करे जिनसे अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी व रिज़ा वाबस्ता हो और न्हें हराम और नापसन्दीदा कामों में सर्फ़ न करे। चुनान्चे इमाम जाफ़रे ादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :– "शुक्रे नेअमत यह है कि ोहर्रेमात से किनाराकशी करो।" जो शख़्स इन तमाम उमूर को ल्हूज़ रखता है वह अपने परवर दिगार का शुक्र गुज़ार बन्दा कहलाता है। गर ऐसे शुक्र गुज़ार बन्दे बहुत कम हैं जैसा कि इरशादे इलाही है :–"मेरे न्दों में शुक्र गुज़ार बन्दे बहुत थोड़े हैं।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बन्दों की हक़तलफ़ी और उनके हुक़ूक़ में कोताही से मअज़रत तलबी और दोज़ख़ से गुलूख़लासी के लिये यह दुआ पढ़ते :

(तरजुमा) "बारे इलाहा! मैं उस मज़लूम की निस्बत जिस पर मेरे सामने ज़ुल्म किया गया हो और मैंने उसकी मदद न की हो और मेरे साथ कोई नेकी की गयी हो और मैंने उसका शुक्रिया अदा न किया हो और इस बदसुलूकी करने वाले की बाबत जिसने मुझसे मअज़रत की हो और मैंने उसके उज़्र को न माना हो, और उस फ़ाक़ाकश के बारे में जिसने मुझसे मांगा हो और मैंने उसे तरजीह न दी हो, और उस हक़दार मोमिन के हक़ के मुतअल्लिक़ जो मेरे ज़िम्मे हो और मैंने अदा न किया हो और उस मर्दे मोमिन के बारे में जिसका कोई ऐब मुझ पर ज़ाहिर हुआ हो और मैंने उस पर पर्दा न डाला हो, और हर उस गुनाह से जिससे मुझे वास्ता पड़ा हो और मैंने उससे किनाराकशी न की हो, तुझसे उज़्रख़्वाह हूं। बारे इलाहा! मैं उन तमाम बातों से और उन जैसी दूसरी बातों से शर्मसारी व निदामत के साथ ऐसी मअज़रत करता हूं जो मेरे लिये उन जैसी पेश आईन्द चीज़ों के लिये पन्दो नसीहत करने वाली हो। तू मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उन लग़ज़िशों से जिनसे मैं दो चार हुआ हूं मेरी पशेमानी को और पेश आने वाली बुराईयों से दस्त बरदार होने के इरादे को ऐसी तौबा क़रार दे जो मेरे लिये तेरी मोहब्बत का बाएस हो। ऐ तौबा करने वालों को दोस्त रखने वाले।

जब इन्सान किसी ख़ता का मुरतकब होता है या उसके बारे में इरतकाबे ख़ता का शुबहा किया जाता है तो वह उसके मवाख़िज़ा से बचने या उस शुबहे के दफ़िये के लिये जो अर्ज़ मअरूज़ करता है उसे एतेज़ार से ताबीर किया जाता है। यह दुआ भी बसिलसिलए एतेज़ार है जिसमें हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल एबाद से उज़्र ख़्वाही की है। एतेज़ार तीन तरह से होता है। एक यह कि अज़ा ख़्वाह यह कहे कि मैंने इस काम को किया ही नहीं है। इस सूरत में उससे मवाख़िज़े का सवाल पैदा ही नहीं होता। और दूसरी सूरत यह है कि यह कहे कि मैंने यह काम किया है मगर इन वुजूह व असबाब से; ऐसी सूरत में उन वुजूह का जाएज़ा लेने के बाद उसका उज़्र क़ाबिले तस्लीम या मुस्तरद हो सकता है और इसी एतेबार से वह जुर्म या ख़ता से बरी मतसव्वुर होगा। तीसरी सूरत यह है कि यह कहे कि मैंने यह काम किया तो है और इसमें मेरा सरासर कुसूर है। लेकिन मैं ये अहद करता हूं कि आइन्दा ऐसा नहीं करूंगा। यह माज़रते तलबी तौबा के मआनी में है जो लग़ज़िश व ख़ता के एतराफ़ और आइन्दा उससे बाज़ रहने के अहद पर मुश्तमिल होती है। यहां पर एतज़ार उसी तौबा में है और इस मआनी का शाहिद यह इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "यह वह दिन होगा कि लोग ज़बान न

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हिला सकेंगे और न उन्हें इजाज़त दी जायेगी कि उज़्र मअज़रत कर सकें।"

इस्लाम ने इन्सानी ज़ेहनियत की तामीर करना चाही थी जो न सिर्फ़ दीनी लिहाज़ से अहमियत रखते हैं बल्कि अख़लाक़ी एतेबार से भी उनकी बड़ी क़दरो क़ीमत है। वह लोग जो बअज़ इस्लामी अफ़राद के अमल से इस्लाम के दामन को दाग़दार साबित करने की नाकाम कोशिश करते हैं वह दुआ को देखें कि क्या अख़लाक़ी तरबियते बाहमी तआव्वुन व हमदर्दी और इस्लाह मआशिरे के ऐसे तालीमात कहीं और भी नज़र आते हैं?

पहली तालीम यह है कि अगर कोई कमज़ोर व लाचार ज़ुल्म व तशद्दुद का निशाना बन रहा हो और काई दूसरा शख़्स इस ज़ुल्म की रोक थाम कर सकता हो तो उसकी नुसरत व हिमायत के लिये उसे सीना सिपर होना चाहिये और जहां तक मुम्किन हो उसे ज़ालिम के पंजे से रेहाई दिलाना चाहिये। वरना वह अल्लाह तआला के नज़दीक क़ाबिले मवाख़िज़ होगा। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :—

(तरजुमा) "जो मोमिन अपने किसी बरादरे मोमिन की नुसरत पर क़ादिर हो और वह उसकी मदद करे तो अल्लाह तआला उसकी आख़रत में मदद करेगा। और जो नुसरत पर कुदरत व इक़्तिदार के बावजूद पहलू तही करे तो अल्लाह तआला उसे दुनिया व आख़रत में अपनी नुसरत से महरूम कर देगा।"

दूसरी तालीम यह है कि जो शख़्स तुमसे नेकी व अहसान करे तो जज़बए अहसान शिनासी के पेशे नज़र उसके हुस्ने सुलूक का क़ौलन व अमलन् शुक्रिया अदा करो, और अगर अमलन मुम्किन न हो तो ज़बानी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शुक्रिया अदा करने में बुख़ल से काम न लो, चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "जो तुमसे हुस्ने सुलूक करे उसका शुक्रिया अदा करो और जो तुम्हारा शुक्रिया अदा करे उससे हुस्ने सुलूक करो।"

तीसरी तालीम यह है कि अगर कोई शख़्स अपनी किसी ग़लती से मअज़रत करे तो बुलन्दज़र्फ़ी का सुबूत देते हुए उसके उज़्र को कुबूल करो, क्योंकि उज़्र एतराफ़े जुर्म की अलामत है और एतराफ़े जुर्म का तक़ाज़ा यह है कि उससे दरगुज़र किया जाये चुनान्चे इरशादे नबवी[स०] है :–

(तरजुमा) "जो शख़्स उज़्र करने वाले के उज़्र को कुबूल नहीं करता आम इससे कि वह सच्चा हो या झूठा वह मेरी शफ़ाअत से महरूम रहेगा।"

चौथी तालीम यह है कि जो मोहताज और सरो सामाने मईशत से महरूम हो उसकी एआनत व ख़बरगीरी करो। ऐसा न हो कि ख़ुद ऐश व आराम की ज़िन्दगी बसर करो और दूसरों को फ़क्र व फ़ाक़े की मुसीबतें उठाने के लिये छोड़ दो, बल्कि जौहरे इन्सानियत यह है कि अपनी ज़ात पर दुख झेल लो तंगी व उसरत में बसर कर लो मगर दूसरों को फ़ाक़ा व गरसंगी में देखना गवारा न करो। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "वह अपने ऊपर तंगी बर्दाश्त करते हुए दूसरों को अपने नफ़्स पर तरजीह देते हैं।"

पांचवीं तालीम यह है कि अहले ईमान के जो हुकूक़ तुम पर आयद होते हों उन्हें अदा करने की पूरी पूरी कोशिश करो इस लिये कि जिस तरह आख़रत में हुकूकुल्लाह के मुतअल्लिक़ पूछा जायेगा, हुकूकुल एबाद के मुतअल्लिक़ भी जवाबदेह होना पड़ेगा। वह हुकूक़ क्या हैं? उन्हें सादिक़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आले मोहम्मद[स०] की ज़बान से सुनिये। मअला इब्ने ख़नीस कहते हैं कि मैंने हज़रत[अ०] से पूछा कि एक मोमिन का दूसरे मोमिन पर क्या हक़ है? आप[अ०] ने फ़रमाया :-

(तरजुमा) "पहला हक़ यह है कि जो अपने लिये पसन्द करते हो वह उसके लिये भी पसन्द करो और जो अपने लिये नापसन्द करते हो वह उसके लिये भी नापसन्द करो। दूसरा हक़ यह है कि उसे नाराज़ न करो। और उसकी रिज़ा व ख़ुशनूदी को मद्देनज़र रखो और उसके फ़रमान को पूरा करो। तीसरा हक़ यह है कि जान, माल, ज़बान और हाथ पांव से उसकी मदद करो। चौथा हक़ यह है कि तुम उसके लिये निगरान रहनुमा और ब-मंज़िला आईने के बनो (कि उसके उयूब व महासिन उसे दिखाते रहो) पांचवां हक़ यह है कि वह भूखा हो तो तुम सेर, वह प्यासा हो तो तुम सेराब, वह बेलिबास हो तो तुम तन ढांके हुए न हो। छठा हक़ यह है कि तुम्हारे हां नौकर हो और उसके हां न हो तो ज़रूरी है कि तुम अपने मुलाज़िम को भेजो कि वह उसका लिबास धोये, खाना तैयार करे और बिस्तर बिछाये। सातवां हक़ यह है कि उसकी क़सम पर एतमाद करो, उसकी दावत कुबूल करो उसके हां कोई बीमार हो तो बीमार पुरसी करो, उसके जनाज़े की मशाईयत करो। और जब तुम्हें इल्म हो कि उसे कोई हाजत दरपेश है तो उसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पूरा करने में जल्दी करो और उस पर उसे मजबूर न करो कि वह तुम्हारे सामने अपनी हाजत पेश करे जब ही तुम उसकी हाजत रवाई करो।"

इमाम अलैहिस्सलाम ने इस दुआ में लफ़्ज़े मोमिन की क़ैद लगा कर सिर्फ़ उस हक़ का ज़िक्र किया है जो अख़ूवते ईमानी की वजह से आयद होता है। इससे यह न समझा जाये कि जहां अख़ूवते ईमानी न हो वहां कोई हक़ ही नहीं है, जबकि काफ़िर के लिये हक़ जवार, हक़ अमानत और इस क़बील के दूसरे हुक़ूक़ साबित हैं। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "अमानतों को उनके अहल तक पहुंचाओ अगर चे वह मजूसी ही क्यों न हों।"

छठी तालीम यह है कि जिस तरह अपने उयूब की पर्दा पोशी करते हो उसी तरह दूसरे अहले ईमान के उयूब भी छुपाओ चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "जो शख़्स किसी मोमिन के बारे में ऐसी बात कहे जो उसे ज़लील करने वाली और उसकी आबरू को ज़ायल करने वाली हो अगर चे उसने आंखों से देखी और कानों से सुनी हो तो वह उन लोगों में महसूब होगा जिनके बारे में इरशादे इलाही है कि जो लोग यह चाहते हैं कि ईमानदारों में बुरी बातों का चर्चा फैले तो उनके लिये दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तलबे अफ़्वो व रहमत के लिये यह दुआ पढ़ते

''बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हर अम्रे हराम से मेरी ख़्वाहिश (का ज़ोर) तोड़ दे और हर गुनाह से मेरी हिरस का रूख़ मोड़ दे और हर मोमिन और मोमिना, मुस्लिम और मुस्लिमा की ईज़ा रसानी से मुझे बाज़ रख। ऐ मेरे मअबूद! जो बन्दा भी मेरे बारे में ऐसे अम्र का मुरतकब हो जिसे तूने उस पर हराम किया था और मेरी इज़्ज़त पर हमला आवर हुआ हो जिससे तूने उसे मना किया था; मेरा मज़लमा ले कर दुनिया से उठ गया हो या हालत हयात में उसके ज़िम्मे बाक़ी हो तो उसने मुझ पर जो ज़ुल्म किया है, उसे बख़्श दे और मेरा जो हक़ लेकर चला गया है उसे मआफ़ कर दे और मेरी निस्बत जिस अम्र का मुरतकब हुआ है उस पर उसे सरज़निश न कर और मुझे आज़ुर्दा करने के बाएस उसे रुस्वा न फ़रमा और जिस अफ़्वो व दरगुज़र की मैंने उनके लिये पेशकश की है और जिस करम व बख़्शिश को मैंने उनके लिये रवा रखा है उसे सदक़ा करने वालों के सदक़े से पाकीज़ातर और तक़र्रूब चाहने वालों के अतियों से बुलन्दतर क़रार दे और इस अफ़्वो व दरगुज़र के एवज़ तू मुझसे दरगुज़र कर और उनके लिये दुआ करने के सिले में मुझे अपनी रहमत से सरफ़राज़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़रमा ताकि हममें से हर एक तेरे फ़ज़्ल व करम की बदौलत ख़ुश नसीब हो सके, व तेरे लुत्फ़ व एहसान की वजह से नजात पाये। ऐ अल्लाह! तेरे बन्दों में से जिस किसी को मुझसे कोई ज़रर पहुंचा हो या मेरी जानिब से कोई अज़ीय्यत पहुंची हो या मुझसे या मेरी वजह से उस पर ज़ुल्म हुआ हो इस तरह कि मैंने उसके किसी हक़ को ज़ाया किया हो या उसके किसी मज़लमा की दादख़्वाही न की हो! तू मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी ग़िना व तवन्गरी के ज़रिये उसे मुझसे राज़ी कर दे और अपने पास से उसका हक़ बेकम व कास्त अदा कर दे। फिर यह कि उस चीज़ से जिसका तेरे हुक्म के तहत सज़ावार हूं, बचा ले और जो तेरे अद्ल का तक़ाज़ा है उससे नजात दे। इस लिये कि मुझे तेरे अज़ाब के बर्दाश्त करने की ताब नहीं और तेरी नाराज़गी के झेल ले जाने की हिम्मत नहीं। लेहाज़ा अगर तू मुझे हक़ व इन्साफ़ की रू से बदला देगा तो मुझे हलाक कर देगा, और अगर दामने रहमत में नहीं ढांपेगा तो मुझे ताब कर देगा। ऐ अल्लाह! ऐ मेरे मअबूद! मैं तुझसे उस चीज़ का तालिब हूं जिस के अता करने से तेरे हां कुछ कमी नहीं होती और वह बार तुझ पर रखना चाहता हूं जो तुझे गरांबार नहीं बनाता। और तुझसे उस जान की भीख मांगत हूं जिसे तूने इस लिये पैदा नहीं किया कि उसके ज़रिये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़रर व ज़ियां से तहफ़्फ़ुज़ करे या मनफ़अत की राह निकाले बल्कि इस लिये पैदा किया ताकि उस अम्र का सुबूत बहम पहुंचाये और इस बात पर दलील लाये कि तू उस जैसी और उस तरह की मख़लूक़ पैदा करने पर क़ादिर और तवाना है और तुझ से इस अम्र का ख़्वास्तगार हूं कि मुझे इन गुनाहों से सुबुकबार कर दे जिनका बार मुझे हल्कान किये हुए है, और तुझसे मदद मांगता हूं उस चीज़ की निस्बत जिस की गरांबारी ने मुझे आजिज़ कर दिया है। तू मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरे नफ़्स को बावजूदे कि उसने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया है बख़्श दे और अपनी रहमत को मेरे गुनाहों का बारेगरां उठाने पर मामूर कर इस लिये कि कितनी ही मरतबा तेरी रहमत गुनाहगारों के हमकिनार और तेरा अफ़वो व करम ज़ालिमों के शामिले हाल रहा है तू मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे उन लोगों के लिये नमूना बना जिन्हें तूने अपने अफ़वो के ज़रिये ख़ताकारों के गिरने के मक़ामात से ऊपर उठा लिया और जिन्हें तूने अपनी तौफ़ीक़ से गुनाहगारों के मोहलिकों से बचा लिया तो वह तेरे अफ़वो व बख़्शिश के वसीले से तेरी नाराज़गी के बन्धनों से छूट गये और तेरे अहसान की बदौलत अद्ल की बन्दिशों से आज़ाद हो गये। ऐ मेरे अल्लाह! अगर तू मुझे माफ़ कर दे तो तेरा यह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सुलूक उसके साथ होगा जो सज़ावारे उक़ूबत होने से इन्कारी नहीं है और न मुस्तहक़े सज़ा होने से अपने को बरी समझता है। यह तेरा बर्ताव उसके साथ होगा ऐ मेरे मअबूद! जिसका ख़ौफ़ उम्मीदे अफ़वो से बढ़ा हुआ है और जिसकी नजात से नाउम्मीदी, रेहाई की तवक़्क़ो से क़वीतर है। यह इस लिये नहीं कि उसकी नामउम्मीदी रहमत से मायूसी हो या यह कि उसकी उम्मीद फ़रेब ख़ुरदगी का नतीजा हो बल्कि इस लिये कि उसकी बुराईयां नेकियों के मुक़ाबले में कम और गुनाहों के तमाम मवारिद में उज़्र ख़्वाही के वजूह कमज़ोर हैं, लेकिन ऐ मेरे मअबूद! तू उसका सज़ावार है कि रास्तबाज़ लोग भी तेरी रहमत पर मग़रूर हो कर फ़रेब न खायें और गुनाहगार भी तुझसे नाउम्मीद न हों। इस लिये तू वह रब्बे अज़ीम है कि किसी पर फ़ज़्ल व अहसान से दरेग़ नहीं करता और किसी से अपना हक़ पूरा पूरा वसूल करने के दरपै नहीं होता। तेरा ज़िक्र तमाम नाम आवरों (के ज़िक्र) से बुलन्दतर है और तेरे असमा इससे कि दूसरे हस्ब व नस्ब वाले उनसे मौसूम हों मुनज़्ज़ा हैं। तेरी नेअमतें तमाम कायनात में फैली हुई है। लेहाज़ा इस सिलसिले में तेरे ही लिये हम्द व सताइश है। ऐ तमाम जहान के परवर दिगार।

अफ़वो व रहमत अल्लाह तआला की सिफ़तों में से एक अज़ीम सिफ़त

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है जिसका तज़किरा कुरआन मजीद के सफ़हात पर नुमायां और कसरत से फैला हुआ है। चुनान्चे उसने अपनी ज़ात के लिये रहमत व आमरज़िश को ज़रूरी क़रार देते हुए इरशाद फ़रमाया है :–

(तरजुमा) "तुम्हारे परवर दिगार ने अपने ऊपर रहमत लाज़िम कर ली है लेहाज़ा तुममें से जो कोई नादानी से बुराई कर बैठे और फिर तौबा कर ले और अपनी हालत संवार ले (तो ख़ुदा उससे दरगुज़र करेगा) क्योंकि वह बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।"

इन सिफ़ात के तज़किरे से जहां सिफ़ाते इलाही का तसव्वुर पैदा करना मक़सूद है वहां यह भी मक़सद है कि उसके बन्दे इन औसाफ़ की झलक अपने अन्दर पैदा करें और अपने अख़लाक़ व आदात को अख़लाक़े इलाही के सांचे में ढांलने की कोशिश करें चुनान्चे जब इन्सान ग़ैज़ व ग़ज़ब और जोशे इन्तेक़ाम को दबा कर अफ़वो व दरगुज़र से काम लेता है तो वह रहमत व राएफ़त के लतीफ़ एहसासात के परतों में तख़लक़ू बे अख़्लाक़िल्लाह की मंज़िल की तरफ़ बढ़ता नज़र आता है और अपने क़ल्ब व ज़मीर में वक़्त व नर्मी के तास्सुरात पैदा करके मलकूती सिफ़ात से मुतसिफ़ हो जाता है और इसी मक़सद के पेशे नज़र ख़ुदा वन्दे आलम ने अपने बन्दों को अफ़वो व दरगुज़र की तालीम दी है। चुनान्चे इरशादे बारी है :–

(तरजुमा) "उन्हें चाहिये कि माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तआला तुम्हारी ख़तायें माफ़ कर दे और अल्लाह तआला तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(तरजुमा) "जो शख़्स अपने किसी मज़लमा को सिर्फ़ ख़ुशनूदिए ख़ुदा के पेशे नज़र माफ़ कर देता है तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी वजह से उसकी इज़्ज़त व रफ़अत में इज़ाफ़ा कर देगा।"

और अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम अपनी एक वसीयत में इरशाद फ़रमाते हैं :–

(तरजुमा) "अगर माफ़ कर दूं तो यह मेरे लिये रिज़ाये इलाही का बाअस है और वह तुम्हारे लिये भी नेकी होगी। लेहाज़ा माफ़ कर दो क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्श दे।"

जो शख़्स नफ़रत व इन्तेक़ाम के जज़बात से मग़लूब होकर अफ़वो व दरगुज़र की गुंजाइश पैदा नहीं करता उसे सोचना चाहिये कि अगर वह दूसरों की ख़ताओं को माफ़ नहीं कर दे सकता तो उसे यह हक़ कहां से पहुंचता है कि वह अल्लाह तआला की रहमत व मग़फ़रत की उम्मीद रखे और अपने गुनाहों से अफ़वो व बख़्शिश की इल्तेजा करे। अलबत्ता जो शख़्स इन्तेक़ामी जज़बात को दबा कर क़ुसूरवारों के क़ुसूर माफ़ कर देता और ख़ताकारों की ख़ताओं से दरगुज़र करता है उसे अल्लाह तआला से भी अफ़वो व बख़्शिश के तलब करने का हक़ पहुंचता है अगर चे दूसरों की चीरादस्तियों और सितमरानियों के मुक़ाबिले में सब्र व ग़ज़ब से काम लेना और अफ़वो व दरगुज़र को ब–रूएकार लाना कोई आसान बात नहीं है, क्योंकि इन्सान के लिये यही चीज़ें तो इश्तिआल का बाअस होती हें और मुश्तइल जज़बात के सेल को रोकना दरिया के रूख़ को मोड़ना है। मगर वह आज़ामाइश ही क्या जिसमें दुश्वारियों से गुज़रना और जज़बात व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अहसासात को कुचलना न पड़े। बेशक यह काम बलन्द हिम्मती और रूहानी कुव्वत ही के ज़ेरे असर अन्जाम पा सकता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजुमा) "जो शख़्स सब्र करे और बख़्श दे तो यह बड़ी बलन्द हिम्मती व उलुल अज़मी का मुज़ाहरा है।"

हज़रत[अ०] ने इस दुआ में यही तालीम दी है कि तुम अपने ख़ताकारों को बख़्शो ताकि अल्लाह तआला तुम्हारी ख़ताओं को बख़्शे। चुनान्चे इसी रविश को वसीला क़रार देते हुए अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे मअबूद! मैं एक इन्सान हूं जिसमें ग़ज़ब व इन्तेक़ाम के जज़बात हो सकते हैं। मगर मैं इन जज़बात से मुतास्सिर होने के बजाए अफ़वो व दरगुज़र की राह अख़्तियार करता हूं और उन लोगों को जिन्होंने मुझ पर ज़ुल्म व सितम किये, चरकों पर चरके लगाये, मेरे हुक़ूक़ ज़ाया व बर्बाद किये, इफ़्तरा परदाज़ी व किज़्बे तराशी से मेरी इज़्ज़त व आबरू पर हमला आवर हुए वह ज़िन्दा हों या मर चुके हों सब को यक क़लम माफ़ करता हूं और इन्तेक़ाम के बजाये तुझसे उनके लिये दुआये ख़ैर करता हूं ताकि लज़्ज़ते आज़ार इन्तेक़ामी जज़्बे से आलूदा न हो, और तू सरासर रहमत व राएफ़त है और नफ़रत व इन्तेक़ाम के जज़बात से मुबर्रा, तू क्योंकर मेरे अफ़वो व दरगुज़र को देख कर तेरी रहमत का इरादा जोश में न आयेगा और मुझे अपनी रहमत व राएफ़त के साये में जगह न देगा जबकि तेरे दामने रहमत में अच्छे और बुरों सब के लिये गुंजाइश है।

0

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जब किसी की ख़बरे मर्ग सुनते या मौत को याद करते तो यह दुआ पढ़ते

(तरजुमा) "ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उन की आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें तूल तवील उम्मीदों से बचाये रख और पुरखुलूस आमाल के बजा लाने से दामने उम्मीद को कोताह कर दे ताकि हम एक घड़ी के बाद दूसरी घड़ी के तमाम करने, एक दिन के बाद दूसरे दिन के गुज़ारने, एक सांस के बाद दूसरी सांस के आने और एक क़दम के बाद दूसरे क़दम के उठने की आस न रखें हमें फ़रेब, आरज़ू और फ़ितनए उम्मीद से महफ़ूज़ व मामून रख, और मौत को हमारा नसबुल ऐन क़रार दे और किसी दिन भी हमें इसकी याद से ख़ाली न रहने दे और नेक आमाल में से हमें ऐसे अमले ख़ैर की तौफ़ीक़ दे जिसके होते हुए हम तेरी जानिब बाज़गश्त में देरी महसूस करें और जल्द से तेरी बारगाह में हाज़िर होने के आरज़ूमन्द हों। इस हद तक कि मौत हमारे उन्स की मंज़िल हो जाये जिससे हम जी लगायें, और उल्फ़त की जगह बन जाये जिसके हम मुश्ताक़ हों और ऐसी अज़ीज़ हो जिसके कुर्ब को हम पसन्द करें। जब तू इसे हम पर वारिद करे और हम पर ला उतारे तो उसकी मुलाक़ात के ज़रिये हमें सआदतमन्द बनाना और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जब वह आये तो हमें उससे मानूस करना और उसकी मेहमानी से हमें बदबख़्त न क़रार देना और न उसकी मुलाक़ात से हम को रुस्वा करना और उसे अपनी मग़फ़ेरत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा और रहमत की कुंजियों में से एक किलीद क़रार दे और हमें इस हालत में मौत आये कि हम हिदायत याफ़्ता हों गुमराह न हों। फ़रमांबरदार हों और (मौत से) नफ़रत करने वाले न हों। तौबा गुज़ार हों ख़ताकार और गुनाह पर इसरार करने वाले न हों। ऐ नेकोंकारों के अज्र व सवाब का ज़िम्मा लेने वाले और बद्‌किरदारों के अमल व किरदार की इस्लाह करने वाले।

इस दुनिया में कोई इन्सान यह नहीं चाहता कि वह अपने इम्लाक, बाग़ात, माल व असासा और साज़ व सामाने राहत को छोड़ क़ब्र का तारीक गोशा बसाए और इस माद्दी ज़िन्दगी से राब्ता ख़त्म करके मौत से रिश्ता जोड़े, क्योंकि इस दुनियाए रंग व बू में इतनी जाज़बियत व कशिश है कि इसे अपने अख़्तियार से छोड़ा नहीं जा सकता अैर एक अपाहिज और मफ़लूज जो चल फिर नहीं सकता और एक अन्धा, बहरा, गूंगा जो देखने, सुनने और बोलने से आजिज़ है वह भी यही चाहता है कि जिस हालत में हूं ज़िन्दा रहूं। और अगर कोई शख़्स मौत का पैग़ाम सुन लेता है तो उसके दिल व दिमाग़ मौऊफ़ और होश व हवास मोअत्तल हो जाते हैं। चुनान्चे बयान किया जाता है कि एक मुनज्जिम ने किसी बादशाह से कह दिया कि तुम इतने अर्से के बाद फ़लां तारीख़ और फ़लां वक़्त मर जाओगे। इस पेशीनगोई में कोई वाक़ियत हो या न हो मगर हुआ यह कि दुनिया उसकी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

निगाहों में तीर ओ तार हो गयी। अगर चे पेशीनगोई के मुताबिक़ ज़िन्दगी का कुछ अर्सा बाक़ी था मगर उसने कारोबारे ममलिकत से हाथ उठा लिया, तख़्त व ताज को छोड़ कर गोशागुज़ीन हो गया। और ऐसा महसूस करने लगा कि एक एक रग और एक एक नस में मौत अपना ख़ूनी पंजा गड़ोए हुए है। यह मौत का तसव्वुर इतना भयानक क्यों है। अगर इन्सान ग़ौरो फ़िक्र से काम ले तो वह इस हक़ीक़त को समझ लेगा कि यह ज़िन्दगी एक दूसरी ज़िन्दगी का पेश ख़ेमा है। क्योंकि बिगड़ना बनने ही के लिये होता है और जब कि हर ग़ुरूब के बाद तुलूअ, हर ख़िज़ां के बाद बहार और हर शाम के बाद सुबह की नमूद ज़रूरी है, तो इस मौत के बाद ज़िन्दगी का ज़हूर क्यों न हो। एक दिन वह भी था कि इन्सान अद्म के अन्धेरे में पोशीदा था कि कुदरत ने एक ग़ैर मरई जरसूमा की सूरत में उसे सुल्बे पदर में वदीयत किया; वहां से शिकमे मादर में मुन्तक़िल हुआ जहां कुछ मुद्दत जमाद की सूरत में और कुछ अर्से लाशऊर की हालत में गुज़ारा। फिर इस दुनिया में आया जहां के राह व रसम से नावाक़िफ़ और आने के मक़सद से बेख़बर था तो इसके बाद अगर मंज़िल बदले और करवट ले कर एक नई ज़िन्दगी में क़दम रखे तो उसमें हैरत ही क्या है जब मौत के माने एक ज़िन्दगी से दूसरी ज़िन्दगी में क़दम रखने के हैं तो इससे डरने के कोई माने नहीं हैं। हां अगर दूसरी ज़िन्दगी को कामयाब बनाने के असबाब मोहय्या न किये गये हैं तो यक़ीनन् डर होगा। मगर दरहक़ीक़त यह मौत का डर नहीं है बल्कि वहां की नाकामी व रुस्वाई का डर है। इस लिहाज़ से दुनिया में तीन क़िस्म के लोग हैं। एक वह जो इस हक़ीक़त को समझते हैं कि दुनिया मज़रए आख़रत है जो यहां पर बोया जायेगा वही आख़रत में काटा जायेगा। इस लिये वह मक़सदे हयात के पेशे नज़र अमले आख़रत से ग़ाफ़िल नहीं रहते, और उनकी ख़्वाहिश यही होती है कि आख़रत का कोई

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

काम अधूरा और नामुकम्मल न रह जाये ताकि अल्लाह तआला उन्हें इनाम व इकराम का मुस्तहक़ समझे और उनसे राज़ी व ख़ुशनूद हो, और जब उन्हे मौत आती है तो वह यही समझते हैं कि हम इतनी ही मुद्दत के लिये यहा भेजे गये थे और अब वापस बुलाये जा रहे हैं। इस लिये दुनिया को छोड़ने का उन्हें ज़रा रंज नहीं होता। दूसरे वह जो ज़िन्दगी से ख़ुश तो नहीं होते मगर उसे छोड़ना भी नहीं चाहते। जैसे वह परिन्दे जिसे क़फ़स में डाल दिया गया हो मगर वह क़फ़स की ज़िन्दगी को नागवार समझने के बावजूद उसे छोड़ना नहीं चाहता, लेकिन जब उसे क़फ़स से अलग किया जाता है तो वह बाहर की खुली फ़िज़ा और उसकी रौनक़ व शादाबी को देख कर दोबारह उस क़फ़स की तरफ़ पलटना नहीं चाहता और न उसे क़फ़स के छोड़ने का रंज होता है। इसी तरह यह लोग जब आख़रत की वुसअत व पिन्हाई को देखते हैं तो तन्नाए दुनिया को छोड़ने का इन्हें सदमा नहीं होता बल्कि कैफ़ व मसर्रत के आलम में झूम कर यह कहने लगते हैं :-

> (तरजुमा) "उस अल्लाह तआला के लिये शुक्र है जिसने हमसे रंज व अन्दोह दूर कर दिया। बेशक हमारा परवर दिगार बड़ा बख़्शने वाला और क़द्रदान है जिसने अपने फ़ज़ल व करम से हमें एक दायमी मंज़िल में उतारा जहां न हमें कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न हमें ख़स्तगी लाहक़ होगी।"

तीसरे वह जो आख़रत की ज़िन्दगी से आंखें बन्द करके सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी पर क़ानेअ व मुतमइन होते हैं और उन्हें दुनयवी लज़्ज़तों और कामरानियों के अलावा और कोई ख़्वाहिश नहीं होती। ऐसे लोगों को दुनिया से मुंह मोड़ना इन्तेहाई गरां गुज़रता है और आख़रत की ज़िन्दगी उन्हें रास नहीं आती। बल्कि दुनिया की आलूदगियों और कसाफ़तों के बाद ज

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आलमे आख़रत की लताफ़तों और नेअमतों को देखेंगे तो वह दुनिया ही की गन्दगियों को याद करेंगे और जिस तरह दुनिया में उनकी आंखों पर पर्दा पड़ा हुआ था। उसी तरह आख़रत में भी अन्धे और बसीरत से महरूम होंगे। चुनान्चे इरशादे बारी है :–

(तरजुमा) "जो दुनिया में अन्धे हैं वह आख़रत में भी अन्धे और राहे हक़ से भटके हुए होंगे।"

परदा पोशी और हिफ़्ज़ व निगेहदाश्त के लिये यह दुआ पढ़ते

(तरजुमा) "बारे इलाहा! रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उन की आल[अ०] पर और मेरे लिये एज़ाज़ व इकराम की मसनद बिछा दे। मुझे रहमत के सरचश्मों पर उतार दे। वस्त बहिश्त में जगह दे, और अपने हां से नाकाम पलटा कर रंजीदा न कर, और अपनी रहमत से नाउम्मीद करके हिरमां नसीब न बना दे। मेरे गुनाहों का क़सास न ले, और मेरे कामों का सख़्ती से मुहासिबा न कर। मेरे छुपे हुए राज़ों को ज़ाहिर न फ़रमा, और मेरे मग़फ़ी हालात पर से पर्दा न उठा, और मेरे आमाल को अद्ल व इन्साफ़ के तराज़ू परन तोल। और अशराफ़ की नज़रों के सामने मेरी बातिनी हालत को आशकारा न कर जिसका ज़ाहिर होना मेरे लिये बाअसे नंग

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व आर हो वह उन से छिपाये रख और तेरे हुज़ूर जो चीज़ ज़िल्लत व रुस्वाई बाअस हो वह उनसे पोशीदा रहने दे। अपनी रिज़ामन्दी के ज़रिये मेरे दर्जे को बलन्द और अपनी बख़्शिश के वसीले से मेरी बुज़ुर्गी व करामत की तकमील फ़रमा और उन लोगों के गिरोह में मुझे दाख़िल कर जो दायें हाथ से नामए आमाल लेने वाले हैं और उन लोगों की राह पर ले चल जो (दुनिया व आख़रत में) अम्न व आफ़ियत से हमकिनार हैं और मुझे कामयाब लोगों के ज़मरे में क़रार दे और नेकूकारों की महफ़िलों को मेरी वजह से आबाद व पुर रौनक़ बना। मेरी दुआ को कुबूल फ़रमा ऐ तमाम जहानों के परवर दिगार।

जो शख़्स गुनाह को गुनाह समझता है वह फ़ितरतन् यह चाहता है कि उसके गुनाह पर पर्दा पड़ा रहे और किसी को उसके गुनाह पर इत्तिलाअ न हो और न कोई उसे इरतेकाबे मअसियत करते हुए देखे। यह पर्दादारी की ख़्वाहिश इसकी दलील है कि वह गुनाहों को क़ाबिले नफ़रत समझता है और उसके इज़्हार व एलान में शर्म महसूस करता है और यह शर्म मुब्दा व मआदके तसव्वुर और कोताही के एहसास का नतीजा है। जब इन्सान इस जज़्बे के ज़ेरे असर अपने गुनाह को छुपाना चाहता है तो कुदरत भी ऐसे असबाब मोहय्या कर देती है जो उसकी पर्दापोशी में मोअय्यन साबित होते हैं और आख़रत में भी ख़ुदा वन्दे आलम उसके गुनाहों पर पर्दा डालेगा और दूसरों की निगाहों में उसे ज़लील व सुबक न होने देगा, और जिस तरह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुनिया में उसकी परदा.पोशी की है उसी तरह आख़रत में भी उसकी पर्दा पोशी फ़रमाएगा। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "जब क़यामत का दिन होगा और बन्दए मोमिन के लिये जलवए इलाही का ज़हूर होगा तो अल्लाह सुब्हानहू उसके गुनाहों में से एक एक गुनाह पर उसे मुतलअ करेगा, फिर उसे बख़्श देगा और उसके गुनाहों पर न किसी मुक़र्रब फ़रिश्ते को और न किसी नबी मुरसल को आगाह करेगा! और जिन चीज़ों पर किसी का मुत्तलअ होना वह पसन्द न करता था उन्हें पोशीदा रहने देगा। फिर उसकी बुराईयों को नेकियों से बदल देगा।"

और जो शख़्स एलानिया अपने गुनाहों को बयान करता है या इस की परवा नहीं करता कि उसका गुनाह ढका छुपा रहे या खुल जाये, तो वह नज़रे मरहमते बारी से महरूम रहता है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "गुनाहों का एलान करने वाला महरूम रहेगा और छुपाने वाला बख़्श दिया जायेगा।"

गुनाह को छुपाने का नतीजा यह होता है कि इन्सान गुनाहों में बेबाक नहीं होने पाता और जब दूसरे उसके गुनाहों के मग़फ़ी होने की वजह से इससे हुस्ने ज़न रखते हैं तो वह भी यह चाहेगा कि इरतेकाबे मआसी से बाज़ रहे ताकि दूसरों का हुस्ने ज़न बाक़ी रह सके।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुआए ख़त्मुल कुरआन

(तरजमा) "बारे इलाहा! तूने अपनी किताब के ख़त्म करने पर मेरी मदद फ़रमाई। वह किताब जिसे तूने नूर बना कर उतारा और तमाम कुतुबे समाविया पर उसे गवाह बनाया और हर उस कलाम पर जिसे तूने बयान फ़रमाया इसे फ़ौक़ियत बख़्शी और (हक़ व बातिल में) हद्दे फ़ासिल क़रार दिया जिसके ज़रिये हलाल व हराम अलग अलग कर दिया। वह कुरआन जिसके ज़रिये शरीअत के एहकाम वज़ह किये वह किताब जिसे तूने अपने बन्दों के लिये शरह व तफ़सील से बयान किया और वह वहीय (आसमानी) जिसे अपने पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाया जिसे वह नूर बनाया जिसकी पैरवी से हम गुमराही व जेहालत की तारीकियों में हिदायत हासिल करते हैं और उस शख़्स के लिये इसे शिफ़ा क़रार दिया जो इस पर एतक़ाद रखते हुए इसे समझना चाहे और ख़ामोशी के साथ इसे सुने और वह अद्ल व इन्साफ़ का तराज़ू बनाया जिसका कांटा हक़ से इधर उधर नहीं होता औरवह नूरे हिदायत क़रार दिया जिसकी दलील व बुरहान की रौशनी (तौहीद व नबूवत की) गवाही देने वालों के लिये बुझती नहीं और वह नजात का निशान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बनाया कि जो इसके सीधे तरीक़े पर चलने का इरादा करे वह गुमराह नहीं होता और जो इसकी रीस्मान के बंधन से वाबस्ता हो वह (ख़ौफ़ व फ़क्र व अज़ाब की) हलाकतों के दस्तरस से बाहर हो जाता है। बारे इलाहा! जब कि तूने इसकी तिलावत के सिलसिले में हमें मदद पहुंचाई और इसकी हुस्ने अदायगी के लिये हमारी ज़बान की गिरहें खोल दीं तो फिर हमें उन लोगों में से क़रार दे जो इसकी पूरी तरह हिफ़ाज़त व निगेहदाश्त करते हों और इसकी मोहकम आयतों के एतराफ़ व तस्लीम की पुख़्तगी के साथ तेरी एताअत करते हों और मुतशाबेह आयतों और रौशन व वाज़ेह दलीलों के इक़रार के साये में पनाह लेते हों। ऐ अल्लाह! तूने इसे अपने पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम पर इज्माल के तौर पर उतारा और उसके अजाएब व इसरार का पूरा पूरा इल्म उन्हें अल्क़ा किया और उसके इल्मे तफ़सीली का हमें वारिस क़रार दिया। और जो इसका इल्म नहीं रखते उन पर हमें फ़ज़ीलत दी। और उसके मुक़तज़ियात पर अमल करने की क़ुव्वत बख़्शी ताकि जो इसके हक़ायक़ के मुतहम्मिल नहीं हो सकते उन पर हमारी फ़ौक़ियत व बरतरी साबित कर दे। ऐ अल्लाह! जिस तरह तूने हमारे दिलों को कुरआन का हामिल बनाया और अपनी रहमत से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उसके फ़ज़्ल व शरफ़ से आगाह किया यूं ही मोहम्मद[स०] पर जो कुरआन के ख़ुतबा ख़्वान, और उनकी आल[अ०] पर जो कुरआन के खज़ीनादार हैं रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें उन लोगों मे से क़रार दे जो यह इक़रार करते हैं कि यह तेरी जानिब से है ताकि इसकी तस्दीक़ में हमें शक व शुबह लाहक़ न हो और इसके सीधे रास्ते से रुगर्दानी का ख़याल भी न आने पाये। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें उन लोगों में से क़रार दे जो इसकी रीस्मान से वाबस्ता और मुश्तबह उमूर में उसकी मोहकम पनाहगाह का सहारा लेता और उसके परों के ज़ेरे साया मंज़िल करते, उसकी सुबहे दरख़्शां की रौशनी से हिदायत पाते और उसके नूर की दरख़्शन्दगी की पैरवी करते और उसके चिराग़ से चराग़ जलाते हैं और उसके अलावा किसी से हिदायत के तालिब नहीं होते। बारे इलाहा! जिस तरह तूने इस कुरआन के ज़रिये मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम को अपनी रहनुमाई का निशान बनाया है और उनकी आल[अ०] के ज़रिये अपने रिज़ा व ख़ुशनूदी की राहें आशकारा की हैं यूंहि मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमारे लिये कुरआन को इज़्ज़त व बुज़ुर्गी की बुलन्दपाया मंज़िलों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तक पहुंचने का वसीला और सलामती के मक़ाम तक बलन्द होने का ज़ीना और मैदाने हश्र में नजात को जज़ा में पाने का सबब और महल्ले क़याम (जन्नत) की नेअमतों तक पहुंचने का ज़रिया क़रार दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और कुरआन के ज़रिये गुनाहों का भारी बोझ हमारे सर से उतार दे और नेकूकारों के अच्छे ख़साएल व आदात हमें मरहमत फ़रमा और उन लोगों के नक़्शे क़दम पर चला जो तेरे लिये रात के लम्हों और सुबह व शाम (की साअतों) में इसे अपना दस्तूरे अमल बनाते हैं ताकि इसकी ततहीर के वसीले से तू हमें हर आलूदगी से पाक कर दे और उन लोगों के नक़्शे क़दम पर चलाये जिन्होंने इसके नूर से रौशनी हासिल की है और उम्मीदों ने उन्हें अमल से ग़ाफ़िल नहीं होने दिया कि उन्हें अपने फ़रेब की नैरंगियों से तबाह कर दें। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा, और कुरआन को रात की तारीकियों में हमारा मूनिस और शैतान के मुफ़सिदों और दिल में गुज़रने वाले वसवसों से निगेहबानी करने और हमारे क़दमों को नाफ़रमानियों की तरफ़ बढ़ने से रोक देने वाला और हमारी ज़बानों को बातिल पैमाईयों से बग़ैर किसी मर्ज़ के गुंग कर देने वाला और हमारे आज़ा को इरतेकाब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गुनाह से बाज़ रखने वाला और हमारी ग़फ़लत व मदहोशी ने जिस दफ़्तरे इबरत व पन्द अन्दोज़ी को तह कर रखा है, उसे फैलाने वाला क़रार दे ताकि उसके अजाएब व रमूज़ की हक़ीक़तों और उसकी मुतनब्बह करने वाली मिसालों को कि जिन्हें उठाने से पहाड़ अपने इस्तेहकाम के बावजूद आजिज़ आ चुके हैं हमारे दिलों में उतार दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और कुरआन के ज़रिये हमारे ज़ाहिर को हमेशा सलाह व रुश्द से आरास्ता रख और हमारे ज़मीर की फ़ितरी सलामती से ग़लत तसव्वुरात की दख़ल दरअन्दाज़ी को रोक दे और हमारे दिलों की कसाफ़तों और गुनाहों की आलूदगियों को धो दे और उसके ज़रिये हमारे परागन्दा उमूर की शीराज़ाबन्दी कर और मैदाने हश्र में हमारी झुलस्ती हुई दोपहरों की तपिश व तशनगी बुझा दे और सख़्त ख़ौफ़ व हरास के दिन जब क़ब्रों से उठें तो हमें अम्न व आफ़ियत के जामे पहना दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और कुरआन के ज़रिये फ़क्र व एहतियाज की वजह से हमारी ख़स्तगी व बदहाली का तदारुफ़ फ़रमा और ज़िन्दगी की कशाइश और फ़राख़ रोज़ी की आसूदगी का रूख़ हमारी जानिब फेर दे और बुरे आदात और पस्त अख़लाक़ से हमें दूर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कर दे और कुफ़्र के गढ़े (में गिरने) और निफ़ाक़ अंगेज़ चीज़ों से बचा ले ताकि वह हमें क़यामत में तेरी ख़ुशनूदी व जन्नत की तरफ़ बढ़ाने वाला और दुनिया में तेरी नाराज़गी और हुदूद शिकनी से रोकने वाला हो और इस अम्र पर गवाह हो कि जो चीज़ तेरे नजदीक हलाल थी उसे हलाल जाना और जो हराम थी उसे हराम समझा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इस क़रार के वसीले से मौत के हंगामे निज़अ की अज़ीयतों, कराहने की सख़्तियों और जानकनी की लगातार हिचकियों को हम पर आसान फ़रमा जब कि जान गले तक पहुंच जाये और कहा जाये कि कोई झाड़ फूंक करने वाला है (जो कुछ तदारूक करे) और मलकुल मौत ग़ैब के पर्दे से चीर कर क़ब्ज़े रूह के लिये सामने आये और मौत की कमान में फ़िराक़ की दहशत के तीर जोड़ कर अपने निशाने की ज़द पर रख ले और मौत के ज़हरीले जाम में ज़हरे हलाहल घोल दे और आख़रत की तरफ़ हमारा चल चलाव और कूच क़रीब हो और हमारे आमाल हमारी गर्दन का तौक़ बन जायें और क़ब्रें रोज़े हश्र की साअत तक आरामगाह क़रार पायें। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और कोहनगी व बोसीदगी के घर में उतरने और मिट्टी की तहों में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुद्दत तक पड़े रहने को हमारे लिये मुबारक करना, और दुनिया से मुंह मोड़ने के बाद क़ब्रों को हमारा अच्छा घर बनाना और अपनी रहमत से हमारे लिये गोर की तंगी को कुशादा कर देना और हश्र के आम इजतमाअ के सामने हमारे मोहलिक गुनाहों की वजह से हमें रुस्वा न करना, और आमाल के पेश होने के मक़ाम पर हमारी ज़िल्लत व ख़्वारी की वज़अ पर रहम फ़रमाना, और जिस दिन जहन्नम के पुल पर से गुज़रना होगा तो उसके लड़खड़ाने के वक़्त हमारे डगमगाते हुए क़दमों को जमा देना और क़यामत के दिन हमें उसके ज़रिये हर अन्दोह और रोज़े हश्र की सख़्त हौलनाकियों से नजात देना। और जबकि हसरत व निदामत के दिन ज़ालिमों के चेहरे सियाह होंगे हमारे चेहरों को नूरानी करना और मोमेनीन के दिलों में हमारी मोहब्बत पैदा कर दे और ज़िन्दगी को हमारे लिये दुश्वार गुज़ार न बना। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] जो तेरे ख़ास बन्दे और रसूल[स0] हैं उन पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह उन्होंने तेरा पैग़ाम पहुंचाया; तेरी शरीअत को वाज़ेह तौर से पेश किया औरतेरे बन्दों को पन्द नसीहत की। ऐ अल्लाह! हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम को क़याम के दिन तमाम नबीयों से मंज़िलत के लिहाज़ से मुकर्रब तर, शफ़ाअत के लिहाज़ से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बरतर, क़द्रो मंज़िलत के एतबार से बुज़ुर्गतर और जाह व मरतबत के एतबार से मुमताज़तर क़रार दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उनके ऐवान (इज़्ज़ो शरफ़) को बलन्द, उनकी दलील व बुरहान को अज़ीम और उनके मीज़ान (अमल के पल्ले) को भारी कर दे। उनकी शफ़ाअत को कुबूल फ़रमा और उनकी मंज़िलत को अपने से क़रीब कर, उनके चेहरे को रौशन, उनके नूर को कामिल और उनके दर्जे को बलन्द फ़रमा। और हमें उन्हीं के आईन पर ज़िन्दा रख और उन्हीं के दीन पर मौत दे और उन्हीं के शाहराह पर गामज़न कर और उन्हीं के रास्ते परचला और हमें उनके फ़रमांबरदारों में से क़रार दे और उनकी जमाअत में महशूर कर और उनके हौज़ पर उतार और उनके साग़र सेसेराब फ़रमा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जिसके ज़रिये उन्हें बेहतरीन नेकी, फ़ज़ल और इज़्ज़त तक पहुंचा दे जिसके वह उम्मीदवार हैं। इस लिये कि तू वसीअ रहमत और अज़ीम फ़ज़ल व अहसान का मालिक है। ऐ अल्लाह! उन्होंने जो तेरे पैग़ामात की तब्लीग़ की। तेरी आयतों को पहुंचाया। तेरे बन्दों को पन्दो नसीहत की और तेरी राह में जेहाद किया। उन सब की उन्हें जज़ा दे जो हर उस जज़ा से बेहतर हो जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तूने मुक़र्रब फ़रिश्तों और बरगुज़िदा मुरसल नबीयों को अता की हो। उन पर और उनकी पाक व पाकीज़ा आल[अ०] पर सलाम हो और अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें उनके शामिले हाल हों।

यह दुआ दुआए ख़त्म कुरआन के नाम से मौसूम है जिसे इमाम अलैहिस्सलाम कुरआन मजीद ख़त्म करने के बाद पढ़ते थे लेहाज़ा इस दुआ को ख़त्मे कुरआन के बाद पढ़ना चाहिये। कुरआन मजीद पन्दो नसाएह हुक्म व मवाएज़, अम्रो इम्साल और एहकामे शरीअत का सरचश्मा है इस लिये इसे पढ़ना, सुनना और इसमें ग़ौरो फ़िक्र करना हमारी ज़िन्दगी का मामूल होना चाहिये। चुनान्चे इरशादे बारी है "जितना ब–आसानी कुरआन पढ़ सको उतना पढ़ लिया करो।" इस सिलसिले मे अहादीस भी बड़ी कसरत से वारिद हुई हैं जिनमें तिलावते कुरआन के अज्र व सवाब का ज़िक्र और उसके मरग़ूब व मतलूब होने का तज़किरा है चुनान्चे हज़रत हुसैन इब्ने अली अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "जो शख़्स क़यामे नमाज़ में कुरआन मजीद की एक आयत की तिलावत करे उसके नामए आमाल में हर हरफ़ के बदले सौ नेकियां लिखी जाती हैं, और अगर नमाज़ के अलावा पढ़े तो ख़ुदा वन्दे आलम हर हर्फ़ के बदले में दस नेकियां उसके नामए आमाल में सब्त करता है और अगर सिर्फ़ कुरआन को सुने तो भी अल्लाह हर हर्फ़ के बदले में नेकी लिखता है और अगर कुरआन रात के वक़्त ख़त्म करे तो सुबह तक फ़रिश्ते

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उसके लिये दुआए रहमत करते हैं और अगर दिन को ख़त्म करे तो शाम तक हिफ़ाज़त करने वाले मलाएका उस पर दुरूद व रहमत भेजते हैं और उसकी दुआ कुबूल होती है और यह उसके लिये हर उस चीज़ से बेहतर है जो ज़मीन व आसमान के दरमियान है।"

मक़सदे तिलावत सिर्फ़ यह नहीं है कि ज़बान पर अल्फ़ाज़े कुरआन जारी हो जायें, बल्कि अस्ल मक़सद यह है कि उन अल्फ़ाज़ के ज़रिये कुरआन के तालीमात दिल व दिमाग़ में महफ़ूज़ हो जायें और अख़लाक़ी व रूहानी अफ़ादियत और इल्मी बसीरत का बाअस हों और ज़िन्दगी को हक़ व सदाक़त के सांचे में ढाल दें। इस लिये ज़रूरत है कि तिलावत के मौक़े पर उन आदाब व शराएत को मल्हूज़ रखा जाये जो इस मक़सद के हुसूल में मोअय्यन साबित होते हैं। चुनान्चे यह आदाब कुछ ज़ाहिर से मुतअल्लिक़ हैं और कुछ बातिन से। ज़ाहिरी आदाब यह हैं कि तिलावत के वक़्त बावज़ू और रुबक़िब्ला हो, अदब व एहतराम के साथ कुरआन मजीद को खोल कर सामने रखे और तिलावत से पहले आऊज़ो बिल्लाहे मिनश् शैतानिर्रजीम कहे और आवाज़ को न ज़्यादा ऊँचा करे और न ज़्यादा धीमा। अलबत्ता अगर नमूद व रिया का अन्देशा हो तो फिर चुपके चुपके पढ़े। मख़ारिजे हुरूफ़ का लिहाज़ रखे। वक़्फ़ के महल पर वक़्फ़ करे। ठहर ठहर कर उसके जुमले अदा करे और मुम्किन हो तो ख़ुश अलहानी से तिलावत करे मगर आवाज़ में उतार चढ़ाव और ग़िना की कैफ़ियत पैदा न होने पाये चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

(तरजुमा) "कुरआन को अरब के लहन और लब व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लहजे में पढ़ो और फ़ासिक़ों और गुनाहगारों के तर्ज़ेह लहन में न पढ़ो।''

जब दौराने तिलावत में ऐसी आयत पर नज़र पड़े जो अज़ाब व वईद पर मुश्तमिल हो तो अल्लाह तआला के ग़ज़ब से पनाह मांगे, और आलमे आख़रत की किसी नेअमत व बख़्शाइश का ज़िक्र आये तो उसके लिये अल्लाह तआला के सामने दामन फैलाये। दुआ व अस्तग़फ़ार के सिलसिले में कोई आयत आये तो दुआ व इस्तग़फ़ार करे आयए सजदा पढ़े तो फ़ौरन् सजदा करे और तीन दिन से कम अर्से में पूरे कुरआन को ख़त्म न करे और जब कोई सूरः ख़त्म करे तो यह कहे : सदक़ल्लाहुल अलीयुल अज़ीम व बल्लिग़ रसूलहुल करीम अल्लाहुम्मा अनफ़अना बेहि व बारिक लना फ़ीह अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। और जब पूरे कुरआन को ख़त्म करे तो दुआए ख़त्मुल कुरआन पढ़े। यह आदाब वह हैं जिनका तअल्लुक़ सिर्फ़ ज़ाहिर से है, और वह आदाब जिनका तअल्लुक़ ज़मीर व वजदान और बातिन से है यह हैं :—

पहले यह कि कुरआन मजीद की अज़मत व तक़दीस को नज़र में रखे और उसका आम किताबों की तरह मुतालआ न करे बल्कि अपने ज़ेहन में यह तसव्वुर क़ायम करे कि यह किताब जो इस वक़्त एक मजमूआ की सूरत में उसकी निगाहों के सामने है एक वक़्त लौहे महफ़ूज़ की ज़ीनत थी जो मलके अमीन[अ0] के ज़रिये नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के क़ल्बे मुबारक पर नाज़िल हुई और फिर उनकी ज़बान से निकल कर फुसहाए आलम को गुंग करती हुई उस तक पहुंची है। जब यह अज़मत दिल में घर कर लेगी तो फ़िक्र व नज़र की राह आसान हो जायेगी और एक ऐसी सेहतमन्द ज़ेहनियत तशकील पा जायेगी जो अख़लाक़ व रूहानियत के असरात को कुबूल करने पर आमादा कर देगी।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दूसरे यह कि इसके नाज़िल करने वाले की अज़मत व जलाल का
ासव्वुर करे कि जो अर्श व लौह, ज़मीन व आसमान, चांद व सूरज, दरिया,
हाड़, ग़रज़ कायनात की हर चीज़ पर मुहीत है और हर अज़ीम से अज़ीम
र और हर अज़मत से उसकी अज़मत बालातर है और जब उसकी अज़मत
। मुतास्सिर हो कर उसकी तिलावत की जायेगी तो उसके कसस व
ासाल और हुक्म व नसाएह पूरी तरह दिल व दिमाग़ को मुतास्सिर करेंगे।

तीसरे यह कि सोज़ व गुदाज़, रिक़्क़ते क़ल्ब और ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ के
ाथ इसकी तिलावत करे और यह उसी वक़्त हो सकता है जब दिल,
ल्लाह तआला और इस कलाम की अज़मत से मुतास्सिर हो। चुनान्चे
ााम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

> (तरजुमा) "जो शख़्स कुरआन की तिलावत करे और उसके दिल में इन्केसारी और रिक़्क़त के जज़बात और ज़मीर में हुज़्न व ख़ौफ़ के कैफ़ियात पैदा न हों तो उसने अल्लाह तआला की अज़मत व मंज़िलत को सुबुक समझा, और सरासर नुक़सान में रहा।"

चौथे यह कि शैतानी वसावस व ख़तरात और फ़ासिद ख़यालात को
ाने दिल से दूर रखे ताकि तवज्जह व हुज़ूरी, क़ल्ब हासिल हो सके
ोंकि तवज्जह व इन्हेमाक न हो तो तिलावत की अफ़ादियत कमज़ोर व
ामहिल हो जाती है।

पांचवी यह कि तिलावत के वक़्त कुरआन मजीद के हर गोशे पर नज़र
। उसके मतालिब व मक़ासिद को समझे और समझने के बाद उन्हें
ान नशीन करे ताकि मआनी व मआरिफ़ का सरमाया दिल व दिमाग़ में
ाहम होता रहे और फ़हम व तदब्बुर की राहें खुलती रहें, और जब ग़ौरो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़िक्र का सारा रिश्ता हाथ से छूट जाता है और तबीअत उस तरफ मुतवज्जह नहीं होती तो सलाहियत मुर्दा और दिल ज़ंग आलूद हो जात है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"कुरआन में कुछ भी तो ग़ौर नहीं करते। या यह कि उनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं।"

छठे यह कि सिर्फ़ ज़ाहिर माने के जानने पर इक्तिफ़ा न करे। इस तरह कि ख़ालिक़ के माने पैदा करने वाले और राज़िक़ के माने रिज़्क़ दे वाले के हैं। बल्कि जिन आयतों में उसके असमा व सिफ़ात और मुख़्तलिफ़ अफ़आल का तज़किरा है उनमें ग़ौर व तदब्बुर करे कि वह ख़ालिक़ है, त उसकी ख़ालक़ियत की नौइयत क्या है और किस तरह बग़ैर किसी मवा और बग़ैर किसी नमूना के मुख़्तलिफुल अनवाअ पैकर ख़ल्क़ किये, औ राज़िक़ है तो उसकी रज़्ज़ाक़ियत का दायरा कितना वसीअ है कि समन्द की तह में रहने वाले, फ़ेज़ा में उड़ने वाले, पहाड़ों की खोओं में बसने वा सब ही को रिज़्क़ मिल रहा है और शिकमे मादर में करवटें बदलने वाले औ मफ़लूज व बेदस्त व पा तक को रोज़ी हासिल हो रही है। जूँ जूँ इन्सा उसके सिफ़ात में ग़ौरो फ़िक्र करेगा उसका तसव्वुर व इदराक अपन दरमान्दगी का एतराफ़ करेगा और यह एतराफ़ मारफ़त के हुदूद से क़री कर देगा।

सातवीं यह कि जो उमूर फ़हमे कुरआन से मानेअ होते हैं उनका क़ल क़मा करे। उन मवाने में से चन्द यह हैं :–

(1) तक़लीद व तअस्सुब :– जब इन्सान अन्धी तक़लीद औ असबिय्यत का शिकार हो जाता है तो इसके नतीजे में एक मसलक व जुन्बादारी चाहे वह कितना ही ग़लत क्यों न हो उसका वतीरा बन जात है और कुरआन को खींच तान कर अपनी राय के मुताबिक़ करने व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कोशिश करेगा और कुरआन के वाज़ेह मफ़हूम को नज़र अन्दाज़ करके खुदसाख़्ता मतलब को साबित करने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगा देगा और यह कज फ़िक्री उसी तबीअत में इस तरह रच बस जायेगी कि तबीअत सानिया बन जायेगी, और अब उसे सीधी से सीधी बात भी टेढ़ी और टेढ़ी से टेढ़ी बात भी सीधी दिखाई देगी।

(2) फ़िक्रो जमूद :– इससे ज़ेहन की इन्जिलाई कैफ़ियत ख़त्म और फ़िक्रो काविश की कुव्वत मोअत्तल हो जाती है और वह यह समझ लेता है कि बस जो मुफ़स्सेरीन ने लिख दिया है वही सही है और इसके अलावा और कोई तफ़सीर नहीं हो सकती, और वह ग़ौरो फ़िक्र से हाथ उठा कर उन्हीं के अक़वाल पर क़ानेअ हो जाता है।

(3) इसरारे माआसी :– यह भी एक बड़ी रूकावट है क्योंकि गुनाहों के पैहम इरतेकाब से सफ़ा व नूरानियत ख़त्म हो जाती है और दिल पर तारीकी व ज़ुल्मत की ऐसी तहें चढ़ जाती हैं कि हक़ाएक़ व मआरिफ़ की रौशनी का उनमें गुज़र नहीं हो सकता।

(4) सतही इन्हेमाक :– इस तरह कि हुरूफ़ और उनके मख़ारिज वग़ैरा की तहक़ीक़ ही पर अपनी तवज्जह को मुन्हसिर कर दे और जब तवज्जह उन्हीं चीज़ों की तरफ़ होगी तो माने व मतालिब की तरफ़ तवज्जह मबज़ूल करने का मौक़ा ही न मिलेगा। यह लोग सतहे दरिया के दिलकश मनाज़िर में इस तरह खो जाते हैं कि उन्हें यह याद ही नहीं रहता कि इसकी तह में कितने ख़ज़ाने मग़फ़ी हैं कि वह मौजों से खेलें और लहरों से टकरायें और अपने दामन को मोतियों से भरें।

आठवीं यह कि कुरआन के हुक्म व मवाएज़ और क़सस व इम्साल पर ग़ौर करे और उसके इबरत व नसीहत के पहलुओं को देखे, तो उनसे इबरत व नसीहत हासिल करे, और ऐसे मवारिद में कुदरत ने जहां जहां ख़िताब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किया है यह तसव्वुर करे कि यह ख़िताब उसी से है लेहाज़ा उससे उसी तरह असर ले जिस तरह किसी फ़रमांरवा के फ़रमान को पढ़ कर असर लिया जाता है और उस पर हर मुम्किन तरीक़े से अमल किया जाता है ताकि सुलतानी क़हर व ग़ज़ब की ज़द में न आये।

नवीं यह कि जब किसी ऐसी आयत की तिलावत करे जिसमें तहदीद व सरज़निश हो तो उस पर ख़ौफ़ व हरास छा जाये और जब ऐसी आयत की तिलावत करे जिसमें रहमत व मग़फ़रत और नईम जन्नत का तज़किरा हो तो उसके अन्दर उम्मीद व रिजा और मसर्रत व इन्सेबात की रूह दौड़ने लगे।

दसवीं यह कि तिलावत के मौक़े पर यह समझे कि वह अल्लाह तआला के हुज़ूर खड़ा है। अगर यह उसे नहीं देख सकता मगर वह उसे देख रहा है और गोश बरआवाज़ है। जब इस तसव्वुर के क़ायम करने में कामयाब हो जाये तो फिर यह तसव्वुर करे कि ख़ुदा वन्दे आलम इस क़ुरआन के ज़रिये उससे मुख़ातिब है और उसे अच्छाईयों का हुक्म दे रहा है और बुराईयों से रोक रहा है। जब इस मंज़िल तक पहुंच जाये तो फिर उसी को अपने तसव्वुरात व ख़यालात का मरकज़ बनाये। इस हद तक कि फ़िक्र व ख़याल में उसके अलावा किसी और की गुंजाइश न रहे न अपनी ज़ात की तरफ़ न अपने माल की तरफ़ और न अहल व अयाल की तरफ़ और कलाम के पर्दे में मुतकल्लिम से लौ लगाये, क्योंकि उसका कलाम उसका आईनादार है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है:—

> (तरजुमा) "ख़ुदा की क़सम! क़ुदरत अपने कलाम के अन्दर अपनी मख़लूक़ात के लिये जलवागर है लेकिन वह देखते नहीं हैं।"

ग्यारहवीं यह कि जब किसी ऐसी आयत की तिलावत करे जिसमें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नेकूकारों का तज़किरा और उनकी मदह व तौसीफ़ हो तो अपने को उनमें शुमार न करे, और न इन सिफ़तों को अपने पर मुन्तबिक़ करने की कोशिश करे बल्कि इस मौक़े पर अल्लाह तआला से दुआ करे कि वह मोमेनीन के सिफ़ात से मुत्तसिफ़ हो और अल्लाह तआला उसे अहले सिदक़ व सफ़ा में से क़रार दे, और जब किसी ऐसी आयत की तिलावत करे जिसमें नाफ़रमानों और गुनाहगारों की मज़म्मत हो, तो यह समझे कि जिन लोगों से यह ख़िताब है और जिन्हें यह तन्बीह व सरज़निश की जा रही है उनमें एक फ़र्द वह भी है। इस लिये अल्लाह तआला से तौबा व इनाबत करे, गुनाहों से मग़फ़रत चाहे और हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ मांगे ताकि ख़ुदा वन्दे आलम उसे कुरआन पर अमल करने वालों में शुमार करे और शफ़ाअते कुरआन उसे नसीब करे।

दुआए रोवियत हिलाल

(तरजुमा) "ऐ फ़रमांबरदार, सरगरमे अमल और तीज़र व मख़लूक़ और मुक़र्रर मंज़िलों में यके बाद दीगरे वारिद होने और फ़लक नज़्म व तदबीर में तसर्रुफ़ करने वाले में उस ज़ात पर ईमान लाया जिसने तेरे ज़रिये तारीकियों को रौशन और ढकी छुपी चीज़ों को अशकारा किया और तुझे अपनी शाही व फ़रमांरवाई की निशानियों में से एक निशानी और अपने ग़लबे व इक़्तिदार की अलामतों में से एक अलामत क़रार दिया और तुझे बढ़ने, घटने निकलने, छुपने और चमकने गहनाने से तस्ख़ीर किया। इन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तमाम हालात में तू उसके ज़ेरे फ़रमान और उसके इरादे की जानिब रवां दवां है। तेरे बारे में उसकी तदबीर व कारसाज़ी कितनी अजीब और तेरी निस्बत उसकी सन्नाई कितनी लतीफ़ है। तुझे पेश आईन्द हालात के लिये नये महीने की किलीद क़रार दिया। तो अब मैं अल्लाह तआला से जो मेरा परवर दिगार और तेरा परवर दिगार, मेरा ख़ालिक़ और तेरा ख़ालिक़, मेरा नक़्शआरा और तेरा नक़्शआरा और मेरा सूरतगर और तेरा सूरतगर है सवाल करता हूं कि वह रहमत नाज़िल करे मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और तुझे ऐसी बरकत वाला चांद क़रार दे, जिसे दिनों की गरदिशें ज़ायल न कर सकें और ऐसी पाकीज़गी वाला जिसे गुनाह की कसाफ़तें आलूदा न कर सकें। ऐसा चांद जो आफ़तों से बरी और बुराईयों से महफ़ूज़ हो। सरासर युमन व सआदत (बरकत) का चान्द जिसमें ज़रा नहूसत न हो। और सरापा ख़ैरो बरकत का चांद जिसे तंगी व उसरत से कोई लगाव न हो और ऐसी आसानी व कशाएश का जिसमें दुशवारी की आमेज़िश न हो और ऐसी भलाई का जिसमें बुराई का शाएबा न हो। ग़रज़ सर ता पा अम्न, ईमान, नेअमत, हुस्ने अमल, सलामती और एताअत व फ़रमांबरदारी का चांद हो। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जिन जिन पर यह अपना परतौ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

डाले उनसे बढ़ कर हमें ख़ुशनूद, और जो जो इसे देखे उन सबसे ज़्यादा दुरूस्तकार और जो जो इस महीने में तेरी एबादत करे उन सबसे ज़्यादा ख़ुश नसीब क़रार दे और हमें इसमें तौबा की तौफ़ीक़ दे और गुनाहों से दूर और मअसियत के इरतेकाब से महफ़ूज़ रख, और हमारे दिल में अपनी नेअमतों पर अदाये शुक्र का वलवला पैदा कर और हमें अम्न व आफ़ियत की सिपर में ढांप ले और इस तरह हम पर अपनी नेअमत को तमाम कर कि तेरे फ़राएज़े एताअत को पूरे तौर से अंजाम दें। बेशक तू नेअमतों का बख़्श्ने वाला और क़ाबिले सताइश है। रहमते फ़रावां नाज़िल करे अल्लाह मोहम्मद[स०] और उनकी पाक व पाकीज़ा आल[अ०] पर।"

तुलूए हिलाल का मंज़र इतना दिलकश होता है कि जब सूरज की ुआओं को अपने दामन में समेट कर शफ़क़ के रंगीन पर्दों में से झांकता ः तो एक दुनिया की नज़रें उसकी तरफ़ उठ जाती हैं और हाथ उस सानेए ःक़ीक़ी की बारगाह में बुलन्द हो जाते हैं जिसने एक चरमे तारीक को गुस्ले ाफ़ताबी दे कर निगाहों का मरकज़ बनाया और उसकी राह पैमाईयों और ुतार चढ़ाव की मुख़्तलिफ़ तब्दीलियों से नज़र अफ़रोज़ी का सामान किया ो कभी हिलाल है और कभी क़मर, कभी बद्र है और कभी रु–ब–ज़वाल। ग्भी रात के पहले हिस्से में दरख़्शां है, तो कभी रात के आख़री हिस्से में। ग्भी ख़त्ते इरतेका की तरफ़ सरगरमे सेर है तो कभी तनज़्ज़ुल व इन्हेतात ी तरफ़ माएल। कभी नज़रों के सामने है तो कभी निगाहों से रुपोश।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिसके नतीजे में कभी आसमानी वुस्अतों से ले कर ज़मीन की पिन्हाईट तक नूर व रौशनी फैल जाती है, और कभी हर तरफ़ अन्धेरा छा जाता औ कुर्रए अर्ज़ घटा टोप अन्धयारियों में डूब जाता है। मगर यह तारीकी उम्मी अफ़ज़ा और रौशनी की पैग़ाम्बर होती है, क्योंकि जब भी अन्धेरा फैलता उसके बाद रौशनी ज़रूर नमूदार होती है, और यह अन्धेरा इसकी अलाम बन जाता है कि अब रौशनी की नमूद क़रीब है। चुनान्चे इधर तारीकी फैली उधर दिलों में उम्मीद की किरन चमकी और चांद एक आध दिन की रुपोशी के बाद नूर व रौशनी का सामान लिये मौजूद हो गया। वही तनतना व तमतराक़, वही गरदिशे फ़िज़ा व सैरे आफ़ाक़, वही घटना बढ़ना, छुपना उभरना। ग़रज़ चांद की यह तमाम कैफ़ियतें इतनी दिलफ़रेब हैं कि निगाहें उसके नज़ारे से सेर नहीं होतीं, और अनगिनत सदियों के बावजूद उसकी कशिश व आवेज़ी में कमी पैदा नहीं होती। गोया यह किसी हुस्ने लाज़वाल का परतो है जो अपनी जलवा अफ़रोज़ी से इसकी कशिश को कम नहीं होने देता और अपनी ताबिशे जमाल से उसकी ज़िया व ताबानी को बरक़रार रखे हुए है। क्या चश्मे बुनियाद इस हसीन नक़्श को देख कर नक़्श आराए फ़ितरत के वजूद से इन्कार कर सकती है? हरगिज़ नहीं।

यह उसकी कशिश व दिल आवेज़ी ही का करिश्मा है कि आब व गिल के बसने वाले इस पर कमन्दें डाल रहे हैं और इसकी नूर पाश व हुस्ने अफ़रोज़ वादियों तक पहुंचने के लिये तड़प रहे हैं। किसी को इसका एहसास ज़मीनगीर बनाये हुए है और कोई इसे तस्ख़ीर करने के लिये ख़लाए बसीत की राहों को हमवार कर रहा है। वहां किसी इन्सान के ज़िन्दा पहुंचने या पहुंच कर ज़िन्दा रहने का ख़्वाब शर्मिन्दए ताबीर हो या न हो मगर इस सिलसिले में जो कोशिशें ब–रूएकार आई हैं वह ज़ेहने इन्सानी के इरतेक़ा की आईनादार हैं। इस सिलसिले में हैयतदानों ने जो मालूमात

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बहम पहुंचाये हैं उनका ख़ुलासा यह है कि ज़मीन से चांद का फ़ासला मुस्तक़िल नहीं होता बल्कि कम व बेश होता रहता है। चुनान्चे इसका औसत फ़ासला दो लाख अड़तीस हज़ार आठ सौ साठ (2,38,860) मील है और ज़्यादा से ज़्यादा दो लाख बावन हज़ार सात सौ दस (2,52,710) मील और कम से कम दो लाख इक्कीस हज़ार चार सौ तिरसठ (2,21,463) मील है और क़तर दो हज़ार एक सौ तिरसठ (2,163) मील है जो दो हज़ार दो सौ सत्तासी (2,287) मील फ़ी घण्टे की रफ़्तार से हरकत कर रहा है और एक ऐसे ज़ाविये पर वाक़े है कि इसका 2/5 हिस्सा हमेशा अहले ज़मीन की नज़रों से ओझल रहता है। इसमें गहरे खड, झुलसे हुए चटियल मैदान, और संगलाख़ पहाड़ हैं जिनकी चोटियां 5 हज़ार फुट से 18 हज़ार फुट तक बुलन्द हैं और बाज़ हैइयत दानों का अन्दाज़ा तीस हज़ार फुट तक का भी है। इसकी कशिश ज़मीन की ब–निस्बत 1/6 हिस्सा है। इस तरह कि अगर ज़मीन पर एक इन्सान का वज़्न 175 पौंड होगा तो चांद पर उसका वज़्न सिर्फ़ $29^{1/6}$ पौण्ड रह जायेगा और उसके जिस हिस्से पर सूरज की शुआयें पड़ती हैं वहां का दर्जए हरारत 130 सेंटीग्रेड होता है और जिस हिस्से पर शुआयें नहीं पड़ती वहां सिफ़र से 120 दरजा सेन्टीग्रेड कम हो जाता है। इसमें न सब्ज़ा व रूवैदगी के निशान हैं न पानी का वुजूद और न हवा का गुज़र है। यह तीरह व तार कुरह सूरज से रौशनी मस्तेआर लेता है और यही रौशनी मुनअकिस हो कर हमारी रातों को रौशन और कर्रए ज़मीन को हुस्न व रअनाई के जलवों से मअमूर कर देती है। बआज़ उलमा ने इरशादे इलाही "उसी ने सूरज को ज़िया बार और चांद को रौशन क़रार दिया है।" से सूरज की रौशनी के अस्ली और चांद की रौशनी के इक्तेसाबी होने पर इस्तेदलाल किया है। इस तरह कि क़ुदरत ने सूरज के लिये ज़िया और चांद के लिये नूर का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और ज़िया व नूर में अस्ली व इक्तेसाबी ही का फ़र्क़ है। चुनान्चे साहबे रियाज़ुस् सालेकीन तहरीर करते हैं :–

(तरजुमा) "मुतकल्लमीन का क़ौल है कि जो चीज़ ख़ुद से रौशन होने वाली चीज़ से वाबस्ता हो वह ज़ू है जैसे सूरज और जो दूसरे से रौशन होने वाली शै से क़ायम हो वह नूर है जैसे क़मर।"

इमाम अलैहिस्सलाम ने सरनामए दुआ में चांद से ख़िताब किया है। इस ख़िताब की नौइयत वही है जो ज़मान व मकान से ख़िताब की होती है और इस तरह का मुख़ातबा कलामे अरब में जाए व शाए है और इसे एक मख़लूक़ से ताबीर फ़रमाया है। इससे उन लोगों की रद्द होती है जो सात आसमानी देवताओं के क़ाएल थे और चांद को एक देवता समझ कर उसकी परस्तिश करते थे। फिर बुरूज व मनाज़िल में उसकी गरदिशों और मुख़्तलिफ़ तब्दीलियों से उसके मख़लूक़ होने पर इश्तेहाद किया है, क्योंकि जो चीज़ एक हालत से दूसरी हालत में तब्दील होती और मुख़्तलिफ़ तग़य्युरात व तब्दीलियाँ की आमाजगाह बनी रहती है वह मख़लूक़ व हादिस होती है और हदूस एक ख़ालिक़ व साने की एहतियाज का पता देता है। चुनान्चे इसके बाद अल्लाह तआला की सिफ़ते ख़ालक़ियत व रबूबियत का ज़िक्र फ़रमाया है, और उसे अल्लाह तआला का मख़लूक़ व मसनूअ और उसके इक़्तिदार की एक अलामत और उसके हमागीर तसल्लुत की एक निशानी क़रार दिया है ताकि चांद देखते वक़्त यह तास्सुर ज़ेहन में क़ायम रहे कि यह अल्लाह तआला की क़ुदरत व अज़मत की गुज़रगाह में एक ज़र्राए बेमिक़दार से ज़्यादा अहमियत नहीं रखता। लेहाज़ा उसके सामने किसी अज़मत व तक़दीस का इज़हार न होना चाहिये। चुनान्चे अइम्मा अहलेबैत से जो रिवायात हिलाल के आदाब वारिद हुए हैं या उनके अमल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से ज़ाहिर हुए हैं उनमें यह अम्र मल्हूज़ रखा गया है कि तज़ल्लुल व आजिज़ी सिर्फ़ अल्लाह तआला के सामने हो और उसे सहीफ़–ए–कुदरत की एक आयत और अज़मते इलाही की एक निशानी की हैसियत से देखा जाये। मसलन यह कि दुआ के मौक़े पर चांद की तरफ़ हाथ या सर या किसी और हिस्सए जिस्म से इशारा न किया जाये। हाथों को उसी तरह बुलन्द किया जाये जिस तरह अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ के वक़्त बुलन्द किये जाते हैं। चांद का उफ़क़ किसी तरफ़ हो दुआ पढ़ने वाला रू–ब–क़िब्ला खड़ा हो। अलबत्ता जिन फ़िक़रों में चांद से ख़िताब है उन फ़िक़रों के पढ़ने के वक़्त चांद की तरफ़ रूख़ किया जा सकता है जिस जगह चांद देखे वहां से अलग होने से पहले दुआ पढ़ ले ताकि कुदरत की करिश्मासाज़ी का तास्सुर मुज़महिल न होने पाये। चांद देखने के बाद मसहफ़े, आबे रवां, सबज़ा व गुल और फ़ेरोज़ा वग़ैरा देखे ताकि आंखों में तरो ताज़गी, दिलों में नुज़हत आफरीं मसर्रत और कुदरत की अजाएब आफ़रीनी का तसव्वुर पैदा हो।

हिलाल का इतलाक़ अगर चे आम तौर पर पहली रात के चांद पर होता है मगर बाज़ अहले लुग़त के नज़दीक दूसरी तारीख़ के चांद को भी हिलाल कहा जाता है, और बाज़ हिलाल की आख़िरी शब तीसरी रात को क़रार देते हैं। हिलाल, अहलाल से माख़ूज़ है और अहलाल के माने आवाज़ बुलन्द करने के होते हैं और अरबी ज़बान में जिस लफ़्ज़ में हाय हव्वज़ और करारे लाम हो उसमें उमूमन् शोहरत व बुलन्द आवाज़ी के माने होते हैं और हिलाल की भी यही सूरत है कि जब वह निकलता है तो हर तरफ़ शोहरत फैल जाती है और ज़बानों पर उसका चर्चा होने लगता है। या यह कि हलल से माख़ूज़ है जिसके मआनी ज़ोअफ़ व कमज़ोरी के हैं, और यह कि एक बारीक कमान की सूरत में नज़र आता है इस लिये इसे हिलाल कहा जाता है। रोवियत हिलाल सिर्फ़ देखने ही पर मौक़ूफ़ नहीं है। बल्कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तीस दिन पूरे हो जायें या ऐसे दो शख़्स गवाही दें जिनकी रास्तगोई व फ़ि शिनासी पर एतमाद हो या ऐसी शोहरत हो जाये जिससे चांद के होने क यक़ीन हो जाये तो रवैत साबित है, और इस सिलसिले में मुन्जमीन व मुक़र्ररकर्दा ऊसलों पर एतमाद नहीं किया जा सकता क्योंकि वह सिप ज़न्नी व तख़मीनी चीज़ें हैं। मसलन् यह कि ज़ीक़ाद की चौथी और मोहर्र की पहली, ज़िलहिज की चौथी और सफ़र की पहली, मोहर्रम की चौथी औ रबीउल अव्वल की पहली, सफ़र की चौथी और रबीउस्सानी की पहली रबीउल अव्वल की चौथी और जमादिउल अव्वल की पहली, रबीउस्सानी की चौथी और जमादिउल आख़िरी की पहली, जमादिउल औला की चौथी औ रजब की पहली, जमादिउल आख़िर की चौथी और शाबान की पहली, माह रमज़ान की चौथी और ज़ीक़ाद की पहली, शव्वाल की चौथी और ज़िलहिज की पहली एक दिन में वाक़े होगी। मसलन शव्वाल की चौथी अगर जुम हो तो ज़िलहिज की पहली जुमे के दिन होगी। इसी तरह नसीरूद्दीन तूर्स रहमतुल्लाह की तरफ़ यह शेर मन्सूब है :—

(तरजमा) "यदस से मुराद यक शम्बा, दो शम्बा, और सेहशम्बा है इन दिनों के अगर पहली तारीख़ हो तो महीना उनतीस का होगा, और चपाश से मुराद चहार शम्बा, आदीना (जुमा) और शम्बा है। इन दिनों में अगर पहली हो तो पूरे तीस दिन का होगा। वलइल्मे इन्दल्लाह

कुदरत ने चांद के ज़रिये गोनागों फ़वाएद व मुनाफ़े का सामान किया है। अगरचे इसके फ़वाएद ख़्वास को अहले तहक़ीक़ ही जानते हैं मगर कुछ फ़वाएद तो वह हैं जिनका मुशाहदा हर कस व नाकस कर सकता है चुनान्चे हर शख़्स यह देखता और जानता है कि उससे तारीक रातें रौशन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुनव्वर और उसकी रौशनी से अशिया की नमूद होती है, और उसके ़लूअ व गुरूब, उरूज व ज़वाल और सैर व हरकत से अज़मना व औक़ात नज़बत होते हैं जिससे कायनात में हमआहंगी और ज़िन्दगी के हर शोअ़बे नज़्म व तरतीब क़ायम होती है। चुनान्चे कुदरत ने इस फ़ायदे की तरफ़ वज्जह दिलाते हुए फ़रमाया है :–

(तरजमा) "ऐ पैग़म्बर! तुमसे लोग पहली रातों के चांद के बारे में दरयाफ़्त करते हैं तो उनसे कहो कि यह इन्सान के लिये वक़्त का हिसाब रखने के लिये हैं"।

औक़ात की हदबन्दी का तसव्वुर इन्सान के दिल में सूरज के तुलूअ व रूब से पैदा हुआ। इस तरह कि उसने सूरज को निकलते और फिर उसे बते देखा और तुलूअ से ले कर गुरूब तक का वक़्त रौशन और गुरूब से । कर तुलअ तक का वक़्त तारीक पाया तो उसने एक तुलूअ से ले कर सरे तुलूअ तक का वक़्त दो हिस्सों पर तक़सीम कर दिया। रौशन हिस्से ा नाम दिन हुआ और तारीक हिस्से का नाम रात अब अगर वक़्त का ़ेसाब इसी शब व रोज़ से चलता तो एक पचास साला शख़्स को अपनी ़म्र का हिसाब लगाने के लिये अट्ठारा हज़ार दो सौ पचास रातों और ़ट्ठारा हज़ार दो सौ पचास दिनों का हिसाब रखना पड़ता, और अगर शब रोज़ के मजमूए से हिसाब करता जब भी अट्ठारह हज़ार दो सौ पाचास ़ शुमार की ज़रूरत पड़ती, और ज़ाहिर है कि इस तरह हिसाब व शुमार ़हायत दुश्वार होता। इस दुश्वारी को उसने चांद के ज़रिये दूर किया। ़स तरह कि उसने देखा कि वह एक मोअय्यन वक़्त पर निकलता है और ़ग़य्युर व तबद्दुल के मुख़्तलिफ़ हालात से गुज़रता हुआ कुछ मुद्दत के ़लिये आंखों से रुपोश हो जाता है और फिर उसी पहली वज़अ व सूरत के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

साथ नमूदार होता है, औरयह एक ऐसा सिलसिला है जिसमें कभी ख़लल रुनुमा नहीं होता। तो चांद के दो तुलूओं के दरमियानी अर्से से एक और वक़्त की हद बन्दी कर ली और उसका नाम महीना तजवीज़ किया। अब पचास साल की मुद्दत के लिये अट्ठारा हज़ार दो सौ पचास दिनों को याद रखने के बजाये छः सौ महीने ही याद रखना पड़े। फिर मौसमों के दौर करने से एक और मुद्दत की तरफ़ तवज्जह पैदा हुई और उसने देखा कि एक मौसम के शुरू होने के बाद दोबारह उसी मौसम के आने तक बारह मर्तबा चांद तालेअ होता है तो उसने बारह महीनों की एक मुद्दत तजवीज़ कर ली और उसका नाम साल हुआ। जब सालों के ज़रिये औक़ात की हदबन्दी होने लगी तो औक़ात शुमारी की तमाम दुश्वारियां दूर हो गयीं जिन लोगों ने सबसे पहले तश्कील औक़ात की तरफ़ तवज्जह की वह अहले मिस्र थें चुनान्चे आसारे मिस्र को देखने से यह पता चलता है कि जहां वह एक महीना ज़ाहिर करना चाहते थे वहां हिलाल की शक्ल बना देते थे और 600 क़ाफ़–मीम उन्होंने अपने तेहवारों के नामों पर बारह महीनों के नाम रख कर साल की हदबन्दी कर ली थी, और यूनानी, रोम, हिन्द और अरब में भी क़मरी महीनों का हिसाब राएज था। जब इस्लाम का ज़हूर हुआ, तो उसने भी क़मरी हिसाब को बरक़रार रखा और क़मरी महीनों ही के लिहाज़ से साल की तहदीद की और महीनों को घटाने बढ़ाने और आगे पीछे करने से रोक दिया। क्योंकि ज़मानए जाहलियत में अरब अपनी मक़सद बरआरी के लिये अम्न व अशती के महीने को मोअख़्ख़र कर देते या हज के महीने को पीछे डाल देते थे। यह साल सन् हिजरी कहलाता है। क्योंकि इसकी इब्तिदा अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम के मशविरे से पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि की हिजरत पर रखी गयी थी। अगरचे हिजरत का वाक़िआ 27 सफ़र को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पेश आया और 12 रबीउल अव्वल को आंहज़रत[स०] का मदीने में वुरूद हुआ, मगर मोहर्रम की अहमियत व शोहरत और शहरूल हराम में नुमायां होने की वजह से और बा-ई-ख़याल कि हिजरत का इरादा मोहर्रम ही से था, उसे साल का पहला महीना क़रार दिया गया। अगर चे क़मरी हिसाब सीधा सादा और हर क़िस्म के पेच व ख़म से पाक है मगर उसमें यह दुशवारी नज़र आई कि उसके ज़रिये फ़सलों की हद बन्दी नहीं हो सकती। इस लिये जो महीना आज सर्दी में आ रहा है फिर गर्मी में आना शुरू हो जायेगा और जो ख़िज़ां में आ रहा है वह बहार में आने लगेगा। लेहाज़ा यह न बताया जासकेगा कि गर्मी के महीने कौन से हैं और सर्दी के कौन से। किस महीने में फ़सल काश्त होगी और किस महीने में काटी जायेगी, और मिस्रियों को भी यही दिक़्क़त पेश आई, क्योंकि उनकी ज़िन्दगी का इन्हेसार खेती बाड़ी परथा, और एक बरसात से ले कर दूसरी बरसात तक उन्होंने बारह महीनों का हिसाब लगाया था। मगर बरसात तेरह महीनों के बाद आने लगी। इस लिये ज़रूरत महसूस हुई कि कोई ऐसी सूरत होना चाहिये कि गर्मा व सरमा और बहार व ख़िज़ां के मौसम की हदबन्दी हो जाये। चूंकि फुल्की मुतालिआ ने इन्सान की रहनुमाई और उसने देखा कि चांद हर रात किसी न किसी सितारे के पास नज़र आता है और चूंकि चांद के नज़र आने की रातें अट्ठाइस होती हैं इस लिये उसने उन सितारों को अलामत क़रार दे कर चांद की अट्ठाइस मंज़िलें क़रार दे लीं। उन मंज़िलों को हिन्दी में नच्छतर कहा जाता है जो असूनी, भरनी, किरतिका, रोहनी वग़ैरा के नामों से मशहूर हैं, और अरबी में इनके नाम हस्ब ज़ैल हैं:-

शरतान, बतीन, सरिया, वबरान, हक़आ, हनआ, ज़राअ, नसरह, तरफ़, जबह, ज़ोहरा, सरफ़:, अवाए, समाकुल आज़ल, ग़फ़र, ज़बाना, अकलील, क़ल्ब, शोलह, नआएम, बलदा, सअद, ज़ाबह,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सअद, बलअ, सअदुल मऊद, सअदल अख़बीह, फ़रग़ल मक़दम, फ़रग़ल मख़र, रशाअ।

फिर उसने देखा कि मिन्तक़तल बरूज पर कई सितारों के झुरमुट हैं जिन्हें क़ायदे से मिलाया जाये तो बारह मुख़्तलिफ़ शक्लें बन जाती हैं अैर इन्हीं शक्लों के लिहाज़ से इनके नाम रख लिये गये। हिन्दी में इन्हें रास और अरबी में बुर्ज कहा जाता है। हिन्दी नाम यह हैं : मेख, बरख, मिथुन, कर्क, सिंघ, कन्नया, तुला, बरछिक, धन, मकर, कुम्भ, मयन और इसी तरतीब से अरबी नाम यह हैं, हमल सूर, जौज़ा, सरतान, असद, सुमबुला, मीज़ान, अक़रब, क़ौस, जदी, दिलो, हूत।

फिर इन मंज़िलों को 360 दरजो पर तक़सीम किया और हर मंज़िल में चांद का क़याम 12 दर्जा और तक़रीबन 51 दक़ीक़ा और हर बुर्ज में उसका ठहराव दो दिन आठ घण्टे क़रार दिया। फिर यह देखा कि जिस मंज़िल को चांद शबाना रोज़ में तय करता है, सूरज उसे तक़रीबन् 13 दिनों में तमाम करता है जिनसे मंज़िलों के दिन 364 बनते हैं, लेकिन सूरज उस मक़ाम पर जहां से चला था। 365 दिनों में पहुंचता है। इस तरह कि हमल, सूर, सरतान, असद और सुमबुला में 31–31 दिन, जौज़ा में 32 दिन, मीज़ान, अक़रब, दिलो और हूत में 30–30 दिन और क़ौस व जदी में 29–29 दिन सर्फ़ करता है। तो उन्होंने अय्यामे मनाज़िल को दौरए शम्सी के दिनों से मुताबिक़ करने के लिये मज़िले ग़फ़र में एक दिन का इज़ाफ़ा करके 365 दिन का साल मुक़र्रर कर लिया और मौसमों को इन मंज़िलों पर तक़सीम करके फ़सूले अरबआ की हदबन्दी कर ली और उसे शम्सी साल से ताबीर किया जाने लगा और बआज़ मुल्कों में शम्सी साल के बावजूद महीनों का हिसाब क़मरी ही रहा। हालांकि क़मरी हिसाब से साल की मुद्दत 354 दिन 8 घण्टे 48 मिनट 32 सेकेण्ड होती है। क्योंकि क़मरी महीना 29 दिन या

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

30 दिन का होता है। अगर चे चांद 27 दिन 7 घण्टे 43 मिनट की मुद्दत में सिम्ते मुतक़ाबिल की तरफ़ हरकत करता हुआ ज़मीन के गिर्द अपना दौरा मुकम्मल कर लेता है, लेकिन हरकते अरज़ी की वजह से चांद के सफ़र में 2 दिन 21 आशारिया का इज़ाफ़ा हो जाता है और उसे अपना सफ़र तमाम करने के लिये 29 दिन 12 घण्टे 43 मिनट 16 सेकेण्ड की मुद्दत दरकार होती है। इस बिना पर वह कभी 29 दिन के बाद नज़र आता है और कभी 30 दिन के बाद और रोवियत पर महीनों की मुद्दत का इन्हेसार है, और शम्सी साल की मुद्दत 365 दिन 5 घण्टे 48 मिनट 46 सेकेण्ड होती है। इस लिये क़मरी साल 10 दिन 21 घण्टे 14 सेकेण्ड शम्सी साल से छोटा होगा और हर सौ साल के बाद शम्सी साल से तीन साल आगे बढ़ जायेगा।

चुनान्चे अहले किताब में से एक शख़्स ने अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम से कहा कि कुरआन में असहाबे कहफ़ के मुतअल्लिक़ है कि "वह ग़ार में तीन सौ बरस ठहरे और लोगों ने नौ बरस और बढ़ा दिये"। और हमारे हां की किताब में सिर्फ़ तीन सौ बरस का ज़िक्र है। यह इख़्तिलाफ़ क्यों है? हज़रत[अ०] ने फ़रमाया कि यूनानियों के तीन सौ बरस अरबों के तीन सौ नौ सालों के बराबर होते हैं। यह इस लिये कि जब हर सौ साल में तीन साल का इज़ाफ़ा होगा तो तीन सौ सालों के बाद नौ सालों का इज़ाफ़ा होना ही चाहिये।

जिन ममालिक में महीनों की मुद्दत शम्सी साल से कम होती है, वह उनमें दिनों का इज़ाफ़ा करके उसे शम्सी साल से मुताबिक़ कर लेते हैं। चुनान्चे अहले हिन्द अपने महीनों का हिसाब चांद से करते हैं। इस तरह के परवा यानी चांद के इन्हेतात से महीने का आग़ाज़ करते हैं और पूरनमाशी यानी चांद के मुकम्मल हो जाने पर ख़त्म कर देते हैं और हर तीसरे साल एक महीने का इज़ाफ़ा करके अपने साल को शम्सी साल के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुताबिक़ कर लेते हैं। तुर्कों के महीने भी शुमार में क़मरी महीनों के बराबर होते हैं। वह शम्स व क़मर के इत्तिसाल से इब्तिदा करते हैं और हर तीसरे साल एक माह का इज़ाफ़ा कर लेते हैं। अहले फ़ारस अपने साल की इब्तिदा तहवीले आफ़ताब से करते हैं। उनके महीनों के नाम यह हैं :—

फ़रवरदीन, उरदी बहिश्त, ख़ुरदाद, तीर, मुरदाद, शहरीवर, मेहर, आबान, आज़र, दई, बहमन, इस्फ़न्द।

यह तमाम महीने 30, 30 दिन के होते हैं जिससे साल के 360 दिन बनते हैं। लेकिन वह इस्फ़ेन्दारिन्द के आख़िर में 5 दिनों का इज़ाफ़ा करके शम्सी साल के मुताबिक़ कर लेते हैं, और 120 साल के बाद एक महीने का इज़ाफ़ा करके बक़ाया कमी को पूरा कर लेते हैं। इस ज़ायद महीने को हिन्दी में लोंद, तुर्की में सवाआई, और फ़ारसी में कबीसा कहते हैं। रोम में महीनों का हिसाब चांद से और साल का हिसाब सूरज से लगाया जाता था। जब रोम में जूलियस सीज़र हुक्मरान हुआ तो उसने 45 क़ाफ़—मीम में दो हइय्यत दानों की मदद से साल की मुद्दत 365 दिन 6 घण्टे मुक़र्रर की। इस तरह कि फ़रवरी के 29 दिन और बाक़ी महीनों में एक महीना तीस दिन का और दूसरा 31 दिन का क़रार दिया, और छः घण्टे की खपत के लिये हर चौथे साल फ़रवरी में एक दिन का एज़ाफ़ा कर दिया और अपने नाम पर जून के बाद वाले महीने का नाम जुलाई रखा। उसके बाद अगस्टस ने जुलाई के बाद वाले महीने का नाम अपने नाम पर अगस्त रखा, और फ़रवरी से एक दिन निकाल कर उसमें बढ़ा दिया। यह हिसाब सदियों चलता रहा, लेकिन साल की मुद्दत चूंकि 365 दिन 6 घण्टे थी, इस लिये 400 साल के अर्से में तहवीले आफ़ताब में 3 दिन का फ़र्क़ पड़ गया। चुनान्चे जब सन् 325 ई0 में रोम के हइय्यत दान इस मसअले पर ग़ौर करने के लिये जमा हुए तो उस साल तहवीले आफ़ताब 21 मार्च को थी। हालांकि 45 क़ाफ़—मीम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ब यह साल राएज हुआ था तो तहवीले आफ़ताब 25 मार्च को थी। उन्होंने ताया कि शम्सी साल की सही मुद्दत चूंकि 365 दिन 5 घण्टा 45 मिनट ; सेकेण्ड है और मुल्की साल का शुमारा 365 दिन 6 घण्टे के हिसाब से ता रहा है और मुल्की साल, शम्सी साल से 11 मिनट 14 सेकेण्ड आगे ढ़ता रहा है इस लिये यह फ़र्क़ पड़ गया है। मगर इसकी तसहीह की ाई तदबीर न कर सके। आख़िर सन् 1582 ई0 में पापाए आज़म ग्रेगरी ने सकी तरफ़ तवज्जोह की और गुज़िश्ता सालों में जो दस दिन ज्यादा ार हुए थे कम कर दिये और आईन्दा के लिये हर तीन साल के दिन 365 र चौथे साल के दिन 366 क़रार दिये ताकि इन चार सालों में हर साल 5 घण्टे 48 मिनट 46 सेकेण्ड ज़ायद होते हैं उनकी खपत हो जाये। र जब यह देखा गया कि इससे भी कुछ फ़र्क़ पड़ता है इस तरह कि ी तो चार सालों में 23 घण्टे 15 मिनट 4 सेकेण्ड की हुई है और इज़ाफ़ा ; दिन की सूरत में 24 घण्टे का किया गया है जिससे 400 साल में 3 ा का फ़र्क़ पड़ जाता है। इस लिये पूरी सदी वाले सालों में सिर्फ़ इस न में इज़ाफ़ा बाक़ी रखा गया जो 400 पर पूरा तक़सीम हो जाये ताकि यह ने वाले तीन दिन कम हो जायें। लेकिन इस सूरत में भी 26 सेकेण्ड हर साल ढ़ जाते हैं जो 3323 साल में एक दिन के मसावी हो जायेंगे। इसके तदारूक यह सूरत निकाली गयी कि जो साल 4000 पर पूरा तक़सीम हो जाये इसमें दिन का इज़ाफ़ा नहीं किया जायेगा। लेकिन यह एक दिन तो 3323 सालों ढ़ता था और कमी चार हज़ार साल मेंएक दिन की तजवीज़ हुई तो इसके जे में बीस हज़ार सालों में एक दिन फिर बढ़ जायेगा। मगर इसके हल की कोई ख़ास ज़रूरत महसूस नहीं की गयी है।

जिस साल में एक दिन का इज़ाफ़ा किया जाता है उसके पहचानने का ाबी तरीक़ा यह है कि सन ईसवी को चार पर तक़सीम कर दिया जाये।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अगर एक बाक़ी रहे तो 365 दिन वाला पहला साल, दो बाक़ी रहे तो दूसरा, तीन बाक़ी रहे तो तीसरा, और पूरा तक़सीम हो जाये तो वह 366 दिनों का साल होगा। ऐसे साल को लीप साल कहा जाता है।

बहरहाल इस बयान से यह वाज़ेह हो गया कि मुल्की साल कभी शम्सी साल से घट जाता है और कभी बढ़ जाता है, और हर चौथे साल एक दिन के इज़ाफ़े की ज़रूरत पड़ जाती है और फिर भी तफ़ावुत रह जाता है और फिर इसे वही समझ सकता है जो इल्मे फ़लकियात में महारत रखता हो। बख़िलाफ़ क़मरी हिसाब के कि वह घटाये बढ़ाये बग़ैर बिल्कुल क़ुदरती हालत में है, और हर शख़्स बाआसानी मालूम कर लेता है, क्योंकि इसका तअल्लुक़ आम मुशाहिदे से है। इस लिये इस्लाम ने आमाल व इबादात की बुनियाद ज़्यादा तर क़मरी हिसाब पर रखी है। ताकि तअय्युने अवक़ात में कोई दुश्वारी पेश न आये और जो सूरज से मुतअल्लिक़ हैं जैसे अफ़तार सोम या अवक़ाते नमाज़ या नमाज़े आयात तो इनका तअल्लुक़ सिर्फ़ सूरज के मुशाहिदे यानी तुलूअ व ग़ुरूब व जवाल और कसौफ़ से है जिसमें कोई पेचीदगी नहीं है। अलबत्ता कुछ उमूर ऐसे हैं जो शम्सी हिसाब से मुतअल्लिक़ हैं मगर वह आमाल वाजिबा पर असर अन्दाज़ नहीं होते जैसे नौरोज़, क्योंकि जिस दिन ग़दीरे ख़ुम में एलाने ख़िलाफ़ते अलवी हुआ और जिस दिन अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम ज़ीनत अफ़ज़ाए सरीरे ख़िलाफ़त हुए, आफ़ताब बुरजे हमल में था। इस लिये उस दिन की मसर्रत को दो चन्द करने के लिये क़मरी व शम्सी दोनों तारीख़ों को यौमे मसर्रत क़रार दिया गया। उसी तरह नौरोज़ के 23 दिन बाद नैसां का महीना शुरू होता है जिसमें बरसने वाले पानी पर मुख़्तलिफ़ सूरतें और दुआयें पढ़ कर पीने से मुख़्तलिफ़ फ़वाएद व ख़्वास का तज़किरा रवायात में हुआ है। यूंहि इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने माहे हरीज़ान की सातवीं तारीख़ को पुछने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लगवाने से मना किया है और इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से शम्सी महीनों के लिहाज़ से हर महीने के कुछ उसूले सेहत वारिद हुए हैं।

दुआए इस्तेक़्बाले माहे रमज़ान

तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिये है जिसने अपनी हम्दो सिपास की तरफ़ हमारी रहनुमाई की और हमें हम्द गुज़ारों में से क़रार दिया ताकि हम उसके अहसानात पर शुक्र करने वालों में महसूब हों और हमें इस शुक्र के बदले में नेकूकारों का अज्र दे। उस अल्लाह तआला के लिये हम्दो सताइश है जिसने हमें अपना दीन अता किया और अपनी मिल्लत में से क़रार दे कर इम्तियाज़ बख़्शा और अपने लुत्फ़ व अहसान की राहों पर चलाया। ताकि हम उसके फ़ज़्ल व करम से उन रास्तों पर चल कर उसकी ख़ुशनूदी तक पहुंचे। ऐसी हम्द जिसे वह क़ुबूल फ़रमाये और जिसकी वजह से हम से वह राज़ी हो जाये। तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने अपने लुत्फ़ व अहसान के रास्तों में से एक रास्ता अपने महीने को क़रार दिया। यानी रमज़ान का महीना, स्याम का महीना, इस्लाम का महीना, पाकीज़गी का महीना, तसफ़िया व ततहीर का महीना, इबादत व क़याम का महीना, वह महीना जिसमें क़ुरआन नाज़िल हुआ। जो लोगों के लिये रहनुमा है। हिदायत और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हक़ व बातिल के इम्तियाज़ की रौशन सदाक़तें रखता है। चुनान्चे तमाम महीनों पर उसकी फ़ज़ीलत व बरतरी को आशकारा किया। इन फ़रावां इज़्ज़तों और नुमायां फ़ज़ीलतों की वजह से जो उसके लिये क़रार दें और उसकी अज़मत के इज़हार के लिये जो चीज़ें दूसरे महीनों में जाएज़ की थीं उसमें हराम कर दें और उसके एहतेराम के पेशे नज़र खाने पीने की चीज़ों से मना कर दिया और एक वाज़ेह ज़माना उसके लिये मोअय्यन कर दिया। ख़ुदाये बुज़ुर्ग व बरतर यह इजाज़त नहीं देता कि उसे उसके मोअय्यना वक़्त से आगे बढ़ा दिया जाये और न यह क़ुबूल करता है कि इससे मोअख़्ख़िर कर दिया जाये। फिर यह कि इसकी रातों में से एक रात को हज़ार महीनों की रातों पर फ़ज़ीलत दी और इसका नाम शबे क़द्र रखा। इस रात में फ़रिश्ते और रूहुल क़ुद्स हर उस अम्र के साथ जो उसका क़तई फ़ैसला होता है उसके बन्दों में से जिस पर वह चाहता है नाज़िल होते हैं। वह रात सरासर सलामती की रात है जिसकी बरकत तुलूए फ़ज्र तक दाएम व बरक़रार है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें हिदायत फ़रमा कि हम इस महीने के फ़ज़ल व शरफ़ को पहचानें। इसकी इज़्ज़त व हुरमत को बुलन्द जानें और इसमें उन चीज़ों से जिन से तूने मना किया है इजतेनाब करें। और इसके रोज़े रखने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में हमारे आज़ा को नाफ़रमानियों से रोकने और उन कामों में मसरूफ़ रखने से जो तेरी ख़ुशनूदी का बाअ़स हों हमारी एआनत फ़रमा, ताकि हम न बेहूदा बातों की तरफ़ कान लगायें, न फ़ुज़ूल चीज़ों की तरफ़ बेमहाबा निगाहें उठायें, न हराम की तरफ़ हाथ बढ़ायें न अम्रे ममनूअ की तरफ़ पेश क़दमी करें, न तेरी हलाल की हुई चीज़ों के अलावा किसी चीज़ को हमारे शिकम कुबूल करें, और न तेरी बयान की हुई बातों के सिवा हमारी ज़बानें गोया हों। सिर्फ़ उन चीज़ों के बजा लाने का बार उठायें जो तेरे सवाब से क़रीब करें और सिर्फ़ उन कामों को अन्जाम दें जो तेरे अज़ाब से बचा ले जायें। फिर उन तमाम आमाल को रियाकारों की रियाकारी और शोहरत पसन्दों की शोहरत पसन्दी से पाक कर दे इस तरह कि तेरे अलावा किसी को उनमें शरीक न करें और तेरे सिवा किसी से कोई मतलब न रखें। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें इसमें नमाज़ हाय पंजगाना के अवक़ात से उन हुदूद के साथ जो तूने मोअय्यन किये हैं और उन वाजिबात के साथ जो तूने आयद किये हैं और उन आदाब के साथ जो तूने क़रार दिये हैं और उन लम्हात के साथ जो तूने मुक़र्रर किये हैं आगाह फ़रमा और हमें उन नमाज़ों में उन लोगों के मर्तबे पर फ़ाएज़ कर जो उन नमाज़ों के दरजाते आलिया हासिल करने वाले, उनके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वाजिबात की निगेहदाश्त करने वाले और उन्हें उनके अवक़ात में उसी तरीक़े पर जो तेरे अब्दे ख़ास और रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम ने रूकूअ व सुजूद और उनके तमाम फ़ज़ीलत व बरतरी के पहलुओं में जारी किया था, कामिल और पूरी पाकीज़गी और नुमायां व मुकम्मल ख़ुशूअ व फ़रोतनी के साथ अदा करने वाले हैं। और हमें इस महीने में तौफ़ीक़ दे कि नेकी व एहसान के ज़रिये अज़ीज़ों के साथ सिला–ए–रहमी और इनाम व बख़्शिश से हमसायों की ख़बरगीरी करें और अपने अमवाल को मज़लूमों से पाक व साफ़ करें, और ज़कात दे कर उन्हें पाकीज़ा व तय्यब बना लें, और यह कि जो हम से अलाहदगी अख़्तियार करे उसकी तरफ़ दस्ते मसालेहत बढ़ायें। जो हम पर ज़ुल्म करे उससे इन्साफ़ बरतें। जो हमसे दुश्मनी करे उससे सुलह व सफ़ाई करें, सिवाये उसके जिससे तेरे लिये और तेरी ख़ातिर दुश्मनी की गयी हो, क्योंकि वह ऐसा दुश्मन है जिसे हम दोस्त नहीं रख सकते और ऐसे गिरोह का (फ़र्द) है जिससे हम साफ़ नहीं हो सकते और हमें इस महीने में ऐसे पाक व पाकीज़ा आमाल के वसीले से तक़र्रुब हासिल करने की तौफ़ीक़ दे जिनके ज़रिये तू हमें गुनाहों से पाक कर दे और अज़ सरे नौ बुराईयों के इरतेकाब से बचा ले जाये। यहां तक कि फ़रिश्ते तेरी बारगाह में जो आमाल नामे पेश करें वह हमारी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हर क़िस्म की एताअतों और हर नौ की इबादत के मुक़ाबले में सुबुक हों। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस महीने के हक़ व हुरमत और नीज़ उन लोगों का वास्ता देकर सवाल करता हूं जिन्होंने इस महीने में शुरूअ से ले कर उसके ख़त्म होने तक तेरी इबादत की हो वह मुक़र्रबे बारगाह फ़रिश्ता हो या नबी मुरसल या कोई मर्द सालेह व बरगुज़ीदा कि तू मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमाये और जिस इज़्ज़त व करामत का तूने अपने दोस्तों से वादा किया है उसका हमें अहल बना और जो इन्तेहाई एताअत करने वालों के लिये तूने अज्र मुक़र्र किया है वह हमारे लिये भी मुक़र्रर फ़रमा और हमें अपने रहमत से उन लोगों में शामिल कर जिन्होंने बुलन्द तरीन मर्तबे का इस्तेहक़ाक़ पैदा किया। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें उस चीज़ से बचाये रख कि हम तौहीद में कज अन्देशी, तेरी तमजीद व बुज़ुर्गी में कोताही, तेरे दीन में शक, तेरे रास्ते से बेराहरवी और तेरी हुरमत से लापरवाई करें और तेरे दुश्मन शैतान मरदूद से फ़रेब ख़ुर्दगी का शिकार हों। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जब कि इस महीने की रातों में हर रात में तेरे कुछ ऐसे बन्दे होते हैं जिन्हें तेरा अफ़्व व करम आज़ाद करता है या तेरी बख़्शिश व दरगुज़र उन्हें

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बख़्श देती है तो हमें भी उन्हीं बन्दों में दाख़िल कर और इस महीने के बेहतरीन अहल व असहाब में क़रार दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इस चांद के घटने के साथ हमारे गुनाहों को भी महो कर दे, और जब इसके दिन ख़त्म होने पर आयें तो हमारे गुनाहों का वबाल हमसे दूर कर दे ताकि यह महीना इस तरह तमाम हो कि तू हमें ख़ताओं से पाक और गुनाहों से बरी कर चुका हो। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इस महीने मे अगर हम हक़ से मुंह मोड़ें तो हमें सीधे रास्ते पर लगा दे और कजरवी अख़्तियार करें तो हमारी इस्लाह व दुरूस्तगी फ़रमा और अगर तेरा दुश्मन शैतान हमारे गिर्द एहाता करे तो उसके पंजे से छुड़ा ले। बारे इलाहा! इस महीने का दामन हमारी इबादतों से जो तेरे लिये बजा लाई गयी हों भर दे और इसके लम्हात को हमारी एताअतों से सजा दे और इसके दिनों में रोज़े रखने और इसकी रातों में नमाज़ें पढ़ने, तेरे हुज़ूर गिड़गिड़ाने, तेरे सामने इज्ज़ व इल्हाद करने और तेरे रूबरू ज़िल्लत व ख़्वारी का मुज़ाहरा करने, इन सबमें हमारी मदद फ़रमा। ताकि इसके दिन हमारे ख़िलाफ़ ग़फ़लत की और इसकी रातें कोताही व तक़सीर की गवाही न दें। ऐ अल्लाह! तमाम महीनों और दिनों में जब तक तू हमें ज़िन्दा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

रखे, ऐसा ही क़रार दे। और हमें उन बन्दों में शामिल फ़रमा जो फ़िरदौस बरीं की ज़िन्दगी के हमेशा हमेशा के लिये वारिस होंगे और वह कि जो कुछ वह ख़ुदा की राह में दे सकते हैं, देते हैं। फिर भी उनके दिलों को यह खटका लगा रहता है कि उन्हें अपने परवर दिगार की तरफ़ पलट कर जाना है, और उन लोगों में से जो नेकियों में जल्दी करते हैं और वही तो वह लोग हैं जो भलाईयों में आगे निकल जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर हर वक़्त और हर घड़ी और हर हाल में इस क़दर रहमत नाज़िल फ़रमा जितनी तूने किसी पर नाज़िल की हों और उन सब रहमतों से दोगुनी चौगुनी कि जिसे तेरे अलावा कोई शुमार न कर सके। बेशक तू जो चाहता है वही करने वाला है।

यह दुआ माहे रमज़ान के ख़ैरमक़दम के सिलसिले में है। माहे रमज़ान क़मरी साल का नवां महीना है जिसमें तुलूए सुबह सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़ताब तक चन्द उमूर बक़सद क़ुरबत तर्क किये जाते हैं जैसे खाना पीना वग़ैरा। इस तर्क का नाम रोज़ा है जो इस्लामी इबादात में एक अहम इबादत है। रोज़ा सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम ही से मख़सूस नहीं है बल्कि तमाम मलल व मज़ाहिब किसी न किसी सूरत में रोज़ा रखते और उसकी अफ़ादियत का इक़रार करते हैं। अलबत्ता माहे रमज़ान में रोज़ा रखना इस्लाम से मुख़तिस है। इसी लिये हज़रत[अ०] ने इसे शहरूल इस्लाम (इस्लाम का महीना) फ़रमाया है। इस महीने को माहे रमज़ान के नाम से मौसूम करने के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सिलसिले में चन्द अक़्वाल हैं :–

पहला क़ौल यह है कि 'रमज़' से माख़ूद है और रमज़ के माने धूप की शिद्दत से पत्थर, रेत वग़ैरा के गर्म होने के हैं। इसी से जलती हुई ज़मीन को "रमज़ा" कहा जाता है, और जब पहली दफ़ा रोजे वाजिब हुए तो माहे रमज़ान सख़्त गर्मी में पड़ा था, और रोज़ों की वजह से गर्मी व तपिश का अहसास बढ़ा तो इस महीने का नाम माहे रमज़ान यानी माहे आतिशे फ़िशां पड़ गया।या इस लिये कि यह महीना गुनाहों को इस तरह जलाता और फ़ना करता है जिस तरह सूरज की तमाज़त ज़मीन की रुतूबतों को जलाती और फ़ना करती है। चुनान्चे पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

"माहे रमज़ान को माहे रमज़ान इस लिये कहा जाता है कि वह गुनाहों को जला देता है।"

दूसरा क़ौल यह है कि यह 'रमज़ी' से माख़ूज़ है और रमज़ी उस अब्रे बारां को कहते हैं जो मौसमे गर्मा के अख़ीर में आये इससे गर्मी की तेज़ी दूर हो जाती है। इसी तरह यह महीना भी गुनाहों के जोश को कम करता और बुराईयों को धो डालता है।

तीसरा क़ौल यह है कि यह अरबों के क़ौल रमज़तुल नसल से माख़ूज़ है जिसके माने दो पत्थरों के दरमियान छुरी तलवार या नैज़े के फल को रख कर तेज़ करने के हैं, और अरब इस महीने में अपने हथियारों को तेज़ किया करते थे ताकि शहरुल हराम के शुरूअ होने से पहले माहे शव्वाल में अपनी जंग जूयाना तबीअत के तक़ाज़े पूरे कर सकें।

चौथा क़ौल यह है कि यह 'अरतमाज़' से माख़ूज़ है जिसके माने क़लक़ व इज़्तेराब महसूस करने के हैं। चूंकि इस महीने में भूख प्यास की वजह से बेचैनी महसूस की जाती है इस लिये इसे माहे रमज़ान के नाम से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मौसूम किया गया है।

पांचवा क़ौल यह है कि यह मुशतक़ नहीं है बल्कि अल्लाह का नाम है और चूंकिइस महीने को अल्लाह तआला से ख़ुसूसी निस्बत हासिल है इस लिये यह अल्लाह तआला की तरफ़ मनसूब हो कर माहे रमज़ान कहलाता है। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"यह न कहा करो कि "यह रमज़ान है'। और "रमज़ान गया, और रमज़ान आया।" इस लिये कि रमज़ान, अल्लाह सुबहानहू के नामों में से एक नाम है, और अल्लाह तआला कहीं आता जाता नहीं। लेहाज़ा माहे रमज़ान कहा करो।"

माहे रमज़ान इस इन्तेसाब और अपने फ़यूज़ व बरकात के लिहाज़ से तमाम महीनों पर फ़ौक़ियत रखता है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

"तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का महीना बरकत, रहमत और मग़फ़ेरत का पैग़ाम ले कर बढ़ रहा है। यह वह महीना है जो अल्लाह तआला के नज़दीक तमाम महीनों से अफ़ज़ल है। इसके दिन तमाम दिनों से अफ़ज़ल, इसकी रातें तमाम रातों से बेहतर, इसके लम्हे तमाम लम्हों से बरतर हैं।"

इस महीने की रातों में से एक रात लैलतुल क़द्र के नाम से मौसूम है जिसमें बजा लाये हुए आमाल व इबादत हज़ार महीनों के आमाल से बेहतर हैं। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"इस रात में आमाल उन हज़ार महीनों के आमाल से बेहतर हैं जिनमें लैलतुल क़द्र न हो।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इसी महीने में तमाम आसमानी किताबें नाज़िल हुयीं और इसी महीने में कुरआन मजीद नाज़िल हुआ। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन नाज़िल किया गया। वह लोगों के लिये रहनुमा है और हिदायत और हक़ व बातिल के इम्तियाज़ की रौशन निशानियां रखता है।"

इस महीने को रोज़ों से मुख़तस करने में यह मसलेहत भी हो सकती है कि कुरआन की याद ताज़ा रहे और रोज़ा व इबादत के ज़ैल में इसके नुज़ूल की तक़रीब को मनाया जा सके और यूं भी अमल व इबादत के लिये वक़्त व ज़माने की पाबन्दी इसके बजा लाने की क़वी मोहर्रिक होती है। अगर रोज़ों का ज़माना मुक़र्रर न होता और लोगों को यह अख़्तियार होता कि वह साल में जब चाहें रोज़ा रख लें, तो इसका नतीजा यह होता कि बेशतर अफ़राद रोज़ा रखने में टाल मटोल से काम लेते, और आज कल करके पूरा साल गुज़ार देते और एक आध दिन भी रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ नसीब न होती, और अगर एक आध रोज़ा रख भी लेते तो इस पर कोई फ़ायदा मुरत्तब न होता बल्कि एक मोअताद ज़िन्दगी में ख़लल पैदा होता और फिर हर शख़्स ऐसे ही ज़माने में रोज़ा रखता जिसमें रोज़े की तकलीफ़ का एहसास कम होता और मुख़्तलिफ़ मौसमों में रोज़ा रखने से जो मुख़्तलिफ़ असरात सेहते इन्सानी पर पड़ते हैं उनसे महरूम होना पड़ता। इसके अलावा इबादत में हमआहंगी व इज्तेमाई शान बाक़ी न रहती, और यकरंगी ही वह चीज़ है जिससे तलख़ी भी ख़ुशगवार हो जाया करती है। चुनान्चे जब कोई शख़्स दूसरों को बेरोज़ा देखता है और ख़ुद रोज़े से होता है तो उसे रोज़ा गरां गुज़रता है। मगर दूसरों को रोज़ादार देखने से उसकी नाख़ुशगवारी बारे ख़ातिर नहीं होती। चुनान्चे जब सफ़र या मर्ज़ की वजह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ोज़े क़ज़ा हो जाते हैं और बाद में रखना पड़ते हैं तो वह माहे रमज़ान ोज़ों की बनिस्बत शाक़ गुज़रते हैं और दिल में माहे रमज़ान के रोज़ों ऐसा वलवला व जोश पैदा नहीं होता, और इस तहदीदे अवक़ात से एक ादा यह भी है कि इन्सान दूसरों की देखा देखी रोज़ा रख लेता है और ज़ा रहने से शर्म व ख़िजालत महसूस करता है। इस्लामी रोज़ा फ़क़त य्युने मुद्दत ही के लिहाज़ से इम्तियाज़ नहीं रखता कि उसे आगे पीछे किया जा सकता, और भी चन्द वजूह से ख़ुसूसी इम्तियाज़ात का ाल है। चुनान्चे इस्लाम ने रोज़ों की मुद्दत न इतनी मुख़्तसर रखी है इनसे कोई फ़ायदा व नतीजा हासिल न हो और न इतनी तवील कि दगी के मामूल में फ़र्क़ पड़े, और इससे ओहदाबरा होने में दुश्वारी ूस हो। इस मोअतदिल मुद्दत के साथ रोज़े के अवक़ात भी बिल्कुल ई हैं। यानी तुलूए सुबह सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़ताब तक, जिन्हें आसानी से मालूम किया जा सकता है। इसी तरह पूरी मुद्दत की य्युन में कोई दुश्वारी पेश नहीं आती। यूं, कि एक चांद देखो तो रोज़े कर दो और दूसरा चांद देखो तो ख़त्म कर दो। ब–ख़िलाफ़ दूसरे ाहिब के कि उनके हां रोज़े रखने के लिये पूरा हिसाब लगाने की ज़रूरत ती है और बग़ैर हिसाबदानी के न शुरूअ का वक़्त मालूम हो सकता है न ख़त्म का, और फिर इस्लामी रोज़ा सिर्फ़ दिन के अवक़ात में होता जब कि इन्सान चलता फिरता और हरकत करता रहता है और तबई ायत से यह मुसल्लमा तौर पर साबित है कि जब इन्सान के बदन में रकत न हो तो इस हालत में ख़ाली पेट रहना सेहत को मोअतिद बा सान पहुंचाता है। इस लिये अइम्मा[अ०] अहलेबैत[अ०] ने रात के वक़्त कुछ कुछ खा पी कर सोने की हिदायत की है, और सोमे वसाल यानी दो रोज़ों मिला कर रखने को हराम क़रार दिया गया है ताकि रोज़े में रात का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हिसाब शामिल न होने पाये इसके बरख़िलाफ़ यहूद व नसारा वग़ैरा के ह रात का हिस्सा भी शामिल होता है। चुनान्चे यहूदियों का रोज़ा 22 घण्टे से ले कर 26 घण्टे तक का होता है, और इतना तवील फ़ाक़ा यक़ीनन् सेहते जिस्मानी के लिये मुज़िर होता है, और फिर रोज़े का सबसे अहम मक़सद ज़ब्ते नफ़्स की मशक़ है और यह मक़सद रात के रोज़े से हासिल नहीं हो सकता, क्योंकि रात तो सोने में कट जाती है और उसके साथ ख़्वाहिशात व जज़बात भी सो जाते हैं इस लिये ख़्वाहिशाते नफ़्स को रोकने की रियाज़त न हो सकेगी। यह रियाज़त तो दिन ही के रोज़े से हो सकती है जिससे इन्सान रफ़्ता रफ़्ता अपने ख़्वाहिशात पर क़ाबू पा लेता है। कभी ख़्वाहिशात पर इक़्तिदार सिर्फ़ इस हद तक होता है कि इन्सान भूख प्यास के होते हुए न खाता है न पीता है और कभी ज़बान, आंख, कान पर भी क़ाबू पा लेता है और इन्हें बेराह नहीं होने देता और कभी अपने ख़यालात व तसव्वुरात पर भी क़ाबू हासिल कर लेता है। इस एतबार से रोज़ादार तीन क़िस्म के हैं। एक वह जो सिर्फ़ खाने पीने और दूसरे मुज़तिरात से इजतेनाब करते हैं; यह अवाम का गिरोह है, और दूसरे वह जो हम्मातन रोज़ादार होते हैं और किसी अज़ो को गुनाह से आलूदा नहीं होने देते। यह ख़्वास की जमाअत है और दरअसल रोज़ादार यही लोग हैं। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

और तीसरे वह जो अपने दिल व दिमाग़ को हर क़िस्म के ख़यालाते फ़ासिदा और तसव्वुराते बातिला से पाक व साफ़ रखते हैं और हम्मातन अल्लाह तआला के ज़िक्र व फ़िक्र में मुस्तग़रक़ रहते हैं। यह मुक़र्रबीन की जमाअत है। चुनान्चे इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ वारिद हुआ है कि माहे रमज़ान में आप[अ०] की ज़बाने अक़दस से दुआ व तस्बीह और तकबीर व अस्तग़फ़ार के अलावा कोई कलमा सुनने में न आता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

था। यहां तक कि तमाम माहे मुबारक इसी तरह से गुज़र जाता था।

दुआए विदाए माहे रमज़ान

"ऐ अल्लाह! ऐ वह जो (अपने अहसानात का) बदला नहीं चाहता ऐ वह जो अता व बख़्शिश पर पशेमान नहीं होता। ऐ वह जो अपने बन्दों को (उनके अमल के मुक़ाबिले में) नपा तुला अज्र नहीं देता। तेरी नेअमतें बग़ैर किसी साबेक़ा इस्तेहक़ाक़ के हैं और तेरा अफ़ो व दरगुज़र तफ़ज़्ज़ुल व अहसान है। तेरा सज़ा देना ऐन अदल और तेरा फ़ैसला ख़ैर व बहबूदी का हामिल है। तू अगर देता है तो अपनी अता को मिन्नत गुज़ारी से आलूदा नहीं करता और अगर मना कर देता है तो यह ज़ुल्म व ज़ियादती की बिना पर नहीं होता। जो तेरा शुक्र अदा करता है तो उसके शुक्र की जज़ा देता है। हालांकि तू ही ने उसके दिल में शुक्र गुज़ारी का अलक़ा किया है और जो तेरी हम्द करता है उसे बदला देता है हालांकि तू ही ने उसे हम्द की तालीम दी है, और ऐसे शख़्स की पर्दा पोशी करता है कि अगर चाहता तो उसे रूस्वा कर देता, और ऐसे शख़्स को देता है कि अगर चाहता तो उसे न देता। हालांकि वह दोनों तेरी बारगाहे अदालत में रूसवा व महरूम किये जाने ही के क़ाबिल थे मगर तूने अपने अफ़आल की बुनियाद तफ़ज़्ज़ुल व अहसान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर रखी है और अपने इक़्तिदार को अफ़वो व दरगुज़र की राह पर लगाया है, और जिस किसी ने तेरी नाफ़रमानी की तूने उससे बुर्दबारी का रवय्या अख़्तियार किया, और जिस किसी ने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म का इरादा किया तूने उसे मोहलत दी तो उनके रूजूअ होने तक अपने हिल्म की बिना पर मोहलत देता है और तौबा करने तक उन्हें सज़ा देने में जल्दी नहीं करता ताकि तेरी मंशा के ख़िलाफ़ तबाह होने वाला तबाह न हो और तेरी नेअमत की वजह से बदबख़्त होने वाला बदबख़्त न हो मगर उस वक़्त कि जब उस पर पूरी उज़्रदारी और इतमामे हुज्जत हो जाये। ऐ करीम! यह (इतमाम हुज्जत) तेरे अफ़वो व दरगुज़र का करम, और ऐ बुर्दबार तेरी शफ़क़त व मेहरबानी का फ़ैज़ है। तू ही है वह जिसने अपने बन्दों के लिये अफ़वो बख़्शिश का दरवाज़ा खोला है और उसका नाम तौबा रखा है और तूने उस दरवाज़े की निशानदेही के लिये अपनी वही को रहबर क़रार दिया है ताकि वह उस दरवाज़े से भटक न जाये। चुनान्चे ऐ मुबारक नाम वाले तूने फ़रमाया है कि "ख़ुदा की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा परवर दिगार तुम्हारे गुनाहों को महो कर दे और तुम्हें उस बेहिश्त में दाख़िल करे जिसके (महल्लात व बाग़ात के) नीचे नहरें बहती हैं। उस दिन जब ख़ुदा अपने रसूल[स०] और उन लोगों को जो उस पर ईमान लाये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हैं रूस्वा नहीं करेगा बल्कि उनका नूर उनके आगे आगे और उनकी दायें जानिब चलता होगा और वह लोग यह कहते होंगे कि ऐ हमारे परवर दिगार! हमारे लिये हमारे नूर को कामिल फ़रमा और हमें बख़्शिश दे। इस लिये कि तू हर चीज़ पर क़ादिर है।" तो अब जो इस घर में दाख़िल होने से ग़फ़लत करे जब कि दरवाज़ा खोला और रहबर मुक़र्रर किया जा चुका है तो उसका उज़्र व बहाना क्या हो सकता है? तू वह है जिसने अपने बन्दों के लिये लेन देन में ऊँचे नरख़ों का ज़िम्मा लिया ले लिया है और यह चाहा है कि वह जो सौदा तुझसे करें उसमें उन्हें नफ़अ हो और तेरी तरफ़ बढ़ने और ज़्यादा हासिल करने में कामियाब हों। चुनान्चे तूने कि जो मुबारक नाम वाला और बुलन्द मक़ाम वाला है, फ़रमाया है:– "जो मेरे पास नेकी ले कर आयेगा उसे उसका दस गुनाह अज्र मिलेगा और जो बुराई का मुरतकिब होगा तो उसको बुराई का बदला बस उतना ही मिलेगा जितनी बुराई है"— और तेरा इरशाद है कि :— "जो लोग अल्लाह तआला की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस बीज की सी है जिससे सात बालियां निकलें और हर बाली में सौ सौ दाने हों और ख़ुदा जिसके लिये चाहता है दोगुना कर देता है।"— और तेरा इरशाद है कि :— कौन है जो अल्लाह तआला को क़र्ज़े हसना दे ताकि ख़ुदा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उसके माल को कई गुना ज़्यादा करके अदा करे।" और ऐसी ही अफ़ज़ाइशे हसनात के वादे पर मुश्तमिल दूसरी आयतें कि जो तूने कुरआन मजीद में नाज़िल की हैं और तू ही वह है जिसने वही व ग़ैब के कलाम और ऐसी तरग़ीब के ज़रिये कि जो उनके फ़ायदे पर मुश्तमिल है ऐसे उमूर की तरफ़ उनकी रहनुमाई की कि अगर उनसे पोशीदा रखता तो न उनकी आंखें देख सकतीं, न उनके कान सुन सकते और न उनके तसव्वुरात वहां तक पहुंच सकते। चुनान्चे तेरा इरशाद है कि "तुम मुझे याद रखो। मैं भी तुम्हारे तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं हूंगा, और मेरा शुक्र अदा करते रहो और नाशुक्री न करो" ——— और तेरा इरशाद है कि :— अगर मेरा शुक्र अदा करोगे तो मैं यक़ीनन तुम्हें ज़्यादा दूंगा और अगर नाशुक्री की तो याद रखो कि मेरा अज़ाब सख़्त अज़ाब है।"—— और तेरा इरशाद है कि —— मुझसे दुआ मांगो तो मैं कुबूल करूंगा। वह लोग जो गुरूर की बिना पर मेरी इबादत से मुंह मोड़ लेते हैं वह अनक़रीब ज़लील हो कर जहन्नुम में दाख़िल होंगे"—— चुनान्चे तूने दुआ का नाम इबादत रखा और उसके तर्क को गुरूर से ताबीर किया और उसके तर्क पर जहन्नम में ज़लील हो कर दाख़िल होने से डराया। इस लिये उन्होंने तेरी नेअमतों की वजह से तुझे याद किया। तेरे फ़ज़ल व करम की बिना पर तेरा शुक्रिया अदा किया; और तेरे हुक्म से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तुझे पुकारा और (नेअमतों में) तलबे अफ़ज़ाइश के लिये तेरी राह में सदक़ा दिया, और तेरी यह रहनुमाई ही उनके लिये तेरे ग़ज़ब से बचाव और तेरी ख़ुशनूदी तक रसाई की सूरत थी। और जिन बातों की तूने अपने जानिब से अपने बन्दों की रहनुमाई की है अगर कोई मख़लूक़ अपनी तरफ़ से दूसरे मख़लूक़ की ऐसी ही चीज़ों की तरफ़ राहनुमाई करता तो वह क़ाबिले तहसीन होता। तो फिर तेरे ही लिये हम्दो सताइश है। जब तक तेरी हम्द के लिये राह पैदा होती रहे और जब तक हम्द के वह अल्फ़ाज़ जिनसे तेरी तमहीद की जा सके और हम्द के वह मआनी जो तेरी हम्द की तरफ़ पलट सकें बाक़ी रहें। ऐ वह जो अपने फ़ज़्ल व एहसान से बन्दों की हम्द का सज़ावार हुआ है और उन्हें अपनी नेअमत व बख़्शिश से ढांप लिया है, हम पर तेरी नेअमतें कितनी आशकारा हैं और तेरा इनाम कितना फ़रावां है और किस क़द्र हम तेरे इनआम व एहसान से मख़सूस हैं। तूने इस दीन की जिसे मुन्तख़ब फ़रमाया और इस तरीक़े की जिसे पसन्द फ़रमाया इस रास्ते की जिसे आसान कर दिया हमें हिदायत की और अपने हां कुर्ब हासिल करने और इज़्ज़त व बुज़ुर्गी तक पहुंचने के लिये बसीरत दी। बारे इलाहा! तूने इन मुन्तख़ब फ़राएज़ और मख़सूस वाजिबात में से माहे रमज़ान को क़रार दिया है जिसे तूने तमाम महीनों में इम्तियाज़ बख़्शा, और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तमाम वक़्तों और ज़मानों में उसे मुन्तख़ब फ़रमाया है और उसमें कुरआन और नूर को नाज़िल फ़रमाकर और ईमान को फ़रोग़ व तरक़्क़ी बख़्श कर इसे साल के तमाम अवक़ात पर फ़ज़ीलत दी और इसमें रोज़े वाजिब किये और नमाज़ों की तरग़ीब दी और इसमें शबे क़द्र को बुज़र्गी बख़्शी जो खुद हज़ारों महीनों से बेहतर है। फिर इस महीने की वजह से तूने हमें तमाम उम्मतों पर तरजीह दी, और दूसरी उम्मतों के बजाये हमें इसकी फ़ज़ीलत के बाएस मुन्तख़ब किया। चुनान्चे हमने तेरे हुक्म से इसके दिनों में रोज़े रखे और तेरी मदद से इसकी रातें इबादत में बसर कीं। इस हालत में कि हम इस रोज़े नमाज़ के ज़रिये तेरी उस रहमत के ख़्वास्तगार थे जिसका दामन तूने हमारे लिये फैलाया है और उसे तेरे अज्र व सवाब का वसीला क़रार दिया, और तू हर उस चीज़ के अता करने पर क़ादिर है जिसकी तुझसे ख़्वाहिश की जाये और हर उस चीज़ का बख़्शने वाला है जिसका तेरे फ़ज़्ल से सवाल किया जाये तू हर उस शख़्स से क़रीब है जो तुझसे कुर्ब हासिल करना चाहे। इस महीने ने हमारे दरमियान क़ाबिले सताइश दिन गुज़ारे और अच्छी तरह हक़्क़े रिफ़ाक़त अदा किया और दुनिया जहान के बेहतरीन फ़ायदों से हमें माला माल किया। फिर जब इसका ज़माना ख़त्म हो गया, मुद्दत बीत गयी और गिनती तमाम हो गयी तो वह हमसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जुदा हो गया। अब हम इसे रूख़सत करने की तरह जिसकी जुदाई हम पर शाक़ हो और जिसका जाना हमारे लिये ग़म अफ़ज़ा और वहशत अंगेज़ हो और जिसके अहदो पैमान की निगेहदाश्त इज़्ज़त व हुरमत का पास और उसके वाजिबुल अदा हक़ से सुबुकदोशी अज बस ज़रूरी हो। इस लिये हम कहते हैं, ऐ अल्लाह के बुज़ुर्ग तरीन महीने, तुझ पर सलाम। ऐ दोस्ताने ख़ुदा की ईद तुझ पर सलाम ऐ अवक़ात में बेहतरीन रफ़ीक़ और दिनों और साअतों में बेहतरीन महीने तुझ पर सलाम। ऐ वह महीने जिसमें उम्मीदें बर आती हैं और आमाल की फ़रावानी होती है, तुझ पर सलाम। ऐ वह हम नशीन कि जो मौजूद हो तो उसकी बड़ी क़द्र व मंज़िलत होती है और न होने पर बड़ा दुख होता है और ऐ वह सरचश्माए उम्मीद व रिजा जिसकी जुदाई अलम अंगेज़ है, तुझ पर सलाम। ऐ वह हमदम जो उन्स व दिल बस्तगी का सामान लिये हुए आया तो शादमानी का सबब हुआ और वापस गया तो वहशत बढ़ाकर ग़मगीन बना गया, तुझ पर सलाम। ऐ वह हमसाये जिसकी हमसाएगी में दिल नर्म और गुनाह कम हो गये तुझ पर सलाम। ऐ वह मददगार जिसने शैतान के मुक़ाबले में मदद व एआनत की, ऐ वह साथी जिसने हुस्ने अमल की राहें हमवार कीं तुझ पर सलाम। (ऐ माहे रमज़ान) तुझमें अल्लाह तआला के आज़ाद किये हुए बन्दे किस क़द्र ज़्यादा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हैं और जिन्होंने तेरी हुरमत व इज़्ज़त का पास व लेहाज़ रखा वह कितने ख़ुश नसीब हैं। तुझ पर सलाम, तू किस क़द्र गुनाहों को महो करने वाला और क़िस्म क़िस्म के ऐबों को छुपाने वाला है। तुझ पर सलाम। तू गुनाहगारों के लिये कितना तवील और मोमिनों के दिलों में कितना पुर हैबत है। तुझ पर सलाम । ऐ वह महीने जिससे दूसरे अय्याम हमसरी का दावा नहीं कर सकते, तुझ पर सलाम। ऐ वह महीने जो हर अम्र से सलामती का बाअस है तुझ पर सलाम। ऐ वह जिसकी हमनशीनी बारे ख़ातिर और मुआशिरत नागवार नहीं, तुझ पर सलाम। जब कि तू बरकतों के साथ हमारे पास आया और गुनाहों की आलूदगियों को धो दिया, तुझ पर सलाम। ऐ वह जिसे दिलतंगी की वजह से रूख़सत नहीं किया गया और न ख़स्तगी की वजह से उसके रोज़े छोड़े गये तुझ पर सलाम। ऐ वह कि जिसके आने की पहले से ख़्वाहिश थी और जिसके ख़त्म होने से क़ब्ल ही दिल रंजीदा हैं तुझ पर सलाम। तेरी वजह से कितनी बुराईयां हम से दूर हो गयीं और कितनी भलाईयों के सरचश्मे हमारे लिये जारी हो गये। तुझ पर सलाम। (ऐ माहे रमज़ान) तुझ पर और इस शबेक़द्र पर जो हज़ार महीनों से बेहतर है सलाम हो अभी कल हम कितने तुझ पर वारफ़्ता थे। और आने वाले कल में हमारे शौक़ की कितनी फ़रावानी होगी। तुझ पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सलाम (ऐ माहे मुबारक तुझ पर) और तेरी उन फ़ज़ीलतों पर जिनसे हम महरूम हो गये और तेरी गुज़िश्ता बरकतों पर जो हमारे हाथ से जाती रहीं। सलाम हो। ऐ अल्लाह हम इस महीने से मख़सूस हैं जिसकी वजह से तूने हमें शरफ़ बख़्शा और अपने लुत्फ़ व अहसान से इसकी हक़ शिनासी की तौफ़ीक़ दी जब कि बदनसीब लोग इसके वक़्त (की क़द्रो क़ीमत) से बेख़बर थे और अपनी बदबख़्ती की वजह से इसके फ़ज़ल से महरूम रह गये। और तू ही वली व साहबे अख़्तियार है कि हमें इसकी हक़ शिनासी के लिये मुन्तख़ब किया और इसके एहकाम की हिदायत फ़रमाई। बेशक तेरी तौफ़ीक़ से हमने इस माह में रोज़े रखे, इबादत के लिये क़याम किया। मगर कमी व कोताही के साथ और मुश्ते अज़ ख़रवार से ज़्यादा न बजा ला सके। ऐ अल्लाह! हम अपनी बद्आमाली का इक़रार और सहल अंगारी का एतराफ़ करते हुए तेरी हम्द करते हैं और अब तेरे लिये कुछ है तो वह हमारे दिलों की वाक़ई शर्मसारी और हमारी ज़बानों की सच्ची मअज़रत है। लेहाज़ा इस कमी व कोताही के बावजूद जो हमसे हुई है हमें ऐसा अज्र अता कर कि हम उसके ज़रिये दिलख़्वाह फ़ज़ीलत व सआदत को पा सकें और तरह तरह के अज्र व सवाब के ज़ख़ीरे जिनके हम आरज़ूमंद थे उसके एवज़ हासिल कर सकें, और हमने तेरे हक़ में जो कमी व कोताही

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

की है उसमें हमारे उज़्र को कुबूल फ़रमा और हमारी उम्रे–आईन्दा का रिश्ता आने वाले माहे रमज़ान से जोड़ दे। और जब उस तक पहुंचा दे तो जो इबादत तेरे शायाने शान हो उसके बजा लाने पर हमारी एआनत फ़रमाना और इस एताअत पर जिसका वह महीना सज़ावार है अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ देना और हमारे लिये ऐसे नेक आमाल का सिलसिला जारी रखना कि जो ज़मानए ज़ीस्त के महीनों में एक के बाद दूसरे माहे रमज़ान में तेरी हक़ अदायगी का बाअस हों। ऐ अल्लाह, हमने इस महीने में जो सग़ीरा या कबीरा मअसियत की हो, या किसी गुनाह से आलूदा और किसी ख़ता के मुरतकिब हुए हों जान बूझ कर या भूले चूके, ख़ुद अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया हो या दूसरे का दामने हुरमत चाक किया हो। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें अपने पर्दे में ढांप ले, और अपने अफ़वो व दरगुज़र से काम लेते हुए माफ़ कर दे। और ऐसा न हो कि इस गुनाह की वजह से तंज़ करने वालों की आंखें हमें घूरें और तानाज़नी करने वालों की ज़बानें हम पर खुलें, और अपनी शफ़क़ते बेपायां और मरहमत रोज़ अफ़ज़ूँ से हमें इन आमाल पर कारबन्द कर कि जो इन चीज़ों को बरतरफ़ करें और उन बातों की तलाफ़ी करें जिन्हें तू इस माह में हमारे लिये नापसन्द करता है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इस महीने के रूख़सत होने से जो क़ल्क़ हमें हुआ है उसका चारा कर, और ईद और रोज़ा छोड़ने के दिन को हमारे लिये मुबारक क़रार दे, और इसे हमारे गुज़रे हुए दिनों में बेहतरीन दिन क़रार दे, जो अफ़्वो व दरगुज़र को समेटने वाला और गुनाहों को महो करने वाला हो और तू हमारे ज़ाहिर व पोशीदा गुनाहों को बख़्श दे। बारे इलाहा! इस महीने के अलग होने के साथ तू हमें गुनाहों से अलग कर दे और इसके निकलने के साथ तू हमें बुराईयों से निकाल ले, और इस महीने की बदौलत इसको आबाद करने वालों में हमें सबसे बढ़ कर खुशबख़्त, बानसीब और बहरामंद क़रार दे। ऐ अल्लाह! जिस किसी ने जैसा चाहिये इस महीने का पास व लिहाज़ किया हो और कमा हक़्क़हू, इसका एहतराम मलहूज़ रखा हो और इसके एहकाम पर पूरी तरह अमल पैरा रहा हो। और गुनाहों से जिस तरह बचना चाहिये उस तरह बचा हो या ब–नियत तक़र्रूब ऐसा अमले ख़ैर बजा लाया हो जिसने तेरी ख़ुशनूदी उसके लिये ज़रूरी क़रार दी हो और तेरी रहमत को उसकी तरफ़ मुतवज्जह कर दिया हो तू जो उसे बख़्शे वैसा ही हमें भी अपनी दौलते बेपायां में से बख़्श और अपने फ़ज़ल व करम से इससे भी कई गुना ज़ायद अता कर। इस लिये कि तेरे फ़ज़ल के सोते ख़ुशक नहीं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होते और तेरे ख़ज़ाने कम होने में नहीं आते बल्कि बढ़ते ही जाते हैं, और न तेरे एहसानात की कानें फ़ना होती हैं। और तेरी बख़्शिश व अता तो हर लिहाज़ से ख़ुशगवार बख़्शिश व अता है। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और जो लोग रोज़े क़यामत तक इस माह के रोज़े रखें या तेरी इबादत करें उनके अज्र व सवाब के मानिन्द हमारे लिये अज्र व सवाब सब्त फ़रमा। ऐ अल्लाह! हम इस रोज़े फ़ित्र में जिसे तूने अहले ईमान के लिये ईद व मसर्रत का रोज़ और अहले इस्लाम के लिये इज्तेमा व तआवुन का दिन क़रार दिया है हर उस गुनाह से जिसके हम मुरतकिब हुए हों और हर उस बुराई से जिसे पहले कर चुके हों और हर बुरी नियत से जिसे दिल में लिये हुए हों उस शख़्स की तरह तौबा करते हैं जो गुनाह की तरफ़ दोबारा पलटने का इरादा न रखता हो और न तौबा के बाद ख़ता का मुरतकिब होता हो। ऐसी सच्ची तौबा जो हर शक व शुबहा से पाक हो। तू अब हमारी तौबा को कुबूल फ़रमा, हमसे राज़ी व ख़ुशनूद हो जा और हमें इस पर साबित क़दम रख। ऐ अल्लाह! गुनाहों की सज़ा का ख़ौफ़ और जिस सवाब का तूने वादा किया है उसका शौक़ हमें नसीब फ़रमा ताकि जिस सवाब के तुझसे ख़्वाहिशमंद हैं उसकी लज़्ज़त और जिस अज़ाब से पनाह मांग रहे हैं उसकी तकलीफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व अज़ीय्यत पूरी तरह जान सकें, और हमें अपने नज़दीक उन तौबा गुज़ारों में से क़रार दे, जिनके लिये तूने अपनी मोहब्बत को लाज़िम कर दिया और जिनसे फ़रमाबरदारी व एताअत की तरफ़ रूजूअ होने को तूने कुबूल फ़रमाया है ऐ अद्ल करने वालों में सबसे ज़्याद अद्ल करने वाले। ऐ अल्लाह! हमारे मां बाप और हमारे तमाम अहले मज़हब व मिल्लत ख़्वाह गुज़र चुके हों या क़यामत के दिन तक आईन्दा आने वाले हों सबसे दरगुज़र फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे नबी मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जैसी रहमत तूने अपने मुक़र्रब फ़रिश्तों पर की है, और उन पर और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जैसी तूने अपने फ़रस्तादा नबीयों पर नाज़िल फ़रमाई है, और उन पर और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जैसी तूने अपने नेकूकार बन्दों पर नाज़िल की है। (बल्कि) इससे बेहतर व बरतर। ऐ तमाम जहान के परवर दिगार ऐसी रहमत जिसकी बरकत हम तक पहुंचे, जिसकी मुनफ़अत हमें हासिल हो और जिसकी वजह से हमारी दुआयें कुबूल हों। इस लिये कि तूने उन लोगों से जिनकी तरफ़ रूजूअ हुआ जाता है, ज़्यादा करीम और उन लोगों से जिन पर भरोसा किया जाता है, ज़्यादा बेनयाज़ करने वाला है, और उन लोगों से जिनके फ़ज़्ल की बिना पर सवाल किया जाता है,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़्यादा अता करने वाला है और तू हर चीज़ पर क़ादिर व तवाना है।

यह दुआ माहे रमज़ान के बरकत आफ़रीन लम्हात को अलविदा करने के सिलसिले में है। लफ्ज़े विदाअ, दअता से माख़ूज़ है जिसके मानी राहत व आराम और पुरसुकून ज़िन्दगी के हैं। और मुसाफ़िर को विदाअ करने का मतलब यह होता है कि उससे अपनी मोहब्बत व दिलबस्तगी का इज़हार किया जाये और उसके लिये दुआ की जाये कि सफ़र की सऊबतें उसके लिये आसान और मंज़िल की दुश्वारियां उसके लिये सहल हों और उसे दोबारा पलट कर आना नसीब हो या जहां जाना चाहता है वहां सुकून व क़रार हासिल हो। यह विदाअ इसकी दलील है कि जिसे विदाअ किया जा रहा है निगाहों में उसकी इज़्ज़त और दिल में उसकी क़द्र व मंज़िलत है, और उसकी जुदाई गरां और मुफ़ारिक़त शाक़ है। यह मोहब्बत और लगाव ज़मान से भी हो सकता है और मकान से भी। ज़ीशऊर से भी हो सकता है और ग़ैर ज़ीशऊर से भी। चुनान्चे इसी मोहब्बत व वाबस्तगी के नतीजे में इन्सान कभी माज़ी के उन लम्हों को पुकारता है जो अपनी ख़ुशगवार याद दिल में छोड़ जाते हैं, और कभी शबाब की घड़ियों को ख़िताब करता और उम्र रफ़्ता को आवाज़ देता है, और कभी उदास खण्डरों, ख़ामोश वीरानों और शिकस्ता दीवारों से ख़िताब करता है और कभी उनकी ज़बाने बेज़बानी की ख़ुद तर्जुमानी करता और कभी उनसे बोलने और जवाब देने की फ़रमाइश करता है। चुनान्चे अरब का एक शाएर कहता है:—

"ऐ मक़ाम जो अमीन वाक़े होने वाले अबला के घर कुछ बोल कि मैं गोश बरआवाज़ हूं। तेरी सुबहें ग़ारतगरी से महफ़ूज़ और तू गरदिशे ज़माने से बचा रहे।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इसी तरह माहे रमज़ान के लम्हों और साअतों से ख़िताब करना उससे न्तेहाई वाबस्तगी की दलील है। क्योंकि ख़ासाने ख़ुदा को ज़िक्रे इलाही, ताअते ख़ुदा वन्दी और इबादत से इतनी शेफ़तगी होती है कि वह इबादत के मख़सूस दिनों और लम्हों से भी वालेहाना मोहब्बत का इज़हार करते हैं और इन लम्हों की जुदाई को उतना ही महसूस करते हैं जितना दिल गख़तगान मोहब्बत, महबूब की जुदाई को और उसी तरह बुझे हुए दिल और झीये हुए चेहरे के साथ उन्हें अलविदा करते हैं जिस तरह महबूब को रुख़सत किया जाता है, चुनान्चे हज़रत[अ०] अवाख़िरे माहे रमज़ान में यह आ पढ़ते और तहस्सिर आमेज़ जज़बात के साथ उसे अलविदा करते। यह आ उन्हीं लोगों के लिये है जिन्होंने इस माहे मुबारक के लम्हात इबादत एताअत में गुज़ारे हों, वाजबात अदा किये हों, और मोहर्रमात से नाराकश रहे हों, और जिन्होंने नमाज़ रोज़े से कोई वास्ता न रखा हो तो न्हें इसके आने पर ख़ुशी ही क्या थी कि जाने का रंज करें और इसे लविदा करने की ज़रूरत महसूस करें। अलबत्ता जिन्होंने ख़ुदा की शनूदी का सरोसामान किया हो और उसके मुबारक लम्हात में ज़ादे ख़रत बहम पहुंचाया हो, फ़राएज़ व वाजबात अदा किये हों उन्हें अलविदा रना चाहिये ताकि उनके हसनात में मज़ीद एज़ाफ़ा हो और रहमत व ग़फ़िरते इलाही के अहल क़रार पायें। चुनान्चे जाबिर[र०] इब्ने अब्दुल्लाह सारी कहते हैं :–

"मैं माहे रमज़ान में जुमअतुल विदाअ के दिन पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आंहज़रत[स०] ने मुझे देखा तो फ़रमाया कि ऐ जाबिर! यह माहे रमज़ान का आख़री जुमआ है लेहाज़ा इसे विदाअ करो और यह कहो "ऐ अल्लाह!

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इसे हमारे रोज़ों का आख़री ज़माना न क़रार दे। और अगर तूने क़रार दिया है तो हमें अपनी रहमत से सरफ़राज़ कर और महरूम न कर।" तो जो शख़्स यह कलमात कहेगा तो वह दो ख़ूबियों में से एक ख़ूबी को ज़रूर पायेगा। या तो आईन्दा का माहे रमज़ान उसे नसीब होगा या अल्लाह तआला की मग़फ़रत व रहमत उसके शामिले हाल होगी।"

यह दुआ जुमअतुल विदाअ या माहे रमज़ान की आख़री शब या आख़री रोज़ में पढ़ना चाहिये। और आख़री शब में सहर के वक़्त पढ़ना बेहतर है, और इससे बेहतर यह है कि जुमअतुल विदाअ में भी पढ़े, और आख़री शब में भी पढ़े, और अगर यह ख़याल हो कि चांद उन्तीस का होगा तो उन्तीसवीं शब में पढ़े और चांद न हो तो तीसवीं शब में भी पढ़े, और एक क़ौल यह है कि शबे ईद पढ़े।

जब नमाज़े ईदुल फ़ित्र से फ़ारिग़ हो कर पलटते तो यह दुआ पढ़ते और जुमे के दिन भी यह दुआ पढ़ते

(तरजमा) "ऐ वह जो ऐसे शख़्स पर रहम करता है जिस पर बन्दे रहम नहीं करते। ऐ वह जो ऐसे (गुनाहगार) को क़ुबूल करता है जिसे कोई क़त्तए ज़मीन (उसके गुनाहों के बाएस) क़ुबूल नहीं करता। ऐ वह जो अपने हाजतमन्द को हक़ीर नहीं समझता।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ऐ वह जो गिड़गिड़ाने वालों को नाकाम नहीं फिराता। ऐ वह जो नाज़िश बेजा करने वालों को ठुकराता नहीं। ऐ वह जो छोटे से छोटे तोहफ़े को भी पसन्दीदगी की नज़रों से देखता है और मामूली से मामूली अमल उसके लिये बजा लाया गया हो उसकी जज़ा देता है। ऐ वह जो उससे क़रीब हो वह उसे क़रीब होता है। ऐ वह कि जो उसे रूगर्दानी करे उसे अपनी तरफ़ बुलाता है। और वह जो नेअमत को बदलता नहीं और न सज़ा देने में जल्दी करता है। ऐ वह जो नेकी के निहाल को बारआवर करता है ताकि उसे बढ़ा दे और गुनाहों से दरगुज़र करता है ताकि उन्हें नापैद कर दे। उम्मीदें तेरी सरहदे–करम को छूने से पहले कामरान होकर पलट आयें और तलब व आरज़ू के साग़र तेरे फ़ैज़ाने जूद से छलक उठे और सिफ़तें तेरे कमाले ज़ात की मंज़िल तक पहुंचने से दरमान्दा होकर मुन्तशिर हो गयीं इस लिये कि बलन्द तरीन रफ़अत जो हर कनगिरह से बलन्द से बालातर है, और बुज़ुर्ग तरीन अज़मत जो हर अज़मत से बलन्द तर है, तेरे लिये मख़सूस है। हर बुज़ुर्ग तेरी बुज़ुर्गी के सामने छोटा और हर ज़ीशरफ़ तेरे शरफ़ के मुक़ाबले में हक़ीर है। जिन्होंने तेरे ग़ैर का रूख़ किया वह नाकाम हुए। जिन्होंने तेरे सिवा दूसरों से तलब किया वह नुक़सान में रहे। जिन्होंने तेरे सिवा दूसरों के हां मंज़िल की वह तबाह हुए। जो तेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़ज़्ल के बजाए दूसरों से रिज़्क़ व नेअमत के तलबगार हुए वह क़हत व मुसीबत से दोचार हुए तेरा दरवाज़ा तलबगारों के लिये वादा है और तेरा जूद व करम साएलों के लिये आम है। तेरी फ़रियाद रसी दाद ख़्वाहों से नज़दीक है। उम्मीदवार तुझसे महरूम नहीं रहते और तलबगार तेरी अता व बख़्शिश से मायूस नहीं होते, और मग़फ़रत चाहने वाले पर तेरे अज़ाब की बद्बख़्ती नहीं आती। तेरा ख़्वाने नेअमत उनके लिये भी बिछा हुआ है जो तेरी नाफ़रमानी करते हैं, और तेरी बुर्दबारी उनके भी आड़े आती है जो तुझसे दुश्मनी रखते हैं। बुरों से नेकी करना तेरी रविश, और सरकशों पर मेहरबानी करना तेरा तरीक़ा है। यहां तक कि नर्मी व हिल्म ने उन्हें (हक़ की तरफ़) रूजूअ होने से ग़ाफ़िल कर दिया और तेरी दी हुई मोहलत ने उन्हें इज्तेनाब मआसी से रोक दिया। हालांकि तूने उनसे नर्मी इस लिये की थी कि वह तेरे फ़रमान की तरफ़ पलट आयें और मोहलत इस लिये दी थी कि तुझे अपने तसल्लुत व इक़्तिदार के दवाम पर एतमाद था (कि जब चाहे उन्हें अपनी गिरफ़्त में ले सकता है) अब जो ख़ुशनसीब था, उसका ख़ात्मा भी ख़ुश नसीबी पर किया। और जो बद्नसीब था उसे नाकाम रखा। (वह ख़ुश नसीब हों या बद्नसीब) सबके सब तेरे हुक्म की तरफ़ पलटने वाले हैं। और उनका मआल तेरे अम्र से वाबस्ता है। उनकी तवील

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुद्दते मोहलत से तेरी दलील व हुज्जत में कमज़ोरी रूनुमा नहीं होती (जैसे उस शख़्स की दलील कमज़ोर हो जाती है जो अपने हक़ के हासिल करने में ताख़ीर करे) और फ़ौरी गिरफ़्त को नज़र अन्दाज़ करने से तेरी हुज्जत व बुरहान बातिल नहीं क़रार पाई (कि यह कहा जाये कि अगर उसके पास उनके ख़िलाफ़ दलील व बुरहान होती तो वह मोहलत क्यों देता) तेरी हुज्जत बरक़रार है जो बातिल नहीं हो सकती और तेरी दलील मोहकम है जो ज़ायल नहीं हो सकती। लेहाज़ा दायमी हसरत व अन्दोह उसी शख़्स के लिये है जो तुझसे रूगर्दान हआ और रूस्वाकुन नामुरादी उसी के लिये है जो तेरे हां से महरूम रहा और बद्तरीन बदबख़्ती उसी के लिये है जिसने तेरी (चश्मपोशी से) फ़रेब खाया। ऐसा शख़्स किस क़द्र तेरे अज़ाब में उलटे पलटे खाता और कितना तवील ज़माना तेरे अक़ाब में गर्दिश करता रहेगा और उसकी रेहाई का मरहला कितनी दूर और बआसानी नजात हासिल करने से कितना मायूस होगा। यह तेरा फ़ैसला अज़्रूए अद्ल है जिसमें ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता, और तेरा यह हुक्म मुब्नी बर इन्साफ़ है जिसमें उस पर ज़यादती नहीं करता। इस लिये तूने पै दर पै दलीलें क़ायम और क़ाबिले कुबूल हुज्जतें आशकार कर दी हैं और पहले से डराने वाली चीज़ों के ज़रिये आगाह कर दिया है और लुत्फ़ व मेहरबानी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से (आख़रत की) तरग़ीब दिलाई है और तरह तरह की मिसालें बयान की हैं। मोहलत की मुद्दत बढ़ा दी है और (अज़ाब में) ताख़ीर से काम लिया है; हालांकि तू फ़ौरी गिरफ़्त पर अख़्तियार रखता था, और नर्मी व मदारात से काम लिया है, बावजूद यह कि तू तअजील करने पर क़ादिर था। यह नर्म रवी, आजिज़ी की बिना पर और मोहलत देही कमज़ोरी की वजह से न थी और न अज़ाब में तवक़्क़ुफ़ करना ग़फ़लत की बिना पर था। बल्कि यह इस लिये था कि तेरी हुज्जत हर तरह से पूरी हो। तेरा करम कामिल तर, तेरा एहसान फ़रावां और तेरी नेअमत तमाम तर हो। यह तमाम चीज़ें थीं और रहेंगी। दरआं हालेकि तू हमेशा से है और हमेशा रहेगा। तेरी हुज्जत इससे बालातर है कि इसके तमाम गोशों को पूरी तरह बयान किया जा सके और तेरी इज़्ज़त व बुज़ुर्गी इससे बुलन्दतर है कि उसकी कुन्ह व हक़ीक़त की हदें क़ायम की जायें और तेरी नेअमतें इससे फ़ज़ूंतर हैं कि इन सबका शुमार हो सके और तेरे एहसानात इससे कहीं ज़्यादातर हैं कि उनमें के अदना एहसान पर भी तेरा शुक्रिया अदा किया जा सके। (मैं तेरी हम्द व सिपास से आजिज़ और दरमान्दा हूं।) गोया ख़ामोशी ने तेरी पै दर पै हम्द व सिपास से मुझे नातवां कर दिया है और तवक़्क़ुफ़ ने तेरी तमजीद व सताइश से मुझे गुंग कर दिया है, और इस सिलसिले में मेरी तवानाई की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हद यह है कि अपनी दरमान्दगी का एतराफ़ करूं। यह बेरग़बती की वजह से नहीं है ऐ मेरे मअबूद! बल्कि इज्ज़ व तवानाई की बिना पर है। अच्छा तो मैं अब तेरी बारगाह में हाज़िर होने का क़सद करता हूं और तुझसे हुस्ने एआनत का ख़्वास्तगार हूं। तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी राज़ व नियाज़ की बातों को सुन और मेरी (दुआ को शरफ़े कुबूलियत बख़्श और मेरे दिन को नाकामी के साथ ख़त्म न कर और मेरे सवाल में मुझे ठुकरा न दे। और अपनी बारगाह से पलटने और फिर पलट कर आने को इज़्ज़त व एहतेराम से हमकिनार फ़रमा। इस लिये कि तुझे तेरे इरादे में कोई दुश्वारी हाएल नहीं होती और जो चीज़ तुझसे तलब की जाये उसके देने से आजिज़ नहीं होता। और तू हर चीज़ पर क़ादिर है, और कुव्वत व ताक़त नहीं सिवा अल्लाह के सहारे के जो बुलन्द मर्तबा व अज़ीम है।

हर क़ौम व मिल्लत में कोई न कोई दिन ऐसा ज़रूर होता है जो किसी तारीख़ी पसमंज़र की वजह से यादगार की हैसियत रखता है और उसे वह अपने तरीक़े से मनाते और उसमें सुरूर व मसर्रत का मुज़ाहरा करते हैं। चुनान्चे जिस दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर आतिशे नमरूद[ल०] सर्द हुई और वह आग के भड़कते हुए शोलों में से ज़िन्दा व सलामत निकल आये, वह दिन उनके मानने वालों के लिये ईद क़रार पा गया, और जिस

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दिन हज़रत यूनुस[अ०] शिकमे माही के ज़िन्दां से रिहा हुए वह दिन उनकी क़ौम के लिये ईद का दिन बन गया, और जिस दिन हज़रत ईसा[अ०] की उम्मत पर मायदा नाज़िल हुआ वह उनके लिये ईद का दिन क़रार पा गया; चुनान्चे इरशादे इलाही है। "ऐ हमारे परवर दिगार! तू हम पर आसमान से मायदा नाज़िल कर जो हमारे लिये ईद क़रार पाये।" उसी तरह इस्लाम में भी मुख़्तलिफ़ यादगारों के सिलसिले में मुतअद्दिद ईदें मनाई जाती हैं। जिनमें से ईदे अज़हा और ईदे फ़ित्र ज़्यादा शोहरत रखती हैं। ईदे अज़हा उस बेमिसाल कुर्बानी की यादगार है जो हज़रत इब्राहीम[अ०] ने कुरबानगाह मिना में पेश की थी। और ईदुल फ़ित्र माहे रमज़ान के एख़तेताम पर फ़रीज़ए सियाम से ओहदाबरा होने के शुक्रिये में मनाई जाती है इस ईद की मसर्रत को हमागीर बनाने के लिये इस्लाम ने हर ज़ीइस्तेताअत पर एक मख़सूस मिक़दार ज़कात फ़ितरे की वाजिब कर दी है इस हिदायत के साथ कि नमाज़ से पहले मुस्तहक़ीन तक पहुंचा दी जाये, ताकि वह भी ईद की मसर्रतों में दूसरों के साथ शरीक हो सकें, और यह इस्लाम की हकीमाना मौक़े शिनासी है कि उसने ईदुल फ़ित्र के मौक़े पर ग़ुरबा की एआनत ज़रूरी क़रार दी। इस लिये कि तीस दिन भूख प्यास में गुज़ारने और फ़ाक़ाकशी की तकलीफ़ से आशना होने के बाद ग़रीबों के दुख दर्द का एहसास और उनसे हमदर्दी का जज़्बा उभर आता है जो ग़रीबों और नादारों की एआनत का मोहरिक होता है, और इन्सान ब–तय्यबे ख़ातिर इस मुख़्तसर माली कुर्बानी के लिये आमादा हो जाता है। अदाये फ़ित्रे के बाद दोगानए ईद से उसका इफ़्तिताह किया जाता है जिसमें अहले शहर मुजतमाअ हो कर इज्तेमाई शान, मिल्ली तंज़ीम और इस्लामी उख़ुव्वत का मुज़ाहरा करते हैं। फिर ख़ुतबए ईद पढ़ा जाता है जो तमहीद व तक़दीस, दुरूद व सलाम, पन्दो नसीहत और सूरते कुरआनी पर मुश्तमिल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होता है। उसके बाद मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ मुसाफ़हा व मुआनिक़ा, सलाम व दुआ और मेल मुलाक़ात का सिलसिला शुरू हो जाता है और इसी मसर्रत अफ़ज़ा माहौल में यह दिन तमाम होता है। यह है इस्लामी तेहवार जिसकी मसर्रत में संजीदगी, कैफ़ में शाइस्तगी और लुत्फ़ व सुरूर में तहज़ीब को समो दिया गया है और उसके आदाब व रूसूम में आला अख़लाक़ी मक़ासिद का पूरी तरह लिहाज़ रखा गया है। जिस दिन की इब्तिदा फ़रीज़ए सुबह के अलावा ज़कात व नमाज़ और इस्तेमाअ ख़ुतबे से हो और उसके लम्हात मेल मुलाक़ात और रंजिशों और कदूरतों को दूर करने में सर्फ़ हों वह दिन यक़ीनन् दिल में एक मसर्रत आमेज़ इत्मिनान का एहसास पैदा करेगा और नेकी के जज़बात उभार कर नेक किरदारी व ख़ुदा परस्ती और क़ल्ब व रूह की ततहीर का सामान करेगा, और हक़ीक़ी ईद यही है कि इन्सान अपने क़ल्ब व ज़मीर को पाक व साफ़ करे, गुनाहों से दामन बचाये और बुराईयों से महफ़ूज़ रहे। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"ईद सिर्फ़ उसके लिये है जिसके रोज़ों को अल्लाह ने क़ुबूल किया और उसके क़याम (नमाज़) को क़द्र की निगाह से देखा। और हर वह दिन जिसमें अल्लाह तआला की मअसियत न की जाये, ईद का दिन है।"

दुआए रोज़े अरफ़ा

"सब तारीफ़ें उस अल्लाह तआला के लिये हैं जो तमाम जहानों का परवर दिगार है। बारे इलाहा! तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें हैं। ऐ आसमान व ज़मीन के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पैदा करने वाले; ऐ बुज़ुर्गी व एज़ाज़ वाले! ऐ पालने वालों के पालने वाले, ऐ हर परस्तार के मअबूद! ऐ हर मख़लूक़ के ख़ालिक़ और हर चीज़ के मालिक व वारिस। उसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं है और न कोई चीज़ उसके इल्म से पोशीदा है। वह हर चीज़ पर हावी और हर शय पर निगरान है। तू ही वह अल्लाह है कि तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं जो एक अकेला और यकता व यगाना है, और तू ही वह अल्लह है कि तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं जो बख़्शने वाला और इन्तेहाई बख़्शने वाला, अज़मत वाला और इन्तेहाई अज़मत वाला, और बड़ा और इन्तेहाई बड़ा है, और तू ही वह अल्लाह है कि तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं जो बुलन्द व बरतर और बड़ी कूव्वत व तदबीर वाला है। और तू ही वह अल्लाह है कि तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं। जो फ़ैज़रसां, मेहरबान और इल्म व हिक्मत वाला हैं और तू ही वह मअबूद है कि तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं, जो सुनने वाला, देखने वाला, क़दीम व अजली और हर चीज़ से आगाह है, और तू ही वह मअबूद है कि तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं जो करीम और सबसे बढ़ कर करीम और दायम व जावेद है, और तू ही वह मअबूद है कि तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं। जो हर शय से पहले और हर शुमार में आने वाली शय के बाद है, और तू ही वह मअबूद है कि तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(कायनात के दस्तरस से) बालाहोने के बावजूद नज़दीक और नज़दीक होने के बावजूद (फ़हम व इदराक से) बलन्द है, और तू ही वह मअबूद है कि तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं जो जमाल व बुज़ुर्गी और अज़मत व सताइश वाला है। और तू ही वह अल्लाह तआला है कि तेरे अलावा कोई मअबूद नहीं। जिसने बग़ैर मवाद के तमाम चीज़ों को पैदा किया और बग़ैर किसी नमूने व मिसाल के सूरतों की नक़्श आराई की और बग़ैर किसी की पैरवी किये मौजूदात को ख़िलअते वजूद बख़्शा। तू ही वह है जिसने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा ठहराया है और हर चीज़ को उसके वज़ाएफ़ की अन्जाम देही पर आमादा किया है और कायनाते आलम में से हर चीज़ की तदबीर व कारसाज़ी की है। तू वह है कि आफ़रीनिश आलम में किसी शरीके कार ने तेरा हाथ नहीं बटाया और न किसी मआविन ने तेरे काम में तुझे मदद दी है और न कोई तेरा देखने वाला और न कोई तेरा मिस्ल व नज़ीर था और तूने जो इरादा किया वह हत्मी व लाज़मी और जो फ़ैसला किया वह अद्ल के तक़ाज़ों से ऐन मुताबिक़ और जो हुक्म दिया वह इन्साफ़ पर मब्नी था। तू वह है जिसे कोई जगह घेरे हुए नहीं है और न तेरे इक़्तिदार का कोई इक़्तिदार मुक़ाबिला कर सकता है और न तू दलील व बुरहान और किसी चीज़ को वाज़ेह तौर पर पेश करने से आजिज़ है। तू वह है जिसने एक एक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

चीज़ को शुमार कर रखा है और हर चीज़ की एक मुद्दत मुक़र्रर कर दी है और हर शय का एक अन्दाज़ा ठहरा दिया है। तू वह है कि तेरी कुन्ह ज़ात को समझने से वाहमे क़ासिर और तेरी कैफ़ियत को जानने से अक़्लें आजिज़ हैं। और तेरी कोई जगह नहीं है कि आंखें उसका खोज लगा सकतीं। तू वह है कि तेरी कोई हद व निहायत नहीं है कि तू महदूद क़रार पाये और न तेरा तसव्वुर किया जा सकता है। कि तू तसव्वुर की हुई सूरत के साथ ज़ेहन में मौजूद हो सके और न तेरे कोई औलाद है कि तेरे मुतअल्लिक़ किसी की औलाद होने का एहतेमाल हो। तू वह है कि तेरा कोई मद्दे मुक़ाबिल नहीं है कि तुझसे टकराने और न तेरा कोई हमसर है कि तुझ पर ग़ालिब आये और न तेरा कोई मिस्ल व नज़ीर है कि तुझसे बराबरी करे। तू वह है जिसने ख़ल्क़े कायनात की इब्तिदा की, आलम को ईजाद किया और उसकी बुनियाद क़ायम की, और बग़ैर किसी माद्दा व अस्ल के उसे वजूद में लाया और जो बनाया उसे अपनी हुस्ने सनअत का नमूना बनाया। तू हर ऐब से मुनज़्ज़ा है। तेरी शान किस क़द्र बुज़ुर्ग और तमाम जगहों में तेरा पाया कितना बुलन्द और तेरी हक़ व बातिल में इम्तियाज़ करने वाली किताब किसी क़द्र हक़ को आशकारा करने वाली है। तू मुनज़्ज़ा है। ऐ साहबे लुत्फ़ व अहसान, तू किस क़द्र लुत्फ़ फ़रमाने वाला

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है। ऐ मेहरबान तू किस क़द्र मेहरबानी करने वाला है। ऐ हिक्मत वाले तू कितना जानने वाला है। पाक है तेरी ज़ात ऐ साहबे इक़्तिदार! तू किस क़द्र क़वी व तवाना है। ऐ करीम! तेरा दामने करम कितना वसीअ है। ऐ बुलन्द मर्तबा तेरा मर्तबा कितना बुलन्द है तू हुस्न व ख़ूबी, शरफ़ व बुज़ुर्गी, अज़मत व किबरियाई और हम्दो सताइश का मालिक है। पाक हे तेरी ज़ात, तूने भलाईयों के लिये अपना हाथ बढ़ाया है। तुझ ही से हिदायत का इरफ़ान हासिल हुआ है। लेहाज़ा जो तुझे दीन या दुनिया के लिये तलब करे तुझे पा लेगा। तू मुनज़्ज़ा व पाक है। जो भी तेरे इल्म में है वह तेरे सामने सरनिगूं और जो कुछ अर्श के नीचे है वह तेरी अज़मत के आगे सर ब–ख़म और जुमला मख़लूक़ात तेरी एताअत का जुआ अपनी गर्दन में डाले हुए है। पाक है तेरी ज़ात कि न हवास से तुझे जाना जा सकता है, न तुझे टटोला और छुआ जा सकता है। न तुझ पर किसी का हुलिया चल सकता है। न तुझे दूर किया जा सकता है। न तुझसे निज़ाअ हो सकती है, न मुक़ाबिला, न तुझसे झगड़ा किया जा सकता है और न तुझे धोखा और फ़रेब दिया जा सकता है। पाक है तेरी ज़ात, तेरा रास्ता सीधा और हमवार, तेरा फ़रमान सरासर हक़ व सवाब और तू ज़िन्दा व बेनयाज़ है। पाक है तू, तेरी गुफ़्तार हिक्मत आमेज़, तेरा फ़ैसला क़तई और तेरा इरादा हतमी है। पाक है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तू, न तो कोई तेरी मशीअत को रद्द कर सकता है और न कोई तेरी बातों को बदल सकता है पाक है तू ऐ दरख़शिन्दा निशानियों वाले। ऐ आसमानों के ख़ल्क़ फ़रमाने वाले और ज़ी रूह चीज़ों के पैदा करने वाले तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ें हैं। ऐसी तारीफ़ें जिनकी हमेशगी तेरी हमेशगी से वाबस्ता है और तेरे ही लिये सताइश है। ऐसी सताइश जो तेरी नेअमतों के साथ हमेशा बाक़ी रहे, और तेरे ही लिये हम्दो सना है। ऐसी जो तेरे करम व एहसान के बराबर हो और तेरे ही लिये हम्द है ऐसी जो तेरी रिज़ामन्दी से बढ़ जाये, और तेरे ही लिये हम्द व सिपास है ऐसी जो हर हम्द गुज़ार की हम्द पर मुश्तमिल हो और जिसके मुक़ाबले में हर शुक्र गुज़ार का शुक्र पीछे रह जाये। ऐसी हम्द जो तेरे अलावा किसी के लिये सज़ावार न हो और न तेरे सिवा किसी के तक़र्रुब का वसीला बने। ऐसी हम्द जो पहली हम्द के दवाम का सबब क़रार पाये और उसके ज़रिये आख़री हम्द के दवाम की इल्तेजा की जाये। ऐसी हम्द जो ज़माने की गर्दिशों के साथ बढ़ती जाये और पै दर पै इज़ाफ़ों से ज़्यादा होती रहे। ऐसी हम्द कि निगेहबानी करने वाले फ़रिश्ते उसके शुमार से आजिज़ आ जायें। ऐसी हम्द कि जो कातिबाने आमाल ने तेरी किताब में लिख दिया है उससे बढ़ जाये। ऐसी हम्द जो तेरे अर्शे बुज़ुर्ग के हम वज़न और तेरी बलन्द

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पाया कुर्सी के बराबर हो। ऐसी हम्द जिसका अज्र व सवाब तेरी तरफ़ से कामिल और जिसकी जज़ा तमाम जज़ाओं को शामिल हो। ऐसी हम्द जिसका ज़ाहिर, बातिन से हमनवा और बातिन सिदक़े नीय्यत से हमआहंग हो। ऐसी हम्द कि किसी मख़लूक़ ने वैसी तेरी हम्द न की हो और तेरे सिवा कोई उसकी फ़ज़ीलत व बरतरी से आशना न हो। ऐसी हम्द कि जो उसे ब–कसरत बजा लाने के लिये कोशां हो। उसे (तेरी तरफ़ से) मदद हासिल हो और जो उसे अन्जाम तक पहुंचाने के लिये सई–ए–बलीग़ करे। उसे तौफ़ीक़ व ताईद नसीब हो। ऐसी हम्द जो तमाम अक़्सामे हम्द की जामेअ हो जिन्हें तू मौजूद कर चुका है और उन अक़्साम को भी शामिल हो जिन्हें तू बाद में मौजूद करेगा। ऐसी हम्द कि उससे बढ़ कर कोई हम्द तेरी मुराद से क़रीब तर न हो और जो शख़्स इस तरह की हम्द करे उससे बढ़ कर कोई हम्द गुज़ार न हो। ऐसी हम्द जो तेरे फ़ज़्ल व करम से अपनी फ़रावानी के बाअस अफ़ज़ाइशे नेअमत का सबब हो और तू अपने लुत्फ़ व एहसान से उसके साथ पैहम इज़ाफ़े का सिलसिला क़ायम रखे। ऐसी हम्द जो तेरी बुज़ुर्गी–ए ज़ात के शायां और तेरे शरफ़े जलाल के हमदोश हो। परवर दिगारा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर सब रहमतों से अफ़ज़ल व बरतर रहमत नाज़िल फ़रमा! वह मोहम्मद[स०] जो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बरगुज़ीदा, मोअज़्ज़िज़ व गिरामी और मुक़र्रब हैं, और उन पर अपनी कामिल तरीन बरकतों का इज़ाफ़ा फ़रमा और अपनी नफ़ा रसां रहमतों के साथ उन पर रहम व करम फ़रमा। परवर दिगारा मोहम्मद^स० और उनकी आल^अ० पर रहमते फ़रावां नाज़िल कर जिससे फ़रावानी में कोई रहमत न बढ़ सके, और उन पर ऐसी बढ़ने वाली रहमत नाज़िल फ़रमा जिससे ज़्यादा कोई रहमत बढ़ने वाली न हो और उन पर ऐसी पसन्दीदा रहमत नाज़िल फ़रमा जिससे बालातर कोई रहमत न हो। परवर दिगारा! मोहम्मद^स० और उनकी आल^अ० पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जो उन्हें ख़ुश व ख़ुशनूद करे और उनकी ख़ुशनूदी से बढ़ जाये, और उन पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा कि तू उनके लिये इसके सिवा किसी रहमत को पसन्द न करे और न उनके अलावा किसी को इस रहमत का सज़ावार समझे परवर दिगारा! मोहम्मद^स० और उनकी आल^अ० पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा कि तेरी जानिब से जिस रिज़ामन्दी के वह मुस्तहक़ हैं उससे बढ़ जाये और उसका पेवन्द तेरे बक़ा व दवाम से जुड़ा रहे और इसका सिलसिला कहीं ख़त्म न हो। जिस तरह तेरे कलमे ख़त्म न होंगे। परवर दिगारा! मोहम्मद^स० और उनकी आल^अ० पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जो तेरे फ़रिश्तों, नबीयों, रसूलों और एताअत करने वालों के दुरूद व रहमत को शामिल हो और तेरे बन्दों में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से जिन्नों, इन्सानों और तेरी दावत को कुबूल करने वालों के दुरूद व सलाम पर मुश्तमिल हो और तेरी हर क़िस्म की मख़लूक़ात कि जिन्हें तूने ख़ल्क़ किया और आलमे वजूद में लाया सबकी रहमतों पर हावी हो परवर दिगारा! आंहज़रत[स०] पर और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जो गुज़िश्ता व आईन्दा सब रहमतों को मुहीत हो। उन पर और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जो तेरे नज़दीक और तेरे अलावा दूसरों के नज़दीक पसन्दीदा हो, और उन रहमतों के साथ ऐसी रहमतें भेजता रहे कि उनके भेजने के वक़्त तू पहली रहमतों को दोगुना कर दे और उन्हें ज़माने के गुज़रने के साथ साथ दो चन्द करके इतना बढ़ाता जाये कि जिन्हें तेरे अलावा कोई शुमार न कर सके। परवर दिगारा उनके अहलेबैते अतहार पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिन्हें तूने अम्र (दीन व शरीअत) के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया। अपने इल्म का ख़ज़ीनादार और अपने दीन का मुहाफ़िज़ और ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा व जानशीन और बन्दों पर अपनी हुज्जत बनाया और जिन्हें अपने इरादे (अज़ली) से हर क़िस्म की नजासत व आलूदगी से पाक व साफ़ रखा और जिन्हें अपने तक पहुंचने का वसीला और जन्नत तक आने का रास्ता क़रार दिया है। परवर दिगारा! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा जिसके ज़रिये तू उनके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लिये अपनी बख़्शिश व करामत को फ़रावां और उनके लिये अताया व इनामात कामिल करे और अपने तहाएफ़ व मुनाफ़े में से उन्हें वाफ़र हिस्सा बख़्शे परवर दिगारा! उन पर और उनके अहलेबैत[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा कि न उसकी इब्तिदा की कोई मुद्दत, न इस मुद्दत की कोई इन्तेहा और न इसका कोई आख़री कनारा हो। परवर दिगारा! उन पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा कि तेरे अर्श और जो कुछ ज़ेरे अर्श है सबके हम वज़न हो और इस मिक़दार में हो कि आसमानों और जो कुछ आसमानों के ऊपर है सब को भर दे और ज़मीनों और जो कुछ ज़मीनों के नीचे और उनके अन्दर है उनके शुमार के बराबर हो। ऐसी रहमत जो उन्हें तेरे तक़र्रुब की मंज़िले आला पर पहुंचा दे और तेरे लिये और उनके लिये सरमायए ख़ुशनूदी हो और अपने ऐसी दूसरी रहमतों से हमेशा मुत्तसिल रहे। बारे इलाहा! तूने हर ज़माने में एक ऐसे इमाम के ज़रिये अपने दीन की ताईद फ़रमाई है जिसे तूने अपने बन्दों के लिये निशाने राह क़रार दिया और शहरों में मनारे हिदायत बना कर क़ायम किया जबकि तूने अपने पैमाने एताअत को उसके पैमाने एताअत से वाबस्ता कर दिया जिसे अपनी रिज़ा व ख़ुशनूदी का ज़रिया क़रार दिया जिसकी एताअत फ़र्ज़ कर दी। जिसकी नाफ़रमानी से डराया जिसके एहकाम की बजाआवरी और जिसके मना करने पर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बाज़ रहने का हुक्म दिया, और यह कि कोई आगे बढ़ने वाला उससे आगे न बढ़े और कोई पीछे रह जाने वाला उससे पीछे न रहे। वह पनाह तलब करने वालों के लिये सरो सामाने हिफ़ाज़त, अहले ईमान के लिये जाये पनाह, वाबस्तगाने दामन के लिये मज़बूत सहारा और तमाम जहान की रौनक़ व ज़ेबाइश है। बारे इलाहा! अपने वली व पेशवा के दिल में इस इनाम पर जो उसे बख़्शा है, अदाये शुक्र का इल्हाम फ़रमा और उसके वजूद के बाएस वैसा ही अदाये शुक्र का जज़्बा हमारे दिल में पैदा कर और इसे अपनी तरफ़ से ऐसा तसल्लुत अता फ़रमा जिससे हर तरह की मदद पहुंचे और इसके लिये काम्याबी व कामरानी की राह ब–आसानी खोल दे और अपने मज़बूत सहारे से इसकी मदद फ़रमा। इसकी पुश्त को मज़बूत और बाज़ू को क़वी कर और अपनी नज़रे तवज्जह से इसकी हिफ़ाज़त और अपनी निगेहदाश्त से इसकी हिमायत फ़रमा और अपने फ़रिश्तों के ज़रिये इसकी मदद और अपने ग़ालिब आने वाले सिपाह व लश्कर से इसकी कुमक फ़रमा और इसके ज़रिये अपनी किताब और हुदूद व एहकाम और अपने रसूल[स०] (उन पर ऐ अल्लाह तेरी तरफ़ से दुरूद व रहमत हो) की रविशों को क़ायम कर और उनके ज़रिये ज़ालिमों ने दीन के जिन निशानात को मिटा डाला है अज़ सरे नौ ज़िन्दा कर दे, और ज़ुल्म व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जौर के ज़ंग को अपनी शरीअत से दूर और अपनी राह की दुश्वारियों को बर तरफ़ कर दे। और जो लोग तेरे राहे सवाब से रूगर्दानी करने वाले हैं उन्हें ख़त्म और जो तेरे राहे रास्त में कजी पैदा करते हैं उन्हें नीस्त व नाबूद कर दे, और उसे अपने दोस्तों के लिये नर्म व बुर्दबार क़रार दे और दुश्मनों (पर ग़लबा व तसल्लुत) के लिये उसके हाथों को खोल दे और हमें उसकी तरफ़ से रअफ़त व रहमत और शफ़क़त व मेहरबानी अता फ़रमा और इसकी बात पर कान धरने वाला और एताअत करने वाला और उसकी ख़ुशनूदी के लिये कोशां रहने वाला और उसकी नुसरत व ताईद और दुश्मनों से दिफ़ाअ के सिलसिले में मदद देने वाला और इस वसीले से तुझ से और तेरे रसूल[स०] (ऐ ख़ुदा उन पर तेरा दूरूद व सलाम हो) से तक़र्रुब चाहने वाला क़रार दे। ऐ अल्लाह उनके दोस्तों पर भी रहमत नाज़िल फ़रमा जो उनके मर्तबे व मक़ाम के मोअतरिफ़, उनके तरीक़ व मसलक के ताबेअ, उनके नक़्शे क़दम पर गामज़न, उनके सर रिश्तए दीन से वाबस्ता, उनकी दोस्ती व विलायत से मुतमस्सिक, उनकी इमामत के पैरौ, उनके एहकाम के फ़रमा बरदार, उनकी एताअत में सरगर्मे–अमल, उनके ज़मानए इक़्तिदार के मुन्तज़िर और उनके लिये चश्म बराह हैं। ऐसी रहमत जो बाबरकत, पाकीज़ा और बढ़ने वाली और हर सुबह व शाम नाज़िल होने वाली हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और उन पर और उनके अरवाहे (तय्यबा) पर सलामती नाज़िल फ़रमा और उनके कामों को सलाह व तक़्वा की बुनियादों पर क़ायम कर और उनके हालात की इस्लाह फ़रमा और उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा बेशक तू तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला और सबसे बेहतर बख़्शने वाला है और हमें अपनी रहमत के वसीले से उनके साथ दारूस्सलाम (जन्नत) में जगह दे। ऐ सब रहीमों से ज़्यादा रहीम, परवर दिगारा! यह रोज़े अरफ़ा वह दिन है जिसे तूने शरफ़, इज़्ज़त और अज़मत बख़्शी है जिसमें अपनी रहमतें फैला दीं और अपने अफ़वो व दरगुज़र से अहसान फ़रमाया अपने अतियों को फ़रावां किया और इसके वसीले से अपने बन्दों पर तफ़ज़्ज़ुल फ़रमाया है। ऐ अल्लाह! मैं तेरा वह बन्दा हूं जिस पर तूने उसकी ख़िलक़त से पहले और ख़िलक़त के बाद इनाम व एहसान फ़रमाया है। इस तरह कि उसे उन लोगों में से क़रार दिया जिन्हें तूने अपने दीन की हिदायत की, अपने अदाये हक़ की तौफ़ीक़ बख़्शी जिनकी अपनी रीसमां के ज़रिये हिफ़ाज़त की जिन्हें अपनी जमाअत में दाख़िल किया और अपने दोस्तों की दोस्ती और दुश्मनों की दुश्मनी की हिदायत फ़रमाई है। इन सबके बावजूद तूने उसे हुक्म दिया तो उसने हुकम न माना और मना किया तो वह बाज़ न आया और अपनी मअसियत से रोका तो वह तेरे हुक्म के ख़िलाफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अम्रे ममनूअ का मुरतकब हुआ। यह तुझसे एनाद और तेरे मुक़ाबले में तकब्बुर की रू से न था, बल्कि ख़्वाहिशे नफ़्स ने उसे ऐसे कामों की दावत दी जिनसे तूने रोका और डराया था, और तेरे दुश्मन और उसके दुश्मन (शैतान मलऊन) ने इन कामों में उसकी मदद की। चुनान्चे उसने तेरी धमकी से आगाह होने के बावजूद तेरे अफ़वो की उम्मीद करते हुए और तेरे दरगुज़र पर भरोसा रखते हुए गुनाह की तरफ़ इक़दाम किया। हालांकि उन अहसानात की वजह से जो तूने उस पर किये थे, तमाम बन्दों में वह उसका सज़ावार था कि ऐसा न करता। अच्छा फिर मैं तेरे सामने खड़ा हूं बिल्कुल ख़्वार व ज़लील, सरापा इज्ज़ो नयाज़ और लरज़ां व तरसां। इन अज़ीम गुनाहों का जिनका बोझ अपने सर उठाया है और उन बड़ी ख़ताओं का जिनका इरतेकाब किया है एतराफ़ करता हुआ तेरे दामने अफ़वो में पनाह चाहता हुआ और तेरी रहमत का सहारा ढूंढ़ता हुआ और यह यक़ीन रखता हुआ कि कोई पनाह देने वाला (तेरे ग़ज़ब से) मुझे बचा नहीं सकता। लेहाज़ा (इस एतराफ़े गुनाह व इज़हारे निदामत के बाद) तू मेरी पर्दा पोशी फ़रमा जिस तरह गुनाहगारों की पर्दा पोशी फ़रमाता है और मुझे मआफ़ी अता कर जिस तरह उन लोगों को मआफ़ी अता करता है जिन्होंने अपने आपको तेरे हवाले कर दिया हो। और मुझ पर उस बख़्शिश व आमेज़िश के साथ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अहसान फ़रमा कि जिस बख़्शिश व आमेज़िश से तू अपने उम्मीदवार पर अहसान करता है तो तुझे बड़ी नहीं मालूम होती और मेरे लिये आज के दिन ऐसा हिज़ व नसीब क़रार दे कि जिसके ज़रिये तेरी रिज़ामन्दी का कुछ हिस्सा पा सकूं और तेरे इबादत गुज़ार बन्दे जो (अज्र व सवाब के) तहाएफ़ ले कर पलटे हैं मुझे उनसे ख़ाली हाथ न फेर। अगरचे वह नेक आमाल जो उन्होंने आगे भेजे हैं मैंने आगे नहीं भेजे लेकिन मैं ने तेरी वहदत व यकताई का अक़ीदा और यह कि तेरा कोई हरीफ़, शरीकेकार और मिस्ल व नज़ीर नहीं है पेश किया है और उन्हीं दरवाज़ों से जिन दरवाज़ों से तूने आने का हुक्म दिया है आया हूं और ऐसी चीज़ के ज़रिये जिसके बग़ैर कोई तुझसे तक़र्रूब हासिल नहीं कर सकता, तक़र्रूब चाहा है। फिर तेरी तरफ़ रूजूअ व बाज़गश्त, तेरी बारगाह में तज़ल्लुल व आजिज़ी और तुझ से नेक गुमान और तेरी रहमत पर एतमाद को तलब तक़र्रूब के हमराह रखा है और इसके साथ ऐसी उम्मीद का ज़मीमा भी लगा दिया है जिसके होते हुए तुझसे उम्मीद रखने वाला महरूम नहीं रहता और तुझसे उसी तरह सवाल किया है जिस तरह कोई बेक़द्र, ज़लील, शिकस्ता हाल, तहीदस्त, ख़ौफ़ज़दा और तलबगारे पनाह सवाल करता है और इस हालत के बावजूद मेरा यह सवाल ख़ौफ़, इज्ज़ो नयाज़मन्दी, पनाह तलबी, और अमान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़्वाही की रू से है न मुतकब्बिरों के तकब्बुर के साथ बरतरी जतलाते, न एताअत गुज़ारों के (अपनी इबादत पर) फ़ख़्र व एतमाद की बिना पर इतराते और न सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश पर सरबलन्दी दिखाते हुए, और मैं इस एतराफ़ के साथ तमाम कमतरों से कमतर, ख़्वार व ज़लील लोगों से ज़लीलतर और एक चूंटी के मानिन्द बल्कि इससे भी पस्ततर हूं। ऐ वह जो गुनाहगारों पर अज़ाब करने में जल्दी नहीं करता और न सरकशों को (अपनी नेअमतों से) रोकता है। ऐ वह जो लग़ज़िश करने वालों से दरगुज़र फ़रमाकर एहसान करता है और गुनाहगारों को मोहलत देकर तफ़ज़्ज़ुल फ़रमाता है, मैं वह हूं जो गुनाहगार गुनाह का मोअतरिफ़, ख़ताकार और लग़ज़िश करने वाला हूं। मैं वह हूं जिसने तेरे मुक़ाबिले में जुरअत से काम लेते हुए पेशक़दमी की। मैं वह हूं जिसने दीद ओ दानिस्ता गुनाह किये, मैं वह हूं जिसने (अपने गुनाहों को) तेरे बन्दों से छुपाया और तेरे सामने खुल्लम खुल्ला मुख़ालिफ़त की। मैं वह हूं जो तेरे बन्दों से डरता रहा, और तुझसे बेख़ौफ़ रहा मैं वह हूं जो तेरी हैबत से हरासां और तेरे अज़ाब से ख़ौफ़ज़दा न हुआ। मैं ख़ुद ही अपने हक़ में मुजरिम और बला व मुसीबत के हाथों में गिरवी हूं। मैं ही शर्म व हया से आरी और तवील रंज व तकलीफ़ में मुब्तिला हूं। मैं तुझे उसके हक़ का वास्ता देता हूं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिसे तूने मख़्लूक़ात में से मुन्तख़ब किया। उसके हक़ का वास्ता देता हूं जिसे तूने अपने लिये पसन्द फ़रमाया उसके हक़ का वास्ता देता हूं जिसे तूने कायनात में से बरगुज़ीदा किया और जिसे अपने एहकाम (की तब्लीग़) के लिये चुन लिया। उसके हक़ का वास्ता देता हूं जिसकी एताअत को अपनी एताअत से मिला दिया और जिसकी नाफ़रमानी को अपनी नाफ़रमानी के मानिन्द क़रार दिया। उसके हक़ का वास्ता देता हूं जिसकी मोहब्बत को अपनी मोहब्बत से मक़रून और जिसकी दुश्मनी को अपनी दुश्मनी से वाबस्ता किया है, मुझे आज के दिन इस दामने रहमत में ढांप ले जिससे ऐसे शख़्स को ढांपता है जो गुनाहों से दस्तबरदार हो कर तुझसे नाला व फ़रियाद करे और ताएब हो कर तेरे दामने मग़फ़ेरत में पनाह चाहे, और जिस तरह अपने एताअत गुज़ारों और कुर्ब व मंज़िलत वालों की सरपरस्ती फ़रमाता है उसी तरह मेरी सरपरस्ती फ़रमा और जिस तरह उन लोगों पर जिन्होंने तेरे अहद को पूरा किया, तेरी ख़ातिर अपने को तअब व मशक़्क़त में डाला, और तेरी रज़ामन्दियों के लिये सख़्तियों को झेला। ख़ुद तने तन्हा एहसान करता है उसी तरह मुझ पर भी तने तन्हा अहसान फ़रमा और तेरे हक़ में कोताही करने तेरे हुदूद से मुतजाविज़ होने और तेरे एहकाम के पसे पुश्त डालने पर मेरा मवाख़ज़ा न कर और मुझे उस शख़्स के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मोहलत देने की तरह मोहलत दे कर रफ़्ता रफ़्ता अपने अज़ाब का मुस्तहक़ न बना। जिसने अपनी भलाई को मुझसे रोक लिया और समझता यह है कि बस वही नेअमत का देने वाला है, यहां तक कि तुझे भी उन नेअमतों के देने में शरीक न समझा हो। मुझे ग़फ़लत शुआरों की नींद, बेराहरवों के ख़्वाब और हरमां नसीबों की ग़फ़लत से होशियार कर दे, और मेरे दिल को उस राहे अमल पर लगा जिस पर तूने एताअत गुज़ारों को लगाया है, और उस इबादत की तरफ़ माएल फ़रमा जो इबादत गुज़ारों से तूने चाही है और उन चीज़ों की हिदायत कर जिनके वसीले से सहल अंगारों को रेहाई बख़्शी है, और जो बातें तेरी बारगाह से दूर कर दें और मेरे और तेरे हां के हिज़ व नसीब के दरमियान हाएल और तेरे हां के मक़सद व मुराद से मानेअ हो जायें उनसे महफ़ूज़ रख और नेकियों की राह पैमाई और उनकी तरफ़ सबक़त जिस तरह तूने हुक्म दिया है और उनकी बढ़ चढ़ कर ख़्वाहिश जैसा कि तूने चाहा है मेरे लिये सहल व आसान कर और अपने अज़ाब व वईद को सुबक समझने वालों के साथ कि जिन्हें तू तबाह करेगा, मुझे तबाह न करना और जिन्हें दुश्मनी पर आमादा होने की वजह से हलाक करेगा उनके साथ मुझे हलाक न करना और अपनी सीधी राहों से इन्हेराफ़ करने वालों के ज़ुमरे में कि जिन्हें तू बरबाद करेगा, मुझे बरबाद

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

न करना। और फ़ितना व फ़साद के भंवर से मुझे नजात दे और बला के मुंह से छुड़ा ले और ज़मानए मोहलत (की बद्आमालियों) पर गिरफ़्त से पनाह दे और उस दुश्मन के दरमियान जो मुझे बहकाए और उस ख़्वाहिशे नफ़्स के दरमियान जो मुझे तबाह व बरबाद करे और उस नुक़्स व ऐब के दरमियान जो मुझे घेर ले, हाएल हो जा। और जैसे उस शख़्स से कि जिस पर ग़ज़बनाक होने के बाद तू राज़ी न हो रूख़ फेर लेता है उसी तरह मुझसे रूख़ न फेर और जो उम्मीदें तेरे दामन से वाबस्ता किये हुए हों उनमें मुझे बेआस न कर कि तेरी रहमत से यास व नाउम्मीदी मुझ पर ग़ालिब आ जाये, और मुझे इतनी नेअमतें भी न बख़्श कि जिनके उठाने की मैं ताक़त नहीं रखता कि तू फ़रावानिए मोहब्बत से मुझ पर वह बार लाद दे जो मुझे गरांबार कर दे। और मुझे इस तरह अपने हाथ से न छोड़ दे जिस तरह उसे छोड़ देता है जिसमें कोई भलाई न हो और न तुझे उससे कोई मतलब हो और न उसके लिये तौबा व बाज़गश्त हो, और मुझे इस तरह न फेंक दे जिस तरह उसे फेंक देता है जो तेरी नज़रे तवज्जोह से गिर चुका हो, और तेरी तरफ़ से ज़िल्लत व रूस्वाई उस पर छाई हुई हो बल्कि गिरने वालों के गिरने से और कजरूओं के ख़ौफ़ व हरास से और फ़रेब ख़ुरदा लोगों के लग़ज़िश खाने से और हलाक होने वालों के वरतए

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हलाकत में गिरने से मेरा हाथ थाम ले और अपने बन्दों और कनीज़ों के मुख़्तलिफ़ तबक़ों को जिन चीज़ों में मुब्तिला किया है उनसे मुझे आफ़ियत व सलामती बख़्श, और जिन्हें तूने मोरिदे इनायत क़रार दिया, जिन्हें नेअमतें अता कीं, जिनसे राज़ी व ख़ुशनूद हुआ, जिन्हें क़ाबिले सताइश ज़िन्दगी बख़्शी और सआदत व कामरानी के साथ मौत दी उनके मरातिब व दरजात पर मुझे फ़ाएज़ कर, और वह चीज़ें जो नेकियों को महो और बरकतों को ज़ायल कर दें उनसे किनाराकशी इस तरह मेरे लिये लाज़िम कर दे जिस तरह गर्दन में पड़ा हुआ तौक़, और बुरे गुनाहों और रूस्वा करने वाली मुसीबतों से अलाहिदगी व नफ़रत को मेरे दिल के लिये इस तरह ज़रूरी क़रार दे जिस तरह बदन से चिमटा हुआ लिबास और मुझे दुनिया में मसरूफ़ करके कि जिसे तेरी मदद के बग़ैर हासिल नहीं कर सकता उन आमाल से कि जिनके अलावा तुझे कोई और चीज़ मुझसे ख़ुश नहीं कर सकती, रोक न दे और इस पस्त दुनिया की मोहब्बत कि जो तेरे हां की सआदते अबदी की तरफ़ मुतवज्जह होने से माने और तेरी तरफ़ वसीला तलब करने से सद्देराह और तेरा तक़र्रुब हासिल करने से ग़ाफ़िल करने वाली है मेरे दिल से निकाल दे और मुझे वह मुल्के इस्मत अता फ़रमा जो मुझे तेरे ख़ौफ़ से क़रीब, इरतेकाबे मोहर्रेमात से अलग और कबीरा गुनाहों के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बन्धनों से रेहा कर दे और मुझे गुनाहों की आलूदगी से पाकीज़गी अता फ़रमा और मअसियत की कसाफ़तों को मुझसे दूर कर दे और अपनी आफ़ियत का जामा मुझे पहना दे और अपनी सलामती की चादर ओढ़ा दे और अपनी वसीअ नेअमतों से मुझे ढांप ले और मेरे लिये अपने अताया व इनामात का सिलसिला पैहम जारी रख और अपनी तौफ़ीक़ व राहे हक़ की राहनुमाई से मुझे तक़वियत दे और पाकीज़ा नीय्यत, पसन्दीदा गुफ़्तार और शाएस्ता किरदार के सिलसिले में मेरी मदद फ़रमा, और अपनी कुव्वत व ताक़त के बजाये मुझे मेरी कुव्वत व ताक़त के हवाले न कर, और जिस दिन मुझे अपनी मुलाक़ात के लिये उठाये मुझे ज़लील व ख़्वार और अपने दोस्तों के सामने रूस्वा न करना, और अपनी याद मेरे दिल से फ़रामोश न होने दे और अपना शुक्रो सपास मुझसे ज़ायल न कर। बल्कि जब तेरी नेअमतों से बेख़बर, सहो व ग़फ़लत के आलम में हूं, मेरे लिये अदाये शुक्र लाज़िम क़रार दे, और मेरे दिल में यह बात डाल दे कि जो नेअमतें तूने बख़्शी हैं उन पर हम्दो तौसीफ़ और जो एहसानात मुझ पर किये हें उनका एतराफ़ करूं और अपनी तरफ़ मेरी तवज्जोह को तमाम तवज्जोह करने वालों से बालातर और मेरी हम्द सराई को तमाम हम्द करने वालों से बुलन्दतर क़रार दे, और जब मुझे तेरी एहतियाज हो तो मुझे अपनी नुसरत से महरूम न करना और जिन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आमाल को तेरी बारगाह में पेश किया है उनको मेरे लिये वजहे हलाकत न क़रार देना, और जिस अमल व किरदार के पेशे नज़र तूने अपने नाफ़रमानों को धुतकारा है यूं मुझे अपनी बारगाह से धुतकार न देना। इस लिये कि मैं तेरा मुतीअ व फ़रमांबरदार हूं और यह जानता हूं कि हुज्जत व बुरहान तेरे ही लिये है और तू फ़ज़ल व बख़्शिश का ज़्यादा सज़ावार और लुत्फ़ व अहसान के साथ फ़ायदा रसां और इस लाएक़ है कि तुझसे ड़रा जाये और इसका अहल है कि मग़फ़ेरत से काम ले और इसका ज़्यादा सज़ावार है कि सज़ा देने के बजाये माफ़ कर दे और तशहीर करने के बजाये पर्दापोशी तेरी रविश से क़रीबतर है। तो फिर मुझे ऐसी पाकीज़ा ज़िन्दगी दे जो मेरे हस्बे दिल ख़्वाह उमूर पर मुश्तमिल और मेरी दिलपसन्द चीज़ों पर मुन्तही हो। उस तरह कि जिस काम को तू नापसन्द करे उसे बजा न लाऊँ और जिससे मना करे उसका इरतेकाब न करूं। और मुझे उस शख़्स की सी मौत दे जिसका नूर उसके आगे और उसके दाहिनी तरफ़ चलता हो और मुझे अपनी बारगाह में आजिज़ व निगूं–सार और लोगों के नज़दीक बावक़ार बना दे, और जब तुझसे तख़लिये में राज़ व नयाज़ करूं तो मुझे पस्त व सरअफ़गन्दा और अपने बन्दों में बुलन्द मर्तबा क़रार दे और जो मुझसे बेनयाज़ हो उससे मुझे बेनयाज़ कर दे और मेरे फ़क्र व एहतियाज को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अपनी तरफ़ बढ़ा दे और दुश्मनों के ख़न्दए ज़ेरे लब, बलाओं के वरूद और ज़िल्लत व सख़्ती से पनाह दे और मेरे उन गुनाहों के बारे में कि जिन पर तू मुत्तलअ है, उस शख़्स के मानिन्द मेरी पर्दापोशी फ़रमा कि अगर उसका हिल्म मानेअ न होता तो वह सख़्त गिरफ़्त पर क़ादिर होता और अगर उसकी रविश में नर्मी न होती तो वह गुनाहों पर मवाख़िज़ा करता, और जब किसी जमाअत को तू मुसीबत में गिरफ़्तार या बला व निकबत से दो चार करना चाहे, तो दर सूरते कि मैं तुझसे पनाह तलब हूं इस मुसीबत से नजात दे, और जब कि तूने मुझे दुनिया में रूस्वाई के मौकूफ़ में खड़ा नहीं किया तो उसी तरह आख़रत में भी रूस्वाई के मक़ाम पर खड़ा न करना, और मेरे लिये दुनयवी नेअमतों को ओख़रवी नेअमतों से और क़दीम फ़ायदों को जदीद फ़ायदों से मिला दे और मुझे इतनी मोहलत न दे कि उसके नतीजे में मेरा दिल सख़्त हो जाये। और ऐसी मुसीबत में मुब्तिला न कर जिससे मेरी इज़्ज़त व आबरू जाती रहे और ऐसी ज़िल्लत से दो चार न कर जिससे मेरी क़द्रो मंज़िलत कम हो जाये और ऐसे ऐब में गिरफ़्तार न कर जिससे मेरा मर्तबा व मक़ाम जाना-ना जा सके, और मुझे इतना ख़ौफ़ज़दा न कर कि मैं मायूस हो जाऊँ और ऐसा ख़ौफ़ न दिला कि हेरासां हो जाऊँ।

मेरे ख़ौफ़ को अपनी वईद व सरज़निश में और मेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अन्देशे को तेरे उज़्र तमाम करने और डराने में मुन्हसिर कर दे और मेरे ख़ौफ़ व हेरास को आयात (कुरआनी) की तिलावत के वक़्त क़रार दे और मुझे अपनी इबादत के लिये बेदार रखने, ख़िलवत व तन्हाई में दुआ व मुनाजात के लिये जागने, सबसे अलग रह कर तुझसे लौ लगाने तेरे सामने अपनी हाजतें पेश करने, दोज़ख़ से गुलू ख़लासी के लिये बार बार इल्तेजा करने और तेरे उस अज़ाब से जिसमें अहले दोज़ख़ गिरफ़्तार हैं पनाह मांगने के वसीले से मेरी रातों को आबाद कर और मुझे सरकशी में सरगर्दान छोड़ न दे और न ग़फ़लत में एक ख़ास वक़्त तक ग़ाफ़िल व बेख़बर पड़ा रहने दे और मुझे नसीहत हासिल करने वालों के लिये नसीहत इबरत हासिल करने वालों के लिये इबरत और देखने वालों के लिये फ़ितना व गुमराही का सबब न क़रार दे और मुझे उन लोगों में जिनसे (तू उनके मक्र की पादाश में) मक्र करेगा शुमार न कर और (इनाम व बख़्शिश के लिये) मेरे एवज़ दूसरे को इन्तेख़ाब न कर। मेरे नाम में तग़य्युर और जिस्म में तब्दीली न फ़रमा और मुझे मख़लूक़ात के लिये मज़हका और अपनी बारगाह में लाएक़े इस्तेहज़ा न क़रार दे। मुझे सिर्फ़ उन चीज़ों का पाबन्द बना जिसे तेरी रज़ामन्दी वाबस्ता है और सिर्फ़ उस ज़हमत से दो चार कर जो (तेरे दुश्मनों से) इन्तेक़ाम लेने के सिलसिले में हो और अपने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उफ़वो व दरगुज़र की लज़्ज़त और रहमत, राहत व आसाइश, गुलो रैहां और जन्नते नईम की शीरीनी से आशना कर और अपनी वुसअत व तवंगरी की बदौलत ऐसी फ़रागत से रूशिनास कर जिसमें तेरे पसन्दीदा कामों को बजा ला सकूं, और ऐसी सई व कोशिश की तौफ़ीक़ दे जो तेरी बारगाह में तक़र्रूब का बाएस हो और अपने तोहफ़ों में से मुझे नित नया तोहफ़ा दे और मेरी ओख़रवी तिजारत को नफ़ाअ बख़्श और मेरी बाज़गश्त को बेज़रर क़रार दे और मुझे अपने मक़ाम व मौकूफ़ से डरा और अपनी मुलाक़ात का मुश्ताक़ बना, और ऐसी सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि जिसके साथ मेरे छोटे और बड़े गुनाहों को बाक़ी न रखे और खुली और ढकी मअसियतों को महो कर दे और अहले ईमान की तरफ़ से मेरे दिल से कीना व बुग्ज़ को निकाल दे और इन्केसार व फ़रोतनी करने वालों पर मेरे दिल को मेहरबान बना दे और मेरे लिये तू ऐसा हो जा जैसा नेकूकारों के लिये है और परहेज़गारों के ज़ेवर से मुझे आरास्ता कर दे और आइन्दा आने वालों में मेरा ज़िक्रे ख़ैर और बाद में आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्र रोज़ अफ़ज़ूँ बरक़रार रख और साबेक़ूनुल अव्वलून के महल व मक़ाम में मुझे पहुंचा दे और फ़राख़िए नेअमत को मुझ पर तमाम कर; और इसकी मनफ़अतों का सिलसिला पैहम जारी रख। अपनी नेअमतों से मेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हाथों को भर दे और अपनी गरांक़द्र बख़्शिशों को मेरी तरफ़ बढ़ा दे और जन्नत में जिसे तूने अपने बरगुज़ीदा बन्दों के लिये सजाया है मुझे अपने पाकीज़ा दोस्तों का हमसाया क़रार दे और उन जगहों में जिनहें अपने दोस्तदारों के लिये मोहय्या किया है, मुझे उमदा व नफ़ीस अतीय्यों के ख़िलअत ओढ़ा दे और मेरे लिये वह आरामगाह कि जहां मैं इत्मिनान से बे खटके रहूं और वह मंज़िल कि जहां मैं ठहरूं और अपनी आंखों को ठण्डा करूं, अपने नज़दीक क़रार दे, और मुझे मेरे अज़ीम गुनाहों के लिहाज़ से सज़ा न देना, और जिस दिन दिलों के भेद जांचे जायेंगे, मुझे हलाक न करना, हर शक व शुबह को मुझसे दूर कर दे और मेरे लिये हर सिम्त से हक़ तक पहुंचने की राह पैदा कर दे और अपनी अता व बख़्शिश के हिस्से मेरे लिये ज़्यादा कर दे और अपने फ़ज़्ल से नेकी व एहसान से हिज़ फ़रावां अता कर, और अपने हां की चीज़ों पर मेरा दिल मुतमईन और अपने कामों के लिये मेरी फ़िक्र को यकसू कर दे और मुझसे वही काम ले जो अपने मख़सूस बन्दों से लेता है, और जब अक़्लें ग़फ़लत में पड़ जाये उस वक़्त मेरे दिल में एताअत का वलवला समो दे और मेरे लिये तवन्गरी, पाकदामनी, आसाइश, सलामती, तन्दरूस्ती, फ़राख़ी, इत्मिनान, आफ़ियत को जमा कर दे, और मेरी नेकियों को गुनाहों की आमेज़िश की वजह से और मेरी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तन्हाईयों को उन मुफ़सिदों के बाएस जो अज़ राहे इम्तेहान पेश आते हैं, तबाह न कर, और अहले आलम में से किसी एक के आगे हाथ फैलाने से मेरी इज़्ज़त व आबरू को बचाये रख और उन चीज़ों की तलब व ख़्वाहिश से जो बदकिरदारों के पास हैं मुझे रोक दे और मुझे ज़ालिमों का पुश्त पनाह न बना और न (एहकाम) किताब के महो करने पर उनका नासिर व मददगार क़रार दे और मेरी इस तरह निगेहदाश्त कर कि मुझे ख़बर भी न होने पाये। ऐसी निगेहदाश्त कर कि मुझे ख़बर भी न होने पाये, ऐसी निगेहदाश्त कि जिसके ज़रिये तू मुझे (हलाकत व तबाही) से बचा ले जाये और मेरे लिये तौबा व रहमत, लुत्फ़ व राएफ़त और कुशादा रोज़ी के दरवाज़े खोल दे। इस लिये कि मैं तेरी जानिब रग़बत व ख़्वाहिश करने वालों में से हूं और मेरे लिये अपनी नेअमतों को पायए तकमील तक पहुंचा दे इस लिये कि तू इनाम व बख़्शिश करने वालों में सबसे बेहतर है और मेरी बक़िया उम्र को हज व उमरे और अपनी रिज़ा जूई के लिये क़रार दे ऐ तमाम जहानों के पालने वाले! रहमत नाज़िल करे अल्लाह तआला मोहम्मद[स०] और उनकी पाक व पाकीज़ा आल[अ०] पर और उन पर और उनकी औलाद पर हमेशा हमेशा दुरूद व सलाम हो।"

यह दुआ दुआए अरफ़ा के नाम से मौसूम है। अरफ़ा के माने में फ़िल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जुमला एख़तेलाफ़ है। चुनान्चे बाज़ के नज़दीक अरफ़ा, अरफ़ात ही का दूसरा नाम है जो मक्क–ऐ–मोअज़्ज़मा से 12 मील के फ़ासले पर एक वसीअ मैदान है जहां हुज्जाज नहुम ज़िलहिज्जा को गुरूबे आफ़ताब तक वकूफ़ करते हैं। गोया इस मैदान का हर टुकड़ा अरफ़ा है और इन टुकड़ों का मजमूआ अरफ़ात है। इसे अरफ़ात इस लिये कहा जाता है कि यहां मुल्क मुल्क के बाशिन्दे जमाअ होते हैं और आपस में एक दूसरे से मुतआरिफ़ होते हैं। या इस लिये कि यह "मुर्ग़ की कलग़ी" से माख़ूज़ है, क्योंकि मुर्ग़ की कलग़ी बुलन्द और नुमायां होती हैं उसी तरह अरफ़ात भी मक्के की सरज़मीन से कुछ बुलन्दी पर वाक़े हुआ है, और बआज़ के नज़दीक अरफ़ा दिन का और अरफ़ात मक़ाम का नाम है। चुनान्चे तूसी रहमतुल्लाह ने मजमउल बयान में तहरीर किया है :–

> "अरफ़ात उस मशहूर जगह का नाम है जहां हज के मौक़े पर वकूफ़ ज़रूरी है और उस रोज़ वकूफ़ को रोज़े अरफ़ा कहा जाता है।"

फ़िरोज़ाबादी ने क़ामूस में तहरीर किया है :–

> "नहुम ज़िलहिज्जा रोज़े अरफ़ा है, और मक्के से 12 मील के फ़ासिले पर वह मौक़ूफ़ जहां इस दिन वकूफ़ किया जाता है अरफ़ात है।"

इस क़ौल की ताईद इस रिवायत से भी होती है जो अरफ़े की वजह तसमिया के सिलसिले में इब्ने अब्बास से मनक़ूल है कि हज़रत इब्राहीम[अ०] ने ज़िलहिज्जा की आठवीं शब को ख़्वाब देखा कि वह अपने फ़रज़न्द हज़रत इस्माईल[अ०] को ज़बह कर रहे हैं। "जब सुबह को बेदार हुए तो तमाम दिन इस पर ग़ौर करते रहे।" कि यह हुक्मे इलाही है या नहीं। इस सोच बिचार की वजह से आठवीं ज़िलहिज्जा का नाम यौमे तरविया हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गया, और तरविया के मआनी सोच बिचार और ग़ौरो फ़िक्र के होते हैं। दूसरी रात को फिर यही ख़्वाब देखा। "जब सुबह हुई तो पूरी तरह जान लिया कि हुक्मे ख़ुदा यही है।" इस इरफ़ान की वजह से नवीं ज़िलहिज्जा का नाम रोज़े अरफ़ा हो गया।

रोज़े अरफ़ा वह मुबारक व मसऊद दिन है जिसमें ख़ुदावन्दे आलम की तरफ़ रुजूअ हुआ जाये तो वह गुनाहों को बख़्श देता है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

> "जिस शख़्स के गुनाह माहे रमज़ान में बख़्शे नहीं जाते उसके गुनाह आईन्दा माहे रमज़ान तक नहीं बख़्शे जायेंगे मगर यह कि वह रोज़े अरफ़ा का शरफ़ हासिल करे।"

इसी दिन मुसलमान इतराफ़ व इकनाफ़े आलम से सिमट कर मक्के मोअज़्ज़मा में जमा होते हैं और फ़रीज़–ए–हज बजा लाते हैं। हज की तीन क़िस्में हैं। हज्जे इफ़राद, हज्जे क़ेरान, और हज्जे तमत्तोअ। हज्जे इफ़राद और हज्जे क़ेरान उन लोगों के लिये है जो मक्के या मक्के के इतराफ़ व जवानिब के रहने वाले हैं। जिसमें एक ही दफ़ा एहराम बांधा जाता है, और उसके बाद अरफ़ात में वक़ूफ़ और मशअरूल हराम में कि जो मक्के और अरफ़ात के दरमियान वाक़ेअ है क़याम और तुलूए आफ़ताब के बाद मिना में कि जो मशअरूल हराम और मक्के के दरमियान वाक़े है कुर्बानी करना होती है और सर मुण्डवाया जाता है और जमरा अक़बा पर कनकरियां फेंकी जाती हैं। फिर मक्के में ख़ान–ए–कआबा का तवाफ़, सफ़ा व मरवा के दरमियान सअी, तवाफ़ुन्निसा और फिर मिना में रमी जमरात के बाद हज तमाम किया जाता है और हज्जे तमत्तोअ उन लोगों के लिये है जो मक्के और अतराफ़े मक्का के हुदूद के रहने वाले न हों। इसमें पहली मर्तबा उमरए

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तमत्तोअ की नीय्यत से एहराम बांधा जाता है और तवाफ़े कआबा, नमाज़े तवाफ़ और सफ़ा व मरवा के दरमियान सऔ़ी के बाद बालों और नाख़ूनों का काटना होता है और उसके बाद एहराम खोल दिया जाता है और आठ ज़िलहिज्जा को हज की नीय्यत से मक्के ही में एहराम बांधा जाता है और हज के आमाल बजा लाये जाते हैं। हज्जे तमत्तोअ की मशरूइयत में किसी को कलाम नहीं। और जो इसके वजूब के क़ाएल नहीं है उन्हें भी इसके सही व दुरूस्त होने से इन्कार नहीं है, क्योंकि कुरआन मजीद और कुतबे सहाह में उसका सराहतन ज़िक्र है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"जो शख़्स हज्जे तमत्तोअ का उमरा बजा लाये तो जैसी कुरबानी मयस्सर आये करे।"

और इमरान इब्ने हसीन से मनकूल है कि :–

"हज्जे तमत्तोअ की आयत कुरआन मजीद में वारिद हुई है और पैग़म्बरे अकरम[स0] ने हमें इसका हुक्म दिया था। फिर ऐसी कोई आयत नाज़िल नहीं हुई जो हज्जे तमत्तोअ को मनसूख़ कर दे और न पैग़म्बर[स0] ने मरते दम तक इससे कभी रोका। अलबत्ता बाद में एक शख़्स ने अपनी राय से जो चाहा कह दिया। (सहीह मुस्लिम – जि0 एक, स0 474)

नूदी ने शरह सहीह मुस्लिम में लिखा है कि इससे मुराद हज़रत उमर हैं जिन्होंने बाज़ मसालेह की बिना पर इससे मना कर दिया, और हज़रत उस्मान भी इसी मना पर कारबन्द रहे। मगर अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम हुक्मे ख़ुदा व अमले पैग़म्बर[स0] के मुताबिक़ हज्जे तमत्तोअ ही बजा लाते रहे, और हज़रत उस्मान ने रोकना चाहा तो आप[अ0] ने फ़रमाया कि मैं किसी के कहने पर सुन्नते पैग़म्बर[स0] को छोड़ नहीं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सकता। चुनान्चे मोहम्मद इब्ने इस्माईल बुख़ारी ने तहरीर किया है :–

"(रावी का बयान है कि) हज़रत अली[अ०] और हज़रत उस्मान ने मक़ाम असफ़ान में हज्जे तमत्तोअ के बारे में एख़तेलाफ़ किया। हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया तुम्हारा मतलब क्या है कि तुम उस काम से मना करते हो जिसको आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम ने किया। हज़रत उस्मान ने (लाजवाब होकर) कहा कि यह बहस जाने दीजिये।" (सहीह बुख़ारी – जिल्द 6, स० 82)

बहरहाल हज्ज एक ऐसा फ़रीज़ा है जिससे इन्सान की ज़िन्दगी पर असर पड़ता और इसके इन्कार व आमाल में ज़ब्त व इन्ज़बात पैदा हो जाता है। चुनान्चे हज्ज के सिलसिले में जो ख़्वाहिशात तर्क किये जाते हैं उससे सब्र व तहम्मुल और ज़ब्ते नफ़्स की मश्क़ होती है जो बुराईयों से महफ़ूज़ रहने का पेश ख़ेमा है। और सफ़र की सख़्तियों और सऊबतों को झेलने से सुस्ती व सहल अन्गारी, मुस्तअदी व आमादगी से बदल जाती है, और दिल व दिमाग़ में ऐसे तास्सुरात पैदा होते हैं जो एक तरफ़ मुबदा से वाबस्ता करते हैं तो दूसरी तरफ़ मआद का तसव्वुर ताज़ा करते हैं। चुनान्चे जब इन्सान मीक़ात पर पहुंच कर एहराम बांधता है और ज़बान से "हाज़िर हूं बारे इलाहा! मैं हाज़िर हूं" (तू लाशरीक है मैं तेरी बारगाह में हाज़िर हूं) कहता है तो यह तसव्वुर भी पैदा होता है कि जिस तरह आज एहराम लपेटे घरबार और अहल व अयाल को छोड़ कर उसकी आवाज़ पर लब्बैक कह रहा है उसी तरह एक दिन वह होगा जब एहराम के बजाये कफ़न लपेटे इस दुनिया से मुंह मोड़ कर अपनी मौत की पुकार पर लब्बैक कहेगा और अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर होगा और जब एहराम बांधे हुए

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अरफ़ात में पहुंचता है तो यह मंज़र देखने में आता है कि ताहद्दे निगाह लोगों का झमघटा जिनका पहनावा एक, लिबास एक, वज़अ क़तअ एक। न गुरबत व इमारत का इम्तियाज़ न छोटे और बड़े का फ़र्क़। सब दस्त ब–दुआ; हर एक की ज़बान पर तौबा व अस्तग़फ़ार, हर एक अपने गुनाहों पर पशेमान और अफ़वो आमेज़िश का तलबगार! हर एक उम्मीद व बीम के संगम पर ईस्तादा, हर शख़्स फ़रियाद कुनां, हर शख़्स घबराया हुआ और सहमा हुआ। एक को दूसरे की ख़बर नहीं। नफ़सा नफ़सी का आलम, उस पर गर्मी का तड़ाक़ा, लूआं का ज़ोर, झुलसा देने वाले बादे समूम के झोंके। न सर छुपाने की जगह न साया करने की इजाज़त जिसे देख कर हश्र का नक़्शा आंखों के सामने खिंच जाता है, और जब इस मरहले से फ़ारिग़ हो कर मशअरूल हराम की तरफ़ आता है तो धूप से सौंलाया हुआ चेहरा, शादाब और धड़कता हुआ दिल मुतमईन इस लिये कि हरम में दाख़िल होने की इजाज़त मिल गयी। जो निजात व कामरानी के लिये एक नेक फ़ाल है फिर मशअरूल हराम से मिना में आता है जहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तास्सी में रमी जमरात करता है क्योंकि हज़रत इब्राहीम[अ0] ने इस मक़ाम पर शैतान पर पत्थर मारे थे। तो गोया वह अपने इस अमल से शैतान को अपने से हंकाता और दूर करता है फिर कुर्बानी करता है। यह अमल नफ़्से अमारा को कुचलने और नफ़सानी ख़्वाहिशात को ज़बह करने की तरफ़ इशारा है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"ज़िबह के वक़्त नफ़सानी ख़्वाहिशात और हिरसो तमअ का गला काट दो।"

फिर ख़ान–ए–कआबा का तवाफ़ करता हे तो इस तवाफ़े ज़ाहिरी से तवाफ़े बातिनी की तरफ़ भी तवज्जोह पैदा होती है इस तरह कि जिस्म मादी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

घर का तवाफ़ करता है और क़ल्ब व रूह रब्बुल बैत के गिर्द तवाफ़ करते हैं। फिर सफ़ा व मरवा के दरमियान सई करता है तो गोया अल्लाह तआला की तरफ़ दौड़ता और उसकी जानिब बढ़ता है कि अगर पहली मर्तबा रहम नहीं करेगा तो दूसरी मर्तबा, आख़िर कब तक उसकी रहमत जोश में न आयेगी और हैरानी व सरासीमगी को अपने दामन में पनाह न देगी और संगे असवद को बोसा देता है तो गोया यह पैमान करता है कि अब उसी के हाथ पर हाथ रखूंगा जिसे कुदरत ने नस्ब किया हो चाहे वह पत्थर ही क्यों न हो। अगर हज इन एहसासात को पैदा न करे तो वह एक बेरूह अमल है जो इन्सान के एख़लाफ़ व आमाल में तब्दीली पैदा नहीं कर दे सकता।

ईदे अज़हा और रोज़े जुमा की दुआ

(तरजुमा) "बारे इलाहा! यह मुबारक व मसऊद दिन है जिसमें मुसलमान मअमूरा ज़मीन के हर गोशे में मुजतमअ हैं। इनमें साएल भी हैं और तलबगार भी। मुल्तजी भी हैं और ख़ौफ़ज़दा भी। वह सब ही तेरी बारगाह में हाज़िर हैं और तू ही उनकी हाजतों पर निगाह रखने वाला है। लेहाज़ा मैं तेरे जूद व करम को देखते हुए और इस ख़याल से कि मेरी हाजत बरारी तेरे लिये आसान है तुझसे सवाल करता हूं कि तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर। ऐ अल्लाह! ऐ हम सब के परवर दिगार! जब कि तेरे ही लिये बादशाही और तेरे ही लिये हम्दो सताइश है, और कोई मअबूद नहीं तेरे अलावा जो बुरदबार,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करीम, मेहरबानी करने वाला, नेअमत बख़्शने वाला, बुज़ुर्गी व अज़मत वाला और ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला है तो मैं तुझसे सवाल करता हूं कि जब भी तू अपने ईमान वाले बन्दों में नेकी या आफ़ियत या ख़ैरो बरकत या अपनी एताअत पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ तक़सीम फ़रमाये या ऐसी भलाई जिससे तू उन पर एहसान करे और उन्हें अपनी तरफ़ रहनुमाई फ़रमाये या अपने हां उनका दर्जा बलन्द करे या दुनिया व आख़रत की भलाई में से कोई भलाई उन्हें अता करे तो उसमें मेरा हिस्सा व नसीब फ़रावां कर। ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये जहांदारी और तेरे ही लिये हम्दो सताइश है और कोई मअबूद नहीं तेरे सिवा। लेहाज़ा मैं तुझसे सवाल करता हूं कि तू रहमत नाज़िल फ़रमा अपने अब्द, रसूल[स०] हबीब, मुन्तख़ब और बरगुज़ीदए ख़लाएक़ मोहम्मद[स०] पर और उनके अहलेबैत[अ०] पर जो नेकूकार, पाक व पाकीज़ा और बेहतरीन ख़ल्क़ हैं। ऐसी रहमत जिसके शुमार पर तेरे अलावा कोई क़ादिर न हो, और आज के दिन तेरे ईमान लाने वाले बन्दों में से जो भी तुझसे कोई नेक दुआ मांगे तो हमें उसमें शरीक कर दे ऐ तमाम जहानों के परवर दिगार, और हमें और उन सबको बख़्श दे इस लिये कि तू हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह! मैं अपनी हाजतें तेरी तरफ़ लाया हूं और अपने फ़क़्रो फ़ाक़ा व एहतियाज का बारेगरां तेरे दर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर ला उतारा है और मैं अपने अमल से कहीं ज़्यादा तेरी आमेज़िश व रहमत पर मुतमईन हूं और बेशक तेरी मग़फ़ेरत व रहमत का दामन मेरे गुनाहों से कहीं ज़्यादा वसीअ है। लेहाज़ा तू मोहम्मद[स॰] और उनकी आल[अ॰] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी हर हाजत तू ही बर ला। अपनी उस कुदरत की बदौलत जो तुझे उस पर हासिल है और यह तेरे लिये सहल व आसान है और इस लिये कि मैं तेरा मोहताज और तू मुझसे बेनयाज़ है। और इस लिये कि मैं किसी भलाई को हासिल नहीं कर सका मगर तेरी जानिब से और तेरे सिंवा कोई मुझसे दुख दर्द दूर नहीं कर सका। और मैं दुनिया व आख़रत के कामों में तेरे अलावा किसी से उम्मीद नहीं रखता। ऐ अल्लाह! जो कोई सिला व अता की उम्मीद और बख़्शिश व इनाम की ख़्वाहिश ले कर किसी मख़लूक़ के पास जाने के लिये कमरबस्ता व आमादा और तैयार व मुस्तइद हो तो ऐ मेरे मौला व आक़ा! आज के दिन मेरी आमादगी व तैयारी और सरो सामान की फ़राहमी व मुस्तअदी तेरे अफ़वो व अता की उम्मीद और बख़्शिश व इनाम की तलब के लिये है। लेहाज़ा ऐ मेरे मअबूद! तू मोहम्मद[स॰] और उनकी आल[अ॰] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और आज के दिन मेरी उम्मीदों में मुझे नाकाम न कर, ऐ वह जो मांगने वाले के हाथों तंग नहीं होता। और न बख़्शिश व अता से जिसके हां कमी होती है। मैं अपने किसी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अमले ख़ैर पर जिसे आगे भेजा हो सिवाये मोहम्मद[स०] और उनके अहलेबैत[अ०] सलवातुल्लाह अलैहे व अलैहिम की शफ़ाअत के किसी मख़लूक़ की सिफ़ारिश पर जिसकी उम्मीद रखी हो इत्मिनान करते हुए तेरी बारगाह में हाज़िर नहीं हुआ। मैं तो अपने गुनाह और अपने हक़ में बुराई का इक़रार करते हुए तेरे पास हाज़िर हुआ हूं दरआं हाले के मैं तेरे इस अफ़वो अज़ीम का उम्मीदवार हूं जिसके ज़रिये तूने ख़ताकारों को बख़्श दिया। फिर यह कि उनका बड़े बड़े गुनाहों पर अर्से तक जमे रहना तुझे उन पर मग़फ़रत व रहमत की एहसान फ़रमाई से मानेअ न हुआ। ऐ वह जिसकी रहमत वसीअ और अफ़वो व बख़्शिश अज़ीम है ऐ बुज़ुर्ग! ऐ अज़ीम!! ऐ बख़्शिन्दा! ऐ करीम!! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी रहमत से मुझ पर एहसान और अपने फ़ज़्ल व करम के ज़रिये मुझ पर मेहरबानी फ़रमा और मेरे हक़ में अपने दामने मग़फ़ेरत को वसीअ कर। बारे इलाहा! यह मक़ाम (ख़ुतबा व इमामते नमाज़े जुमा) तेरे जानशिनों और बरगुज़ीदा बन्दों के लिये था, और तेरे अमानतदारों का महल था दरआं हालांकि तूने इस बुलन्द मनसब के साथ उन्हें मख़सूस किया था। (ग़सब करने वालों ने) उसे छीन लिया, और तू ही रोज़े अज़ल से इस चीज़ का मुक़द्दर करने वाला है। न तेरा अमरो फ़रमान मग़लूब हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सकता है और न तेरी क़तई तदबीर (क़ज़ा व क़द्र) से जिस तरह तूने चाहा हो और जिस वक़्त चाहा हो तजावुज़ मुम्किन है। इस मसलेहत की वजह से जिसे तू ही बेहतर जानता है। बहरहाल तेरी तक़दीर और तेरे इरादे व मशीयत की निस्बत तुझ पर इल्ज़ाम आयद नहीं हो सकता। यहां तक कि (इस ग़सब के नतीजे में) तेरे बरगुज़ीदा और जॉनशीन मग़लूब व मक़हूर हो गये, और उनका हक़ उनके हाथ से जाता रहा। वह देख रहे हैं कि तेरे एहकाम बदल दिये गये। तेरी किताब पसे पुश्त डाल दी गयी। तेरे फ़राएज़ व वाजिबात तेरे वाज़ेह मक़ासिद से हटा दिये गये और तेरे नबी[स०] के तौर तरीक़े मतरूक हो गये। बारे इलाहा! तू उन बरगुज़ीदा बन्दों के अगले और पिछले दुश्मनों पर और उन पर जो उन दुश्मनों के अमल व किरदार पर राज़ी व ख़ुशनूद हों और जो उनके ताबेअ और पैरोकार हों लअनत फ़रमा। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर ऐसी रहमत नाज़िल फ़रमा "बेशक तू क़ाबिले हम्दो सना बुज़ुर्गी वाला है।" जैसी रहमतें, बरकतें और सलाम तूने अपने मुन्तख़ब व बरगुज़ीदा इब्राहीम[अ०] और आले इब्राहीम[अ०] पर नाज़िल किये हैं, और उनके लिये कशाएश, राहत, नुसरत, ग़लबा और ताईद में तअजील फ़रमा। बारे इलाहा! मुझे तौहीद का अक़ीदा रखने वालों, तुझ पर ईमान लाने वालों और तेरे रसूल[स०]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और उन अइम्मा की तस्दीक़ करने वालों में से क़रार दे जिनकी एताअत को तूने वाजिब किया है। उन लोगों में से जिनके वसीले और जिनके हाथों से (तौहीद, ईमान और तस्दीक़) यह सब चीज़ें जारी करे। मेरी दुआ को कुबूल फ़रमा ऐ तमाम जहानों के परवर दिगार! बारे इलाह! तेरे हिल्म के सिवा कोई चीज़ तेरे ग़ज़ब को टाल नहीं सकती और तेरे अफ़वो व दरगुज़र के सिवा कोई चीज़ तेरी नाराज़गी को पलटा नहीं सकती और तेरी रहमत के सिवा कोई चीज़ तेरे अज़ाब से पनाह नहीं दे सकती और तेरी बारगाह में गिड़गिड़ाहट के अलावा कोई चीज़ तुझसे रेहाई नहीं दे सकती। लेहाज़ा तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी कुदरत से जिससे तू मुर्दों को ज़िन्दा और बन्जर ज़मीनों को शादाब करता है मुझे अपनी जानिब से ग़म व अन्दोह से छुटकारा दे। बारे इलाहा! जब तक तू मेरी दुआ कुबूल न फ़रमाये और इसकी कुबूलियत से आगाह न कर दे मुझे ग़म व अन्दोह से हलाक न करना, और ज़िन्दगी के आख़री लम्हों तक मुझे सेहत व आफ़ियत की लज़्ज़त से शादकाम रखना। और दुश्मनों को (मेरी हालत पर) ख़ुश होने और मेरी गर्दन पर सवार और मुझ पर मुसल्लत होने का मौक़ा न देना। बारे इलाहा! अगर तू मुझे बुलन्द करे तो कौन पस्त कर सकता है, और तू पस्त करे तो कौन

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बुलन्द कर सकता है। और तू इज़्ज़त बख़्शे तो कौन ज़लील कर सकता है और तू ज़लील करे तो कौन इज़्ज़त दे सकता है, और तू मुझ पर अज़ाब करे तो कौन मुझ पर तरस खा सकता है और अगर तू हलाक करे तो कौन तेरे बन्दे के बारे में तुझ पर मोतरिज़ हो सकता है या इसके मुतअल्लिक़ तुझसे कुछ पूछ सकता है, और मुझे ख़ूब इल्म है कि तेरे फ़ैसले में न ज़ुल्म का शाएबा होता है और न सज़ा देने में जल्दी होती है। जल्दी तो वह करता है जिसे मौक़े के हाथ से निकल जाने का अन्देशा हो और ज़ुल्म की उसे हाजत होती है जो कमज़ोर व नातवां हो, और तू ऐ मेरे मअबूद! इन चीज़ों से बहुत बुलन्दतर है। ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे बलाओं का निशाना और अपनी उक़ूबतों का हदफ़ न क़रार दे। मुझे मोहलत दे और मेरे रंज व ग़म को दूर कर; मेरी लग़ज़िशों को माफ़ कर दे और मुझे एक मुसीबत के बाद दूसरी मुसीबत में मुब्तिला न कर। क्योंकि तू मेरी नातवानी, बेचारगी और अपने हुज़ूर मेरी गिड़गिड़ाहट को देख रहा है। बारे इलाहा! मैं आज के दिन तेरे ग़ज़ब से तेरे ही दामन में पनाह मांगता हूं। तू मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे पनाह दे और मैं आज के दिन तेरी नाराज़गी से अमान चाहता हूं। तू मोहम्मद[स0] और उनकी आल[अ0]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे अमान दे और तेरे अज़ाब से अमन का तलबगार हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे (अज़ाब से) मुतमईन कर दे, और तुझसे हिदायत का ख़्वास्तगार हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे हिदायत फ़रमा और तुझसे मदद चाहता हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मेरी मदद फ़रमा, और तुझसे रहम की दरख़्वास्त करता हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझ पर रहम कर। और तुझसे बेनयाज़ी का सवाल करता हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे बेनयाज़ कर दे, और तुझसे रोज़ी का सवाल करता हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे रोज़ी दे। और तुझसे कुमक का तालिब हूं, तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मेरी कुमक फ़रमा। और गुज़िश्ता गुनाहों की आमरज़िश का ख़्वास्तागार हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे बख़्श दे, और तुझसे (गुनाहों के बारे में) बचाव का ख़्वाहां हूं। तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और मुझे (गुनाहों से) बचाये रख। इस लिये कि अगर तेरी मशीय्यत शामिले हाल रही तो किसी ऐसे काम का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिसे तू मुझसे नापसन्द करता हो मुरतकिब न हूंगा। ऐ मेरे परवर दिगार! ऐ मेरे परवर दिगार! ऐ मेहरबान, ऐ नेअमतों के बख़्शने वाले, ऐ जलालत व बुज़ुर्गी के मालिक तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर और जो कुछ मैंने मांगा और जो कुछ तलब किया है और जिन चीज़ों के हुसूल के लिये तेरी बारगह का रूख़ किया है उनसे अपना इरादा, हुक्म और फ़ैसला मुतअल्लिक़ कर और उन्हें जारी कर दे, और जो भी फ़ैसला करे उसमें मेरे लिये भलाई क़रार दे और मुझे इसमें बरकत अता कर और इसके ज़रिये मुझ पर एहसान फ़रमा, और जो अता फ़रमाये उसके वसीले से मुझे ख़ुश बख़्त बना दे और मेरे लिये अपने फ़ज़ल व कशाइश को जो तेरे पास है ज़्यादा कर दे इस लिये कि तू तवन्गर व करीम है, और इसका सिलसिला आख़रत की ख़ैर व नेकी और वहां की नेअमते फ़रावां से मिला दे। ऐ तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले।

इसके बाद जो चाहो दुआ मांगो और हज़ार मर्तबा मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर दुरूद भेजो कि इमाम अलैहिस्सलाम ऐसा ही किया करते थे।

हज़रत[अ०] यह दुआ रोज़े जुमा और ईदे अज़्हा के मौक़े पर पढ़ते थे। रोज़े जुमा को जुमा इस लिये कहा जाता है कि इस दिन मुसलमान नमाज़ के लिये एक मक़ाम पर मुजतमअ होते हैं, और अज़्हा, अज़्हाता की जमा है, और अज़्हाता उस बकरी, दुम्बे भेड़ वग़ैरा को कहते हैं जो हज के मौक़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर ज़बह की जाती है। इस ज़बह की बुनियाद इस तरह पड़ी कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़्वाब के ज़रिये अपने फ़रज़न्द हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के ज़बह पर मामूर हुए तो वह अपनी तमन्नाओं के मरकज़ और दुआओं के हासिल को ख़ुद अपने हाथों से ज़बह करने पर आमादा हो गये। और हज़रत इस्माईल[अ०] को कि जिनका सिन उस वक़्त सिर्फ़ तेरह साल का था बुला कर कहा कि ऐ फ़रज़न्द मैंने ख़्वाब में देखा है कि तुम्हें ज़बह कर रहा हूं तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने जवाब दिया। "बाबा आपको जो हुक्म हुआ है उसको बजा लाइये। आप इन्शाअल्लाह मुझे साबित क़दम पायेंगे।" जब इस्माईल[अ०] को भी आमादा पाया तो रस्सी और छुरी ले कर कुर्बानगाहे मोहब्बत पर अपनी मताए अज़ीज़ की कुर्बानी के लिये आ गये, और इस्माईल[अ०] को ज़बह करने के लिये ज़मीन पर लिटा दिया। क्या बईद है कि इस मौक़े पर आसमान कांपा और ज़मीन थर्राई हो। मगर हज़रत इब्राहीम[अ०] का न हाथ कांपा और न दिल धड़का। बल्कि बड़े इत्मिनान से अपने जिगर गोशे के हलक़ूम पर छुरी रख दी, और क़रीब था कि इस्माईल[अ०] ज़बह हो जाते कि "तुमने ख़्वाब को सच कर दिखाया।" की आवाज़ ने इस्माईल[अ०] को बचा लिया और उनके बजाये दुम्बा ज़बह हो गया, और इस्माईल[अ०] ज़बीहउल्लाह बन कर उठ खड़े हुए। यह ईदे अज़हा इसी वाक़िये की याद को ताज़ा रखने के लिये है। चुनान्चे इस दिन गाय, बकरी, दुम्बा वग़ैरा की कुर्बानी दे कर इस कुर्बानी की याद को क़ायम किया जाता है।

इमाम अलैहिस्सलाम ने इस दुआ में चन्द उमूर वाज़ेह तौर से बयान फ़रमाये हैं :—

(1) नमाज़े जुमा और नमाज़े ईदैन की इमामत अइम्मा अहलेबैत[अ०] से मख़सूस है और उनकी मौजूदगी में किसी को यह हक़ नहीं पहुंचता कि वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वज़ाएफ़े इमामत सर अन्जाम दे। चुनान्चे अब्दुल्लाह इब्ने दीनार ने इमाम बाक़र अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि आपने फ़रमाया :—

"ऐ अब्दुल्लाह! मुसलमानों को ईदे अज़हा हो या ईदे फ़ित्र इसमें आले मोहम्मद[स०] का ग़मो हुज़्न ताज़ा हो जाता है। (अब्दुल्लाह कहते हैं कि) मैंने अर्ज़ किया कि यह किस लिये? फ़रमाया इस लिये कि वह अपने हक़ को अग़यार के हाथों में देखते हैं।"

इसी तरह नमाज़े जुमा की इमामत का हक़ भी इमाम या उस शख़्स के अलावा जिसे इमाम मामूर फ़रमाये किसी दूसरे को नहीं पहुंचता अलबत्ता ज़मानए गैबत में जबकि इमाम तक दस्तरस नहीं है। नमाज़े जुमा वाजिब तख़ईरी है। यानी चाहे नमाज़े जुमा पढ़े चाहे नमाज़े ज़ोहर लेकिन नमाज़ जुमा अफ़ज़ल है और नमाज़े ईद मुस्तहब है। ख़्वाह जमाअत से हो या फ़ुरादा। इस लिये कि नमाज़े ईद के साथ कोई और फ़र्ज़ नहीं है कि वाजिब तख़ईरी सूरत पज़ीर हो सके। ब–ख़िलाफ़ नमाज़े जुमा के कि इसके साथ दूसरी फ़र्ज़े ज़ोहर मौजूद है। मक़सद यह है कि नमाज़े जुमा और नमाज़े ईदैन के शराएते वुजूब में से एक शर्त हुज़ूर इमाम भी है, और दरसूरते तो कि यह शर्त न पाई जाये तो वुजूब बाक़ी न रहेगा। इस लिये उलमा नमाज़े ईदैन के इस्तेहबाब के क़ायल हैं लेकिन जुमे में इस्तेहबाब के क़ायल नहीं है जुमा में इस्तेहबाब इस लिये नहीं हैं कि जुमा ज़ोहर के क़ायम मक़ाम होता है जिससे नमाज़े ज़ोहर साक़ित हो जाती है और वाजिब का बदल मुस्तहब नहीं हो सकता और न दोनों को बनिय्यत वुजूब जमा किया जा सकता है। इस लिये इन दोनों में से एक को ब–नीयत वुजूब बजा लाना काफ़ी है। अलबत्ता इस एतबार से जुमे को मुस्तहब कहा जा सकता है कि यह अपनी दूसरी फ़र्ज़े ज़ोहर के मुक़ाबिले में अफ़ज़ल है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

(2) ख़िलाफ़त व इमामत के सही वुरसादार अइम्मा अहलेबैत[अ०] हैं, क्योंकि इमामत के शराएत में से अफ़ज़लियत, इस्मत और मनसूस होना है और यह शराएत उनके अलावा किसी एक में नहीं पाये जाते। चुनान्चे इस सिलसिले की फ़र्द अव्वल हज़रत अली[अ०] इब्ने अबीतालिब[अ९] को पैग़म्बरे अकरम[स०] ने "मन कुन्तो मौलाहो फ़ हाज़ा अली मौला" के एलान से अपना जॉनशीन मुक़र्रर किया और ख़िलाफ़त के लिये नामज़द फ़रमाया। मगर हुआ यह कि इसके मुक़ाबले में सक़ीफ़ा बनी साअदा में जम्हूरियत के नाम पर ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन मुन्तख़ब कर लिया गया, लेकिन जिस जम्हूरियत पर ख़िलाफ़त की बुनिया रखी गयी थी वह अवाम में जम्हूरियत का एहसास पैदा न कर सकी और आख़िर उसे मुलूकियत के सामने झुकना पड़ा और क़ैसरी व कसरवी तर्ज़ की हुकूमत दुनियाए इस्लाम पर छा गयी जिसने अपने इस्तेहकाम के लिये ज़ुल्म व तशद्दुद का सहारा लिया और इस दौरे इस्तेबदादियत में अइम्मा अहलेबैत[अ०] में से कुछ हक़ की ख़ातिर क़त्ल किये गये। कुछ ज़हर से मारे गये कुछ क़ैद व बन्द में डाले गये और हर दौर में कुरमानी ताक़तों का निशाना बनते रहे। मगर हक़ की ख़ामोश तब्लीग़ जो उनका फ़रीज़ए मनसबी था अन्जाम देते रहे, और यह उसी ख़ामोश तब्लीग़ का नतीजा है कि इस्लाम के नुक़ूश सफ़हए हस्ती से महो न हो सके। वरना कौन सी कोशिश थी जो इस्लाम के ख़दो ख़ाल के बिगाड़ने में उठा न रखी हो।

(3) पैग़म्बरे अकरम[स०] के बाद शरीअत के नक़्शो निगार को बिगाड़ कर ख़ुद साख़्ता शरीअत को खड़ा कर दिया गया। ख़ुदा की किताब और रसूल[स०] की सुन्नत पसे पुश्त डाल दी गयी और फ़राएज़ व वाजिबात नाक़ाबिले अमल क़रार पा गये। चुनान्चे सही बुख़ारी में है :–

"उम्मे दरदा कहती हैं कि अबुद् दरदा ग़ुस्से में भरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हुए मेरे पास आये मैंने कहा कि यह गुस्सा किस बिना पर है? कहा कि ख़ुदा की क़सम मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की शरीअत में से कोईचीज़ बाक़ी नहीं रह गयी। सिवा इसके कि लोग एक साथ नमाज़ पढ़ लेते हैं।"

दूसरी रवायत में फ़रमाते हैं :–

"अनस से रवायत है वह फ़रमाते हैं कि मैं ज़मानए रिसालत की एक चीज़ को भी उसकी असली हालत पर नहीं पाता। इनसे कहा गया कि नमाज़? कहा कि नमाज़ में क्या तुमने वह तसर्रूफ़ात नहीं किये कि जो तुम्हें मालूम हैं कि किये हैं।"

यह है आयाने सहाबा में से हज़रत अबुद् दरदा, और अनस बिन मालिक की गवाही कि पैग़म्बरे अकरम[स०] के बाद शरीअत में तरमीम व तनसीख़ शुरू हो गयी और कोई चीज़ अपनी असली सूरत पर बाक़ी न रही। यहां तक कि नमाज़ भी तसर्रूफ़ात से महफ़ूज़ न रह सकी, और इसमें भी तग़य्युर व तबद्दुल पैदा कर दिया गया। यह इजमाल बहुत से तफ़सीलात का आईनादार है।

तू खुद हदीस मुफ़स्सल ब–ख़्वां अज़ीं मुजमल

(4) उन लोगों पर जो मुस्तहक़े लअनत हैं लअनत करना न सिर्फ़ जाएज़ बल्कि मुस्तहब है और इसका इस्तेहबाब ईदे अज़्हा के मुबारक मौक़े पर अमले इमाम से ज़ाहिर है और इसके जवाज़ के लिये क़ुरआन व हदीस को भी पेश किया जा सकता है जिससे यह भी ज़ाहिर हो जायेगा कि लअनत दशनाम नहीं है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"वह लोग जो अल्लाह तआला और उसके रसूल[स०]

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

को ईज़ा पहुंचाते हैं उन पर ख़ुदा दुनिया व आख़रत में लअनत करता है और उनके लिये रूस्वा करने वाला अज़ाब मोहय्या किया है।"

इसी तरह अहादीसे नबवी में सिफ़ात के एतबार से भी लअनत वारिद हुई है जैसे रिश्वत ख़्वार, सूद ख़्वार, शराब ख़्वार वग़ैरा पर और नाम के साथ भी लअनत वारिद हुई है। चुनान्चे हज़रत आयशा फ़रमाती हैं :–

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम ने मरवान के बाप (हकम) पर लअनत की और मरवान उसकी सुल्ब में था और वह भी अल्लाह की लअनत में से हिस्सा पा रहा था।"

(5) अइम्मा अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम की एताअत वाजिब व लाज़िम है। चुनान्चे कुरआने मजीद में है :–

"अल्लाह तआला की एताअत करो रसूल[स०] की एताअत करो और जो तुममे से साहेबाने अम्र हों।"

उलुल अम्र वही हो सकते हैं जो पैग़म्बर[स०] के नुमाइन्दे और उनके क़ायम मक़ाम हों ताकि उनकी एताअत पैग़म्बर[स०] की एताअत के हमदोश क़रार पा सके और जिनका दामन कुरआन की तरह पाक और हर रिज्स से मुनज़्ज़ा हो ताकि उनकी एताअत में उनके दामन की आलूदगी माने न हो और पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने हदीस सक़लैन में "मैं तुम में दो गरांक़द्र चीज़ें छोड़े जाता हूं। एक कुरआन और दूसरे मेरी इतरत जो मेरे अहलेबैत[अ०] हैं।" में कुरआन की तरह अहलेबैत[अ०] को भी वाजिबुल एताअत क़रार दिया है और इसी एताअत से हिदायत को वाबस्ता किया है, और जिस एताअत पर हिदायत मुन्हसिर होगी उसके लुज़ूम से इन्कार नहीं किया जा सकता।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुश्मनों के मक्रो फ़रेब के दफ़ीए और उनकी शिद्दत व सख़्ती को दूर करने के लिये हज़रत[अ०] की दुआ

"ऐ मेरे मअबूद! तूने मेरी रहनुमाई की मगर मैं ग़ाफ़िल रहा तूने पन्दो नसीहत की मगर मैं सख़्त दिली के बाएस मुतास्सिर न हुआ। तूने मुझे उमदा नेअमतें बख़्शीं, मगर मैंने नाफ़रमानी की। फिर यह कि जिन गुनाहों से तूने मेरा रूख़ मोड़ा जब कि तूने मुझे उसकी मआ़रेफ़त अता की तो मैंने (गुनाहों की बुराई को) पहचान कर तौबा व अस्तग़फ़ार की जिस पर तूने मुझे माफ़ कर दिया, और फिर गुनाहों का मुरतकब हुआ तो तूने पर्दापोशी से काम लिया ऐ मेरे मअबूद! तेरे ही लिये हम्दो सना है। मैं हलाकत की वादियों में फांदा और तबाही व बर्बादी की घाटियों में उतरा। उन हलाकत खेज़ घाटियों में तेरी क़हरमानी सख़्त गीरियों और उनमें दर आने से तेरी उक़ूबतों का सामना किया। तेरी बारगाह में मेरा वसीला तेरी वहदत व यकताइ का इक़रार है, और मेरा ज़रिआ सिर्फ़ यह है कि मैंने किसी चीज़ को तेरा शरीक नही जाना, और तेरे साथ किसी को मअबूद नहीं ठहराया, और मैं अपनी जान को लिये तेरी रहमत व मग़फ़ेरत की जानिब गुरेज़ां हूं, और एक गुनहगार तेरी ही तरफ़ भाग कर आता है, और एक इल्तेजा करने वाला जो अपने हिज़ व नसीब को ज़ाया कर चुका हो तेरे ही दामन में पनाह लेता है। कितने ही ऐसे दुश्मन थे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जिन्होंने शमशीरे अदावत को मुझ पर बेनयाम किया और मेरे लिये अपनी छुरी की धार को बारीक और अपनी तुन्दी व सख़्ती की बाड़ को तेज़ किया और पानी में मेरे लिये मोहलिक ज़हरों की आमेज़िश की और कमानों में तीरों को जोड़ कर मुझे निशाने की ज़द पर रख लिया, और उनकी तआकुब करने वाली निगाहें मुझसे ज़रा ग़ाफ़िल न हुई, और दिल में मेरी ईज़ा रसानी के मनसूबे बांधते और तल्ख़ जरओं की तलख़ी से मुझे पैहम तल्ख़काम बनाते रहे। तो ऐ मेरे मअबूद! इन रंज व आलाम की बर्दाश्त से मेरी कमज़ोरी और मुझसे आमाद–ए–पैकार होने वालों के मुक़ाबले में इन्तेक़ाम से मेरी आजिज़ी और कसीरूत् तादाद दुश्मनों और ईज़ारसानी के लिये घात लगाने वालों के मुक़ाबले में मेरी तन्हाई तेरी नज़र में थी जिसकी तरफ़ से मैं ग़ाफ़िल और बेफ़िक्र था कि तूने मेरी मदद में पहल और अपनी कुव्वत और ताक़त से मेरी कमर मज़बूत की। फिर यह कि उसकी तेज़ी को तोड़ दिया और उसके कसीर साथियों (को मुन्तशिर करने) के बाद उसे यक्कओ तन्हा कर दिया और मुझे उस पर ग़लबा व सरबलन्दी अता की और जो तीर उसने अपनी कमान में जोड़े थे वह उसी की तरफ़ पलटा दिये। चुनान्चे इस हालत में तूने उसे पलटा दिया कि न तो वह अपना गुस्सा ठण्डा कर सका, और न उसके दिल की तपिश फ़र्द हो सकी। उसने अपनी बोटियां

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

काटीं और पीठ फिरा कर चला गया और उसके लश्कर वालों ने भी उसे दग़ा दी और कितने ही ऐसे सितमगर थे जिन्होंने अपने मक्रो फ़रेब से मुझ पर ज़ुल्म व तअद्दी की और अपने शिकार के जाल मेरे लिये बिछाये और अपनी निगाहे जुस्तुजू का मुझ पर पहरा लगा दिया और इस तरह घात लगा कर बैठ गये जिस तरह दरिन्दा अपने शिकार के इन्तेज़ार में मौक़े की ताक में धात लगा कर बैठता है दरआं हालांकि वह मेरे सामने ख़ुशाम्दाना तौर पर ख़न्दा पेशानी से पेश आते और (दरपर्दा) इन्तेहाई कीना तोज़ नज़रों से मुझे देखते तो जब ऐ ख़ुदाये बुज़ुर्ग व बरतर उनकी बदबातिनी व बदसरशती को देखा तो उन्हें सर के बल उन्ही के गढ़े में उलट दिया और उन्हें उन्हीं के ग़ार के गहराव में फेंक दिया, और जिस जाल में मुझे गिरफ़्तार देखना चाहते थे ख़ुद ही ग़ुरूर व सरबुलन्दी का मुज़ाहरा करने के बाद ज़लील हो कर उसके फंदों में जा पड़े, और सच तो यह है कि अगर तेरी रहमत शरीके हाल न होती तो क्या बईद था कि जो बला व मुसीबत उन पर टूट पड़ी है वह मुझ पर टूट पड़ती और कितने ही ऐसे हासिद थे जिन्हें मेरी वजह से ग़म व ग़ुस्से के अच्छू और ग़ैज़ व ग़ज़ब के गुलूगीर फन्दे लगे और अपनी तेज़ ज़बानी से मुझे अज़ीयत देते रहे और अपने उयूब के साथ मुझे मुतहम करके तैश दिलाते रहे और मेरी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आबरू को अपने तीरों का निशाना बनाया और जिन बुरी आदतों में वह ख़ुद हमेशा मुब्तिला रहे वह मेरे सर मण्ढ दें और अपनी फ़रेबकारियों से मुझे मुश्तइल करते और अपनी दग़ाबाज़ियों के साथ मेरी तरफ़ पर तौलते रहे तो मैंने ऐ मेरे अल्लाह तुझसे फ़रियादरसी चाहते हुए और तेरी जल्द हाजत रवाई पर भरोसा करते हुए तुझे पुकारा दरआं हालांकि यह जानता था कि जो तेरे सायए हिमायत में पनाह लेगा, वह शिकस्त ख़ुर्दा नहीं होगा और जो तेरे इन्तेक़ाम की पनाहगाहे मोहकम में पनाह गुज़ीं होगा वह हरासां नहीं होगा। चुनान्चे तूने अपनी कुदरत से उन की शिद्दत व शरअन्गेज़ी से मुझे महफ़ूज़ कर दिया और कितने ही मुसीबतों के अब्र (जो मेरे उफक़े ज़िन्दगी पर छाये हुए) थे तूने छांट दिये और कितने ही नेअमतों के बादल बरसा दिये और कितनी ही रहमत की नहरें बहा दीं और कितने ही सेहत व आफ़ियत के जामे पहना दिये और कितनी ही आलाम व हवादिस की आंखें (जो मेरी तरफ़ निगरां थीं) तूने बेनूर कर दीं और कितने ही ग़मों के तारीक पर्दे (मेरे दिल पर से) उठा दिये और कितने ही अच्छे गुमानों को तूने सच कर दिया, और कितनी ही तहीदस्तियों का तूने चारा किया और कितनी ही ठोकरों को तूने संभाला और कितनी ही नादारियों को तूने (सरवत से) बदल दिया। (बारे इलाहा!) यह सब तेरी तरफ़ से इनाम व अहसान

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है और मैं इन तमाम वाक़आत के बावजूद तेरी मुसीबतों में हमातन मुनहमिक रहा। (लेकिन) मेरी बद्आमालियों ने तुझे अपने एहसानात की तकमील से रोका नहीं और न तेरा फ़ज़्ल व अहसान मुझे इन कामों से जो तेरी नाराज़गी का बाएस हैं बाज़ रख सका और जो कुछ तू करे उसकी बाबत तुझसे पूछ गछ नहीं हो सकती। तेरी ज़ात की क़सम! जब भी तुझसे मांगा गया तूने अता किया और जब न मांगा गया तो तूने अज़ ख़ुद दिया। और जब तेरे फ़ज़्ल व करम के लिये झोली फैलाई गयी तो तूने बुख़्ल से काम नहीं लिया। ऐ मेरे मौला व आक़ा! तूने कभी एहसान व बख़्शिश और तफ़ज़्ज़ुल व इनाम से दरेग़ नहीं किया, और मैं तेरे मोहर्रमात में फांदता तेरे हुदूद व एहकाम से मुतजाविज़ होता और तेरी तहदीद व सरज़निश से हमेशा ग़फ़लत करता रहा। ऐ मेरे मअबूद! तेरे ही लिये हम्दो सताइश है जो ऐसा साहबे इक़्तिदार है जो मग़लूब नहीं हो सकता। और ऐसा बुरदबार है जो जल्दी नहीं करता। यह उस शख़्स का मौक़फ़ है जिसने तेरी नेअमतों की फ़रावानी का एतराफ़ किया है और उन नेअमतों के मुक़ाबले में कोताही की है, और अपने खेलाफ़ अपनी ज़ियांकारी की गवाही दी है ऐ मेरे मअबूद! मैं मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम) की मंज़िलत बुलन्दपाया और अली (अलैहिस्सलाम) के मरतबए रौशन व दरख़्शां के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वास्ते से तुझसे तक़र्रुब का ख़्वास्तगार हूं और इन दोनों के वसीले से तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हूं ताकि मुझे इन चीज़ों की बुराई से पनाह दे जिनसे पनाह तलब की जाती है। इस लिये कि यह तेरी तवंगरी व वुसअत के मुक़ाबले में दुश्वार और तेरी कुदरत के आगे कोई मुश्किल काम नहीं है और तू हर चीज़ पर क़ादिर है। लेहाज़ा तू अपनी रहमत और दायमी तौफ़ीक़ से मुझे बहरामन्द फ़रमा कि जिसे ज़ीना क़रार दे कर तेरी रज़ामन्दी की सतह पर बुलन्द हो सकूं और इसके ज़रिये तेरे अज़ाब से महफ़ूज़ रहूं। ऐ तमाम रहम करने वालों में सबसे बढ़ कर रहम करने वाले!"

यह दुआ, दुआए जौशने सग़ीर के नाम से मौसूम है जो दुश्मन की ईज़ा रसानियों और अज़ीय्यत कोशियों से महफ़ूज़ रहने के लिये पढ़ी जाती है। दुनिया में हर शख़्स के ख़ैरख़्वाह भी होते हैं, बदख़्वाह भी। दोस्त भी होते हैं और दुश्मन भी, और वह फ़ितरतन् दुश्मन की चीरा दस्तियों से बचने के लिये चाराजूई करता और तबीअत में ग़ैज़ व ग़ज़ब की आग सुलगती है तो इन्तेक़ाम का जज़बा भड़क उठता है। मगर ख़ासाने ख़ुदा सिर्फ़ अल्लाह तआला से इल्तेजा करते और उसके दामने हिफ़्ज़ व हिमायत में पनाह ढूंढते हैं, और जब दुश्मनों की कसरत और दोस्तों की क़िल्लत और इन्तेहाई क़िल्लत हो तो इसके सिवा चारएकार ही क्या है। इमाम अलैहिस्सलाम का दौरे हयात कुछ ऐसा ही दौर था जिसमें अफ़रीते बला मुंह खोले बैठा था, और मसाएब व आलाम के सैलाब उमडे चले आ रहे थे। एक तरफ़ फ़ितनए इब्ने ज़ुबैर सर उठाये हुए था जिसमें बनी हाशिम ही उसके ज़ुल्म व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तशद्दुद का निशाना थे और दूसरी तरफ़ उमूवी इक़्तिदार मुहीत था जिसके मज़ालिम का निशाना आम रेयाया तो थी ही मगर अहलेबैते नुबूव्वत[अ०] ख़ुसूसी हदफ़ थे और हुकूमत की इस रविश की वजह से एक ऐसा माहौल बन गया था जहां दोस्त भी खुल कर दोस्ती का इज़हार न कर सकते थे और आमदो रफ़्त और मिलने जुलने से हिचकिचाते थे। हालांकि सानिहए कर्बला के बाद इमाम की ज़िन्दगी एक ख़ामोश ज़िन्दगी थी। न अमाले हुकूमत से रब्तो ज़ब्त, न मुल्की मआमलात से सरोकार। दुनिया से बस इतना लगाव जितना ज़िन्दगी के लम्हात गुज़ारने के लिये ज़रूरी था। सईद इब्ने मुसय्यब कहते हैं कि "मैंने किसी दिन भी उनको मुस्कुराते हुए नहीं देखा।" आपकी एक कनीज़ से आप के मुतअल्लिक़ दरियाफ़्त किया गया तो उसने कहा : "मैंने कभी उनके सामने दिन को खाना पेश नहीं किया और रात को कभी बिस्तर नहीं बिछाया।" मगर इसके बावजूद हर तरह की तहक़ीर व तज़लील और तशद्दुद आमेज़ बरताव रवा रखा जाता था। चुनान्चे मुतअद्दिद मोअर्रिख़ीन ने लिखा है कि अब्दुल मलिक ने हुक्म दे दिया कि आपको बेड़ियों और हथकड़ियों में जकड़ कर शाम पहुंचा दिया जाये जिस पर आपको ज़ंजीरों में जकड़ लिया गया। ज़हरी का बयान है कि जब मैंने हज़रत[अ०] को इस आलम में देखा कि आप के हाथ पांव बेड़ियों में जकड़े हुए हैं और अब्दुल मलिक के आदमियों का पहरा गिर्द है, तो बेसाख़्ता मेरे आंसू निकल आये और फ़ौरन् अब्दुल मलिक के पास रवाना हो गया, और उससे कहा कि ऐ अमीर! "अली इब्नुल हुसैन[अ०] के मुतअल्लिक़ तुम्हारा गुमान दुरूस्त नहीं है। वह तो हर वक़्त अपने परवर दिगार की इबादत व एताअत में मसरूफ़ रहते हैं।" इस वाक़ए के बाद आप को अमान हासिल हुई। यूंहि अगर कोई अक़ीदत की बिना पर ज़बान खोलता तो वह मौरूदे एताब क़रार पा जाता। चुनान्चे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़रज़ोक़ का वाक़िया है कि जब उसने हुशाम इब्ने अब्दुल मलिक के तजाहुले आरिफ़ाना के मौक़े पर अपना वह क़सीदा पढ़ा जिसका पहला शेर यह है :—

(तरजमा) "यह वह है जिसके क़दमों की चाप को सरज़मीने मक्का पहचानती है और जिसे ख़ान–ए–कआबा और हल व हरम बख़ूबी जानते हैं।"

तो उसका नाम दरबारी शोअरा की फ़ेहरिस्त से काट दिया गया और मुक़र्ररा वज़ीफ़ा बन्द करने के बाद क़ैद में डाल दिया गया। इसी तरह हुशाम इब्ने इस्माईल ने जो अब्दुल मलिक के दौर में हाकिमे मदीना और बड़ा ज़ालिम व सफ़ाक था इमाम अलैहिस्सलाम को तरह तरह की अज़ीयतें पहुंचायीं। चुनान्चे तारीख़े तबरी में है कि "अली इब्नुल हुसैन[अ०] ने उसके हाथों सख़्त अज़ीयतें उठायीं" मगर इस ज़ुल्म व तशद्दुद के बावजूद हज़रत[अ०] ने हमेशा सब्र व तहम्मुल से काम लिया, और शिकवा किया, तो उससे जो शिकवा व फ़रियाद को सुनता है और रंज व कर्ब को दूर करता है, और वही एक मज़लूम व सितम रसीदा की आख़री पनाहगाह है।

ख़ौफ़े ख़ुदा के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजमा) "बारे इलाहा! तूने मुझे इस तरह पैदा किया कि मेरे आज़ा बिल्कुल सही व सालिम थे, और जब कमसिन था तो मेरी परवरिश का सामान किया और बेरंज व काविश रिज़्क़ दिया। बारे इलाहा! तूने जिस किताब को नाज़िल किया और जिसके ज़रिये अपने बन्दों को नवेद व बशारत दी उसमें तेरे इस इरशाद को देखा है कि "ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पर ज्यादती की है, तुम अल्लाह तआला की रहमत से नाउम्मीद न होना। यक़ीनन् अल्लाह तुम्हारे तमाम गुनाह माफ़ कर देगा।" और इससे पेशतर मुझसे ऐसे गुनाह सरज़द हो चुके हैं जिनसे तू वाक़िफ़ है और जिन्हें तू मुझसे ज़्यादा जानता है। वाये बदबख़्ती व रूस्वाई उन गुनाहों के हाथों जिन्हें तेरी किताब क़लमबन्द किये हुए है। अगर तेरे हमागीर अफ़वो व दरगुज़र के वह मवाक़े न होते जिनका मैं उम्मीदवार हूं तो मैं अपने हाथों अपने हलाकत का सामान कर चुका था। अगर कोई एक भी अपने परवर दिगार से निकल भागने पर क़ादिर होता तो मैं तुझसे भागने का ज्यादा सज़ावार था, और तू वह है जिससे ज़मीन व आसमान के अन्दर कोई राज़ मख़फ़ी नहीं है मगर यह कि तू (क़यामत के दिन) उसे ला हाज़िर करेगा। तो जज़ा देने और हिसाब करने के लिये बहुत काफ़ी है। ऐ अल्लाह! मैं अगर भागना चाहूं तो तू मुझे ढूंढ लेगा। अगर राहे गुरेज़ अख़्तियार करूं तो तू मुझे पा लेगा। ले देख मैं आजिज़, ज़लील और शिकस्ता हाल तेरे सामने खड़ा हूं। अगर तू अज़ाब करे तो मैं इसका सज़ावार हूं। ऐ मेरे परवर दिगार! यह तेरी जानिब से ऐन अद्ल है और अगर तू माफ़ कर दे तो तेरा अफ़वो व दरगुज़र हमेशा मेरे शामिले हाल रहा है और तूने सेहत व सलामती के लिबास मुझे पहनाए हैं। बारे इलाहा! मैं तेरे उन पोशीदा नामों के वसीले

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से और तेरी बुज़ुर्गी के वास्ते से जो (जलाल व अज़मत के) पर्दों में मख़्फ़ी है तुझसे यह सवाल करता हूं कि इस बेताब नफ़्स और बेक़रार हड्डियों के ढांचे पर तरस खा (इस लिये कि) जो तेरे बादल की गरज से कांप उठता है वह तेरे ग़ज़ब की आवाज़ को कैसे सुन सकता है। लेहाज़ा मेरे हालेज़ार पर रहम फ़रमा इस लिये कि ऐ मेरे मअबूद! मैं एक हक़ीर फ़र्द हूं जिसका मर्तबा पस्त तर है, और मुझ पर अज़ाब करना तेरी सल्तनत में ज़र्रा भर इज़ाफ़ा नहीं कर सकता, और अगर मुझे अज़ाब करना तेरी सल्तनत को बढ़ा देता तो मैं तुझसे अज़ाब पर सब्र व शकीबाई का सवाल करता और यह चाहता कि वह इज़ाफ़ा तुझे हासिल हो। लेकिन ऐ मेरे मअबूद! तेरी सल्तनत इससे ज़्यादा अज़ीम और इससे ज़्यादा दवाम पज़ीर है कि फ़रमांबरदारों की एताअत इसमें कुछ इज़ाफ़ा कर सके। या गुनाहगारों की मअसियत इसमें से कुछ घटा सके। तो फिर ऐ तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले मुझ पर रहम फ़रमा। और ऐ जलाल व बुज़ुर्गी वाले मुझसे दरगुज़र कर और मेरी तौबा कुबूल फ़रमा। बेशक तू तौबा कुबूल करने वाला और रहम करने वाला है।

यह दुआ ख़ौफ़ व ख़शयते इलाही के सिलसिले में है। जब इन्सान को अपनी उबूदियत का एहसास होता है तो अल्लाह तआला की अज़मत व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जबरूत से मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहता, और इसी तास्सुर का नाम ख़ौफ़ है जो उबूदियत का जौहर, इन्सानी इज़्ज़त का सरमाया और दीनी व अख़लाक़ी ज़िन्दगी का मुहाफ़िज़ है, क्योंकि इन्सान के दिल में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ बसा हो तो फिर उसकी मुतलक़ुल अनानी उसे ख़ुवाहिशाते नफ़्स की पैरवी से रोक देती है और मुहासिबा और अपने आमाल पर सज़ा के मुरत्तब होने के अन्देशे से गुनाहों से बच कर रहने की कोशिश करता है, और अगर ख़ौफ़ का मुज़ाहरा करे मगर ख़ौफ़ उसकी ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ न हो और न उसमें फ़र्ज़ शिनासी का एहसास पैदा करे तो वह दरहक़ीक़त ख़ौफ़ ही नहीं है, क्योंकि ख़ौफ़ मुशाहिदे में आने वाली चीज़ तो है नहीं। इसका अन्दाज़ा इन्सानी किरदार के तास्सुर ही से हो सकता है। बहरहाल ख़ौफ़े ख़ुदा मुख़्तलिफ़ दवाई व असबाब की बिना पर पैदा होता है कभी गुनाह और उसके हौलनाक नताएज के तसव्वुर से ख़ौफ़ तारी होता है। क्योंकि जब इन्सान अल्लाह तआला को अपने आमाल पर हाज़िर नाज़िर समझेगा और हश्र व नश्र पर ईमान रखेगा तो सज़ा व मुहासिबे के डर से उससे ख़ौफ़ खायेगा, लेकिन यह डर अपनी तकलीफ़ व अज़ीय्यत के एहसास की बिना पर है। यह अगर चे उस सतह पर नहीं है जिस सतह पर बुलन्द नज़र अफ़राद का ख़ौफ़ होता है। ता हम यह इन्सान के लिये तौबा का मोहर्रिक और इस्लाहे नफ़्स और अपने हालात की तब्दीली पर आमादा करने का बाएस होता है और कभी इस तसव्वुर के पेशे नज़र ख़ौफ़ होता है कि ऐसा न हो कि तौबा के बाद फिर ख़्वाहिशे नफ़्स ग़ालिब आ जायें और गुनाह इस तरह घेर लें कि तौबा की तौफ़ीक़ ही न हो और हश्र व नश्र और हिसाब व किताब के मौक़े पर शर्मिन्दगी उठाना और अज़ाबे इलाही से दो चार होना पड़े और कभी ख़ुवाहिशात व जज़बात पर पूरा क़ाबू होने के बावजूद सिर्फ़ उसकी अज़मत व हैबत के तसव्वुर से ख़ौफ़ तारी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

होता है। चुनान्चे जब सोलहा व अबरार उसकी रिफ़अत व किबरियाई से मुतास्सिर होते हैं तो उनके दिल कांप उठते हैं। जिस्म पर कपकपी और बदन पर लरज़ा तारी हो जाता है। इस ख़ौफ़ को ख़शय्यत व रहबत से ताबीर किया जाता है और यह नतीजा है इल्म व मग़फ़ेरत का। चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम का इरशाद है :–

"अल्लाह से बस वही लोग डरते हैं जो इल्म व मआ़रेफ़त रखते हैं।"

इस इल्म व मआ़रेफ़त की बिना पर पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है : "मैं तुम सबसे ज़्यादा अल्लाह से ख़ाएफ़ व तरसां हूं।" और कभी ख़ौफ़, गुनाह और एहसासे अज़मत दोनों क़िस्म के मिले जुले जज़बात के नतीजे में होता है और कभी सिर्फ़ कुर्बे ख़ुदावन्दी व लक़ाये रब्बानी से महरूमी के तसव्वुर से होता है। इसमें न सज़ा की दहशत कारफ़रमा होती है और न हश्र व नश्र के ख़ौफ़ की आमेज़िश बल्कि बन्दा किसी जज़ा की उम्मीद और किसी सज़ा के अन्देशे से बलन्दतर हो कर सिर्फ़ बारगाहे एज़दी से दूरी के तसव्वुर से घबराता और उसकी नज़रे इल्तेफ़ात की महरूमी से हरासां होता है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"ऐ मेरे मअबूद! मेरे मालिक! मेरे मौला! मेरे परवरदिगार यह माना कि मैंने तेरे अज़ाब पर सब्र कर लिया मगर तेरी दूरी व फ़िराक़ पर क्योंकर सब्र करूंगा।"

यह ख़ौफ़ का मर्तबा तमाम मरातिबे ख़ौफ़ से बुलन्दतर और सिद्दीक़ीन व मुक़र्रेबीन बारगाह से मख़सूस है। हज़रत[अ०] की यह दुआ ख़ौफ़े इलाही के सिलसिले में एक जामेअ और तमाम अक़सामे ख़ौफ़ को शामिल है जिसमें इब्तिदाअन् उसके एहसानात और हमागीर रहमत व ग़ुफ़रान का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़िक्र किया है। फिर अपने गुनाहों का इक़रार, अफ़वो व दरगुज़र की तवक़्क़ो, सज़ा व उक़ूबत को उसके अद्ल का तक़ाज़ा क़रार देते हुए अज़ाब के मुक़ाबले में अपनी आजिज़ी व नाताक़ती का इज़हार किया है इस तरह कि जो धूप की हिद्दत को बर्दाश्त न कर सके वह दोज़ख़ के भड़कते हुए शोलों की तपिश को कैसे बर्दाश्त करेगा, और जो बिजली की कड़क की आवाज़ पर दहल जाता हो वह उसके ग़ैज़ व ग़ज़ब की दहशत और उसकी रहमत से दूरी का किस तरह मुतहम्मिल हो सकता है और आख़िर में उसकी शाही व फ़रमांरवाई का ज़िक्र किया है कि उसकी सल्तनत व शाही को दुनयवी हुकूमतों पर क़यास न करना चाहिये क्योंकि दूसरे हुक्मरानों को अपनी हुकूमत की बक़ा के लिये रईय्यत के तआव्वुन और लश्कर व सिपाह की एआनत की हाजत होती है और उसे मुख़ालिफ़ों की मुख़ालिफ़त की परवा और हमनवाओं की हमनवाई की एहतियाज नहीं है। न फ़रमांबरदारों की फ़रमांबरदारी से उसके मुल्क व सल्तनत में इज़ाफ़ा होता है और ना ख़ताकारों की ना फ़रमानी इस पर असर अन्दाज़ हो सकती है, कि वह फ़रमाबरदारों को साथ मिलाये रखने की कोशिश करे और नाफ़रमानों और मुजरिमों को सज़ा दे कर अपनी हुकूमत का इस्तेहकाम चाहिये क्योंकि उसकी सल्तनत ग़ैर मुख़ततिम, मुल्क लाज़वाल और बादशाही हम्मागीर है और यह एक़्तिदार व ग़लबा उसे अपनी क़ुदरत से हासिल है जिसमें एहतियाज का शाएबा भी नहीं है और न कोई इसका मद्दे मुक़ाबिल है और न कोई इससे मुतसादिम हो सकता है और हर मुतनफ़्फ़िस वह फ़रमांबरदार हो या नाफ़रमान उसके ज़ेरे तसल्लुत व इक़्तिदार है। लेहाज़ा वह गुनाहगारों से अफ़वो व दरगुज़र करके अपनी रहमत को कारफ़रमा करे तो उसकी शाने करीमी से बईद नहीं है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तज़र्रोअ व फ़रोतनी के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

"ऐ मेरे मअबूद! मैं तेरी हम्द व सताइश करता हूं और तू हम्द व सताइश का सज़ावार है इस बात पर कि तूने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया; मुझ पर अपनी नेअमतों को कामिल और अपने अतियों को फ़रावां किया और इस बात पर कि तूने अपनी रहमत के ज़रिये मुझे ज़्यादा से ज़्यादा दिया और अपनी नेअमतों को मुझ पर तमाम किया। चुनान्चे तूने मुझ पर वह एहसानात किये हैं जिनके शुक्रिये से क़ासिर हूं, और अगर तेरे एहसानात मुझ पर न होते और तेरी नेअमतें मुझ पर फ़रावां न होतीं तो मैं न अपना हिज़ व नसीब फ़राहम कर सकता था, और न नफ़्स की इस्लाह व दुरूस्ती की हद तक पहुंच सकता था लेकिन तूने मेरे हक़ में अपने एहसानात का आग़ाज़ फ़रमाया और मेरे तमाम कामों में मुझे (दूसरों से) बेनयाज़ी अता की। रंज व बला की सख़्ती मुझ से हटा दी, और जिस हुक्मे क़ज़ा का अन्देशा था उसे मुझसे रोक दिया। ऐ मेरे मअबूद! कितनी बलाख़ेज़ मुसीबतें थीं जिन्हें तूने मुझसे दूर कर दिया और कितनी ही कामिल नेअमतें थीं जिनसे तूने मेरी आंखों की ख़ुश्की व सुरूर का सामान किया, और कितने ही तूने मुझ पर बड़े एहसानात फ़रमाये हैं। तू वह है जिसने हालते इज़्तेरार में मेरी दुआ कुबूल की और (गुनाहों में) गिरने के मौक़े पर मेरी लग़ज़िश से दरगुज़र

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

छिने हुए हक़ को ले लिया। बारे इलाहा! मैंने जब भी तुझसे सवाल किया तुझे बख़ील और जब भी तेरी बारगाह का क़सद किया तुझे रंजीदा नहीं पाया। बल्कि तुझे अपनी दुआ की निस्बत सुनने वाला और अपने मक़ासिद का बर लाने वाला ही पाया, और मैंने अपने अहवाल में से हरहाल में और अपने ज़मानए (हयात) के हर लम्हे में तेरी नेअमतों को अपने लिये फ़रावां पाया। लेहाज़ा तू मेरे नज़दीक क़ाबिले तारीफ़, और तेरा एहसान लाएक़े शुक्रिया है। मेरा जिस्म (अमलन्) मेरी ज़बान (क़ौलन्) और मेरी अक़्ल (एतक़ादन्) तेरी हम्दो सपास करती है। ऐसी हम्द जो मेरे लिये तेरी ख़ुशनूदी के बराबर हो। लेहाज़ा मुझे अपनी नाराज़गी से बचा। ऐ मेरे पनाहगाह जबकि (मुतफ़र्रिक़) रास्ते मुझे ख़स्ता व परेशान कर दें। ऐ मेरी लग़ज़िशों के माफ़ करने वाले अगर तू मेरी पर्दापोशी न करता तो मैं यक़ीनन् रूस्वा होने वालों में से होता। ऐ अपनी मदद से मुझे तक़वियत देने वाले अगर तेरी मदद शरीके हाल न होती तो मैं मग़लूब व शिकस्त ख़ुर्दा लोगों में से होता। ऐ वह जिसकी बारगाह में शाहों ने ज़िल्लत व ख़्वारी का जुवा अपनी गर्दन में डाल लिया है और वह उसके ग़लबे व इक़्तिदार से ख़ौफ़ज़दा हैं। ऐ वह जो तक़्वे का सज़ावार है ऐ वह कि हुस्न व ख़ूबी वाले नाम बस उसी के लिये हैं। मैं तुझसे ख़्वास्तगार हूं कि मुझसे दरगुज़र फ़रमा और मुझे बख़्श दे, क्योंकि मैं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बेगुनाह नहीं हूं कि उज़्र ख़्वाही करूं और न ताक़तवर हूं कि ग़लबा पा सकूं और न गुरेज़ की कोई जगह है कि भाग सकूं। मैं तुझसे अपनी लग़ज़िशों की माफ़ी चाहता हूं और उन गुनाहों से जिन्होंने मुझे हलाक कर दिया है और मुझे इस तरह घेर लिया है कि मुझे तबाह कर दिया है, तौबा व मअज़रत करता हूं मैं ऐ मेरे परवर दिगार! उन गुनाहों से तौबा करते हुए तेरी तरफ़ भाग खड़ा हूं तू अब मेरी तौबा कुबूल फ़रमा। तुझसे पनाह चाहता हूं मुझे पनाह दे। तुझसे अमान मांगता हूं मुझे ख़्वार न कर। तुझसे सवाल करता हूं मुझे महरूम न कर। तेरे दामन से वाबस्ता हूं मुझे मेरे हाल पर छोड़ न दे और तुझसे दुआ मांगता हूं लेहाज़ा मुझे नाकाम न फेर। ऐ मेरे परवर दिगार! मैंने ऐसे हाल में कि मैं बिल्कुल मिस्कीन, आजिज़, ख़ौफ़ज़दा, तरसां, हेरासां बे सरोसामान और लाचार हूं। तुझे पुकारा है ऐ मेरे मअबूद! मैं इस अज्र व सवाब की जानिब जिसका तूने अपने दोस्तों से वादा किया है जल्दी करने और उस अज़ाब से जिससे तूने अपने दुश्मनों को डराया है दूरी अख़्तियार करने से अपनी कमज़ोरी और नातवानी का गिला करता हूं। नीज़ अफ़कारी की ज़ियादती और नफ़्स की परेशान ख़याली का शिकवा करता हूं। ऐ मेरे मअबूद! तू मेरी बातिनी हालत की वजह से मुझे रूस्वा न करना। और मेरे गुनाहों के बाएस मुझे तबाह व बर्बाद न होने देना। मैं तुझे पुकारता हूं तो तू मुझे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जवाब देता है, और जब तू मुझे बुलाता है तो मैं सुस्ती करता हूं, और जहां कहीं होता हूं, अपने राज़े दिली तेरे सामने आशकारा करता हूं और मैं जो हाजत रखता हूं तुझसे तलब करता हूं और तेरे सिवा किसी को नहीं पुकारता और न तेरे अलावा किसी से आस रखता हूं। हाज़िर हूं! मैं हाज़िर हूं!! जो तुझसे शिकवा करे तू उसका शिकवा सुनता है और जो तुझ पर भरोसा करे उसकी तरफ़ मुतवज्जेह होता है, और जो तेरा दामन थाम ले उसे (ग़म व फ़िक्र से) रेहाई देता है। और जो तुझसे पनाह चाहे उससे ग़म व अन्दोह को दूर कर देता है। ऐ मेरे मअबूद! मेरे नाशुक्रे पन की वजह से मुझे दुनिया व आख़रत की भलाई से महरूम न कर और मेरे वह गुनाह जो तेरे इल्म में हैं बख़्श दे, और अगर तू सज़ा दे तो इस लिये कि मैं ही हद से तजावुज़ करने वाला, सुस्त क़दम, ज़यांकार, आसी, तकसीर पेशा, ग़फ़लत शआर और अपने हिज़ व नसीब में लापरवाही करने वाला हूं, और अगर तू बख़्श दे तो इस लिये कि तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

यह दुआ ख़ुदा वन्दे आलम की नेअमतों के इक़रार और अपने गुनाहों के एतराफ़ के सिलसिले में है। इक़रारे नेअमत के माने यह हैं कि तमाम नेअमतों का सरचश्मा ज़ाते अहदियत को समझते हुए उन पर शुक्र अदा करे। और एतराफ़े गुनाह का मक़सद यह है कि अपने गुनाहों पर इज़हारे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

निदामत करते हुए तौबा करे। इस तरह नेअमतों के इक़रार से नेअमतों में इज़ाफ़ा होता है और गुनाहों के एतराफ़ से गुनाह धुल जाते हैं। चुनान्चे इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"ख़ुदा की क़सम! अल्लाह बन्दों से सिर्फ़ दो ख़सलतों का तलबगार है। एक यह कि उसकी नेअमतों का इक़रार करें। ताकि वह उनमें इज़ाफ़ा करे और दूसरे यह कि अपने गुनाहों का एतराफ़ करें ताकि वह उनके गुनाहों को माफ़ कर दे।"

ख़ुदा वन्दे आलम की नेअमतें इस क़द्र हैं कि उनका शुमार नामुम्किन है। जैसा कि कुरआन मजीद में है "अगर तुम उसकी नेअमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते" उसने अपनी रहमत व रूबूबियत के पेशे नज़र हर फ़र्द की ज़रूरत और उसकी बक़ा का सामान मोहय्या कर दिया है और ज़िन्दगी की बक़ा के लिये जिन चीज़ों की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है उसी क़द्र उन्हें फ़रावानी से पैदा किया है और उन तक रसाई के वसाएल आसान कर दिये हैं ताकि हर शख़्स अपनी ज़रूरत व हाजत के मुताबिक़ इनसे फ़ायदा हासिल करे। चुनान्चे हर जानदार की बक़ा के लिये सबसे ज़रूरी चीज़ हवा है। इस लिये ज़मीन का कोई क़ित्ता और मअमूरए आलम का कोई गोशा इससे ख़ाली नहीं है और इन्सान दुनिया के किसी हिस्से में हो उसे सांस लेने के लिये हवा के तलाश करने की ज़रूरत न पड़ेगी। हवा के बाद पानी की ज़रूरत सबसे ज़्यादा है इस लिये कुदरत ने ज़मीन के नीचे पानी का एक वाफ़िर ज़ख़ीरा जमा कर दिया है और ज़मीन की सतह पर दरिया और चश्मे रवां कर दिये हैं, और फिर वक़्तन् फ़वक़्तन् बादलों से मेंह बरसाने का सामान कर दिया है ताकि जहां ज़मीन खोद कर पानी न निकाला जा सके वहां दरियाओं और चश्मों से और जहां

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दरिया और चश्मे न हों वहां बादलों से सेराबी का सामान हो सके। पानी के बाद फिर गिज़ा की ज़रूरत सब से ज़्यादा है इस लिये उसने ज़मीन में कुव्वते नामिया दौड़ा कर रवैदगी का इन्तेज़ाम किया और हर मख़लूक़ की ज़रूरत व हाजत के मुताबिक़ उसके गिर्द नेअमतें फैला दी हैं। चुनान्चे इरशादे बारी है : "हमने ज़मीन में तुम्हारी ज़िन्दगी व मआ़ीशत का सामान मोहय्या कर दिया है।" और फिर इन्हें हासिल करने के तरीक़े बतला दिये हैं। इन नेअमतों का तक़ाज़ा तो यह था कि मुनइम के एहसानात व इनामात को याद रखा जाता और नेअमतों को मआसी में सर्फ़ करके कुफ़्राने नेअमत का इरतेकाब न किया जाता। मगर अक्सर अफ़राद इन नेअमतों को फ़रामोश कर देते हैं और बेखटके उसकी मअसियत करते रहते हैं हालांकि इन नेअमतों की हक़ अदायगी की एक ही सूरत थी कि उसके गुनाहों से बच कर रहा जाता, और यूं तो उसकी किसी नेअमत का भी हक़ अदा नहीं हो सकता और इसी अदाये हक़ में कोताही का एहसास ख़ासाने ख़ुदा को गुनाहों से महफ़ूज़ होने के बावजूद उसकी बारगाह में तक़सीर व कोताही के इक़रार पर आमादा करता है और वह उसकी बारगाह में गिड़गिड़ाते और तज़र्रा व ज़ारी के साथ तौबा व अस्तग़फ़ार में मसरूफ़ रहते हैं और अपनी कोताहियों का एतराफ़ करते हुए उससे अफ़वो व दरगुज़र की भीख मांगते हैं और अपने आमाल पर नाज़ां होने के बजाये एतराफ़े इज्ज़ व तक़सीर ही को सरमायए उबूदियत समझते हैं।

अल्लाह तआला से तलब व इल्हाह के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

"ऐ वह मअबूद जिससे कोई चीज़ पोशीदा नहीं है। चाहे ज़मीन में हो चाहे आसमान में, और ऐ मेरे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मअबूद वह चीज़ें जिन्हें तूने पैदा किया है वह तुझसे क्योंकर पोशीदा रह सकती हैं, और जिन चीज़ों को तूने बनाया है उन पर, किस तरह तेरा इल्म मुहीत न होगा। और जिन चीज़ों की तू तदबीर व कारसाज़ी करता है वह तेरी नज़रों से किस तरह ओझल रह सकती हैं, और जिसकी ज़िन्दगी तेरे रिज़्क़ से वाबस्ता हो वह तुझसे क्योंकर राहे गुरेज़ अख़्तियार कर सकता है या जिसे तेरे मुल्क के अलावा कहीं रास्ता न मिले वह किस तरह तुझसे आज़ाद हो सकता हैं! पाक है तू। जो तुझे ज़्यादा जानने वाला है वही सब मख़लूक़ात से ज़्यादा तुझसे डरने वाला है और जो तेरे सामने सराफ़गन्दा है वही सबसे ज़्यादा तेरे फ़रमान पर कारबन्द है। और तेरी नज़रों में सबसे ज़्यादा ज़लील व ख़्वार वह है जिसे तू रोज़ी देता है और वह तेरे अलावा दूसरे की परस्तिश करता है पाक है तू। जो तेरा शरीक ठहराये और तेरे रसूलों को झुटलाये वह तेरी सल्तनत में कमी नहीं??? कर सकता, और जो तेरे हुक्मे क़ज़ा व क़द्र को नापसन्द करे वह तो तेरे फ़रमान को पलटा नहीं सकता, और जो तेरी क़ुदरत का इन्कार करे वह तुझसे अपना बचाव नहीं कर सकता, और जो तेरे अलावा किसी और की इबादत करे वह तुझसे बच नहीं सकता, और जो तेरी मुलाक़ात को नागवार समझे वह दुनिया में ज़िन्दगी जावेद हासिल नहीं कर लेता। पाक है तू,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तेरी शान कितनी अज़ीम, तेरा इक़्तिदार कितना ग़ालिब, तेरी कूव्वत कितनी मज़बूत और तेरा फ़रमान कितना नाफ़िज़ है। तू पाक व मुनज़्ज़ा है तूने तमाम ख़ल्क़ के लिये मौत का फ़ैसला किया है। क्या कोई तुझे यकता जाने और क्या कोई तेरा इन्कार करे। सब ही मौत की तलख़ी चखने वाले और सब ही तेरी तरफ़ पलटने वाले हैं। तू बांबरकत और बुलन्द व बरतर है। कोई मअबूद नहीं मगर तू। तू एक अकेला है और तेरा कोई शरीक नहीं है। मैं तुझ पर ईमान लाया हूं, तेरे रसूलों की तस्दीक़ की है। तेरी किताब को माना है। तेरे अलावा हर मअबूद का इन्कार किया है और जो तेरे अलावा दूसरे की परस्तिश करे उससे बेज़ारी अख़्तियार की है। बारे इलाहा! मैं इस आलम में सुबह व शाम करता हूं कि अपने आमाल को कम तसव्वुर करता, अपने गुनाहों का एतराफ़ और अपनी ख़ताओं का इक़रार करता हूं। मैं अपने नफ़्स पर ज़ुल्म व ज़ियादती के बाएस ज़लील व ख़्वार हूं। मेरे किरदार ने मुझे हलाक और हवाए नफ़्स ने तबाह कर दिया है और ख़्वाहिशात ने (नेकी व सआदत से) बेबहरा कर दिया है। ऐ मेरे मालिक! मैं तुझसे ऐसे शख़्स की तरह सवाल करता हूं, जिसका नफ़्स तूलानी उम्मीदों के बाएस ग़ाफ़िल, जिस्म सेहत व तन आसानी की वजह से बेख़बर, दिल नेअमत की फ़रावानी के सबब ख़्वाहिशों पर वारफ़्ता और फ़िक्र अन्जामकार की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

निस्बत कम हो। मेरा सवाल उस शख़्स के मानिन्द है जिस पर आरज़ों ने ग़लबा पा लिया हो। जिसे ख़्वाहिशाते नफ़्स ने वरग़लाया हो। जिस पर दुनिया मुसल्लत हो चुकी हो और जिसके सर पर मौत ने साया डाल दिया हो। मेरा सवाल उस शख़्स के सवाल के मानिन्द है जो अपने गुनाहों को ज़्यादा समझता और अपनी ख़ताओं का एतराफ़ करता हो। मेरा सवाल उस शख़्स का सा सवाल है जिसका तेरे अलावा कोई परवर दिगार और तेरे सिवा कोई वली व सरपरस्त न हो और जिसका तुझसे कोई बचाने वाला और न उसके लिये तुझसे सिवा तेरी तरफ़ रूजूअ होने के कोई पनाहगाह हो। बारे इलाहा! मैं तेरे उस हक़ के वास्ते से जो तेरे मख़लूक़ात पर लाज़िम व वाजिब है और तेरे उस बुज़ुर्ग नाम के वास्ते से जिसके साथ तूने अपने रसूल[स०] को तस्बीह करने का हुक्म दिया और तेरी उस ज़ाते बुज़ुर्गवार की बुज़ुर्गी व जलालत के वसीले से कि जो न कोहना होती है न मुतग़य्यर, न तब्दील होती है न फ़ना। तुझसे यह सवाल करता हूं कि तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे अपनी इबादत के ज़रिये हर चीज़ से बेनयाज़ कर दे और अपने ख़ौफ़ की वजह से दुनिया से दिल बर्दाश्ता बना दे और अपनी रहमत से बख़्शिश व करामत की फ़रावानी के साथ मुझे वापस कर इस लिये कि मैं तेरी ही तरफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गुरेज़ां और तुझ ही से डरता हूं और तुझ ही से फ़रयाद रसी चाहता हूं और तुझ ही से उम्मीद रखता हूं और तुझे ही पुकारता हूं और तुझ ही से पनाह चाहता हूं और तुझ ही पर भरोसा करता हूं और तुझ ही से मदद चाहता हूं और तुझ ही पर ईमान लाया हूं और तुझ ही पर तवक्कुल रखता हूं और तेरे ही जूद व करम पर एतमाद करता हूं।

यह दुआ अल्लाह तआला से तलब व इलहाह के सिलसिले में है। इलहाह के माने तलब व सवाल में इसरार और मुसलसल व पैहम मांगने के हैं। अगर यह इलहाह अल्लाह तआला से हो तो ममदूह और क़ाबिले सताइश है। और बन्दों से हो तो निहायत मज़मूम है। अव्वल तो सवाल ही बुरी चीज है चे जायेकि उसमें इलहाह का भी पहलू हो। यह दनाएते नफ़्स और पस्तीए ज़मीर की अलामत है। इससे इन्सान की इज़्ज़त दाग़दार और हम्मीयत व ग़ैरत पामाल हो जाती है। इस लिये अल्लाह सुबहानहू उसे नापसन्दीदा नज़रों से देखता है और यह गवारा नहीं करता कि उसके बंदे अपने ऐसों के आगे हाथ फैलायें। और उनके सामने गिड़गिड़ायें। बल्कि वह यह चाहता है कि उसके बंदे मांगे तो उसी से मांगे और इलहाह व आजिज़ी का हाथ फैलायें तो उसी के आगे फैलायें चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है:—

"ख़ुदा वन्दे आलम आपस में एक दूसरे से तलब व सवाल में इलहाह व इसरार को नापसन्द करता है और अपने लिये उसे दोस्त रखता है। ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर यह चाहता है कि उससे सवाल किया जाये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और उसके हां की चीज़ों को तलब किया जाये।"

बन्दा जब अपने मअबूद के दर पर दस्तक देता उसे पुकारता और इज्ज़ व इलहाह से सवाल करता है तो यह इसकी दलील है कि उसका एहसासे उबूदियत ज़िन्दा है और अल्लाह तआला से हुस्ने ज़न बरक़रार रखे हुए है और शेवए उबूदियत यही है कि वह पैहम उसके सामने हाथ फैलाये और अपनी हाजतें उसके सामने पेश करे, और किसी हालत में मायूस न हो ख़्वाह कुबूलियते दुआ में कितनी देर हो जाये, क्योंकि उम्मीद व रिजा के जिलो में उससे बार बार तलब करना खुद एक इबादत और पसन्दीदा अमल है। जिससे ग़फ़लत करना अल्लाह तआला की एक नेअमत से महरूम होना है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :-

"ख़ुदा उस बन्दे पर रहम करे जो ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर से कोई हाजत तलब करता है तो बार बार दुआ करता है चाहे उसकी दुआ कुबूल हो या न हो।"

दुआ का अस्ल मक़सद ही यह है कि उसके पर्दे में अल्लाह तआला से लौ लगी रहे, और बआज़ चीज़ों को दुआ से वाबस्ता करने की वजह यही है कि इन्सान उनके हुसूल के लिये दुआ व इलहाह करता रहे और गिड़गिड़ाने और लिपटने से उसके ख़ज़ाने पर तो कोई असर पड़ता नहीं कि उसे नागवार गुज़रे और न दाद व दहश से उसके हां कमी होती है कि किसी के बार बार मांगने से वह रंजीदा व कबीदा ख़ातिर हो। क्योंकि कमी बेशी का सवाल वहां होता है जहां सरमाया महदूद हो, और जिसके मक़दूरात की कोई हद व निहाएत ही न हो उसके लिये कमी बेशी के माने ही क्या, और फिर यह कि कमी बेशी एहतियाज की अलामत है और वह ग़नी-ए-मुतलक़ है जिसके हां न अता करने से कमी और न रोक लेने से इज़ाफ़ा होता है।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अल्लाह तआला के हुज़ूर तज़ल्लुल व आजिज़ी के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

"ऐ मेरे परवर दिगार! मेरे गुनाहों ने मुझे (उज़्र ख़्वाही से) चुप कर दिया है; मेरी गुफ़्तगू भी दम तोड़ चुकी है। तो अब मैं कोई उज़्र व हुज्जत नहीं रखता। इस तरह मैं अपने रंज व मुसीबत में गिरफ़्तार अपने आमाल के हाथों में गिरवी अपने गुनाहों में हैरान व परेशान मक़सद से सरगरदान और मंज़िल से दूर उफ़तादा हूं। मैंने अपने को ज़लील गुनाहगारों के मौक़फ़ पर ला खड़ा किया है। उन बदबख़्तों के मौक़फ़ पर जो तेरे मुक़ाबले में जुरअत दिखाने वाले और तेरे वादे को सरसरी समझने वाले हैं। पाक है तेरी ज़ात, मैंने किस जुरअत व दिलेरी के साथ तेरे मुक़ाबले में जुरअत की है, और किस तबाही व बर्बादी के साथ अपनी हलाकत का सामान किया है। ऐ मेरे मालिक! मेरे मुंह के बल गिरने और क़दमों के ठोकर खाने पर रहम फ़रमा और अपने हिल्म से मेरी जेहालत व नादानी को और अपने एहसान से मेरी ख़ता व बद्आमाली को बख़्श दे इस लिये कि मैं अपने गुनाहों का मक़र और अपनी ख़ताओं का मोअतरिफ़ हूं यह मेरा हाथ और यह मेरी पेशानी के बाल (तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में) हैं मैंने इज्ज़ व सराफ़गन्दगी के साथ अपने को क़सास के लिये पेश कर दिया है। बारे इलाहा! मेरे बुढ़ापे, ज़िन्दगी के दिनों के बीत जाने,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मौत के सर पर मण्डलाने और मेरी नातवानी, आजिज़ी और बेचारगी पर रहम फ़रमा। ऐ मेरे मालिक जब दुनिया से मेरा नाम व निशान मिट जाये और लोगों (के दिलों) से मेरी याद महो हो जाये और उन लोगों की तरह जिन्हें भुला दिया जाता है मैं भी भुला दिये जाने वालों में से हो जाऊँ तो मुझ पर रहम फ़रमाना। ऐ मेरे मालिक! मेरी सूरत व हालत के बदल जाने के वक़्त जब मेरा जिस्म कोहना, आज़ा दरहम व बरहम और जोड़ व बन्द अलग अलग हो जायें तो मुझ पर तरस खाना। हाय मेरी ग़फ़लत व बेख़बरी उससे जो अब मेरे लिये चाहा जा रहा है। ऐ मेरे मौला! हश्र व नश्र के हंगाम मुझ पर रहम करना और उस दिन मेरा क़याम अपने दोस्तों के साथ और (मौक़फ़े हिसाब से महले जज़ा की तरफ़) मेरी वापसी अपने दोस्तदारों के हमराह और मेरी मंज़िल अपनी हमसाएगी में क़रार देना। ऐ तमाम जहानों के परवर दिगार।

यह दुआ अल्लाह तआला के हुज़ूरे तज़ल्लुल व फ़रोतनी के सिलसिले में है। तज़ल्लुल के माने इज़हारे इज्ज़ो व बेचारगी और इन्तेहाए तज़र्रुअ व ख़ुज़ूअ के हैं। यह तज़ल्लुल व फ़रोतनी इबादत व उबूदियत की अस्ल रूह व हक़ीक़त है और इबादत का अस्ल मक़सद भी यही है कि इन्सान में किबरो निख़वत और ग़ुरूर व ख़ुदपसन्दी के बजाये इज्ज़ो फ़रोतनी और बन्दगी व नियाज़मन्दी की रूह नशो नुमा पाये। चुनान्चे नमाज़ में क़याम व क़ोऊद, रूकूअ व सुजूद सब इसी तज़ल्लुल के मुज़ाहिरे हैं। और हज के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मौके पर दो सीधे सादे कपड़े लपेट कर कभी तवाफ़ और कभी सरबरेहना चिलचिलाती धूप में सऔी इज्ज़ो तज़ल्लुल ही का मुज़ाहिरा है, और रोज़े से भी यही मक़सद है कि एक महदूद अर्से तक ख़्वाहिशात पर क़ाबू और ज़ब्ते नफ़्स के ज़रिये तुग़यानी व सरकशी के जज़बात को दबा दिया जाये। और ज़कात से भी यही मक़सद है कि एक तरफ़ सर्फ़े माल की सूरत पैदा करके सरमाया अन्दोज़ी से रोका जाये क्योंकि माल व दौलत की फ़रावानी इन्सान को फ़िरऔन सिफ़त बना दिया करती है और दूसरी तरफ़ फ़ुक़रा व मसाकीन की मआशी हालत को बुलन्द करके ज़ेहनियतों को एक मुतवाज़िन सतह पर लाया जाये ताकि दौलत की वजह से पैदा होने वाली नख़वत और दूसरों के मुक़ाबिले में माली लिहाज़ से एहसासे बरतरी का इन्सदाद हो जाये।

इस तज़ल्लुल का तअल्लुक़ कभी दिल से होता है कभी आज़ा से और कभी ज़बान से। दिल से तज़ल्लुल यह है कि बन्दा अपने दिल व दिमाग़ को ग़ुरूर व तमकिनत के जज़बात से ख़ाली कर दे और वाक़िअन् अपने को हक़ीर व पस्त मर्तबा तसव्वुर करे। और आज़ा से यह है कि सरे नियाज़ ख़म करे ख़ाक पर रूख़सार रखे ज़मीन पर लेटे बैठे और अपने किसी अमल से तफ़व्वुक़ व बरतरी का इज़हार न होने दे, और ज़बान से यह है कि अल्लाह तआला के सामने गिड़गिड़ाये, तज़र्रुअ व ज़ारी करे, गुनाहों का एक़रार और तौबा व अस्तग़फ़ार और दुआ व मुनाजात करे। हज़रत[अ०] की यह दुआ तज़ल्लुल की इसी क़िस्म से तअल्लुक़ रखती है, और चूंकि इस दुआ का बुनियादी मौज़ूअ तज़ल्लुल व तवाज़े है इस लिये हज़रत[अ०] ने आम अफ़रादे इन्सानी के एक फ़र्द की हैसियत से अपने को पेश किया है, और उन्हीं चीज़ों को बयान किया है जो आम अफ़राद से मुतअल्लिक़ हैं। चुनान्चे इस दुआ में हज़रत[अ०] का यह इरशाद कि "जब मेरा कोहना, आज़ा दरहम व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बरहम और जोड़ बन्द अलग अलग हो जायें" एक उमूमी हालत का बयान है। जिसमें मुस्तशनियात हो सकते हैं। चुनान्चे अइम्मा अहलेबैत[अ०] के मुतअल्लिक़ वारिद हुआ है कि बाद मर्ग उनके अजसादे मुक़द्दिसा कोहना व बोसीदा नहीं होते। जैसा कि पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

"हममें से जो मर जाता है वह मुर्दा नहीं है और हममें से (जो बज़ाहिर मरकर) बोसीदा हो जाता है वह हक़ीक़त में बोसीदा नहीं होता।"

ग़म व इन्दोह से निजात हासिल करने के लिये हज़रत[अ०] की दुआ

"ऐ रंज व इन्दोह के बरतरफ़ करने वाले और ग़म व अलम के दूर करने वाले। ऐ दुनिया व आख़रत में रहम करने वाले और दोनों जहानों में मेहरबानी फ़रमाने वाले तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी बेचैनी को दूर और मेरे ग़म को बरतरफ़ कर दे। ऐ अकेले ऐ यकता! ऐ बेनयाज़!! ऐ वह जिसकी कोई औलाद नहीं और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई हमसर है मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और मुझे (गुनाहों से) पाक रख और मेरे रंज व अलम को दूर कर दे (इस मक़ाम पर आयतल कुर्सी, कुल आऊज़ो बेरब्बिन नास, कुल आऊज़ो बेरब्बिल फ़लक़ और कुल हो अल्लाहो अहद,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पढ़ो और यह कहो) बारे इलाहा! मैं तुझसे सवाल करता हूं, उस शख़्स का सा सवाल जिसकी एहतियाज शदीद, कुव्वत व तवानाई ज़ईफ़ और गुनाह फ़रावां हों। उस शख़्स का सा सवाल जिसे अपनी हाजत के मौक़े पर कोई फ़रियाद रस, जिसे अपनी कमज़ोरी के आलम में कोई पुश्त पनाह और जिसे तेरे अलावा --- ऐ जलालत व बुज़ुर्गी वाले!--- कोई गुनाहों का बख़्शने वाला दस्तयाब न हो। बारे इलाहा! मैं तुझसे इस अमल (की तौफ़ीक़) का सवाल करता हूं कि जो उस पर अमल पैरा हो तू उसे दोस्त रखे और ऐसे यक़ीन का कि जो इसके ज़रिये तेरे फ़रमाने क़ज़ा पर पूरी तरह मुतयक़्क़िन हो तो उसके बाएस तू उसे फ़ायदा व मनफ़अत पहुंचाये। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे हक़ व सदाक़त पर मौत दे और दुनिया से मेरी हाजत व ज़रूरत का सिलसिला ख़त्म कर दे और अपनी मुलाक़ात के जज़्बए इश्तियाक़ की बिना पर अपने हां की चीज़ों की तरफ़ मेरी ख़्वाहिश व रग़बत क़रार दे और मुझे अपनी ज़ात पर सही एतमाद व तवक्कल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। मैं तुझसे साबेक़ा सर नविशत-ए-तक़दीर की बुराई से पनाह मांगता हूं। मैं तेरे इबादत गुज़ार बन्दों के ख़ौफ़, इज्ज़ व फ़रोतनी करने वालों की इबादत, तवक्कल करने वालों के यक़ीन और ईमानदारों के एतमाद व तवक्कल का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तुझसे ख़्वास्तगार हूं। बारे इलाहा! तलब व सवाल में मेरी ख़्वाहिश व रग़बत को ऐसा ही क़रार दे जैसी तलब व सवाल में तेरे दोस्तों की तमन्ना व ख़्वाहिश होती है और मेरे ख़ौफ़ को भी अपने दोस्तों के ख़ौफ़ के मानिन्द क़रार दे और मुझे अपनी रज़ा व ख़ुशनूदी में इस तरह बरसरे अमल रख कि मैं तेरे मख़लूक़ात में से किसी एक के ख़ौफ़ से तेरे दीन की किसी बात को तर्क न करूं। ऐ अल्लाह! यह मेरी हाजत है इसमें मेरी तवज्जोह व रग़बत को अज़ीम कर दे। मेरे उज़्र को आशकारा कर और इसके बारे में मुझे दलील व हुज्जत की तालीम कर और इसमें मेरे जिस्म को सेहत व सलामती बख़्श। ऐ अल्लाह! जिसे भी तेरे सिवा दूसरे पर भरोसा या उम्मीद हो तो मैं इस आलम में सुबह करता हूं कि तमाम उमूर में तू ही एतमाद व उम्मीद का मरकज़ होता है। लेहाज़ा जो उमूर ब–लेहाज़ अन्जाम बेहतर हों वह मेरे लिये नाफ़िज़ फ़रमा और मुझे अपनी रहमत के वसीले से गुमराह करने वाले फ़ितनो से छुटकारा दे। ऐ तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले, और अल्लाह रहमत नाज़िल करे हमारे सैय्यदो सरदार फ़रस्तादए ख़ुदा मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम पर और उनकी पाक व पाकीज़ा आल अलैहिस्सलाम पर।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

यह दुआ हम्मोग़म और रंज व कर्ब से छुटकारा हासिल करने के लिर है। दुनिया में हर हस्सास आदमी के लिये ऐसे असबाब पैदा होते रहते ह जो दिल व दिमाग़ को परागन्दा और ख़यालात को पाशान व परेशान किर रहते हैं और किसी तरह इन्सान इन हुमूम व इफ़कार से बच कर नहीं रह सकता और उसे ज़िन्दगी के किसी न किसी मोड़ पर हवादिस से दो चार होना ही पड़ता है, और अगर इन हवादिस व आलाम का ज़माना तूलानी हो जाये तो फिर इस तरह यास व कुनूतियत उस पर छा जाती है कि उसके हवास को मोअत्तल करके उसे तारीकियों में ठोकरें खाने के लिये छोड़ देती है और नतीजतन न किसी काम में उसका जी लगता है और न दिल जमई से किसी काम को सर अन्जाम दे सकता है। हर वक़्त दिल उचाट, तबीअत परेशान और हवास परागन्दा से रहते हैं। न कसबे मआश में जी लगता है और न इबादत व एताअत पर दिल आमादा होता है। इस लिये ग़म व इन्दोह की ख़लिश और फ़िक्र व अन्देशे की खटक का अज़ाला ज़रूरी, और उसका तदारूक लाज़मी है ताकि इन्सान उलझनों से छुटकारा पा कर दुनिया व ओक़बा का एहतेमाम व इन्सराम कर सके। हम्म और ग़म में फ़र्क़ यह है कि जो फ़िक्र व अन्देशा मुसीबत के नाज़िल होने से पहले हो वह हम्म है और जो मुसीबत के नाज़िल होने के बाद हो वह ग़म है। और बाज़ के नज़दीक जिस अन्दोह व क़लक़ का चारा हो सकता हो वह हम्म है। जैसे फ़क्रो इफ़लास, तंगी व उसरत, और जिसके तदारूक पर इन्सान क़ादिर न हो वह ग़म है जैसे किसी अज़ीज़ की मौत। उसका इलाज यह है कि जो उमूर क़ाबिले तदारूक हैं अल्लाह पर भरोसा रखते हुए उनका तदारूक करे। इस तरह कि फ़क्रो एहतियाज को दूर करने के लिये जो ज़रिया वह अख़्तियार कर सकता है उसे अख़्तियार करे और अगर उसमें काम्याबी हासिल न कर सके तो सब्र व शुक्र का सरिश्ता हाथ से न दे। और यह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़याल करे कि फ़िक्र व अन्देशे से हालत बदल नहीं सकती। लेहाज़ा जिस हालत में हो हालात के साज़गार होने की तवक़्क़ो रखे। और अगर उस रंज व इन्दोह का इलाज उसके हाथ में नहीं है तो उस पर ग़म करना भी बेनतीजा होगा। मसलन् किसी अज़ीज़ के मरने का सदमा है तो यह सोचे कि मरने वाले ने एक न एक दिन बहरहाल जुदा होना था, और अगर वह जुदा न होता तो यह मर कर उससे जुदा होता। तो जिससे जुदा होना तय हो उसकी जुदाई पर इतना सदमा क्यों? कि सब्र व शकीब के अज्र को खो दिया जाये और सब्र व तहम्मुल के सवाब से महरूम रहा जाये जो इस सल्ब होने वाली नेअमत से कहीं गरां क़द्र व गरां क़ीमत है। इस तरह नफ़्स में कुव्वत और दिल में एक इत्मिनानी कैफ़ियत पैदा होगी जो उसके लिये तसल्ली व तस्कीन का सामान फ़राहम करेगी। और उसके साथ अल्लाह तआला की बारगाह में दस्त ब–दुआ भी रहे कि वह ग़मों के बादलों को छांटे और रंज व अन्दोह की अंधयारियों को बरतरफ़ करे और ग़मे दुनिया को भुला कर ग़मे आख़रत की याद ताज़ा रखने की तौफ़ीक़ दे। चुनान्चे यह दुआ हमें यही तालीम देती है, कि इन्सान दुनिया के इफ़कार व हमूम से बचने की तो कोशिश करे और उनसे महफ़ूज़ रहने के लिये अल्लाह तआला से इल्तेजा करे मगर अपने दिल को फ़िक्रे आख़रत से ग़ाफ़िल और अन्देशए फ़र्दा से ख़ाली न होने दे, और यही फ़िक्र व अन्देशा वह है जो हयाते दीनी का तक़ाज़ा और उबूदियत का लाज़मा है और इसके होते हुए दुनिया के अफ़कार व हमूम ख़ुद ही छट जाते हैं और दिल जमई व यकसूई हासिल हो जाती है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :—

"जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी के सुबह व शाम इस तरह बसर करे कि उसे सबसे बड़ी फ़िक्र दुनिया ही की हो तो अल्लाह तआला उसे फ़क्रो फ़ाक़ा ही दिखाता है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और उसके मा़मलात को परागन्दा कर देता है और दुनिया से उसे वही हासिल होता है जो उसके मक़सूम में होता है, और जो ज़िन्दगी के सुबह व शाम इस तरह गुज़ारता है कि उसे सबसे बड़ी फ़िक्र उक़बा की होती तो अल्लाह तआला उसके दिल में ग़ना व बेनयाज़ी भर देता है और उसके उमूर को मुनज़्ज़म फ़रमाता है।"

यह वह दुआयें हैं जो सहीफ़-ए-कामला के बाज़ नुस्ख़ों में दर्ज की गयी हैं। मिन्जुमला उनके हज़रत^अ० की एक दुआ यह है जो तस्बीह व तक़्दीस के सिलसिले में है

"ऐ मेरे मअबूद! मैं तेरी तस्बीह करता हूं तू मुझ पर करम बालाए करम फ़रमा। बारे इलाहा! मैं तेरी तस्बीह करता हूं और तू बुलन्द व बरतर है। ख़ुदाया! मैं तेरी तस्बीह करता हूं और इज़्ज़त तेरा ही जामा है। बारे इलाहा! मैं तेरी तस्बीह करता हूं और अज़मत तेरी ही रिदा है। ऐ परवर दिगार! मैं तेरी तस्बीह करता हूं और किबरियाई तेरी दलील व हुज्जत है। पाक है तू ऐ अज़ीम व बरतर तू कितना अज़मत वाला है। पाक है तू ऐ वह कि मलाए आला के रहने वालों में तेरी तस्बीह की गयी है। जो कुछ तहे ख़ाक है तू उसे सुनता और देखता है। पाक है तेरी जात तू हर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

राज़दाराना गुफ़्तगू पर मुतलअ है। पाक है तू ऐ वह जो हर रंज व शिकवे के पेश करने की जगह है। पाक है तू ऐ वह जो हर इज्तेमाअ में मौजूद है। पाक है तू ऐ वह जिससे बड़ी से बड़ी उम्मीदें बांधी जाती हैं। पाक है तू जो कुछ पानी की गहराई में है उसे तू देखता है। पाक है तेरी ज़ात तू समन्दरों की गहराईयों में मछलियों के सांस लेने की आवाज़ सुनता है। पाक है तेरी ज़ात तू आसमानों का वज़न जानता है। पाक है तेरी ज़ात तू ज़मीनों के वज़न से बाख़बर है। पाक है तेरी ज़ात तू सूरज और चांद के वज़न से वाक़िफ़ है। पाक है तेरी ज़ात तू तारीकी और रौशनी के वज़न से आगाह है पाक है तेरी ज़ात तू साया और हवा का वज़न जानता है। पाक है तेरी ज़ात तू हवा के (हर झोंके के) वज़न से आगाह है कि वह वज़न में कितने ज़र्रों के बराबर है। पाक है तेरी ज़ात तू (तसव्वुर व ख़याल व वहम में आने से) पाक, मुनज़्ज़ा और बरी है मैं तेरी तस्बीह करता हूं। तअज्जुब है कि जिसने तुझे पहचाना वह क्योंकर तुझसे ख़ौफ़ नहीं खाता। ऐ अल्लाह! मैं हम्दो सना के साथ तेरी पाकीज़गी बयान करता हूं। पाक है वह परवर दिगार जो उलूम व अज़मत वाला है।

यह दुआ अल्लाह तआला की तहमीद व तस्बीह के सिलसिले में है जिसमें अल्लाह तआला की अज़मत व रिफ़अत, उलू व इजलाल और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तंज़िया व तक़दीस के पहलू बा पहलू उसके इल्म की वुसअत का ऐसे सीधे सादे और दिल नशीन अन्दाज़ से तज़किरः किया है कि दिल व दिमाग़ पर उसकी इल्मी वुसअत व हम्मागीरी का नक़्श सब्त हो जाता है और इस इल्मी वुसअत को ज़ेहनों में रासिख़ करने के लिये उन चीज़ों का बयान फ़रमाया है जो आम इल्म व मुशाहिदे और हिस व इदराक के दायरे से बाहर हैं। जैसे नूर, ज़ुलमत, साया और हवा का वज़न, समन्दर की गहराईयों में मछलियों के सांस लेने की आवाज़, ज़मीन के अन्दर की मग़फ़ी कायनात और पानी की तह दर तह चादरों के नीचे छुपे हुए अजाएबात। मक़सद यह है कि जब वह ज़मीन की अन्दरूनी तहों और समन्दर के अन्दर की चीज़ों को देखता, मछलियों के सांस लेने की आवाज़ सुनता और नूर व हवा ऐसे लतीफ़ इजसाम के वज़न व मिक़दार को जानता है तो फिर इनसे ज़्यादा हवास व मशाएर से मग़फ़ी रहने वाली चीज़ें क्या होंगी जिनके मुतअल्लिक़ यह ख़याल किया जाये कि वह उसकी निगाह से ओझल रह सकती हैं। ज़ाहिर है कि जो ज़मीन के अन्दर और समन्दर की अथाह गहराई से वाक़िफ़ है वह उसकी सतह से भी ज़रूर आगाह होगा, और जो समन्दर की तह में मछलियों के सांस लेने की आवाज़ सुनता है वह घोंसलों में परिन्दों के चहचहे, खोओं में हैवानों की आवाजें और ज़मीन पर इन्सानों की सदायें भी सुनता होगा। और जो अन्धेरे और उजाले और साया व हवा का वज़न जानता है वह दूसरी चीज़ों के वज़न व मिक़दार से भी पूरी तरह बाख़बर होगा। चुनान्चे इरशादे इलाही है:–

> "ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ (वह ज़मीन व आसमान के अन्दर हो या उनका जुज़ हो) अल्लाह तआला से पोशीदा नहीं है।"

हज़रत[अ0] की दुआ के उस हिस्से पर जो इल्मे इलाही से मुतअल्लिक़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है नज़र करने के बाद कम अज़ कम इतना तो एतराफ़ करना ही पड़ेगा कि इन्सान ने तहक़ीक़ व जुस्तुजू के बाद जिन राज़हाये सरबस्ता का सुराग़ लगाया है सदियों पहले उन रमूज़ व असरार की नक़ाब कुशाई की उसे दावत दी जा चुकी थी। और यह उसकी तसाहुल पसन्दी का कुसूर है कि वह इतने अर्से तक तहक़ीक़ व तजस्सुस के मैदान में गामज़न न हुआ और इस दावते फ़िक्र व अमल के बावजूद सदहा बरस चुप साधे रहा और अलल खुसूस वह अफ़राद ज़्यादा मौरिदे इल्ज़ाम हैं, जिनके पास यह सरमाये इल्मी मौजूद था और वह इससे बेख़बर है और अमलन कोई फ़ायदा न उठाया। वरना जो हक़ाएक़ आज सामने आ रहे हैं वह सदियों पहले बेनक़ाब हो चुके होते। चुनान्चे अइम्मा अहलेबैत अलैहिस्सलाम ने तेरह सौ बरस पेशतर ज़मीन व आसमान, शम्स व क़मर, नूर व ज़ुलमत और साया व हवा के वज़न और ज़मीन के अन्दरूनी तहों, समन्दर की गहराईयों और वहां की आबाद कायनात का ज़िक्र करके ख़लाए बसीत और कुर्राते अर्ज़ी व समावी में फ़िक्र व तजस्सुस की राह खोल दी थी ताकि इन्सान ज़मीन के वर्क़ उलटे, समन्दर की मौजों से खेले और फ़ितरत की बू क़लमूनियों से दामने नज़र भरे और रौशनी व हवा और अजरामे फ़लकिया का वज़न मअलूम करने के लिये फ़िज़ा को तसख़ीर करे। ज़र्रों को चीरे और उनमें एक जवाने नव सा का तमाशा देखे और कुदरत की क़लमरो व ममलिकत की वुसअत व फैलाव का अन्दाज़ा लगाये कि यह आलमी फ़िज़ा कितनी बड़ी कायनात को अपनी आग़ोश में लिये हुए है कि हर ज़र्रा अपने मक़ाम पर एक दुनिया है जिसमें आफ़ताब व माहताब, सितारे, सय्यारे हमारे इस निज़ामे शम्सी की तरह घूम फिर रहे हैं।

हज़रत[अ०] ने पहले ज़मीन के अन्दरूनी हिस्से का ज़िक्र किया है। जमीन का अन्दरूनी हिस्सा भी उसके बालाई हिस्से की तरह मुख़्तलिफ़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और मुतनव्वे चीज़ों से आरास्ता है और माहेरीने तबक़ातुल अर्ज़ ने सत्हे अर्ज़ से हज़ारों फ़िट की गहराईयों और पुरअसरार ग़ारों में उतर कर ज़मीन की तहों पर क़ुदरत के कन्दा किये हुए नुक़ूश पढ़े तो उन्हें ज़मीन के बालाई ख़ुतूत से कम मुतनव्वे और कम दिलफ़रेब नहीं पाया। चुनान्चे जिस तरह उसकी बालाई सतहों पर कहीं रेगज़ार हैं और कहीं सरबलन्द पहाड़, कहीं दरिया हैं और कहीं सब्ज़ाज़ार, किसी हिस्से पर चिलचिलाती गर्मी पड़ रही है और किसी हिस्से पर कड़कड़ाती सर्दी। कहीं मेंह के झाले बरस रहे हैं और कहीं लू के झोंके मचल रहे हैं। इसी तरह इसकी अन्दरूनी तहों में भी कहीं बहते हुए दरिया हैं और कहीं रिस्ते हुए चश्मे। कहीं सोने और चांदी के ज़र्रात बिखरे हुए हैं और कहीं हीरा व ज़मर्रूद ऐसे मअदनयात नशवो नुमा पा रहे हैं। कहीं कोहर है और कहीं ख़ुशनुमा धनक। कहीं सर्दी है और कहीं गर्मी। कहीं दरियाए सारगीज़ और हडयांर्क बह रहे हैं और कहीं आतशीं झीलें और दूसरे सय्याल अनासिर रवां दवां हैं। इन सय्याल अनासिर में ज़मीन का वह आतशीन माद्दा भी है कि जो उसके रग व रेशे में तेज़ी से दौड़ता है तो ज़मीन ज़लज़लों की लपेट में आ जाती है और कभी यह खौलता हुआ माद्दा ज़मीन को चीरता और चट्टानों को तोड़ता हुआ लावा की सूरत में उबल पड़ता है। इससे ज़मीन की अन्दरूनी हरारत व तपिश का भी अन्दाज़ा किया जा सकता है। अगरचे इसके ऊपर की तहें सर्द हैं मगर ज्यों ज्यों इसके अन्दर उतरा जाये उसकी हरारत बढ़ती जाती है और 7200 फुट की गहराई में पानी खौलने लगता है। बल्कि इतनी गहराई में पहुंच कर भाप के ज़ोर से ज़मीन की सतह को चीर देता और गर्म चश्मे की सूरत में उबलने लगता है। और जुनूबी अफ़्रीक़ा में बाज़ कानें 7640 फ़िट तक गहरी खोदी जा चुकी हैं। जहां गर्मी का यह आलम है कि इससे बचाव के ख़ुसूसी इन्तेज़ामात के बग़ैर वहां ठहरा नहीं जा सकता। और उसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मरकज़ में तो पिघले हुए लोहे की भी भट्टी शोला फ़िगन हे जिसका दर्जए हरारत तक़रीबन सत्हे आफ़ताब के दर्जए हरारत के बराबर है। फिर समन्दर और उसके अन्दर की दुनिया का ज़िक्र फ़रमाया है जिसका दर्जए हरारत तक़रीबन सत्हे आफ़ताब के दर्जए हरारत के बराबर है। इससे यह मालूम होता है कि हज़रत[अ०] समन्दर की तह में भयानक ख़ामोशी का नज़रिया न रखते थे और न उन तवहहुमात में मुब्तिला थे जो उस दौर में अवाम के ज़ेहनों पर छाये हुए थे और अक़ायद की सूरत में तबाए इन्सानी पर मुसल्लत थे। बल्कि वहां के मुतअल्लिक़ एक जीती जागती पुररौनक़ व आबाद दुनिया का तसव्वुर रखते थे। चुनान्चे अब वहां की थोड़ी बहुत दुनिया मुशाहिदे में आ चुकी है और तक़रीबन् आठ मील तक उसकी गहराईयों में उतरा और वहां के अजाएब व नवादिर को देखा जा चुका है। बल्कि वहां की मुख़्तलिफ़ चीज़ों और जानवरों को हासिल भी किया जा चुका है। और मुतअद्दिद हैवानों और क़िस्म क़िस्म की मछलियों की आवाज़ें कि जिनकी वजह से समन्दर की तह में सुकूत व ख़ामोशी के बजाये हर वक़्त शोर व हंगामा बरपा रहता है रिकार्ड की जा चुकी हैं। फिर पानी के अन्दर मछलियों के सांस लेने का ज़िक्र फ़रमाया है। यह भी उस ज़माने के लिहाज़ से हैरत अंगेज़ चीज़ है कि पानी की गहराईयों में क्योंकर सांस ली जा सकती है। जबकि उसमें हवा का गुज़र ही नहीं हो सकता। मगर असरी तहक़ीक़ात ने बताया है कि पानी के अन्दर हल शुदा हवा मौजूद होती है और मछलियों के आलाते तनफ़्फ़ुस इस क़िस्म के होते हैं कि वह पानी के अन्दर सिर्फ़ उसी हल शुदा हवा में अमले तनफ़्फ़ुस जारी रख सकती हैं। और पानी से बाहर निकल आयें तो सांस नहीं ले सकतीं। इसके बरअक्स इन्सान सिर्फ़ पानी से बाहर रह कर ही सांस ले सकता है और पानी के अन्दर उसकी सांस बन्द हो जाती है। इसी लिये समन्दर की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गहराईयों में उतरने वालों को आलात के ज़रिये बाहर से आक्सीजन बहम पहुंचाई जाती है। मछलियां क्योंकि हमेशा पानी में रहती हैं इस लिये कुदरत ने उनके सांस लेने का इन्तेज़ाम भी पानी के अन्दर कर दिया है। इस तरह कि जब पानी उनके मुंह में जाता है तो गलफड़ों के अन्दर फैले हुए रेशे आक्सीजन को जज़्ब कर लेते हैं और पानी गलफड़ों के रास्ते बारह निकल जाता है। और जिन मछलियों के गलफड़े नहीं होते उन्हें सांस लेने के लिये समन्दर की सतह पर उभरना पड़ता है। यह दरहक़ीक़त मछलियां होती ही नहीं हैं। क्योंकि मछली वही है जो पानी के अन्दर रह कर सांस ले। चुनान्चे व्हेल मछली अगर चे मछली कहलाती है मगर वह मछली नहीं है और न उसमें मछली के ख़्वास पाये जाते हैं। वह अण्डों के बजाये बच्चे देती, बच्चों को दूध पिलाती और सांस लेने के लिये सतह समन्दर पर उभरती है। फिर मुख़्तलिफ़ चीज़ों के वज़न का ज़िक्र फ़रमाया है। वज़न से मुराद वह कुव्वत है, जो कशिश सक़्ल की वजहसे किसी चीज़ में पैदा होती है और मरकज़ से कुर्ब व बाद के लिहाज़ से कम व बेश होती रहती है। चुनान्चे पहले आसमान व ज़मीन के वज़न का ज़िक्र किया है। आसमान क्या है? है भी या नहीं? यह अपने मक़ाम पर तय होता रहेगा। हम तो बस इतना जानते हैं कि हमारी निगाह "हद्दे नज़र" से आगे नहीं बढ़ सकती। लेहाज़ा हद्दे नज़र से आगे के लिये हम यह नहीं कह सकते कि कुछ नहीं है। रही ज़मीन तो वह हमारा ओढ़ना बिछोना है जिसके मुतअल्लिक़ साइंसदान यह कहते हैं कि वह अब से दो अरब साल पहले सूरज की कोख से पैदा हुई और मुख़्तलिफ़ अदवार व हालात से गुज़रने के बाद इस क़ाबिल हुई कि इस पर कोई ज़ी रूह रह सके। इसके वज़न का अन्दाज़ा 59,760 संख मीट्रिक टन है जो तक़रीबन 15,97500 संख मन के मसावी होते हैं। मगर इसमें 50 संख टन की कमी बेशी का एहतेमाल पैदा कर दिया गया

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है जिसके माने यह हैं कि अभी ज़मीन का सही सही वज़न मालूम नहीं हो सका। और पैमाइश के लिहाज़ से इसका क़तर 7918 मील और मुहीत 24,899 मील है और इस अजम के साथ 66,600 मील फ़ी घण्टा की रफ़्तार से सूरज के गिर्द सर्गर्म है। फिर चांद और सूरज के वज़न का ज़िक्र फ़रमाया है जिससे यह ज़ाहिर होता है कि हज़रत[अ०] यह जानते थे कि यह चांद और सूरज हमारे कुर्रए अर्ज़ी की तरह वज़नी कुर्रे हैं। चुनान्चे चांद का वज़न ज़मीन के वज़न का 1/18 हिस्सा है, और इसका क़तर 2,163 मील है जो ज़मीन के क़तर के एक चौथाई से कुछ ज़्यादा है। और 2,300 मील फ़ी घण्टा की रफ़्तार से ज़मीन के गिर्द रवां दवां है। और सूरज का वज़न .2, 000,000,000,000,000,000,000,000, टन और क़तर 8,92,580 मील और मुहीत 26,78,500 मील है। मौजूदा दौर में चांद सूरज के क़तर व मुहीत की पैमाइश एक मामूली बात है। क्योंकि साइंस ने सहराए तहक़ीक़ में सालहा साल की सरगश्तगी के नतीजे में ऐसे तरीक़े मालूम कर लिये हैं जिनसे चांद सूरज की पैमाइश की जा सकती है। मगर जब आलमे आब व गिल में अजरामे फ़लकिया की पैमाइश का कोई तसव्वुर भी पैदा न हुआ था उस वक़्त अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम से सूरज के तूल व अर्ज़ के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमया "900 X 900 फ़रसख़"। एक फ़रसख़ तीन मील का होता है। लेहाज़ा हासिल ज़रब 24,30,000 मील होंगे और शरई मील चूंकि राएजुल वक़्त मील से 240 गज़ बड़ा होता है इस हिसाब से तक़रीबन यही मुहीत निकलेगा। यह है वह इल्मे इमामत जिसके मुक़ाबले में इन्सान लाख इक्तेशाफ़ात व तहक़ीक़ात के फ़लक बोस महल तैयार करे मगर उसके कंगरे की बुलन्दी को छू नहीं सकता। बहरहाल यह अज़ीमुश्शान कुर्रा जिसका जरम हमारी ज़मीन से 12,59,709 गुना बड़ा और 3,33,400 गुना भारी है, अपने महवर पर ज़मीन की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तरह घूमता रहता है और 25 दिन 7 घण्टे 48 मिनट में एक चक्कर काट लेता है। फिर नूर व ज़ुलमत के वज़न का ज़िक्र किया है। नूर या रौशनी को हम एक एहसास से ताबीर कर सकते हैं जो शोआई कुव्वत से हमारी आंखों में पैदा होता है। यह शोआई कुव्वत जिसको हमारी आंख महसूस करती है मरई व शोआई कुव्वत कहते हैं जो आंख और मरई चीज़ के दरमियान एक वास्ते की हैसियत रखती है। इस तरह कि रौशनी की लहरें जब किसी जिस्म मरई पर गिर कर मुनअक्स होती हैं तो वह जिस्म नज़र आने लगता है। यह मरई शोआई लहरें बनफ़शी, नीली, आसमानी, सब्ज़ ज़र्द, नारंजी, और सुर्ख़ रंगों पर मुश्तमिल होती हैं और सफ़ेद रौशनी उन तमाम रंगों का मजमूआ होती है। यह भी एक माद्दी व वज़नी चीज़ है क्योंकि कुव्वत और माद्दा एक ही चीज़ के दो नाम हैं और हर क़िस्म का माद्दा वज़न रखता है। सर इस्हाक़ न्यूटन का नज़रिया यह था कि रौशनी माद्दा की एक इन्तहाई लतीफ़ सूरत है जो ज़र्रात की सूरत में मुनव्वर अजसाम से बेहद सुरअत के साथ ख़ारिज होती है। इस नज़रिये की बिना पर रौशनी का वज़न ज़ाहिर है। और मौजूदा नज़रियात के लिहाज़ से भी जो रौशनी में फ़ोटून को साबित करते हैं उसके वज़न से इन्कार नहीं हो सकता क्योंकि फ़ोटून एक माद्दी ही चीज़ है। और उसके ख़ुसूसियात वही हैं जो इलेक्ट्रॉन (बरक़िया) के हैं। और इलेक्ट्रॉन मुसल्लमा तौर पर माद्दी है। यह फ़ोटून बीसवीं सदी में रौशनी के तजज़िये के मौक़े पर दरयाफ़्त हुए। यह इन्तेहाई छोटे छोटे नुक़्ते होते हैं और इरतेआशी लहरों की सूरत में चलते और हमेशा रवां दवां और हरकत में रहते हैं इस लिये उनका मुशाहदा हालते सुकून में नामुम्किन है।

रौशनी में वज़न का इम्कान सबसे पहले ल्यून हार्डयूलर ने उन्नीसवीं सदी के आग़ाज़ में ज़ाहिर किया और उसी सदी के आख़िर में मैक्सोएल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ने रौशनी के वज़न को दरयाफ़्त कर लिया। और यह बताया कि रौशनी में भी हवा के तेज़ झोंकों की तरह कुव्वत मख़फ़ी होती है जो मुख़्तसर ज़र्रों को अपने रास्ते से हटा दे सकती है और यह दबाव बहुत ही हल्का होता है और आम हालात में इसका मुशाहदा बहुत मुश्किल है। आख़िर सर वेलियम कुरुकस ने रेडियो मीटर ईजाद किया जिसमें चार पर होते हैं जो रौशनी के सामने रखने से घूमते हैं और यह दबाव मुशाहिदे के हुदूद में आ गया। फिर पैटर लीडयू ने एक बेहतरीन क़िस्म के रेडिश्यो मीटर से रौशनी की पैमाइश कर ली। यह पैमाइश एक ऐसे पैमाने से की जाती है जिसमें इन्तेहाई छोटे छोटे दरजात होते हैं। चुनान्चे पहले दर्ज की लम्बाई एक मिली मीटर का करोड़वां हिस्सा होती है और एक मिली मीटर का हज़ारवां हिस्सा होता है और एक मीटर तक़रीबन सवा सत्तरा गिरा का होता है। जब रौशनी 3800 दरजे से मुतजाविज़ होती है तो दिखाई देती है और 5550 दरजे पर पहुंच कर पूरी तरह नुमायां हो जाती है। रौशनी का सबसे बड़ा मरकज़ सूरज है जिसकी सतह से बुलन्द होने वाले आतिशबार शोले कभी कभी 2,86,000 मील तक की बुलन्दियों को छू लेते हैं। और एक मुरब्बा सेन्टी मीटर में जो मीटर का सवां हिस्सा होता है 50,000 मोम बत्तियों की रौशनी के बराबर रौशनी भर देता है और तमाम कुरए ज़मीन को जो उससे रौशनी हासिल होती है उसकी मिक़दार सूरज की पूरी रौशनी से वही निस्बत रखती है जो एक सेकेन्ड को 74 साल से है और ज़मीन से दस गुना ज़ायद रौशनी अजसामे फ़लकी में बटती है और बाक़ी फ़िज़ा में मुन्तशिर हो जाती है और चांद ऐसे 4,65,000 कुर्रे इसकी रौशनी से रौशन हो सकते हैं। साइंसदान कहते हैं कि इस तक़सीमे नूर से सूरज के 40,00,000 टन गैसी माद्दे एक सेकेन्ड में जल जाते हैं। मगर फिर भी उसे ख़त्म होते होते दस अरब साल और लगेंगे। बहरहाल यह रौशनी के नुक़्ते जिन्हें इरतेआशी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लहरें मरई सूरत में नुमायां करती हैं बाज़ जगह इतनी कम मिक़दार में होते हैं कि आंख पर असर अन्दाज़ नहीं हो सकते। ऐसी जगह तारीकी की लपेट में आ ज़ाती है। यह तारीकी सिर्फ़ मरई शुआओं से ख़ाली होती है। लेहाज़ा जिस तरह मरई लहरों की वजह से रौशनी में दबाव होता है। ज़ुलमत में भी ग़ैर मरई नुक़्तों की वजह से दबाव होना चाहिये। अहले तहक़ीक़ की यह कदो क़ाविश क़ाबिले क़द्र है कि उन्होंने रौशनी की पैमाइश के आलात ईजाद किये; रौशनी का तजज़िया किया; उसके एक एक जौहरी नुक़्ते को तौला, नापा। और उसके वज़न व मिक़दार का अन्दाज़ा लगाया। मगर यह कि इस कायनात में कितने अजराम नूरानी और कितने सूरज चांद और सय्यारे हैं और कहां कहां उनकी रौशनी फैली हुई है। तो आंखें आजिज़ व दरमान्दा और दूरबीनें एक हद पर पहुंच कर सिपर अन्दाख़्ता नज़र आयेंगी। चुनान्चे कहकशां का मरकज़ हमारे सूरज से 30,000 नूरी साल के फ़ासिले पर वाक़े है। नूरी साल से मुराद वह फ़ासला है जो रौशनी अपनी रफ़्तार से एक साल में तय करती है। उस कहकशां में 40 अरब सूरज और अनगिनत सय्यारे पाये जाते हैं और हर सूरज दूसरे सूरज से 4 नूरी साल के फ़ासले पर है और उनमें से अक्सर के गिर्द हमारे निज़ामे शम्सी की तरह सय्यारे घूम फिर रहे हैं और इस कहकशानी क़िस्म के निज़ाम दस करोड़ से ज़्यादा मौजूद दूरबीनों से देखे जा चुके हैं और इनमें से हर एक की वुसअत हमारी कहकशां की वुसअत के बराबर है और इतने ही सूरज इनमें गर्दिश कर रहे हैं। इस आलम की वुसअत व बुलन्दी का अन्दाज़ा इससे लगाइये कि ज़मीन से क़रीब तरीन सितारे की रौशनी 4 साल में ज़मीन तक पहुंचती है और बाज़ अजरामे फ़लकी की रौशनी को ज़मीन तक पहुंचने के लिये दस लाख साल की मुद्दत दरकार है।

सन् 1937 में एक चमक देखी गयी जिसकी बुलन्दी से यह अन्दाज़ा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लगाया गया कि 40 लाख बरस पहले कोई सितारा टूटा होगा जिसकी रौशनी अब नज़र आई है और फ़लकियात के माहिर तो यहां तक कहते हैं कि बाज़ सितारे ऐसे भी होंगे जिनकी रौशनी अभी ज़मीन तक पहुंची ही नहीं है। हालांकि रौशनी की रफ़्तार 1,86,248 मील फ़ी सेकेण्ड़ है और सूरज जो हम से 9 करोड़ 30 लाख मील के फ़ासले पर है उसकी रौशनी 8 मिनट 18 सेकेण्ड में और चांद की रौशनी एक सेकेण्ड में ज़मीन तक पहुंच जाती है। और फिर यह कि गैसी बादल जो दस लाख से 15 करोड़ नूरी साल तक फैले हुए हैं। और उनसे दूर तर सहाबिए जिनके फ़ासले दस खरब नूरी साल तक हैं उनमें रौशनी की मिक्दार कितनी और कहां कहां तक पहुंचती है और अन्थाह तारीकियां जो हमसे काले कोसों दूर हैं उनमें ख़लाई शुआयें (कास्मिक रेज़) किस मिक्दार में पाई जाती हैं और कहां कहां ज़ुलमतों के तूफ़ान मुहीत हैं तो इसका इल्म अल्लाह तआला के सिवा किसको हो सकता है। असरे जदीद ने अगर चे आलात व गोनागों ईजादात से रौशनी के वज़न का इन्केशाफ़ किया मगर आइम्म-ए-अहलेबैत[अ०] ने रौशनी के वज़न का उस वक़्त ज़िक्र किया जबकि न दूरबीनें ईजाद हुई थीं और न लेबारेट्रियों का वुजूद था। और अवाम तो अवाम ख़्वास के ज़ेहन भी इस तसव्वुर से ख़ाली थे। चुनान्चे यह दुआ उसके लिये शाहिद है। इसके अलावा और इरशादाते आइम्मा में भी इसका तज़किरा है। चुनान्चे एक शख़्स ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि ऐ फ़रज़न्दे रसूल[स०]! मुझे सितारों के देखने से एक ख़ास हिज़ हासिल होता है और एक हद तक मुझे इस फ़न में महारत हासिल है तो हज़रत[अ०] ने बतौरे इम्तेहान उससे दरयाफ़्त किया कि :-

"अच्छा यह बताओ कि सूरज कितनी मिक्दार में अपनी रौशनी से चांद को सेराब करता है और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कितनी मिक़दार में ज़मीन को सेराब करता है?"

उसने कहा यह बातें तो ऐसी हैं जो इससे पहले मैंने कभी सुनी ही नहीं और न इनका कभी तसव्वुर हुआ है।

फिर साया और हवा के वज़न का ज़िक्र किया है। साया वही तारीक हिस्सा है जो कसीफ़ और ग़ैर शफ़्फ़ाफ़ अजसाम के इम्तेज़ाज से मरई शुआओं से ख़ाली होता है, लेकिन ग़ैर मरई शुआयें इसमें कमो बेश होती हैं जिससे वह कभी ज़्यादा तारीक और कभी कम तारीक होता है। और जिस तरह कसीफ़ अजसाम मरई शुआओं के नफ़ूद से माने हो कर साया को जन्म देते हैं। उसी तरह दो रौशनियों के तसादुम से भी साया नमूदार होता है जिसे ज़िल्ले नूर से ताबीर किया जा सकता है। यह भी उसी तरह वज़न का हामिल होता है जिस तरह तारीकी ग़ैर मरई शुआओं की वजह से वज़न रखती है और हवा भी एक माद्दी और वज़नदार चीज़ है। यह हवाई कुर्रए ज़मीन से दो सौ मील से ज़ायद बुलन्दी तक फैला हुआ है। और ज़मीन से मुत्तसिल हवा कसीफ़ और भारी होती है और ज्यों ज्यों बुलन्द होती है लतीफ़ व सुबुक होती जाती है यहां तक कि 20,000 फ़िट की बलन्दी पर इस क़ाबिल नहीं रहती कि इन्सान उसमें सांस ले सके। सबसे पहले हसन इब्ने हशीम ने हवा का वज़नी होना बताया और सन् 1643 ई० में इटली के डाक्टर ट्रो सेली ने बाद पैमा (बैरू मीटर) ईजाद किया और उसके वज़न और दबाव की मिकदार को मालूम कर लिया। उसका मजमूई वज़न 5100 खरब टन है और समन्दर के किनारे एक मुरब्बा इन्च में हवा का वज़न $4^{7/10}$ पॉड होता है। और हर शख़्स 2000 पाउन्ड वज़नी हवा अपने ऊपर उठाये हुए है। और यह अल्लाह की करिश्मासाज़ी है कि उसने इन्सान के अन्दर हवा भर कर इस बोझ का एहसास नहीं होने दिया। वरना वह इस बोझ के नीचे दब कर रह जाता। हवा का वज़न अरगचे एक हद तक मालूम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

किया जा चुका है मगर यह कि उनमें दरख़्तों को बारआवर करने वाली हवाओं, सतह समन्दर से बोख़ारात उठाने वाली हवाओं और बादलों को हरकत में लाने वाली हवाओं और उसकी मुख़्तलिफ़ तहों का वज़न किया है और दूसरे कुर्रों और सय्यारों पर हवा की मिक़दार और नौइयत क्या है और उनमें आक्सीजन, नाइट्रोजन और दूसरी गैसों की मिक़दार कितनी है तो क़यास आराईयों के अलावा यक़ीन के साथ कुछ न बताया जा सकेगा। यह सिर्फ़ अल्लाह तआला से मख़सूस है और वही इन हवाओं के महल व मक़ाम, वज़न व मिक़दार, अजज़ा और अजज़ा की मिक़दार व कैफ़ियत से वाक़िफ़ है और इसका इल्म कुल्लियात व जुज़ियात, ज़वाहिर व बवातिन और गुयूब व शहूद पर यक्सां मुहीत है और कोई चीज़ उसके दायरे इत्तेलाअ से ख़ारिज, उसके एहातये से बाहर और उसके इल्म से पोशीदा नहीं है और न पोशीदा रह सकती है। क्योंकि ज़ाते इलाही के लिये जेहल अगरचे वह छोटी से छोटी और मख़फ़ी से मख़फ़ी चीज़ के मुतअल्लिक़ क्यों न हो नुक़्स है और नुक़्स उसके कमाले जात के मनाफ़ी है।

बुज़ुर्गी व अज़मते इलाही के बयान में हज़रत[अ०] की दुआ

"तमाम तारीफ़ उस अल्लाह तआला के लिये है जो अपनी अज़मत के साथ दिलों पर रौशन व दरख़्शां है और अपनी इज़्ज़त के साथ आंखों से पिन्हा है। और तमाम चीज़ों पर अपने इक़्तिदार से क़ाबू रखता है। न आंखें उसके दीदार की ताब ला सकती हैं और न

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अक़लें उसकी अज़मत की हद तक पहुंच सकती हैं। वह अपनी अज़मत व बुज़ुर्गी के साथ हर चीज़ पर ग़ालिब है और इज़्ज़त व एहसान व जलालत की रिदा ओढ़े हुए है। हुस्न व जमाल के साथ नक़ाएस से बरी है और फ़ख़्र व सर बलन्दी के साथ शरफ़ व बुज़ुर्गी का मालिक है और ख़ैर व बख़्शिश की फ़रावानी और (अताए) नेअमात से ख़ुश होता है और नूर व रौशनी के साथ (तमाम आलम से) इम्तियाज़ रखता है। वह ऐसा ख़ालिक़ है जिसका कोई नज़ीर नहीं। वह ऐसा यक्ता है जिसका कोई मिस्ल नहीं। वह ऐसा यगाना है जिसका कोई मद्दे मुक़ाबिल नहीं। वह ऐसा बेनयाज़ है जिसका कोई हमसर नहीं। वह ख़ुदा जिसका कोई दूसरा नहीं। वह पैदा करने वाला है जिसका कोई शरीके कार नहीं। व रिज़्क़ देने वाला है जिसका कोई मददगार नहीं। वह ऐसा अव्वल है जिसे ज़वाल नहीं। वह ऐसा बाक़ी व जावेद है जिसे फ़ना नहीं। वह दायम व क़ायम है। बग़ैर किसी रंज व मशक़्क़त के वह अम्न व अमान का बख़्शने वाला है। बग़ैर क़िसी हद व इन्तेहा के वह ईजाद करने वाला है। बग़ैर किसी मुद्दत की हद बन्दी के वह सानेअ व मौजिद है। बग़ैर किसी एक (की एआनत) के वह परवर दिगार है बग़ैर किसी शरीक के वह पैदा करने वाला है। बग़ैर किसी ज़हमत व दुश्वारी के वह काम करने वाला है। बग़ैर इज्ज़ व दरमान्दगी के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उसकी कोई हद नहीं। मकान में और न उसकी कोई इन्तेहा है ज़माने में। वह हमेशा से है हमेशा रहेगा। यूंही हमेशा हमेशा उसे कभी ज़वाल न होगा। वही ख़ुदा है जो ज़िन्दा क़ायम व दायम, क़दीम क़ादिर और इल्म व हिक्मत वाला है। बारे इलाहा! तेरा एक बन्दए हक़ीर तेरे साहते क़ुदस में हाज़िर है। तेरा साएल तेरे आसताने पर हाज़िर है। तेरा मोहताज व दस्तनिगर तेरी बारगाह में हाज़िर है (इन तीनों जुमलों को तीन मर्तबा दोहराए) ऐ मेरे अल्लाह तआला तुझ ही से इबादत गुज़ार डरते हैं और तेरे ख़ौफ़ और उम्मीद व अफ़वो व बख़्शिश के पेशे नज़र आजिज़ी से इल्तेजा करने वाले तुझसे लौ लगाते हैं। ऐ सच्चे मअबूद! इस्तेग़ासा व फ़रयाद करने वालों की पुकार पर रहम फ़रमा और ग़फ़लत में गिरफ़्तार होने वालों के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमा और ऐ करीम अपनी बारगाह में तौबा करने वालों के साथ उस दिन जब कि जब वह तेरे सामने पेश हों, नेकी और एहसान में इज़ाफ़ा फ़रमा।

यह दुआ ख़ुदा वन्दे आलम की अज़मत व बुज़ुर्गी और उसके औसाफ़े कमाल के बयान के सिलसिले में है। इलाही सिफ़ात के बयान से जहां यह मक़सद है कि इन्सान ख़ुदाशिनासी की मंज़िल से क़रीब हो, वहां यह भी मक़सद है कि मअबूद की रिफ़अत व बलदी का तसव्वुर उसमें नौई रिफ़अत व सरबलन्दी का एहसास पैदा करे ताकि वह इस कायनात में अपने को बलन्द दर्जे समझते हुए ख़ालिक़े कायनात के अलावाकिसी और की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

परस्तिश व इबादत का तसव्वुर भी न करे और इस बलन्दी के एहसास पेशे नज़र अपने अमल व किरदार में भी बलन्दी पैदा करने की कोशिश क

सिफ़ाते इलाही में से पहली सिफ़त यह बयान फ़रमाई है कि त इन्सान के क़ल्ब व ज़मीर से पिन्हा नहीं है। क्योंकि हर चीज़ में उसर नमूद और हर शै में उसकी जलवा रेज़ी है। चुनान्चे ज़मीन, आसमान, चां सूरज, दरिया, पहाड़ और कायनात का हर ज़र्रा उसके वुजूद की ए मोहकम बुरहान है। अगर कोई शख़्स किसी नक़्क़ाश को नक़्श खींचते हु देखता है तो वह यह यक़ीन करने पर मजबूर है कि वह ज़िन्दा भी आलिम भी है, क़ादिर भी है और मुरीद भी। इस लिये कि हयात इल्मे कुदर और इरादे के बग़ैर नक़्क़ाश का हाथ नक़्श नहीं खींच सकता। तो अग उसके हाथ की हरकत को देख कर इन औसाफ़ का यक़ीन हो जाता है हालांकि इस हरकत के मुशाहदे के अलावा और कोई दलील मौजूद नह है। तो क्या कायनात के नक़्श बदीअ को देखने के बाद सानेअ के वुजू और उसकी सिफ़ते इल्म व कुदरत से इन्कार की गुंजाइश हो सकती है और जिसके वुजूद पर इतने शवाहिद मौजूद हों वह चश्मे बसीरत से मख़्फ़ रह सकता है? हरगिज़ नहीं जबकि दिल ज़मीर फ़ितरत और वजदान उसके वुजूद की शहादत दे रहे हैं और उसकी हस्ती के दलाएल इतने क़वी हैं कि हर शख़्स इसका एक़रार करने पर मजबूर है और नज़्मे कायनात को देखने के बाद यह तसव्वुर कि यह आलम बाज़ अनासिर के इत्तेफ़ाक़ी मेल का नतीजा है अक़्ल व फ़हम से ब–मराहिल दूर है इस लिये कि हर चीज़ की तह में एक हकिमाना निज़ाम कारफ़रमा नज़र आता है। और हर शै अपने मक़ाम पर एक ख़ास मौज़ूइयत की हामिल दिखाई देती है जिसे महज इत्तेफ़ाक़िया नहीं क़रार दिया जा सकता। चुनान्चे इस आलम के नज्म व नस्क़ और वज़अ व साख़्त को देखने के बाद यह तस्लीम किये बग़ैर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कोई चारए कार ही नहीं है कि इस कायनाते हस्ती का कोई ख़ालिक़ व सानेअ है जो हकीम, मुदब्बिर और तमाम सिफ़ाते कमाल का जामेअ है।

दूसरी सिफ़त यह है कि वह देखने वालों की निगाहों से अपने ग़लबे व इज़्ज़त की वजह से पोशीदा है और यह पोशीदगी इस तरह की नहीं है जिस तरह शाहों और फ़रमांरवाओं की पोशीदगी होती है कि वह दरवाज़ों पर पर्दे लटकाकर और पहरे खड़े करके रेआया की नज़रों से पिन्हा रहते हैं ताकि उनके रोब व तमकिनत में फ़र्क़ न आये और न इस तरह पोशीदा है जिस तरह चमगादड़ की निगाह से सूरज पोशीदा हो जाता है कि यह कहा जाये कि उसके नूर की ताबिश और जमाल की तुग़यानी रवैयत से माने है। क्योंकि वह इस लिये पोशीदा नहीं है कि निगाहें उसके सामने मुज़महिल हो जाती हों; बल्कि वह ज़ातन् नाक़ाबिले रवैयत है।

इस लिये कि अगर वह देखे जाने के क़ाबिल होता तो निगाहों की महदूद वुसअत से उसे भी महदूद होना पड़ता। और जबकि उस ज़ाते ग़ैर महदूद के लिये महदूद होना नामुम्किन है तो उसके देखे जाने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

तीसरी सिफ़त यह है कि वह क़ादिरे मुतलक़ है। इस लिये अपनी ही कुव्वत व ताक़त से हर चीज़ पर इक़्तेदार रखता है न उन सलातीन की तरह जो लश्कर व सिपाह और आवान व अन्सार की बदौलत इक़्तेदार हासिल करते हैं। अगर ऐसा हो तो वह जिनसे मदद लेगा उनका मोहताज क़रार पायेगा। और एहतियाज मुम्किन का ख़ासा है न वाजिब का।

चौथी सिफ़त यह है कि इन्सानी अक़्लें उसकी वाक़ई हक़ीक़त समझने से क़ासिर हैं। इस लिये कि अक़्ल व इदराक की कुव्वतें महदूद हैं और ख़ुदा ला महदूद है। और ला महदूद, ग़ैर महदूद का एहाता कर नहीं सकता कि अक़्ल व फ़हम में समा सके।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पांचवीं सिफ़त यह है कि वह यगाना है और कायनात के पैदा करने में कोई उसका मोआविन व शरीकेकार नहीं है इस लिये कि अगर दो (2) ख़ालिक़ हों तो उनमें से एक किसी काम को करना चाहे तो दूसरा उसका हमनवा होगा या मुख़ालिफ़। अगर हमनवा है तो उसकी हमनवाई का फ़ायदा व नतीजा ही क्या जबकि वह तन्हा उस काम को अन्जाम देने के लिये काफ़ी है। और अगर मुख़ालिफ़ है तो इस सूरत में या वह दोनों नाकाम होंगे या उनमें से एक काम्याब होगा और दूसरा नाकाम। पहली सूरत में दोनों ख़ुदा न रहेंगे और दूसरी सूरत में नाकाम होने वाला ख़ुदा न रहेगा। लेहाज़ा जब दूसरे की एहतियाज ही नहीं है तो एक बेकार वुजूद को तस्लीम करने की ज़रूरत ही क्या है।

छटी सिफ़त यह है कि वह अव्वल है इस लिये कि तमाम सिलसिलए मौजूदात उस पर मुनतही होता है और जो तमाम कायनात का नुक़्तए आख़िर और इल्लतुल अलल हो तो वह यक़ीनन् सबसे अव्वल व इक़दम होगा।

सातवीं सिफ़त यह है कि वह मकान व ज़मान के हुदूद से बालातर है इस लिये कि मकान व ज़मान की तक़लीद व हदबन्दी सिफ़ाते अजसाम में से है और वह जिस्म व जिस्मानियात से मुनज़्ज़ा है। और दूसरे यह कि ज़मान व मकान हादिस हैं। और जब वह किसी मख़लूक़ व हादिस का पाबन्द होगा तो वाजिबुल वुजूद न रहेगा। और जब कि वह हादिस क़रार पाया तो उसके लिये फ़ना व ज़वाल भी ज़रूरी होगा इस लिये कि फ़ना से मानेअ सिर्फ़ उसका वाजिबुल वुजूद होना है और ज़मान व मकान की पाबन्दी से वह वाजिबुल वुजूद न रहा।

आठवीं सिफ़त यह है कि उसका कोई मिस्ल व नज़ीर नहीं है इस लिये कि अगर उसका मिस्ल व नज़ीर होगा तो या वह वाजिबुल वुजूद होगा या मुम्किन। अगर वाजिबुल वुजूद होगा तो वाजिबुल वुजूद मुतअद्दिद नहीं हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सकते। और अगर मुम्किन होगा तो मुम्किन व वाजिब एक दूसरे के मिस्ल नहीं हो सकते। इस लिये कि वाजिब ग़ैर मोहताज और मुम्किन सरापा एहतियाज है।

नवीं सिफ़त यह है कि ऐसा ख़ालिक़ है जो तख़लीक़ अश्या में माद्दे का मोहताज नहीं है, क्योंकि एहतेयाज मुम्किन की शान है और वाजिबुल वजूद हर क़िस्म की एहतयाज से कोसों दूर है।

दसवीं सिफ़त यह है कि वह रब्ब है। रब्ब के माने पालने वाले के हैं। चुनान्चे यह परवरिश व निगेहदाश्त का सरो सामान और तरबियते आलम का मुसलसल एहतेमाम उसकी रुबूबियत का मज़हर है और यह रुबूबियत इतनी कामिल व हम्मागीर है कि कोई मख़लूक़ वह पानी के अन्दर हो या ज़मीन के ऊपर, दामने कोह में हो या वुसअते फ़िज़ा में अपनी हाजत व ज़रूरत के मुताबिक़ बक़ाए ज़िन्दगी के सामान से बहरामन्द है। जिसका सिलसिला न कभी क़तअ हुआ है और न होगा।

ग्यारहवीं सिफ़त यह है कि वह ऐन हुस्न व सरापा जमाल है। चुनान्चे ज़मीन पर सब्ज़ए ख़्वाबदीदा का मख़मली फ़र्श, फूलों में रंगों का हसीन इम्तेज़ाज, दरियाओं की रवानी, मौजों की तुग़यानी, आबशारों के ज़मज़मे, ताएरों के नग़मे, सितारों की चमक, चांद का उतार चढ़ाव, सूरज की ज़िया पाशी, कहकशां की दिल आवेज़ी और सुबह व शाम की नज़र अफ़रोज़ी उसी के जमाल का परतौ और उसके हुस्न की जलवां आराई का नतीजा हैं। क्योंकि जो जमाल से आरी हो वह दूसरी चीज़ों में रअनाई पैदा नहीं कर सकता। लेहाजा कायनात हस्ती की मौज़ूनियत और फ़ितरत का बनाव ख़ालिक़ के हुस्न व जमाल का आईनादार और उसकी जमाल पसन्दी की दलील है।

बारहवीं सिफ़त यह है कि वह मोमिन है। अगर मोमिन का इतलाक़

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इन्सान पर हो तो उसके मआनी यह हैं कि वह ख़ुदा और उसके रसूल और आसमानी एहकाम की तस्दीक़ करता है। और अल्लाह तआला प इसका इतलाक़ हो तो इसका मतलब यह है कि उससे ज़ुल्म व जौर व क़तअन् कोई अन्देशा नहीं है। न दुनिया में और न आख़रत में। चुनान इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"ख़ुदा वन्दे आलम का नाम मोमिन इसलिय है कि उसके एताअत गुज़ारं बन्दे उसके अज़ाब से मामून व बेख़तर हैं।"

बहर हाल इस दुआ के मुतालेआ से एक ऐसी हस्ती का तसव्वुर साम आ जाता है जो तमाम हुस्न व ख़ूबी की सिफ़तों को समेटे हुए है जो अज़म व जलाल व किबरियाई का भी मालिक है। और मजद व बुज़ुर्गी व शरप का भी सरमायादार है जो सर ता पा नूर व ज़िया, सरापा हुस्न व जमा अज़ली, अबदी, ज़िन्दा क़ायम, तवाना, बेनयाज़, बाक़ी व बरक़रार और दाय व जावेद है। उसी से तमाम मौजूदात का ज़हूर हुआ औरा उसी से उनकी बक़ा वाबस्ता है और उसी की तरफ़ पलटना है। वह यकता व यगाना औ बेमिस्ल व बेनज़ीर है। हर चीज़ में नुमायां, हर दिल में जलवागर, और फ़ि कहीं नहीं कि उसे देखा जा सके या उसकी तरफ़ इशारा किया जा सके:–

पाया न यूं कि करते उसकी तरफ़ इशारा
यूं तो जहां में हमने उसको कहीं न पाया

तज़ल्लुल व आजिज़ी के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजमा) "ऐ मेरे आक़ा, ऐ मेरे मालिक! तू आक़ा है,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और मैं बन्दा। और बन्दे पर आक़ा के सिवा कौन रहम खायेगा। मेरे मौला, मेरे आक़ा! तू इज़्ज़त वाला है और मैं ज़लील, और ज़लील पर इज़्ज़तदार के अलावा और कौन रहम करेगा। मेरे मालिक, मेरे मालिक! तू ख़ालिक़ है और मैं मख़लूक़, और मख़लूक़ पर ख़ालिक़ के सिवा कौन तरस खायेगा। मेरे मौला! मेरे मौला! तू अता करने वाला है और मैं सवाली। और साएल पर अता करने वाले के अलावा कौन मेहरबानी करेगा। मेरे आक़ा! मेरे आक़ा! तू फ़रयाद रस है और मैं फ़रियादी। और फ़रयादी पर फ़रयाद रस के अलावा कौन रहम करेगा। मेरे मालिक! मेरे मालिक! तू बाक़ी है और मैं फ़ानी। और फ़ानी पर दायम व जावेद के अलावा कौन रहम करेगा। मेरे मौला! मेरे मौला! तू ज़िन्दा और मैं मुर्दा और मुर्दा पर ज़िन्दा के सिवा कौन तरस खायेगा। मेरे मालिक! मेरे मालिक! तू ताक़तवर है और मैं कमज़ोर और कमज़ोर पर ताक़तवर के अलावा कौन रहम करेगा। मेरे मौला! मेरे मालिक! तू ग़नी है और मैं तहीदस्त; और तही दस्त पर ग़नी के अलावा कौन रहम खायेगा। मेरे आक़ा! मेरे आक़ा! तू बड़ा है और मैं छोटा, और छोटे पर बड़े के सिवा कौन नज़रे शफ़क़त करेगा। मेरे मौला! मेरे मौला! तू मालिक है और मैं ग़ुलाम और ग़ुलाम पर मालिक के सिवा कौन मेहरबानी करेगा।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

यह दुआ अल्लाह तआला की बारगाह में तज़र्रुअ व इस्तरहाम के सिलसिले में है। जिसमें अल्लाह तआला को उसके असमाए हुस्ना मेंसे मुख़्तलिफ़ नामों के साथ याद किया है और वह असमा जिन जिन मआनी व सफ़ी के हामिल हैं उनके मुक़ाबले में बतौर सनअत तबाक़ व तज़ाद अपने लिये एक इस्म का इन्तेख़ाब किया है जैसे मौला के मुक़ाबिले में अब्द, ग़नी के मुक़ाबिले में फ़क़ीर, बाक़ी के मुक़ाबिले में फ़ानी वग़ैरा। यह अन्दाज़े ख़िताब, तलब व सवाल के इस्तेहक़ाक़ पर भी रौशनी डालता है इस तरह कि बन्दा अपने आक़ा से और फ़क़ीर ग़नी से तलब न करे तो किससे रहम की इल्तेजा करे और किसके आगे झोली फैलाये और आक़ा व मालिक के सिवा हो भी कौन सकता है, जो अपने बन्दे पर शफ़क़त व मेहरबानी करे और ग़नी के अलावा कौन हो सकता है जो फ़क़ीर की बेमाएगी को ग़िना व ख़ुशहाली से बदल सके। इस बिना पर हज़रत[अ०] उसकी बारगाह में अर्ज़ करते हैं कि तू आक़ा व मौला है मैं तेरा बन्दा हूं, और बन्दे पर नज़रे शफ़क़त व मरहमत आक़ा ही कर सकता है। मौला के मआनी मालिक व मुतसरिफ़ के हैं। यानी उसे अपने बन्दों पर हर तरह का अख़्तियार हासिल है। इस मआनी से वही हक़ीक़ी मालिक व मौला है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

"वह तुम्हारा मौला है तो क्या अच्छा मौला है"

फिर फ़रमाते हैं कि तू अज़ीज़ है और मैं ज़लील हूं। यानी मैं तेरे आगे आजिज़ व सरफ़गन्दा हूं और तू ग़लबा व इक़्तिदार का मालिक है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

"अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूद नहीं जो इज़्ज़त व ग़लबा और हिक्मत वाला है।"

और तू ख़ालिक़ है और मैं मख़लूक़ हूं। यानी मैं तेरा पैदाकर्दा हूं और तू मेरा और तमाम कायनात का पैदा करने वाला है। चुनान्चे इरशादे इलाही है

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

"वही अल्लाह है जो पैदा करने वाला, ईजाद करने वाला, और सूरतगर है।"

और तू अता करने वाला और मैं सवाली हूं। यानी हर अता व बख़्शिश की इन्तेहा तेरी ज़ात पर है। इस लिये हर दस्ते तलब तेरे आगे बढ़ता है, और तुझसे मांगने वाला कभी महरूम व नाकाम नहीं पलटता। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"तुमने जो कुछ उससे मांगा उसने तुम्हें दिया।"

और तू फ़रयाद रस है और मैं फ़रयादी हूं। चुनान्चे वही रंज व क़लक़ को दूर करता और परेशान व मुसीबतज़दा लोगों की दाद फ़रयाद सुनता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"वह कौन है जिसे परेशानहाल जब पुकारे तो वह उसकी सुनता और दुख दर्द को दूर करता है।"

और तू बाक़ी है और मैं फ़ानी हूं। चुनान्चे अल्लाह तआला के अलावा हर चीज़ के लिये फ़ना ज़रूरी है और कोई भी मौत की गिरफ़्त से बच नहीं सकता। जैसा कि इरशादे इलाही है :–

"रुए ज़मीन की हर चीज़ फ़ना होने वाली है और तुम्हारा परवर दिगार जो जलालत व बुज़ुर्गी का सरमायादार है बाक़ी रहने वाला है।"

और तू दायम व जावेद है और मैं मोरिज़ ज़वाल में हूं। मक़सद यह है कि हर चीज़ फ़ानी व ज़वाल पज़ीर है और अल्लाह तआला के सिवा किसी के लिये बक़ा व दवाम नहीं। सिर्फ़ उसी की शाही व फ़रमांरवाई बाक़ी व बरक़रार रहने वाली है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"आज किस की बादशाही है? उस अल्लाह तआला की जो यकता व ग़ालिब है।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और तू ज़िन्दा है और मैं मुर्दा हूं। ख़ुदा के ज़िन्दा होने के मआनी यह हैं कि वह ख़ुद मौजूद है और दूसरे को ज़िन्दगी व हयात बख़्शने वाला है। जब कायनाते हस्ती की ज़िन्दगी व बक़ा उसकी हयात से वाबस्ता है और हर चीज़ अपने वजूद में उसकी मोहताज व दस्त निगर और ख़ुद उसके वजूद को मुस्तक़िल हैसियत हासिल नहीं है तो वह ज़िन्दा रहने के बावजूद मुर्दा ही कही जाने की सज़ावार है। इस लिये हज़रत[अ०] ने उस ज़ात को जो सरचश्मए हयात और हमेशा से है और हमेशा रहेगी हय्या से ताबीर फ़रमाया है और उसके मुक़ाबिले में अपने को मुर्दा कहा है और इस लिये भी कि ज़िन्दगी के पहले अदम और ज़िन्दगी के बाद मौत है। और जो चीज़ अदम व मौत के दरमियान वाक़े हो और वह भी इस तरह कि सररिश्तए हयात दूसरे के हाथ में हो तो ऐसी ज़िन्दगी का हामिल मुर्दा ही कहे जाने के क़ाबिल है। अगर कोई ज़िन्दा कहे जाने का मुस्तहक़ है तो वह ज़ात जो अदम व नीस्ती से नाआशना और अज़ली व अबदी है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"अल्लाह तआला के सिवा कोई मअबूद नहीं जो ज़िन्दा और नज़्मे आलम क़ायम करने वाला है।"

तू क़वी है और मैं ज़ईफ़ हूं। यानी तू हर चीज़ पर ग़लबा व इक़्तिदार रखता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"यक़ीनन् ख़ुदा क़वी व ग़ालिब है।"

और मैं आजिज़ व कमोर और ज़ईफ़ व नातवान हूं। चुनान्चे इन्सान के बारे में इरशादे इलाही है :–

"इन्सान कमज़ोर व नातवान पैदा किया गया है।"

और तू ग़नी है और मैं फ़क़ीर व नादार हूं। ग़नी के मआनी यह हैं कि वह बेनयाज़ और हर क़िस्म की एहतियाज से बरी है उसके मुक़ाबले में

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इन्सान सरापा फ़क़रो एहतियाज है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

"अल्लाह तआला बेनयाज़ और तुम मोहताज हो।"

तू कबीर है और मैं पस्त व सग़ीर हूं। कबीर के मआनी यह हैं कि उसकी ज़ात जलाल व अज़मत और किबरियाई व रिफ़अत की मालिक है, और उसके मुक़ाबले में हर फ़र्द कम रुतबा और पस्त तर है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

"यक़ीनन सिर्फ़ अल्लाह तआला ही बुलन्द मरतबा व बुज़ुर्ग है"।

और तू मालिक है और मैं ममलूक हूं। मालिक के मआनी यह हैं कि ख़ुदा वन्दे आलम ज़ात व सिफ़ात में हर मौजूद से मुस्तग़नी व बेनयाज़ है और कोई चीज़ उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत से बाहर और उसके हुदूदे फ़रमांरवाई से ख़ारिज नहीं है क्योंकि हर जगह और हर मक़ाम पर उसी की हुकूमत व फ़रमांरवाई है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

"ऐ शाही व जहांदारी के मालिक।"

हज़रत[अ०] की दुआ जो ज़िक्रे आले मोहम्मद[स०] पर मुश्तमिल है

"ऐ अल्लाह! ऐ वह जिसने मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] को इज़्ज़त व बुज़ुर्गी के साथ मख़सूस किया और जिन्हें मनसबे रिसालत अता किया और वसीला बना कर इम्तियाज़े ख़ास बख़्शा। जिन्हें अम्बिया का वारिस क़रार दिया और जिनके ज़रिये औसिया और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अइम्मा का सिलसिला ख़त्म किया। जिन्हें गुज़िश्ता व आईन्दा का इल्म सिखाया और लोगों के दिलों को जिनकी तरफ़ मायल किया। बारे इलाहा! मोहम्मद[स०] और उनकी पाक व पाकीज़ा आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमारे साथ दीन, दुनिया और आख़रत में वह बरताव कर जिसका तू सज़ावार है। यक़ीनन् तू हर चीज़ पर क़ादिर व तवाना है।

यह दुआ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और उनके अहलेबैत[अ०] अतहार के औसाफ़ व ख़ुसूसियात के ज़िक्र पर मुश्तमिल है। उ औसाफ़ व महामिद में से पहली सिफ़त यह है कि ख़ुदा वन्दे आलम ने उन ऐसी इज़्ज़त व रफ़अत और शरफ़ व करामत के ख़िलअत से आरास्ता कि है। जो दुनिया में किसी और के क़दो क़ामत पर रास्त न आ सका। य चीज़ का ख़ास होना इस अम्र की दलील है कि ख़ुदा वन्दे आलम मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और उनके अहलेबै अलैहिस्सलाम को तमाम कायनात पर फ़ज़ीलत व बरतरी अता की है चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :—

"ख़ुदा वन्दे आलम ने रूहों को जिस्मों से दो हज़ार बरस पेश्तर ख़ल्क़ फ़रमाया और उनमें सबसे बुलन्द मर्तबा व ज़ी शरफ़ मोहम्मद[स०] अली[अ०] फ़ातेमा[स०] हसन[अ०] हुसैन[अ०] और अइम्माए अहलेबैत सलवातुल्लाह अलैहिम हैं।"

दूसरी सिफ़त यह है कि उनमें से हज़रत मोहम्मद[स०] मुस्तफ़ा सल्लल्लाह अलैहे व आलेहि वसल्लम को मरकज़े नबूव्वत क़रार दिया औ

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

वही–ए–रिसालत का इम्तियाज़ बख़्शा। चुनान्चे आंहज़रत का इरशाद है:–

"हम अहलेबैत, रहमत की कुंजियां, रिसालत की मंज़िल और हिल्म व बुर्दबारी का मआ़दन हैं।"

तीसरी सिफ़त यह है कि वह वसीला हैं। इस तरह कि उन्हीं के वसीले से ख़ुदा तक रसाई होती है, उन्हीं के वसीले से दुआयें कुबूल और फ़क़रो फ़ाक़ा इब्तिला व मुसीबत और रंज व अन्दोह दूर होता है। और उक़बा में भी उनकी शफ़ाअत को वसीला क़रार दिये बग़ैर नजात व कामरानी न होगी। और यह वह मरतब–ए–रफ़िया है जिससे बुलन्दतर मरतबा दूसरा नहीं है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"अल्लाह सुबहानहू ने अपने नबी[स०] से वसीले का वादा फ़रमाया है और यह जन्नत का एक बलन्द तरीन दर्जे और ख़्वाहिश व मक़सद की हद्दे आख़िर है।"

चौथी सिफ़त यह है कि इनमें तमाम अम्बिया[अ०] की सिफ़तें यकजा थीं। चुनान्चे आदम[अ०] की सफ़वत, इब्राहीम[अ०] की ख़िल्लत, मूसा[अ०] की हैबत, ईसा[अ०] की ज़ो हादत और दूसरे अम्बिया की सिफ़तें इनमें सिमट कर जमा हो गयी थीं। इस लिहाज़ से वह अम्बिया के मुहासिन व कमालात और अख़लाक़ व औसाफ़ में उनके वारिस व ज़ॉनशीन होंगे। चुनान्चे इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम का इरशाद है :–

"हम उलुल अज़्म नबीयों और रसूलों के वरसादार हैं।"

पांचवीं सिफ़त यह है कि जिस तरह पैग़म्बरे अकरम[स०] ख़ातमुल अम्बिया हैं कि उनके ज़रिये सिलसिलए नुबूव्वत अतमाम तक पहुंचाया गया, उसी तरह उनके अहलेबैत के ज़रिये अइम्मा व औसिया का सिलसिला ख़त्म किया गया है। क्योंकि न नबी[स०] आख़ेरूज़्ज़मान के बाद कोई नबी आयेगा और न उनका कोई वसी व वारिस होगा। लेहाज़ा जिस तरह हमारे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

पैग़मबर[अ०] आख़री पैग़म्बर[स०] हैं उसी तरह उनके औसिया आख़री औसिय हैं, और वह अइम्मा असना अशरी हैं। चुनान्चे अल्लामा शेख़ क़न्दोज़ तहरीर फ़रमाते हैं :–

"रावी कहता है कि मैंने आंहज़रत[स०] की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मुझे बाद में आने वाले अपने औसिया से मुत्तलअ फ़रमाइये ताकि मैं उनसे तमस्सुक अख़्तियार करूं। आप[अ०] ने फ़रमाया, कि मेरे औसिया बारह हैं (और उसके बाद सबका नाम बनाम ज़िक्र फ़रमाया है।") (यनाबीउल मुवद्दह)

छठी सिफ़त यह है कि उन्हें गुज़िश्ता व आईन्दा वाक़आत का इल्म दिया गया है। यह इल्म अतीय–ए–इलाही और उस सर चश्मए इल्म से हासिल किया हुआ है जो अज़ली व सरमदी और ग़ैर महदूद है। जिसके बाद इल्मे इलाही में शरीक होने का सवाल पैदा ही नहीं होता। जबकि अल्लाह तआला का इल्म ऐन ज़ात और ग़ैर मकतसब है। और यह अल्क़ा व इल्हाम या पैग़म्बर[स०] की विसातत से हासिल हुआ है और इन्तेहाई वुसअत व फैलाव के बावजूद महदूद है। चुनान्चे क़ुरआने करीम में जहां जहां इल्मे ग़ैब को ज़ाते इलाही से मख़सूस किया गया है, और दूसरों से उसकी नफ़ी की गयी है उससे ज़ाती इल्म मुराद है। लेकिन वह इल्म जो मुस्तक़बिल के बारे में या उमूरे मख़फ़िया पर क़ुदरत की तरफ़ से ख़ास ख़ास बन्दों को हासिल होता है उसकी कहीं नफ़ी नहीं है। और अइम्मा का इल्म उसी नौइयत का है और उनके इरशादात में उसकी पूरी पूरी वज़ाहत है जिसके बाद किसी शुबहे की गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती। चुनान्चे एक शख़्स ने अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्सलाम से कहा कि : "ऐ अमीरूल मोमेनीन[अ०]! आप को इल्मे ग़ैब हासिल है? आपने फ़रमाया

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

"यह इल्मे ग़ैब नहीं, बल्कि एक साहबे इल्म (रसूल[स०]) से मालूम की हुई बातें हैं।" (नहजुल बलाग़ा) यूंही यहिया इब्ने अब्दुल्लाह ने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से कहा कि : "मैं आप पर क़ुर्बान जाऊँ। लोगों का ख़याल है कि आप इल्मे ग़ैब जानते हैं।" हज़रत ने यह सुन कर फ़रमाया :–

(तरजुमा) "अल्लाहो अकबर! ज़रा अपना हाथ मेरे सर पर रख कर देखो। ख़ुदा की क़सम! मेरे सर के बाल और मेरे जिस्म के रोंगटे खड़े हो गये हैं। (फिर फ़रमाया) यह सिर्फ़ वह इल्म है जो हमें रसूल उल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम से वरासतन् हासिल हुआ है।"

सातवीं सिफ़त यह है कि वह लोगों की मोहब्बत व इरादात का मरकज़ है। यह इस लिये कि इन्सान फ़ितरतन् उन अफ़राद की तरफ़ झुकता है जो किसी कमाल के हामिल होते हैं। चुनान्चे हातिम की सख़ावत, नौशेरवां की अदालत और रूस्तम की शुजाअत दिलों को उनकी तरफ़ झुका देती और नज़रों को उनकी जानिब मोड़ देती है और आले मोहम्मद[स०] तो वह हैं जो अपने ज़ाती कमालात व ख़ुसूसियात की वजह से अज़मते इन्सानी का मेअयार हैं। वह कौन सा जौहरे फ़ज़ीलत है जिससे उनका दामन आरास्ता न हो। और वह कौन सी सिफ़त ख़ूबी व कमाल है जो उनके जौहरे ज़ाती में जलवागर न हो। लेहाज़ा उन कमालात व ख़ुसूसियात को देखते हुए निगाहें उनकी तरफ़ झुकेंगी और दिल अक़ीदत की हम्राही में बढ़ेंगे। चुनान्चे ज़िन्दीक़ व मुलहिद और दीन व मिल्लत से नाआशना अफ़राद भी अक़ीदत के फूल उनके क़दमों पर निछावर करते और दुश्मन भी लाशऊरी तौर पर उनकी अज़मत का एतराफ़ करते नज़र आते हैं। और यह दिलों का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

झुकाव उस दुआ का भी नतीजा है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी ज़ुर्रियत के बारे में की थी कि :–

(तरजमा) "ऐ हमारे परवर दिगार! मैंने एक वीरान बस्ती में तेरे मोहतरम घर के पास अपनी कुछ औलाद को ला बसाया है। ताकि ऐ हमारे परवर दिगार! वह नमाज़ पढ़ा करें। तू लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ माएल कर दे।"

हज़रत आदम[अ०] पर दुरूद व सलवात के सिलसिले में हज़रत[अ०] की दुआ

(तरजुमा) "बारे इलाहा! वह आदम[अ०] जो तेरी आफ़रीनिश के नक़्शे बदीअ और ख़ाक से पैदा होने वालों में तेरी रुबूबियत के पहले मोअतरिफ़ और तेरे बन्दों और तेरी मख़लूक़ात पर तेरी पहली हुज्जत और तेरे अज़ाब से तेरे दामने अफ़्वो में पनाह मांगने की राह दिखाने वाले और तेरी बारगाह में तौबा की राहें आशकारा करने वाले और तेरी मअरफ़त और तेरे मख़लूक़ात के दरमियान वसीला बनने वाले हैं। वह कि जिन पर ख़ुसूसी करम व अहसान और मेंहरबानी करते हुए उन्हें वह तमाम बातें बतला दें जिनके ज़रिये तू उनसे राज़ी व ख़ुशनूद हुआ। वह कि जो तौबा व इनाबत करने वाले हैं। जिन्होंने तेरी मअसियत पर इसरार नहीं किया। जो तेरे हरम में सर मुण्डवा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कर इज्ज़ व फ़रोतनी करने वालों में साबिक़ हैं। वह जो मुख़ालिफ़त के बाद एताअत के वसीले से तेरे अफ़वो व करम के ख़्वाहिशमन्द हुए और उन तमाम अम्बिया के बाप हैं जिन्होंने तेरी राह में अज़ीयतें उठाईं। और ज़मीन पर बसने वालों में सबसे ज़्यादा तेरी एताअत व बन्दगी में सअ़ी व कोशिश करने वाले हैं। उन पर ऐ मेहरबानी करने वाले तू अपनी जानिब से और अपने फ़रिश्तों और ज़मीन व आसमान में बसने वालों की तरफ़ से रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह उन्होंने तेरी क़ाबिले एहतेराम चीज़ों की अज़मत मलहूज़ रखी। और तेरी ख़ुशनूदी व रिज़ामन्दी की तरफ़ हमारी रहनुमाई की। ऐ तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।"

आसमान का नीलगूँ शामियाना सितारों की क़ंदीलों से आरास्ता था। आफ़ताब व माहताब की आमदो शुद से बहार अफ़रोज़ सुबहों और कैफ़ अफ़ज़ा शामों का सिलसिला भी जारी था। मगर फ़ितरत की इस रंगीनी व रअनाई से लुत्फ़ अन्दोज़ होने वाली आंखें हुनूज़ महवे ख़्वाब थीं दरियाओं की तह में मोती और पहाड़ों के दामन में लाल व जवाहिर बिखरे हुए थे। मगर उन्हें आवेज़ए ताज बनाने वाली कोई हस्ती न थी। अजज़ाए अर्ज़ी में कुव्वते नामिया तड़प रही थी। मगर कोई न था जो इससे फ़ायदा उठा कर ज़मीन को चमन व लालाज़ार में तब्दील करता कि कुदरत ने ख़राबए आलम को बसाने और ज़ुलमतकदा दहर में उजाला करने के लिये तख़लीक़े आदम[अ०] की बुनियाद डाली। चुनान्चे इरशादे इलाही है :—

(तरजमा) "मैं ख़मीर की हुई मिट्टी से जो (सूख

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कर) खन्खनाने लगे एक बशर पैदा करने वाला हूं"।

जब सन्नाए अज़ल ने मिट्टी का पुतला बनाया और उसकी नोक पलक दुरूस्त करने के बाद उसमें रूह फूंकी तो ज़िन्दगी के ख़दो ख़ाल निखर आये। हिस व शऊर की दुनिया आबाद हो गयी, और खुदा के आगे झुकने वाली पेशानियां आदम[अ०] के सामने सजदए तआज़ीमी के लिये झुक गयीं आदम[अ०] ने आग़ोशे हयात में करवट बदलते ही ज़बान से अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन कह कर अपने ख़ालिक़ व परवर दिगार की रुबूबियत का एतराफ़ किया हज़रत[अ०] ने मिट्टी में ख़ल्क़ होने वालों में उन्हें अल्लाह तआला की रुबूबियत का पहला मोअतरिफ़ इसी बिना पर फ़रमाया है। यूं तो उसकी रुबूबियत व ख़ालक़ियत के अव्वल मोअतरिफ़ वह थे जो अव्वलीने मख़लूक़ थे। और उस वक़्त जबकि आदम[अ०] के वुजूद की बुनियाद भी न रखी गयी थी। उनकी तस्बीह व तक़दीस की आवाज़ों से मलकूती फ़िज़ा गूंज रही थी। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है :–

(तरजमा) "मैं उस वक़्त भी नबी[स०] था जबकि आदम[अ०] आबो गिल के पर्दे में नेहाँ थे।"

बहरहाल जब आदम[अ०] की तख़लीक़ मुकम्मल हो गयी तो क़ुदरत ने कुछ अर्से के लिये जन्नत की बहार आफ़रीन फ़िज़ाओं में उन्हें ठहराया ताकि अपनी जाये बाज़गश्त को देख लें और दुनिया की रंगीनियों में उसकी याद बाक़ी रहे। आदम[अ०] इस सुकून परवर फ़िज़ा में राहत व आराम से हमकिनार थे और ऐश व नेअमत में ज़िन्दगी के दिन बसर कर रहे थे और अल्लाह तआला ने उन्हें जन्नत की हर नेअमत से बहरामन्द होने की इजाज़त दे रखी थी। मगर एक ख़ास दरख़्त के फल से यह कह कर रोक दिया था कि तुम दोनों इस दरख़्त के नज़दीक भी न जाना। मगर

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

शैतान[ल०] जो हज़रत आदम[अ०] की तरफ़ से अपने दिल में कीना व अनाद रखता था, उनसे कहने लगा कि :–

(तरजमा) "ऐ आदम[अ०]! क्या मैं तुम्हें हमेशगी के दरख़्त और ऐसी बादशाही का पता दूं? जो नाक़ाबिले ज़वाल है।"

आदम[अ०] दरख़्ते ख़ुल्द और दायमी तक़र्रूब के हुसूल के लिये उसके बहकाने में आ गये और उस दरख़्त का फल खा लिया जिसके नतीजे में क़ुदरत की तरफ़ से एताब के आसार ज़ाहिर हुए। जन्नत की फ़िज़ा अजनबी सी नज़र आने लगी। जिस्म से लिबास तक जुदा हो गया आदम[अ०] यह देख कर घबराये। अपने किये पर नादिम व पशेमान हुए और अल्लाह से सीखे हुए कलमात का वास्ता दे कर उसके हुज़ूर गिड़गिड़ाये। तौबा व अनाबत का हाथ फैलाया। आख़िर अल्लाह ने उनकी तौबा को क़ुबूल फ़रमाया। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजमा) "आदम[अ०] ने अपने परवर दिगार से कुछ कलमे सीखे। फिर अल्लाह तआला ने उनकी तौबा को क़ुबूल फ़रमाया। और वह तौबा क़ुबूल करने वाला बड़ा मेहरबान है।"

तौबा क़ुबूल फ़रमाने के बाद उन्हें जहां के लिये ख़ल्क़ फ़रमाया था वहां पर उतर जाने का हुक्म दिया और ज़मीन को उनके लिये जाये क़रार व जाये इन्तेफ़ाअ क़रार दिया। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

(तरजमा) "तुम्हारे लिये ज़मीन में ठहराओ और एक वक़्ते मुक़र्रर तक फ़ायदा उठाना है।"

हज़रत आदम[अ०] के वाक़आ में क़ुरआनी तअबीरात कुछ इस क़िस्म के हैं जिनसे उनका गुनाहगार होना ज़ाहिर होता है। हालांकि अम्बिया का ग़र्ज़े

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बेअसत के पेशे नज़र मासूम होना ज़रूरी है। चुनान्चे इस सिलसिले पहला शुबहा यह होता है कि उन्हें आसी कहा गया है। जैसा कि इरश बारी है :– "आदम[अ०] ने अपने परवर दिगार की नाफ़रमानी की और इसयान व नाफ़रमानी का लाज़मी नतीजा दोज़ख़ है। जैसा कि कुदर का इरशाद है :–

(तरजमा) "जो अल्लाह तआला और उसके रसूल[स०] की नाफ़रमानी करता है उसके लिये यक़ीनन् दोज़ख़ की आग है।"

लेहाज़ा जब आदम[अ०] इसयान के नतीजे में दोज़ख़ के मुस्तहक़ क़र पाये तो उनकी इस्मत कहां बाक़ी रह सकती है। क्योंकि हर वह फ़े जिसकी सज़ा जहन्नुम हो वह यक़ीनन् गुनाह और इस्मत के मनाफ़ी होता है।

दूसरा शुबहा यह है कि उन्हें गुमराह और हिदायत से मुन्हरिफ़ क़र दिया गया है जैसा कि इरशादे इलाही है "वह गुमराह हो गये ग़वाएत के माने गुमराही के हैं। चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम ने रूश (हिदायत) के मुक़ाबिले में इसे बयान किया है। चुनान्चे इरशादे इलाही है:

हिदायत गुमराही से अलग होकर ज़ाहिर हो चुकी

तीसरा शुबहा यह है कि उन्हें दरख़्त के क़रीब जाने के बाद तौबा व एहतियाज हुई। और तौबा किसी अम्र नापसन्दीदा ही के नतीजे में ह सकती है। चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम ने उनकी तौबा का ज़िक्र क़ुबूलिय तौबा के ज़िम्न में इस तरह किया है कि :–

"अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली। वह यक़ीनन् बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला बड़ा मेहरबान है।"

चौथा शुबहा यह है कि उन्होंने एक ऐसे फ़ेल का इरतेकाब किय जिससे उन्हें रोका गया था। चुनान्चे क़ुदरत का इरशाद है :–

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

"क्या मैंने तुम्हें उस दरख़्त से नहीं रोका था।"

और जिस चीज़ से रोका था उसके बजा लाने के नाम गुनाह है।

पांचवां शुबहा यह है कि वह दरख़्त के पास जाने के नतीजे में ज़ालिम ठहरे। जैसा कि इरशादे इलाही है :–

"उस दरख़्त के नज़दीक न जाना। वरना ज़ुल्म करने वालों में से होगे।"

और ज़ुल्म ख़्वाह किसी नौइय्यत का हो इस्मत के मनाफ़ी है।

छठा शुबहा यह है कि हज़रत आदम[अ०] ने ख़ुद अपने नुक़्सान रसीदा होने का एतराफ़ किया है। चुनान्चे कुरआन मजीद में उनकी ज़बानी इरशाद है :–

"अगर तू हमें माफ़ नहीं करेगा और हम पर रहम नहीं खायेगा तो हम बिला शुबहा नुक़सान उठाने वालों में से होंगे।"

और नुक़्सान का तरतिब गुनाह ही पर हो सकता है।

सातवां शुबहा यह है कि वह शैतान के बहकाने में आ गये जिसके बाद उन्हें जन्नत से निकलना पड़ा। जैसा कि इरशादे इलाही है :–

"शैतान ने उनको वहां से डगमगाया तो उन्हें इस हालत से जिसमें थे निकलवा दिया।"

और जो लग़्ज़िश शैतान मलऊन के बहकाने का नतीजा हो वह बहरहाल इस्मत से साज़गार नहीं हो सकती।

पहले शुबहा का जवाब यह है कि इसयान के मआनी अम्रे इलाही की मुख़ालफ़त के हैं। ख़्वाह वह अम्र बतौर वजूब हो ख़्वाब बतौर नदब व इस्तेहबाब अगर अम्रे वाजिबी की मुख़ालफ़त हो तो वह गुनाह है जिस पर सजा मुरत्तब होती है। और अगर नदबी व इस्तेहबाबी हो तो उसकी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुख़ालफ़त को गुनाह नहीं क़रार दिया जा सकता। इसी तरह अम्र इरशादी की मुख़ालफ़त भी गुनाह नहीं है। अगर चे अम्र नदबी व इस्तेहबाबी की मुख़ालफ़त को भी इसयान से ताबीर किया जाता है और अम्र इरशादी की मुख़ालफ़त पर भी इसयान का इतलाक़ होता है। चुनान्चे कहा जाता है कि "मैंने उसे दवा के पीने का हुक्म दिया मगर उसने मेरी नाफ़रमानी की"। इसी तरह इब्नुल मंज़िर ने यज़ीद इब्ने मोहलिब अमीरे ख़ुरासान को मुख़ातिब करते हुए कहा :–

> "मैंने तुम्हें एक पुख़्ता और सोची समझी हुई राय दी मगर तुमने मेरी नाफ़रमानी की जिसके नतीजे में तुम्हें इमारत से महरूम और शर्मसार होना पड़ा।"

• इन दोनों मिसालों में अम्र, अम्र इरशादी है जिसकी हैसियत सिर्फ़ एक मशविरा व राय की होती है जिसमें मुख़ातिब ही का मफ़ाद मलहूज़ होता है और इसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी पर क़हरन् कुछ मफ़ासिद मुरत्तब होते हैं। जैसे किसी को संखिया से परहेज़ करने का मशविरा दिया जाये ताकि वह हलाकत व तबाही से दो चार न हो। उसी तरह हज़रत आदम[अ०] को दरख़्त का फल खाने से मना किया गया ताकि वह मुज़िरतों से बचे रहें जो उस खाने का क़हरी नतीजा थीं। चुनान्चे ख़ुदा वन्दे आलम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जब दरख़्त के पास जाने से मना किया तो उसके मफ़ासिद से भी आगाह कर दिया। इस तरह कि उन्हें शैतान मलऊन की दुश्मनी से मुतनब्बेह करते हुए इरशाद फ़रमाया :–

> "ऐसा न हो कि वह तुम्हें जन्नत से निकाल बाहर करे कि तुम बदबख़्ती मोल लो। बेशक तुम्हारे लिये यहां यह सामान है कि तुम यहां न भूखे होगे, न बरहना और न प्यास और धूप से साबेक़ा पड़ेगा।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

अगर यह इस क़िस्म की नही होती जिसकी मुख़ालफ़त गुनाह क़रार पाती है, तो भूख, प्यास और उरयानी व तपिश के बजाये अल्लाह तआला अपने ग़ज़ब व इन्तेक़ाम का ज़िक्र करता। लेकिन यह कुछ नहीं है जिससे यह ज़ाहिर है कि इस नही की हैसियत सिर्फ़ नही इरशादी की थी जिसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी गुनाह नहीं है। मगर आदम[अ०] की रिफ़अत व बुलन्द पायगी की बिना पर उसे इसियान से ताबीर किया गया है। और यह इसयान की निस्बत सिर्फ़ हज़रत आदम[अ०] की तरफ़ दी गयी है। हालांकि हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम भी नही में शरीक थीं और खाने में भी शरीक और जन्नत से निकलने में भी शरीक रहीं। मगर हर मंज़िल पर शरीक होने के बावजूद उनकी तरफ़ इसयान की निस्बत नहीं है। अगर यह नही हुरमत की बिना पर होती तो हव्वा को अलग न किया जाता, और वह इस इसयान में भी शरीक क़रार पातीं। यह इस अम्र की दलील है कि यह सिर्फ़ तरके औला था जो नबूव्वत की वजह से दसयान कहलाया। और तरके औला वही है जो बाज़ के एतबार से क़ाबिले मवाख़िज़ा और बाज़ के एतबार से क़ाबिले मवाख़िज़ा न हो। इस लिये शरीक नही होने के बावजूद हव्वा[अ०] की ख़िलाफ़वर्ज़ी को इसयान नहीं कहा गया।

दूसरे शुबहा का जवाब यह है कि ग़वाएत का मतलब यह होता है कि इन्सान किसी मक़सद को हासिल करना चाहे और सही तरीक़ेकार अख़्तियार न करने की वजह से अपने मक़सद में नाकाम रहे। चुनान्चे एक शायर का क़ौल है :–

"जो अपने मक़सद को पा लेता है लोग उसकी मदह
व सताइश करते हैं, और जो नाकाम रहता है उसे
इस नाकामी पर मलामत करने वाला भी मिलता है।"

चुनान्चे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का अस्ल मक़सद तक़र्रुबे इलाही

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

था जिसका वसीला उन्होंने दरख़्त के फल को क़रार दिया। चुनां शैतान[मल०] ने उनसे कहा कि :–

"तुम्हारे परवर दिगार ने तुम दोनों को दरख़्त (का फल खाने) से सिर्फ़ इस लिये मना किया है कि मुबादा तुम दोनों फ़रिश्ते बन जाओ या हमेशा हमेशा यहीं रह जाओ।"

चूंकि मक़सद हज़रत आदम[अ०] का हुसूले तक़र्रुब था न लज़्ज़ अन्दोज़ी व शिकम परवरी; इस लिये बलेहाज़ मक़सद तो फल खाने व गुनाह नहीं कहा जा सकता, लेकिन हुसूले तक़र्रुब का जो उसे वसील क़रार देना चाहा वह वसीला साबित न हो सका जिसके नतीजे में व महरूम व नाकाम रहे और इसी महरूमी व नाकामी को ग़वाएत से ताबी किया गया है।

तीसरे शुबहा का जवाब यह है कि बेशक हज़रत आदम[अ०] ने अपने फ़े पर नादिम होते हुए तौबा की, लेकिन तौबा के लिये यह ज़रूरी नहीं है कि वह किसी गुनाह ही के नतीजे में हो। क्योंकि तौबा का मतलब अपने किसी फ़ेल या तर्क पर नादिम होना है। और यह निदामत इस्तेहबाबी व नदबी अ के तर्क पर भी हो सकती है। और ख़ासाने ख़ुदा अपने मक़ाम व मंज़िल के पेशे नज़र अम्रे मन्दूब के तर्क, और फ़ेले मकरूह के इरतेकाब पर नादि व पशेमान होते और उसे गुनाह तसव्वुर करते हुए उससे तौबा करते हैं।

चौथे शुबहा का जवाब यह है कि हर मनही अनहो का इरतेकाब गुना नहीं है। क्योंकि नही की दो क़िस्में हैं। एक तहरीमी और दूसरे तंज़ीही नही तहरीमी का मतलब यह है कि उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी गुनाह हो और उस पर सज़ा व उक़ूबत सही हो, और नही तंज़ीही का मतलब यह है कि उससे किनाराकशी पसन्दीदा हो। मगर इसके इरतेकाब पर सज़ा व अज़ाब न हो।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इस मक़ाम पर नही, नही तहरीमी नहीं है इस लिये कि अगर यह नही तहरीमी होती तो इस पर हज़रत आदम[अ०] सज़ा के मुस्तहक़ होते। और अम्बिया[अ०] की शान इससे कहीं बुलन्द तर है कि उनके लिये सज़ा व उक़ूबत को तजवीज़ किया जा सके। और फिर यह कि नही तहरीमी एक तकलीफ़े शरई की हैसियत रखती है, और जन्नत मक़ामे अमल नहीं है जहां उन पर अम्रो नही के ज़रिये कोई तकलीफ़ आयद होती। लेहाज़ा जन्नत के दारूल जज़ा होने के लिहाज़ से इस नही को नही तंज़ीही क़रार दिया जायेगा जिसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी तर्के औला शुमार होती है, न गुनाह व मअसियत। अलबत्ता इस तर्के औला का तबई नतीजा इस तरह ज़ाहिर हुआ कि उनके बदन से लिबास उतरवा लिया गया और जन्नत से उतार दिये गये और उसे सज़ा से ताबीर नहीं किया जा सकता। क्योंकि वह इसी ज़मीन को आबाद करने के लिये पैदा किये गये थे। मुम्किन है कि जन्नत में उनके क़याम की मुद्दत कुछ और तवील हो जाती, कि तर्के औला के बाएस हिक्मते इलाही इसकी मुक़तज़ी हुई कि उन्हें मक़सदे तख़्लीक़ की तकमील के लिये जल्द ज़मीन पर उतार दिया जाये और यह तर्के औला ज़मीन की आबादकारी का ज़रिया क़रार पा गया। चुनान्चे हदीसे क़ुदसी में वारिद हुआ है कि :-

"मैंने आदम[अ०] की मअसियत को दुनिया की आबादी का सबब क़रार दिया।"

पांचवें शुबहा का जवाब यह है कि ज़ुल्म के माने हुदूदे इलाहिया को नज़र अन्दाज़ करने के हैं। चुनान्चे इरशादे इलाही है :-

"जो लोग अल्लाह तआला की क़ायम की हुई हदों से तजावुज़ करते हैं वही लोग ज़ालिम हैं।

और यह हुदूद कभी बतौरे वजूब व एलज़ाम होते हैं और कभी बतौरे इस्तेहबाब व नदब। अगर हद की पाबन्दी बतौरे वजूब हो तो इससे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मुतजाविज़ होना गुनाह क़रार पायेगा। और अगर बतौरे नदब व इस्तेहजा हो तो इससे मुतजाविज़ होना तर्के औला होगा। और तर्के औला इस्मत व मनाफ़ी नही है।

छठे शुबहा का जवाब यह है कि ख़ुसरान के मआनी किसी मनफ़अत से महरूमी के हैं और मनफ़अत से महरूमी और चीज़ है और गुनाह और चीज़ है। चुनान्चे मुस्तहब उमूर को तर्क करना गुनाह नहीं है मगर ख़ुसरान यानी सवाब से महरूमी इसमें भी है। मक़सद यह है कि हज़रत आदम[अ] ने तर्के औला के इरतेकाब से उन फ़ायदों और मनफ़अतों को खो दिया जो उन्हें हासिल थीं, और यही नुक़सान व ख़ुसरान है।

सातवें शुबहा का जवाब यह है कि हज़रत आदम[अ०] का जन्नत से निकलना और ज़मीन पर उतरना सज़ा भुगतने के लिये न था। इस लिये कि आदम[अ०] तो पैदा ही ख़िलाफ़ते अर्ज़ी के लिये हुए थे। और अपने क़लमरौ ममलेकत में आना सज़ा मुतसुव्वर नहीं हो सकता। अगर ऐसा होता तो फिर आदम[अ०] के लिये जन्नत दारूल अमल और दुनिया दारूल जज़ा होती हालांकि जन्नत दारूल जज़ा और दुनिया दारूल अमल है। और फिर एक क़ौल की बिना पर हज़रत आदम[अ०] के हबूत का वाक़या तौबा के क़ुबूल होने के बाद हुआ। तो जब तौबा क़ुबूल हो गयी तो उसके बाद सज़ा का सवाल ही पैदा नहीं होता। और न सज़ा व अक़ाब का कोई महल रहता है। चुनान्चे हुबूते आदम[अ०] के सिलसिले में इरशादे बारी है :–

> "आदम[अ०] ने अपने परवर दिगार की नाफ़रमानी की तो वह महरूमी से दो चार हुए। उसके बाद उनके परवर दिगार ने उन्हें चुन लिया। और तौबा क़ुबूल फ़रमाई और उनकी हिदायत की। फ़रमाया कि तुम दोनों बेहिश्त से नीचे उतर जाओ।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इस आयत में हुबूत का तज़किरा तौबा के बाद है, और इसे सज़ा व उक़ूबत के नतीजे के तौर पर बयान नहीं किया बल्कि साफ़ ज़ाहिर है कि उनके मक़सदे तख़लीक़ के पेशे नज़र उन्हें ज़मीन पर उतारा। और इस क़ौल की ताईद अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम के इस इरशाद से भी होती है :-

"फिर अल्लाह तआला ने आदम[अ०] के लिये तौबा का दामन फैलाया, उन्हें रहमत के कलमे सिखाए। जन्नत में दोबारा पहुंचाने का उनसे वादा किया और उन्हें दारे इब्तेला व महले अफ़ज़ाइशें नस्ल क़रार दिया।"

कर्ब व मुसीबत से तहफ़्फ़ुज़ और लग़ज़िश व ख़ता से मआफ़ी के लिये हज़रत[अ०] की दुआ

ऐ मेरे मअबूद! मेरे दुश्मनों को मेरी हालत पर दिल में ख़ुश होने का मौक़ा न दे और मेरी वजह से मेरे किसी मुख़लिस व दोस्त को रंजीदा ख़ातिर न कर। बारे इलाहा! अपनी नज़रे एनायत से ऐसी नज़रे तवज्जोह मेरे शामिले हाल फ़रमा जिससे तू उन मुसीबतों को मुझसे टाल दे जिनमें मुझे मुब्तिला किया है और उन एहसानात की तरफ़ मुझे पलटा दे जिनका मुझे ख़ूगर बनाया है। और मेरी दुआ और हर उस शख़्स की दुआ को जो सिदक़े नीय्यत से तुझे पुकारे क़ुबूल फ़रमा, क्योंकि मेरी क़ुव्वत कमज़ोर, चारहजूई की सूरत नापैद, और हालत सख़्त से सख़्त तर हो

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गयी है और जो कुछ तेरे मख़लूक़ात के पास है उससे मैं बिल्कुल नाउम्मीद हूं। अब तो तेरी पहली नेअमतों के दोबारा हासिल होने में तेरी उम्मीद के अलावा कोई सूरत बाक़ी नहीं रही। ऐ मेरे मअबूद! जिन रंज व आलाम में गिरफ़्तार हूं उनसे छुटकारा दिलाने पर तू ऐसा ही क़ादिर है जैसा उन चीज़ों पर कुदरत रखता जिनमें मुझे मुब्तिला किया है। बेशक तेरे एहसानात की याद मेरा दिल बहलाती और तेरे इनाम व तफ़ज़्ज़ुल की उम्मीद मेरी हिम्मत बन्धाती है। इस लिये कि जब से तूने मुझे पैदा किया है मैं तेरी नेअमतों से महरूम नहीं रहा। और तू ही ऐ मेरे मअबूद! मेरी पनाहगाह, मेरा मलजा, मेरा मुहाफ़िज़ व पुश्तपनाह, मेरे हाल पर शफ़ीक़ व मेहरबान और मेरे रिज़्क़ का ज़िम्मेदार है। जो मुसीबत मुझ पर वारिद हुई है वह तेरे फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र में और जो मेरी मौजूदा हालत है वह तेरे इल्म में गुज़र चुकी थी। तो ऐ मेरे मालिक व सरदार! जिन चीज़ों को तेरे फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र ने मेरे हक़ में तय किया और लाज़िम व ज़रूरी क़रार दिया है उन चीज़ों में से मेरी आफ़ियत और वह चीज़ जिससे मेरी बहबूदी और जिस हालत में हूं उससे रेहाई वाबस्ता है क़रार दे। क्योंकि मैं इस मुसीबत के टालने में किसी पर उम्मीद नहीं रखता और न इस सिलसिले में तेरे अलावा किसी पर भरोसा करता हूं। तो ऐ जलालत व बुज़ुर्गी के मालिक

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

मेरे इस हुस्ने ज़न के मुताबिक़ साबित हो जो मुझे तेरे बारे में है और मेरी कमज़ोरी व बेचारगी पर रहम फ़रमा। मेरी बेचैनी को दूर कर। मेरी दुआ कुबूल फ़रमा। मेरी ख़ता व लग़ज़िश को माफ़ कर दे और मुझ पर और जो भी तुझ से दुआ मांगे अफ़वो व दरगुज़र करके एहसान फ़रमा। ऐ मेरे मालिक! तूने मुझे दुआ का हुक्म दिया और कुबूलियते दुआ का ज़िम्मा लिया। और तेरा वादा ऐसा सच्चा है जिसमें ख़िलाफ़वर्ज़ी व तब्दीली की गुंजाइश नहीं है। तू अपने नबी^{स०} और अब्दे ख़ास मोहम्मद^{स०} और उनके अहलेबैत^{अ०} अतहार पर रहमत नाज़िल फ़रमा। और मेरी फ़रयाद को पहुंच। क्योंकि तू उनका फ़रयाद रस है जिनका कोई फ़रयाद रस न हो। और उनके लिये पनाह है जिन के लिये कोई पनाह न हो। मैं ही वह मुज़तर व लाचार हूं जिसकी दुआ कुबूल करने और उसके दुख दर्द के दूर करने का तूने इन्तेज़ाम किया है। लेहाज़ा मेरी दुआ को कुबूल फ़रमा। मेरे ग़म को दूर और मेरे रंज व अन्दोह को बरतरफ़ फ़रमा और मेरी हालत को पहली हालत से भी बेहतर हालत की तरफ़ पलटा दे। और मुझे इस्तेहक़ाक़ के बक़द्र अज्र न दे बल्कि अपनी उस रहमत के लिहाज़ से जज़ा दे जो तमाम चीज़ों पर छाई हुई है ऐ जलालत व बुज़ुर्गी के मालिक तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद^{स०} और आले मोहम्मद^{स०} पर और मेरी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुआ को सुन और इसे कुबूल फ़रमा, ऐ ग़ालिब! ऐ साहबे इक़्तिदार!

हज़रत[अ०] ने इस दुआ के शुरू में उन मसाएब व आलाम से बचाव की इल्तेजा की है जो दुश्मनों की शमातत और दोस्तों के लिये अज़ीय्यत का बाएस होते हैं। शमातत का मतलब यह है कि दुश्मन अपने किसी हरीफ़ को रंज व मुसीबत और कर्ब व इन्दोह में देख कर बज़ाहिर हमदर्दी का इज़हार करे और बबातिन ख़ुश हो। और यह शमातत और हमदर्दाना लहजे में तंज़ की आमेज़िश इन्तेहाई रूहानी अज़ीय्यत का बाएस होती है। और अम्बिया व ख़ासाने ख़ुदा कड़वे से कड़वे घूंट पीने के बावजूद उसकी तलख़ी से पनाह मांगते थे। चुनान्चे हज़रत अय्यूब[अ०] के मुतअल्लिक़ वारिद हुआ है कि जब उनकी तमाम की तमाम औलाद मर गयी, माल मवेशी तल्फ़ हो गये और ख़ुद मुख़्तलिफ़ बीमारियों का हदफ़ बन गये तो ख़ुदा वन्दे आलम ने उनके सब्र व शुक्र के नतीजे में उन्हें पहले से बढ़ कर नेअमतें दीं। इस मौक़े पर उनसे पूछा गया कि ज़मानए इब्तिला व आज़माइश में कौन सी मुसीबत आप पर सबसे ज़्यादा गरां गुज़री? आप[अ०] ने फ़रमाया कि दुश्मनों की शमातत और उनका इज़हारे रंज व अफ़सोस के साथ ख़न्दए ज़ेर लब। इसी शमातत की तलख़ी की बिना पर अब्बास इब्ने मरदास सलमी के यह दो शेर अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब[अ०] की ज़बान से निकल जाया करते थे :–

"अगर तुम मुझ से पूछते हो कि कैसे हो? तो सुनो कि मैं ज़माने की सख़्तियां झेल ले जाने में बड़ा मज़बूत और कोहे सब्र व तहम्मुल हूं"

"मुझे यह गवारा नहीं कि मुझमें हुज़्न व ग़म के आसार दिखाई पड़ें कि दुश्मन ख़ुश होने लगें और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दोस्तों को रंज पहुंचे।"

हज़रत[अ०] शमातते आदा से दुआए तहफ़्फ़ुज़ के बाद अल्लाह तआला की नज़रे करम व निगाहे मरहमत की इल्तेजा करते हैं। क्योंकि मौत व हयात, इज़्ज़त व ज़िल्लत, सेहत व बीमारी और फ़क्र व ग़ना सब उसी नज़रे इलाही का करिश्मा व नतीजा हैं। चुनान्चे हज़रत[अ०] ही का इरशाद है :–

"अल्लाह तआला के लिये एक लौहे महफ़ूज़ है जिस पर वह हर रोज़ तीन सौ मर्तबा नज़र डालता है और हर नज़र के नतीजे में वह किसी को ज़िन्दगी देता है किसी को मौत, किसी को इज़्ज़त देता है किसी को ज़िल्लत और जो चाहता है वह करता है।"

इस निगाहे लुत्फ़ व मरहमत के बाद इन्सान सिर्फ़ उसी से अपनी उम्मीदें वाबस्ता रखता है और उसके अलावा हर फ़र्द से मायूस व नाउम्मीद हो जाता है। क्योंकि रिजा सादिक़ वही है जिसके बाद दुनिया की हर मख़लूक़ से इस्तेग़ना व बेनयाज़ी हो जाये, और यह बेनयाज़ी उम्मीद व रिजा का लाज़मी नतीजा है। और जो अल्लाह तआला के बजाये दूसरों से उम्मीद रखता है, वह सरापा फ़क्र व एहतियाज नज़र आता है। अगरचे माल व दौलत रखता हो, और अल्लाह तआला से उम्मीद रखने वाला फ़क्र व तंगदस्ती में भी ग़नी व बेनयाज़ रहता है। इस लिये कि उसे यक़ीन होता है कि अल्लाह तआला ख़ुद रिज़्क़ का ज़ामिन व कफ़ील है और वह ज़िन्दगी के किसी दौर में उसका सिलसिला बन्द नहीं करेगा। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"उसने ज़मीन पर चलने फिरने वाली हर मख़लूक़ की रोज़ी का ज़िम्मा लिया है।"

उसके बाद अपने मसाएब व मेहन के सिलसिले में क़ज़ा व क़द्रे इलाही

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

का ज़िक्र किया है। इस तरह कि जो मसाएब व आलाम मुझ पर वारिद हु हैं वह अल्लाह तआला के इल्म और फ़ैसलए क़ज़ा व क़द्र के मुताबिक़ है मसअलए क़ज़ा व क़द्र उन दक़ीक़ मसाएल में से है जिसमें सतही ज़ेहनिय के लोग ग़ौर व फ़िक्र से इत्मिनान व यक़ीन की रौशनी हासिल नहीं क सकते बल्कि बारीकियां और कावशें उसे और पेचीदा बना देती हैं। इस लिये अवाम को इसमें ग़ौर व खौज़ और रद्द व कद से मना किया गय है। चुनान्चे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम से एक शख़्स ने क़ज़ा व क़ के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप ने उससे फ़रमाया, "यह एव गहरा समन्दर है इसमें न उतरो।" उसने फिर पूछा तो फ़रमाया "यह एक तारीक रास्ता है इसमें क़दम न उठाओ।" फिर पूछा तो फ़रमाया "यह अल्लाह तआला का एक राज़ है इसे जानने की ज़हमत न उठाओ।" यह अक़्ल की दरमान्दगी और फ़हम व इदराक की नारसाई ही है, जो इन्सान को कभी जब्र की तरफ़ ले जाती है और कभी तफ़वीज़ तक पहुंचा देती है। चुनान्चे इस क़ज़ा व क़द्र में फ़िक्र व तअम्मिक़ के नतीजे में एक गिरोह जब्र का क़ाएल हो गया इस तरह कि इन्सान से जो अच्छे बुरे अफ़आल सादिर होते हैं वह उनके बजा लाने पर मजबूर है और अपनी अच्छाई, बुराई, नफ़ा व नुक़सान के सिलसिले में उसे ज़रा अख़्तियार नहीं है, और एक गिरोह तफ़वीज़ का क़ाएल हो गया। इस तरह कि इन्सान से जो अफ़आल भी सादर होते हैं वह अल्लाह तआला के इल्म व इरादे से बाहर और उसकी क़ज़ा व क़द्र से बेनयाज़ होते हैं। मगर फ़िरक़ए इमामिया ने जो राह अख़्तियार की है वह उन दोनों राहों के दरमियान जाती है और दोनों से बच कर निकलती है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम का इरशाद है :—

"न जब्र है, न तफ़वीज़। बल्कि हक़ीक़त उन दोनों के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दरमियान है।''

मतलब यह है कि ना तो ख़ुदा की तरफ़ से बन्दों पर जब्र है और न उनके अफ़आल व आमाल को अपने क़ज़ा व क़द्र के हुदूद से बाहर रखा है। बल्कि इन्सान नेक आमाल बजा लाता है तो इस लिये कि उसके इरादे व अख़्तियार के साथ लुत्फ़ व तौफ़ीक़े इलाही शरीके हाल होती है, और बुरे आमाल का मुरतकिब होता है तो इस लिये कि उसने बाअख़्तियारे ख़ुद ऐसी सूरत पैदा कर ली है, कि उससे तौफ़ीक़ सल्ब हो जाती है और अल्लाह उसके ख़ुद अख़्तियारी अफ़आल के नतीजे में उसे गुमराहियों में भटकने के लिये खुला छोड़ देता है। इस ''अम्रबीन अमरीन'' को इस तरह समझना चाहिये कि किसी के घर में बिजली नसब हो तो वह जब चाहे रौशनी कर सकता है और जब चाहे अन्धेरा। मगर इस अख़्तियार के बावजूद एक लिहाज़ से मजबूर भी है। वह इस तरह कि जो बिजली के मरकज़ पर मुसल्लत व कारफ़रमा है वह उसे बन्द कर दे तो यह लाख बटन दबाए तारों में बरक़ी रू नहीं दौड़ा सकता। क्योंकि बिजली का मरकज़ उसके हुदूद व अख़्तियार से बाहर है।

ख़ौफ़ व ख़तर के मौक़े पर हज़रत[अ०] की दुआ

''ऐ मेरे मअबूद! तेरे ग़ज़ब को कोई चीज़ रोक नहीं सकती सिवा तेरे हिल्म के, और तेरे अज़ाब से कोई चीज़ छुड़ा नहीं सकती सिवा तेरे अफ़वो व करम के, और तुझसे कोई चीज़ बचा नहीं सकती सिवा तेरी रहमत और तेरी बारगाह में तज़र्रुअ व ज़ारी के। ऐ मेरे मअबूद! तू उस क़ुदरत के ज़रिये जिससे मुर्दा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़मीनों को ज़िन्दा करेगा और बन्दों की (मुर्दा) रूहों को ज़िन्दगी देगा, मुझे कशाइश व फ़ारिग़ुल बाली अता कर और तबाह व बरबाद न होने दे, और (मौत से पहले) कुबूलियते दुआ से आगाह कर दे। ऐ मेरे परवर दिगार और मुझे रिफ़अत व सरबुलन्दी दे और पस्त व नगू निसार न कर। और मेरी इमदाद फ़रमा और मुझे रोज़ी दे। और आफ़तों से हिफ़्ज़ व अमान में रख। परवर दिगार! अगर तू मुझे बलन्द करे तो फिर कौन मुझे पस्त कर सकता है, और अगर तू पस्त करे तो कौन बलन्द कर सकता है। और ऐ मेरे मअबूद! मुझे ब-ख़ूबी इल्म है कि तेरे हुक्म में ज़ुल्म का शाएबा नहीं है और न तेरे इन्तेक़ाम में जल्दी। जल्दी तो वह करता है जिसे मौक़े के हाथ से निकल जाने का अन्देशा होता है। और ज़ुल्म करने की ज़रूरत उसे पड़ती है जो कमज़ोर व नातवां होता है। और तू ऐ मेरे मालिक! इससे कहीं ज़्यादा बलन्द व बरतर है। ऐ मेरे परवर दिगार! मुझे बला व मुसीबत का हदफ़ और अपने अज़ाब का निशाना न बना। और मुझे मोहलत दे और मेरे ग़म व इन्दोह को दूर कर। मेरी लग़ज़िश से दरगुज़र फ़रमा और मुसीबत मेरे पीछे न लगा, क्योंकि मेरी कमज़ोरी व बेचारगी तेरे सामने है। तू मुझे सब्र व सबात की हिम्मत दे, क्योंकि ऐ मेरे परवर दिगार! मैं कमज़ोर और तेरे आगे गिड़गिड़ाने वाला हूं। ऐ मेरे परवर दिगार! मैं तुझसे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तेरे ही दामने रहमत में पनाह मांगता हूं। लेहाज़ा मुझे पनाह दे और हर मुसीबत व इब्तिला से तेरे ही दामन में अमान का तलबगार हूं लेहाज़ा मुझे अमान दे। और तुझसे पर्दा पोशी चाहता हूं। लेहाज़ा जिन चीज़ों से मैं ख़ौफ़ व हरास महसूस करता हूं उनसे ऐ मेरे मालिक अपने दामने हिफ़्ज़ व हिमायत में छुपा ले और तू अज़ीम और हर अज़ीम से अज़ीमतर है। मैं तेरे और सिर्फ़ तेरे और महज़ तेरे ज़रिये (पर्दए हिफ़्ज़ व अमान में) छुपा हुआ हूं। ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! ऐ अल्लाह! तू मोहम्मद[स०] और उनकी पाक व पाकीज़ा आल[अ०] पर रहमत और कसीर सलामती नाज़िल फ़रमा।

यह दुआ दुनिया के आलाम व मसाएब और सूए अन्जाम से बचाव के लिये पढ़ी जाती है। इसमें अल्लाह तआला के हिल्म को उसके ग़ज़ब व इन्तेक़ाम से मानेअ, उसके अफ़वो व दरगुज़र को सज़ा व उक़ूबत से सिपर और उसकी रहमत और उसकी बारगाह में तज़र्रुअ व आजिज़ी को नजाते उख़रवी का ज़रिया क़रार दिया है। चुनान्चे उसका हिल्म आड़े न आता तो उसका सैले ग़ज़ब रोका न जा सकता, और अफ़वो व रहमत की कारफ़रमाई न होती तो बख़्शिश व निजात की कोई सूरत पैदा न होती। क्योंकि तक़ाज़ाए अद्ल ताज़ीर व ओक़ूबत है और इस तक़ाज़े को सिर्फ़ रहमत ही दबा सकती है जो उसके ग़ज़ब से साबिक़ है। अफ़वो व रहमत के ज़िक्र के बाद उसके इक़्तिदार की तरफ़ इशारा किया है कि वह ख़ुश्क ज़मीनों

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में शादाबी और मुर्दों में हयात पैदा कर दे सकता है। तो फिर क्या बईद कि वह तंगी व सख़्ती को वुसअत व कशाइश से, और फ़क्र व एहतिय को ग़ना व बेनयाज़ी से बदल दे जबकि वही रिज़्क़ व आफ़ियत का बख़्श वाला और रफ़अत व बलन्दी देने वाला है, और इसके अलावा क अख़्तियार व इक़्तेदार नहीं रखता। वह जिसे पस्त करना चाहे उसे क औज व उरूज पर नहीं पहुंचा सकता, और जिसे ज़लील करना चाहे उ कोई इज़्ज़त व रफ़अत नहीं दे सकता और जिसे अपनी नुसरत से महर करना चाहे उसे कोई मदद नहीं दे सकता, और इन तमाम सूरतों में उस अद्ल ही कारफ़रमा होता है और किसी मरहले पर ज़ुल्म नहीं करता। इ लिये कि ज़ुल्म की ज़रूरत उसे होती है जो कमज़ोर व नातवान हो। इ बिना पर कि उसे यह अन्देशा होता है कि अद्मे तशद्दुद की सूरत इक़्तिदार व तसल्लुत में कमी रूनुमा हो जायेगी और जो हर लिहाज़ तवाना व ग़ालिब है उसे अपने इक़्तिदार के तहफ़्फ़ुज़ के लिये ज़ुल्म व एहतियाज ही क्या है। इसी तरह वह गुनाहगारों को सज़ा देने में जल नहीं करता। इस लिये कि जल्दी वह करता है जिसे यह ख़तरा हो कि मुजरिम व गुनाहगार उसके पन्जे से निकल भागेगा। और जिसका मुही इक़्तिदार हम्मागीर हो उसे यह अन्देशा नहीं हो सकता कि कोई उसक गिरफ़्त से आज़ाद और उसके हुदूदे ममलिकत से बाहर निकल जायेग और फिर वह हर अज़ीम से अज़ीम तर है और इसके अलावा हर ची उसकी मख़लूक़ और हर शख़्स उसका परवरदा है। और अपनी ज़िन्दगी बक़ा में उसका दस्तनिगर है, और जो मोहताज व दस्तनिगर हो वह आज़ा कैसे रह सकता है।

हज़रत[अ०] ने दुआ के आख़िर में अल्लाह का नाम बार बार लिया है। य तकरार हिज़ व इल्तेज़ाज़ और तलब व इलहाह के लिये है और अज़का

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व औराद और दुआ व मुनाजात में ख़ासाने ख़ुदा की ज़बान पर अल्लाह का नाम ही ज़्यादा आता है और यह नाम उसके नामों में सबसे बुलन्दतर, मशहूर और नुमायां है और क़ब्ले इस्लाम जहां और मअबूदों के नाम तजवीज़ कर लिये गये थे वहां एक अनदेखी हस्ती का तसव्वुर भी था जो अल्लाह तआला के नाम से मौसूम की जाती थी। चुनान्चे जाहेलियत के दौर में लबीद की ज़बान से निकला हुआ यह शेर इसका शाहिद है :–

"देखो! अल्लाह के अलावा हर चीज़ बेहक़ीक़त और नापाएदार है और हर नेअमत के लिये बहरहाल फ़ना व ज़वाल है।"

इस नाम में और अल्लाह तआला के दूसरे नामों में यह फ़र्क़ है कि उसके तमाम नामों को इस नाम की तरफ़ मनसूब किया जा सकता है जैसे यह कि अल्लाह रहीम है, रहमान है, क़ादिर है। मगर उसे दूसरे नामों की तरफ़ मनसबू नहीं किया जा सकता कि यह कहा जाये कि रहीम अल्लाह है, रहमान अल्लाह है, क़ादिर अल्लाह है। क्योंकि अल्लाह[ज०] इस्मे ज़ात है और दूसरे असमा सिफ़ाती हैं। लेहाज़ा जिस तरह औसाफ़ का इन्तेसाब जात की तरफ़ होता है उसी तरह उसके सिफ़ाती नाम इस्मे ज़ात की तरफ़ मनसूब होंगे। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"अच्छी सिफ़तों वाले नाम अल्लाह तआला ही के लिये हैं लेहाज़ा उसे इन्हीं नामों से पुकारा करो"

दूसरे यह कि यह नाम सिर्फ़ ख़ालिक़े आलम के लिये मख़सूस है और किसी और पर इसका इतलाक न हक़ीक़तन् होता है न मजाज़न्। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"क्या तुम्हारे इल्म में उसका हमनाम कोई और भी है।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrililibrary.net

तीसरे यह कि यह उस ज़ात पर दलालत करता है जो जामे जमीः सिफ़ात है। और चूंकि इस्मे ज़ात है लेहाज़ा हर उस सिफ़त पर हावी होग जो अल्लाह तआला के लिये तज़वीज़ हो सकती है ब–ख़िलाफ़ दूसरे नाम के कि वह सिर्फ़ एक एक सिफ़त पर दलालत करते हैं जैसे क़ादिर सिफ़त कुदरत पर, आलिम सिफ़त इल्म पर, रहीम सिफ़त रहमत पर।

चौथे यह कि यह नाम मआनवी एतबार से उस हस्ती की निशानदेह करता है जो मआबूदियत व उलूहियत की हामिल हो। चुनान्चे यह नाम अगर ताला से मुश्तक़ है तो इसके मआनी होंगे "वह ज़ात जो इबादत व परस्तिश की सज़ावार है और तआला के मआनी तअबुद के हैं और आल से मुश्तक़ है तो उसके माने होंगे "वह ज़ात जिसकी तरफ़ मख़लूक़ात अपने मक़ासिद व हवाएज के लिये रूजूअ करती है। और आला के मआनी रूजूअ करने और सहारा ढूंढ़ने के हैं, और वला से मुश्तक़ है तो उसके मआनी होंगे वह ज़ात जिसके समझने में अक़्ल व दानिश सरगरदां और फ़हम व इदराक मुतहय्यर व दरमान्दा हैं और वला के मआनी तहय्यर के हैं। और लाह से मुश्तक़ है तो उसके मआनी होंगे वह ज़ात जो अक़ूल व इफ़हाम से बालातर और आंखों से मख़फ़ी है, और लाह के मआनी बलन्द व बरतर और पोशीदा होने के हैं, और यह तमाम मआनी उसी ज़ात के लिये हो सकते हैं जो ख़ालिक़े कायनात, मबदए अव्वल और मअबूदे हक़ीक़ी हो।

पांचवें यह कि इस नाम के हुरूफ़ में से जितने हुरूफ़ चाहे कम कर दीजिये। फिर भी उसकी दलालत उसी ज़ाते वाहिद व यकता पर होती है। चुनान्चे सैय्यद नेअमतुल्लाह जज़ाएरी ने किताब मशारिकुल अनवार से नक़्ल किया है कि अल्लाह में से अलिफ़ निकाल दिया जाये तो लिल्लाह रह जायेगा। और लाम निकाल दिया जाये तो इलाह रह जायेगा अगर अलिफ़ और एक लाम निकाल दिया जाये तो लह रह जायेगा। और अगर अलिफ़

Presented by: https://jafrililibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

के साथ दोनों लाम निकाल दिये जायें तो हा रह जायेगा। जो वाव के साथ मिल कर हू की सूरत में मुस्तअमिल होता है, और यह तमाम अल्फ़ाज़ उसी की ज़ात पर दलालत करते हैं।

हफ़्ते के सात दिनों में हज़रत के पढ़ने की दुआयें-दुआए रोज़े यकशम्बा

"उस अल्लाह तआला के नाम से मदद मांगता हूं जिसके फ़ज़्ल व करम ही का उम्मीदवार हूं और जिसके अद्ल ही से अन्देशा है। उसी की बात पर मुझे भरोसा है और उसी की रस्सी से वाबस्ता हूं। ऐ अफ़्वो व ख़ुशनूदी के मालिक! मैं तुझसे ज़ुल्म व जौर, ज़माने के इन्क़ेलाबात, ग़मों के पैहम हुजूम और नाज़िल होने वाली मुसीबतों से पनाह मांगता हूं और इस बात से कि आख़रत का साज़ो सामान और ज़ादे राह मोहय्या करने से पहले ही मुद्दते हयात ख़त्म हो जाये और तुझ ही से उन चीज़ों की रहनुमाई चाहता हूं जिनमें अपनी बहबूदी और दूसरों की फ़लाह व दुरूस्ती का सामान हो और तुझ ही से मदद मांगता हूं उन बातों की जिनमें अपनी फ़लाह व कामरानी और दूसरों को कामयाब बनाने की सूरत मुज़मिर हो, और तुझ ही से ख़्वाहिशमन्द हूं लिबासे आफ़ियत (के पहनाने) और उसे इतमाम तक पहुंचाने का और सलामती के शामिलेहाल होने और उसके दायम व

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बरक़रार रहने का और तेरे ही ज़रिये ऐ मेरे परवरदिगार पनाह मांगता हूं शैतान के वसवसों से, और तेरे ही तसल्लुत व इक़्तिदार के ज़रिये तहफ़्फ़ुज़ चाहता हूं फ़रमांरवाओं के ज़ुल्म व जौर से तू मेरी गुज़िश्ता नमाज़ों और रोज़ों को क़ुबूल फ़रमा और कलके दिन और उसके बाद के दिनों को आज की घड़ी और आज के दिन से बेहतर क़रार दे और मुझे अपने क़ौम व क़बीले में इज़्ज़त व तौक़ीर दे और ख़्वाब व बेदारी की हालत में मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा। तू ही वह अल्लाह है जो सबसे बेहतर निगरान व मुहाफ़िज़ है और तू ही सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है ऐ अल्लाह! मैं तेरी बारगाह में इस इतवार और बाद के इतवारों में शिर्क व बेदीनी से बेज़ारी का इज़हार करता हूं और क़ुबूलियत की ख़ातिर ख़ुलूसे नीयत के साथ तुझसे दुआ करता हूं और बाउम्मीद सवाब तेरी एताअत व फ़रमांबरदारी पर बरक़रार हूँ। लेहाज़ा तू बेहतरीने ख़लाएक़ और हक़ के नुमाइन्दे (हज़रत) मोहम्मद[स०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा, और अपनी उस इज़्ज़त के वसीले से जिसे मग़लूब नहीं किया जा सकता मुझे इज़्ज़त व बुज़ुर्गी दे और अपनी उस आंख से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा जो ख़्वाब आलूदा नहीं होती और मेरे हर काम का अन्जाम अपने दामन से वाबस्तगी और मेरी उम्र का ख़ात्मा अपनी मग़फ़ेरत व आमरज़िश पर क़रार दे।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बिला शुबहा तू बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

लम्हे साअतों में और साअतें दिनों में और दिन हफ़्तों में ढल कर और हफ़्ते महीनों में और महीने सालों में तब्दील हो कर हल्के फुलके बादलों की तरह उड़ते चले जा रहे हैं जिन्हें न कहीं ठहराव है न क़रार। और इन्हीं गुरेज़पा लम्हों और मुख़्तसर दिनों के मजमूए का नाम ज़िन्दगी है। जब यह दिन सिमट जायेंगे तो ज़िन्दगी का शीराज़ा बिखर जायेगा और दिनों के ख़त्म होते ही ज़िन्दगी ख़त्म हो जायेगी। इस लिहाज़ से एक एक दिन बल्कि एक एक दक़ीक़ा और एक एक लम्हा भी बड़ी अहमियत रखता है, क्योंकि एक दिन के गुज़रने से हमारी ज़िन्दगी में एक दिन की कमी हो जाती है, और यह दिन इतना क़ीमती सरमाया है कि जब हाथ से निकल जाता है, तो फिर सीम व ज़र के ख़ज़ाने भी इस दौलते रफ़्ता को वापस नहीं ला सकते। अगर ज़िन्दगी की कुछ क़ीमत है तो दिन की क़ीमत से इन्कार नहीं किया जा सकता और ज़िन्दगी की कुछ अहमियत है तो दिन की अहमियत भी मुसल्लम होगी। यही एक दिन हमारे लिये तबाही व हलाकत का पेश ख़ेमा हो सकता है और इसी एक दिन से ज़िन्दगी के लिये मुफ़ीद नताएज हासिल किये जा सकते हें और ज़िन्दगी की नाहमवारियों को हमवार किया जा सकता है। वह भी दिन है जो मुफ़सिदों को जन्म देता, मोहलिक गुनाहों में कटता और उम्रे गुज़िश्ता की नेकियों पर पानी फेर देता है और वह भी दिन है जो इस्लाहे नफ़्स, तहज़ीबे किरदार और तौबा व इनाबत में गुज़रता है और पिछले गुनाहों को ख़स व ख़ाशाक की तरह बहा ले जाता है। दिन होने में दोनों बराबर हैं मगर नताएज के लिहाज़ से इनमें इतना ही फ़र्क़ है जितना ज़हर और तिरयाक़। और जहन्नम के शोलों और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़िरदौस के लालाज़ारों में। लेहाज़ा ज़िन्दगी और उसके मआब को काम्याब बनाने के लिये दिन के लम्हात को काम्याब बनाने की ज़रूरत है और दिन को काम्याब बनाने के लिये हमारे सामने वह अमली मिसालें मौजूद हैं जो आले मोहम्मद[स०] के साथ वाबस्ता हैं, और उनके ऐसे तालीमात भी हें जिनकी पैरवी हमारी ज़िन्दगी की काम्याबी की ज़ामिन है। जब इन्सान उनकी क़ायमकर्दा बुनयादों पर अपनी ज़िन्दगी की तामीर करता है तो वह सिर्फ़ अपनी ही ज़िन्दगी को काम्याब नहीं बनाता, बल्कि दुनियाए इन्सानियत के लिये एक मिसाली किरदार का नमूना बन कर दूसरों को काम्याबी की राहें दिखाता है। चुनान्चे यह "हफ़्त हैकल" यानी हफ़्ते के सात दिनों की सात दुआयें उन तालीमात पर मुश्तमिल हैं जो मबदोअ व मआद से वाबस्तगी पैदा करके ज़िन्दगी को काम्याबी की शाहराह पर गामज़न करते हैं और एक एक दिन की अहमियत की तरफ़ मुतवज्जोह करके अल्लाह तआला से लौ लगाते, उसके अद्ल के तक़ाज़ों से डरने, शिर्क व इलहाद से बचने, हुक़ूकुल्लाह व हुक़ूकुल एबाद से ओहदाबरा होने, ज़ादे आख़रत के मोहय्या करने और सिर्फ़ उसी से उम्मीदें वाबस्ता करने की अहमियत को वाज़ेह करते हैं।

इसके अलावा हर शख़्स ज़ेहनी लिहाज़ से किसी उलझन में या जिस्मानी एतबार से किसी तकलीफ़ में मुब्तिला या किसी पेश आइन्द ख़तरे से हेरासां होता है उसे अपने दिन की इब्तेदा उस दुआ से करना चाहिये जो उस दिन से मख़सूस है ताकि अल्लाह तआला से रूजूअ व वाबस्तगी मसाएब व आलाम, हवादिस व फ़ितन और बलइय्यात व आफ़ात से मामून व महफ़ूज़ रखे।

ज़ेरे नज़र दुआ रोज़े यक शम्बा की दुआ है जिसमें ज़माने के हवादिस, दुनिया के रंज व अन्दोह, शैतान के वसावस और सलातीने जौर के ज़ुल्म

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व सितम से पनाह मांगी है और इसके साथ दुनिया व आख़रत की काम्याबी, इज़्ज़त व तौक़ीर, सेहत व सलामती, सलाह व बहबूदी, आमाले सालेहा की तौफ़ीक़, रोज़ा व नमाज़ की पज़ीराई, दुआ की कुबूलियत और हुस्ने अन्जाम और ख़ात्मा बिल ख़ैर की इल्तेजा की है और इन्हीं चीज़ों में ज़िन्दगी की काम्याबी का राज़ मुज़मर है।

दुआए रोज़े दोशम्बा

"तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह तआला के लिये हैं कि जब उसने ज़मीन व आसमान को ख़ल्क़ फ़रमाया तो किसी को गवाह नहीं बनाया। और जब जानदारों को पैदा किया तो अपना कोई मददगार नहीं ठहराया। उलूहियत में कोई उसका शरीक, और वहदत (व इन्फ़ेरादियत से मख़सूस होने) में कोई उसका मआवुन नहीं है। ज़बानें उसके इन्तेहाए सिफ़ात के बयान करने से गुंग और अक़लें उसकी मआरफ़त की तह तक पहुंचने से आजिज़ हैं। जाबिर व सरकश उसकी हैबत के सामने झुके हुए, चेहरे नक़ाबे ख़शियत ओढ़े हुए और अज़मत वाले उसकी अज़मत के आगे सरआफ़गन्दा हैं। तो बस तेरे ही लिये हम्दो सताइश है पै दर पै, लगातार, मुसलसल व पैहम, और उसके रसूल[स०] पर अल्लाह तआला की अबदी रहमत और दायम व जावेदानी सलाम हो। बारे इलाहा! मेरे इस दिन के इब्तेदाई हिस्से को सलाह व दुरूस्ती, दरमियानी

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

हिस्से को फ़लाह व बहबूदी और आख़री हिस्से को कामयाबी व कामरानी से हमकिनार क़रार दे। और उस दिन से जिसका पहला हिस्सा ख़ौफ़, दरमियानी हिस्सा बेताबी और आख़री हिस्सा दर्द व अलम लिये हो, तुझसे पनाह मांगता हूं। बारे इलाह! हर उस नज़र के लिये जो मैंने मानी हो, हर उस वादे की निस्बत जो मैंने किया हो और हर उस अहदो पैमान की बाबत जो मैंने बांधा हो फिर किसी एक को भी तेरे लिये पूरा न किया हो तुझसे अफ़वो व बख़्शिश का ख़्वास्तगार हूं और तेरे बन्दों के उन हुक़ूक़ व मज़ालिम की बाबत जो मुझ पर आयद होते हैं तुझसे सवाल करता हूं कि तेरे बन्दों में से जिस बन्दे का और तेरी कनीज़ों में से जिस कनीज़ का कोई हक़ मुझ पर हो, इस तरह कि ख़ुद उसकी ज़ात या उसकी इज़्ज़त या उसके माल या उसके अहल व औलाद की निस्बत मैं मुज़ल्लिमा का मुरतकिब हुआ हूं या ग़ीबत के ज़रिये उसकी बदगोई की हो या (अपने ज़ाती) रुजहान या किसी ख़्वाहिश या रऊनत या ख़ुद पसन्दी या रिया, या असबीयत से उस पर नाजाएज़ दबाव डाला हो चाहे वह ग़ायब हो या हाज़िर; ज़िन्दा हो या मर गया हो, और अब उसका हक़ अदा करना या उसे बहल कराना मेरे दस्तरस से बाहर और मेरी ताक़त से बाला हो, तो ऐ वह जो हाजतों के बर लाने पर क़ादिर है और वह हाजतें उसकी मशीय्यत के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ज़ेरे फ़रमान और उसके इरादे की जानिब तेज़ी से बढ़ती हैं मैं तुझसे सवाल करता हूं कि तू मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमाए और ऐसे शख़्स को जिस तरह तू चाहे मुझसे राज़ी कर दे और मुझे अपने पास से रहमत अता कर। बिला शुबहा मग़फ़ेरत व आमेज़िश से तेरे हां कोई कमी नहीं होती और न बख़्शिश व अता से तुझे कोई नुक़सान पहुंच सकता है ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले। बारे इलाहा! तू मुझे दोशम्बे के दिन अपनी जानिब से दो नेअमतें मरहमत फ़रमा। एक यह कि इस दिन के इब्तिदाई हिस्से में तेरी एताअत के ज़रिये सआदत हासिल हो और दूसरे यह कि इसके आख़री हिस्से में तेरी मग़फ़ेरत के बाएस नेअमत से बहरामन्द हूं। ऐ वह कि वो ही मअबूद है उसके अलावा कोई गुनाहों को बख़्श नहीं सकता।

इस दुआ में इब्तिदाअन अल्लाह तआला की वहदत व यकताई, इस्तग़ना व बेनयाज़ी, अज़मत व किबरियाई और उसके सिफ़ात की अक़्ल व शऊर की आजिज़ी का तज़किरा है और सहीफ़े की अकसर व बेशतर दुआओं में इसी पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है कि ख़ालिके कायनात यकता व यगाना है। यह इस लिये कि "तौहीदे ख़ालिस" ही दीन का सरचश्मा और इस्लाम के क़सरे अक़ाएद की ख़िश्ते अव्वल है। अगर अक़ीदए तौहीद मुस्तहकम न होगा तो मज़हब व मिल्लत की जो इमारत भी खड़ी की जायेगी मुतज़लज़ल व नापाएदार होगी। इस बुनियादी व असासी चीज़ के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तज़किरे के बाद नज़र, वादा और अहदो पैमान के ईफ़ा और हुकूकुल एबाद की अहमियत और इस फ़रीज़े से ओहदाबरा होने की दुआइया पैराया मे तालीम दी है और यह तरीक़ए तब्लीग़ व तलक़ीन बराहे रास्त पन्द व मोएज़त से ज़्यादा मोअस्सिर व दिलनशीन होता है।

नज़र यह है कि इन्सान अल्लाह तआला के लिये किसी ऐसे अम्र के बजा लाने या तर्क करने का अपने ऊपर इल्तेज़ाम करे जिसमें शरअन् रुजहान पाया जाता हो। इस नज़र पर तबअन् यह फ़ायदा मुतरत्तब होता है कि इन्सान फ़राएज़ की पाबन्दी का ख़ूगर हो जाता है और उनसे ओहदाबरा होना चाहता है। क्योंकि जब वह अपने आयदकर्दा फ़रीज़े को अहम समझते हुए उसे अदा करता है तो जो फ़राएज़ अल्लाह ने उस पर आयद कर दिये हैं उन्हें भी अहमियत देगा, और ग़फ़लत से एहतेराज़ करते हुए पाबन्दे फ़राएज़ हो जायेगा। फ़िक़ही कुतुब में नज़र की तीन क़िस्मे की गयी हैं। नज़रे मजाज़ात, नज़रे ज़जर और नज़रे तबर्रा।

नज़रे मिजाज़ात यह है कि इन्सान नज़र को किसी मक़सद व हाजत के पूरा होने पर मुन्हसिर कर दे। इस तरह कि अगर मेरा फ़लां काम हो गया तो मैं फ़लां कारेख़ैर अन्जाम दूंगा या फ़लां अमरे ख़ैर में इतना रुपया पैसा सर्फ़ करूंगा।

नज़रे ज़जर यह है कि उसे किसी फ़ेले हराम या मकरूह के इरतेकाब या किसी अमरे वाजिब या मुस्तहब के तर्क से वाबस्ता करे इस तरह कि अगर मैंने कोई नशा आवर चीज़ इस्तेमाल की या नमाज़ को तर्क किया तो एक गो–सफ़न्द (भेड़ या बकरी) ज़बह करके मिस्कीनों पर तक़सीम करूंगा।

नज़रे तबर्रा यह है कि उसे किसी काम के पूरा होने या मक़सद के बर आने पर मौकूफ़ न करे बल्कि बक़सदे तक़र्रुब उसका इल्तेज़ाम करे इस

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तरह कि मैं जुमे के दिन रोज़ा रखूंगा।

बहर हाल नज़र की जो भी क़िस्म हो उसका ईफ़ा लाज़िम व वाजिब है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :– "इन्हें चाहिये कि अपनी मन्नतें अदा करें।" और दर सूरते कि मन्नत अदा न करे तो उस पर कफ़्फ़ारा आयद होगा।

वादा बाहमी क़ौल व क़रार का नाम है। यह क़ौल व क़रार रोज़मर्रा की ज़िन्दगी और मुआशरे के तमाम कारोबार में एक अहम हैसियत रखता है। अगर वादे की पाबन्दी का लिहाज़ न किया जाये तो बाहमी एतमाद व वसूक़ ख़त्म और एक आम तनफ़्फ़ुर व बेएतमादी का माहौल पैदा हो जायेगा जिसके नताएज का अख़लाक़ी इन्हेतात, बेज़मीरी और पस्त फ़ितरती की सूरत में ज़ाहिर होना ज़रूरी है इन्हीं नताएज पर नज़र करते हुए इस्लाम ने वादा ख़िलाफ़ी से बशिद्दत मना किया है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"ऐ ईमानदार! तुम ऐसी बात कहते ही क्यों हो जो करते नहीं। यह बड़ी नाराज़ी की बात है कि तुम ऐसी बात कहो जो करो नहीं।"

और पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम का इरशाद है

"जो शख़्स अल्लाह और क़यामत के दिन पर एतमाद रखता है उसे चाहिये कि वादा करे तो उसे पूरा करे।"

मगर अब तो मआशरा इस तरह का बन चुका है न वादे की कोई क़ीमत और न क़ौल व क़रार की कोई अहमियत समझी जाती है। अगर किसी ने वादा याद दिलाया तो मुस्कुरा कर टाल दिया। या यह कह दिया कि वादे के साथ इन्शाअल्लाह का ज़मीमा भी तो था। अब मशीयते इलाही ही ने नहीं

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

चाहा, तो हमारा कुसूर क्या है। हालांकि इन्शाअल्लाह अगर आदतन् तबर्रुकन् कहा गया हो तो इससे वादा मोअल्लक़ नहीं क़रार पाता, अ अगर वादे को वाक़अतन् मशीय्यते इलाही से वाबस्ता किया हो तो इस वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी, किज़्ब बयानी महसूब न होगी बशर्ते कि जिससे वा किया गया हो वह भी वादे के वक़्त यह समझा हो कि वादा मोअल्लक़ मशरूत है। वरना सिर्फ़ इन्शा अल्लाह से वादा ख़िलाफ़ी का जवाज़ पै नहीं किया जा सकता।

अहद भी नज़र ही की एक क़िस्म है मगर फ़र्क़ यह है कि नज़र रुजहान शरई का होना ज़रूरी है। और अहद हर उस अम्र के मुतअल्लि हो सकता है जो हुदूद व जवाज़ के अन्दर हो। और नज़र की तरह उसक पाबन्दी लाज़िम व वाजिब है और ख़िलाफ़वर्ज़ी की सूरत में कफ़्फ़ारा आय होगा। चुनान्चे अहद के मुतअल्लिक़ इरशादे इलाही है :-

> अहद व पैमान को पूरा करो। क्योंकि अहद के बारे में पूछ गछ होगी।''

हुक़ूकुल एबाद से मुराद वह हुक़ूक़ हैं जो इन्सानी मआशरे में एक दूसरे पर आयद होते हैं। इन हुक़ूक़ का तहफ़्फ़ुज़ तमद्दुन व मआशरत की सरबलन्दी और अख़लाक़ी व इज्तेमाई ज़िन्दगी की आरास्तगी के लिये बहुत ज़रूरी है। क्योंकि इन्सान तबअन् अपने मफ़ाद के पेशे नज़र या इक़्तिदार पसन्दी के जज़बे से मुतास्सिर हो कर दूसरों के नुक़सान व ज़रर को तवज्जोह के क़ाबिल नहीं समझता, और ख़्वाहिशात के ज़ेरे असर क्या अपने और क्या बेगाने सबकी हक़ तलफ़ी पर आमादा हो जाता है जिसका लाज़मी नतीजा तसादुम व बाहम आवेज़ी है। लेहाज़ा इस्लाहे मआशरा की एक यही सूरत होगी कि इन्सान जहां अपने हुक़ूक़ का तहफ़्फ़ुज़ चाहता है वहां दूसरों के हुक़ूक़ का भी पास व लिहाज़ रखे। इस्लाम जो पुर अमन मुआशिरा और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

ख़ुशगवार माहौल की तशकील चाहता है उसने हुकूक़े इन्सानी की हद बन्दी की और इन्सान के मिज़ाज और उसकी तबिअत के मुक़तज़ियात को देखते हुए हर ऐसे एक़दाम से सख़्ती के साथ मना किया जिससे दूसरों के हुकूक़ पर असर पड़ता हो। हज़रत[अ०] ने इस दुआ में हुकूकुल एबाद की अहमियत बयान करते हुए उन्हें चार क़िस्मों पर तक़सीम फ़रमाया है। इस तरह कि इस हक़ का तअल्लुक़ या किसी शख़्स की ज़ात से होता है जैसे उसका कोई अज़ो बेकार कर देना या उसे ज़ख़्मी करना या उसे क़त्ल कर देना। या उसका तअल्लुक़ उसकी इज़्ज़त व हैसियत उर्फ़ी से होता है जैसे उसे गाली देना उस पर तोहमत बांधना, बदगोई या तज़लील व एहानत करना। या उसका तअल्लुक़ माल से होता है। जैसे क़र्ज़ा ले कर अदा न करना, अमानत में ख़यानत करना, किसी माली हक़ को दबा लेना या माली नुक़सान पहुंचाना। या उसका तअल्लुक़ अहलेख़ाना से होता है जैसे उसके नामूस पर हमला आवर होना और ज़िना वग़ैरा का इरतेकाब करना। इस तरह का ख़ाती व मुजरिम सिर्फ़ एक ही फ़र्द के सामने जवाबदेह नहीं है बल्कि तमाम मआशरे के सामने जवाबदेह है। इस लिये कि उसने अपने अमल से सिर्फ़ एक फ़र्द को नुक़सान नहीं पहुंचाया बल्कि पूरे निज़ामे मआशरे को अपनी ग़लत कराना रविश से नुक़सान पहुंचाया हैं। अब अगर वह अपने हरकात पर नादिम होकर तौबा करना चाहे तो उन हुकूक़ व मज़ालिम से सुबकदोशी हासिल करने के लिये ज़रूरी है कि वह उनका इम्कानी तदारूक करे। इस तरह कि अगर जिस्मानी गज़न्द पहुंचाया हो तो अपने को क़सास के लिये पेश करे या ख़ुशामद दरामद और हुस्ने सुलूक से उसकी रिज़ा के हुसूल की कोशिश करे और उसे बहाल कराये। और अगर साहबे हक़ तक रसाई न हो सके तो अल्लाह तआला के हुज़ूर तज़र्रुअ व ज़ारी से इल्तेजा करे कि वह साहबे हक़ को उससे राज़ी कर दे और

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

उसके लिये पैहम आमाले ख़ैर बजा लाये ताकि उसके हक़ का कुछ एव हो सके। और अगर ग़ीबत, बोहतान, दुशनाम वग़ैरा से उसकी इज़्ज़त मजरूह किया हो तो उससे इज़हारे निदामत करते हुए माफ़ी मांगे अ मिन्नत ख़ुशामद करके उस हक़ को बख़्शवाए, और अगर यह मुम्किन न तो उसके हक़ में दुआए ख़ैर करे और उसके लिये आमाले हसना बजा ल ताकि उसके हक़ की कुछ तलाफ़ी हो सके और इस बद्गोई व इल्ज़ तराशी से जो दूसरों को ग़लत फ़हमी पैदा हुई है उसका ताहद्दे इम्क अज़ाला करे और अपनी दरोग गोई व ग़लत बयानी का इक़रार करे। अ अगर इसका तअल्लुक़ माल से हो तो साहबे माल को माल वापस करे जै ग़स्ब, ख़यानत, रिश्वत, चोरी वग़ैरा से हासिल किया हुआ रुपया और अग साहबे हक़ तक पहुंचना मुम्किन न हो जैसे लाटरी, मोअम्मा, वग़ैरा हासिल किया हुआ माल, तो साहबे माल की तरफ़ से फ़ुक़रा पर तसद्दु करे। और अगर माले हलाल के साथ मख़लूत हो चुका हो तो उसमें ख़ुम्स अदा करे। और अगर माली इस्तेताअत ख़त्म हो गयी हो तो उस बख़्शवाये। और अगर वह न बख़्शे या उस तक रसाई न हो सके अल्लाह तआला की बारगाह में गिड़गिड़ाये और साहबे हक़ के लिये दुआ मग़फ़ेरत करे और उसके लिये आमाले ख़ैर बजा लाये ताकि ख़ुदा व आलम साहबे हक़ को उसके हक़ का एवज़ दे कर उससे राज़ी कर दे। औ अगर अहले ख़ाना की नामूस व हुरमत के मुतअल्लिक़ हो और इन्सान शराफ़त के दामन को दाग़दार किया हो तो उस धब्बे को छुड़ाना, औ मुज़लमा से सुबुकदोश होना आसान नहीं है। क्योंकि इस जुर्म और घिनौ जुर्म की तलाफ़ी की कोई सूरत नहीं है। ताहम इसका इम्कानी इलाज व है जो अल्लामा शेख़ बहाउद्दीन आमली रहमतुल्लाह अलैह ने शेख़ साले जज़ाएरी के इस्तेफ़ता के जवाब में तहरीर फ़रमाया है और सैय्य

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नेअमतुल्लाह जज़ाएरी ने इसे शरह सहीफ़े में दर्ज किया है। ख़ुलासए जवाब यह है कि अगर ज़िना ऐसी औरत से किया गया हो जो शौहरदार न हो और न उस पर किसी क़िस्म का जब्र व इकराह हो तो यह सिर्फ़ अल्लाह का गुनाह है जिस पर वह मुहासिबा करेगा। और अगर शौहरदार औरत से उसकी रिज़ामन्दी से ज़िना किया गया हो तो यह अल्लाह का गुनाह और शौहर की हक़तलफ़ी है। इस लिये यह अल्लाह की नाफ़रमानी के लिहाज़ से हुक़ूक़े अल्लाह में शुमार होगा और शौहर के हक़ में मुदाख़लत के एतबार से हुक़ूकुल एबाद में महसूब होगा। इस बिना पर साहेबाने हक़ दो होंगे। एक अल्लाह और दूसरे शौहर।

और अगर शौहरदार औरत से ज़िना जब्रो इकराह से किया गया हो तो साहिबाने हक़ तीन होंगे। एक अल्लाह, दूसरे शौहरदार औरत और तीसरे शौहर। तो दो सूरत यह है कि इसमें हक़्कुल एबाद की शमूलियत हो इस तरह कि ज़िना में जब्र व तशद्दुद कारफ़रमा हो। ख़्वाह औरत शौहरदार हो या बेशौहर। या शौहरदार औरत से ज़िना किया गया हो चाहे उसकी रज़ामन्दी हो या न हो। तो इस मज़लमा से छुटकारा हासिल करने की सूरत यह है कि वह शौहरदार औरत के शौहर से इजमालन् यह कहे कि तुम्हारा एक मज़लमे मेरी गर्दन पर है जिसका तदारूक मुम्किन नहीं है क्योंकि वह न माली है न बदनी। तुम इससे दरगुज़र करो और मुझे माफ़ कर दो। और उसे खुल्लम खुल्ला बयान न करे और न ज़्यादा अहमियत दे कि वह खटक जाये। और एक फ़ितना उठ खड़ा हो और तरफ़ैन की ज़िल्लत व रुस्वाई का मोजिब बन जाये। उसके बाद अगर वह माफ़ कर दे तो उस तरफ़ से छुटकारा हो जायेगा। रहा अल्लाह का गुनाह, तो उसकी बारगाह में इज़हारे निदामत करते हुए गिड़गिड़ाए और अफ़वो व दरगुज़र की इल्तेजा करे। सैय्यद जज़ाएरी रहमतुल्लाह ने इस जवाब को

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तस्लीम करते हुए अपने एक ख़दशे का भी इज़हार किया है। और वह य
कि अगर इस मज़लम से सुबकदोशी हासिल करने के लिये अल्फ़ाज़ इ
क़िस्म के हों कि जिससे अस्ल वाक़िये पर तो पर्दा ही पड़ा रहे और वह य
समझे कि उसके अहलेख़ाना की निस्बत उससे कोई मामूली लग़ज़िश हु
होगी। (जैसे दरवाज़े की ओट में से ताक झांक करता रहा होगा
वरग़लाना चाहा होगा) तो बईद नहीं कि वह दरगुज़र करे और अपने ह
को माफ़ कर दे। और अगर मज़लमा की अस्ल नौईयत पर उसे मुत्तल
किया जाये तो ज़ाहिर है कि वह दरगुज़र करने के बजाये मरने मारने प
आमादा हो जायेगा और एक फ़ितना उठ खड़ा होगा। तो दर सूरते कि य
यक़ीन हो कि खुल्लम खुल्ला बयान कर देने से वह कभी इस मज़लमा व
बहल करेगा। तो यह समझना कि उस मज़लमा से बराअत का परवा
हासिल हो गया, बईद अज़ फ़हम है। यह ऐसा ही है कि ज़ैद,. ख़ालिद
हां से मुसलसल माली ख़यानत करता रहे जो एक मोतदबा रक़म बन जा
और अब उसे यह ख़याल पैदा हो कि उस मज़लमा से नजात हासिल क
और साहबे हक़ से उसका हक़ माफ़ कराये तो ख़ालिद से यह कहे कि
तुम्हारा ख़तावार हूं और तुम्हारा कुछ माल इधर उधर किया है वह मुझे मा
कर दीजिये ताकि मैं इस मज़लमा से निजात पाऊँ और अपने मक़ाम प
वह यह समझता हो कि अगर मैंने रक़म की सही सही मिक़दार बता द
तो वह कभी माफ़ नहीं करेगा और अपने माल का मुतालिबा करेगा लेकि
ख़ालिद एकमामूली रक़म समझ कर माफ़ कर देता है और वह इससे सम
लेता है कि अब मुज़्लिमा बरतरफ़ हो गया। हालांकि मज़लमा उसी सूर
में बरतरफ़ हो सकता है जब जुर्म उसे रक़म का कुछ अन्दाज़ा हो, इस
तरह मसलए ज़ेरे बहस में मज़लमा से छुटकारा उसी सूरत में हो सकत
है जब की अस्ल नौइय्यत आशकारा हो जाये।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

सैय्यद रहमतुल्लाह का यह ख़दशा इस तरह बरतरफ़ किया जा सकता है कि वह मज़लमा जो नामूस से मुतअल्लिक़ होता है, क़ाबिले तदारुक नहीं होता। और माली मज़लमा चाहे कितना ही गरांबार क्यों न हो क़ाबिले तदारुक है। इस तरह कि वह सही रक़म ज़ाहिर करने के बाद उसे वापस लौटा कर ज़िम्मेदारी से हट सकता है और अगर इस्तेताअत न हो तो बिलअक़्सात या अपने ख़िदमात पेश करके सुबुकदोशी की सूरत पैदा कर दे सकता है और इसमें किसी फ़ितने के पैदा होने का अन्देशा भी नहीं है। लेकिन नामूस के मामले में किसी तदारुक की गुंजाइश नहीं है। और वाज़ेह तौर पर बयान करने में फ़ितना व शोरिश के बरपा होने का क़वी अन्देशा है। लेहाज़ा इस महल को इस मोरिद पर क़यास नहीं किया जा सकता जबकि यहां इसके सिवा और कोई चारए कार नहीं है।

दुआए रोज़े सेहशम्बा

"सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है और वही तारीफ़ का हक़दार और वही उसका मुस्तहक़ है। ऐसी तारीफ़ जो कसीर व फ़रावां हो। और मैं अपने ज़मीर की बुराई से उसके दामन में पनाह मांगता हूं और बेशक नफ़्स बहुत ज़्यादा बुराई पर उभारने वाला है मगर यह कि मेरा परवर दिगार रहम करे। और मैं अल्लाह ही के ज़रिये उस शैतान के शर व फ़साद से पनाह चाहता हूं जो मेरे लिये गुनाह पर गुनाह बढ़ाता जा रहा है। और मैं हर सरकश, बदकार और ज़ालिम बादशाह और चीरादस्त दुश्मन से उसके दामने हिमायत

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

में पनाह गुज़ीन हूं। बारे इलाहा! मुझे अपने लश्कर में क़रार दे क्योंकि तेरा लश्कर ही ग़ालिब व फ़तेहमन्द है। और मुझे अपने गरोह में क़रार दे क्योंकि तेरा गरोह ही हर लिहाज़ से बेहतरी पाने वाला है। और मुझे अपने दोस्तों में से क़रार दे क्योंकि तेरे दोस्तों को न कोई अन्देशा होता है और न वह अफ़सुरदा व ग़मगीन होते हैं। ऐ अल्लाह! मेरे लिये मेरे दीन को आरास्ता कर दे इस लिये कि वह मेरे हर मामले में हिफ़ाज़त का ज़रिया है और मेरी आख़रत को भी संवार दे क्योंकि वह मेरी मुस्तक़िल मंज़िल और ज़िल्लत व कमीन्गी लोगों से (पीछा छुड़ाकर) निकल भागने की जगह है। और मेरी ज़िन्दगी को हर नेकी में इज़ाफ़े का बाएस और मेरी मौत को हर रंज व तकलीफ़ से राहत व सुकून का ज़रिया क़रार दे। ऐ अल्लाह! मोहम्मद[स0] जो नबीयों[अ0] के ख़ातिम और पैग़म्बरों के सिलसिले के फ़र्द आख़िर हैं, उन पर और उनकी पाक व पाकीज़ा आल[अ0] और बरगुज़ीदा असहाब पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे इस रोज़े सेहशम्बा में तीन चीज़ें अता फ़रमा। वह यह कि मेरे किसी गुनाह को बाक़ी न रहने दे मगर यह कि उसे बख़्श दे। और न किसी ग़म को मगर यह कि उसे बरतरफ़ करे दे और न किसी दुश्मन को मगर यह कि उसे दूर कर दे बिस्मिल्लाह के वास्ते से जो (अल्लाह तआला के) तमाम नामों में से बेहतर नाम (पर मुश्तमिल)

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है और अल्लाह[ज०] के नाम के वास्ते से जो ज़मीन व आसमान का परवर दिगार है। मैं तमाम नापसन्दीदा चीज़ों का दफ़ीया चाहता हूं। जिनमें अव्वल दर्जे पर उसकी नाराज़ी है और तमाम पसन्दीदा चीज़ों को समेट लेना चाहता हूं। जिनमें सबसे मुक़द्दम उसकी रज़ामन्दी है। ऐ फ़ज़ल व एहसान के मालिक तू अपनी जानिब से मेरा ख़ात्मा बख़्शिश व मग़फ़ेरत पर फ़रमा।

सरनामए दुआ में अल्लाह तआला की हम्द और उसके मुस्तहक़ हम्द होने का तज़किरा है और उसका इस्तेहक़ाक़ इससे ज़ाहिर है कि वह तमाम ख़ूबियों और अच्छी सिफ़तों का मालिक है। और हम्द के माने अच्छी सिफ़तों के बयान के होते हैं। लेहाज़ा हर मिद्‌हत व सना उसी के लिये होगी और हर हम्दो सताइश का वही सज़ावार होगा। इस इस्तेहक़ाक़ के तज़किरे के बाद नफ़्से अम्मारा और उसकी बातिल कोशिशों से पनाह मांगी है। क्योंकि इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन खुद उसी का नफ़्स है जो शैतानी वसवसों से मुतास्सिर हो कर अच्छी बातों को छोड़ देता और बुरे मनसूबों में लग जाता है। ऐसे मौक़ों पर अल्लाह तआला का फ़ज़ल व करम ही शरीके हाल हो तो उसके मोहलकों से नजात हासिल हो सकती है। चुनान्चे क़ुरआने अज़ीज़ में जने अज़ीज़े मिस्र या हज़रत यूसुफ़[अ०] की ज़बानी इरशाद हुआ है :–

"मैं अपने नफ़्स की पाकीज़गी का दावा नहीं करता।
यह नफ़्स तो बहुत ज़्यादा बुराई पर उभारने वाला है।
मगर इस सूरत में कि मेरा परवर दिगार रहम करे।"

फिर शैतान[म०] की फ़ितना सामानी, बदकिरदारों की शोरिदा सरी,

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

फ़रमांरवाओं की सितमकोशी और दुश्मनों की चीरादस्ती से बचाव के लिये अल्लाह तआला को पनाहगाह क़रार दिया है क्योंकि वही शैतान के हरबों को कुन्द करने वाला बदकिरदारों, ज़ालिम हुक्मरानों और फ़ितना अन्गेज़ दुश्मनों से हिफ़्ज़ व निगेहदाश्त करने वाला है। नफ़्से अम्मारा और शैतान मलऊन से पनाह मांगने के बाद अल्लाह तआला की फ़ौज और उसके गरोह और उसके दोस्तों की जमाअत में महसूब होने की दुआ फ़रमाई है। क्योंकि अल्लाह की फ़ौज ने कभी शिकस्त नहीं खाई और रोज़ अज़ल से ग़लबा उसके पाये नाम हो चुका है। इस ग़लबे से मुराद ज़ाहिरी ग़लबा नहीं है जो माद्दी फ़तूहात की सूरत में हासिल होता है। क्योंकि फ़ौज के बलबूते और कुव्वत व ताक़त के सहारे से हरीफ़ों को ज़ेर कर लेना ग़लबा होता तो अल्लाह तआला के मख़सूस व बरगुज़ीदा बन्दे कभी दुश्मनों से ज़ेर न होते। और फिर जो ग़लबा ताक़त के ज़रिये हासिल होता है वह ताक़त के ज़रिये ख़त्म भी हो जाता है। फ़ौजे ख़ुदावन्दी की हार जीत को दुनयवी फ़तह व शिकस्त पर क़यास नहीं किया जा सकता। इस लिये कि वह बज़ाहिर नाकाम हो कर भी कामयाब और शिकस्त खा कर भी फ़ातेह व कामरान होती है। कभी उसकी फ़तेह ज़ाहिरी फ़तेह के लिहाज़ से होती है और कभी उसकी फ़तेह इसमें मुज़मिर होती है कि वह बज़ाहिर शिकस्त खा कर दिलों को तसख़ीर करे। और हक़ व सदाक़त की सूरत में अपनी दायमी फ़तेह के आसार छोड़ जाये और यही फ़तेह हक़ीक़ी फ़तेह है। जो नसबुलऐन की कामयाबी से वाबस्ता है और अल्लाह जल्ले जलालहू का गरोह वह है जो हक़ व सदाक़त की राह पर इस्तेवार सलाह व हिदायत का रौशन मिनार और अहयाये दीन व आलाये कलेमतुल्लाह के लिये हमातन वक़्फ़ है उसकी ज़िन्दगी का मक़सद ही दुनिया को ख़ुदा परस्ती की राह दिखाना और जान जोखों में डाल कर मंज़िल सिदक़ व सफ़ा की तरफ़ ले चलना है। इसके

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

नतीजे में उलाएका हुमुल मुफ़लेहून की आवाज़ ने हर तरह की बेहतरी उसके लिये मख़सूस कर दी है और दोस्ताने ख़ुदा वह हैं जो उसकी रज़ा व ख़ुशनूदी के हुसूल के लिये दिलों को उसकी याद, ज़बानों को उसके ज़िक्र और मेहराबे इबादत को तस्बीह व तहलील से आबाद रखते हैं और ख़ौफ़े ख़ुदा के घर कर लेने की वजह से उन्हें कोई ख़ौफ़ हरासां नहीं करता और न रंज व इन्दोह से उन्हें दो चार होना पड़ता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"ख़ुदा के दोस्तों के लिये न कोई ख़ौफ़ होगा
और न उन्हें कोई रंज व ग़म होगा।"

अल्लामा तबरसी ने मजमउल बयान में तहरीर किया है कि ख़ौफ़ का तअल्लुक़ मुस्तक़बिल से होता है और हुज़्न का तअल्लुक़ ज़मानए गुज़िश्ता से मक़सद यह है कि उन्हें न आख़रत में कोई ख़ौफ़ व ख़तरा होगा और न उन्हें दुनिया और दुनिया के साज़ो सामान के छोड़ने का ग़म होता है। वह दुनिया में हर क़िस्म के ख़दशों और अन्देशों से पाक और आख़रत में अमन व सुकून की छाओं में मंज़िल गुज़ीं होंगे। फिर दीन की इस्लाह व आरास्तगी की दुआ है। इस लिये कि दीन ही इन्सान को फ़राएज़ व हुक़ूक़ की तरफ़ तवज्जह दिलाता और उन पर कारबन्द रहने की तलक़ीन करता और ईज़ा रसानियों, फ़ितना अंगेज़ियों, बुराईयों और हक़ तलफ़ियों से रोकता है और मुआशिरे के नज़्म व इन्ज़ेबात का कफ़ील, मदनियत व इज्तेमाइयत के हुदूद का पासबान और अख़लाक़ व आमाल का निगरान है। फिर ऐसी ज़िन्दगी का सवाल क्या है जो इबादत व एताअत में सर्फ़ हो। इस लिये कि दुनयवी ज़िन्दगी का मक़सद यह है कि उख़रवी ज़िन्दगी को संवारा जाये। क्योंकि दुनिया की ज़िन्दगी चन्द रोज़ा और वहां की ज़िन्दगी दायमी व सरमदी है और इसे उबूदियत के तक़ाज़ों पर अमल करने ही से

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

संवारा जा सकता है। और ऐसी मौत की ख़्वाहिश की है जो सुकून व राहत का पैग़ाम ले कर आये। क्योंकि दुनिया में लाख सरो सामाने राहत मौजूद हों अहले ईमान व ईक़ान को हक़ीक़ी राहत मौत के बाद ही हासिल हो सकती है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व अलेहि वसल्लम का इरशाद है :—

"लक़ाए इलाही के अलावा मोमिन के लिये और कहीं राहत नहीं।"

आख़िर दुआ में अल्लाह तआला की बारगाह में तीन ख़्वाहिशें पेश की हैं। एक गुनाहों की बख़्शिश दूसरे ग़म व इन्दोह का तदारुक और तीसरे दुश्मनों से तहफ़्फ़ुज़। लेहाज़ा इन मक़ासिद के लिये इस दुआ को हर सेहशम्बे के रोज़ पढ़ना चाहिये। ताकि ख़ुदा वन्दे आलम दुनिया में ग़म व फ़िक्र से नजात और आख़रत में मग़फ़ेरत व ख़ुशनूदी से सरफ़राज़ करे।

दुआए रोज़े चहारशम्बा

"तमाम तारीफ़ उस अल्लाह तआला के लिये है जिसने रात को पर्दा बनाया और नींद को आराम व राहत का ज़रिया और दिन को हरकत व अमल के लिये क़रार दिया। तमाम तारीफ़ तेरे ही लिये है कि तूने मुझे मेरी ख़्वाबगाह से ज़िन्दा और सलामत उठाया। और अगर तू चाहता तो उसे दायमी ख़्वाबग़ाह बना देता। ऐसी हम्द जो हमेशा हमेशा रहे; जिसका सिलसिला क़तअ न हो और न मख़लूक़ उसकी गिनती का शुमार कर सके। बारे इलाहा! तमाम तारीफ़ तेरे ही लिये है कि

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तूने पैदा किया तो हर लिहाज़ से दुरूस्त पैदा किया। अन्दाज़ा मुक़र्रर किया और हुक्म नाफ़िज़ किया, मौत दी और ज़िन्दा किया। बीमार डाला और शिफ़ा भी बख़्शी। आफ़ियत दी और मुब्तिला भी किया। और तू अर्श पर मुतमक्किन हुआ और मुल्क पर छा गया। मैं तुझसे दुआ मांगने में उस शख़्स का सा तरज़े अमल अख़्तियार करता हूं जिसका वसीला कमज़ोर, चारएकार ख़त्म और मौत का हंगाम नज़दीक हो। दुनिया में उसकी उम्मीदों का दामन सिमट चुका हो और तेरी रहमत की जानिब उसकी एहतियाज शदीद हो और अपनी कोताहियों की वजह से उसे बड़ी हसरत और उसकी लग़ज़िशों और ख़ताओं की कसरत हो और तेरी बारगाह में सिदक़े नीयत से उसकी तौबा हो चुकी हो। तो अब ख़ातेमुल अम्बिया मोहम्मद[स०] उनकी पाक व पाकीज़ा आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की शफ़ाअत नसीब कर और मुझे उनकी हमनशीनी से महरूम न कर। इस लिये कि तू तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। बारे इलाहा! इस रोज़े चहार शम्बा में मेरी चार हाजतें पूरी कर दे। यह कि इत्मिनान हो तो तेरी फ़रमांबरदारी में, सुरूर हो तो तेरी इबादत में, ख़्वाहिश हो तेरे सवाब की जानिब और किनाराकशी हो तो उन चीज़ों से जो तेरे दर्दनाक अज़ाब का बाएस हैं। बेशक तू जिस चीज़ के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

लिये चाहे अपने लुत्फ़ को कार फ़रमा करता है।"

सरनामए दुआ में शब व रोज़ की आमदो शुद और उस पर मुरत्तब होने वाले फ़वाएद का तज़किरा फ़रमाया है और इस दुआ में और "दुआए सुबह व शाम" में भी रात का तज़किरा पहले और दिन का ज़िक्र बाद में है। यह इस लिये कि क़मरी महीनों और तारीख़ों की इब्तिदा रात से होती है। इस लेहाज़ से इसे दिन पर तक़द्दुम हासिल है। या इस लिये कि ख़ासाने ख़ुदा के लिये रात अल्लाह से लौ लगाने और मेहराबे इबादत को आबाद करने का वक़्त होता है इस लिये वह दिन के मुक़ाबले में उसे अक़दमियत का मुस्तहक़ समझते हैं या इस लिये कि कुरआन मजीद के असलूब व तरतीबे बयान से मुतालेक़त बरक़रार रहे इस शब व रोज़ की तक़सीम से ज़िन्दगी के कारोबार दो हिस्सों पर तक़सीम हो गये हैं। एक हरकत व अमल और सरो सामाने मईशत मोहय्या करने के लिये, और एक सुकून व राहत के लिये। चुनान्चे दिन कारोबार के लिये है जो सूरज की तेज़ रौशनी से दरख़शां होता है ताकि कारोबारे मशाग़िल में कोई ख़लल पैदा न हो, और रात आराम के लिये है जिसमें चांद की हल्की शुआयें नूरपाशी करती हैं ताकि उनकी पुरसुकून छांव में आराम किया जा सके। कुदरत ने दिन को बराहे रास्त सूरज की सुन्हरी किरणों से रौशन किया और रातों को रौशन करने का इन्तेज़ाम इस तरह किया कि जब सूरज की रौशनी ज़मीन पर पड़े तो वह मुनअक्स हो कर चांद को रौशन करे। और चांद मुख़्तलिफ़ सूरतें बदल कर ज़मीन को रौशन करता रहे। इस तरह कि पहले ब़–तदरीज रौशनी में तरक़्क़ी हो और फिर ब–तदरीज तनज़्ज़ुल ताकि इस तब्दीली व तनव्वुअ से उसकी कशिश कम न होने पाये और उसके उतार चढ़ाव की गूनागूँ कैफ़ियतें नज़र अफ़रोज़ी का सामान मोहय्या करती रहें। फिर शब

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

व रोज़ की मुद्दत इन्सान के क्वाए अमल और आराम व इस्तेराहत की ज़रूरत के लिहाज़ से इतनी मौज़ूं व मुनासिब है जो फ़ितरत से पूरी तरह हमआहंग है। अगर दुनिया में मुसलसल दिन रहता तो ज़मीन सूरज की शुआओं से जल कर रवैदगी की कूव्वत खो देती। और इन्सान के लिये मुनासिब आराम की सूरत पैदा न होती। और बईद नहीं कि वह कारोकसब की मशगूलियतों से घबरा कर मौत का सहारा ढूंढने लगता। और अगर मुसलसल रात रहती तो अन्धेरे से उक्ता कर दीवारों से सर टकराने लगता। चुनान्चे इन्हीं एहकाम व मसालेह की तरफ़ दावते फ़िक्र देते हुए इरशाद फ़रमाया है :–

"बिला शुबहा ज़मीन व आसमान की ख़िलक़त और शब व रोज़ की आमदो शुद में अहले दानिश के लिये बहुत सी निशानियां हैं।"

उसके बाद इन्सानी ख़िलक़त का ज़िक्र फ़रमाया है कि किस तरह अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरते कामेला व हिक्मते बालेग़ा से मुतज़ाद अनासिर में तरकीब व ईतेलाफ़ और तरकीब में तवाज़ुन व एतदाल को कारफ़रमा किया और इन्सान को मौज़ूनी व तनासुब के सांचे में ढाल कर हुस्न व दिल आवेज़ी का मुरक़्क़ा और अपनी जमाल पसन्दी का आईनादार बनाया। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"वह जिसने तुझे पैदा किया तो हर तरह से नोक पलक दुरूस्त करके पैदा किया और तेरे (आज़ा में) तवाज़ुन व एतदाल क़ाएम किया और जिस सूरत में उसने चाहा तेरे जोड़ आपस में मिला दिये।"

अगर इन्सानी नशो व इरतेक़ा के मरातिब उसके आज़ा की तरकीब व रबियत और उन आज़ा के मुख़्तलिफ़ वज़ाएफ़ व आमाल पर नज़र की

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

जाये तो उसके हर गोशे में ऐसी हिक्मत कारफ़रमा नज़र आयेगी जिसे एक बेशऊर माद्दे की अन्धा धुन्ध तख़लीक़ का नतीजा नहीं क़रार दिया जा सकता बल्कि इन्सानी सूरत और उसकी ज़ेबाई ख़दो ख़ाल की रंगीनी और उसकी नक़्श व निगार की दिलफ़रेबी देख कर अक़्ले सलीम यह एतराफ़ करने पर मजबूर होगी कि यह किसी मुदब्बिर व हकीम सानेअ की नक़्श आराई का करिश्मा है। चुनान्चे इमाम जाफ़रे सादिक़[अ०] का इरशाद है :—

> "इन्सानी सूरत मख़लूक़ात पर अल्लाह तआला की सबसे बड़ी हुज्जत व दलील है। और यह वह किताब है जिसके नुक़ूश उसने ख़ुद अपने हाथ से खींचे हैं।"

नक़्श आराये फ़ितरत ने इस इन्सानी सहीफ़े को इस तरह सजा है कि हर ख़त में ख़ते नोरिस की ताज़गी, हर ख़म में ख़मे अबरुद की कशिश और हर नुक़्ते में ख़ाले रूख़े ज़ेबा की हुस्न आराई सिमट आई है। यह जिस्म व सूरत की ज़ेबाई आज़ा के तनासुब से वाबस्ता है। इस तरह कि हर अज़ो अपने मुनासिबे हाल मक़ाम पर है और वही मक़ाम उसे ज़ेब देता और उसके लिये मौज़ूं व मुनासिब है। जो बुलन्द है उसे बलन्दी ज़ेब देती है और जो पस्त है वह पस्ती ही के क़ाबिल है। जो ताक़ है उसे ताक़ ही होना चाहिये और जो जुफ़्त है उसे जुफ़्त ही होना चाहिये। अगर उनमें रद्दो बदल कर दिया जाये तो तमाम हुस्न व रानाई ख़त्म हो जाये। चुनान्चे सर को मरकज़े जमाल व महले अक़्ल व शऊर होने की वजह से सबसे बुलन्द मक़ाम पर जगह दी और उसके गिर्द-च पेश हवासे ख़मसा के पहरे बैठा दिये। इस तरह कि उसके दोनों तरफ़ बारीक परदों में हासए समाअत, पैदा किया और उन परदों के गिर्द कान बनाये जिसमें टेढ़े मेढ़े रास्ते हैं। ताकि आवाज़ पेच व ख़म खाती हुई उन परों से टकराये और सख़्त व हौलनाक आवाज़ों के

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

बराहे रास्त टकराने से फट न जायें। और उनमें एक शोर व मुतअफ़्फ़िन माद्दा पैदा कर दिया ताकि सोते में या बेख़बरी की हालत में कीड़े मकोड़े अन्दर घुसने न पायें। और दोनों लबों के अन्दर दांतों की बाढ़ खिंच कर उसमें ज़बान को बन्द कर दिया और उसे माफ़ीउल ज़मीर के इज़हार का ज़रिया क़रार दिया और नाक के बांसों में कुव्वते शाम्मा फैला दी ताकि खुशबू को रास्ता दे और बदबू को दिमाग़ में घुसने से रोक दे और पेशानी के नीचे और सर के बालाई हिस्से में आंखों के दीदबान खड़े कर दिये ताकि दोस्त व दुश्मन और मवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ की फ़ौरन् इत्तिला हो सके और उनमें नूर की तख़लीक़ करके उसकी हिफ़ाज़त का इस तरह सामान किया कि पहले उसे सात पर्दों में छुपाया। फिर उन पर्दों के आगे फाटक लगाये और उन पर पलकों की चिलमनें डाल दीं ताकि ख़स व ख़ाशाक और गर्दो ग़ुबार के हमले से बचाव हो सके और जिस्म के हर हर हिस्से में कुव्वते लामसा दौड़ा कर उस हिस्सए जिस्म के लिये हिफ़ाज़ते खुद अख़्तियारी का सामान कर दिया।

यह हवासे ख़मसा अपने महसूसात को मख़सूस आलात व उसबी निज़ाम के ज़रिये दिमाग़ तक पहुंचाते हैं और कुव्वते हाफ़िज़ा तमाम नुक़ूश को जमा करती जाती है और जुदा जुदा उनवानात से महफ़ूज़ रखती है। इस तरह कि इन्सान जब चाहे याद्दाश्त के वर्क़ों में से उन तमाम मुतअल्लेक़ा नुक़ूश को जो किसी मौक़े पर दरकार हों इस तरह निकाल ले जिस तरह किसी कुतुबख़ाने में से किसी किताब को ढूंढ लिया जाता है। और फिर कुव्वते गोयाई के ज़रिये पूरे-पूरे मुरक़्क़े एक ज़ेहन से दूसरे ज़ेहन में मुन्तक़िल किये जा सकते हैं। और ज़ब्ते तहरीर में लाकर उन्हें दवाम भी बख़्शा जा सकता है। और यह वह कमाल है जो इन्सानी इस्तेदाद से वाबस्ता है। अगर चे इन्सान को बहुत से हिस्सियात व क़वा नहीं भी दिये

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

गये लेकिन उसकी शऊरी दुनिया में कोई ख़ेला नहीं है। मसलन पानी के अन्दर एक महदूद अर्से से ज़्यादा नहीं ठहर सकता हालांकि मछलियां और दूसरे आबी जानवर पानी में रहते, घर बनाते और मुतलातुम मौजों में पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। वह अपने दस्त व बाज़ू से फ़िज़ा में परवाज नहीं कर सकता हालांकि कबूतर, बाज़ और दूसरे परिन्दे फ़िज़ा में परवाज़ करते हैं। वह अन्धेरे में चीज़ों को देख नहीं सकता हालांकि रात को उड़ने वाले शिकारी परिन्दे घास में रेंगते हुए सांपों, चूहों और कीड़ों को बुलन्दी पर से देख लेते हैं और जिसे हम अन्धेरा कहते हैं वह उनके लिये उजाला और जिसे हम सुकूत कहते हैं वह उनके लिये शोर व हंगामा होता है। और परवाने मीलों से शमा की ख़ुशबू और उन ख़ुशबूओं को जिनका हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते, सूंघ लेते हैं। और यही कुव्वते शाम्मा उनके लिये बसारत का काम देती है। और हिरन की दुनिया में तो ख़ुशबूएं बड़ी फ़रावां हें। जो हमारे लिये सब्ज़ाज़ार है वह उसके लिये फ़िज़ाए इत्र बेज़ है जिसकी मुख़्तलिफ़ ख़ुशबूएं उसके मशाम में बसी हुई हैं। और कुत्ते और घोड़े बाअज़ उन आवाज़ों को सुन लेते हैं जो हमें सुनाई नहीं देतीं और बाअज़ जानवरों को ज़लज़ला, बारिश, आंधी और दूसरे आफात का इल्म पहले से हो जाता है। चुनान्चे अल्लामा नसीरुद्दीन तूसी रहमतुल्लाह के मुतअल्लिक़ यह वाक़िया बयान किया जाता है कि वह एक मर्तबा किसी मक़ाम पर आबादी के बाहर एक शख़्स के हां ठहरे। गर्मी का मौसम था आपने मकान की छत पर बिसतर लगवाया। साहबेख़ाना ने कहा कि आप छत के बजाये हुजरे के अन्दर आराम फ़रमायें ताकि बारिश की वजह से आपको बेआराम न होना पड़े इस लिये कि आज रात को बारिश आयेगी। मोहक़्क़िक़ रहमतुल्लाह ने हवाओं का रूख़ देखा और फ़लकी औज़ाअ का जाएज़ा लिया और कहा कि बारिश के क़तअन् कोई आसार नहीं हैं और वह

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

छत ही पर सो गये। कुछ देर गुज़री होगी कि बारिश शुरू हो गयी। मोहक़्क़िक़ रहमतुल्लाह को साहबेख़ाना की पेशीनगोई पर हैरत हुई और उससे पूछा कि तुम्हें कैसे इल्म हो गया कि आज रात बारिश होगी। उसने कहा कि हमारे हां एक कुत्ता है वह जिस रात को बारिश बरसना होती है छत के बजाये नीचे रहता है और आज भी वह नीचे रहा और छत पर नहीं गया। जिससे मुझे अन्दाज़ा हो गया कि आज रात बारिश होगी। इसी तरह बाअज़ सतेह समन्दर पर शिकार करने वाले परिन्दे आने वाले तूफ़ान से मुत्तलअ हो जाते हैं और उसकी आमद से पहले ख़ुशकी पर चले जाते हैं। और शहद की मक्खियां बिन देखे सिम्त को पहचान लेती हैं। चुनान्चे उन्हें किसी डिबिया में बन्द करके किसी भी सिम्त छोड़ा जाये वह सिम्त पहचान कर जिधर से लाई गयीं हैं उधर ही परवाज़ करेंगी। इन हिस्सियात से हम बिल्कुल नाआशना हैं और इन हिस्सियात के फ़ुक़दान का हमें कुछ एहसास भी नहीं है कि शऊर में कोई ख़लल वाक़े हो। बल्कि हवासे ख़मसा में से कोई हासा शुरू ही से न हो तो उसका भी कोई एहसास नहीं होता। एक पैदाइशी अन्धे को अपनी बसारत के न होने का बस उतना ही ग़म है जितना एक आम आदमी को परों के न होने का। उसकी दुनिया में अगर चे बसारत नहीं है मगर उससे उसके शऊर में कोई ख़लल नहीं वाक़े होता। और न शऊर में कोई कमी और न ज़िन्दगी में कोई ख़िला महसूस करता है। इस लिये बाज़ हिस्सियात के न होने के बावजूद हर शख़्स की ज़िन्दगी अपने मक़ाम पर शऊरी लिहाज़ से मुकम्मल है बशर्ते कि किसी शऊर से आशना होने के बाद उसे खोया न हो। और हमारे एहसासात सिर्फ़ उसी दुनिया से तअल्लुक़ रखते हैं जो हमारे ज़ेहन में आबाद है और उन्हीं हिस्सियात पर अपनी दुनिया तामीर करते हैं जिनसे आशना होते हैं।

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुआए रोज़े पंजशम्बा

"सब तारीफ़ अल्लाह[ज०] के लिये है जिसने अपनी कुदरत से अन्धेरी रात को रूख़सत किया और अपनी रहमत से रौशन दिन निकाला और उसकी रौशनी का ज़रतार जामा मुझे पहनाया और उसकी नेअमत से बहरामन्द किया। बारे इलाहा! जिस तरह तूने इस दिन के लिये मुझे बाक़ी रखा उसी तरह इस जैसे दूसरे दिनों के लिये ज़िन्दा रख। और अपने पैग़म्बर मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इस दिन में और उसके अलावा और रातों और दिनों में हराम उमूर के बजा लाने और गुनाह व मआसी के इरतेकाब करने से रंजीदा ख़ातिर न कर। और मुझे इस दिन की भलाई और जो इसके बाद है उसकी भलाई अता कर। और इस दिन की बुराई और जो कुछ इस दिन में है उसकी बुराई जो इसके बाद है उसकी बुराई मुझसे दूर कर दे ऐ अल्लाह! मैं इस्लाम के अहदो पैमान के ज़रिये तुझसे तवस्सुल चाहता हूं और कुरआन की इज़्ज़त व हुरमत के वास्ते से तुझ पर भरोसा करता हूं और मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम के वसीले से तेरी बारगाह में शफ़ाअत का तलबगार हूं। तो ऐ मेरे मअबूद! मेरे इस अहदो पैमान पर नज़र कर जिसके वसीले से हाजत बरआरी का उम्मीदवार हूं। ऐ रहम

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करने वालों में सबसे ज्यादा रहम करने वाले। बारे इलाहा! इस रोज़े पंजशम्बा में मेरी पांच हाजतें बर ला जिनकी समाई तेरे ही दामने करम में है और तेरी ही नेअमतों की फ़रावानी इनकी मुतहम्मिल हो सकती है। ऐसी सलामती दे जिससे तेरी फ़रमांबरदारी की कुव्वत हासिल कर सकूं। ऐसी तौफ़ीक़े इबादत दे जिससे तेरे सवाबे अज़ीम का मुस्तहक़ क़रार पाऊँ। और सरे दस्त रिज़्क़े हलाल की फ़रावानी और ख़ौफ़ व ख़तर के मवाक़े पर अपने अम्न के ज़रिये मुतमइन कर दे और ग़मों और फ़िक्रों के हुजूम से अपनी पनाह में रख मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उनसे मेरे तवस्सुल को क़यामत के दिन सिफ़ारिश करने वाला, नफ़ा बख़्शने वाला क़रार दे। बेशक तू रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।

इस दुआ के शुरू होने में रात के रूख़सत होने को अल्लाह तआला की ़ुदरत का मुज़ाहरा और दिन की आमद को उसकी रहमत का करिश्मा ़रार दिया है। कुदरत का मुज़ाहरा इस तरह है कि ज़मीन ऐसा अज़ीम ़रीन कुर्रा उसके अदना इशारे से परेकाह की तरह उड़ता और हर वक़्त ़रदिश में रहता है और इसी गरदिश के नतीजे में मौसमों की तब्दीली, ़ूरज के तुलूअ व गुरूब की नमूद और शब व रोज़ की तख़लीक़ होती है। ़स तरह कि जो हिस्सा सूरज के सामने आता है वहां दिन और जो हिस्सा ़सके सामने नहीं आता वहां रात होती है जिससे हमारी आंखों के सामने

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

कभी अन्धेरा और कभी उजाला हो जाता है। और यह बिल्कुल ऐसा है जैसे किसी कमरे में रौशनी के बाद अन्धेरा और अन्धेरे के बाद रौशनी कर दी जाये। और रहमत का करिश्मा इस तरह है कि दिन के वजूद से बेशुमार फ़वाएद व मुनाफ़ा वाबस्ता हैं। इससे कुर्रए अर्ज़ी की हयात और उस पर बसने वालों की ज़िन्दगी वाबस्ता है चुनान्चे सूरज की किरणें जब समन्दर से बुख़ारात उठाती हैं तो वह अब्र बन कर बरसते और प्यासी ज़मीन को सेराब करते हैं जिससे ज़मीन की कुव्वते नशो नुमा उभरती और उसमें रोवैदगी आती है। और इसी दिनकी हरारत से खेतियां पकती और फल पुख़्ता होते हैं। जो इन्सान व हैवान की ज़िन्दगी व बक़ा का सामान करते हैं। उसी की रौशनी से सब्ज़ा व नबात का रंग निखरता और पत्थरों में रंग आमेज़ी होती है जो लाल व याक़ूत व ज़मर्रुद की सूरत में चमकते, जगमगाते और निगाहों को खीरा करते हैं। दिन रात के अदलने बदलने से अल्लाह तआला की कुदरत व रहमत पर दलील लाने के बाद ज़िन्दगी व बक़ा का सवाल किया है। यह ख़्वाहिश ज़िन्दगी की चाहत और हिज़ अन्दोज़ी के लिये नहीं है बल्कि इस लिये है कि आख़रत के लिये ज़्यादा से ज़्यादा सरो सामान करें और अपने ख़ालिक़ की रिज़ा व ख़ुशनूदी का सरमाया फ़राहम करें। चुनान्चे इस दुआ में जो चीज़ें तलब की हैं उनमें पहली चीज़ यह है कि मैं सेहत व सलामती चाहता हूं इस लिये कि ज़िन्दगी के लम्हात को मक़सदे हयात की तकमील में सर्फ़ करूं और अपने मअबूद की एताअत व फ़रमांबरदारी की कुव्वत हासिल कर सकूं। और इबादत के ज़रिये सवाबे उख़रवी का मुस्तहक़ क़रार पाऊँ और ख़ौफ़ व ख़तर के मक़ामात पर उसके अज़ाब व एताब से महफ़ूज़ रहूं। और ग़म व इन्दोह से नजात और रिज़्क़े हलाल का सवाल किया है तो इस लिये कि रिज़्क़ व मईशत की तंगी और ग़म व इन्दोह की फ़रावानी ख़यालात को परागन्दा

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

और ज़ेहन को मुन्तशिर कर देती है और ज़ेहन में यकसूई न हो तो तबीअत पूरी तवज्जोह के साथ इबादात व आमाल की तरफ़ माएल नहीं होती। ग़रज़ आपकी ज़िन्दगी का मक़सदे अव्वलीन अल्लाह तआला से वाबस्तगी और उसकी रिज़ाजूई था। और आपकी पूरी ज़िन्दगी इसी महबूब तरीन मशग़ला में बसर हुई।

दुआए रोज़े जुमा

तमाम तारीफ़ उस अल्लाह तआला के लिये है जो पैदा करने और ज़िन्दगी बख़्शने से पहले मौजूद था और तमाम चीज़ों के फ़ना होने के बाद बाक़ी रहेगा। वह ऐसा इल्म वाला है कि जो उसे याद रखे उसे भूलता नहीं। जो उसका शुक्र अदा करे उसके हां कमी नहीं होने देता। जो उसे पुकारे उसे महरूम नहीं करता। जो उससे उम्मीद रखे उसकी उम्मीद नहीं तोड़ता। बारे इलाहा! मैं तुझे गवाह करता हूं और तू गवाह होने के लिहाज़ से बहुत काफ़ी है। और तेरे तमाम फ़रिश्तों और तेरे आसमानों में बसने वालों और तेरे अर्श के उठाने वालों और तेरे फ़रस्तादा नबियों और रसूलों और तेरी पैदा की हुई क़िस्म क़िस्म की मख़लूक़ात को अपनी गवाही पर गवाह करता हूं कि तू ही मअबूद है और तेरे अलावा कोई मआबूद नहीं। तू वहदहू ला शरीक है तेरा कोई हमसर नहीं है। तेरे क़ौल में न वादा ख़िलाफ़ी होती

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

है और न कोई तब्दीली। और यह कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम तेरे ख़ास बन्दे और रसूल[स०] हैं। जिन चीज़ों की ज़िम्मेदारी तूने उन पर आयद की वह बन्दों तक पहुंचा दीं। उन्होंने खुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की राह में जेहाद करके हक़्क़े जेहाद अदा किया और सही सही सवाब की ख़ुशख़बरी दी और वाक़ई अज़ाब से डराया। बारे इलाहा! जब तक तू मुझे ज़िन्दा रखे अपने दीन पर साबित क़दम रख और जब कि तूने मुझे हिदायत कर दी तो मेरे दिल को बेराह न होने दे और मुझे अपने पास से रहमत अता कर। बेशक तू ही (नेअमतों का) बख़्शने वाला है। मोहम्मद[स०] और उनकी आल[अ०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और हमें उनके इत्तेबाअ और उनकी जमाअत में से क़रार दे और उनके गरोह में महशूर फ़रमा और नमाज़े जुमा के फ़रीज़े और इस दिन की दूसरी इबादतों के बजा लाने और उन फ़राएज़ पर अमल करने वालों पर क़यामत के दिन जो अतायें तूने तक़सीम की हैं उन्हें हासिल करने की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमा। बेशक तू साहेबे इक़्तिदार और हिक्मत वाला है।

यह दुआ जुमे के दिन पढ़ी जाती है। जुमा सैय्यदुल अय्याम और नुज़ूले बरकात का दिन है और इसकी आख़री साअत क़ुबूलियते दुआ के लिये मख़सूस है। सैय्यद नेअमतुल्लाह जज़ाएरी रहमतुल्लाह ने जुमे की वजहे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

तसमिया के सिलसिले में तहरीर किया है। कि ख़ुदा वन्दे आलम ने ज़मीन व आसमान को छः दिन में पैदा किया। जिनमें पहला दिन यकशम्बा और छठा दिन जुमा और उस दिन तमाम मख़लूक़ात को एक मक़ाम पर जमा किया इस लिये इसे जुमा कहा जाता है। और इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा गया कि "जुमे को जुमा क्यों कहते हैं" तो आपने फ़रमायाः–

"ख़ुदा वन्दे आलम ने इस दिन मख़लूक़ात को मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम और उनके अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत व विलायत पर जमा किया, इस लिये इसे जुमा कहा जाता है।"

इस दुआ में ख़ुदा वन्दे आलम के चन्द अहम ख़ुसूसियात व सिफ़ात बयान फ़रमाए हैं जो अक़ीदए तौहीद के तहफ़्फ़ुज़ के लिये असासी हैसियत रखते हैं। पहली सिफ़त यह है कि वह अव्वल भी है और आख़िर भी। यह अव्वलियत व आख़रियत ज़मान व मकान के लिहाज़ से नहीं है कि दोनों का एक ज़ात में इज्तेमाअ न हो सके बल्कि यह अव्वलियत व आख़रियत ज़मान व मकान से मावरा है। इसकी अव्वलियत के माने यह हैं कि किसी चीज़ को किसी लिहाज़ से उस पर तक़द्दुम नहीं है और आख़रियत के माने यह हैं कि इसके अलावा कोई सरमदी व अबदी नहीं है। चुनान्चे ख़ुद उसी का इरशाद है :–

"वही सबसे पहले और सबसे आख़िर है।"

दूसरी सिफ़त यह कि जो उसे याद करता है वह उसे फ़रामोश नहीं करता। इसका यह मतलब नहीं है कि वह उसके हाफ़िज़ा व ज़ेहन से नहीं उतरता क्योंकि उसके हां भूल चूक का सवाल ही पैदा नहीं होता बल्कि मक़सद यह है कि वह अपने याद रखने वाले को जज़ा देता है। चुनान्चे

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

इरशादे इलाही है :–

"तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूंगा।"

तीसरी सिफ़त यह है कि जो उसका शुक्र अदा करता है उसे ज़्यादा से ज़्यादा नेअमतें देता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो मैं और ज़्यादा दूंगा।"

चौथी सिफ़त यह है कि जो उसे पुकारता है उसकी सुनता है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

'तुम मुझे पुकारो। मैं तुम्हारी बात कुबूल करूंगा।'

पांचवीं सिफ़त यह है कि वह आस रखने वालों की आस नहीं तोड़ता। चुनान्चे इरशादे ख़ुदा वन्दी है :–

"अल्लाह तआला की रहमत से सिर्फ़ काफ़िर ही मायूस होते हैं।"

छठी सिफ़त यह है कि वह एक अकेला है। चुनान्चे इस अक़ीदए तौहीद की अहमियत के पेशे नज़र तमाम कायनात को गवाह करके अल्लाह तआला की वहदत व यकताई की गवाही दी है और कुरआन मजीद में इस गवाही का इस तरह तज़किरा है :–

"अल्लाह तआला और फ़रिश्ते और तमाम साहेबाने इल्म गवाह हैं कि अल्लाह तआला के अलावा कोई मअबूद नहीं।"

सातवीं सिफ़त यह कि उसका कोई शरीक नहीं है। चुनान्चे इरशादे बारी है :–

"उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसका हुक्म दिया गया है और मैं पहला मुस्लिम हूं।"

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

आठवीं सिफ़त यह है कि उसका कोई मिस्ल व नज़ीर नहीं है। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"उसका कोई हमसर नहीं।"

नवीं सिफ़त यह कि वह वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता। चुनान्चे इरशादे इलाही है :–

"बेशक ख़ुदा अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।"

दसवीं सिफ़त यह कि उसकी बात में तब्दीली नहीं होती, क्योंकि बात में तब्दीली की ज़रूरत उसे पड़ती है जो आजिज़ या नताएज से बेख़बर हो। और अल्लाह तआला के लिये यह दोनों बातें नामुम्किन हैं। चुनान्चे इरशादे बारी है :–

"मेरे हां बात नहीं बदला करती।"

तौहीद की गवाही के बाद रिसालत की गवाही दी है और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम की अबदियत व रिसालत का ज़िक्र फ़रमाया है। यहां अबदियत का ज़िक्र पहले और रिसालत का ज़िक्र बाद में है। क्योंकि अबदियत अब्द व मअबूद के दरमियान और रिसालत ख़ुदा और मख़लूक़ के दरमियान एक वास्ता है। तो जो चीज़ जनबए उलूहियत से मुतअल्लिक़ है उसे पहले और जो जुनबए मख़लूक़ से मुतअल्लिक़ है उसे बाद में बयान किया है। शहादतैन के बाद राहे हिदायत पर सिबाते क़दम की दुआ की है कि वह हिदायत करने के बाद ज़लालत व कजरवी से महफ़ूज़ रखे। चुनान्चे क़ुरआन मजीद में है कि अल्लाह तआला के मख़सूस बन्दों की दुआ यह है :–

"ऐ हमारे परवर दिगार जबकि तूने हमें हिदायत
की तो हमारे दिलों को बेराह न होने दे और अपनी
बारगाह से रहमत अता फ़रमा, बेशक तू बहुत अता

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

करने वाला है।"

खुदा वन्दे आलम की तरफ़ हिदायत के बाद जो दिलों की बेराहरवी की निस्बत दी गयी है उसके माने यह नहीं हैं कि वह अपने बन्दों को हिदायत से मुन्हरिफ़ और बेराह करता है। बल्कि मतलब यह है कि वह गुनाहों और बेराहरवियों के नतीजे में सलबे तौफ़ीक़ कर लेता है और कोई बाअख़्तयार खुद गुमराह होता है तो वह बजब्र मानेअ नहीं होता। चुनान्चे कुरआन मजीद में वाज़ेह तौर से इरशाद हुआ है। "जब वह खुद बेराह हुए तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों को बेराह होने दिया।"

"मदद अल्लाह तआला के नाम से जो हिफ़ाज़त चाहने वालों का कलमए कलाम और पनाह ढूंढ़ने वालों का विरदे ज़बान है। और खुदा वन्दे तआला से पनाह चाहता हूं सितमगारों की सितमरानी, हासिदों की फ़रेबकारी और ज़ालिमों के ज़ुल्मे नारवा से। मैं उसकी हम्द करता हूं (और सवाल करता हूं कि वह इस हम्द को) तमाम हम्द करने वालों की हम्द पर फ़ौक़ियत दे। बारे इलाहा! तू एक अकेला है। जिसका कोई शरीक नहीं। और बग़ैर किसी के मालिक बनाए तू मालिक व फ़रमांरवा है। तेरे हुक्म के आगे कोई रोक खड़ी नहीं की जा सकती और न तेरी सल्तनत व फ़रमांरवाई में तुझसे टक्कर ली जा सकती है। मैं तुझसे सवाल करता हूं कि तू अपने अब्दे ख़ास और रसूल[स०] हज़रत मोहम्मद[स०] पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपनी नेअमतों पर ऐसा शुक्र मेरे दिल में डाल

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दे जिससे तू अपनी ख़ुशनूदी की आख़री हद तक मुझे पहुंचा दे। और अपनी नज़रे इनायत से एताअत, इबादत की पाबन्दी और सवाब का इस्तेहक़ाक़ हासिल करने में मेरी मदद फ़रमाए और जब तक मुझे ज़िन्दा रखे गुनाहों से बाज़ रखने में मुझ पर रहम करे। और जब तक मुझे बाक़ी रखे उन चीज़ों की तौफ़ीक़ दे जो मेरे लिये सूदमन्द हों और अपनी किताब के ज़रिये मेरा सीना खोल दे और उसकी तलावत के वसीले से मेरे गुनाह छांट दे और जान व ईमान की सलामती अता फ़रमाए और मेरे दोस्तों को (मेरे गुनाहों के बाएस) वहशत में न डाले और जिस तरह मेरी गुज़िश्ता ज़िन्दगी में एहसानात किये हैं उसी तरह बक़िया ज़िन्दगी में मुझ पर अपने एहसानात की तकमील फ़रमाए। ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

इस दुआ का उनवान दुआए यौमुस्सब्त है। सबत हफ़्ते के दिन को कहते हैं। इस दिन यहूद को दुनिया के झमेलों से अलग रह कर इबादत व ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहने का हुक्म था। और सबत के लग़वी माने कारो कसब के छोड़ने और अराम व इसतराहत करने के हैं इस लिये इस दिन का नाम यौमुस्सब्त यानी रोज़े तअ्तील क़रार दिया गया।

हज़रत[अ0] ने सरनामए दुआ में इस्मे जलालत को हिफ़ाज़त व निगेहदाश्त चाहने वालों की ज़बानों का कलमा व विर्द क़रार दिया है चुनान्चे इसके असमाए हुस्ना में से सबसे ज़्यादा यही नाम ज़बानों पर आता है। और क्या

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

दुआ व मुनाजात हो और क्या फ़रियाद व इस्तग़फ़ार ज़्यादातर वह इसी नाम से पुकारा जाता है। और हिफ़्ज़ व अमान तलबी के मौक़े पर यही नाम सबसे ज़्यादा मौज़ूं भी है क्योंकि उसे अल्लाह कहा ही इसी लिये जाता है कि "हर मख़लूक़ उसकी तरफ़ रूजूअ होती और उससे पनाह चाहती है।" और यह अल्लाह का लफ़्ज़ चूंकि इस्मे ज़ात है जो मानवी लिहाज़ से उसकी तमाम सिफ़तों को हावी है इस लिये जब हम उसे अल्लाह कह कर पुकारते हैं तो गोया उसकी एक एक सिफ़त के साथ उसे पुकारा है। अब एक फ़क़ीर, फ़क़रो एहतियाज के अज़ाले के लिये उसे अल्लाह कह कर पुकारता है तो गोया उसे ग़नी कह कर पुकार रहा है क्योंकि यह नाम उसके ग़नी व बेनयाज़ होने का आईनादार है। और एक मरीज़ शिफ़ा के लिये उसे इस नाम से पुकारता है तो गोया उसे शाफ़ी कह कर मुख़ातिब कर रहा है क्योंकि यह नाम इस सिफ़त पर भी हावी है। और कोई मज़लूम उसे इस नाम से पुकारता है तो गोया उसे आदिल व मुन्तक़िम कह कर ललकार रहा है, क्यों कि यह नाम उसके आदिल होने का भी पता देता है।

इसी जामइयत के लिहाज़ से हज़रत ने सितमगारों के सितम, हासिदों के अनाद और ज़ालिमों के ज़ुल्म व जौर से इस नाम के ज़रिये पनाह चाही है। क्योंकि इस एक नाम से उसकी तमाम सिफ़तों की तरफ़ ज़ेहन मुन्तक़िल हो जाता है। और उसकी इन सिफ़तों का तक़ाज़ा यह है कि दिल से उसकी अज़मत का एतराफ़ और ज़बान से उसकी तहमीद व सताइश की जाये। चुनान्चे दुशमनों के मुक़ाबले में तलबे-एआनत व इमदाद के बाद उसकी हम्द सराई की है जिस में उसकी वहदत व यकताई और बिला शिरकते ग़ैरे सल्तनत व फ़रमांरवाई का ज़िक्र किया है। मक़सद यह है कि वह इक़्तिदारे आला का मालिक है, और कोई चीज़ उसके मुहीते इक़्तिदार

Presented by: https://jafrilibrary.com

Presented by: https://jafrilibrary.net

से बाहर नहीं है।

लेहाज़ा हर हाजत व ख़्वाहिश और तमन्ना व आरज़ू को उसी के सामने पेश किया जा सकता है। चुनान्चे पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेहि वसल्लम पर दुरूद भेजने के बाद कि जो दुआ का ज़ेवर और कुबूलियत का ज़ामिन है उसकी बारगाह में शुक्रे नेअमत, एताअत, दवामे इबादत और इज्तेनाबे मआसी की तौफ़ीक़ और शरह सदर, उफ़्वे गुनाह, दीन की सलामती और जान की आफ़ियत का सवाल किया है, और ख़ातमए दुआ पर यह इल्तेजा की है कि ऐ मअबूद! जिस तरह तूने ज़िन्दगी के उन लम्हों में जो गुज़र गये मुझ पर पैहम एहसानात किये हैं, उसी तरह ज़िन्दगी के बक़िया लम्हों में मुझसे अपने एहसानात व इनामात का सिलसिला क़ता न करना, बल्कि इन्हें इतमाम तक पहुंचाना इस लिये कि "अलल अहसान बिल इतमाम।"

★★★

Presented by: https://jafrilibrary.com